श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮. | અંક ૨.

વૈશાખ ૧૯૮૯. | શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૫.

શુદ્ધાદ્વૈત અને ભક્તિમાર્તંડ.

प्रार्थना.

द्वाग्निजान्संस्मृतिलीयमानांस्तातुं प्रभुः पुष्टिहितानगण्यान् ।
चम्पावने यः प्रकटो बभूव स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१॥
विस्मापयन्स्वीयगुरुं पठन्यो द्राक् शब्दशास्त्रोदधिपारमैयः ।
कौमार एवाग्नियताथ वाचा स वागधीशो दययावतान्नः ॥ २॥
विद्यासु विद्यानगरे प्रवीणाः कर्तुं विवादं मिलिता विदग्धाः ।
यो ब्रह्मवादं प्रजगौ प्रमाणैः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥३॥
चिन्तातुरो दैवजनोद्धृतौ यः श्रीब्रह्मसम्बन्धकृतौ प्रदिष्टः ।
तुर्याप्रियारोधसि माधवेन स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥४॥
सूर्यायितं येन मुदा पृथिव्यां श्रीपुष्टिमार्गाम्बुजसत्प्रकाशे ।
दामोदराद्यैर्भ्रमरायितं च स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥५॥
श्रीनाथवक्त्राम्बुजनिःसृता ये पञ्चाक्षराष्टाक्षरगद्यमन्त्राः ।
तैर्निर्भया येन कृताश्च दैवाः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥६॥
श्रीविठ्ठलादेशवशेन येन भक्तिप्रचाराय शुभोऽत्र [१]वंशः
अतो गृहस्थाश्रम आदृतोऽपि स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥७॥
दयानिधानान्वितपुष्टिमार्गे बाधां विधातुं हरिरप्यशक्तः ।
स्मृत्या स्वभक्तार्तिविनाशको यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥८॥
रासेश्वरो यद्व्रजनीयदेवः सेवारसाला रसिकाश्च भक्ताः ।
ग्रन्था रसा यस्य रसाश्रयो यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥९॥

---

१ स्थापित इतिशेषः

श्रीकृष्णलीलामृतसिंधुविन्दुः सिन्धूयते भक्तहृदन्तराले ।
यस्य त्विहानुग्रहदृष्टिदृष्ट्या स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१०॥
लक्ष्मीसहस्रैरिह सेव्यमानो लीलापयोधौ हि कलानिधानः ।
यस्यान्तशेषोपरि यो विशाले स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥११॥
वृन्दावनेन्दुः किल यस्य दानं भक्ता ग्रहीतार इहैष दाता ।
दत्तेऽपि दाने निधिरक्षयो यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१२॥
मधुव्रजेशः खलु वैष्णवानां योऽयं दयालुर्व्रजनाथदाता ।
महाप्रभुस्तत्प्रथितः पृथिव्यां स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१३॥
चेतोगताज्ञानतमिस्रनाशाद् वैश्वानरः प्राज्ञगणैर्विभाषे ।
यो वस्तुतः कृष्ण इयाय भूमिं स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१४॥
श्रीकृष्णरूपः परिषेव्यमाण आचार्यरूपः परिषेवमाणः ।
योऽभूद् द्विधासेवनशिक्षणाय स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१५॥
स्वदर्शनोत्कोऽन्तिकमागतोऽपि मत्युद्गतः श्रीपतिना मुदा यः ।
शान्तो यतोऽभूद् गिरिराजतापः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१६॥
परिक्रमन्भूमितले त्रिवारं ग्रन्थान् रसालान् रचयन्ननेकान् ।
य उद्धरन् दैवजनान्व्यराजत् स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१७॥
स्नानापदेशेन धरागतानि कृतानि तीर्थानि हि नाथवन्ति ।
भूमण्डलाचार्यवरेण येन स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१८॥
यः पाययन्पुष्टिमहारसं स्वान् विभिन्नदेशस्थितपुष्टिभक्तान् ।
तीर्थाटनात्तामसतापहारी स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१९॥
गुणानगण्यान्विदुषामवर्ण्यान्रासेश्वरानुग्रहपण्यलभ्यान् ।
संख्यातुमीष्टे नहि कोऽपि यस्य स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२०॥
माहात्म्यपूर्णं चरितं यदीयं भक्तिं निजे वर्धयते, श्रुतोक्तम् ।
आदर्शरूपं निजसेवकेषु स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२१॥
य आप्तकामः परिपूर्णरूपः कर्माणि चक्रे निजदासहेतोः ।
अङ्गीचकारेह निजान्प्रमेयात् स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२२॥
मार्गं विलोक्य व्यसनाख्यभक्तिं स्याचेद् गृहत्यागरतस्त्वपक्वः ।
वसेद् हरिस्थान इदं म ऊचे स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२३॥
विधाय कार्यं निजसेवकानामाज्ञां व्रजेशस्य च पालयित्वा ।
विष्णोर्वियोगाप अहो समं यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२४॥

म्लेच्छा नृपाला बहवोऽत्र बादा दैवा अभूवन्भुवि यांदिशीकाः ।
तदावतीर्येह ररक्ष यस्तान् स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२५॥
यो मोहयामास निजैश्च शैर्धरागतानासुरजीववृन्दान् ।
विराजमानोऽपि निजेषु नित्यं स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२६॥
धर्मद्विषां नैकविधैः कुतर्कैर्दिवे क्षितौ मज्जति संशयाब्धौ ।
अलौकिकाधिः पुरुषोत्तमो यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ।२७॥
ज्ञानं न चास्मासु दृढा न भक्तिर्न चाश्रयः कर्मबलं न योगः ।
स्वीयत्वमालोक्य दयानिधिर्यः स वल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२८॥
मानादिदोषान् दह वल्लभाग्ने स्वभक्तगान्संमति यद् विशुद्धाः ।
क्षिप्रं भवेयुश्च यथार्थदीना दासानुदासाश्रितेऽपि ते स्युः ॥३०॥
दैन्यामृतं सिञ्च दयानिधे त्वं भक्ते निजे साम्प्रतिके कृपातः ।
यन्नामसेवां तव रूपसेवां कृत्वा मिथोऽनन्तसुखं लभेत ॥३०॥
श्रीवल्लभाचार्यकुलावतंसः श्रीकृष्णचन्द्राङ्घ्रिसरोजभृङ्गः ।
कृपामकार्षीदनिरुद्धलालः श्रीदेवकृष्णात्मजदुर्लभेऽस्मिन् ॥३१॥
यद्वल्लभाचार्यगुणान्गृणाति तद्वाक्सुधास्वादलवं तथेति ।
सर्वस्य बीजं गुरुदृष्टिपातो नवम्यतेऽयं हृदि तत्पदाब्जम् ॥३२॥
श्रीवल्लभीयान्तरमध्यवर्तिश्रीवल्लभीयाङ्घ्रिसरोजयोर्वै ।
सुवाक्यपुष्पाञ्जलिमर्पयामि श्रीवल्लभानुग्रहवाञ्छयाऽहम् ॥३३॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभविभुपदपद्मपरागकणलिप्सुः श्रीत्वाजिराजसंस्कृतशालाध्यापको भट्टश्रीदेवकृष्णा-
त्मजदुर्लभशास्त्री श्रीवल्लभप्रभुप्रार्थनामकार्षीत् ॥

પ્રાચીન કીર્તન.

राग सारंग ॥ गहवर बन सघन कुंज मधि. खसखानो रच्यो अतर गुलाबकी सुगंध सुखकारी ॥ माधकी मधरात जेसी ज्येष्ट दुपहरी आली मान कर बेठी तोय लाज नहीं प्यारी ॥१॥ अद्भुत बदनचंद तेरो कह्यो किधों न माने मेरो उसीर की रावटी गुलाबजल सुखकारी ॥ छिरकी प्रीतम अंतर चित्र सारी भजाधीस प्रभुको बदनकमल निरखि बलिहारी ॥

राग नट ॥ कहा करुं बिच जमुना बाढी ॥ परली पार स्याम मुरली बजावत उली पार । ठाडी ॥१॥ कांध कमरियां हाथ लकुटिया रहत सदाही आडो ॥ तानसेनके प्रभु बहुनायक कस कराडे ठाडा ॥२॥

[સંગ્રહકર્તા વૈષ્ણવ (કણબી) વહાલજી લાલા કેસોદવાળાના ભગવત્સ્મરણ.]

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

श्रीवृंदावन रम्यक रसदानी
श्रीवल्लभपद कंज माधुरी तिनकुं जिन अलि यहां रुचि मानी ॥१॥
भ्रूविलास अंतःपुर गह्वर रासस्थली दगन दरसानी ॥
नंद सूनु सुख अवधि यहां लों मंडल ओर पोसरुह पानी ॥२॥
वागधीश युवजन रसमूली मधुराइ मुरली मधु जानी ॥
अटपटी बात लपेट बहुत सखि, सुरझावत सब व्रज अरुझानी ॥३॥
अंतरंग बहिरंग प्रसंगित, मधुर मधुर बंसी गुन गानी ॥
रसरंध्र व्हे प्रगट केलि जे, प्रचुर करी सखि बहुत संयानी ॥४॥
नखशिखाग्र संकुलित विविधि निधि, कृपाग्रंथि सम्यक् सुखलानी ॥
सन्मुख भये नेह वरदेश्वर, पाछें पुलिन ठोरें की ठानी ॥५॥
भूखनभाव वसन पट पेहेरे, ललित घटा गहरानी ॥
दशनखचंद्र किरन रंजित व्हे, पद्मनाभ अखियाँ अरुझानी ॥६॥

या कीर्तनमें श्रीवृंदावन रम्यक केवल धर्मी भगवान तथा गोपीजनके सुखकी अवधिको (१) और या अवधिको स्थान जो श्रीमहाप्रभुजी हे तिनके स्वरूपको (२) तथा ये धर्मी स्वरूपको जाकुं आप दान करत हे, एसे जो अधिकारी भक्त हे तिनके स्वरूपको (३); एसे तीन प्रकारको यहां वर्णन हे । सो कहत हे ॥ वृंदावन इति । प्रथम वृन्दावन जो हे सो असुरसंबंधी भूमि हे। वामें भी स्त्रीसंबंधी–अत्यंत निकृष्ट–एसी होयके भी भगवानके चरणारविन्दके स्पर्शसों श्रीयुत होय पृथ्वीकी कीर्तिकुं विख्यात करत हे । अर्थात् वैकुंठसों भी अधिक हे । एसे वृंदावनकुं श्रीयमुनाजी सहित भगवान षड्गुणयुक्त करके अर्थात् अपने समान करके वार्पे आप रमण करत हें । एसे जो धर्मी भगवानको दयारसयुक्त स्वरूप जो हे ताको आप दान करत हे ॥ यातें दानी पद कह्यो । दानी कहेवेसों जेसें अपनी सत्ताकी जो वस्तु हे, वा वस्तुपें पर सत्ता–संपादन करावे, वाहीकुं दान कहत हे । एसे श्रीवल्लभ हे । वामें यों जतायो जो वृन्दावनकी रमणीय जो भगवल्लीला हे सो सब श्रीमहाप्रभुजीकी सत्ता की है । वाको आप दान करत हे यह सूचित कीनो । अब या लीलामय रसस्वरूपके दानके अधिकारी जो भक्त हे तिनको स्वरूप कहत हे–श्रीवल्लभपद इति ॥ श्री कहिये स्वामिन्यादिभाव करिके युक्त । वल्लभ कहिये युगल स्वरूपको अत्यंत प्रिय । एसे जो श्रीवल्लभ इनके चरणकमलकी माधुरी–मधुरमकरंद–ताकुं जिन भक्तनने अलि–भ्रमर–रूपसों रुचि मानी ताकूं ही रसदान करत हें ॥ **रुचि मानी** कहिवेसों जेसे भोजनमें रुचि होय तबही स्वाद आवे, और रुचि तो जठराग्नि प्रबल विना होय नहि, और जठराग्नि हे सो भीतरकी वस्तु हे,

तेसे अंतःकरणमें विरहकी प्रबलता होय अर्थात् तीव्र व्यसन होयवेसें चरणकमलके मकरंदमें रुचि होय। तबहीं रसको स्वाद आवे, यातें रुचि कहीं। **मानी** पद कह्यो तासों जो बुद्धिपुरःसर चरण-कमलको हीं माने वेई दानके अधिकारी हे। यहां पद कह्यो तासों अंगुलीनिर्देश करके प्रत्यक्ष निकट हीं चरणकमल दिखाये, दूर नहीं। अलिपदसों अन्य पुष्पको अभाव सूचित कीनो। कारण कमलपुष्प विना अन्य पुष्पमें अलिकुं उत्तम प्रकारकी मधुरताको अभाव हे। अथवा अलिपद सों रस जहांसों नाशकुं नहि प्राप्त होय हे, अथवा जिनसों **रस नाशकूं** नहि पावत हे सो अलि कह्यो जाय। यातें अनन्यताको पूर्णभाव सूचित कीनो। **पदकंज** कह्यो तासों—कं—जो सुख, जहां सो जन्म्यो हे एसो जो पद अर्थात् सुखको मूल हे, जहां दुःखको अभाव हे, एसे पदकंज पर जाने अलिरूपसों रुचि मानी हे। ताहीकुं श्रीवृन्दावनरम्यक—जो पूर्णपुरुषोत्तम केवलधर्मी स्वरूप रस-रूप हे, ताको हीं आप दान करत हे, अन्य स्वरूपको नहि। अथवा अन्य जो अलिरूप पूर्ण अधिकारी व्यतिरिक्त जो हे ताकुं भी नहि यह सूचित कीनो वामें सप्रेमभक्तिरसता प्रगट दिखाई। अब उपर कहे एसे भक्तकुं एसे स्वरूपको दान करत हे। एसे जो दानी हे, उनके स्वरूपको वर्णन करत हे **भ्रूविलास इति** ॥ श्रीमहाप्रभुजीको प्रथम तीन अंगको—१ भ्रू, २ अंतःकरण तथा ३ नेत्रकमल। इन तीनो ठिकाने जो भाव दरस रह्यो हे ताको कहत हे। भ्रू भगवानके विलास करवेको स्थान हे। अंतःकरण एसो गहन हे, अर्थात् अत्यंत गहेरो—विस्तारवारो हे कि जहां व्रजभक्तनसहित भगवानको निवासस्थान हे। याहीतें पुर कहिके वर्णन कीनो। ओर नेत्र रासलीला करवेको स्थान हे। रासरसको जहां समूह हे वह **स्थली** पद कह्यो तासों स्थली जो अकृत्रिम, भूमि वनी बनाई नहि, अर्थात् स्वतःसिद्ध भूमि जो हे वाहिकुं स्थली कहत हे। यामें यह जतायो जो श्रीमहाप्रभुजीके नेत्रकमल तथा अंतःकरणरूप स्थलीमें सदा सर्वकाल भगवान व्रजभक्तनसहित विलास कर रहे हे यह सूचित कीनो। या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके तीन अंगको भाव पद्मनाभदासजीकुं दृश्यमान होय रह्यो हे, यातें **दरसानी** एसो कह्यो। अब भगवानके सुखकी अवधिको कहत हे **नंदसूनु** इति ॥ जेसे भ्रमरगीतमें उद्धवजीने गोपीजनकी स्तुति कीनी हे, तामें प्रथम ब्रह्मकल्पतें भक्ति प्रवृत्त भइ, तब सों लगाय भक्तिकी अवधि—सीमा—गोपीजन ताई दिखाई। तेसे पद्मनाभदासजीने भी भक्तजनसों भगवानकूं जो सुख प्राप्त होय हे, ताकी यहां अवधि दिखाई। अवधि कही तासों रासलीलैक-तात्पर्याय नमः यह श्रीप्रभुचरणने आज्ञा करी हे या अर्थ के भावभावित होय भगवानके सुखकी जामें अवधि हे एसो भी रासलीलाको तात्पर्य हे, अर्थात भगवानने प्रत्येक अवतारमें प्रत्येक भक्तनके लीये जूदो जूदो रूप धरिके एक एक कार्य कीनो। अथवा एक रूपसों अनेक कार्य करके पीछे अंतर्धान भये। अर्थात भक्तको दुःख मिटाय—उतनोहि सुख मान अंतर्धान भये. परन्तु कोइ भक्तनसों कोइ अवतारमें भगवानकुं पूर्ण सुख प्राप्त भयो नहि। ओर यहां तो आप

स्वतः सुख होय के भी अत्यंत सुख मिलवेकी इच्छाके अर्थ व्रजभक्तनके साथ अनेक रूप धारण करके वारंवार रासलीला करके यह जतावत हे जो मोकुं यहां विना अन्यत्र कहुं भी सुख नहीं है, यह विरुद्ध धर्म करके अद्भुतरसता दिखाइ। यातें सुखकी अवधि कही। नंदसूनु सुख एसे कह्यो तासों नंदरायजीकुं पुत्रभावसों आनंदकर्ता यह एकदेशी भाव जतायो। अथवा नंद कहीये आनंद. सूनु–पुत्र अर्थात् आनंदपुत्र एसे काहिवेसो जहां भक्तके हृदयमें भगवदानंद प्रगट होत हे तहां ही भगवानको प्राकट्य होत हे। यह सर्वदेशी भाव जतायो। आनंदरूप होय के भी भक्तनतांइ सुखकी अवधि मानत हे। यातें सुखकी अवधि यहां तांइ हे अन्यत्र नहि हे। याहीतें यहां लों पद हे। ताहीकुं पद्मनाभदासजी कहत हे को लो। यह अंगुलि–निर्देश करके यहां–निकट ही–भगवानके मुखकी अवधिको स्थान श्रीमहाप्रभुजी हें, तीनकुं लो कहीये या आनंदरूप स्थानको ग्रहण करो, या प्रकार जीव पर कृपा करत हे। यामें करुणारसता सूचित कीनी। या प्रकार आनंदको अवधिके अंतर्भाव दिखायके अब बहिर्भाव दिखावत हे–**मंडल ओर पास रुहपानी**–रुह–कमल पानी–हस्त–अर्थात् जेसे रासलीलामें हस्तकमलको मंडल होय ता प्रकार नेत्रकमलके प्रकाशको मंडल हे। ओर पास कह्यो तासुं भ्रुकुटिसो लगाय हृदयकमल तांइ परितः रासस्थलीको मंडल हे। अथवा श्रीमहाप्रभुजीको भ्रूसों लगाय हृदयकमळ तांइको जो भाग हे सो आदि वृंदावनरूप हे। ओर वाके मध्यमें जो नेत्रकमळ हे तामें आनंदकी निधि भगवान व्रजभक्तन सहित सर्वकाल रासलीला करत हे। याहीतें भ्रूःकाल, अर्थात् सर्वकाल रासलीला आनंद विलस रहे हे; यह सूचित कीनो। अथवा भगवानके सुखकी अवधि श्रीमहाप्रभुजी तांइ हे। याहीते भगवान यहां ही निवास करत हे; यह सूचित कीनो॥ [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजी महाराजके यह वचनामृत विनके श्रीबेटीजीने लिखे हे।]

तृतीय वचनामृत—एक समें श्रीकाकाजी महाराजने एसें आज्ञा करी जो आपुने श्रीलाडिलेशजीके स्वरूपको भाव श्रीलाडिलेशजीके नाममेंसुंही प्रगट दीखे हे। तब हमने पूछी जो आप आज्ञा करो, तब हमकुं खबर पडे। तब आपने आज्ञा करी जो लाडिली जो श्रीस्वामिनीजी, तिनके ईश नाम पति भये. सो कोनसे समें? एक समय श्रीनंदरायजीकी गाय खोय गइ। ताकुं हेरवेकुं श्रीनंदरायजी आप पधारे। तिनके संग हठ करिके बालक बालभावकी नांइ श्रीठाकुरजी पधारे। वा समें गायकुं हेरते हेरते सांज पड गइ। सूर्य अस्त होय गयो। ओर मेघकी श्याम घटा चहुंदिस छाइ गई। ओर चांरों आडी बीजली चमकवे लग गई। ओर मेघ भी खूब वरसवे लग्यो। तब श्रीनंदरायजीनें मनमें विचार्यो, जो यह बालक संग हे, सो डरपेगो, सो कोनके संग

वाकुं घर भेजनों ? यहां कोइ मनुष्य दीसत नाही । एसे विचार करिके बहुत चिंतामें मन लग गयो । ताही समें श्रीस्वामिनीजी रावलमें विराजते हते । सो विनकुं श्रीनंदरायजीनें बुलाये । तब आप पास आये । तब नंदरायजीनें कही, बेटी राधिका, इतनो काम करो के या कन्हैयाकुं हमारे घर वाकी मांके पास पहोंचाय आओ । तब श्रीस्वामिनीजीने कही, हां हां लाओ, बडे प्रेमसुं बहोत जतन करीकें घर पहोंचाय आवुंगी । आप निश्चिंत रहो । असे कही के श्रीस्वामिनीजी प्रभुनकुं गोदमें पधरायकें चले । रस्तामें आपश्री स्वामिनीजी मनमें विचार करवे लगे, जो वर बहुत सुंदर हे; परंतु छोटो हे, सो कैसे व्याहो जाय ? में बहुत बडी होय गइ । एसें मनमें विचार करवे लगे, तब प्रभु अंतर्यामी होय गये । सो श्रीस्वामिनीजीके हृदयकी जानी । आपश्री स्वामिनीजीके बरोबर होय गये । फेर श्रीस्वामिनीजीको मनोरथ पूर्ण कीनो । फेर आप बालक होय गये । तब श्रीस्वामिनीजीने, नंदरायजीके घर प्रभुनको पहुंचाय दीए, और श्रीयशोदाजीसुं कही, के में बडे जतनसुं प्रभुनकुं पधराइ लाई हुं, सो आप जतन करकें राखो । एसे कहिकें श्रीस्वामिनीजी घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी है । सो जो क्षत्रागी वैष्णव महावनमें रहत हती, उनकुं चार स्वरूप प्राप्त भये हते । स्वरूपनके नाम एक श्रीलाडीलेशजी, दुसरे श्रीललितत्रिभंगीरायजी, और तिसरे श्रीगोकुलचंदमाजी, और चोथे श्रीनवनीतप्रियाजी, सो तामें सुं श्रीलाडीलेशजी तो जीयादासके मांथे श्रीमहाप्रभुजीनें पधराय दीये । सो विनने चार पहर सेवाकर कर देह थकी ओर लीलामें प्राप्त भये । तब फेर श्रीमहाप्रभुजीके घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी, सो श्रीबालकृष्णजीकुं श्रीद्वारिकानाथजी पधराय दीये । तब विनके संग श्रीगुसांइजीने, श्रीलाडीलेशजीहु पधराय दीये । सो स्वरूप रानपुरमें विराजत हते, श्रीगोकुलनाथजी वेरावल पधराय लाये । सो वार्ता पहले लीखाइ है ।

इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको तृतीय वचनामृत संपूर्ण.

चतुर्थ वचनामृत—एकदिन श्रीकाकाजी महाराजने एसें आज्ञा करी । जो अपुने उपर श्रीलाडीलेशजी विराजे है, जो बडो प्रतापी स्वरूप है । एकदिन हमारे श्रीदादीजी महाराजकुं आपने स्वप्नमें आज्ञा करी, जो हमकुं राजभोगमें खीरके संग मोनकी पुरी धर्यो करो । सो आपने न मानी ओर परदेशकुं पधारे । पाछलसुं मंदिरमें चोरी भई । आभरण वस्त्र सब चोरीमें गए, तिलक कंठी सब गये । आपकुं तार करके पधराये । फेर आपने पंचामृत स्नान करवायकें आपने छ गहेना तोडके सब आभरण बनवाये । तब फेर श्रीलाडीलेशजीने आज्ञा करी, के तुमने मोनकी पुरी नही आरोगाई । तासुं हमने चोरी करवाई तब फेर श्रीदादाजी महाराजने मोनकी पुरी आरोगाई एसें तामसी प्रभु है । और एक समे एक भीतरीयाने मोनथारकी सामग्री चांदीके थारमें दाली हती, सो वा भीतरीयाकी बुद्धि बीगडी, सो थार सामग्री सब चोरके घर ले गयो । और एक मलायनीकुं दे दीयो सो आपुने वृंदावन मुखीयाजी तथा जीणा अधिकारीकुं स्वप्नमें जताइ ।

जो मेरे आरोगे विना वो मोनथार ले गयो । सो मोनथार वा मत्थायर्नीके घर है, तो तुम अभी जाओ तो मिले । फेर वाइ समें वे गये । सो वाके कीमाड खुल गये । ओर वाकुं धमकायो, तब वाने थार दे दीयो । आधो विनने वामें ते खाय लीयो हतो, और जो आधो हतो सो समुद्रमें पटक दीयो और सुतारके पास थार उजरवायो, और पाछे थार मंदिरमें धर्यो और एक समें मंदिरके परिचारकने मालमेंते तीन मोती चना चना जीतने सो लेकें रेल्में बैठके केशोद उतर्यो, सो वात श्रीलाडीलेशजीने जीणा अव्यारु तथा मुखीयाजीकुं स्वप्नमें जताई । जो वो परिचारक मेरे तीन मोती लेकें भाग गयो हे । सो केशोदमें हे । तुम जायकें अवी पकडो । मोती मिल जायंगे। वाइ समें रेल्में बैठके केशोद गये । वह दूसरे ठिकाने जायवेके लीये रेलमें बैठवेकुं आयो, सो वाही समें स्टेशनपे पकड्यो, ओर वाके झोलामें ते मोती खोलकें ले आये । एक समें जीणा अव्यारुके खायवेके लीये तमाकुं मंगाई हती, सो उपर छतपे सुकाई हती, सो आपकुं वास आइ । सो सिंहीपे ते ढक आयो सो गिर पड्यो ओर स्वप्नमें आज्ञा करी, जो तुमारी तमाकुं की वास बहुत आवत है । सो तमाकु मत सुकाया करो । तादिनसुं तमाकु खानो छोडी दीयो । ओर एक समें श्रीगुसांइजीके उत्सवके दिना जलेबी की सामग्रीको थार भीतरीया भोग धरायके ल्यो । सो राजभोग आये हते । सो ताती ताती जलेबी हती । सो भीतरीयानें एक लेकें मोढेमें डारी । ताही वीरीयां आपने वाकुं चमचा मार्यो, सो बहारताई चटका सुन्यो । वाको मोढो टेढो हे गयो। सो जीयो तहां ताई रह्यो । फेर राजभोग सब छी गयो, ओर फेर सामग्री करी तब राजभोग आये । ओर वा भीतरीयाकुं रजा दीनी । ओर एक समें जीणा अव्यारुसुं तथा मुखीयाजीसुं स्वप्नमें आज्ञा करी । जो यहां मंदिरके सामने एक श्रावकको घर हतो, तहां छतपे टोकरामें वाल बोये है । (वाव्यो छे.) सो वाको सगग भाजी बहुत अच्छी उगी है । सो लायके राजभोगमें [illegible] । तब वा वीरीयां दोउ जन गये । वहां जायकें वाकुं जगायो, और वासुं कही जो तुम्हारे यहां छतपे वालकी भाजी उगी हे, सो हमकुं देवो । हमकुं एसी आज्ञा भई है । वात सुनके वाकुं आश्चर्य भयो, ओर भाजी दीनी ओर वाने कही, जो तुमारे श्रीठाकुरजी एसें वाते करें है, सो हमकुंभी वैष्णव करो । फेर हमारे दादाजी महाराज पधारे तब वैष्णव भये एसे एसे बहुत चरित्र है सो कहां ताई लीखे ?

इतिश्री चतुर्थ वचनामृत सम्पूर्ण ॥

(संग्रहकर्ताः-परिख अमृतलाल महुवावाले.)

ગોલોકવાસ—શ્રીદ્વારકેશી શ્રીદ્વારિકાધીશના અધિકારીજી મહુવાવાળા ભગવદીય છગનભાઈ પારેખે ગયા માસમાં ગોલોકવાસ કર્યો જાણીને વૈષ્ણવોને અનહદ ખેદ થશે. સદ્‌ગત છગનભાઈએ સરકારી નોકરીમાંથી પેન્શન લીધા પછી પોતાના ગુરુઘર શ્રીદ્વારકેશીની ઉમદા સેવા કરી હતી, પ્રામાણિકતા તથા નીતિથી તેમણે વહીવટ ચલાવ્યો હતો અને કરકસર કરીને ગુરુઘરમાં લાભ થાય તેવી યોજના કરી હતી. તેમના અમલમાં કેટલાં કાર્યો તો યાદગાર થયાં છે. પ્રભુ તેમને અમર આનંદનું દાન કરો.

भक्तके दर्शन.

(लेखकः—श्रीयुत वेलजीभाई नथुजी मिस्त्री, राजकोट.)

भक्तका अवतार भूतकालमें भी विद्यमान रहता है । यह कथन सत्य ही है । वैसे भगवत्प्रादुर्भाव करुणामूलक है, वैसे ही भक्त इस आर्यभूमिपर भक्तिका प्रभाव अचल रखनेके लिए अलौकिक देहसे विचरते रहते हैं । कथन मात्र हैं कि, भक्त लीलाप्राप्तिके पीछे भूमिपर नहीं रहते है । कथन है कि सब मर जाते हैं और भक्त नहीं मरते हैं । भक्त अचल और अमर हैं । कोई कहेगा कि ऐसा भक्त किस तरह मिल सक्ता है ? और उसका दर्शन हम पा सक्ते हैं ? इस बातपर हमको जो अनुभव हुआ है वह सब श्रीवल्लभसृष्टि समक्ष कहकर कृतार्थ बनेंगे । भला, स्मार्त त्रिमूर्ति विद्यमान नहीं होती तो जगत्की उत्पत्ति, पालन, संहार कैसे हो सकता था ? इसी तरह भक्तिके निर्वाहके लिये महानुभावोंका प्राकट्य भूतलपर अवश्य होना ही चाहिये । परंतु उस भक्तका दर्शन करना सहज बात नहीं है । जिसको वे कृपाकर दर्शन देते है, वही दर्शन पा लेते है, अब कौन भक्त है इसकी पहिचान कैसे होती है ? इस प्रश्नमें जानना चाहिये कि, प्राचीन भक्त चरित्र मनन कर, उसीका स्वरूप हृदयपर जमा लेना चाहिए । फिर कभी मौका मिल जाता तो पहचान अवश्य पडती है । संवत १९४४ की सालकी बात है । भैया पुरुषोत्तमदास पीताम्बरदास बडे भक्त थे । सात सात बार मात्र दुग्ध आहार कर श्रीमद्भागवतजी कि सप्ताह की थी । हम और इनका स्नेहसंबंध—अवर्ण्य था । हम दोनो हरसाल श्रीगुरुचरनके जन्मदिन पर जुनागढ जाते थे । उपर लिखी गई सालमें हम जानेके लिये तैयार हुए । उस समय एक महापुरुष घरपर आय गये । उम्र बरस पंद्रह—सोलकी थी । पासमें एक कन्तानकी बालटी और छोटासा पुस्तक, एक पुरुषोत्तमसहस्त्रनामका था । सिवा कुच्छ चीज न थी । पहेनी हुई छोटीसी धोती और उढनेके लिये पुरानासा उपरना था । एक दिन रहे, और हमने जुनागढ चलते समय उनसे कहा—आप हमारे संग चलोगे ? तब आनेके लिये कबूलत दी, उस समय रेल चलती नहीं थी । एक बैलगाडी किराया ले ली थी । हम लोग गाडीमें बैठ गये । भक्तको बैठनेके लिये विनति की । तब भक्तने नाही कर दी । वे तो गाडीकी साथ पैरसें चलने लगे । हम दो कोस गये तब भक्तने और गाँवकी तरफ चल दिया । हमने कहा—कहां जाओगे ? उनने कहा—अब हाल आउंगा । हम दो कोस आगे बढे, इतनेमें न मालुम किसी औरसे आ गये । गाडीकी पास खडे देखे । इसी तरह तिन दिनमें सात—आठ दफा ऐसा कौतुक दिख पडा । हम लोग सोचने लगे कि ये कोई कारुणिक अवश्य होंगे । फिर न मालुम कौन थे ?

जुनागढ पहुंचे । महाभक्त राजनागर वैष्णव त्रिभुवनदासजीके यहां ठहरे । दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीमहाप्रभुजीकी बेठकमें जानेके लिये पाँवसे चलनेका शुरु किया । भक्त भी साथ थे,

वैठकजी पहुंचकर स्नानकर मंदिरमें आपके सांनिध्य पहुंचे। दर्शन किया, भक्त स्नान करते थे। दंडोतकर हमने झारीजी भरनेको सोचा। मुखीयाजीने कृपाकर झारीजी भरनेकी सेवा दी।

भक्त भीतर आकर श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपमें विलीन हो गये। कुच्छ विलक्षण दशामें थे। वे वहां स्थित हुए नेत्रोंसे आंसु टपका रहे थे। वृक्ष की तरह वे तो वहां ही जम गये। हम लोग सब सेवा पहुंच चुके थे। आधा घंटा हो गया, फिर भक्तने अपने नेत्र प्रभुकी औरसे नेक भी हटाया नहीं। हम बाहिर आये। चलनेके समय कहा-वे तो तुरत दंडवत् करने लग गये। दंडवत् करते बेहोश हो गये। हम हाथ पकड बाहर लाये। थोडी देरमें कुच्छ सचेत हुए। राजभोग आरती हुई। मुखीयाजीने प्रसाद लेनेके लिये कहा। पोतना कर गये। अधरामृत पधराये वही दिन मीठी कचोरी आरोगे थे। अद्भुत स्वाद था। भक्त पासमें बेठे थे। हम लोग प्रसाद पाने लगे। भक्त चार ग्रास ले खडे हो गये। हम दोनो भैया, भैयाकी महतारी और बहुत विचारने लगे कि, रास्तेमें भी बिल्कुल कुच्छ नहीं पाया। और इहां भी नही लिया। मालुम नहीं, कौन है? हम प्रसाद लेकर कपडे पहननेकी तैयारी करते थे, इतनेमें भक्तने चल दिया। हम बिना कपडा पहेने पीछे गये। वे तो रेवतीकुंडकी पश्चिमकी खाईमें उतर पडे। हम भी पीछे उतरे वहां गहेरा जंगल है। पथ्थर और वृक्षसे पूर्ण है। रास्ता उपर जानेका भी नहीं था, और भक्त पर्वतके उपर बिना रास्त चलने लगे। हमने बहुत निषेध किया; बाबा उपर मत जाओ, बडा भारी जंगल है, हिंसक प्रानी भी बहुत रहते है। ऐसे बहुत विज्ञापन किया। भक्तने एक भी नही [illegible]। पथ्थरोंपर पैर देते देते एक घंटामें उपर पहुंचे। हम तो सामने देखते ही रह गये। हम दोनों फेर धींधाईके रोने लगे। बहुत पुकारा। कुच्छ नहीं सुना, और वे पहाडकी उपर चले गये। हम वेठकजीमें आये। बहू और महतारी चितामें रहे थे। इतनी देर कहां ठहरे होंगे? हमको आते देख दोनोंमें जी आया। "अरे तुम दोनो घंटा देढ घंटा तक बिना कपडा पहेने कहां गये थे? हमने सब वृत्तांत सुनाया, तब उनको भी बडा दुःख हुआ; सांजके पांच बजे मंदिर आये। महाराजश्रीकुं सब बात सुनाई। आपने आज्ञा की कितुम्हारे भाग्यबलसे दर्शन मिले। चौरासी भक्त सदैव भूतकालपर आविर्भूत है। किसी वखत दर्शन प्राप्त हो जाता है। भक्त त्रिभुवनदासजीने कृष्णदास मेघनका कहा। राजकोटमें नारायनदासजीसें बात की, इन्हें श्रीशुकदेवजीका दरसन बतलाया। इससे निश्चित है कि, भक्तका प्रादुर्भाव भूतलपर सदैव रहता है। जहांपर धर्मीका प्राकट्य हो वहांपर धर्म क्यों न हो? वह भक्तके दर्शनका लाभ हमारे श्रीगुरुचरन समीप जानेका था। गुरुकी कृपाके आगे सर्व अलौकिक फल अवश्य सामने आकर रहते है।

द्वितीय पदनो अर्थ.

શ્રીવૃંદાવનમાં સુંદર રસનું દાન કરનાર આપ શ્રીવલ્લભપ્રિયાજ છે, તેથી તેની પ્રાપ્તિને અર્થે સર્વ સખીજનની રુચિ આપશ્રીના ચરણકમલમાંજ લાગી રહે છે. હવે સુંદર શ્રીવૃંદાવન, જે પ્રિયતમના રસરાસનુંજ સ્થલ છે, જેથી તેનું સૌંદર્ય સહજસિદ્ધજ હોય. જ્હાં સકલ સામગ્રી સૌંદર્યજ હોય. આપ વલ્લભા છે. જેથી જ્યાં સર્વત્ર વલ્લભ હોય તેજ વલ્લભા કહેવાય. તેમ આપને સર્વ સખીયો બહુ પ્રિય છે. જેથી તેમની પણ સૌભાગ્યસિદ્ધિને અર્થે આપ રમ્યક રસનું દાન પ્રાપ્ત કરાવે છે. આપ રસાધિષ્ટાત્રી હોવાથી અને આપજ સર્વ રસનાં કારણભુત હોવાથી સમ્યક બધા પ્રકારે રસનું દાન નિજવત્ સ્વસખીઓને પ્રાપ્ત કરાવે છે. એ રમ્યક રસની પ્રાપ્તિમાં આપના ચરણકમળની રુચિજ કારણરૂપ છે, જેથી સ્વસખીયો આપનાં હૃદયગત સૌંદર્યનું ધ્યાન નખથી તે શિખાપર્યંત કરી રહે છે, અથવા ભૂતળના પ્રાકટ્યે પણ એ રમ્યક રસપ્રાપ્તિ એ ચરણશરણ વિના કદી થઇ શકતી નથી. અથવા એમ ભાવ પણ પ્રાપ્ત થાય છે કે જ્યાં એ કમળ હોય ત્યાં અલિ ભ્રમર પણ હોય, કમળ પ્રત્યે ભ્રમરનું સહજપ્રિયત્વ હોય છે. તેમને મકરંદ પ્રત્યેજ રુચિ હોય છે. તેમ તે ભક્તરૂપ છે. ભ્રમર ચરણકમળના મકરંદ તરફ લોભાઇ રહ્યા છે. હવે એથી પણ આગળ વિશેષ ફળ સૂચન કરે છે.

જ્યાં આપનો વિલાસ સદાને માટે અન્તઃપુર જે રાસસ્થલી તેજ હૃદયગત અને દ્દષ્ટિગત રહી આવે છે. અથવા પ્રભુનું અંતઃપુર જે હૃદય તેની અને ભૂવિલાસની રસમાધુરીની પ્રાપ્તિ સ્વઅતરંગ સખીજનને રમ્યક રસની પ્રાપ્તિ આ પ્રમાણે કરાવે છે, કેમ કે ગહવર રાસસ્થિતિ બતાવી છે. ગહવર હોય ત્યાં કોઇની ગમ્ય નજ હોય, તેને ગમ્ય કરાવનાર શ્રીવલ્લભાજ છે, વળી અન્તઃપુર જનાનો કહેવાય. ત્યાં પ્રવેશની દુર્લભતાજ હોય છે, ત્યાં તો અંતરંગ દાસદાસી સહભાવે એ સ્થલ સોહામણું હોય (રમ્યક હોય). વળી રાસસ્થલી કહી છે. જહાં રસદાનની પ્રાપ્તિ થતી હોય, એ રાસસ્થલી કહેવાય, વળી જ્યાં રસની અવધિ હોય, જ્યાં ઉદ્દીપન વિભાવાદિ હાસ્ય, કટાક્ષમોક્ષ હોય.

જહાં ભક્ત પર સદા કૃપાકટાક્ષથી સ્નેહરસની ઝડી વરસી રહી હોય. જહાં મંડલ જોર પાસ રુહપાની, જહાંશ્રી પ્રિયા પ્રિયતમ મંડળ જોડીને સંગમાં બિરાજી રહ્યાં હોય. આસપાસ નિત્યસિદ્ધા શ્રીચંદ્રાવલીજી શ્રીલલિતાજી શ્રીવિશાખાજી આદિક મંડલમધ્ય યુગલ સ્વરૂપ ગલ બાંહ દઇને બિરાજી રહ્યાં હોય. તહાંજ સકલ સુખ અવધિ કહી શકાય.

વાગધીશ—શ્રીવલ્લભ (वाक्पतिर्विबुधेश्वरः)

જે રસ ઉપર બતાવેલ નિત્યસિદ્ધાજીને પ્રાપ્ત કરાવામાં પણ આપજ અને એજ રસ ભૂતલપર નિજપદરુચિકર ભક્તને પ્રાપ્ત કરાવે છે. જહાં જહાં આપ

સ્વઇચ્છાએ જે જે જીવની એ ચરણકમળના પરાગમાં રુચિ અક્ષય બની રહેલ હોય તેને ઉપરની લીલાનો અનુભવ પ્રાકૃત વિગ્રહે પણ આપ કરાવી આપે છે. જે ફલનું સૂચન પોતાની વાકસુધામાં બતાવ્યું છે. ૧. સેવાપયોગી અલૌકિક દેહ, ૨. સાયુજ્ય ૩. અલૌકિક સામર્થ્ય, તેથી એ રસપ્રાપ્તિનું મૂળ આપજ છે. આપનું શ્રીવિગ્રહ શ્રીવેણુજી છે. તેની ભક્તને તો સદાકાળ સુધાપિપાસાજ બની રહે છે. અને તે પ્રાપ્તિ શ્રીમદ્ગોકુलनाथसंगमसुधा. એ પ્રમાણે મુજબ થાય છે.

આ અલૌકિક લીલારસવિષય છે, તેથી સખી સુરઆવત સર્વનિજ ભક્તને જે જે લીલા વ્રજ પ્રત્યે અખંડરાસમંડલમાં થાય છે, તેજ લીલા આપ નિજવાણીથી એ રસપાનનું નિજ ભક્તને દાન કરે છે, જેમાં સ્વપ્રભુસમ્બંધી રહસ્યલીલા તે શ્રીસુબોધિનીજી દ્વારા (ઉચ્ચાર આનંદ તે અધિક દીધો) એ પ્રમાણે વચનામૃત-દ્વારા સાક્ષાત્ સુખપ્રાપ્તિનો અનુભવ સિદ્ધ કરાવી આપ્યો.

જ્યારે શ્રીવેણુજીનો નાદ થયો, ત્યારે પણ અતરંગ ને બહિરંગ સર્વેએ શ્રવણ કર્યો, તથાપિ શ્રીવેણુસુધાસ્વરૂપનું દાન તો જેને જે જે પ્રસંગે થયું હતું, તેનેજ તે તો સુધાદ્વારા રસાત્મક સ્વરૂપનો પ્રાદુર્ભાવ હૃદયગત થયો. તેમજ બીજો ભાવ વિચારીએ તો જે જે જીવોએ વેણુજીનું શ્રવણ "તાન ધ્યાન મુનિ મયૂર રૂપે સાંભળે ધરી ધ્યાન, નિત્ય લીલા ગાન શ્રવણે કરે તે મધુપાન" એના અમૃતનો સ્પર્શ માત્ર નિજ અંતરંગનેજ કરાવી આપ્યો. તેવીજ રીતે અત્રે પણ અતરંગ શ્રીપદ્મનાભદાસજી સરીખા વિરલાનેજ એ રસપ્રાપ્તિ થઇ. તે દ્વારા અનેક જીવ એ ચરણશરણમાં પ્રીતિવાળા હતા, તેને એ લીલારસની પ્રાપ્તિ થઇ, સપ્તરંધ્ર પ્રગટ કરીને સપ્ત રંધ્રથી રસનો આવિર્ભાવ થયો. રસાગમમાં સપ્તછિદ્ર રસાગમ ઉદ્દીપનભાવ બોધક છે, તેમ સકલ જીવના ઉદ્દીપનાર્થ શ્રીગુસાંઈજી (વેણુજી) તેના સપ્ત રંધ્ર સપ્ત બાલક દ્વારા અનેક જીવને એ રસદાન સુદૃઢ કરાવી આપ્યું જેમાં આપની સર્વ પ્રકારની ચતુરાઇથીજ વિના અધિકારી નજ ગ્રહી શકે, અથવા એ ભાવ સ્વરૂપનું હૃદ્‌ગત ધ્યાન કરવાવાળા ભાગ્યવાન ભક્ત બહુ સયાના હોય (ચતુર હોય તેજ ચતુરના રસને જાણી શકે.)

જે શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપા સર્વ અલૌકિક સુખને લાવનાર છે. કેમકે આપ સર્વે સુખપ્રાપ્તિમાં કારણરૂપ છે. વિવિધ ભાવમયસ્વરૂપ હોવાથી भावांशुभूषिता मूर्ति છે. અનેક ભાવથી શોભતું અને સર્વ અંગ અંગ પ્રતિ લીલારસપરિપૂર્ણતા જેમાં છાઇ રહી છે. વળી ભક્તના કલ્પવૃક્ષ હોવાથી ભક્તમનોરથપૂરક છે, જો કોઇ જીવ સમસ્ત પદાર્થની સાથે સ્વનિવેદિતઆત્મા કરી ચરણકમલ સન્મુખ રહે તોજ આપ તો કૃપારૂપી ગાંઠ તેની પાસે ખોલી દે છે. જે ગાંઠમાં સર્વ પ્રકારનાં સુખ સમાએલાં છે. આવા નિજ જનને શું વર આપે છે? યમુનાપુલિનઠોર જહાં રાસસ્થલ છે, તે લીલાપ્રાપ્તિ કરાવી આપે છે.

ભાવનાજ ભૂષણનો અંગીકાર કરીને સુંદર રસઘટા શ્રીમુખકમળ પર સદા બિરાજમાન છે, એ ઘટા જેના પર દશનખચંદ્રની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત થાય, ત્યાં એ રસઘટા વરસે છે, એહી આશાનું સ્મરણ શ્રીપદ્મનાભદાસજી કરી રહ્યા છે. એથીજ આપના શ્રીમુખકમળ પર દૃષ્ટિ લાગી રહી છે.

ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીદ્વારકેશલાલજી પોરબંદરવાળા શ્રીની કૃપા નિરંતર સ્મરણ કરવાને થએલી હોવાથી તેજ પ્રભુએ મારી બુદ્ધિમાં પ્રવેશીને લખાવ્યું તેજ નિવેદન કર્યું છે. મંપણું પદ ક્રમ સદ માળા શુદ્ધાદ્વૈત ધારણ કરે એવી અભિલાષાને પ્રભુ ભગવદીયકૃપાથી પૂર્ણ કરો. દા. દા. વે. ન. મીસ્રી.

નિત્યલીલાસ્થ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીષટ્પીઠાધીશ્વર શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજનાં

વચનામૃત.

(લેખકઃ-ભગવદીય વેલજીભાઇ કેશવજીભાઇ.)

સંવત ૧૯૭૨ ની સાલમાં શ્રીવ્રજપરિક્રમામાં શ્રીગોપાલલાલજી (મથુરાંજી વાલા) ની સાથે આપ બિરાજતા હતા. શ્રીગિરિરાજજીની તલેટીમાં સુરભિકુંડ ઉપર પાલમાં આપ બિરાજતા હતા. તે વખતે એક વૈષ્ણવે વિનતિ કરી જે મહારાજ, બ્રહ્મસંબંધ ઘણાજ વૈષ્ણવને એકજ પંક્તિમાં એકજ વખતે આપ કરાવો છો, છતાં તેમાંના કોઇ વૈષ્ણવને અધિકભાવ હોય, કોઇને ઓછો ભાવ અને કોઇને સ્થિર હોય છે, તો એકજ હારે એકજ સમયમાં નિવેદન થયા છતાં ભાવમાં ન્યૂનાધિકતા કેમ દેખાય છે ? તે કૃપા કરીને આપશ્રીનાં વચનામૃતદ્વારા અમને દાન કરો.

આપશ્રી આજ્ઞા કરે છેઃ-પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ તેટલું દાન. દરિયામાં છીપમાં મોતી પાકે છે; તે સ્વાતી નક્ષત્રનું જલ છીપમાં પડે છે, તેનાં મોતી થાય છે. પણ તે છીપ સ્વાતિનું જલ લેવાને અતિઆતુર થઇને અધર ઉચેથી મેળવે છે. તેમાં ઘણીજ ઉંચી કીંમતનાં મોતી થાય છે અને દરિયા ઉપરજ મોઢું ખુલ્લું રાખી જે છીપો પડી રહે છે; તેમાં પણ મોતી તો જરૂર થાય છે, પણ આતુરતાથી ઊંચે ચઢી સામે જઈ ઝીલનારાથી છીપોમાં મોતી જેવાં ઊંચી કિમતનાં મોતી તેમાં થતાં નથી. સાધારણ કીંમતનાં મોતી થાય છે. સ્વાતીનું બુંદ લેનાર (ઝીલનાર) છીપોમાં તમામમાં મોતી તો ચોક્સ થાય છે. તેમજ આંહી જે પ્રભુસંબંધી આર્તિ કરે છે તેને વિશેષ ભાવનું દાન પ્રભુ કરે છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ એટલું દાન.

વૈષ્ણવ વિનતિ કરે છેઃ—હે કૃપાનાથ, આર્તિ જેટલું દાન તે તો મર્યાદામાં પણ છે. તેમ લૌકિકમાં પણ છે, જેટલી મજુરી કરે તેટલું દ્રવ્ય લૌકિકમાં પણ મળે છે. તો પુષ્ટિમાર્ગ એટલે કેવલ અનુગ્રહ માર્ગ છે. તે શી રીતે ? તે કૃપા કરીને સમજાવો.

આપશ્રી વચનામૃત કરે છે. તમારે અનુગ્રહમાર્ગ (પુષ્ટિ માર્ગ) જોવોજ હોય તો ઊંઘ (નિદ્રા) નો ત્યાગ કરવો તે શી રીતે ? જે ઘણા દિવસની ગાઢ નિદ્રા

એટલે બહુજ નિદ્રા આવેલી છે. જે હું ક્યાંનો જીવ છું? ક્યાંથી આવ્યો છું? તેનું ભાન ભુલાઇ ગયું એટલે જતું રહ્યું છે. તે તો તમે વષ્ણુવો જ્યારે સત્સંગ કરો છો ત્યારે સ્મરણ કરો છો એટલે તેટલોજ વખત તો તે નિદ્રા ઊડી જાય છે ખરી, પણ સાથે આલસનો પણ ત્યાગ કરવો જોઇએ. શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ વૈદિક માર્ગનિરીક્ષા નામના પુસ્તકમાં લખ્યું છે જે રાજાને ઓળખવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, જે રાજા અમુક રાજાનો પુત્ર છે, અમુક તિથિએ રાજાનો જન્મદિવસ છે, અમુક અવયવ રાજાના અમુક રીતના છે, અમુક લક્ષણવાળા છે; અમુક કામ ઉપર, અમુક રમત ઉપર, અમુક ખોરાક ઉપર રાજાને વિશેષ શોખ છે, એવી એવી અનેક રીતભાત પ્રકૃતિ રાજાની જાણવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, પણ રાજાને પ્રસન્ન કરવાને તો પ્રત્યક્ષ રાજાના ગુણ ગાય, રાજાના દરેક કામને ટેકો આપે, અને રાજાના શોખની વસ્તુ રાજાને નિવેદન કરે, તેથીજ રાજા પ્રસન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે તમે વૈષ્ણવો ૫-૧૦ મળીને ઠેઠ નિકુંજની વાતો કરો, તેથી તમોને નિદ્રા તેટલીજ વાર ગઇ કહેવાય ખરી, પણ તે નિદ્રા ઊડવાનીજ સાથે આળસનો પણ ત્યાગ કરીને ભગવત્સેવાનો ઉદ્યમ કરવા લાગી જાઓ એટલે આચરણમાં લો, એટલે તરતજ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત જેનો પ્રકાશ થઇ રહ્યો છે, તે તમોને દેખાશે. શ્રીગુસાંઇજીએ પણ આપ સેવા કરી શીખવે શ્રીહરિ એટલે આપે સેવા કરીને શીખવાડી છે. બીજા માર્ગમાં માત્ર કહીનેજ બતાવે છે, પણ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત છે એટલે કરીને બતાવે છે, માટે જેને પુષ્ટિમાર્ગ જોવો હોય તેણે ઉપર કહેવા પ્રમાણે ઉંઘ અને આલસનો બીલકુલ ત્યાગ કરવો. ભગવદીયે ગાયું છે. "જે આ લીલા આગે નવ સુણી હવે પાછળ નહોસે, અખંડ લીલા કલિકાલમાં બડભાગીઆ જોશે." દયારામભાઇએ પણ ગાયું છે. પ્રસન્ન કરવા હોય જો પ્રભુને તો અભિમાન અલગું રાખ. માટે અભિમાનનો ત્યાગ કરશો અને ઊંઘ આલસનો ત્યાગ કરી જાગૃત થઇ આચરણવાળા થશો તો પુષ્ટિમાર્ગ પ્રકટ જણાશે. આ પુષ્ટિમાર્ગ જે કલ્પવૃક્ષ છે તેનાં કેવળ આનંદરૂપ જે ફલ છે તે ચાખશો.

निर्णयार्णव.

प्रथम तरङ्ग

(અનુવાદક-શ્રીયુત કેશવરામ કાશીરામ શાસ્ત્રી, માંગરોલ—કાઠિયાવાડ.)

૧૦.

નવરત્ન ગ્રંથ વિશે અહીં કાંઇક લખવામાં આવે છેઃ—

प्रीयतेऽमलया भक्त्या हरिरन्यद्विडम्बनम् ॥ (भा. ११-   )

"હરિ ભગવાન નિર્મલ ભક્તિથી પ્રસન્ન થાય છે. બાકી બીજાં સાધનો વિડમ્બણામાત્ર છે." "भक्त्याहमेकया ग्राह्यः (भा. ११-१४-२१) એક માત્ર ભક્તિથી હું (ભગવાન) ગ્રહણ કરી શકાઉં તેવો છું." "वशे कुर्वन्ति मां भक्त्या सत्स्त्रियः सत्पतिं यथा

(ભા. ૯-૪-૬૬) સતી સ્ત્રીઓ જે પ્રમાણે સત્પતિને વશ કરે છે, તે પ્રમાણે મારા ભક્તો ભક્તિથી મને વશ કરે છે." "भक्त्यैव तुष्टिमभ्येति (भा.)પ્રભુ ભક્તિથી જ સન્તોષ પામે છે." એ વચનો સ્પષ્ટ કહે છે કે પ્રભુને પ્રેમલક્ષણાભક્તિથી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. (શ્રીગુસાંઈજીએ નવરત્ન પ્રકાશમાં:—

दारान् सुतान् गृहान् प्राणान् यत्परस्मै निवेदनम् (भा. ११-३-२८)

एवं धर्मैर्मनुष्याणामुद्धवात्मनिवेदिनाम् ।

मयि संजायते भक्तिः कोऽन्योऽर्थोऽस्यावशिष्यते (भा. ११-१९-२४)

"—સ્ત્રી, પુત્ર, ઘર, પ્રાણ એ બધું પરમ પરમાત્માને નિવેદન કરી દેવું." "હે ઉદ્ધવ ! આ ધર્મોથી આત્મનિવેદી ભક્તોને મારામાં ભક્તિ ઉત્પન્ન થાય છે. આમ જેને મારામા ભક્તિ ઉત્પન્ન થઈ છે, તેને કયો અર્થ બાકી રહે છે ?"—(આ બે શ્લોક ઉદ્ધૃત કર્યા છે. તેને ઉદ્દેશીને લાલૂભાઈજી કહે છે કે—) આ વાક્યથી સ્પષ્ટ નીકળે છે કે—આત્મનિવેદન કરવાથી પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે; અને નિવેદન ત્યારે થાય છે કે જ્યારે દેહ વગેરેમાં 'આ મારા છે' એવા પ્રકારના મિથ્યાજ્ઞાનની નિવૃત્તિ થતાં 'આ બધાંય પ્રભુનાં જ છે,' તેવી બુદ્ધિ થાય.

"क्रीडार्थमात्मन इदं त्रिजगत्कृतं ते स्वाम्यन्तु तत्र कुधियोऽपर ईश ! कुर्युः (ભા. ૮-૨૨-૨૦) હે પ્રભુ ! આપે કેવળ લીલા કરવા ખાતર આપમાથી આ ત્રિભુવન પ્રગટ કર્યું છે. પરન્તુ બીજા દુર્બુદ્ધિ પુરુષો આ જગદાદિ ઉપર સ્વામીપણું કરે છે." આ વગેરે અનેક વાક્યોથી સિદ્ધજ છે કે બધાજ પદાર્થો પ્રભુનાજ છે. આમ 'બધા પદાર્થો પ્રભુનાજ છે,' એવી બુદ્ધિ થવાથી દેહ વગેરે બધૂંય પ્રભુસેવામાંજ ઉપયોગમાં લાવવૂં તેનું નામ તે નિવેદન. આ નિવેદન પ્રાપ્ત થતાં પણ જો 'આ ઇષ્ટ અને અનિષ્ટ; આ મેળવૂં અને આ જતૂં કરૂં' એવા વિચારો વગેરેના સ્વરૂપમાં રહેલી ચિન્તા જો કરવામાં આવે તો કરેલૂં આત્મનિવેદન વ્યર્થ જાય; અને તેમ થતાં કશું ન સરે. આ ખાતરજ પરમકૃપાળુ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વર આચાર્યચરણોએ ચિન્તાના રૂપમાં રહેલા આ પ્રતિબન્ધને નિવારવા માટે चिन्ता कापि न कार्या એમ નવ શ્લોકથી ઉપદેશ આપ્યો.

અહીં એક શંકા ઉત્પન્ન થાય કે—આત્મનિવેદન એ શ્રવણાદિ આઠ ભક્તિ પછી છે; શ્રવણાદિ પ્રત્યેક ભક્તિ દુઃખેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે, તેજ રીતે છેલ્લી આત્મનિવેદન ભક્તિ પણ દુઃખેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે. આમ નિવેદનજ અત્યન્ત દુરાપ હોવાથી તેને લીધે ઉત્પન્ન થતી પ્રેમલક્ષણા ભક્તિજ હાથ તાળી દઈ છટકી જાય છે. એટલે તેનાથી થતી પ્રભુ—પ્રાપ્તિજ કેવી રીતે થાય ?

તેના ખુલાસામાં કહેવાનૂં કે—શ્રીમદાચાર્યવર્યોએ નવરત્નના છેલ્લા શ્લોકમાં:—

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम ।

वदद्भिरेव सततं स्थेयम्—

"તેથી હમ્મેશાં સર્વાત્માએ કરી श्रीकृष्णः शरणं मम એમ અષ્ટાક્ષરમંત્ર સતત બોલતાજ રહેવૂં. "આનાથીજ દરેક અડચણ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે" એમ સ્પષ્ટ ઉપદેશ્યૂં છે.

વારૂ, આનાથીજ દરેક અડચણ કે અસિદ્ધિ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે તે કેવી રીતે બની શકે ?

આ શઙ્કાનો ખુલાસો શ્રીગુસાંઇજી તે શ્લોક ઉપરના પ્રકરણમાં ઉત્થાનિકામાં આપે છે. આ શ્લોકને સ્પષ્ટ કરતાં લખે છે કે–" साधनफले एकीकृत्य सर्वेसमाधानमाहुः–" श्रीकृष्णः शरणं मम " એ અષ્ટાક્ષરમન્ત્રમાં સાધન અને ફલને એક કરવાથી આ શઙ્કાઓનું સમાધાન થઈ જાય છે."

(શ્રીલાલુભટ્ટજી આ મન્ત્રનો અર્થ આપતાં કહે છે કે–) ફલરૂપ શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ નિઃસાધનજનોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થયેલા છે. તેઓ બધાનો ઉદ્ધાર કરવાને સદા તત્પર છે. તે પ્રભુ નિઃસાધન એવો જે હું તેનો આસરો છે. અર્થાત્ પ્રભુજ શક્ય અને અશક્ય વસ્તુઓનાં સમ્પાદક છે.

જો કે પોતાની અયોગ્યતાનો વિચાર કરતાં તેમજ શ્રવણ વગેરે સાધનો અત્યન્ત દુર્લભ છે, તેવી સ્થિતિ હોતાં ' પ્રભુ પ્રાપ્ત થશે ' તેવા પ્રકારની નિશ્ચિન્તતાનો સંભવજ નથી, આમ છતાં પ્રભુ–અનુગ્રહનો વિચાર કરતાં પ્રભુને શરણે જવાથી બધુંજ સુલભ થઇ પડે છે. પ્રભુ અર્જુનને એ સમ્બન્ધમાં સ્પષ્ટ કહે છે કેઃ—

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नाचिरात्पार्थ ! मय्यावेशितचेतसाम् ॥ (भ. गी. १२–७)

મારામાં જેણે ચિત્ત પરોવ્યું છે, તેવા મારા ભક્તોને આ મૃત્યુસંસાર–સાગરમાંથી હે પાર્થ ! તરતજ ઉદ્ધાર કરનારો થાઉં છું."

જો પ્રભુની ઇચ્છા સાધનો કરાવતાં કરાવતાં ઉદ્ધાર કરવાની હોય તો જીવને મુશ્કેલ તેવાં પણ શ્રવણાદિ નવધા ભક્તિરૂપ સાધનો પ્રાપ્ત કરાવી ઉદ્ધાર કરે છે. જો પ્રભુની સાધનો કરાવવાની ઇચ્છા નહોય તો સાધનો વિના પણ કૃતાર્થ કરી દિયે છે. આથીજ શરણગમન એ પુરુષાર્થમાં સાધનરૂપ છે. આથીજ શ્રીમદાચાર્યચરણોએ किं वा प्रोक्तेन बहुना ? शरणं भावयेद्धरिः [वि. ध. आ. १६)

भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चातिक्रमे कृते ।
अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः ॥ (वि. ध. आ. ११)

ભક્તો દ્રોહ કરે, પોતામાં ભક્તિનો અભાવ હોય, ભક્તો અપમાન કરે, કોઈ કાંઈ અશક્ય હોય કોઈ સારી રીતે શક્ય હોય આ બધાંમાં બધી રીતે હરિનું શરણ રાખવું " એમ આજ્ઞા કરી છે. એમાંથી તાત્પર્ય એ નીકળે છે કે–ભક્તિ નહોય તોય પણ ભક્તિની સિદ્ધિ માટે પ્રભુના શરણની ભાવના કરવી. અહીં નવરત્નમાં પણ તેજ માટે "નવપ્રકારની શ્રવણાદિ ભક્તિ દુર્લભ છે,' એમ જાણી તે નવે પ્રકારની ભક્તિસિદ્ધિ માટેજ શ્રીમદાચાર્યચરણોએ અષ્ટાક્ષરમન્ત્રની સતત આવૃત્તિ કરવાનું ઉપદેશ્યું છે.

અહીં પ્રમાણબળથી જો વિચાર કરિયે તો આનું સમાધાન નજ મળી શકે. આનું સમાધાન તો ત્યારેજ મળે છે કે જ્યારે પ્રમેયબળનો વિચાર કરવામાં આવે છે. (નિઃસાધનને પણ સસાધન બનાવી ઉદ્ધાર કરે તેનું નામ પ્રમેયબળ.) શ્રીગુસાંઈજી જે ફક્કિકા કિંવા લીટી આપે છે, તેનો એજ આશય છે કે પ્રભુ આત્મનિવેદનાત્મક ફલનેજ અહીં સાધનરૂપ બનાવી દિયે છે. આમ આ श्रीकृष्णः शरणं मम એ મન્ત્રના અર્થનું વ્યાખ્યાન જાણવું.

---

૧. આ લીટી ઉપર વ્યાખ્યાન કરતાં ઠ. વિ. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે કે–" શ્રવણ વગેરે આઠ ભક્તિ એ સાધન અને અન્તિમ આત્મનિવેદન ફળ છે. તે બન્નેને એક કરી અસાધ્ય પણ સાધ્ય બની જાય છે, તેવા પ્રકારનું સમાધાન શ્રીમદાચાર્યચરણો આપે છે."

વિશેષમાં આ મન્ત્ર બીજા અનેક સામાન્ય મન્ત્ર જેવો નથી. પરન્તુ સમર્પણ ગદ્ય મન્ત્ર જેમ પુષ્ટિમાર્ગીય છે. આ માટેજ શ્રીગુસાંઈજીએ આજ્ઞા કરી છે કે-

" यदुक्तं तातचरणैः श्रीकृष्णः शरणं मम । तत एवास्ति नैश्चिन्त्यमैहिके पारलौकिके "

" તાતચરણ શ્રીમહાપ્રભુજીએ श्रीकृष्णः शरणं मम એમ જે કહ્યું છે, તેનાથી જ આ લોક તેમજ પરલોકવિષયક સર્વ બાબતોમાં નિશ્ચિન્તતા છે."

પુષ્ટિમાર્ગીયતા એટલે કે પ્રભુના સ્વરૂપથી ભિન્ન એવું જે કોઈ ફલ તેનો જેમાં અભાવ છે તે (આ વાત ધ્યાનમાં આવવાથી સ્પષ્ટ થશે કે) પુષ્ટિમાર્ગીયોએ આ મન્ત્રનું સતત આવર્તન કરવું. મનથી ઉપર કહ્યા મુજબ અર્થાનુસન્ધાનપૂર્વક શરણની ભાવના કરવી. આ માટેજ શ્રીઆચાર્યચરણો વિવેકધૈર્યાશ્રયમાં સ્પષ્ટ આજ્ઞા કરે છે કે **एवं चित्ते सदा भाव्यं वाचा च परिकीर्तयेत्** આ પ્રમાણે ચિત્તમાં સદા શરણની ભાવના કરવી અને વાણીથી શરણ મન્ત્ર બોલ્યા કરવો. " આમ શરણાગતિમાં પ્રભુ અશક્યને પણ સાધી દેશે એવો આમાથી નિષ્કર્ષ નીકળે છે. આથીજ શ્રીગુસાંઈજીએ પણ તે શ્લોકની વિવૃતિમાં **सर्वात्मना शरणागतौ प्रभुरेव सम्पादयिष्यतीति हृदयम्** સર્વાત્માએ કરી શરણે જતાં પ્રભુજ સર્વ પ્રાપ્ત કરાવશે એવો આશય છે" એમ ખુલાસો કર્યો છે. આમ થતાં ચિન્તાનું નામનિશાન નહીં રહે અને તેથી પ્રતિબન્ધ જ ન રહેવાને લીધે નિવેદનની સિદ્ધિમાં મુખ્ય ભક્તિની પ્રાપ્તિ-અને તેને લીધે પ્રભુપ્રાપ્તિ થશે. આથી ચિન્તા ન કરવાનો જે ઉપદેશ શ્રીઆચાર્યચરણોએ આપ્યો છે તે સાર્થક છે, એમ વિદ્વાનો જાણો.

૧૨.

નિબન્ધશાસ્ત્રાર્થપ્રકરણમાં નીચેનું વાક્ય છે.

आकाशवद् व्यापकं हि ब्रह्म मायांशवेष्टितम् ।

આકાશની માફક વ્યાપક એવું બ્રહ્મ માયાએ કરી બ્રહ્મના અંશથી વીંટાયેલું છે :

આ કારિકામાં **मायांशवेष्टितम्** એ પદ છે. આ પદમાં **अंशवेष्टितम्** એ **अंशेन वेष्टितम्** અંશે વીંટાયેલું તે એમ તૃતીયાતત્પુરુષ છે. **अंश** બ્રહ્મના છે, માયાના નથી. એટલે બ્રહ્મ એ પોતાના અંશોથી વીંટાયેલું છે. **मायया** માયાએ કરી **अंशवेष्टितम्** અંશોએ વીંટાયેલું તેવું બ્રહ્મ છે. અહીં તૃતીયાવિભક્તિમાં રહેલો **माया** શબ્દ **अंशवेष्टितम्** સાથે સમાસ પામ્યો છે. **माया** શબ્દને કેવળ **अंश**[1] સાથે સંબન્ધ નથી. આ રીતે બ્રહ્મ અંશોથી વીંટાયેલું છે. માયાનું હેતુ પણું છે અને તે યોગ્યજ છે. **માયા** એ પ્રભુની સર્વભવનસમર્થરૂપ શક્તિ છે. તે માયાથી પ્રભુ પોતાની વ્યાપકતાને આવરી દિયે છે. ત્યારે પ્રભુનો વ્યાપકતારૂપ ધર્મ તિરોહિત થવાથી અમુક આકારબન્ધપરિચ્છેદવાળો બ્રહ્મધર્મ આવિર્ભાવ પામે છે. તેથી કરી પરિચ્છેદ રૂપ ધર્મનો આવિર્ભાવ થતાં અંશોથી વીંટાયેલું બ્રહ્મ થાય છે. આથી કરીનેજ વ્યાપકતાને આવરી પરિચ્છેદ કિંવા અમુક સંકુચિત આકારરૂપ ધર્મ પ્રકટ કરી ' બ્રહ્મ અંશવેષ્ટિત છે તેવું સ્ફુરણ કરાવતી માયા ' બ્રહ્મ અંશથી વેષ્ટિત છે તેના હેતુરૂપે થાય છે. આ માટેજ શ્રીઆચાર્યચરણોએ ઉપરની કારિકાના પ્રકાશમાં " **मायया तादृशभावः** માયાએ તેવા પ્રકારનું થાય છે, ૧ " એમ **माया** એ તૃતીયાવિભક્તિમાં છે, તેવું વિવરણ આપી માયાનું હેતુપણું આપ્યું છે.

---

૧. લાલુભટ્ટજી એમ કહેવા માગે છે કે मायायाः अंशाः मायांशाः तैः वेष्टितम् એમ વિગ્રહ કરવાનો નથી. એટલે કે અંશ એ માયાના નથી. માયા તો હેતુ માત્ર છે.

બ્રહ્મ અંશથી વેષ્ટિત છે, તેમાં માયાનું જે હેતુપણું છે તે ઉપર બતાવેલી રીતે જાણવું. પ્રકાશમાં **मायया तादृशभावे, तेन वेष्टितम्।** માયાથી તેવા પ્રકારનું થાય છે. તેવા પ્રકારનું એટલે કે અમુક પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળું. બ્રહ્મ તે હેતુરૂપે રહેલા પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળા બ્રહ્મધર્મને લીધે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું છે. એવો એમાથી આશય નીકળે છે.

આ પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ તે બ્રહ્મધર્મ છે, અને તે જ્યારે વ્યાપકતાનું તિરોધાન થાય છે, ત્યારેજ પ્રકટ થાય છે. ત્યારે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું સ્ફુરાયમાન થાય છે, તેમાં પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ 'બ્રહ્મ પોતાના અંશોથી વીંટાયેલું છે, તેમાં હેતુરૂપ છે. જ્યારે વ્યાપકતા સ્ફુરાયમાન હોય છે, ત્યારે બ્રહ્મને અંશોથી વીંટાવાપણું નથી. આમ ભગવાન માયાયે કરી વ્યાપકતાને આવરી પરિચ્છેદકતાનો આવિર્ભાવ કરે છે; અને ત્યારે જ બ્રહ્મ ઇચ્છાથી પ્રભુમાંથી નીકળવાના પોતાના અણુરૂપ જીવસંજ્ઞાને મેળવનારા અંશોથી વીંટાયલું બને છે.

આ વસ્તુ સિદ્ધજ છે કે આ વિશ્વનું સર્જન કરવાની ઇચ્છાવાળા પ્રભુ પોતાના સામર્થ્યરૂપે રહેલી માયાયે કરી પોતાની વ્યાપકતાને આવરી પોતાની પરિચ્છેદકતાને પ્રકટાવી પોતેજ પોતાના અંશાત્મક જીવોથી વીંટાયેલું થાય છે.

આમ કોઇ પણ સ્થળે પરમતપ્રવેશનો ગન્ધ સુદ્ધાં નથી. એમ બધુંય નિર્દોષ છે.

शुद्धाद्वैत–भक्तिमार्तण्ड.

(લેખકઃ **શ્રીયુત વિનોદરાય જયસુખરામ મજમુદાર B. A. LL. B**; અમરેલી.)

"ભજ, મન ચરન ચિંતાહરન;
પતિતપાવન અઘનસાવન, મહા અધર્મ ઉદ્ધરન. ભજ. ॥૧॥
સહજ નામ ઉચ્ચાર જાકો, પરમ મંગળ કરન;
સુલભ હોત સંસાર સાગર, માંનો બચ્છકો ચરન. ભજ. ॥૨॥
અતિ ઉદાર અપાર કરુનાનિધિ ભક્ત ઉર આભરન;
દાસ સુનિ સુનિ શરણ આયો, બિરદ અશરન શરન. ભજ. ॥૩॥

"શુદ્ધાદ્વૈત" શબ્દના સમાસ માટે આપણા શ્રીઆચાર્યવર્યે સમાસચ્છેદ કરેલા છે તે પહેલા એ શબ્દનો ઉપયોગ ઘણા ઘણા પ્રાચીન કાળમાં પણ હતો એમ "**ईशाद्यष्टोत्तरशतो-पनिषदः**" નામના સંગ્રહમાં ચોપનમા **त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषत्** ના આઠમા અધ્યાયની શરૂઆતના વાક્યથી જણાશે કે—

ततः पितामहः परिपृच्छति भगवन्तं महाविष्णुं भगवन्! शुद्धाद्वैतपरमानन्दलक्षण-परमब्रह्मणस्तव, कथं विरुद्धवैकुंठप्रासादप्राकारविमानाद्यनन्तवस्तुभेदः ?

"सत्यमेवोक्त" मिति भगवान् महाविष्णुः परिहरति यथा शुद्धसुवर्णस्य कटकमुकुटां-गदादिभेदः यथा समुद्रसलिलस्य स्थूलसूक्ष्मतरंगफेनबुद्बुदकरकलवणपाषाणाद्यनन्तवस्तुभेदः ॥ यथा भूमेः पर्वतवृक्षतृणगुल्मलताद्यनन्तवस्तुभेदः ॥ तथैवाद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणो मम सर्वाद्वैतमुपपन्नं भवत्येव मत्स्वरूपमेव सर्वं, मद्व्यतिरिक्तमणुमात्रं न विद्यते."

"આ વાક્યમાં 'ઉત્પન્નં ભવતિ' એ શબ્દોથી શ્રીવેદવ્યાસજીના "**सर्वधर्मोपपत्ते**" સૂત્રની યાદગીરી આવે છે. અને ઉપર ટાંકેલ શ્રુતિના વાક્યનો અર્થ સહેલો છે તેથી અક્ષર-

વસ્તુઓ નવી કરતાં આચાર્ય માત્ર આવું છું. અહાજી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભગવન્, આ શુદ્ધાદ્વૈત પરમાનન્દલક્ષણ પરબ્રહ્મના વૈકુંઠ વિમાનો વગેરે અનંત વસ્તુ ભેદ કેમ છે? તેને. ભગવાન્ મહાવિષ્ણુ આપે છે કે એકજ સુવર્ણ (ધાતુ) શુદ્ધ છે તેના કર્યા મુકુટ બાજુબંધ વિગેરે વસ્તુભેદ છે. તેમ (આની સાથે છાંદોગ્ય ઉપનિષદ્‌ના છઠ્ઠા પ્રપાઠકમાં એક મૃત્પિંડ જાણવાથી બધું મૃણ્મય જાણવામાં આવે તેજ રીતે એક લોહ મણિ જાણવાથી સર્વ લોહમય વસ્તુઓ અને એક નખનિકૃંતનથી સર્વ કાર્ષ્ણાયસ જાણવામાં આવે છે એ પણ યાદ રાખવું.) વળી આગળ કહે છે કે એકજ પૃથ્વી છે છતાં તેમાં પર્વત ઝાડ ઘાસ વેલા વિગેરે અનન્ત વસ્તુ તન્નરૂપે ભેદ છે તેમ બધું મારૂં સ્વરૂપ છે મારાથી જુદું અથવા મારા વિના બીજું કંઈ નથી. આજ મુદ્દાસર શ્રીમદ્‌ભાગવતમાં વેદસ્તુતિ કહે છે કે "मृदुपलब्धमेतद्" જેનો સાર પણ એજ છે જેમ ઘડા કુંડા કોઠીયાં વિગેરે મૃત્તિકાજ છે તેમ આ સર્વ દૃશ્યમાન જગત્ બ્રહ્મજ છે તેથી ઋષિયો પોતાનાં મન કર્મ અને વચનો આપ પ્રભુમાં પરોવે છે (મુકે છે) વિગેરે તેમજ આગળ આવતાં "नाहि विकृतिं त्यजन्ति कनकस्य" કહી સુવર્ણના દાગીના (ઘરેણાં) ખરીદનારા ખુડદીયા વેપારી જેમ પાગ કેસરી કે ગમે તે તૈયાર ચીજ સાચવલા સોનાની ભલે ન હોય, અંદર લાખ, રહેલ વગેરે હોય છતાં તેનો ક્રય વિક્રય કરવો છોડી દેતા નથી પણ સુવર્ણાત્મક કિંમત આંકીને ક્રયવિક્રયવ્યવહાર કરે છે તેમ આપણે શ્રીકૃષ્ણકૃત અને શ્રીકૃષ્ણાત્મક સર્વ સમજીને વર્તવાનું છે.

હવે "ભક્તિ" શબ્દની તો વ્યાખ્યાજ એકાદશમાં (ગોપાલપૂર્વતાપિની નામના) ઉપનિષત્‌માં આપી છે. પહેલા મંત્રને છેવટના ભાગે કે ભક્તિરસ્ય ભજનમ્। તદિહામુત્રોપાધિનૈરાશ્યેન અમુષ્મિન્ મનઃકલ્પનમ્॥ એ શ્રુતિમાં સર્વનામ "અસ્ય" અને "અમુષ્મિન્" આવ્યું તે કોણ એ ઉપરના વાક્યમાંજ "કૃષ્ણાય ગોવિન્દાય ગોપીજનવલ્લભાય" ઇતિ એવે શબ્દો વ્રજલીલાકૃત શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને સંબંધિજ વપરાયેલા છે. તેમજ સંપુટ તરીકે તુરતજ વ્યાખ્યા પછી પણ શ્રુતિ કહે છે કે "एतदेव च नैष्कर्म्यम्। कृष्णं तं (ખ્યાલ રાખો કે તે કૃષ્ણ કયા? જેને ઉપર "આ, "આમાં" શબ્દો વાપરીને સાન્નિધ્યવાચક સર્વ નામ असौ अयं પુરોવર્તી સૂચવ્યા છે તે) विप्राः बहुधा यजन्ति એ પ્રમાણે પહેલા મંત્રમાં કહ્યું છે કે ભક્તિ એટલે ઉપર કહેલા કૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવલ્લભનું ભજન કરવું ને ભજન (આ રીતે) આ લોકમાં અને પરલોકમાં ઉપાધિની આશા (એટલે કે મને આમ સુખ વૈભવ સંપત્તિ વગેરે ફલાકાંક્ષાની કામના) રાખ્યા વિના એ શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવલ્લભમાં મન લગાડવું (અર્થાત્ કામનારહિત નિષ્કામ ભજન) શ્રુતિ આગળ આજ્ઞા કરે છે કે એનું નામજ નૈષ્કર્મ્ય (ભજનાદિ કરતાં છતાં ફલભોગ ભોગવવાનું બંધ ન થાય તેવું કર્મ) તે કૃષ્ણને વેદ જાણનારા અનેક પ્રકારે યજન કરે છે. તે ગોવિન્દ હોવાથી તેને અનેક પ્રકારે આરાધન કરે છે ગોપીજનવલ્લભે "સ્વાહા" ને આશ્રયે ભુવનો ધારણ કર્યા (સર્ગ લીલા કરી) અને સ્વરા વીર્ય વડે આ જગત્ ધારણ કર્યું (વિસર્ગલીલા) આ વ્યાખ્યા પ્રમાણે સમજીને (એટલે કે રહસ્ય કરી સમજીને ભજન, યજન, આરાધન (એ શ્રુતિના શબ્દો) એટલે કે આપણા સંપ્રદાય પ્રમાણે "सेवा" કરવામાં આવે તો શરૂઆતમાં ગોપાલના ઉપનિષત્‌નો આશયો અભાવ રાખો છે તેમાંજ કહ્યું છે કે:—

વૃથાલાપ.

રણછોડદાસ—ભાઈ. વૃથાલાપ એટલે શું ?

કરુણાશંકર—વૃથાલાપ એટલે શ્રીભગવાનનું નામ, અને પ્રભુની લીલાઓને છોડી બીજી દુનીયાની નકામી વાતો કર્યા કરવી તે વૃથાલાપ.

રણછોડદાસ—ભાઇ ! ખરેખર આજ તો પ્રભુનામ અને પ્રભુની લીલાઓનું વર્ણન તો તો ક્યાંકજ સાંભળવામાં આવે છે, બાકી તો સર્વત્ર દુનીયાની કુથલીજ સાંભળવામાં આવે છે. તેમાં પણ પ્રભુમન્દિરમાં દર્શન કરવા ગયા હોય ત્યાં પણ દર્શનને જરા વખત હોય તો કેવલ વૃથા કલબલાટજ સાંભળવામાં આવે છે; ત્યારે ઘરમાં તો પ્રભુનામ ક્યાંથીજ લઈ શકાય ? સદ્‌ભાગીજ પ્રભુનામ લઇ શકે કે.

કરુણાશંકર—ખરેખર ભાઈ ! શ્રીમહાપ્રભુજીએ નવરત્ન ગ્રન્થમાં આજ્ઞા કરી છે કે **तस्मात् सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम ॥वदद्भिरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥**

અર્થ—તેથી સર્વાત્મભાવ વડે હંમેશાં "શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ" સતત બોલતાંજ રહેવું એવી મારી મતિ છે. આમ ક્ષણ માત્ર પણ પ્રભુનામનો ત્યાગ કરીએ તો આસુરાવેશ થાય માટે ક્ષણ માત્ર પણ અષ્ટાક્ષર મન્ત્ર "શ્રીકૃષ્ણઃ શરણંમમ" નો જપ છોડવોજ ન જોઇએ.

રણછોડદાસ—**सुगमं भगवन्नाम जिह्वाच्च वशवर्त्तिनी । तथापि नरकं यान्ति धिगस्तु तान्नराधमान् ॥**

ભાઈ કરુણાશંકર, કહ્યું છે કે "પ્રભુનું નામ સુગમ છે, જીભ પોતાને વશ છે; તોપણ પ્રભુનામ ન લેતાં જીવ નરકમાં પડે છે. આવા મનુષ્યોને આપણે ધિક્ ! વિના બિજું શું કહી શકીએ ?

કરુણાશંકર—પણ ભાઈ ! પ્રભુનું નામ જીભ ઉપર આવવું ક્યાં સહેલું છે. ? પ્રભુનું નામ તો પ્રભુની કૃપા હોય તોજ ઉઠતાં, બેસતાં રસોઇ કરતાં, સંજવારી કાઢતાં દરણું દળતાં, હાલતાં, ચાલતાં, એ પ્રમાણે આખો દિવસ અષ્ટપ્રહર પ્રભુનું નામ લઇ શકાય. બાકી હૃદયમા પાપ ભર્યું હોય ત્યાં પ્રભુનું નામ લેવાયજ ક્યાંથી ? કહ્યું છે કે "**जेसे ज्वरके जोरमें भोजनकी रुचि जाय । तेसें पापसमूहमें नहिं हरिनाम सुहाय.**

રણછોડદાસ—સાચું તદ્દન સાચું, ભાઇ આપણે બે ગાઉ ચાલીને જવાનું હોય અને ત્યાં જતાં પહેલાં વિચાર કરી નક્કી કરીએ કે આખો રસ્તો પ્રભુનો નિર્મલ અષ્ટાક્ષર મન્ત્ર જપતાં જપતાં જાશું, પણ રસ્તામાં ચાલતાં અનેકવાર ભૂલી જવાય છે. અને મન બીજે રસ્તે ચઢી જાય છે.

કરુણાશંકર—ભાઇ તેથીજ માલુમ પડે છે કે પાપની પ્રબલતાથી પ્રભુનું નામ લઇ શકાતું નથી. શ્રીમહાપ્રભુજીએ નિબન્ધમાં આજ્ઞા કરી છે કે—**वृथालापक्रियाध्यानं सर्वथैव परित्यजेत्** "વૃથાલાપ, વૃથાક્રિયા, વૃથાધ્યાનનો સર્વથા ત્યાગ કરવો જોઇએ" છતાં પણ ત્યાગ કરી શકાતો નથી.

રણછોડદાસ—ભાઈ ! હવે તેનો કાંઈ ઉપાય ખરો ?

કરુણાશંકર—ભાઇ ઉપાય તો માત્ર એજ છે કે બીજા નકામા પુસ્તકો ન વાંચતાં અને ગંદી વાતો ન સાંભળતાં અને ભગવન્નામને ભૂલનારની સંગતિ છોડીને ભગવન્નામામૃતનું પાન કરાવનાર ભગવદીયનો સંગ કરવો, તેવાંજ ધર્મનાં પુસ્તકો વાંચવા. આથી મન પ્રભુમાં રહેતાં અષ્ટાક્ષર મન્ત્ર નહીં ભૂલાવનાર મન છે. પણ પ્રભુએ આજ્ઞા કરી છે કે **अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥** મન ચંચળ છે પણ અભ્યાસ અને વૈરાગ્યથી તે વશ થાય છે.

રણછોડદાસ—ભાઇ બહુ સારું હવેથી હું પણ તેવો અભ્યાસ કરવા તત્પર થઇશ જેથી પ્રભુ હૃદયારૂઢ થાય. હવે નીચેનું ભાવ પૂર્ણપદ બોલી આપણે આપણું સ્થાન લઇએ.

શ્રીવલ્લભસંપ્રદાય.

(વક્તા—શ્રીયુત મહીધરલાલ હિંમતલાલ, જોશીપુરા, બી. એ., હેડમાસ્તર; સર વાઘજી કૉન્સ્કૂલ, ટંકારા, (મોરબી સ્ટેટ.)

સજ્જનો અને સન્નારીઓ,

આજે આપણે અત્રે એકત્ર થવાનો પ્રસંગ હરકોઇને વિદિત છે, એટલે તે વિષે વધારે ઉલ્લેખ કરવો ખાસ આવશ્યક નથી, છતાં પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જયન્તિના ઉત્સવ પ્રસંગે આપણે એકઠા થયા છીએ એટલે તેઓશ્રીના જીવનવૃત્તાંતનું તથા તેમણે સ્થાપેલા સંપ્રદાયનું ટુંક દિગ્દર્શન અત્રે અસ્થાને નહિંજ ગણાય. એમ માની હું નીચે પ્રમાણે જણાવવા રજા લઉં છું.

મારો આ સંપ્રદાયના ગ્રંથો અને આચાર્યો સંબંધે અભ્યાસ બહુજ અલ્પ છે, એટલે આ વિષયની અંદર હું કંઈ નવું અજવાળું નાખી શકું તેમ નથી; પરંતુ જ્યારે આ વિષય ઉપર યતકિંચિત બોલવા ઇષ્ટ જનો તરફથી મને કહેવામાં આવ્યું ત્યારે મારે યથાશક્તિ મારી ફરજ બજાવવી એ મારો ધર્મ છે, એમ હું માનું છું.

પુષ્ટિમાર્ગના આદિ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર વદી ૧૧ ના રોજ ચંપારણ્યમાં થયો હતો. તેઓશ્રી આ ભૂતળ ઉપર લગભગ ૫૨ વર્ષ બિરાજ્યા હતા, પરંતુ આટલા ટુંકા વખતમાં અને લુંટફાટ અને અશાંતિના સમયમાં, હિંદુસ્થાન જેવા વિશાળ દેશમાં ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમ સુધી ત્રણ વખત પરિક્રમણ કરી શ્રીહરિની સેવામાં હંમેશાં ઘણો વખત વ્યતીત કરવાની સાથે વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્ભાગવતનાં અનેક સ્થળોએ પારાયણ કરી જીજ્ઞાસુઓને બોધામૃત આપી આશરે ૮૪ ગ્રંથો તેઓશ્રીએ સંસ્કૃતમાંજ રચ્યા. તેઓશ્રીના પછી તેમના પુત્ર શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીએ પણ શ્રીહરિસેવામાં પરાયણ રહી, પોતાના અવકાશનો સદુપયોગ કરી, ધર્મની પ્રગતિ માટે ઘણા ગ્રંથો રચ્યા છે. આ પછી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજનું પ્રાકટ્ય સત્તરના સૈકામાં થયું હતું. તેઓશ્રીએ પોતાની ૪૫ વર્ષની લઘુ વયમાં વેદ અને સ્મૃતિ વગેરે તમામ શાસ્ત્રનું ઘણી સારી રીતે દોહન કરી લગભગ નવ લાખ શ્લોકનું પૂર થાય એટલા ગ્રંથો લખેલા છે. આ પ્રમાણે દરેક આચાર્યોએ પોતાની શક્તિ અનુસાર સંપ્રદાયની સેવા બજાવી છે.

હવે પુષ્ટિમાર્ગ બ્રહ્મવાદનું—શુદ્ધાદ્વૈતનું—અવલંબન કરે છે. નિષ્પક્ષપાત બુદ્ધિથી પુષ્ટિમાર્ગના, શુદ્ધાદ્વૈત સિદ્ધાંતોની તુલના કરવાથી એવો નિશ્ચય થશે કે પરબ્રહ્મ, જીવ, જગત્ અને એ સંસારના સ્વરૂપ વિષેના આ સંપ્રદાયના બીજા સિદ્ધાંતો વેદ, ગીતા, બ્રહ્મસૂત્ર અને શ્રીમદ્ભાગવતપ્રતિપાદિત છે. પુષ્ટિશબ્દનો અર્થ અનુગ્રહ અથવા કૃપા એવો થાય છે. ભક્તિમાર્ગમાં પ્રભુની કૃપાનુંજ અવલંબન કરવામાં આવે છે. અને પ્રભુનોજ આશ્રય રાખવો એવો આ માર્ગનો મૂળ ઉદ્દેશ છે. હવે આ આશય અતિ ઉંચ કોટિનો મહત્ત્વનો અને અનુકરણીય છે. દરેક ધર્મના મુખ્ય સિદ્ધાંતનું આપણે અવલોકન કરશું તો સ્પષ્ટ રીતે જણાશે કે પોતાના ઇષ્ટ દેવની કૃપાનું અવલંબન કરવું એ ધર્મનું મુખ્ય લક્ષણ હોવું જોઇએ. પુષ્ટિમાર્ગમાં પરબ્રહ્મ પરમાત્મા પૂર્ણપુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની અનન્ય, અવ્યભિચારિણી ભક્તિ નિષ્કામ વૃત્તિથી કરવાનો મુખ્ય આદેશ છે. પરબ્રહ્મ પરમાત્મા વેદથી પણ અતીત છે; જ્ઞાન તથા વૈદિક ક્રિયાઓના ફળદાતા પોતેજ છે. ગુણોથી અતીત છે, વેદના નિયન્તા છે. વેદનો ઉદ્ભવ તેમનામાંથીજ છે અને એ સર્વશક્તિમાન્ છે, તેથી ઉત્તમાધિકારીએ કેવળ પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણનુંજ અવલંબન કરવું. તેનોજ આશ્રય કરવો. તેમના માહાત્મ્યનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું, તેમનાજ શરણે જવું, તેમનીજ કૃપા મેળવવાની આકાંક્ષા રાખવી-

તેમને પ્રસન્ન કરવામાં કર્તવ્ય માનવું. કહ્યું છે કે **भक्तिनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा कृष्णः प्रसीदति** એટલે કે શ્રીકૃષ્ણ પ્રસન્ન થાય તોજ ભક્તિની પરાદશા પ્રાપ્ત કરી શકાય છે અને ખરેખર જો ભક્તિભાવ વડે શ્રીકૃષ્ણની સેવા એક નિષ્ઠાથી કરવામાં આવે તો કહ્યું છે કે **कृष्णः चेत् सेव्यते भक्त्या कालिः तस्य फलाय हि** એટલે કે આ કલિકાલ પણ ફળદાયી નીવડે છે.

પરબ્રહ્મસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ સ્વમુખે ગીતા કહેલી છે, તે એક આર્યાવર્તનો અનુપમ ગ્રંથ છે. ગીતા સર્વ શાસ્ત્રનો સાર છે, ઉપનિષદોનું હૃદય છે, જ્ઞાનનો સાગર છે અને મનુષ્યની લૌકિક અને પારલૌકિક મહેચ્છાઓનું પરિપૂરક કલ્પવૃક્ષ છે, એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. ગીતાનો વિષય એટલો બધો અગાધ અને વિધવિધ પ્રકારનો છે કે તેની અંદર દરેક સિદ્ધાંતનું મથન કરવામાં આવ્યું છે. હરેક ધર્મ અને સાહિત્યનાં તમામ અંગોની સંપૂર્ણ ટોચે પહોંચેલી ખીલવટ તેમાં દશ્ય થાય છે. કાવ્યમાધુર્ય, નીતિશાસ્ત્ર અને શૌર્યની તેમાં પરાકાષ્ઠા જોવામાં આવે છે. ગીતાનું રહસ્ય અમુક સમાજ, અમુક પ્રજા કે અમુક દેશનેજ ફલાત્મક છે એમ નથી, પરંતુ તેની અંદર સમગ્ર માનવ જાતિને શ્રેયકર અને ઉન્નતિકારક સિદ્ધાંતોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. આ બાબતની સાબીતી તેનો દુનિઆની લગભગ દરેક ભાષામાં થએલો અનુવાદ સિદ્ધ કરી આપે છે. જુદા જુદા દેશના વિદ્વાનોએ ઘણી ખરી નીતિશૂન્ય જાતિઓમાં સદાચારનો પ્રકાશ ગીતાના અનુવાદથી ફેલાવવાનો સ્તુત્ય પ્રયત્ન કરેલો આપણને દૃષ્ટિગોચર થાય છે. ટુંકામાં ગીતાની સર્વશ્રેષ્ઠતા મુક્ત કંઠે સારા જગતભરમાં સ્વીકારવામાં આવી છે એ વાત નિ:શંક છે. ચાર્લ્સ વિલ્કિન્સ નામના અંગ્રેજ વિદ્વને ગીતાનો જે અનુવાદ કર્યો છે તેની ભૂમિકામાં વૉરન હેસ્ટીંગ લખે છે કે " કોઇ પણ જાતિને ઉન્નતિના શિખરે ચઢાવવામાં ગીતાનો ઉપદેશ અદ્વિતીય છે." અંગ્રેજ જેવી કેળવણીની અંદર અગ્રસ્થાન ભોગવતી પ્રજાની એક મહાન વ્યક્તિ તરફથી આટલો ઉંચો અભિપ્રાય મળે, તે ગીતા સમગ્ર વિશ્વના સાહિત્યમાંનો સર્વોત્તમ દિવ્ય ગ્રંથ છે એમ પુરવાર કરવાને બસ છે. હવે પુષ્ટિમાર્ગની અંદર જે દાસત્વભાવ સ્વીકારવામાં આવ્યો તે પણ ગીતાના આધારેજ રાખેલો જણાય છે, કારણ કે ગીતાજીમાં કહ્યું છે કે જ્યારે દાસત્વભાવથી નિષ્કામભક્તિ થાય છે ત્યારે અહંતામમતાનો નાશ થાય છે; અને જ્યારે આ કલુષિત વૃત્તિઓનો વિધ્વંસ થાય છે ત્યારેજ મોક્ષ મેળવી શકાય છે.

હવે શ્રી ગીતાની અંદર શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ જે ચારિત્ર્યબંધન અને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ ઉપર પ્રવચન કરેલું છે તેનું હું યથાશક્તિ વિવરણ કરૂં છું.

મનુષ્યને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ યદિ સાહજીક છે, તથાપિ તે મુખ્યત્વે અન્ય ટેવોની માફક કેળવણીથી પ્રાપ્ત થાય છે, જીવનને અમૃતમય યા વિષમય બનાવવું એ કેવળ આપણા હાથમાંજ છે. જ્ઞાની અને અજ્ઞાની ઉભયને સુખ, દુઃખ સર્વે પ્રાપ્ત થાય છે, પણ જ્ઞાની સમાધાનીથી પ્રસન્ન રહે છે જ્યારે અજ્ઞાની વૃથા શોક કરે છે. આ બંન્ને દુઃખને અન્યથા કરવાને તો અસમર્થજ છે, છતાં પણ પ્રસન્નતાથી એક અમૃતમય જીવન કરે છે જ્યારે અપ્રસન્ન વૃત્તિથી બીજો વિષમય જીવન કરે છે. સંતોષથી મનુષ્ય દુઃખને દાબી નાખે છે. અજ્ઞાનને દૂર કરે છે અને શોકને વિદારે છે. બુદ્ધિવૈભવ સંતોષથી અધિક પ્રકાશ પામે છે અને શરીર સૌંદર્ય પણ વિકાસ પામે છે, એવી વૃત્તિ વિના જીવિતનો શીતળ પ્રભાવ ભોગવી શકાતો નથી, તેમાં વિકાસી રહેલાં પત્ર-પુષ્પોનો અનુભવ લેવાતો નથી; અને આખું વિશ્વ ઉજ્જડ, નિર્જીવ, નિરર્થ અને શૂન્ય લાગે છે. પ્રસન્નતા સુખનું નિદાન છે, તેમ ચારિત્ર્યનું મોટું સંરક્ષણ છે એનાથી ભલાઈ અને સદ્ગુણનાં બીજને ફાલવા માટે ઉત્તમ ભૂમિકા બંધાય છે, એનાથી હૃદય વિશુદ્ધ થાય છે, અને વૃત્તિ પ્રસાદ-

વાળી થાય છે. પ્રસન્નતા દાતૃભાવની સખી છે, ધૈર્યની ધાત્રી છે અને ડહાપણની માતા છે. મન અને ચારિત્ર્ય ઉભયને સુધારનારૂં એ ઉત્તમ ઔષધ છે. ઘણા મહાપુરુષો બહુ લાંબું જીવન ગાળી ગયા છે તેનું નિદાન વિચારતાં તેમના સ્વભાવની પ્રસન્નતાજ મુખ્ય કારણભૂત જણાય છે. સંસ્કૃતમાં કહ્યું છે કેઃ—

सर्पा पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ॥

कन्दैफलैर्मुनिवरा क्षपयन्ति कालं संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ॥

આ સંસારમાં પ્રતિક્ષણ વિપત્તિઓ વરસાદની માફક પડે છે પણ તેમાં ધીરજ રાખવી. શૌર્યવાળાં મનુષ્ય ડગતાં નથી. તેઓ એકજ રહેણી કરણીથી રહે છે. કહ્યું છે કે—

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमने तथा । संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ॥

જેમ સંપત્તિથી તેમને ગર્વ થતો નથી તેમ વિપત્તિથી તેમનું ધૈર્ય સ્ખલિત થતું નથી તેઓ "સુખસમયમાં છકી નવ જવું દુઃખમાં ન હિંમત હારવી." એ સૂત્રનું અવલંબન કરી હંમેશાં એકજ વૃત્તિથી રહે છે. હવે દરકોઇ માણસમાં દુર્ગુણ છે કે નહિ તેનો નિશ્ચય કરવો હોય તો તે સંપત્તિસમયેજ થઈ શકે છે, પણ તેનામાં કયો સદ્‌ગુણ છે તે જોવાનું તો વિપત્તિમાંજ બને છે. દાખલા તરીકે ચંદનના લાકડાને અમથું જોવાથી તે અન્ય લાકડા જેવુંજ દેખાય છે પરંતુ તેને ઘસવાથીજ તેનો ખરો ગુણ જણાઈ આવે છે. આ પ્રમાણે વિપત્તિની અંદરજ માણસના ખરા ગુણ પ્રકાશમાં આવે છે. માણસે હંમેશાં સંપત્તિ અને વિપત્તિમાં એકજ રીતે રહી કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, મત્સર આદિ દોષોને દૂર કરી ભગવત્પરાયણ રહી જગતની અંદર જળકમલવત્ જીવન ગાળી આ લોક અને પરલોકનું શ્રેય સાધવું એજ ખરો ધર્મ છે.

આટલું બોલી હું બેસી જવાની રજા લઉં છું અને આપ સર્વેએ શાંતિપૂર્વક શ્રવણ કર્યું તેને માટે તમારો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનું છું.

શ્રીમહાપ્રભુજી અને મૂડીવાદ.

(અનુસંધાન—ગતાંકના પૃષ્ઠ ૨૮ થી)

મજુરદાસ—ભાઇ વ્રજદાસને મારોજ પક્ષ સાબીત કરતો સાંભળીને મારી ખુશીનો પાર નથી!

વ્રજદાસ—સબૂર મારા મિત્ર! ઉતાવળા ન થાઓ. મારૂં પૂરૂં સાંભળી લો. પછીથી તમારે જે નિશ્ચય કરવો હોય તે કરી લેજો. (પોતાનું વક્તવ્ય વધારે પ્રકટ કરતાં) જગદ્‌ગુરુ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો મહાન્ આદર્શ એ છે કે, આ સમગ્ર વિશ્વ એ મહાન્ વિશ્વનાયક વિભુનું ક્રીડાસ્થાન છે. આ સંપૂર્ણ જગત્ અખિલ બ્રહ્માંડના સૂત્રધારે પોતાને માટેજ બનાવ્યું છે. આ સમગ્ર સૃષ્ટિનો તે એકલોજ માલીક છે. આ દુનિયામાંની અણુમાં અણુ વસ્તુ ઉપર પણ એ સર્વસમર્થ પ્રભુ વિના બીજા કોઈની માલીકી નથી. એણે ઉત્પન્ન કરેલી કોઈ પણ વસ્તુ ઉપર પોતાની સત્તા માનનારાઓ દુષ્ટબુદ્ધિનાજ સમજવા રહ્યા. જ્યારે બધું પ્રભુનુંજ છે ત્યારે આપણે કયી જડ અથવા ચેતન વસ્તુને આપણી માલીકીની સમજી શકીએ? કોઇપને નહિ; એજ સિદ્ધાંત છે. પ્રારબ્ધબળથી કે પુરુષાર્થથી આપણે જે કોઈ વસ્તુ મેળવીએ અથવા તો પ્રભુકૃપાથી આપણને જે કાંઇ સંપત્તિ મળે, એ સર્વ ઉપર આપણી લેશ પણ સત્તા નથી, એના ખરા માલીક તો પ્રભુજ છે. આપણે તો માત્ર એ પ્રભુની આજ્ઞા મુજબ એ સોંપેલા દુન્યવી પદાર્થોની વ્યવસ્થા કરી શકીએ. આપણે ત્યાં કોઈ થાપણ મૂકી જાય, કોઈ વસ્તુ અમાનત રાખી જાય, તેના ઉપર

આપણે જો માલીકીનો હક્ક ધરાવતા થઇએ તો દુનિયા આપણને દગાબાજ કહેશે; અને આપણે પણ વિશ્વાસઘાતના મહાપાપપંકમાં ડુબી મરીશું. ખરૂં જોતાં તો આપણા કહેવાતા આ ઘરબાર સ્ત્રીપુત્રપરિવારનાએ આપણે ખરા માલીક તો નથીજ. એ બધું પ્રભુનુંજ છે. આપણે તો તેમના આરાધારક દાસ કહો કે એક ટ્રસ્ટી કહો, તેજ છીએ. આ દિવ્ય ભાવનાનો જગતમાં પ્રચાર થાય તો અત્યારે એકમેકની ગરદન ઉપર છરી ચલાવીને પાપી પૈસો પેદા કરવાની જે ઘાતક પ્રવૃત્તિ ચાલી રહી છે તેનો સમૂળગો નાશ થઈ જાય. હાલ આખું જગત આસુરી ધમાલોથી ઘેરાઇ ગયું છે. શાંતિનું નામોનિશાન રહ્યું નથી. જીવનમાંથી રસકસ ઉડી ગયો છે. આ રાક્ષસી પ્રવૃત્તિનું પરિણામ તો સ્પષ્ટ જ છે. આખું વિશ્વ પોતાનાજ પગપર કુહાડો મારવાની એવટ્રીને ન જોતાં નિજનો સર્વનાશને નોતરી રહ્યું છે. આ દુનિયા પણ જ્યારે આસુરી લાલસાઓથી અને તેના ભયાનક પરિણામોથી હારી થાકીને પાછી વળશે અને તેને જ્યારે દિવ્ય શાંતિ અને ચિરકાલના સુખની ભૂખ લાગશે ત્યારે આખરે જગદ્ગુરુના ઉક્ત આદર્શોને જ શરણે જવું પડશે. એ આદર્શોનું સ્વરૂપ સમજીને તેને જીવનમાં ઉતારવા માટે મહામંથન કરવાં પડશે. અને તે પછી આ વિશ્વ કોઇ અનેરી અલૌકિક સુખશાંતિ અનુભવી રહ્યું હશે. તે વખતે એક પણ દેહધારી અહંતામમતાની સાથે સંબંધ નહિ ધરાવતો હોય. પ્રભુસેવારૂપ મહાયજ્ઞમાં પોતાનાં સર્વસ્વનો વિનિયોગ કરવામાંજ જીવનનું છેલ્લું ધ્યેય સ્વીકારાઇ ગયું હશે. નીતિ, પવિત્રતા, સદાચાર આદિ દૈવી ગુણોનો સર્વત્ર પ્રકાશ ફેલાઇ રહેલો હશે. ધનવાનો પોતાના દ્રવ્યનો ઉપયોગ માત્ર પોતાની ઇંદ્રિયતૃપ્તિ માટે નહિજ કરતા હોય. દુન્યવી ભોગવિલાસોના ભડકાઓથી તેઓ દૂર ન્હાસશે. પોતાના એ દૈવી દ્રવ્યનો ઉપયોગ તો માત્ર પ્રભુસેવામાંજ કરશે. પ્રભુસેવા એ એવો એક વ્યાપક મહાયજ્ઞ છે કે, તે જગતના સર્વ અંગોને પોષે છે: હાલના સામ્યવાદનો તો તે વખતે નાશ જ થયો અને તે પુસ્તકોનાં પાનાંઓમાં ભરાઇ બેઠેલો હશે તો તે તરફ પણ જનસમાજ દયાની દૃષ્ટિએ જોશે. ધનવાનોને લુંટી લઇને, સમગ્ર દેશની દોલત એક સ્થળે રાખીને, તેના પર અમુક દુન્યવી સત્તા સ્થાપીને બધાને એક હાલતમાં ધકેલી દેવાના હાલના સામ્યવાદના પિશાચી ચાળા ચગફતા બંધ કરી નાંખ્યા હશે. જગદ્ગુરુ સ્પષ્ટ ઉપદેશે છે કે—

दयया सर्वभूतेषु संतुष्ट्या येन केनचित् । सर्वेन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यत्याशु जनार्दनः ॥

શ્રીવૈશ્વાનરાચાર્યચરણ આજ્ઞા કરે છે કે—પ્રભુને શીઘ્રાતિશીઘ્ર પ્રસન્ન કરવા હોય તો આ ત્રણ વાત ગાંઠે બાંધી લો. **૧.** પ્રાણીમાત્ર ઉપર દયા રાખો, **૨. જે મળે તેમાં સંતોષ માનો,** ૩. સર્વ ઇંદ્રિયોને કાબુમાં રાખો. બસ, આ ત્રણ વાતનો અમલ કરશો કે પ્રભુ તુરતજ પ્રસન્ન થશે. આ એક ટુંકામાં ટુંકા ઉપદેશમાં સમગ્ર વિશ્વની સુખશાંતિ સમાયલી છે. આ ત્રણ વાતથી વિહોણું બનેલું વિશ્વ અત્યારે અનેક દુઃખોથી ત્રાસી રહ્યું છે. જગદ્ગુરુના આ ત્રણ આદર્શ ઉપર જો સમાજરચના થાય તો સ્વર્ગ નીચે ઉતરે. દયાભાવ જગતમાં પ્રસરે તો હિંસાપાપનો ભાર તો આ પવિત્ર ભૂમિ પરથી કાયમનો ટળી જાય. નીતિ અને ધર્મના માર્ગથી મળેલા થોડાં અથવા વધારે દ્રવ્યથી સંતોષ પકડવો એ આજ્ઞા તો હાલના દ્રવ્ય ચૂસવાના વિશ્વવ્યાપક, મહારોગનું અકસીર ઔષધ છે. જગતમાંથી સંતોષરૂપ ગુણ તિરોહિત થયો છે. આસુરી તૃષ્ણાઓ અને લાલસાઓએ પોતાનું સામ્રાજ્ય ચોમેર જમાવી દીધું છે. એજ કારણથી એકમેકનો સર્વનાશ કરવા માટે બધા તલપી રહ્યા છે. કોઇ કોઇનું શુભ ઇચ્છતુંજ નથી. હવે આ દાવાનળમાંથી બચવાનો ઇલાજ માત્ર સંતોષરૂપ સદેશ (જગદ્ગુરુનો) જ છે. જો સંતોષ હોય તો વિશ્વની હાલની મારામારીનો અંત થોડાજ સમયમાં આવી જાય. ભાઈ મુકુંદદાસજી! આપ હવે સમજી શક્યા

હશો કે આપના હાલના સામ્યવાદ અને તેમાં શેખચલ્લીની જેમ સુખસ્વપ્નો જોનારા નેતાઓના વિચારો અમારી દિવ્ય ભાવનાઓથી લાખો ગાઉ દૂર છે. હવે આપની ખાતરી થઈ હશે અને મારા કથનમાં આપને આવેલી 'સામ્યવાદ' ની ગંધ રહી નહિજ હોય. (તાળીઓ).

મજૂરદાસ—હા, આપના આ અતિલાંબા વ્યાખ્યાનથી હું જગદ્‌ગુરુનો આદર્શ કાંઈક સમજી શકું છું. હાલનો સામ્યવાદ અને જગદ્‌ગુરુનો આદર્શ કેટલા વિલક્ષણ છે અને એ બન્નેના મૂલ સિદ્ધાંતો અને પ્રવૃત્તિઓ પણ કેટલી ભિન્ન ભિન્ન છે તેનો ખ્યાલ મને આવે છે. છતાંએ આપે જે મોતીના ચોક પૂર્યા, દિવ્ય ભાવનાની જે બડી બડી વાતો હાંકી તે જેટલી બોલવામાં રુચિકર મીઠી મધ જેવી લાગે છે, પણ તેનો અમલ કેટલો મુશ્કીલ છે એનો કોઇ વિચાર કરશે? અત્યારે માનવોનાં હૃદયો કયી દિશામાં દોડી રહ્યાં છે? નિર્મલ મધુર જલનો પ્રવાહ કહો કે ઝાંઝવાનાં નીર કહો; પણ એજ ધ્યેય ભણી સમગ્ર તૃષાર્ત માનવ હૃદયો યાહોમ દોડી રહ્યાં છે. આવા સમયમાં તેમને બીજીજ દિશામાં વાળવાં, તેમના પર અધિકાર મેળવવો એ શું અશક્ય સ્થિતિ નથી? વળી અહંતામમતાના ત્યાગની તમે વાત કરી પણ કરોડની સંપત્તિ હોય અને એ બે ચૂડેલડાકણનો પડછાયો પણ ન પડે એ બનેજ કેમ? જગદ્‌ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ તો તેથીજ મઠ મંદિર કે વૈભવો જમાવ્યા નથી. આપ એવો ઇતિહાસ રજુ કરી શકશો કે અહંતામમતાનો ત્યાગ અને સંતોષ જેવી દૈવી સંપત્તિઓ પણ અઢળક દુન્યવી સંપત્તિ સાથે રહેલી હોય?

વ્રજદાસ—ઓહો! એમાં તે શું? આપે જગદ્‌ગુરુના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસજી કાશીવાળાનું નામ સાંભળ્યું છે?

મજૂરદાસ—ના, મુદ્દલે નહિં. એમનો ઇતિહાસ શેમાં લખેલો છે? તે જણાવશો?

વ્રજદાસ—અફસોસ! હાલના પુષ્ટિમાર્ગીય પંડિતો શાસ્ત્રોની મોટી મોટી વાતો કરવામાં શૂરા હોય છે, પણ જે મહાન્ પવિત્ર ગ્રન્થોના અક્ષરેઅક્ષરે પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતો અને દૈવી જીવનો પ્રકાશી રહ્યાં છે એ ગ્રંથો તરફ ઉપેક્ષા રાખે છે! ખેર, હું એ પ્રાતઃ-સ્મરણીય વંદનીય મહાનુભાવ શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસની વાર્તાનું વર્ણન કરીને મારી વાણીને પવિત્ર કરીશ.

સાડા ચારસો વર્ષ પહેલાંની વાત છે. કાશીએ ભારતવર્ષમાં અદ્વિતીય પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કરી હતી. કાશી અને વિદ્યાપીઠ એ બે શબ્દો જ એકમેકના પર્યાયરૂપ ગણાતા. વિદ્યારૂપ અલૌકિક ધનના ભંડાર ધરાવતા કેટલાએ આચાર્યો, સંન્યાસીઓ, સંતભક્તો અને વિદ્વાનો; એ કાશીનગરીના અણમોલ જવાહિરો હતાં. કાશીનરેશ પણ એક આર્ય ક્ષત્રિય વીર હતા. પ્રાણના પણ ભોગે ધર્મરક્ષા અને વિદ્યાધનરક્ષા એ બે કર્તવ્યનું પાલન કરવું એ એમનો મુદ્રાલેખ હતો. શ્રીમહાપ્રભુજી પણ કાશીમાં પધાર્યા. અનેક વિદ્વાન્ સંન્યાસીઓ, મહંત મહાધીશો અને પંડિતો સાથે આપશ્રીએ શાસ્ત્રાર્થો કર્યા. આપશ્રીના અપૂર્વ પાંડિત્યથી, આર્યસંસ્કૃતિના પવિત્ર આદર્શસમા મહર્ષિજીવનથી, મહાત્યાગથી, તેજઃપુંજસ્વરૂપથી કાશીનો માનવસમૂહ આશ્ચર્યમુગ્ધ અને શ્રદ્ધાપૂર્ણ બન્યો હતો. એ સર્વમાં કાશીના તે સમયના ધન-કુબેરસમા ગણાતા શેઠશ્રી પુરુષોત્તમદાસજીએ તો શ્રીમહાપ્રભુજીને પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી દીધું હતું, અને અતિસન્માન તેમજ અતિઆગ્રહથી એઓશ્રીને પોતાના ઘરમાંજ બિરાજવા વિનતિ કરી હતી. ભક્તેચ્છાપૂરક શ્રીવલ્લભાધીશ્વર ત્યારબાદ શેઠજીના ઘરમાંજ બિરાજ્યા [વ્રજદાસ આ સમયે ગદ્‌ગદ્ કંઠ થઈ ગયા અને બે મિનિટ સુધી આગળ બોલી શક્યા નહિ, અને સભામાં તો શાંતિનું સામ્રાજ્ય પ્રસરી રહેલું હતું.] શેઠજીનાં બડભાગીપણાનું વર્ણન આ જીભ તે શું કરી શકે? કાશીમાં એક આશ્ચર્ય તો પ્રસરેલું હતું, તેમાં અબ્જાધિપતિ શેઠજી એક ધર્માચાર્યને શરણે જાય અને પોતાની અઢળક

સંપત્તિની ખુમારી, અપૂર્વ ગૌરવ વગેરેને તિલાંજલિ આપીને શ્રીવલ્લભચરણકમલના દાસાનુદાસ બની જાય એ વાતે તો ભારે ચકચાર જગાડી હતી. શ્રીમહાપ્રભુજી તો શેઠજીના ઘરમાં બિરાજ્યા. આપથી ભક્તવેષ્ટિત રહ્યા. એટલે આપશ્રીની વચનસુધાથીજ જેમનો જીવનનિર્વાહ છે એવા સેવકો પણ સાથેજ રહ્યા. શેઠજીનું રાજસ ઘર, રાજસ કુટુંબ એ બધાનો નવોજ જન્મ થઈ ગયો. શેઠજીનો અદ્ભુત જીવનપલટો થયો. ત્રણ દિન ચાલે તેથી વધારે એક દાણો પણ નહિ સંઘરનાર ત્યાગમૂર્તિ આચાર્યશ્રીએ શેઠજીને ત્યાગી બનાવ્યા નહિ અને એમનો કરોડોનો વ્યાપાર પણ ધર્મપોકાર ચાલવા દીધો. તેમની ધનકુબેર તરીકેની પ્રતિષ્ઠાને લેશ પણ હરકત પહોંચાડી નહિ. બાહ્ય વસ્તુસ્થિતિ જે હતી તેમાં બહુ ફરક પાડવાની જરૂર જોઈ નહિ. પણ તેમનો જીવનપલટો તો અજબ જ થઇ ગયો. કોઇ જૂનો પરિચિત તો એમજ કહે કે દેહ તો શેઠજીનો લાગે છે, પણ આત્મા કોઈ નવોજ આવ્યો છે!

તે વખતે ભારતવર્ષની રાજકીય સ્થિતિ લાખો આર્યસંતાનોના હૃદયોને દગ્ધ કરી રહી હતી. દિનપ્રતિદિન વિધર્મીઓ અને વિદેશીઓના અત્યાચારોના ત્રાસજનક કર્ણકટુ કિસ્સાઓ કાને પડતા હતા, ધર્મપરાયણ કાશીનરેશ સ્વધર્મનું પાલન કરવા માટે પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી ચુક્યા હતા. એમને રાષ્ટ્ર અને ધર્મની રક્ષા માટે ફક્ત છપ્પન કરોડ રૂપીઆની જરૂર પડી હતી! તે વખતના છપ્પન કરોડની બરોબરી અત્યારના છપ્પન અબજ રૂપીઆ પણ કરી શકે નહિ. કાશીનરેશને શેઠજી યાદ આવ્યા. એકદમ એ મહારાજા શેઠજીને ત્યાં પધાર્યા. અનેક પહેરા ગોઠવીને અદ્ભુત રીતે શણગારેલા દિવાનખાનામાં અપૂર્વ ઠાઠથી બેસતા શેઠજી પાસે જવાને સાધારણ માણસનો તો પગ પણ ઉપડે નહિ. કાશીનરેશને બધા ઓળખતા હતા. બપોરનો ૪ વાગ્યાનો સમય હતો. ખબર આપ્યા વિના અચાનકજ મહારાજાને આવેલા જોઇને અનુચર વર્ગ ગભરાટમાં પડી ગયો. મુનીમજી તથા બીજા અનેક અનુચરોએ દરબારનું સ્વાગત કર્યું. કાશીનરેશે આશ્ચર્યથી પૂછ્યું કે શેઠજી ક્યાં છે? ત્યારે મુનીમજીએ અર્જ કરી કે "નામદાર નરેશ! શેઠજી તો અત્યારે સેવામાં છે." રાજાએ પૂછ્યું—"અત્યારે સેવા?" મુનીમજીએ કહ્યું "હા, નામદાર." નરેશે પૂછ્યું કે "તેઓ અત્યારે મળશે કે કેમ?" મુનીમજીએ કહ્યું કે "મળવામાં કાંઇ પ્રતિબંધ નથી." મુનીમજીએ રસ્તો બતાવ્યો અને મહારાજા પ્રભુમંદિરમાં દાખલ થયા. ઉષ્ણકાલના દિવસો હતા. અસહ્ય ગરમી ચોમેર વરસી રહી હતી. પસીનાથી ભીંજાયલા કપડાંવાળા નરેશે જ્યાં મંદિરમાં પ્રવેશ કર્યો કે તુરતજ ત્યાંના પવિત્ર શીતલ વાતાવરણે એમના શરીરમાંજ નહિ પણ હૃદયનાં ઉંડાણમાં પણ એક સુખમય શીતલતાનો સંચાર કરી દીધો. અબજાધિપતિ શેઠજી તે વખતે માત્ર એક સાધારણ વસ્ત્ર પહેરીને સોહનીની (બુહારીની) સેવા કરી રહ્યા હતા, કહો કે વાસીદું કાઢતા હતા. અનેકવાર મળેલા શેઠજીને આજે કાશીનરેશ ઓળખી શક્યા નહિ. રાજાને તે વખતે એક પળ પણ કલ્પસમાન હતી. જેબાકળા થઇને રાજાએ સોહનીની સેવા કરતા શેઠજીનેજ પૂછી નાંખ્યું કે; "શેઠજી ક્યાં છે? મારે મળવું છે?" શેઠજીએ તો દરબારને તુરતજ ઓળખી લીધા; અને કહ્યું કે:—"શેઠજી તો ભીતર મંદિરમાં બિરાજે છે, પણ હું એમનો દાસાનુદાસ હાજર છું."

રાજાએ અવાજ ઓળખ્યો. પૂર્વ સ્મરણ તાજું થયું. ધનમદ અને રાજસ વૈભવોમાં ડુબેલા શેઠજીનાં જીવનમાંના આ પરિવર્તને રાજાને આશ્ચર્યમગ્ન કરી દીધા. તે પછી રાજાએ વાર્તાલાપ કરીને ૫૬ કરોડ રૂપીઆ માગ્યા અને તે શેઠજીએ આપ્યા.

ભાઈ મજુરદાસજી અને વૈષ્ણવો! આ જ્વલન્તઃ ઇતિહાસનો અર્થ કરીને, તેમાંનાં રહસ્યો ઉકેલીને આપ સર્વનો વધારે સમય હું લેતો નથી. આ એક જ ઇતિહાસથી ધનાઢ્યોનાં દૈવી જીવનનો ચિતાર આપનાં હૃદયોમાં અવશ્ય ખડો થયો હશે. [અપૂર્ણ.]

युवक हृदय बोले छे!

(લેખકઃ—શાહ ઘનશ્યામલાલ મણિલાલ પેટલાદ.)

પુષ્ટિમાર્ગ! આજ તારી જાહોજલાલીનાં તેજ ક્યા ગિરિશૃંગો પાછળ છુપાઇ ગયાં છે.? પૂર્વેની તારી અનેરી જાહોજલાલીના પાયા આજ ડગમગવા લાગ્યા છે. સર્વત્ર તારા તિરોધાનના ભણકારા સંભળાય છે. એક વખત જે સંપ્રદાય જગતમાં સર્વોત્કૃષ્ટ હતો, તે આજ સર્વત્ર ઘૃણાની દૃષ્ટિથી જોવાય છે. આજ તારાં ઉંચેરાં નિર્મળ શુદ્ધ સિદ્ધાંતો અમારી બેદરકારીને લીધે અદૃશ્ય થતા જાય છે. જે વૈષ્ણવ સમાજ એક વખત સર્વશિરોમણિ હતો, જે દુનીઆની અન્ય સર્વ જનતાને પ્રમાણરૂપ હતો તેજ સદંતર નિર્માલ્યરૂપ ગણાઇ દુનીઆના સમાજના અવમાનપાત્ર બનશે?

ઓ વ્હાલા વૈષ્ણવ સમાજ! હવે તો જાગૃત થા! ક્યાં સુધી આમને આમ ઘોર્યા કરવું છે? હવે તો આમને આમ ઉંઘ્યાં કરીશું તે નહિં ચાલે. આ અજ્ઞાનરૂપ અંધકારને દૂર કરવાને માટે કર્તવ્યપંથે દોડવાને માટે તૈયાર થા? રાત્રિના ઘોર અંધકારની ભીષણતામાં, અરણ્યમાં, વાઘ વરૂનાં ભયાનક ગર્જનમાં, પહાડની ઉંડી અંધારી ખીણોમાં ભૂલા પડેલ મનુષ્યની માફક દિગ્ભાન વિનાના મનુષ્યની માફક, નેત્રવિહીન પામર પ્રાણી માફક આમથી તેમ અને તેમથી આમ અથડાતો, કુટાતો, ભટકતો, ઠોકરો ખાતો એવો આજ અમારો સમાજ દેખાય છે! ખરેખર તેની સહનશક્તિ તો ઓરજ છે, દિવસે દિવસે તે કમજોર બનતો જાય છે. જો ભૂલા પડેલ વટેમાર્ગુની માફક ટુંક સમયમાં તેને ખરો માર્ગ નહિ સાંપડે તો તે અરણ્યમાં નિષ્ફળ રુદન કરતો નિશ્ચેતન બનશે. જ્યાં ત્યાં અત્યારે ભ્રષ્ટાચારો અને ધર્મને નામે અનેક દુષ્ટ આચારો ચાલુ થતા જાય છે. અત્યારે અનેક બીચારી ભોળી બ્હેનો સ્વાર્થી પાંખંડીઓના વાચાળપણાથી આકર્ષાઇને જીવનની ધૂળધાણી કરે છે! આપણો સમાજ આ બધું ક્યાં સુધી સહન કરશે? સંપ્રદાયના બહાનાં નીચે પોતાની છટાથી તેમજ બાહ્ય આડંબરથી કેટલીએ ઉછરંથી વયની શુદ્ધ હૃદયની યુવતિઓ તથા યુવકોને વિષયની ગંદી ગટર તરફ ઘસડી જવાં, એ શું વૈષ્ણવતા છે? શુદ્ધ હૃદયના ઉછરતા યુવક યુવતિઓને છેવટે કલંકિત થઇને આપઘાત કર્યા વિના ચાલતુંજ નથી. ઓ ભોળી બ્હેનો તથા ઓ વ્હાલા યુવકો! તમો પ્રભુને અર્પણ કરેલ રૂડાં જીવનને નઝીવું ધૂળી ફેંકી ન દેતાં શ્રીકૃષ્ણચરણોમાં અર્પણ કરો. તમારી જીવનનૌકા શ્રીમદ્પ્રભુહસ્તમાં સોંપી દો, કે જેથી તમે આ સંસારમાં કૃતકૃત્ય થાઓ.

ઓ વૈષ્ણવ વડીલ વર્ગ? આજની ઉછરતી પ્રજા આવા સડાઓ શી રીતે ચાલવા દેશે? આજના યુવકો તથા યુવતિઓ આવા કલંકો હવે નહિ ચાલવા દે. તને પ્રભુએ બક્ષેલ આ તારાં મોંઘા જીવનને આમ નકામું વેડફી ના માર. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને સમજીને વિષયાનંદના લ્હાવા લેવાના છોડી દઈ ભજનાનંદનો અનુભવ કરવાને તૈયાર થા. પ્રભુએ લીધેલ તારી સુંદર કાયાને ભગવત્સેવાને માટે ન્યોચ્છાવર કરી દે. ક્ષણભંગુર હાડમાંસ ચામના ભૌતિક સૌન્દર્ય ઉપર મુગ્ધ થવાને બદલે એ સૌન્દર્યને બનાવનાર અને એ સૌન્દર્યનું છુટે હસ્તે દાન કરનાર અજર, અમર, કોટિકંદર્પ કરતાં અધિક અનેરી સૌન્દર્યની છટા જેના ઉપર છાઈ રહી છે એવા શ્રીશ્યામકુંવરઉપર મુગ્ધ થઈ તારૂં સર્વસ્વ તેના ચરણોમાં અર્પણ કરી દે. એ સૌન્દર્યની છટાથી તો તારા વિષયની ધગધગતી જ્વાળાઓનો પણ સમૂહ નાશ પામશે. તારા કોમળ હૃદયમંદિરને એ દિવ્ય પ્રેમ સરોવરમાં ડુબાવી દે. શ્રીશ્યામકુંવર સાથે સનાતન પ્રીતિનું રેશ્યુ સાંધી દે. સાથ સાથ એ પ્રીતિ કરતાં પહેલાં એટલું યાદ રાખવું જોઇએ કે પ્રીતિ કરવી સહેલી છે પણ તેને નિભાવવી મુશ્કીલ છે. પ્રેમને નિભાવવામાં આત્મસમર્પણ કરવાને પણ તૈયાર રહેવું જોઇએ, આ શરીર રહે

ચા જાય, મનનો કાબુ હાથમાંથી છુટી જાય, હૃદય પણ જખમી થઇ જાય, શરીર પણ એ પ્રેમમુર્તિમાં લાગી જાય, અને આ માથું પણ હસતાં હસતાં એ પ્રેમભગવાનના ચરણોમા ચડાવી દેવું પડે તો પણ ફીકર નહિ એવી તૈયારી જો આપણી હોય તોજ તે પ્રેમના આપણે અધિકારી થઇ શકીએ. જે પ્રેમને નિભાવવાનું જાણતો નથી તેને સ્નેહનદીમાં આગળ તરવું નહિ જોઇએ. પ્રેમરૂપી જીવન જીવવામાં કોઇપણ અડચણ આવી જાય તો પપૈઆ અથવા ચાતકને આપણા હૃદય બનાવવા જોઇએ. કારણ કે આદિથી તે અંત સુધી પ્રેમની રીત એક રસ નિભાવવી તેનું જ્ઞાન તેઓને સારી રીતે હોય છે.

ઓ વૈષ્ણવ વડીલ વર્ગ ! જો આ વિશુદ્ધ સનાતન પ્રીતિની રીતો તથા પૂજ્યપાદ શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને આજના અમારા જેવા ઉછરતાં યુવકો તથા યુવતિઓને શીખવાડવા તથા સમજાવવા પ્રયત્ન કરશો તો જરૂર તેઓ શીખવાને તૈયાર થશે, અને તેની અસર તેઓના કુમળાં હૃદય ઉપર ઘણીજ સારી થશે. પણ પ્રભુના મંદિરો તો સ્વચ્છ, નિર્મળ અને પવિત્ર વાતાવરણવાળાં નહિ હોય તો તેમના ઉપર કદાચ આજના યુવકને શ્રદ્ધા નહિ થાય. પણ ખરેખર જો, એજ મંદિરોમાંથી પવિત્ર ધ્વનિ થશે તો બધાને આકર્ષશેજ. આપણા આચાર્યશ્રીઓ અત્યારે પણ સાદાઇ, ઉચ્ચ ચારિત્ર્ય આદિ ગુણોથી શ્રીમહાપ્રભુજી અને શ્રીપ્રભુચરણની માફક ઉગતા તરુણો ઉપર નિજ જીવનની છાપ પાડે તો જરૂર એજ યુવકો અને આચાર્યશ્રીઓના ચરણોમાં પોતાનું માથું એક ફેરો નહિ પણ દશ ફેરો ઝુકાવે છે અને ઝુકાવશે એ નિઃસંદેહજ છે.'

ટુંકમાં એટલું કહેવાનું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ રચેલ મજબુત પાયા ઉપર શ્રીમદ્પ્રભુચરણે રચેલી સુંદર ઇમારત જીર્ણ ન થઇ જાય તે માટે બાલક બાલિકાઓ, યુવકયુવતિઓ, ઓપુરુષો શાસ્ત્રીઓ, આચાર્યો, માસિકના તંત્રીઓ મંત્રીઓએ પોતાનાથી બને તેટલી સંપૂર્ણ મદદ કરવાને માટે કટિબદ્ધ થવુંજ જોઇએ. નહિ તો દિવસે દિવસે વૈષ્ણવ સમાજ પડતીની સ્થિતિ ઉપર આવતા જાય છે, ક્ષીણતા વધતી જાય છે. અને શારીરિક અને માનસિક સામર્થ્ય ઘટતું જાય છે. માટે વૈષ્ણવ સમાજને ઉત્થાનના માર્ગ ઉપર ચડવા અને જાગ્રત થઇ કર્તવ્યપથ ઉપર આવવા મ્હારી ખાસ અભ્યર્થના છે.

ઓ વ્હાલા વૈષ્ણવ યુવકો ! હૃદયની ક્ષુદ્ર દુર્બલતાને ત્યાગી એકદમ જાગ્રત થાઓ. નહિ તો પુષ્ટિમાર્ગનો સૂર્ય આથમવાની તૈયારી ઉપર છે, અને જોતજોતામાં આથમી પણ જશે. તમે નિરુત્સાહ પ્રમાદ અને સંકોચને પરિત્યાગી શ્રીહરિરાયજી આદિ આચાર્યવંશજોની આજ્ઞા પ્રમાણે પ્રભુનું શ્રવણમનનાદિ કરતાં રહી, પ્રભુસેવામાં અંતઃકરણને પરોવી રાખી, સમાજના સડાઓના અને તેના મૂળનો નાશ કરવા, પુષ્ટિમાર્ગને શરદ્ચંદ્ર સરિખો નિર્મળ અને નિષ્કલંક કરવા ઉઠો ! કર્તવ્યપંથે શીઘ્ર દોડો !

ગઝલ, પેસારી

ગોવિન્દ ગોપાલ ગોકુલેશ નામ લીજીએ,
જપજાપ-ક્રિયા-ધ્યાનછોરી ત્યાગ કીજીએ. ગો. ૧

મુખમેં ગોવિન્દ નામ, કરસોં ગોવિન્દ કામ,
શ્રુતિસોં ગોવિન્દ નામકી સુધાહી પીજીએ. ગો. ૨

આઠયામ વાહી ધ્યાન ઓરસોં સદા વિરામ,
વાહીસે વિકુંઠ ધામ સીધી જાન લીજીએ. ગો. ૩

રેન દિવસ બીત જાત આસ સર્વ છોડ આજ,
ચેન ચિત લાઇને શ્રીકૃષ્ણ કૃષ્ણ કીજીએ. ગો. ૪

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

મુંબાઈમાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યપ્રાદુર્ભાવમહામહોત્સવ—શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરનો ૪૫૫ મો પ્રાદુર્ભાવ-મહામહોત્સવ ઉજવવા મુંબાઇના વૈષ્ણવોનું એક મહાસંમેલન સ્થાનીય મ્હોટી હવેલીમાં પૂ. પા. ગો. શ્રી. ગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીના સભાપતિપદે ગુરુવાર તા. ૨૦ તથા શુક્રવાર તા. ૨૧–૪–૩૩ ના (બન્ને દિવસે) રાતના આઠ કલાકે મળ્યું હતું. તે સમયે બા..ગો. શ્રી દીક્ષિતજીનું નિર્ગુણ ભક્તિ અને. ગો. શ્રી. ગિરિધરલાલ બાવા, ગો. ચિ. શ્રીવ્રજનાથલાલજીનું 'શુદ્ધ પુષ્ટિભક્તો' તથા ગો. શ્રીગોપીનાથજી આદિના વચનામૃતો ઉપરાંત પં. હરિશંકર ઓંકારજી, શાસ્ત્રી હરિકૃષ્ણ વીરજી, અને શાસ્ત્રી ત્રીકમજી 'શુદ્ધાદ્વૈત વિશારદ' નાં પ્રાસંગિક વ્યાખ્યાનો થયા હતાં. બન્ને દિવસે સભાપતિશ્રીના સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પૂર્ણ મનનીય વચનામૃતો થયાં હતાં. તદુપરાંત તેઓશ્રી તરફથી ચાલતી શ્રીબાલકૃષ્ણ પાઠશાલામાં સાંપ્રદાયિક શિક્ષણ લઇ અન્તિમ પરીક્ષામાં ઉત્તમ કક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયેલ ભાઈ ત્રીકમજી શર્માને પ્રમુખશ્રીએ અઢીસો રૂપીઆ તથા વસ્ત્રાદિનું પારિતોષિક અને 'શુદ્ધાદ્વૈતવિશારદ' ની પદવી પ્રદાન કરી હતી. તથા પં. બદ્રીનાથ વૈદ્યને તેની આયુર્વેદચિકિત્સામાં નિપુણતાને લીધે સર્ટીફીકેટ આપ્યું હતું. તે બન્નેએ સ્વીકારીને સભાપતિશ્રીનો આભાર માન્યો હતો. બન્ને દિવસે ૩ કલાક સુધી કામકાજ ચાલ્યું હતું અને વૈષ્ણવધર્માનુરાગી ભાઈ બ્હેનોએ સારા પ્રમાણમાં લાભ લીધો હતો. છેલ્લે દિવસે શ્રીયુત વૃન્દાવન વાલજીએ સભાપતિશ્રી, તથા અન્ય ગો. બાલકોનો આભાર માન્યા પછી સમાજમાં વધાઇ ગવાયા બાદ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીના જય નાદ વચ્ચે સહુ વિખરાયા હતા.

વિલાપારલામાં—સંસ્કૃત પાઠશાલા તરફથી શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાકટ્યોત્સવ ઉજવવા તા. ૨૦–૪–૩૩ ને ગુરૂવારે રાતના નવ કલાકે એક સભા શ્રી ગોરવાલ બ્રહ્મનિવાસમાં શ્રીયુત મટુભાઈ કીશનદાસ સોલીસીટરના પ્રમુખપણાં નીચે મળી હતી. તે સમયે સંસ્થાના મંત્રીએ પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરતાં સભા બોલાવવાનું પ્રયોજન જાહેર કર્યા બાદ આજની સભાના મુખ્ય વક્તા શ્રીયુત છોટાલાલ જાગીરદારે પ્રાસંગિક વિવેચન કર્યા બાદ 'ભારતના મહાતત્ત્વજ્ઞાની' નામક ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજીએ લખેલ નિબંધ વાંચી સંભળાવ્યા બાદ શ્રીયુત પેંઢારકરે શ્રીમદાચાર્યશ્રીના ચરિત્ર ઉપર વિદ્વત્તાપૂર્ણ વિવેચન કર્યા બાદ, શ્રીયુત ગિરિધરલાલ જ. શાહે શ્રીમદાચાર્યચરણના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોનું દિગ્દર્શન કરાવ્યો પછી પ્રમુખશ્રીએ પણ આવશ્યક વ્યાખ્યાન કર્યા બાદ શ્રીયુત દવેએ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય વક્તાઓનો આભાર માન્યા બાદ મોડી રાતના સભા વિસર્જન થઇ હતી. ઉપર્યુક્ત મહોત્સવ નિમિત્તે સ્થાનીય શ્રી ભક્તિમાર્ગીય સા. મન્દિર, શ્રી પુ. યુ. પરિષદ્ વિગેરે સંસ્થાઓ તરફથી શ્રી વીલાપાર્લા સં. પાઠશાળાની પુસ્તકાલયને કેટલુંક સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય ભેટ આપવામાં આવ્યું હતું.

કચ્છ નલીયામાં—પ્રાકટ્યમહામહોત્સવ ઉજવવા કચ્છ નલીયાના વૈષ્ણવોની એક સભા ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને ગુરૂવાર તા. ૨૦–૪–૩૩ ના દિને સાંજના પાંચ કલાકે કચ્છ માંડવીવાલા પૂ. પા. ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીદ્વારકેશલાલજી મહોદયના પ્રમુખપણાં નીચે નવી ધર્મશાળામાં મળી હતી.

મહારાજશ્રીના શાસ્ત્રીજી પં. ગંગાધરજી વ્યાકરણાચાર્યે વિદ્વત્તાપૂર્ણ (હિન્દીમાં) ભાષણ આપતાં જણાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી ભક્તિ-માર્ગના છેલ્લા આચાર્ય થયા છે. આપશ્રીને પૂર્વાચાર્યોએ પ્રતિપાદન કરેલ ભક્તિમાર્ગમાં અનેક ત્રુટિઓ જણાઇ. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીથી પૂર્વના ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ દ્વૈત યા વિશિષ્ટાદ્વૈત સ્વીકારી ભક્તિમાર્ગ ઉપદેશ્યો હતો. દ્વૈત ભાવમાં સર્વથા નિષ્કામ સેવન નજ થઈ શકે. કંઇક સ્વાર્થ દ્વૈતવાદમાં ભક્તનો રહે છેજ. તેથીજ સર્વથા નિષ્કામ, નિર્ગુણ, ભક્તિમાર્ગ સેવા માર્ગને પ્રવર્તાવવા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદને સ્વીકારી સર્વત્ર આત્મભાવ 'वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।' આ ભગવદ્ વાક્યાનુસાર અખિલ બ્રહ્માંડમાં, ચરાચર વસ્તુમાં, અરે! એટલુંજ નહિ પણ સ્વયં પોતામાં નિર્ગુણ-નિષ્કામ ભગવદ્ ભક્ત પોતાના પ્રેષ્ઠને-પ્રિયતમને અવલોકી તેમના પ્રેમમાં મસ્ત બની-અદ્વૈત ભાવમાં તદ્રૂપ બની કશાની પણ ઇચ્છા રાખ્યા વિના ભગવત્સેવન કરે છે. એજ વિશિષ્ટ ભક્તિમાર્ગ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો છે.

સભાપતિશ્રીનો મનનીય સદુપદેશ—ત્યાર પછી પ્રમુખશ્રીએ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણના જીવનની રૂપરેખા દોરી આપશ્રીએ આપણા ઉપર કેટલી નિઃસીમ કૃપા કરી છે તે પરત્વે જણાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણે પ્રથમ નવ વર્ષ, દ્વિતીય પાંચ વર્ષ અને તૃતીય ચાર વર્ષ; કુલે અઢાર વર્ષમાં ત્રણ વખત ભારતવર્ષમાં પરિક્રમણ કરીને સંસારરોગથી પીડાતા નિઃસાધન જીવોને ભગવદ્ભજનરસ પાઇ સાલોક્યાદિમુક્તિચતુષ્ટયથી પણ અધિક ભજનાનન્દનો આસ્વાદ કરાવ્યો હતો. શ્રીમદાચાર્યચરણે આ અલૌકિક,દેવતાઓને પણ દુર્લભ ભગવદ્ભક્તિનું દાન કોઇ પણ જાતના ભેદભાવ વગર સર્વ જાતિઓને કર્યું હતું. ખરેખરા પતિતોના–અસ્પૃશ્યોના ઉદ્ધારક શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વર હતા. પતિતો–અસ્પૃશ્યોનો આ સંસાર સાગરમાંથી–જન્મમરણના યા લક્ષચોરાશીના ફેરામાંથી ઉદ્ધાર કર્યો હતો. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ અસ્પૃશ્યોનો ઉદ્ધાર ઉચ્ચ વર્ણના હિન્દુઓના ભગવન્મંદિરમાં અસ્પૃશ્યોને ઘુસાડ્યા વગર, અન્ત્યજો સાથે રોટીબેટીવ્યવહાર કર્યા વગર, ઉચ્ચ હિંદુઓ પાસે ચમાર, મોચી, ભંગી, વગેરેનું કામ કરાવ્યા વગર; અસ્પૃશ્યોનો રોટલો ટાળ્યા વગર ઉદ્ધાર કર્યો હતો; કે જે અસ્પૃશ્યો–મોહના ભંગી જેવા વિશ્વવંદ્ય ભગવદ્ભક્તના સ્કંધ ઉપર વેદો જેને નેતિ નેતિ પોકારે છે તે રસરૂપ અખિલાનંદ રૂપ પ્રભુ શ્રીગોવર્ધનધરણ બિરાજી ખેલતા હતા. સાચા અસ્પૃશ્યોદ્ધારક–પતિતોદ્ધારક તો શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણ હતા. હજુ પણ પતિતો–અસ્પૃશ્યો અને તેઓની ઉન્નતિ ઈચ્છનારાઓ શ્રીમદાચાર્યચરણોપદિષ્ટ સરણિને અનુસરે તોજ અસ્પૃશ્યોનો ઉદ્ધાર શક્ય છે. અન્ય રીતે તો બિચારા ગરીબ અસ્પૃશ્યોનું અધઃપતન અવશ્યભાવી છે. તેમને પણ હિન્દુ ધર્મથી વિમુખ બનાવી ડૉ. આંબેડકર જેવા ખ્રીસ્તી યા નાસ્તિક બનાવી, તેમના અન્ય જન્મોમાં અસ્પૃશ્ય–ચાંડાલયોનિથી પણ નીચ–કૃમિકીટ–યા અંધતમ નરકમાં ધકેલવાનોજ આ સર્વ વંટોળીયો છે. આવા અનેક લોકોપકારી–જગત્કલ્યાણકારી કાર્યો કરી–બ્રહ્મસૂત્ર, ભાગવત વિગેરે અનેક આકર ભાષ્યો લખી શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણે સં. ૧૫૮૭ના અષાડ શુક્લ ૩ ના દિને મધ્યાન્હે કાશીમાં હનુમાન ઘાટ પર પુનિત જાન્હવીના મધ્યમાં તેજઃપુંજ થઇ સ્વધામ પધાર્યાં હતા. જ્યારે શ્રીમદાચાર્યચરણે સંન્યાસાશ્રમ ગ્રહણ કર્યો. આ. શુ. ૩ ને દિને નિજ પુત્રો શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી (શ્રીગુંસાઇજી) અને વૈષ્ણવો શ્રીમદાચાર્યચરણ પાસે આવી પોતાને શી આજ્ઞા છે, તે પૂછ્યું ત્યારે અસ્મદાદિ જનોની જેમ ઘર, જમીન, ખેતર યા માલ મિલ્કતની સંભાળવાની ભલામણ ન કરતાં અલૌકિક એક આચાર્યને શોભે તેવું વસીયતનામું વીલ કર્યું.

જ્યારે તમે કોઈ પણ રીતે ભગવાનથી બહિર્મુખ-વિમુખ થશો–લૌકિકમાં આસક્ત થશો તો તમારા ચિત્ત દેહ વિગેરે સર્વ કાલપ્રવાહમાં ચલિત થઈ તમારૂં સર્વ પ્રકારે ભક્ષણ કરશે–નાશ કરશે. એવી મારી મતિ છે. આ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરનું વસીયતનામું–વીલ છે. પોતાનો તે અમૂલ્ય વારસો પોતાના વંશજોને આપ્યો છે. જો તેઓશ્રીના વંશજો, શિષ્યો, સેવકો, વૈષ્ણવો પણ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરે કરેલ પોતાના વસીયતનામાની શરતો પાલન કરે તોજ તેઓશ્રીનો વારસો હક્ક–મિલ્કત–હૃદયરોપસ્થિત સહસ્રાવસ્મીતજ–સીમંતિનીઓથી સેવિત લીલાક્ષીરાબ્ધીશાયી શ્રીરસપ્રચુર પ્રભુ પ્રાપ્ત કરી શકે અન્યથા નહિ.

ત્યાર બાદ આશ્રયની વધાઈ હવી મહારાજ અને રાધવજી કીર્તનીયાએ સમાજમાં ગાયા બાદ સભાપતિશ્રીનો આભાર મનાયા પછી શ્રીગોવર્ધનધરણના જયનાદ સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી.

શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજયંતી–શ્રી શુદ્ધાદ્વૈત પાઠશાળા તરફથી (પેટલાદમાં) સાતસ્વરૂપની હવેલીએથી સાંજના છ વાગે વરઘોડો ચઢ્યો હતો. શરૂઆતમાં સુંદર બેન્ડ વાજું તે પછી વૈષ્ણવ વર્ગ અને તે પાછળ વિક્ટોરિયા ગાડીમાં શ્રીમહાપ્રભુજીના સુંદર ચિત્રજીને પધરાવી બંને બાજુએ મુખ્યાજીઓ ચમર ઢોળી રહ્યા હતા. તે પાછળ સ્ત્રી વર્ગ મંગળમય કળશો ધારણ કરી સુલલિત સ્વરે ગીતધ્વનિ કરતાં ચાલી રહ્યાં હતાં. વરઘોડો બજારમાં ફરી દશા દિશાવાળની ધર્મશાળાએ ઉતર્યો હતો. ધર્મશાળાને વૈષ્ણવ ગિરિધરલાલે આસોપાલવ તથા ધ્વજ પતાકાથી શણગારેલી હતી, ભવ્ય મંડપમાં સિંહાસન ઉપર શ્રીમહાપ્રભુજીને પધરાવ્યા બાદ ઓનરરી સેક્રેટરી શાહ મણિલાલ છોટાલાલે પ્રમુખની દરખાસ્ત રજુ કરતાં તેને શાસ્ત્રી ગંભીરાંકરે અનુમોદન આપતાં પ્રમુખ દાતાર શેઠ બુલાખીદાસ નારણદાસે પોતાનું સ્થાન સ્વીકાર્યાં પાઠશાળાની બાળાઓએ પ્રાર્થના કરી " શ્રીમદ્વલ્લભપ્રભુનો વિજય ધ્વજ ફરકી રહ્યો રે " એ ગરબો

સુલલિત કંઠે ગાયો હતો, બાદ પાઠશાળાના સેક્રેટરી પરીખ હિરાલાલ મોતીલાલે સં. ૧૯૯૮નો હિસાબ રજુ કરી પાઠશાળાના કામથી સંતોષ જાહેર કરી દ્રવ્યાભાવે શાસ્ત્રીજીની કદર ન થઇ શકવાથી દીલગીરી જણાવી શ્રીમહાપ્રભુજીના ચરિત્ર સંબંધી વિવેચન કર્યું હતું. તે પછી પરમ ભગવદીય શ્રીમાન્ મગનલાલભાઇએ વૈષ્ણવોને ધાર્મિક જીવન ગાળવાને સ્વકર્તવ્યનો બોધ સમજાવી સરળ માર્ગ દર્શાવ્યો હતો. બાદ શાસ્ત્રીજી મણિશંકરભાઇએ ટૂંકમાં ભક્તિમાર્ગની સરળતા ઘણીજ સુંદર રીતે દર્શાવી હતી. તેમજ શાસ્ત્રી રામકૃષ્ણે પ્રસંગોચિત વિવેચન કર્યું હતું. ત્યારબાદ પાઠશાળાના શાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠારામ હરિજીવન જોશીએ ધર્મથીજ ભારતવર્ષની ઉન્નતિ દર્શાવી ધર્મની આવશ્યકતા વિષે વિવેચન કરતાં ધાર્મિક અને નૈતિક જ્ઞાન મેળવવા સ્વ બાળક બાળાઓને પાઠશાળામાં મોકલવા વૈષ્ણવોને સંબોધ્યા હતા. ત્યારબાદ પારિતોષિક, પ્રમાણપત્રો અને સ્કૉલરશીપની વહેંચણી પ્રમુખના હસ્તે થઈ હતી. તે પછી શ્રીમહાપ્રભુજીનો ગરબો બાળાઓએ ગાયો હતો. બાદ પ્રમુખશ્રીએ પોતાનું ભાષણ આપતાં પાઠશાળાના કામથી સંતોષ જાહેર કર્યો હતો. તે પછી પ્રમુખનો તથા વૈષ્ણવોનો આભાર માની જયનાદ પૂર્વક સભા વિસર્જન થઈ હતી.

ધારીમાં પ્રાકટ્ય મહોત્સવ—આજે અખંડભૂમંડલાચાર્યવર્ય ભક્તિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઉત્સવ હોવાથી ભાવિક વૈષ્ણવોનાં હૃદયમાં આનંદનો ઉદધિ ઉછળી રહ્યો હતો. સાંજના ૫ થી ૭ વાગતાનો સમય સભાનો રાખ્યો હતો. હવેલીના ચોકમાં ધ્વજ પતાકાથી શણગારી શ્રીમહાપ્રભુજીના ચિત્રજી એક ઉંચા આસન ઉપર પધરાવ્યા હતા. સમય થતાં શેઠ ચત્રભુજ આણંદજીને ઘેરથી મંગળ કલશ પધરાવી બહેનો અને ભાઇઓ મંગલ વધાઇયો ગાતાં હવેલીયે આવતાં હતાં; રસ્તામાં કીર્તનીયાના અભાવે—ધારી પુષ્ટિમાર્ગીય પાઠશાળાના બાળ વિદ્યાર્થીયોએ આખે રસ્તે મંગળ સ્તોત્રો મધુર વાણીમાં ગાઈ શ્રીનાથજી, શ્રીમહાપ્રભુજી અને શ્રીગુસાંઇજીના જયધ્વનિથી આખા શહેરમાં આજનો માંગલિક ઉત્સવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. તમામ મંડળ હવેલીયે પહોંચતાં સભાના રૂપમાં ગોઠવાઇ ગયું. શેઠ ચત્રભુજ આણંદજી તરફથી કળશની આરતી થઇ એકંદર ભેટની રકમ પણ સારી થઇ હતી. પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીયોયે ધાર્મિક સંવાદો કર્યાં ઉપરાંત સ્તોત્રો મધુર સ્વરથી ગાઇને સભાજનોનાં મન આકર્ષ્યાં હતાં. માસ્તર હરિદાસ જમનાદાસે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં દિવ્ય ચરિત્રોનું યશોગાન વ્યાખ્યાનરૂપે કર્યું. તેમાં આપશ્રીનું આ ભૂતળે ઉપર પ્રાકટ્ય થવાનું મુખ્ય કારણ વિસ્તારપૂર્વક વર્ણવ્યું હતું. છેવટે હર સાલ મુજબ શેઠ વિશ્રામ પુરુષોત્તમ તરફથી તમામ વૈષ્ણવ ભાઇયોને અનસખડી મહાપ્રસાદ વંચાઈ શ્રીમહાપ્રભુજીના જય ધ્વનિ વચ્ચે સભાનું કામ સમાપ્ત થયું હતું. એકંદરે આજનો આનંદ આ સ્થળના પ્રમાણમાં ખૂબ થયો એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. પુષ્ટિમાર્ગીય પરીક્ષામાં પાસ થયેલા વિદ્યાર્થીયોનાં ઇનામો પણ આજની સભામાં વહેંચાયાં હતાં.

વઢવાણમાં આનંદ—૧ શ્રીમદનમોહનલાલજીની હવેલી તથા શ્રીકેસરીયામંડલી તથા શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાની ઓફીસ, ધ્વજ, વાવટા, તોરણો, ઇત્યાદિથી શણગારવામાં આવ્યા હતા. ૨ ચૈતર વદ પાંચમથી અગીયારસ સુધી રાત્રે મંડલીમાં નિત્ય નિયમ થયા બાદ સમાજમાં વધાઇઓ બોલવામાં આવી હતી. ૩ ચૈતર વદ ૧૧ ના શુભ દિવસે પ્રભાતે (મૂળચંદદાસ તરફથી શ્રી કેસરીયા મંડળીને અર્પણ કરવામાં આવેલ મકાનમાં) વિધિસર મંડલીની સ્થાપના કરવામાં આવી હતી અને ત્યાંથીજ કલશ સહિત વરઘોડો કાઢવામાં આવ્યો હતો. તેમાં પ્રથમ ધ્વજ રાખવામાં આવેલ હતી. ત્યારબાદ ખાસ મંડલીના બાળકોએ નાના વાવટા રાખ્યા હતા. અને શ્રીની જય ધુન પણના ઉચ્ચારો કરતા હતા. ત્યારબાદ પતાકા રાખવામાં આવ્યા હતા. તે પછી વૈષ્ણવોનો સમુદાય ચાલતો હતો અને ત્યાર પછી શ્રીકેસરીયા મંડળીના મેમ્બરો અને કીર્તનકારો સમાજના જય ઉચ્ચારતા હતા. ત્યારબાદ એક નાની ગાડીમાં શ્રીમહાપ્રભુજીના ચિત્રને પધરાવવામાં આવ્યા હતાં અને તેઓશ્રી સન્મુખ શ્રીમદ્ અનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીના ચિત્રજી પધરાવવામાં આવ્યાં હતાં. ગાડીની બન્ને બાજુએ મોરછલી સાથે બાળકો ચાલતા હતા. ત્યારબાદ બાળાઓએ આરતી તથા કલશ પધરાવ્યા હતા. ત્યારપછી સ્ત્રીઓ સુંદર ધોળ બોલતી ચાલતી હતી. આ વરઘોડો દરબારગઢ પાસે થઇ મહાસભાની ઓફીસ આગળ થઇ (મહાસભાના મંત્રીએ શ્રીચિત્રજીને સુગંધી અબીર ગુલાલથી વધાવી અને પુષ્પમાળ ધરાવી હતી.) ત્યાંથી દિવાન

સાહેબની ડેલીનો રસ્તો લઇ વરઘોડો હવેલીએ પહોંચ્યો હતો ત્યાં તિલકના ઓચ્છવ દર્શન થયા અને ત્યાં સમાજ, વધાઈ, ધોળ, હીચ હમચી, ઈત્યાદિથી આનંદ કરવામાં આવ્યો હતો ત્યારબાદ વરઘોડો ખાંડી પોળ થઇ માધાવાવ થઇ મોતી ચોકમાં અને ત્યાંથી કંસારા બજારમાં થઈ શ્રીકેસરીયામંડળીના મુકામે ઉતર્યો હતો. ત્યાં વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ વંટાયા બાદ શ્રીની જયઘોષણા સાથે વૈષ્ણવો પોતપોતાને ઘેર ગયાં હતા. ત્યારબાદ સાંજે પાંચ વાગતાં શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાની ઓફીસમાં સભા રાખવામાં આવી હતી. તેમાં પ્રમુખસ્થાને ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીમદ્ અનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીના ચિત્રજીને પધરાવવામાં આવ્યાં હતાં અને તે પછી ચતુરદાસે અનેક સિદ્ધાંતો, દૃષ્ટાંતો સાથે શ્રીમહાપ્રભુજીના ટુંક જીવનચારિત્ર વિષે ભાષણ કર્યું હતું. ત્યારબાદ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાના મંત્રી ગોપાલદાસે તેમના ભાષણને ટેકો આપીને આજના આ શુભ દિવસનું ટુંક વર્ણન સમજાવ્યું હતું અને ત્યારબાદ ભગવદીય લલ્લુભાઇ છગનલાલ તરફથી મળેલ ગોસ્વામી બાલકોના ફોટાઓ વહેંચવામાં આવ્યા હતા. ૫ ત્યારબાદ રાત્રે નવ વાગે શ્રીકેસરીયા મંડળીના મુકામે નિત્ય નિયમ યથાબાદ સમાજ ઈત્યાદિ કરવામાં આવ્યાં હતાં અને ત્યારબાદ શ્રીકેસરીયા મંડલીના કાર્યકર્તા ગોપાલદાસે આ મંડળીની સ્થાપના થયાને ૨૯ વર્ષનો અહેવાલ તથા આજ સુધીમાં જે જે ભગવદીઓ તરફથી આ સંસ્થાને મદદ મળી હતી તેઓનો આભાર માનવામાં આવ્યો હતો જે આ નીચે પ્રમાણે છે:—(૧) શ્રી કેસરીયામંડલી આજે પોતાની સ્થાપનાને ૨૯ વર્ષ પસાર કરી અને ત્રીસમા વર્ષમાં પ્રવેશ કરે છે. (૨) મુખ્યાજી દામોદરદાસ (તે શ્રીમદ ગોકુલના રહેવાસી) તેમણે આપણા ઉપર મહાન પરિશ્રમ ઉઠાવી અને આપણને અન્ય માર્ગથી બચાવી અને સ્વમાર્ગ (ભગવદ્ભક્તિ) માં જોડયા તેટલુંજ નહી પણ સાથે સાથે અનેક પ્રકારની અમૂલ્ય પુસ્તકો (હસ્તલિખિત) ની ભેટ આપી અને આ મંડલીને આગળ ધપાવી પોતાનું નામ અમર બનાવી ગયા. (૩) આ મંડલીની સ્થાપના કરવાની આજ્ઞા ગોસ્વામિની શ્રીરાધામાજી (શ્રી જામનગરવા) મહારાજશ્રીએ આપી અને આ મંડલીને કૃતાર્થ કરી, (૪) આ મંડળીની સ્થાપના દરજી વૈષ્ણવ અમૃતલાલ ભાઈની દેખરેખ નીચે કરવામાં આવી હતી અને તેઓએ મોટા પરિશ્રમ લઈ મોડી રાતોના ઉજાગરા કરી પોતાની નિસ્વાર્થ સેવા બજાવી આ મંડલીને પંક્તિમાં આણી છે. (૫) આ સંસ્થાની શરૂઆતમાંજ ૫. ભ. જીવરામભાઇ મંગળજીએ પોતાના ખર્ચે અનેક સાજ જેવા કે નગારા, ઢોલક પખાવજ જાંજમ ઇત્યદિની મદદ આપી અને પોતાની ગૃહસ્થાઈ દીપાવી. (૬) આ મંડલીની સ્થાપના થઇ ત્યારથી આજ સુધી ૨૯ વર્ષ સુધી ૫. ભ. અમરસીભાઈએ પોતાનું મકાન વાપરવા આપી પોતાની ઉદારતા બતાવી એટલુંજ નહી પણ પ્રસંગોપાત અનેક પ્રકારની નાની મોટી મદદો કરી રહ્યા છે. (૭) સ્વસ્થાન શ્રીલખતર નરેશ ભગવદ્ધર્મપરાયણ મહારાણા શ્રી સાત શ્રીબલવીરસિંહજી બહાદુર તરફથી આ સંસ્થાને પેટ્રોમેક્સ બત્તી એક તથા હારમોનીયમ હાથપેટી એક આપી અને આ મંડળીની સાજની ખામી દૂર કરી છે. (૮) ભગવદીય ઓગણસાઈ નથુભાઇ (માંગરોળવાળા) આ સંસ્થાને પતાકા નં. ૨ કરાવી આપી આ મંડળીના સાજમાં વધારો કર્યો છે. (૯) આ સંસ્થાને અનેક ભગવદીઓ તરફથી અવારનવાર નાની મોટી મદદો મળી રહી છે. (૧૦) આ મંડળીમાં કેટલાક વૈષ્ણવો પોતાનું લવાજમ ભરી અને મેમ્બર બની અને સેવા બજાવી રહ્યા છે. (૧૧) કોઈ દિવસ કોઇથી નહિ વીસરાય તેવું પરમ ભગવદીય મરજાદી મૂળચંદદાસ જેઠાભાઇએ પોતાનું મકાન આ મંડળીને અર્પણ કરી અને પોતાનું નામ અમર બનાવ્યું છે તેટલુંજ નહી પણ હજી તેઓને આ મંડલી વિષે કેટલી ઉમેદ છે. (૧૨) આ મંડલીમાં જે જે ભગવદીઓ તરફથી ભેટ મળી છે તેઓની અમોને યાદ છે તેટલાની નોંધ લીધી છે તે સીવાય કોઈ ભગવદીયદ્વારા કાંઈ ભેટ મળી હોય તેમનું અમોને જાણ નહી હોવાથી કહી શકયા નથી તો ક્ષમા કરશો. ૬ ઉપરોક્ત નામવાળા ભગવદીઓ તરફથી આ સંસ્થાને લખ્યા પ્રમાણે મદદ મળી છે તેઓનો આ મંડળી આભાર માને છે. એજ.

મોટીમારડ (કાઠિયાવાડ) માં આનંદ—અત્રેની હવેલીમાં શ્રીમદ્ આચાર્યચરણના જન્મ દિવસ નિમિત્તે શ્રીમદનમોહન પ્રભુને પલનામાં ઝુલાવવામાં આવ્યા હતા, અને રાજભોગ વખતે જન્મ જયન્તિનો ઉત્સવ માનવામાં આવ્યો હતો અને શ્રીમહાપ્રભુજીની વધાઇ ગાવામાં આવી હતી. અને વૈષ્ણવ જનતાના હૃદયમાં આનંદ છવાઈ રહ્યો હતો. આજના ફુલમંડલી કરવામાં આવી હતી. અત્રેથી ત્રણ ગાઉ

છેટે બાદેર વાગે આ જન્મજયંતિ પ્રસંગ માટે ટંકારાવાળા શેઠ જમનાદાસ દયાલજીભાઇએ અત્રેની કીર્તનમંડળીને આમંત્રણ કરી હોંચ કીર્તન કરાવ્યાં હતાં. અને ઢાઢી લીલા કરવામાં આવી હતી. અત્રેથી વીસ કીર્તનીઆ ત્યાં પધાર્યા હતા અને અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો. રાતના ચાર વાગ્યા સુધી ઢાઢી લીલા ચાલી હતી. અને શ્રીનાથજીની ભેટમાં ઠીક રકમ ભરાઇ હતી. બીજે દિવસે સવારમાં ઉઠી સ્નાન વગેરે પરવાર્યા બાદ એકાદ કલાક કીર્તનમાં ગાળ્યો હતો અને ત્યારબાદ સૌએ મહાપ્રસાદ લીધો હતો. આ વખતે શેઠ જમનાદાસભાઇએ ઉત્તમ પ્રકારની વ્યવસ્થા કરી વૈષ્ણવ મંડળની ઘણી સેવા કરી હતી. ત્યાર બાદ સાંજના ચાર વાગે શ્રીગિરિરાજધરનકી જય 'શ્રીમહાપ્રભુજીની જય' બોલાવી વૈષ્ણવ મંડળ ગાડા રસ્તે પરત મોટીમારડ આવ્યું હતું. આ પ્રમાણે શ્રીમહાપ્રભુજીના જન્મ મહોત્સવ દિવસ નિમિત્તે સૌએ અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો.

શ્રીવલ્લભ જયંતિ મહોત્સવ ટંકારા—તા. ૨૦–૪–૩૩ના રોજ શ્રીવલ્લભ જયંતિ મહાન સમારોહથી ઉજવવામાં આવી છે. આ મહાન જયંતિ ઉજવવા માટે શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભાના કાર્યકર્તાઓ અઠવાડીઆ પહેલાંથીજ અતિ ઉત્સાહભર્યાં હ્રદયથી તૈયારીઓ કરી રહ્યા હતા. છેવટે એ અનેરો મહામૂલો અવસર આવી પહોંચ્યો. ધર્મભાવિકોનાં મન આનંદથી ઉછળી રહ્યાં હતાં. સાંપ્રદાયિક નર નારીઓને મન આજનો દિવસ કંઇ નોખીજ તરેહનો આનંદદાયક લાગતો હતો, કારણ કે આજના પવિત્ર દિવસે શ્રીમહાપ્રભુજી આ ભૂમંડલ ઉપર અધમ જીવોને ઉદ્ધારવા અને વિધર્મીઓએ કરેલી ધર્મહાનિને ભસ્મીભૂત કરી ફરીથી દિવ્ય ધર્મની સ્થાપના કરવા પ્રગટ થયા હતા. આવા મહાન ધર્મસ્થાપક, પરમ દયાનિધિ परोपकाराय सतां विभूतयः એ સૂત્રનું અક્ષરશઃ પાલન કરવા તનતોડ પ્રયાસ કરવા પ્રયાસ કરનાર દિવ્ય વિભૂતિનો જન્મમહોત્સવ ઉજવવા કોણ તૈયાર ન હોય? જયંતિના વ્યવસ્થિત કાર્યક્રમ માટે આગળથીજ સોની હીરજીભાઇના ચોગાનમાં એક ભવ્ય મંડપ ઉભો કરવામાં આવ્યો હતો. આ મંડપનું કાર્ય એટલી કુશળતાથી કરવામાં આવ્યું હતું કે આ મંડપને નીરખવા માટે ટંકારાની ધર્મભાવી જનતા ઉત્સાહ પૂર્વક આવતી હતી. જાણે વિશ્વકર્માએજ તે રચ્યો હોય તેમ તેની શોભા અલૌકિક હતી. સહસ્રરશ્મિના તેજોમય પ્રકાશમાં મંડપની દિવ્ય પતાકાઓ પવનની સાથે મહાપ્રભુજીના પ્રાગટ્યની વાતો કરતી આનંદથી ફડફડાટ કરી હર્ષ પ્રદર્શિત કરતી હતી. વાયુદેવ પણ તે દિવસે આનંદમાં મગ્ન થઇને જાણે આ જયંતિમાં ભાગ લેતા હોય તેમ પ્રબળ વેગથી વાઇને પોતાનો ઉત્સાહ પ્રગટ કરતા હતા. મનુષ્યો પણ પોતાના શુદ્ધ પ્રેમથી, ધર્મભાવનાથી ભરપુર લાગણીથી ડોલતા ડોલતા હર્ષથી પ્રફુલ્લિત થઇને આ સમારંભમાં ભાગ લેવા પુરતી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. પહેલું કાર્ય કળશનું હતું. આ કાર્ય કરવા માટે એક સરઘસના આકારમાં સઘળા ગોઠવાયા હતા. શરૂઆતમાં પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓ વાવટા લઇને "શ્રીવલ્લભાધીશ મહોત્સવ"ના અક્ષરોથી અંકિત એક બોર્ડ સાથે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં યશોગાન ગાતા ગાતા ચાલતા હતા. તેમના આ સ્તુત્ય કાર્યમાં મદદ કરવા તેમની પછી શહેરના સંપ્રદાયિક નાગરિકો વિદ્યાર્થીયોને ઉત્તેજીત કરતા કરતા ચાલતા હતા. કેસરીયા મંડલી પણ પોતાના સંપૂર્ણ સાજ સાથે શ્રીવલ્લભાધીશનાં યશોગાન ગાવામાં તલ્લીન બની ગઈ હતી. અને એ મંડળીના ચાલકોની આવી ભાવપુરિત અને ભક્તિયુક્ત સ્તુતિ સાંભળીને પ્રેક્ષકો મુગ્ધ થતા જતા હતા. અને છેવટમાં વ્રજભક્તોનું તાદૃશ ચિત્રપટ રજુ કરતી કુમારિકાઓ પોતાના સુમધુર કંઠ વડે "શ્રીવલ્લભ આજ પ્રગટ હુવા રે" એ ગીત ગાઇને મેદનીને પ્રભુજીના પ્રાગટ્યનું યથાર્થ ભાન કરાવતી હતી. એકંદર આ અદ્ભુત સરઘસ યમુનાજીના પ્રબળ વારિપ્રવાહ સમું, જનસમુદાયરૂપ મહાપ્રબળ પ્રવાહથી ભક્તિરસમાં મદમસ્ત બની, જનતાને આશ્ચર્યમાં નાંખતું, ધર્મ ભાવના પ્રેરતું, અને આનંદ રેલાવતું પરમ ભગવદીય સોની પોપટલાલ કાલીદાસને ઘેરથી સંપૂર્ણ તૈયારી સાથે રવાના થયું. સરઘસ શહેરના મુખ્ય મુખ્ય ભાગમાં ફરીને સાતસ્વરૂપના મંદિર આગળ થઇને હવેલીએ પહોંચ્યું હતું. ત્યાં શ્રીના તિલકના દર્શનની તૈયારી હતી. તેથી દર્શન ખુલતાંની સાથે વૈષ્ણવ નરનારીઓએ જુદા જુદા ચોકમાં શ્રીની સાંનિધ્ય નંદમહોત્સવ કરી પોતાનો ભક્તિભાવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો અને ઉપર મુજબ સવારનો કાર્યક્રમ પૂર્ણ થયો હતો. બપોરના ૩ા થી ૬ સુધી સભા રાખવામાં આવી હતી. સભાના પ્રમુખસ્થાને ઉત્સવપતિનાં ચિત્રજીને પધરાવવામાં આવ્યાં હતાં. આ સભામાં સાંપ્રદાયીક અગ્રગણ્ય ગૃહસ્થો ભગવદીય શેઠ માણેકચંદ વીરચંદ, ભ. તુલસીદાસ ગોકળદાસ, ભ.

જગજીવન ગોવિંદજીભાઈ, જ્ઞ. સોની પોપટલાલ કાળીદાસ તથા વૈદ્યશાસ્ત્રીજી લક્ષ્મીશંકર હરિશંકર આદિએ હાજરી આપી હતી. આ સિવાય બીજી અનેક સાંપ્રદાયિક વ્યક્તિઓએ સભામાં હાજરી આપી શોભામાં ઓર વધારો કર્યો હતો. અમલદાર વર્ગમાં મે. ડૉક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે, સબ. આ. સરજન, મે. હેડ માસ્તર સાહેબ એમ. એચ. નેશાપુરા બી. એ., કન્યાબ્રહ્મચર્યાશ્રમના મુખ્ય અધિષ્ઠાતા મહાશય ગીરધરલાલભાઇ, તથા શ્રીયુત જે. એચ. જાની તથા સાર્વજનિક સેવા સમાજના પ્રેસિડેન્ટ સાહેબ રા. આણંદજી ભાઈ તથા આર્યસમાજના મંત્રી વૈદ્યરાજ ચત્રભુજ શીવજીભાઇએ હાજરી આપી હતી. રા. પોપટલાલ શર્માએ વૈષ્ણવ જન તો તેને કહીએ એ પદ લલકારી તેનો અર્થ સમજાવ્યો હતો અને કન્યા બ્રહ્મચર્યાશ્રમની બાળાઓએ તેમના સુમધુર કંઠથી "પ્રભુ બીન કો નહિ અપના" એ ગાયન ગાઇને સભાને દિગ્મૂઢ કરી દીધી હતી. કાર્યક્રમમાં અંતરે અંતરે પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના ચાકચિંચ સંવાદો ભજવાયે જતા હતા અને મેદનીને અપૂર્વ આનંદ આપી ભક્તિરસ અંતરની ઉંડાણમાં રેડયે જતા હતા. પાઠશાળાના આ સુવ્યવસ્થિત કાર્ય માટે પાઠશાળાના અધ્યાપક રા. નવલશંકર વિશ્વનાથ આચાર્યની સભાએ મુક્ત કંઠે પ્રશંસા કરી હતી અને અધ્યાપકને તેમના આ કાર્યમાં મદદ કર્તા રા. બાબુશંકર જીવણલાલ જાની તથા રા. પુરૂષોત્તમ ઓધવલાલ જાનીનો પ્રયત્ન પણ સભાએ વખાણ્યો હતો. ઉપર લખેલા જે જે સજ્જનોએ સભામાં હાજરી આપી હતી અને પોતાથી બનતી મદદ કરી હતી તેને માટે આ સંસ્થાના વ્યવસ્થાપક તરફથી આભાર માનવામાં આવ્યો હતો. આ સભાના કાર્યક્રમ દરમીયાન આર્ય સમાજના મંત્રી વૈદ્યરાજ ચત્રભુજ શિવજીભાઈ ઉભા થઇને સંપ્રદાય તરફ સહાનુભૂતિ બતાવીને વૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભાના મેમ્બર થયા હતા. તેમના આ સ્તુત્ય કાર્યમાં તેમનાં ધર્મપત્ની પણ જોડાયાં હતાં. રા. મોહનલાલ કાળીદાસે પણ મેમ્બર તરીકે પોતાનું નામ નોંધાવ્યું હતું. હજી નામ બીજા પણ નોંધાયા હતા. આથી અમારા પ્રચાર કાર્યનું પહેલું પગથીયું સર થયું માનીએ છીએ.

છેવટમાં રા. તુલસીદાસભાઇએ ઉભા થઇને કાર્યનો ઉપસંહાર કરીને પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના કામને વખાણીને તેમને ઉત્તેજન આપવા માટે રૂમાલો વહેંચ્યા હતા. ત્યારપછી સભામાં પધારેલા સદ્‌ગૃહસ્થો તથા સન્નારીઓનો ઉપકાર માનવામાં આવ્યો હતો અને શ્રીવલ્લભાધીશની જયગર્જના સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. લાલજી દયાલજી રાણપુરા. મંત્રી, શ્રીવૈષ્ણવધર્મ મહાસભા—ટંકારા.

મે. ડૉક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે. સબ. આસી. સરજનના ભાષણનો સારાંશ—તેઓએ શરૂઆતમાં જણાવ્યું હતું કે શ્રીમહાપ્રભુજીના પ્રાકટ્ય વિષે રા. મંત્રીજી તથા રા. હેડમાસ્તર સાહેબ બોલ્યા હોવાથી તેમનું પુનરાવર્તન કરવા હું ઇચ્છતો નથી તેથી હું મનુષ્ય ધર્મ એ વિષય ઉપર થોડું બોલીશ.

દૈશ્રથ જેવા ચક્રવર્તી મહારાજાએ ભરત જેવા પુત્રને રાજ્ય આપવા પિતૃઆજ્ઞા પાળવા શા માટે વનવાસ સ્વીકાર્યો? સતી શિરોમણી સીતાજીએ રાજ્યના સુખ વૈભવને ત્યાગી શા માટે રામસહ વનગમન પસંદ કર્યું? લક્ષ્મણજીએ પણ પોતાના શરીર સુખની દરકાર કર્યા વિના મહેલમાં રહેવાનું છોડી શા માટે રામ સાથે જવાનું પસંદ કર્યું? આનો જવાબ આપણને એ મળશે કે તેઓએ પોતાનો ધર્મ બજાવવા માટે તેમ કર્યું હતું. અત્યારના જમાનામાં દરેક મનુષ્યો પોતાનો શું ધર્મ છે તે ભૂલી ગયા છે. અને તેથીજ ત્યાં ત્યાં કુસંપ જોવામાં આવે છે માટે આપણે દરેકે પોતાનો ધર્મ શું છે તે જાણવાની ખાસ જરૂર છે અને જે માણસ પોતાના ધર્મને યથાર્થ રીતે જાણે છે અને તે મુજબ વર્તન કરે છે તેજ ખરો માણસ મનાય છે.

મે. ડૉક્ટર સાહેબે આ વિષય ઉપર સંપૂર્ણ વિવેચન કરી અને શ્રોતાઓમાં ધર્મ એ શું વસ્તુ છે તે બરાબર સમજાવ્યું હતું અને પછી તેઓએ તેમનું ભાષણ સમાપ્ત કર્યું હતું.

કન્યા બ્રહ્મચર્યાશ્રમના મુખ્યાધિષ્ઠાતા મહાશય ગિરધરલાલભાઇના ભાષણનો સારાંશ—શ્રી મહાપ્રભુજીનો જન્મ એવા સંજોગોમાં થયો છે કે જો તે વખતે આ મહાપુરૂષનો જન્મ ન હોત તો શું પરિણામ આવત તે કહી શકાતું નથી. તે વખતે મુસ્લીમ સત્તાની પ્રખર વિજયવંત પતાકાએ હિંદુત્વને છાયામાં લઇને દબાવાનું શરૂ કર્યું હતું. ઠેરઠેર ધર્મહાનિના દ્રશ્યો નજરે પડતાં હતાં અને હિંદુ ધર્મ નષ્ટ પ્રાય થઇ ગયો હતો એટલે આ ઉપરથી સાબીત થાય છે કે મહાપ્રભુજીનો જન્મ સકારણ હતો અને જારે વખતે શ્રીજીના પ્રાગટ્યથી હિંદુત્વનો ખાસ બચાવ થયો છે. આ વિષય ઉપર તેઓએ ઘણો વખત ચર્ચા કરીને પોતાનું ભાષણ સંપૂર્ણ કર્યું હતું.

શ્રીયુત જટાશંકર સુંદરજી જાનીના ભાષણનો ટુંક સારાંશ—શ્રીયુત જાનીજીએ પ્રેમ એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું હતું. તેઓએ જણાવ્યું હતું કે બચપણમાં પ્રેમ જુદા પ્રકારનો હોય છે. યુવાવસ્થામાં આવતાં તેજ પ્રેમનું સ્વરૂપ ફેરવાઇ જાય છે. વૃદ્ધાવસ્થામાં વળી આ બન્ને પ્રેમ એકત્ર થઇને કંઇ જુદુજ રૂપ પકડે છે. આમ દરેક અવસ્થામાં આપણને પ્રેમ જુદી જુદી તરેહનો દેખાય છે. જેવી રીતે એકજ વસ્તુ જોનારા જુદા જુદા માણસો તે વસ્તુનું જુદી જુદી રીતે વર્ણન કરે છે તેમ પ્રેમનું પણ મૂળ સ્વરૂપ એકજ છે. પરંતુ તે રૂપને આપણે બરાબર સમજતા ન હોવાથી તે આપણને જુદાજુદા રૂપમાં ભાસે છે. ઉપર મુજબનું પ્રેમ વિષય ઉપર સચોટ વ્યાખ્યાન આપી તેઓએ ભાષણ પુરૂં કર્યું હતું.

શ્રીકામવનમાં પાઠશાલોદ્‌ઘાટન—શ્રીમહાપ્રભુજીના ગત પ્રાકટ્યોત્સવના મહાન મંગલમય દિને "શ્રીદેવકીનન્દનાચાર્યસંસ્કૃત પાઠશાળા" એ નામથી એક સંસ્થાની સ્થાપના પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ કરી છે એ જાણીને વૈષ્ણવોને આનંદ થશે.

"ચલો મચ્છેન્દ્ર ગોરખ આયા!"—આ વાકય હાલ મશહુર બન્યું છે. એ વાકય લખીને કોઇ 'ભા' આ પત્રના તંત્રીને શીખામણ આપે છે. પણ એ 'ભા' ને ભાન નથી કે, મચ્છેન્દ્રનાથ માયામાં ડુબ્યા ન હતા. અલ્પમતિ ગોરખનાં મિથ્યાભિમાનને તોડવાનેજ મચ્છેન્દ્રનાથે માયાજાળ રચી હતી. મચ્છેન્દ્રનાથને બચાવવા નીકળેલો ગોરખ પોતેજ આખરે ખસીયાણો પડયો અને ગુરુજીની માયામાં કંઇ સમજ્યો નહિ અને પોતાના તપોબળનો ગર્વ આખરે દફનાવી ગુરુના ચરણમાં પડયો. વીસમીસદીના વસંતઋતુના વિસ્મયજનક દિવેરોમાં, માદક પદાર્થના ઘેનમાં પડેલા ગરીબ બીચારા 'ભા' મચ્છેન્દ્રનાથની ફીલમ અર્ધી જોઇનેજ ઉંઘી ગયા લાગે છે તેથી અલ્પમતિ અને અલ્પશક્તિ ગોરખને મચ્છેન્દ્રગુરુને માયામાં ડૂબતા બચાવનાર તરીકે માની લેવાની બેવકુફી ભરેલી જાહેર ભૂલ કરીને પોતાને કફોડી દશામાં મૂકવાની અચ્યાશાહીને પણ 'ભા' જોઈ શકતા નથી! હજારવાર અફસોસ!

નવો કેસ માંડયો—આર્યસમાજના હોલમાં થયલાં તોફાનને પરિણામે મુંબાઇની પોલીસે કેટલાક આર્યસમાજીઓને અને કેટલાક વૈષ્ણવોને પકડયા હતા. તેમાં આર્ય સમાજીઓની સામે પુરાવા મળતા નથી એમ જણાવીને તેમને છોડી મુકયા હતા. પણ ૭ વૈષ્ણવો ઉપર કેસ માંડયો હતો. આથી વૈષ્ણવ પક્ષના ત્રણ આરોપીઓએ (૧. હરિશંકર શાસ્ત્રી, ૨. જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ, ૩. રા. છગનલાલ હરખજી) પોતાના વકીલ મી. કાનુગા સાથે ગીરગામ કોર્ટમાં એક કેસ માંડી દીધો છે અને પેલા છુટી ગયેલા આર્યસમાજીઓ સામે સમન્સ પણ નીકળી ગયા છે. આ નવો કેસ હવે પછી ચાલશે.

પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી—શ્રીકામનવાળા ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીરમણલાલજી મહારાજ તરફથી સર્વ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી આપવામાં આવે છે કે સાત સ્વરૂપની નીધીનાં શ્રીમદનમોહનજી શ્રીકામવનમાં બીરાજે છે, તેમની કાંઈ ભેટ વગેરે જે હોય તે શ્રીમદનમોહનજીનું મંદિર મુ. કામવન, જીલ્લો ભરતપુર એ સરનામે મોકલાવવા બાકી કોઈ પણ ભટીયાને આપવી નહીં, તેમ કોઈ પણ ગોલખમાં નાંખવી નહી તેમ ચંદાવાડીમાં શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની ભેટ સાથે અપાતી તે પણ આપવી નહીં કારણ કે અમારે કોઈ ભેટીયો નથી તેમ ગોલખ પણ નથી, માટે ઉપરના સરનામે મોકલાવવી. જેથી શ્રીને અંગીકાર થશે બીજે કયાં પણ આપવાથી અમોને મળશે નહીં.

કરાંચીમાં યાદગાર સંમેલન—અત્રેની સનાતન ધર્મ યુવક સભાનો વાર્ષિક મહોત્સવ સુરતવાળા વિદ્વદ્રત્ન ગોસ્વામી શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપણા નીચે ઉજવાયો હતો. આ વખતે એક આકર્ષક ભવ્ય મંડપ તૈયાર કર્યો હતો. શ્રીમહાપ્રભુજીનો મહામહોત્સવ પણ ખૂબ ધામધૂમથી થયો. એ નિમિત્તે એક ભવ્ય સમારોહ થયો હતો અને શ્રીમહાપ્રભુજીનાં ચિત્રજી તથા પવિત્ર ભગવદ્રૂપ વેદનાં પુસ્તકો એક શણગારેલી ગાડીમાં પધરાવીને શહેરમાં વાજતે ગાજતે એ યાદગાર ભવ્ય સમારોહ ફેર્યો હતે. આ ઉપરાંત મશહુર સનાતની વકતા પં. અખિલાનંદજી, પં. રૂપનાથજી, શાસ્ત્રીજી શ્રીમનલાલજી, શાસ્ત્રી પરમાનંદજી, શાસ્ત્રી રવીન્દ્રનાથજી વગેરેએ છટાદાર ધાર્મિક વ્યાખ્યાનોની ઝડી વરસાવી હતી. મહારાજશ્રીના વિદ્વત્તાપૂર્ણ વ્યાખ્યાને તો ભારે અસર કરી હતી. કરાંચીમાં આવો ભવ્ય સમારોહ પહેલોજ હતો અને તે ચિરસ્મરણીય બન્યો હતો.

સાહિત્ય—દશમસ્કંધ ઉત્તરાર્ધ શ્રીસુબોધિનીજી તથા પ્રકાશ આદિ સાહિત્ય જે કાંઈ બાકી હતું તે બધું પ્રકટ થઇ ગયું છે. તત્ત્વાર્થદીપ નિબંધનો ગુજરાતી અનુવાદ પણ પ્રકટ થઇ ગયાનું સાંભળ્યું છે. વળી મુંબઇવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રીજીવનજી મહારાજના નામથી પ્રસિદ્ધ થયલી શ્રીવલ્લભાખ્યાનની વ્રજભાષા ટીકા ગુજરાતી અક્ષરોમાં શેઠ રવજી ભગતે છપાવી અને તે માત્ર ૬ આનામાં વેચાય છે.

દેવગઢ બારીઆનો પ્રશ્ન—ત્યાંના વૈષ્ણવોએ ત્યાંના દિવાનસાહેબને લખી આપ્યું છે કે, અમારામાં ધર્મ સંબંધી જે તકરાર છે તેનો નિવેડો લાવવા, માટે ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રી જે કાંઇ ફરમાવશે તે પ્રમાણે અમે વર્તીશું. એવી કબૂલાત આપવાથી જલ્દી શાંતિ થવા માંડિયો છે. કારણ કે શ્રીગોકુલેશજીની અનન્ય સૃષ્ટિ તરીકે ત્યાંના મહાજને પણ એવું લખી આપ્યું છે કે જો ભરૂચીઓ ગો. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજની આજ્ઞા મુજબ ચાલતા થઈ જાય તો અમે તેમને મહાજનમાં લેવા ખુશી છીએ. આવા નિર્ણય ઉપર આવવા બદલ મહાજનને અનેક ધન્યવાદ ઘટે છે. આખરે મહાજનની સત્યની લડતનો આ વિજયડંકો વાગ્યો છે.

ચોખ્ખી પ્રતારણા—ધોરાજીથી ભગવદીય પ્રાગજીભાઇ લખે છે કે;—"ગુજરાતિ" માં કેટલાક માસથી જાહેર ખબર છપાય છે. અહીં ફાર્મશી–પોરબંદરવાળા વૈદ્ય શાસ્ત્રી વલ્લભદાસ રણછોડજી રચાનજીય એ જાહેર ખબર છપાવે છે. તેઓ શ્રીગોસ્વામિબાલકોના ફોટાઓ ઘેર બેઠાં પાંચ આનામાં મોકલી આપે છે. અમે પત્રવ્યવહાર કર્યો. એક ડઝન ઉપર ૧૨॥ ટકા કમીશન આપવાની પણ તેમણે વાત કરી. આખરે અમે એક ડઝન ફોટા મંગાવ્યા ત્યારે પુંઠા પર ચોડયા વિનાના અગીયાર ફોટાઓ ચાર રૂપીઆના વી. પી. થી અમારા પર મોકલી આપ્યા! આવી ઠગાઈ માટે અમે પત્ર લખ્યો તેનો જવાબ મલ્યો કે, "તમારા લખવા મુજબ અમલ થશેજ." પણ અમલ થયો નહિ, તેથી અમે પ્રાઇવેટ નોટીસ મોકલી, તેનો જવાબ ન મલ્યો. આ પરથી અમે જાહેર રીતે ચેતવણી આપીએ છીએ કે વૈષ્ણવોએ આવી જાહેર ખબરથી ફસાવું નહિ."

શ્રીચંપારણ્ય વિષે એક ચેતવણી—શ્રીચંપારણ્યમાં છઠીઘરની એક બેઠક કામવનવાળા શ્રીમદ્ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજની છે. અને તેમના તરફથી બેઠકમાં પહોંચ બુક પણ રહે છે તો પછી આ મૂલ માલિક બની સાથે મોકલેલી પત્રિકા મુજબ છપાવેલી નોટીસો અગર પહોંચ બુકો પણ પોતાનીજ છપાવેલી છપાવી. આજે ઘણા વખતથીજ ચાલી રહેલું છે અને જેનું કોઈપણ પૂછનું નથી. કેટલાક રૂપીયા સેવાના નામથી આવે છે. જેનાં મકાનો, ખેતરો પોતાના નામનાજ હીવટમાંજ કરે છે. આ વાત તે બેઠકના મુખ્ય માલિક અધિકારીઓએ તેમજ વૈષ્ણવોએ ખાસ સમજવા જેવી છે. જો આ વૈષ્ણવને દેશાવરે સેવા કરવા જવું હોય તો કામવનનીજ પહોંચ બુકો ચંપારણ્યની બેઠકમાં રહે છે તો તે બુકો અને મુખ્ય માલિકના અધિકારીજીનો આજ્ઞાપત્ર સીક્કાવાલો કેમ મેળવ્યો નહીં હોય અને આ સ્વતંત્ર નોટીસો અને પહોંચો છપાવવાનું શું કારણ હશે તે વૈષ્ણવો જાણી શકશે અને માલિક શ્રી ચંપારણ્યની દેખરેખનો બરોબર બંદોબસ્ત કરવા કૃપા કરશેજ. દર્શક.

જાહેર સભા—માર્ગ માસમાં અખિલભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘનું ખાસ મહાધિવેશન દીલ્હી ખાતે મળ્યું હતું તેમાં ભાગ લેવાને અમદાવાદની જુદી જુદી સનાતની સંસ્થાઓના પ્રતીનીધીઓ ગયા હતા. એ પ્રતીનીધીઓએ પોતાનો સ્વાનુભવ અત્રેની સનાતની જનતા સમક્ષ ગયે રવીવારે અત્રેની ઔદીચ્યની વાડીમાં એક જાહેર સભામાં કહી સંભળાવ્યો હતો.

શરૂઆતમાં શ્રી. ભાગાશંકર મગનલાલ શુકલે આ સભાનું પ્રમુખસ્થાન પંડીત શ્રી. શંકરપ્રસાદજી વ્યાખ્યાન વાચસ્પતીને આપવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી અને તેને પૌરાણિક શ્રી. આનંદલાલજીએ ટેકો આપતાં, સર્વાનુમતે પસાર થતાં, પંડિતજીએ પ્રારંભિક વ્યાખ્યાન આપતાં જણાવ્યું કે:—

દીલ્હીના છેલ્લા વિરોષાધિવેશનમાં ઘણા પ્રતીનીધીઓ દરેક પ્રાંતમાંથી ગયા હતા. આપણા શહેરના જે સજ્જનો ત્યાં ગયા હતા તેઓ આજે પોતાનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ કહી બતાવશે. હું દીલ્હી ગયો ન હતો, પણ અંગ્રેજી હીન્દી, તથા ગુજરાતી અખબારો વાંચીને ત્યાં થયલાં કાર્યથી હું કાંઇક વાકેફ થયો છું. ગુજરાતના પ્રતીનીધીઓએ ત્યાં જઇને મહાકાર્ય કર્યું છે એમાં તો કાંઈ શંકા નથી. અધીવેશન ઉપરાંત ત્યાં બીજી પણ ઘણી સભાઓ થઇ હતી. આ બધો હેવાલ છાપાઓએ પ્રકટ કર્યો નથી. 'ગુજરાતી' માં એ ઉત્તમોત્તમ રીતે પ્રકટ થયેલો છે.

'કંપની બાગનો' કબજો—દીલ્હીમાં કંપનીબાગ જાહેર સ્થાન છે. એ સ્થાનમાં તો રાષ્ટ્રીય સભાઓજ થતી. ત્યાં કેટલાક નેતાઓ રાષ્ટ્રીય બનીને જનસમાજને જાહેરમાં ઉંધુ ચત્તું સમજાવીને ધાર્મીક વિષયમાં ઠગતા હતા. પણ એ જાહેર સ્થાનનો કબજો સતત પ્રચાર કાર્ય કરીને સનાતનીઓએ લીધો હતો. સુધારકોની તાકાત નહોતી કે એ સ્થાનમાં જાહેર સભા ભરી શકે. સનાતનીઓએ તો ધર્મ ખાતર ફુરબાનીની તૈયારી બતાવી દીધી છે. શરૂઆતમાં તો ત્યાં સભાઓ મળે ત્યારે જેટાદલ પંડો અને લોકનેર

લડત ચલાવવી પડી; પછી તો તે જાહેર રંગભૂમાને પૂર્ણ રીતે સનાતનીઓએ સ્વાધીન કરી હતી. એ મધ્ય પ્રદેશ છે, ત્યાં મરાઠા છે, હિન્દમાં પણ બહુમતી આપણીજ છે. બનારસમાં તો ૧૫-૨૦ હજાર માનવ સમુદાય આ લડત માટે એકત્ર થાય છે. તે વખતે નૂતનીઓ તો સંતાઇ જાય છે.

બહુમતીઓનો બાહુ!—આ સવાલમાં મંદીર પ્રવેશ તરફ બહુમતી નથી એ મી. રંગાઆયરે પણ જોઇ લીધું છે! ધર્મના સીદ્ધાંતો બહુમતીના જોરથી ડોકી બેસાડાય નહી. લોકોમાં અત્યારે અસત્યનો ખૂબ પ્રચાર છે. અસત્ય તરફ બહુમતી છે તેથી અસત્ય બોલવું એ સિદ્ધાંત ન કહેવાય. હાલમાં રશીયામાં નાસ્તીકવાદ ફેલાયો છે. ત્યાં 'ઇશ્વર નથી' એ વાદ તરફ બહુમતી છે. તેથી શું એ આદર્શ સ્વીકારી શકાય? અમારી બહુમતી છે એવી સુધારકોની બૂમ તદ્દન ખોટી છે. ગુરૂવાયુરમાં ગાંધીજી તરફ દયા બતાવીને સનાતનીઓએ તટસ્થતા દેખાડી હતી પણ તેનો હવે દુરૂપયોગ થઇ રહ્યો છે. અત્યારે અંગ્રેજી ભણેલાઓની સંખ્યા પાંચ ટકા જેટલીજ છે અને તેમાંથી બે ટકાજ સુધારકો હશે તો ૯૮ ટકા જેટલી બહુમતી સનાતનીઓનીજ છે. માટીગો તોડવાનું શિક્ષણ સુધારકોએ દેશને આપ્યું છે. માટે સનાતનીઓએ પોતાના જોરદાર સિદ્ધાંતોનું સહજ બળ કેળવવાનું છે. એ આદર્શો અત્યારે નહી તો હવે પછી બધા માનશેજ. પ્રાચીન ગુરૂકુલો સ્થાપો, ખપપુરતુંજ અંગ્રેજી શિક્ષણ આપવું. આદ્વારા સંસ્કૃતિનો પ્રચાર થશે. હવે હું પ્રો. દૂરકાલને દીલ્હીના અનુભવો કહેવા વિનવું છું.

પ્રો. દૂરકાલે તે પછી જણાવ્યું કે, દીલ્હીનું કાર્ય સંતોષજનક છે. સનાતનીઓની થોડી પ્રવૃત્તિથી પણ મી. રંગા આયરનું બીલ ટોલ્લે ચઢયું છે. આ જેવો તેવો વિજય નથી. મોટા મોટા નેતાઓના ભગીરથ પ્રયાસો પણ નિષ્ફળ નીવડયા અને બીલ ખોરંભે પડયું છે. સનાતનીઓ આથી પણ વધુ કમર કસે તો ધારેલું કામ ફતેહમંદ થઈ જાય. સનાતની કાર્યકર્તાઓનું મંડળ ઉત્તમોત્તમ કાર્ય કરી શક્યું છે. જાહેર સ્થાનો પણ તેમણે કબજે કર્યા છે. આર્ય સમાજીઓ સાથે લાહોરમાં વાદવિવાદ કરીને શાસ્ત્ર અને યુક્તિમાં સમાજીઓને સનાતનીઓએ મહાત કર્યા છે. એ સંમેલનમાં ઘણા એસેંબ્લીના સભાસદોએ ભાગ લીધો છે. હું નામ. વાઇસરોય, તથા પ્રા. સેક્રેટરી મી. મેન્ટીલ તથા હોમમેંબર વગેરેને પણ મળ્યો છું. તેમની પાસે સનાતની મહાન્ જનસમૂહના વિચારો રજુ કર્યાં છે.

સંઘવીજીની ગર્જના—કટ્ટર સનાતની અને દેશ ભક્ત ભારતભૂષણ શ્રી. સંઘવીજીએ સનાતનીઓને કુંભકરણની નિદ્રાથી દુર રહેવાનો પડકાર કરતાં કહ્યું હતું કે દીલ્હીનું તો તમે બધું સાંભળ્યું પણ તેથી રાજીથઇને હવે બેસી રહેવાનું નથી. જો હવે પ્રમાદ સેવશો તો ખ્યાલ રાખજો કે મીસરની તથા બાબીલીયન પ્રજાનો જેમ સર્વનાશ થઈ ગયો તેમ તમારો પણ વંશોચ્છેદ થઈ જશે. હજુ તો સ્વરાજ દૂર છે, પણ જો પ્રજાસત્તાક રાજ્ય થશે તો રંગાઆયર અને નંગાઆયર જેવા કેટ લાએ ધર્મ પર મશા હુકરવા બહાર પડશે. આ મંદીરો અને મહંતો તેમજ મઠાધીશો પણ હવે આળસમાં ને મોજમજાહમાં રહેશે તો એમનો પણ સર્વનાશ સર્જાયલોજ સમજજો. ભૂત રામાયણ તમે સાંભળ્યું પણ જો હવે તેથી ખુશાલીમાં આવી જશો નહિ. ના. વાઇસરોયે કહ્યુ કે, ધર્મની બાબતમાં અમે તટસ્થ છીએ. હું ખુલ્લી રીતે જણાવીશ કે, શહેનશાહ ના. પંચમ જ્યોર્જ પ્રજાના ધર્મ અને ધનના રક્ષણ માટે બંધાયલા છે. ધન અને ધર્મ માટે પ્રજાને કલેશ સેવવો પડે તેવી સ્થિતિ જો ઉભી થાય તો હું પૂછું છું કે ઓ બ્રીટીશ સરકાર! હવે તારૂં શું થશે? મારી તો અવસ્થા થઇ છે. નગીનભાઈ તો વાડજને કીનારે જશે. પણ જો આપ બ્રાહ્મણો હવે જાગૃત નહિ બનો, ધર્મ માટે પ્રાણ ત્યાગ કરવાનું સામર્થ્ય નહિ બતાવો તો ખ્યાલ રાખજો કે ભાવી ભયંકર છે. હાલમાં રાજાપ્રજા, મીલમાલેક અને મજૂરો; શેઠ અને નોકરો વચ્ચેના ઝઘડા ઉભા કરવામાં આવ્યા છે. આ વખતે આપ લોકો તૈયાર થાઓ, સાવધ બનો, હિન્દુત્વ અને સનાતન ધર્મનું અભિમાન રાખો.

વસંતરામ શાસ્ત્રીએ તે પછી દીલ્હીનાં કાર્યનો આબેહૂબ ચીતાર આપ્યો હતો. વળી ત્યાંના ગાંધીઘેલાં છાપાંઓ "હિન્દુસ્થાન ટાઇમ્સ" અને "અર્જુન" જેવાઓનાં અધમ અને અસત્યપૂર્ણ પ્રચારકાર્યના પૂરાવા સાથે પરિચય આપ્યો હતો. વિરોધીઓના આવા ગલીચ તથા ભયંકર પ્રચારકાર્ય વચ્ચે સનાતનીઓએ વીરતાથી જે ફતેહ મેળવી તેનો ખ્યાલ આપતાં કહ્યું કે- લાખ બે લાખની જનસંખ્યાની અસહકારની જાહેર સભાને મુંબાઇના 'ટાઇમ્સ ઓફ ઇંડીઆ' પત્રે થોડા માણસોની સભા જ્યારે ઓળખાવી ત્યારે અસહકારી છાપાંઓ અંગ્રેજી છાપાં સામે ઉખડી પડયાં હતાં. અત્યારે એજ ગાંધીઘેલાં છાપાં

સત્વનું નિર્દયતાથી ખૂન કરીને, ૧૫-૨૦ હજારની જનસંખ્યાની સનાતની સભાઓને પંદરવીસ માણસોની સભા તરીકે જાહેરમાં ઓળખાવતાં શરમાતા નથી ! દીલ્હીમાં શ્રીયુત સંધવીજીએ એક હજાર રૂપીઆ ફંડમાં ભરીને અમદાવાદનું નામ યાદગાર બનાવ્યું છે. તેમણે પહેલાં પણ પંદરસો રૂપીઆ ભર્યાં હતા.

અમદાવાદ ડેપ્યુટેશન—અમદાવાદની સનાતની જનતાએ સ્થાપેલી શ્રી સનાતન વર્ણાશ્રમ ધર્મ સંરક્ષક સભાએ એક મેમોર્યલ તૈયાર કર્યું હતું, તેમાં અમદાવાદના લગભગ તમામ આચાર્યશ્રીઓ, મહંતો, મહાધીશો તથા વિદ્વાનોની સહીઓ લેવામાં આવી હતી. આ મેમોર્યલ આપવા માટે તા. ૧૬-૩-૩૩ ના રોજ પ્રોફેસર શ્રી. દુરકાળની આગેવાની નીચે શ્રીયુત ભોળાનાથ ત્રિવેદી, શ્રી. બાલાશંકર મગનલાલ શુકલ, શ્રી. વસંતરામ શાસ્ત્રી; એમનું એક ડેપ્યુટેશન ના. વાઇસરોયના પ્રા. સે. મી મેન્ઢીલને મળ્યું હતું અને ડેપ્યુટેશનનો ધાર્મિક વિચારો જાણીને પ્રા. સેક્રેટરી સાહેબે ધર્મની લાગણીની કદર કરીને, બહુજ ઉદારતાથી જવાબ આપીને ધર્મની બાબતમાં સનાતનીઓની માગણી તરફ ધ્યાન આપવા જણાવ્યું હતું.

બીજું ડેપ્યુટેશન—સમગ્ર ભારતવર્ષનું એક મહાન્ ડેપ્યુટેશન રાજામહારાજો, સદ્‌ગૃહસ્થો અને વિદ્વાનોનું ના. વાઇસરોય પાસે ગયું હતું. ગુજરાતના પ્રતિનિધિઓ તરીકે એ ડેપ્યુટેશનમાં સ્વામી શ્રી અનિરૂદ્ધતીર્થજી મહારાજ [એમ. એ. એલએલ. બી.] સોલીસીટર મનુભાઇ પંડયા, શ્રી. વસંતરામ શાસ્ત્રી, મંજુલાલ કામદાર ચુંટાયા હતા. તે વખતે પણ ના. વાઇસરોયે ઘણોજ દીલસોજી ભર્યો જવાબ આપ્યો.

કોચીનમાં સભા—સંવત્ ૧૯૮૯ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને ગુરૂવારના રોજ શ્રીમાન્ શેઠ લક્ષ્મીદાસ વૃન્દાવનના આમંત્રણથી શ્રીમહાચાર્યજીનો જન્મમહોત્સવ ઉજવવા, અને તદવસરે પાઠશાળાના પ્રમુખ સદ્‌ગત શેઠ હરિદાસ ચતુર્ભુજ તથા પરોપકારી પુણ્યાત્મા સદ્‌ગત્ શેઠ નાનજી મેઘજીના તૈલ ચિત્રોને શ્રીમાન્ શેઠ જેરામ જીવરાજના હસ્તે ખુલ્લાં મૂકાવવા એક જાહેર સભા શ્રીનવનીતકૃષ્ણમંદિરમાં આવેલ પાઠશાળામાં ભરવામાં આવી હતી. ऊर्ध्वमूलं अधःशाखं થી શરૂ કરી પુરૂષોત્તમ યોગને તાર મધુર સ્વરથી જ્યારે લલકાર્યો ત્યારે પાઠશાળાના નવીન વિશાળ મકાનમાં એક તરફથી સ્ત્રી વર્ગે પ્રવેશ કર્યો. "સભાનો કાર્યક્રમ" સર્વને મળી રહેતાં, દરખાસ્તાનુસાર પ્રમુખસ્થાનને સ્વીકારી, જેરામભાઇએ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીના ચિત્રજીને પુષ્પમાળા પહેરાવી. વિદ્યાર્થી નાનાલાલ હાથીરામે તુરતજ વૈદિક સ્તુતિ ઉચ્ચ સ્વરે ગાઇ બતાવી અને બીજા નાનાં વિદ્યાર્થીઓએ ટુંકડા વ્યાખ્યાનો અને સંવાદો શ્રોતાઓને સંભળાવ્યા. વિદ્યાર્થી ખુશાલદાસ જીવાભાઈ માલવીયાએ ઉપક્રમનાં આરંભમાં સમયની કરકસરની જરૂરિયાત જણાવી, સભાના કાર્ય અને વિષયનો અંકનિર્દેશ કર્યો. ઉપક્રમના ઉપસંહારમાં શ્રીમહાચાર્યજીના પુષ્ટિમાર્ગપથની અજરતાઅમરતા અને સદ્‌ગત પુણ્યાત્માઓના કીર્તિસ્તંભની અચલતા અભેદ્યતા ઇચ્છી, પાઠશાળાના અધ્યાપક વે. શા. સં. શાસ્ત્રીજી હાથીરામ રતનજી શર્માએ સદ્‌ગત હરિદાસભાઈને, નાનજીભાઇના વિસ્તૃત જીવન ચરિત્રોને ટુંકાણમાં આલેખી, ટુંક સમયમાં તેઓના સર્વ લક્ષણોનો સ્પર્શ કરી, તેઓની સ્મૃતિને પુનઃ સહૃદય વૈષ્ણવોમાં સ્થાપિત કરી સભાના પ્રમુખ શ્રીમાન્ શેઠ જેરામ જીવરાજે સદ્‌ગત પુણ્યાત્માઓના ગુણોનો અંગુલિનિર્દેશ કરી, ચિત્રોને ખુલ્લાં મૂકવાનો લાભ દેવા બદલ કાર્યકર્તાઓનો આભાર માની, હર્ષ તાળીઓના નાદ વચ્ચે બન્ને ચિત્રોને ખોલી, વિજળીક બત્તીના પ્રકાશમાં વિદ્યુત્ સમાન કરી મૂક્યા. અત્યાર સુધી વેપારી લાગાના ૨૦ ટકામાંથી નિભતી પાઠશાળાને, વેપાર મંદતાને લીધે, લાગાની આવક પુરી ન પડતાં નવી યોજનાનુસાર મેસર્સ મૂળજી જેઠા કું. એ રૂ. ૨૫), શેઠ હરિદાસ ચતુર્ભુજે રૂ. ૨૨ાા, શેઠ નાનજી મેઘજીએ રૂ. ૧૦), શેઠ લક્ષ્મીદાસ વૃંદાવને રૂ. ૭ાા, શેઠ હરિદાસ પુરૂષોત્તમે રૂ. ૫), શેઠ રામદાસ હરખચંદે રૂ. ૨ાા, મહિને મહિને આપવાનું જાહેર કર્યું. કલિકોટથી મહોત્સવ પ્રસંગે પધારેલા શ્રીમાન્ શેઠ તલકચંદ પ્રેમજીએ મહિને મહિને પોતાના તરફથી રૂ. ૫) આપવાનું જાહેર કરી તેઓના ઉત્સાહમાં વધારો કર્યો. છેવટે શેઠ જેરામ જીવરાજ, શેઠ હરિદાસ ચતુર્ભુજ અને શેઠ નાનજી મેઘજી તરફથી સારા ઇનામો બાળકોને આપવામાં આવ્યા. શેઠ પાનાચંદ દેવકરણ તરફથી રૂ. ૧૫) ન અને શેઠ તલકચંદ પ્રેમજી તરફથી બબ્બે કોરી નોટો ને સુંદર પેન્સિલો વિદ્યાર્થીઓમાં વહેંચવા સભા મેદની શ્રીમહાચાર્યજીના નામાક્ષરનો જય ઘોષ કરતી આનંદથી વિખરાઇ.

॥ श्रीविश्वपावनलालाचार्यचरणौ निजपतान्नमाम् ॥

વિશ્વના તારણહાર શ્રીમહાપ્રભુજીના વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો
'પ્રચાર કરતું' સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૮]   જ્યેષ્ઠ. સંવત્ ૧૯૮૯.   [અંક ૩.

ગ્રાહકોને વિનંતિ.

આઠમા વર્ષનો આ ત્રીજો અંક આપના હસ્તમાં આવશે. આઠ અંક વર્ષથી આપ આ માસિકને પોતાનું ગણ્યા છે. તેના તરફ આપ સર્વેની મમતા જ આ માસિકના ઉત્કર્ષનો ઉદ્દેશ પૂરે છે. ઘણા ગ્રાહકોએ "ગ્રાહક તરીકે રહેવાની ઇચ્છા નથી" એવી ખબર આપીને કાર્યાલયને ઘણું નુકશાન ખમાવવાની ફરજ પાડી છે. હજુ પણ તેવી ઇચ્છાવાળા ગ્રાહકોને નમ્ર વિનંતિ છે કે ગ્રાહક તરીકે રહેવાની ઇચ્છા હોય તો લવાજમ તાકીદે મોકલી આપવાની નમ્ર અરજ છે. વી. પી. ની ચાલુ વધુ ખર્ચમાં ગ્રાહક ઉપર પાંચ આના વધારે ખર્ચ પડે છે.

આગામી ભાદ્રપદ અંક [illegible] ગ્રાહકોના [illegible] તથા [illegible] પ્રેષક લેખકોને તેવા મોકલવા નમ્ર વિનંતિ છે.   તંત્રી.

ન. ૧૨૬૮, [illegible]
અમદાવાદ.   } તંત્રી અને પ્રકાશક,
બળદેવરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

વાર્ષિક લવાજમ રૂ. [illegible] (ટપાલ ખર્ચ જુદું.)

લેખાનુક્રમ.

જ્યેષ્ઠ, સંવત ૧૯૮૯.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮.

શુદ્ધાદ્વૈત

અને

ભક્તિમાર્તંડ.

અંક ૩.

જ્યેષ્ઠ ૧૯૮૯.

શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૫.

करुणा दृगेषा.

(ले.—शास्त्री दुर्लभजी देवकृष्ण रवाजिराज संस्कृत पाठशाला मोरवी.)

उद्धर्तुमङ्गीकृतजीववृन्दान् खलान्प्रहन्तुं भुवि भारभूतान् ।
धर्मावनार्थं सहसाऽवतीर्णः कृष्णस्तदीया करुणा दृगेषा ॥१॥

विधेः समाधौ हरिणा यदुक्तं सत्यं विधातुं वचनं स्वकीयम् ।
कारागृहेऽपि स्वयमाविरासीत् पूर्णा तदीया करुणा दृगेषा ॥२॥

अजे जगत्यां निशि जायमाने गुणा ऋतूनां प्रकटीबभूवुः ।
फुल्लानि पद्मानि सतां मनोऽब्जैर्भूर्भारमुक्ता करुणा दृगेषा ॥३॥

अलौकिकाकल्पविभूषिताङ्गो भ्राजत्करः शङ्खगदाब्जचक्रैः ।
प्रभुः पितृप्रार्थनया बभूव यः प्राकृतोऽर्भः करुणा दृगेषा ॥४॥

मात्रा च पित्रा विदितोऽपि साक्षात् परः प्रकृत्याः पुरुषः स्तुतोऽपि ।
ताभ्यां तु विस्मारितवान्महत्त्वं लीलां विधातुं, करुणा दृगेषा ॥५॥

पित्रोर्भयं वीक्ष्य समीक्ष्य पूर्वं दत्तं श्रुतिभ्यो वरमात्मनैव ।
लीलोदधिं स्थापयितुं पृथिव्यां जगाम घोषं, करुणा दृगेषा ॥६॥

प्राकट्यलीलाजनितं सुखं यच्छ्रीगोकुले स्वाननुभाव्य भूमा ।
भावानुरूपं वितताार कृष्णो नित्यं निजेभ्यः करुणा दृगेषा ॥७॥

यन्मायया बद्धमिदं हि विश्वं प्रीत्यार्द्रचेतोजननीनिबद्धः ।
संदर्शितं भक्तवशत्वमेवं कृष्णेन पूर्णा करुणा दृगेषा ॥८॥

बद्धः स्वयं भक्तवचोऽनुसारी विधाय मुक्तौ त्वयु[1] वृक्षभावात् ।
ददौ स्वभक्तिं धनदात्मजाभ्यां श्रीगोकुलेशः, करुणा दृगेषा ॥९॥

कृष्णावतारं सफलं विधातुं परं पवित्रं भगवच्चरित्रम् ।
व्यासः पुराणेषु जगद्धितार्थमूचे तदीया करुणा ह्यपा ॥१०॥
व्यासोक्तिमप्यत्र मतान्धकारैश्छन्नां सदग्रे प्रकटां चकार ।
तत्त्वार्थदीपेन हि वल्लभाभिः पूर्णा तदीया करुणा ह्यपा ॥११॥

' नवं करोति '

श्रीमद्गुरोः पादनखार्करश्मिः स्वान्ताम्बराज्ञानतमस्तृणेढि ।
ज्ञानप्रकाशात्सफलं स्व[1] नेत्रं स ध्यायतो जन्म नवं करोति ॥१॥
वृक्षान्दलैर्भूषयते नवीनैः पुष्पैः फलैर्वा सरसैर्मनोज्ञैः ।
पुंस्कोकिलान्कूजयते नगस्थान् वनं वसन्तो हि नवं करोति ॥२॥
अनेकशः शास्त्रवचोऽनुभूतं संकीर्तने वा श्रवणे मनुष्यैः ।
सनातनं चापि तदेव वाक्यं प्रज्ञावतां वाक् तु नवं करोति ॥३॥
सङ्गः सतां बुद्धिमलं प्रमार्ष्टि हिनस्ति पापं सुकृतं प्रसूते ।
पुराकृतैः पुण्यचयस्तु लब्धो जनुर्नृणां चापि नवं करोति ॥४॥
कर्णातिथिः कृष्णकथा यदि स्यात् सत्त्वं विशुद्धं ह्यगतिप्रणाशः ।
मैत्री तथा स्याद् भगवज्जनेषु ततो नृणां जन्म नवं करोति ॥५॥

प्राचीन कीर्तन.

राग सारंग ॥ कुंजमहल प्यारीके संग बेठे लाल करत रंग अधर मुरली धर स्याम सारंग सुर बजायो ॥ अघघर बिकट तान लेत सप्त सुरसों गान उपजावत मान विविध भांत रस . . . ॥१॥ मंद सुगंध वहत पवन सुंदर अति सुखद भवन रीझ राधे पियाके संग मधुर मधुर . . ॥ छीतस्वामी गिरिधर मगन भये आंको भरत सुखसवाद ता समेको कहत न बाने आयो ॥ . . ॥ ठाडो कदमतर जमुनाके तट पीत टिपारो भ्रजजन मोहे ॥ कटि तट काछ पीत उपरेना ओर बैजयंती कंठ बिराजत करनफूल अति सोहे ॥१॥ मुरली बजावत गत उपजावत उपज लेत छंद भारी ॥ न्यारी नंददास प्रभुकी छबि निरखत कोटि रति पति वारी ॥२॥ पद ॥ जमुनातट ठाडे मुरली बजावे मोहन मदनगोपाल ॥ सीस टिपारो लाल काछनी पीत उपरेना, उर राजत बनमाल ॥१॥ कमल फिरावत गत उपजावत अतिरस गीत रसाल ॥ कुमनदास प्रभु त्रिभुवनमोहन गोवर्धनधरलाल ॥२॥

राग कल्यान ॥ लाडिले गुमानी हो पिय निरखत दगन लुभानी ॥ कुसुमकली ह्वों बीनन निकसी सघनलता अरुझानी ॥१॥ सोंधे सार बदनकमल ध्वब मधुप करत नकवानी ॥ भ्रजाधीस प्रभु रंगीले रसिया छतियांसों अँखियाँ सीरानी ॥२॥

[संग्रहकर्ताः—कणवी वैष्णव चंदालजी लाखा केशोदवाळा.]

---

1 स्वशिष्यनेत्रम् ।

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके भ्रूविलास तथा अंतःकरण तथा नेत्रकमल वर्णन करके अब इनके मध्य भागमें जो मुखारविन्द हे ताको वर्णन करत हे वागधीश इति ॥ वाक्-वाणी-सरस्वती ताके अधीश जो भगवान तद्रूप श्रीमहाप्रभुजी हे। 'वस्तुतः कृष्ण एव' या नामके भावभावित होय एव पदसो निश्चय करके यही हे, अर्थात् वाणीको स्थान जो मुखारविंद हे तद्रूप आप हे। ओर युवजन जो व्रजभक्त हे उनके रसमूर्ती भी आपही हे, अर्थात् रसके मूलकुं धारण करे सो रसमूर्ती। यातें उनकुं रसकी प्राप्ति भी मुखारविन्दसों ही होय हें यह सूचित कीनो। अब यह रस व्रजभक्तनकुं कोनके द्वारा प्राप्त भयो हे सो कहत हे मुरली। या पदसो वेणुके द्वारा प्राप्त भयो हे, यह वर्हापीडं या श्लोकमें स्पष्ट हें। मधुराइ कहिवेसों वा रसकी जो मीठास हे वासों कोई कालमें तृप्ति नहि हे। अर्थात् सर्व काल वाहीकी इच्छा बनी रहे, वाहीकुं मधुराई कहत हे। एसो जो मधु-मधुररस-मधुराई लियो भयो वेणुके द्वारा व्रजभक्तनकुं प्राप्त भयो। वेणुकुं मुरली कहिवेसों भगवानने वा वेणुकुं मुखके लीनी तासों मुरली एसे कयो। भगवानकुं व्रजभक्तनके लिये रसदान करनो हे ताको उत्सुकतासों वेणुकुं मुखके लेत मात्रही रस-दान करिवेके आनंदके आवेशमें देहानुसंधान नहि रहिवेसों वेसे ही ललित त्रिभंग होय स्थित हे। यह मुरली पदसों सूचित कीनो, (यहां भावनाको प्रसंग हे।) प्रमेयप्रकरणके सातमे अध्यायमें श्रीद्वारकाधीशके स्वरूपसों वेणुनाद करके अपनो दशरसयुक्त रसरूप स्वरूप गोपीजनके अंतरमें स्थित कीनो। ओर द्वारकाधीश स्वरूप ओर त्रिविक्रम स्वरूप एकही हें अर्थात् चरण, कटि, तथा ग्रीवा ए तीनो भाग क्रमसों नहीं, तासों त्रिविक्रम स्वरूप हे-अर्थात् एककालावच्छिन्न अनेक लीला दर्शायवेके लिये यहां फलप्रकरणमें भी भगवान त्रिविक्रम स्वरूप कहिये ललित-त्रिभंग स्वरूपसों स्थित हे। यहां मुख्य शृंगाररससों लीला करनी हे। शृंगाररस कहा ? जो सबसे आगें गति करे सो शृंगाररस, ओर नीलरूप आपकों प्रिय हे। कारण नीलरूप शृंगाररसात्मक हे। यातें घनस्यामसुंदर रूप धारण कर ललितत्रिभंग होय वेणुनाद करत में दक्षिण श्रीहस्तको करतल भाग भजन-सेवाके विषे अभय करत हे। यातें करतलकुं अंगुरिनके अग्रभागको स्पर्श नहि होयके अंगुष्ठकुं तर्जनीको स्पर्श हे। ओर मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका यह तीनो अंगुलि ऊर्ध्व हे। यातें यह नृत्यको भाव भी सूचित करके जतायो ओर वेणुकी स्थिति दोनों श्रीहस्तके अवयवके मध्यभागमें हे, ओर वेणुको शब्द आपकुं प्रिय हे, कारण या वेणुमें प्रथम सुधाधारकत्व हे ओर वेणुद्वारा गोपीजनकुं सुधाको भोग करावनो हे, कारण भगवत्सुधाको भोग भये विना भगवद्भोग्या होय नहीं। अथवा वेणु-व=ब्रह्मानंद अर्थात् मोक्षानंद; इ=विषयानंद; इनकुं अणु-तुच्छ करिके भजनानंदको दान करनो हे। यातें वेणुद्वारा सुधाको दान हे। ओर स्पर्श आपकुं गोपीजनको ही प्रिय हे। कारण ? गोपीजनमें सुधाधारकत्व हे ओर रासलीलामें इनको स्पर्श करनो हे,

यातें वेणुकुं धारण करके सुधाको दान करत हे। अथवा श्रीहस्तके मध्यभाग कहिये करतल भाग माधव भगवानको निवासस्थान हे। वाकुं सन्मुख करिके यह जतावत हे जो लक्ष्मी महाचंचल हे, तो भी मेरी क्रियाशक्ति करिके स्थिर हे यातें व्रजभक्तनके मध्यमें निरोधकी स्थितिमें लीलाउद्बोधक-भाव अतिचंचल, ता भावकुं स्थिर करिवेकुं सूचित भाव जतावत हे। अंगुष्ठ जो गोविन्द भगवानको स्थान हे ओर तर्जनी महीधर भगवानको स्थान हे, तातें अंगुष्ठकुं तर्जनीको संबंध कराय यह जतावत हे जो में गोविन्द हुं अर्थात् व्रजको इन्द्र हुं ओर इन्द्रकुं भोग प्रिय हे, ओर मही जो पृथ्वीके धारण करिवेवारे जो आवेशी संकर्षण भगवान हे उनको संबंध हे, यातें तुमकुं में या पृथ्वीपर अपने आवेशको दान करिके सम्यक् प्रकारसों आकर्षण करिके तुम्हारो मेंही भोग सिद्ध करूंगो। याही कारणसों अभयसूचक श्रीहस्तको करतलभाग जो हे ताकुं व्रजभक्तनको आगमन जान सन्मुख करके दिखावत हे। यह सूचित भाव जतावत हे। ओर मध्यमा जो हृषीकेश भगवानको स्थान कनिष्ठिका, जो विष्णु भगवानको स्थान—इन तीनों अंगुरिनकुं ऊर्ध्व करके यह जतावत हे जो हृषीकेश कहिये इन्द्रियनको ईश हुं, तातें इन्द्रियनकूं मेरे विषे प्रेरित करके मेंही ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करूंगो। यामें लौकिक विषयको अभाव सूचित कीनो। क्यों कि भगवत्प्रेरक विषय हे तासों अलौकिक हे ओर त्रिविक्रमरूप—चरण, कटि तथा ग्रीवा ये तीनो जिनके विक्रम हे अर्थात् क्रमसों नहि हे या रूपसों यह जतावत हे जो तुमारो विचित्र विक्रम रूप हे अर्थात् निर्गुण होयके सात्विक, राजस, तामस—गुणवारे भये हो, तासों ये गुणमय लघुरूपता तुमारी या रूपसंबंधसों दूर करिके निर्गुणतारूप ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करूंगो यह सूचित कीनो। ओर विष्णु-रूपसों यह जतावत हे जो में सर्वत्र व्यापक हुं ओर मोसों जिनको संबंध हे वेही ऊर्ध्वगतिके अधिकारी हे, एसो सत्त्वगुणी रूपसों शांतिको सूचित भाव जतायो। श्रीहस्तको पृष्ठभाग हे, सो जनार्दन भगवानको स्थान हे, ताको व्रजभक्तनके सन्मुख करके यह जतावत हे। जो मेरे सन्मुख जिनको आगमन हे वामें जो दुष्टजन प्रतिबंधक हे ताको मेंही अर्दन—नाश—करूंगो, अथवा मेरे जनके हृदयस्थित जो दुष्टभाव कहिये कामभावना, ताको नाश में ही करूंगो अथवा वाम अंग जो पुष्ट हे तासों वाम श्रीहस्तसों पुष्टिभक्तनको ही आवाहन करके बुलावत हे, अन्यकुं नहीं। यामें यह जतायो जो भगवानके सुखार्थ जेसे पूतनासंबंधी रक्षामें गोपीजनने अंगन्यास करके करन्यास करके भगवन्नामसोंही भगवानकी रक्षा कीनी, तेसे यहां भी गोपीजनके सुखार्थ अंगन्यास, करन्यास, करके रसकी प्राप्ति करायवेके लिये ललितत्रिभंग स्वरूपसों स्थित हे। याकी विशेष जिज्ञासा होय तो ललितत्रिभंग ग्रंथकी टीकामें वर्णन हें, तहां देखनो। यह सर्व लीलारूप श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप हे याहीतें जानी यह पद कह्यो। आपकी कृपातें मेरे जानवेमें एसी आवत हे, यातें 'मेने जानी' यह पद्मनाभदासजी अपनो स्वतःको अनुभव कर रहे हें। या प्रकार ललितत्रिभंग स्वरूपसों श्रीमहाप्रभुजीको हि वर्णन करत हे, सो कहत हे "अटपटी बात

........पाछें पुलिन ठोरकी ठानी " यह अढाइ तुक को संबंध हे। भगवानकी अटपटी बात, जामें समज न पडे सो, किन्तु इतनोंही नहि तो या वातमें लपेटा भी बहोतसे लगे, वा लपेटाकूं सुरझायवेवारे जो व्रजभक्त हे, उनसों नहि सुरझें उल्टे वामें वे सब अरुझ गये । सब कहें वासों या लीलास्थलमें जो आये वे सब या प्रकार अंतरंग प्रसंग सों मिले भये एसे व्रजभक्तनको भगवानने मधुर मधुर कहिये बडे आदरपूर्वक, एसो कि जो गोपीजनके समजमें नहि आवे, या रीतको अव्यक्त मधुर वेणुके सप्तरंध्र व्हे के गुणगान, स्नेहपूर्वक गान कीनो । या मधुर गानने बहुत सयानी सखि जो व्रजभक्त अपने समानशीलव्यसनवारी तिनकूं प्रचुर करी, उनकुं भगवान के सन्मुख करके वनमें फेलाय दीनी । अथवा उनकी लौकिक सयानता छोडाय अन्तःकरणको प्रकर्ष करके पूर्ण कीनो, क्योंकि फिर लौकिक रीतसों सयानी वनके भगवत्सन्मुखसों पाछी घर न जाय । या रीतके गुणगानने उनके अंतरंग देशकुं आकर्षण करके भगवत्सन्मुख कीने ॥४॥ अब बहिरंग देश, बाहिरकी क्रियाकुं कहत हे, **नखशिखाग्र** चरणके नखसुं लगाय शिखाके अग्र भागतांइ संकुलित-अत्यंत दृढ अर्थात् सम्यक् प्रकारसों मिली भइ, जेसे लता वृक्षपर संकुलित होय तेसे मिली भइ, विविध प्रकारकी निधि कहिये नाना प्रकारकी लीलारूप निधि तिनके समूहमें भगवाननें सुखसों मिलाय दीनी । इतनो ही नहि किन्तु या लीलारूप ग्रंथिमें उनके अंग उत्तम प्रकार करके बांध दीने । अर्थात् कृपारूप ग्रंथिसों वे निधियां छूटे हि नहि या प्रकार अपने समान सुखरूप कर अपनेमें उनको स्नेह कराय अपने सन्मुख कर लीनीं । एसे करवेमें हेतु कहत हे **वरदेश्वर** इति ॥ वर कहिये श्रेष्ठ इश्वर जो धर्मी स्वरूप, ता स्वरूपसों द कहिये दान दीनो, यातें द पद मध्यमें हे । अथवा वे कुमारिका स्नेह करके जब सन्मुख भइ तब, उनकुं वर देवेवारे इश्वरने रासलीलाको दान देवेकी आज्ञा दीनीं । अब जा ठोर सुखदान देवेकी आज्ञा कीनी ता ठोरकुं कहत हे, " **पाछें पुलिन ठोरही ठानी** " । पाछे कहिवेसों प्रथमही धर्मी स्वरूपसों वर देके पाछें याही स्वरूपसों रासलीला करनी हे अथवा इतनो कार्य करके अपने समान सुखरूप करके पाछे श्रीयमुनाजीके पुलिनमें ठोरको ठान कियो । [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजी महाराजके यह वचनामृत तिनके श्रीबेटीजीने लिखे हे ।]

पंचमवचनामृत—फेर एक समें श्रीकाकाजी महाराजनें एसें आज्ञा करी, जो अपने माथे श्रीलालजी बिराजे हैं, सो कोटामें. छोटे मथुरेशजीवारे, श्रीमथुरानाथजी महाराजके भाइ श्रीरामकृष्णजीके श्रीठाकुरजी है । श्रीमहाप्रभुजीकी निधि है । चोराशी वैष्णवकी वार्तामें सिंहानंद वारे अम्मा क्षत्राणीके ठाकुरजी है । इनके चरित्र इनकी वार्तामें प्रसिद्ध है । और श्रीरामकृष्णजी

महाराजके वहां भी इन ठाकुरजीके अद्भुत चरित्र हैं, परन्तु जीतने याद है सो लीलाये है। आप श्रीरामकृष्णजी महाराज श्रीमद्गोकुलमें बिराजते, श्रीलालजीकुं छोडि कें कभी परदेश नहि पधारते। तासों चित्तको बहुत संकोच रहेतो नोकर चाकर नही रखते, आप तथा आपके बहुजी तथा बेटीजी तीनों जन मिलके सब सेवा करते। जल तथा चक्की लकडी सेवा करते। ओर एक समें श्रीवृन्दावनको मेला देखवेकुं सब आग्रह करीके पधराइ गये, तब आपश्री पधारे फेर आप पाछे पधारे तब श्रीलालजीनें आज्ञा करी कि दोहिता दोकुं तो मेला देखाय लाये ओर हमकु नहि ले गये सो हम न्हा तुह्मारे बेटा नहि है? तब आपने कही येतो सब देहसंबंधी है, मेरे तो सर्वस्व आपहो, आपकुं ले जाउंगो। तब प्रभु प्रसन्न भये। फेर दुसरो बरस श्रीलालजीकुं झांपी में पधरायके श्रीवृन्दावन मेला दीखाय लाये, पाछें प्रभु प्रसन्न भये ऐसे सोखीन श्रीलालजी हे। ओर एक बिरियां श्रीलालजीने उनके बहुजीकुं आज्ञा करी के हमारे छुवकी भात खानो है, तब उनके बहुजीनें कही, के कैसें होय? तब आपनें सिखायो। तब छुवकी भात आरोगे, ओर उनके बालकनके तांइ उपर बाटी करते तब श्रीलालजीनें आज्ञा करी, जो तुह्मारे बालकनकुं तो नित्य बाटी खवावो हो, और हमकुं बाटी नहि खवावो हो। तबसुं श्रीठाकुरजी कुं बाटी होयवे लगी। सो अभीतांइ होय है। ओर श्रीरामकृष्णजी महाराज के फक्त एक बेटीजी हते, लालजी नहीं हते, सो भूतलपें बिराजे तहां तांइ सेवा करि फेर बेटीजीकुं घर दीनो।

॥ इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको पांचमो वचनामृत संपूर्ण ॥

छट्ठो वचनामृत—अब एक समय श्रीकाकाजी महाराजनें एसें आज्ञा करीके रामकृष्णजीके बेटीजीकुं घर दीनो हतो, सो उनके एक लाल, तथा एक लाली हते, सो बेटीजी भूतलमें बिराजे तहांताई उनने सेवा करी पीछें वहीवट उनके लालनें कर्यो, ओर घर लालीकुं दीयो। उनकी लाली हमारे दामोदरजी काकाजीकुं व्याहे हते। सो व्याहा भये वरस दिन भयो, तब हमारे श्रीकाकाजी महाराज लीलामें पधारे। सो हमारे काकाजी महाराज बालक हते, ओर उनके भाई वहीवट करते, सो उनके मोंडे गोकुलके लुच्चा लग गये। सो सब पैसा खाय गये। ओर मंदिरके उपर एक लाख रुपयाको करज करदीयो। ओर हमारे काकाजी बालक हते ओर परदेश बहुत फीरे पर करज न चुको तब हमारे दादाजी महाराजसुं कही, जो आप करज चुकावो, तब आपने कही, हमकुं लीख देउ, तब विनने लीख दीयो, उनके भाईनें भी सही करी, फेर हमारे दादीजी महाराजने बहोत रुपया दीये, लाख रुपीयानसुंभी उपरांत दिए तो भी उनको करज नहि चुक्यो, तब आपु बहुत अमुंजे, ओर श्रीलालजीकुं मुंबई पधराईवेको विचार कर्यो, सो गोकुल मथारके श्रीलालजीकुं चीठी नांखी। चीठीमें आपके मुंबई पधारवेको ईच्छा है तब गोपीनाथलालजीसुं छाने पधरायवेको विचार राख्यो। जो श्रीलालजी जेसो दूसरो स्वरूप बनवायो सो विनकुं पधराये, रातकुं शैय्यामें और ये श्रीलालजी,

ओर श्रीमहाप्रभुजीके हस्ताक्षर झांपामें पधराये, ओर सवेरे कुच कियो सो आगरेमें मुकाम कीयो। यहां गोपीनाथलालजीकुं खबर पडी सो वाई वखत पांच–दस लुगडेनको लेके आगरे आये; परंतु श्रीलालजीकी ईच्छा नहती; सो उनकुं खबर न पडी। ओर हमारे घर आयके उतरे; ओर शंखनाद, घंटानाद, सब सेवा नित्यप्रमाण भई तोहू उनको खबर न पडी। ओर इहां सो श्रीदादाजी महाराज रेल्में बैठके मुंबई पधारे। एसे एसे चमत्कार प्रभुननें दीखाये, ओर दादाजी महाराजकुं कछु हरकत आवे नहि एसे श्रीलालजीके अनेक चरित्र है सो कहां तांइ लीखे ?

॥ इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजकी छट्ठो वचनामृत संपूर्ण ॥

વચનસુધા.

શ્રીગુરુવંદના.

પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વસ્વ શ્રીગુરુદેવજ છે. ખરી રીતે જોતાં સર્વ સંપ્રદાયો ગુરુનો મહિમા બધાથી વિશેષ રીતે ગાય છે ઉપનિષદો તો ગુરુમાં અને પ્રભુમાં ભેદભાવ રાખનારને ધાર્મિક ભાવો સૂજતા જ નથી એમ કહે છે. આપણા સંપ્રદાયમાં પ્રભુથી પણ ગુરુદેવ અધિક છે. ગુરુદેવની કૃપા થયા પછી આપણને પ્રભુની કૃપા માટે વળખાં મારવાનીએ કશી જરૂર નથી. ગુરુદેવની કૃપા માટે જ્યાં પ્રભુને આપણે વિનવીએ, ત્યાં ગુરુકૃપા થયા પછી પ્રભુકૃપાનું મ્હોં તાકવા કયાં બેસીએ ? આપણે દીનમાં દીન છીએ એ વાત તો સારી પેઠે જાણી ચુકયા. એક દીન કિંકર પોતાના પોતાના તાલેવાન શેઠને શું આપી શકે ? તેમાંએ આપણા સ્વામી તો ચૌદ લોકના નાથ રહ્યા. વિષ્ણુનાં ચરણો તો એક લક્ષ્મીજ સેવે અને આપણા શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની સેવા ટહેલ તો હજારો અસંખ્ય લક્ષ્મીજીઓ કર્યા કરે. એવા પ્રભુને આપણે શું નજરાણું ધરવાના હતા ? આપણે તો દીનતાથી એને વંદનજ કરી છુટીએ. બે હાથ ને ત્રીજું માથું એના ચરણમાં ધરીએ. જયારે પ્રભુ પાસે આપણે વંદન–પ્રણામ વિના બીજું કાંઈપણ કરવાની તાકાત ધરાવતા નથી, ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુ પાસે આપણે શું ધરવાના હતા ? શ્રીમહાપ્રભુ તો શ્રીકૃષ્ણપ્રભુનાએ સર્વસ્વ. 'યથા દેવે તથા ગુરૌ' 'જેમ દેવ તેમ ગુરુ' એ ઉપનિષદના મહાવાકય મુજબ ગુરુદેવને પણ વંદનાજ કરવી રહી. આપણા શ્રીમહાપ્રભુ તે આપણા બ્રહ્મસંબંધદાતા ગુરુદેવ જ "પ્રત્યક્ષ પાવક પરહરી, પથ્થરમાં શિદ શિર ફોડીએ ?" જે શ્રીવલ્લભાગ્નિરૂપ ગુરુદેવનાં રોજ આપણને દર્શન થાય, આપણે તેમનાં ચરણસ્પર્શનું સુખ અનુભવીએ, તેમની સાથે વાર્તાલાપ કરવાનું સૌભાગ્ય આપણને મળે, આ બધું છોડીને હવામાં બાચકા શીદને ભરીએ ? આપણા એ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું સ્વરૂપ શું છે, એ શ્રીહરિરાયજી 'શ્રીગુરુદેવાષ્ટક'માં સ્પષ્ટ કહે છે જેથી આપણે બહારથી મનુષ્યનાટય કરી રહેતા શ્રીગુરુદેવનું આધિદૈવિક સ્વરૂપ સમજી શકીશું. શ્રીહરિરાયપ્રભુ આજ્ઞા કરે છે કેઃ—

શ્રીગુરુદેવને અમે વંદન કરીએ છીએ. આપણા ગુરુદેવ પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વસ્વ (તત્ત્વ) જાણે છે. પોતાના માર્ગની ખુબી પોતે ન જાણે તો બીજું કોણ જાણે? વળી આપણા પણ એ સર્વજ્ઞ છે. પ્રભુ સર્વજ્ઞ ખરા, સર્વના હૃદયમાં બિરાજીને બધું જાણી લે છે એ વાત પણ કબૂલ, પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર જેમનો થયલો છે, તેના સર્વજ્ઞ પ્રભુ નહિ. જ્યારે જીવ પુષ્ટિમાર્ગીય થાય ત્યારે તેના હૃદયમાં પ્રભુને બદલે શ્રીમહાપ્રભુ બિરાજે. એટલે આપણા પુષ્ટિમાર્ગીયોના સર્વજ્ઞ તો શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જ, શ્રીગુરુદેવ જ. વળી કરુણારસથી ભરેલા, જો કરુણારસ ન હોય તો આપણા હૃદયમાં બિરાજી જ ન શકે. આપણા જેવા દોષથી ભરેલા નિઃસાધનના હૃદયોમાં આવીને રહેવું એ જેવા તેવા દયાળુથી નજ બને! શ્રીગુરુદેવ દયારસથી ભરેલા માટેજ તે આપણા હૃદયમાં સ્થિતિ કરે છે. 'કૃપારસ નયન કમલદલ ફુલે.' પોતે શ્રેષ્ઠ છે. પુરુષોત્તમથી પણ જે ઉત્તમ હોય તે શ્રેષ્ઠ હોય જ એમાં આશ્ચર્ય શું? શ્રેષ્ઠ છે, માટે શ્રેષ્ઠ–ઉત્તમ–ફલના દાતા છે. જેને પોતાનો કરે છે અપનાવે છે તેને ગમે તે કાંઇ આપી દઇને ખુશ કરી દેતા નથી. ફળ આપવામાં વિલંબ અવશ્ય કરે છે. જીવને તાવી નાખે છે. પરંતુ બીજા દેવોની પેઠે થોડામાં પતાવી દેતા નથી. પરંતુ થોડામાં પતાવે ચાલે એમ આ માર્ગમાં ન જ હોય. આ માર્ગના ટેડા ભક્તો એમની ચાલાકીને તુરતજ ઓળખી લે એવા હોય છે. એટલે એમને તો ઉત્તમ ફળ આપેજ છુટકો. માટે એવા ગુરુદેવને આપણે નમન કરીએ છીએ. ૧.

પ્રભુ જગતનો ઉદ્ધાર કરે, જ્યારે શ્રીગુરુદેવ દૈવી જીવોનો જ ઉદ્ધાર કરે. અનેક પ્રકારના જીવોમાંથી નિજ અંગીકાર થયેલા જીવોને વીણી લે. એનો ઉદ્ધાર કરે. અનેક અધમ જીવોના સંગથી દૈવી જીવો પણ પોતાનું સ્વરૂપ ભૂલીને અથડાયા કરતા. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે એઓને ચેતાવ્યા. પુષ્ટિમાર્ગ જેવા એક મહાન રાજમાર્ગને છોડીને ગલીગુંચીઓમાં ભૂલા પડેલા એ જીવોને રાજમાર્ગના દર્શન કરાવ્યાં. ગણિતાનંદમાં સપડાયલાઓને અગણિતાનંદનું ભાન કરાવ્યું. કારણ કે પોતે આનંદમય દેહવાળા છે. શ્રીગુરુદેવનું મનુષ્યનાટય જોઇને આપણે આપણા જેવા એક માણસ તરીકે તેમને સમજી બેસવાની મહાભ્રાંતિના ભોગ થઇ પડીએ છીએ. એઓ પોતે આનંદમય સ્વરૂપે રહે તો આપણી શક્તિ નથી કે આપણે એમને જોઈ શકીએ. આપણા પર કૃપા કરીને એઓ એક સુંદર મનુષ્યના આકારમાં આપણને દર્શન આપે છે. એથી ભ્રાંત જીવો તો એમને મનુષ્યજ માને. જેઓ દૈવી છે, તેઓજ એમને આનંદમયસ્વરૂપે અનુભવે છે. જેઓ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવને આનંદમય જાણે છે, એમના લૌકિક અનુકરણથી એમને લૌકિક નથી માનતા તેજ બડભાગી છે, તેજ શ્રીમહાપ્રભુજીના સ્વરૂપને પ્રત્યક્ષ કરી ચૂકયા છે. સાક્ષાત્ દર્શન આપી રહેલા ગુરુદેવને મનુષ્ય માનીને શ્રીમહાપ્રભુજીને ભજવાનો જે ધાંટો પાડી રહ્યા છે, તે દંભી છે. તેઓથી શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અતિદૂર છે. આપણા પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું જે મનુષ્ય સ્વરૂપ દેખાય છે, તે આધિભૌતિક છે. એમનું આધિદૈવિક સ્વરૂપ તો

આનંદમય છે, રસરૂપ છે. વળી ગુરુદેવ રસિક રહ્યા. એકલા રસિકજ નહિ, પણ રસિકના એકલા શિરોમણિ. રસિક તો પ્રભુ પણ ગણાય. વ્રજભક્તો કાંઇ ઓછાં રસિક નથી. એ સર્વના શિરોમણિ તો શ્રીગુરુદેવ જ. આ સ્વરૂપનું ધ્યાનજ થઇ શકે. માટે હે સ્વામિન્! હે નાથ! હે ગુરુદેવ! આ સ્વરૂપે તમો ધ્યાન કરવા યોગ્ય છો. એ સ્વરૂપનું ધ્યાન કરતાં નેત્રમાં પણ એ સ્વરૂપ ઝલકે. પછી હું આપના લૌકિક અનુકરણથી કદી નજ છેતરાઉં. આપના લૌકિક ભાસતા દેહથી હું કદી ભ્રમમાં નજ પડું. ૨.

સેવામાર્ગ જેટલો સુગમ છે, તેટલો જ મુશ્કેલ છે. ગુરુકૃપા પાસે સુગમ છે, નહિતર મુશ્કેલીનો પાર નથી. સેવા કરતાં અનેક પ્રતિબંધો નડે. કેટલાક પ્રતિબંધો ઘરબારના રોજના લાગેલા હોય છે, તેજ વચ્ચે આવી ઉભા રહે છે. કેટલાક પ્રતિબંધો ભગવાન્ મોકલે છે. એ બધા પ્રતિબંધોને નસાડનાર શ્રીગુરુદેવ છે. એની કૃપા થતાંજ પ્રતિબંધોની બેડીઓ તડોતડ તૂટી જાય. પોતાના પ્રયત્નથી તૂટવાની આશા ફોગટ છે. પુષ્ટિ એટલે કૃપા. કૃપાનું જ્ઞાન કેમ થાય? જ્ઞાન તો જેને આપણે નજરે જોઇએ તેનુંજ સારી પેઠે થાય. પુષ્ટિનું સ્વરૂપ એવું નથી કે એકદમ આપણને તેનાં દર્શન થાય. જો દર્શન ન થાય તો આપણે પુષ્ટિને માનીએ ખરા? શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જાણે છે કે જો પુષ્ટિના સાક્ષાત્ દર્શન જો આ જીવોને નહિ થાય. તો તેઓ પુષ્ટિને માનશે કે ગણકારશે નહિ. જેમ પુષ્ટિના—અનુગ્રહના ભંડારરૂપ પ્રભુના સાક્ષાત્ દર્શન એમને કરાવ્યાં તેમ પુષ્ટિરૂપ ખજાનો પણ એમને બતાવી દેવો જોઇએ. નહિતર એઓ ભારે હઠીલા હોવાથી દર્શનની હઠ લઇ બેસી જશે! માટે એમને પુષ્ટિનું જ્ઞાન થાય તેવો ઉપાય કરવો ઘટે. એમ વિચારીને આપશ્રીએ એક અલૌકિક દીવો પ્રકટાવ્યો. એ દીવાથી પુષ્ટિભક્તિસુંદરીની દિવ્ય ઝાંખી તુરતજ થઇ. પુષ્ટિનું બધું સ્વરૂપ એ દીવાથી આપણે પ્રત્યક્ષ કરી શકીએ. એ દીવો તે તત્ત્વાર્થદીપનિબંધરૂપ મહાગ્રંથની રચના કરીને આપશ્રીએ પુષ્ટિનું જ્ઞાન આપણને કરાવ્યું. એવા અલૌકિક દીવાની જળહળતી જ્યોતિથી જો આપણે પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ ન સમજીએ તો પછી આપણાં નશીબ ફુટયાંજ સમજવાં. એ નિબંધરૂપ મહાન્ ગ્રંથમાં વળી આપશ્રીએ બધા સિદ્ધાંતો કહ્યા. એકલી પુષ્ટિની જ વાત નહિ, પરંતુ બીજા માર્ગની પણ વાત સમજાવી એટલે આપણને બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગનો મુકાબલો કરવાનો અનાયાસે લાભ મળી ગયો. બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગની તુલના કરીને આપણે પોતાના માર્ગની ઉત્તમતાનો નિશ્ચય કરીએ અને આપણા માર્ગમાં અચલ થઇને રહીએ. આવી કૃપા જો શ્રીમહાપ્રભુજીએ ન કરી હોત તો આપણો કાંઇ આરો ન હતો. વળી આપણે ગરીબ રહ્યા, અને ગરીબાઈમાં માણસ સારાં નરસાનો વિવેક ભૂલી જાય. ડૂબતો માણસ તણખલાને પકડે એવી દશા આપણા જેવા દીનની બને. આપણી એવી દુઃખ ભરી સ્થિતિ શું શ્રીમહાપ્રભુ સહી શકે? એઓશ્રી કરુણાની ખાણ એટલે દીનનું દુઃખ કદી ન સહે. બધું

સહન કરવાની શક્તિ ધરાવે; છતાં પોતાના જનનું દુઃખ ઘડીએ સહન ન કરી શકે. પોતે પ્રભુ છે, સર્વ શક્તિમાન છે, છતાં ભક્તનું દુઃખ સહી લેવાની શક્તિ એમનામાં નથી ! ૩.

પ્રતિબંધો આવી પડવાનું કારણ દોષ છે. જીવના અનેક દોષ હોય. સ્વભાવથીજ તે દોષે ભરેલો, એટલે પ્રતિબંધો તેને સતાવે. એ પ્રતિબંધોને દૂર કરીને જ પ્રભુ બેસી ન રહે, પરંતુ એ પ્રતિબંધો પાછા કોઇવાર પોતાનું જોર ન જમાવે તે માટે જીવના બધા દોષોનો પોતે નાશ કરે. જીવ નિર્દોષ બની જાય એવી રીતે જીવને નિર્દોષ બનાવીને સુખનું દાન કરે. તે સુખ સર્વથી પેલેપાર રહેલું છે. સર્વથી પર સુખરૂપ તો પ્રભુ જ હોય, જીવને બ્રહ્મસંબંધ કરાવીને એ સુખરૂપ પ્રભુનું દાન કરે; જીવના બધા દોષો બ્રહ્મસંબંધથી જડમૂળથી ઉખડી જાય, ને નાશ પામે એટલે એના માથે પ્રભુને આપશ્રી પધરાવી દે. નહિ દઇ શકાય તેવું દાન કરવાનું સામર્થ્ય શ્રીગુરુદેવ વિના બીજા કોનામાં હોય ? પછી એ જીવની બુદ્ધિના પ્રેરક આપ બને. કારણ કે જીવ તો જીવ ઠર્યો. કોઇ વાર તેની બુદ્ધિ બગડે, દાનત ભ્રષ્ટ થાય, એટલા માટે એનો અંગીકાર કરી લીધા પછી તેની બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે જ બની જાય. આપણું શરીર એક રથ છે. એ રથના ઘોડા બધી ઇંદ્રિયો છે. એ ઘોડાની લગામ રૂપ મન છે. સારથિનો વેશ બુદ્ધિ ભજવી રહી છે. એ રથમાં સહેલાણી તરીકે જીવ મોજ માણી રહ્યો છે. એ જીવને જ્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પોતાનો કર્યો એટલે એ જીવની બધી સત્તા પોતે લઇ લીધી ! એનો બુદ્ધિરૂપી સારથિ પરજ હુકમ ચાલતો હતો, તે ખુંચવી લીધો અને તેના બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે બન્યા. પોતે ભાવાત્મક સ્વરૂપે હૃદયમાં બિરાજ્યા. એવા દયાળુ પ્રભુને હું નમન કરૂં છું. કોઇના રથ પર ચડી બેસીને સારથિ પર પોતાની જબરદસ્તીથી જોહુકમી જે ચલાવે તેને આપણે પ્રણામ વિના બીજું શું કરીએ ? ૪.

ચકોર અને હુશીયાર શિષ્યના ગુરુ બનવાને ઘણાએ નીકળી આવે, પરંતુ મારા જેવા એકડએક ન જાણનારનો કોણ હાથ પકડે ? મને તો એટલુંએ ભાન નથી કે હું કોણ છું ? હું પુણ્યવાન્ છું કે પાપી ? હું ગરીબ છું કે તાલેવાન ? હું નિર્દોષ છું કે દોષથી ભરેલો ? આમાંનું હું કાંઇ જાણતો નથી. મારા સ્વરૂપનાં જ્ઞાનમાં મોટું ૦ મીંડું છે. પરંતુ આપની દયાનો પાર નથી. એવાના પણ બધા પાપો હરી લો છો. જ્યાં સુધી પાપ હોય ત્યાં સુધી મારું સ્વરૂપ કેમ સમજું ? સહુથી પહેલાં મારૂં પોત હું પારખી શકું તેને માટે પહેલીજ વાર દર્શન દઇને મારાં બધાં પાપો આપ હરી લો છો; પાપ જતાંને વાર જ હું મારું સ્વરૂપ સમજી શકું છું. દરેક કાર્ય કરવામાં આપ સમર્થ છો. એટલે મારાં બધાં પાપો હરી લેવા એ તો આપને એક નજીવી વાત થઇ એથીજ મેં આપને મારા નાથ બનાવ્યા છે ! માટે હું આપને મારા નાથ માનીને નમન કરી રહ્યો છું. ૫.

હું જાણું છું કે આપ રસમગ્ન છો. આપનો મુખ્ય રસ વિપ્રયોગ રસ છે. એ રસમાં જ આપ છકયા રહો છો: છતાં અમારાં દુઃખોને દૂર કરો છો. નિજ-

જનનાં દુઃખ દૂર કરવાં એ પણ આપનો એક વિલાસ છે. રસમાં જે ભ્રમ હોય તે કંઇ વિલાસો કર્યા કરે. અમારી વ્યથાને દૂર કરીને જ આપ અટકતા નથી, ને એટલેથી અટકે ચાલવે તેમ પણ ન જ હોય. અમે આપની પાસે નકરાં દુઃખ દૂર કરાવાજ નથી આવતા, પરંતુ આપની પાસેથી કાંઇ બીજું જ લેવા આવીએ છીએ. એટલે આપને તો આપેજ છુટકો. એવા બીજો કોણ દયાળુ હોય કે જે પોતાનું બધું દાન કરી દે. માટે તો આપને શરણે પડયા છીએ. આપજ સર્વદાન કરી શકો. તેમાંએ વળી વિલક્ષણતા ખરી જ. જેવા અધિકારીઓ તેવું તેને દાન કરો, તેમજ આપ સર્વાંગે સુંદર છો. 'સર્વ અંગોઅંગ રસભર્યાં, રસભર્યાં લોચન ચારુ.' આપનાં અંગોઅંગની સુંદરતા શે વર્ણવી જાય? એટલુંજ કહી શકાય કે આપ 'સુંદરતાની સીમા છો.' રતિનો નાથ કામદેવ પણ આપનાં સ્વરૂપને જોઇને ધરણીપર ઢળે. 'તેમાં કામ જેવા કૃટડા વહેવાય છે હો જીરે.' આવી ખુબસુરતીથી અમારો આપનામાં નિરોધ થયો છે. નહિ તો ખુબસુરતીનાં તરશ્યા અમારાં નેત્રો કોણ જાણે કયાં જઇને ચોંટે? ''આનંદસ્વરૂપ અનુપમ સુંદર, પામે નહિ કોઇ પાર.' 'નખ શિખ સુંદર વ્રજજન જીવન પ્રાણ.' આવી મહાનુભાવ ભગવદીયોની વાણીજ આપનાં સ્વરૂપનાં માધુર્યનો પરિચય આપી શકે. ૬.

આપને ભક્તિ ઘણીજ વહાલી લાગે છે. દીન સેવક પાસેથી બીજી કઈ નહિ પણ ભક્તિની તો આપ આશા રાખો જ. ભક્તિ એટલે સ્નેહ, સ્નેહ પણ એક પ્રકારનો રસ જ છે. રસરૂપ આપ સ્નેહરસને પ્રિય ગણો એમાં શું આશ્ચર્ય! આપના આવાં સ્વરૂપની ગમ માત્ર ભાવથી જ થાય. જો ભાવ હોય તો જ આપને અમે ખરા સ્વરૂપે જોઈ શકીએ, નહિતર આપના બહારના દેખાવથી તો ભ્રમણામા પડી જઇએ. આપનું આવું સુંદર સ્વરૂપ પણ ભાવથી જ જોઈ શકાય. આપ રસરૂપ છો, રસના જ્ઞાતા છો, રસનું દાન પણ કરો છો. રસનુ જ્ઞાન તો ઘણાને હોય, પણ તેનું દાન તો આપ વિના બીજા કોઇથી થઈ શકે તેમ નથી. આપ જ્યારે રસનું દાન કરો ત્યારે આપનું સ્વરૂપ અમને ઓર જ ભાસે છે. આપ અતિમધુરતાના સમૂહ લાગો છો, બધી અલૌકિક મધુરતા જાણે આપના જ અંગોઅંગમાં ન ભરી હોય. 'અધરં મધુરં' નું સ્વરૂપ અમે આપમાં જ અનુભવીએ છીએ. આપના અતિમાધુર્યથી અમને સ્વપ્ને પણ તૃપ્તિ થતી નથી, પરંતુ આપનું આ સ્વરૂપ દુર્લભ છે, માત્ર ભાવથી જ તે જાણી શકાય છે. આપ પોતે દુર્લભ છો. પરંતુ આપ ભાવનું દાન કરીને, ભાવને જમાવી, આપનું જ સ્વરૂપ અમને પ્રકટ રીતે દેખાડો છો. ૭

અમારો આપે અંગીકાર કર્યો. અમારો હાથ ઝાલ્યો. અમે આપને અમારા સ્વામી માન્યા. હવે જો અમે મન વાણી અને કર્મથી આપની લેશ પણ સેવા ચુકીએ. તો અમારી અનન્યતાનો ભંગ થાય. એટલા માટે જ આપ અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપો છો. અમને અનન્યધર્મનું દાન કરો છો. અમને વ્યભિચારથી અટકાવો છો. અમારામાં રહેલી બધે ભટકવાની વલણને આપ દૂર હટાવો છો. આપના જેવા સ્વામી મળ્યા, તોએ અમારી વૃત્તિ બીજે ભટકે તો તેની લાજ આપને જ હોય.

એવો કેવો ધણી કે જેની સ્ત્રી બીજા તરફ સ્વપ્ને પણ ઝાંખે? આપનું ધણીપણું દાઘ વિનાનું રાખવા માટે આપને અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપ્યા સિવાય છુટકો જ નથી. બાકી અમે તો કેવા છીએ તે આપ જાણો છો જ. આપ અમને જાણો ને કાંઇક અમે આપને ઓળખીએ છીએ. શરણે આવેલાનું પણ આપ રક્ષણ કરો છો. ન કરો તો આપનું બીરદ જાય. શરણે આવેલા પણ કાલ વગેરેના ભયથી કંપે તો પછી આપ કોટિ બ્રહ્માંડના નાયક શાના? શરણે આવેલાના દરેક ભયનો આપને નાશ કરવો જ પડે. વળી ભય ટાળ્યાથી જ કાંઈ આપનો છુટકો થવાનો નથી. આપને તો તેથીએ વધારે દાન કરવાનું છે. શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરની પ્રાપ્તિ પણ આપે જ કરાવવી રહી. શ્રીવિઠ્ઠલેશપ્રભુની પ્રાપ્તિ આપ કરાવો. આપ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીની ઝાંખી કરાવો. મને નિજદાસ ગણીને મારા આધારરૂપ થાઓ. નિજદાસનો, નોધારાનો આધાર આપ વિના બીજો કોણ હોય? શ્રીવિઠ્ઠલેશ પ્રભુ પાસે જ્યારે આપ પધારો ત્યારે મારે ખભે હાથ મૂકીને પધારો. ૮

એ રીતે પોતાના ગુરુદેવ શ્રીગોકુલનાથજીનાં નર્મનરૂપ ગ્રંથ શ્રીહરિરાયજીએ કર્યો છે. આ ઉપરથી સર્વેએ પોતાના ગુરુદેવને શ્રીમહાપ્રભુજીરૂપ માનવાના નિશાનાથી કદી ચાતરવું નહિ. આજકાલના બીજા મુગ્ધ જીવની વાણીથી કદી ભરમાવું નહિ! ભમરાળી વાણીમાં પડીએ તો આપણે પણ કુદડી ફર્યાજ કરીએ. એ 'કુથલી' છોડીને આપણે તો આવી વચનસુધાનું જ પાન કરીએ.

प्रभुभक्ति अने अन्त्यजो.

[સાહિત્યસુધાકર ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદયે પાદરામાં આપેલું યાદગાર હૃદયસ્પર્શી વ્યાખ્યાન].

શરૂઆતમાં મંગળાચરણ બાદ આપશ્રીએ કહ્યું કે-ગર્ઈ કાલે જે બ્રાહ્મણકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ ન કરે તે કરતાં શ્વપચકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ કરે છે તે ઘણે દરજ્જે શ્રેષ્ટ છે. એ ભક્તિહીન બ્રાહ્મણ કરતાં ભક્તિવાળો ચાંડાળ શ્રેષ્ઠ છે એમ કહેલું. તેથી ચંડાળને ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે પણ તેને સ્પર્શ કરવાનો અધિકાર નથી. તે અસ્પૃશ્ય છે, તે શાસ્ત્ર-સંમત છે ને તેને સ્પર્શ કરવાની પ્રથા અમારા સંપ્રદાયમાં નથી. વેદની એક પણ પંક્તિ અમારા સંપ્રદાયમાં અગ્રાહ્ય નથી. તેમજ શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતાજી તથા વ્યાસજીનાં સૂત્રો ને સમાધિભાષા પણ ગ્રાહ્ય છે. શાસ્ત્રોક્ત જે ચાર વર્ણોના જુદા જુદા ધર્મો છે તે દરેક વર્ણોએ પોતપોતાના વર્ણના ધર્મોમાં પ્રવૃત્ત રહેવું ને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી, જેથી ભવરૂપી સમુદ્ર તરી પાર ઉતરી શકાય. અગાઉના જે જે ભક્તો થઇ ગયા છે તેમણે આપણા કલ્યાણને માટે ભક્તિનૌકા કલિયુગમાં જીવોને તરીપાર ઉતરવા માટે મૂકી ગયા છે. તેમાં બેસીને ભક્તો તરી પાર ઉતરે છે. દયારામભાઇ કહે છે કેઃ—

ભક્તિ નૌકા તારે સર્વને જે કોઇ શરણે આવે શુચિ પાપી,
અન્ય સાધન દારુ તુંબિકા ગ્રહે સભય તરે કો કદાપિ.
તરે કદા બચે કામાદિ ગ્રાહથી સમર્થ નહિ અણુ તારવા શાથી ?
વિબુધ વિચારી જુઓ નિજ મન ભક્તિ ભલી કે સાધન અન્ય ?

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુને શરણે જે કોઈ પુણ્યશાળી જીવ કે પાપી જીવ આવે છે તે ભક્તિનૌકાવડે સંસારસમુદ્ર તરી પાર ઉતરે છે. પણ અન્ય સાધન જેમ લાકડું અને તુંબડાની મદદથી તરી શકાય છે, પણ તેમાં બુડવાનો ભય ખરોજ. પરંતુ ભક્તિમાં તે નથી. ભક્તિ કરવામાં કામ ક્રોધ વગેરે ગ્રાહનો ભય નથી. લાકડાં કે તુંબડાથી તરતી વખતે મગર પકડી લે તેમ બીજાં સાધન કરવામાં નડે, કામ ક્રોધ વગેરે ભક્તિમાં ન નડે.

આપારે અંદરોઅંદર ઘણા કુસંપો છે કે આજે આપણી સમક્ષ અંત્યજસ્પર્શાસ્પર્શનો પ્રશ્ન ઉભો થયો છે. શાસ્ત્રોમાં તપાસતાં કોઈ સ્થળે આવો ઉલ્લેખ નથી કે અંત્યજનો સ્પર્શ કરવો, એ અંત્યજો અસ્પૃશ્ય છે ને તે અસ્પૃશ્ય જ રહેવાના.

ભગવાન શ્રીગીતાજીમાં કહે છે કે—જે મેં ચાર વર્ણોને ઉત્પન્ન કર્યા છે તે દરેક પોતપોતાના ધર્મ પ્રમાણે ચાલવું, ને તેથીજ તેમનું કલ્યાણ છે. એમ અનેક ગીતાવાક્યોથી સિદ્ધ થાય છે, જાતિની ઉત્પત્તિ કર્મથી છે કે જાતિથી ? તે તપાસતાં જન્મથી જાતિ છે એમ સાબીત થાય છે. મનુષ્યોએ પોતપોતાનાં કાર્યો કરવાં જોઇએ. અલ્પબુદ્ધિનો માણસ શાસ્ત્રવાક્યોનો નિષેધ કરે તો તે દોષિત થાય છે. ધર્મશાસ્ત્રો ને પુરાણો અંત્યજોને અસ્પૃશ્યો ગણે છે.

અત્યારે જે અંત્યજોદ્ધારનું આંદોલન ચાલી રહ્યું છે તે અપ્રમાણ છે. વળી અંત્યજોના મંદિરપ્રવેશનો પ્રશ્ન પણ ચાલી રહ્યો છે, પણ તેજ અંત્યજો મંદિરપ્રવેશ માટે આગ્રહ કરતાજ નથી; ને તેઓ ખુશી નથી. તેમને તો ફક્ત રોટલાનીજ જરૂર છે. માટે ધર્મને આગળ મૂકી સમજીને કાર્ય કરીશું તો સર્વ પ્રાપ્ત થશે. શાસ્ત્રો—શ્રુતિઓ કહે છે કે આત્મા જાણવા જેવો ને અનુભવવા જેવો છે આપણું કર્તવ્ય ધર્મપરાયણ બનીને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાંજ સમાયલું

છે, તેથી આપણું અવશ્ય કલ્યાણ છે. દયારામભાઇના કથન પ્રમાણે, જો શ્રીકૃષ્ણના પ્રેમરસનું પાન કરાવે તો તેથી જીવનું કલ્યાણજ થાય છે.

અંત્યજોનો મંદિરપ્રવેશ અગર સ્પર્શ મારેનો પ્રશ્નજ અયોગ્ય છે, પણ તેને ભક્તિનો અધિકાર છે. દરેક વર્ણને ભક્તિનો અધિકાર છે. આ પુષ્ટિમાર્ગ પવિત્ર છે ને તેમાં દરેકને વર્ણવેશી ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે તથા જેને શાસ્ત્રોએ અસ્પૃશ્ય ગણ્યા છે તેને અંત્યજોને પણ ભક્તિનો અધિકાર છે. અંત્યજોને મંદિરપ્રવેશનો અધિકાર હોઈ ન શકે. જેમ રસખાન, અલીખાન પઠાણ, શ્રીમતીતાજ, મોહનાભંગી વગેરે અસ્પૃશ્ય ભક્તો શ્રીકૃષ્ણની અનન્ય ભક્તિથી તરી ગયા છે. તેમને પ્રભુની ભક્તિથી, અનુગ્રહથી સાનુભાવ હતો. ભક્તિના પ્રભાવથી સેવા કરતા પણ તેમને બ્રહ્મસંબંધ આત્મનિવેદન મંત્ર અપાયો જ નથી. લૌકિક જીવનો પૂર્ણ પુરુષોત્તમ સાથે સંબંધ થવો તે બ્રહ્મસંબંધ છે, ને તે થાય ત્યારે તેના અનેક પ્રકારનાં પાપો દૂર થઈ શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તે પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરે છે તે વખતે હાથમાં રહેલાં તુલસીદલો શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં અર્પણ કરી કિંકર થાય છે તેથી જે વર્ણો મંદિરપ્રવેશ કરી શકે છે તેનેજ આત્મનિવેદન મળી શકે છે, તે સિવાય કોઇ પણ અસ્પૃશ્ય વર્ણને અધિકાર નથી. ખોટા આંદોલનોથી કંઇ પણ વળવાનું નથી, પણ એટલુંજ કહીશ કે અસ્પૃશ્ય હિંદુઓ છે તે તુલસી ગાયોને પૂજે છે, તેને માટે કુવા નિશાળો મંદિરો વગેરે સાધનોની વ્યવસ્થા ઉચ્ચ વર્ણના હિંદુ લોકોએ કરી આપવી જોઇએ, અને તેમના ઉપર હમેશાં ભ્રાતૃભાવથી વર્તવું જોઇએ, ને તેના ઉદ્ધારને અર્થે પ્રયાસ કરવો જોઇએ.

વળી અંત્યજને શરણદીક્ષા શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ આપવામાં આવે છે ને તે અષ્ટાક્ષરમંત્ર સર્વ મંત્રોનો રાજા છે શ્રેષ્ઠ છે, અન્ય મંત્રોના ઉચ્ચારમાં જો દોષ થાય તો ફળ મળતું નથી, ને કદાચ ઉચ્ચાર શુદ્ધ હોય તો મળે છે તો તે સ્વર્ગને પામી તે ભોગવતાં પૃથ્વી ઉપર નીચે અવતરવું પડે છે, શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમના ઉચ્ચારથી કદાચ તેમાં દોષ થાય તો પણ ફળ જીવોને નિજપદનું મળે છે. છતાં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમનો ઉચ્ચાર ઊર્ધ્વપુંડ્રતિલક, ને તુલસીની માળા કંઠમાં હોય ને અષ્ટાક્ષરનો ઉચ્ચાર થાય તો અનેક પ્રકારનાં દુઃખો હાજર હોય તો પણ તેનો તત્કાળ નાશ થાય છે ને પૂર્ણ શાન્તિ થાય છે, ને મોક્ષ થાય છે. ભક્તોની જેવી ભાવના તેવા સ્વરૂપે શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શન થાય છે ને કલ્યાણ થાય છેજ. (તાળીઓ).

ભગવાન આજ્ઞા કરે છે કે મારાં નામો અનેક પ્રકારનાં છે તેમાં શ્રીકૃષ્ણનું નામ શ્રેષ્ઠ છે, ને તે નામ વડે સમગ્ર પાપોનો નાશ થાય છે. બ્રહ્મપુરાણમાં શ્રીકૃષ્ણનું વાક્ય છે જે મારૂં બે અક્ષરનું શ્રીકૃષ્ણ નામ છે, તે તું ગ્રહણ કર ને તેના ઉચ્ચારથી સર્વથા મનુષ્યજન્મનું કલ્યાણ સધાય છે. જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમના ઉચ્ચારથી પવિત્ર થયું નથી, જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણની લલિત કથાના રસાસ્વાદમાં મગ્ન નથી અથવા શ્રીબાલકૃષ્ણની ભક્તિનું સ્થાન નથી તેનું જીવન નિષ્ફળ છે. શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તમામ ઇંદ્રિયોનો રોધ કરી ભક્તિમાં લગાડી ચિત્ત સર્વદા શ્રીકૃષ્ણમાં ચોટાડી રાખવુંજ જોઇએ તેથીજ જીવનું સર્વથા કલ્યાણ છે. એ સિવાય બીજો માર્ગ નથી. શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીએ ભક્તિમાર્ગ નવો પ્રકટાવ્યો નથી પણ શાસ્ત્રોમાં જે ગુપ્ત હતો તે દૈવી જીવોના ઉદ્ધારને અર્થેજ પ્રકટ કર્યો છે. જ્યારે જ્યારે ભારતમાં અધર્મ થાય છે ને સાધુ પુરુષો ગાયો વગેરે દુઃખથી પીડાય છે, ત્યારે ત્યારે તે સાધુપુરુષોનું રક્ષણ કરવા ધર્મ સ્થાપવા હું યુગે યુગે અવતાર ધારણ કરૂં છું. તેજ પ્રમાણે શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ ચંપારણ્યમાં થયો હતો. જો તેઓશ્રીનું આ ભૂતળ ઉપર પ્રાકટ્ય ન હોત તો આ ભારતવર્ષમાં ધર્મનું તથા હિંદુઓનું નામનિશાન નહોત.

હવે શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં જીવને બ્રહ્મસંબંધ થઈ આત્મસમર્પણ કર્યાં પછીને બ્રહ્મનેઃ બ્રહ્મસંબંધનો મહામંત્રનો ઉચ્ચાર તથા ભાવાર્થ જીવને સમજાવવામાં આવેલો તે હૃદયારૂઢ રાખી મનન કરવાથીજ સર્વથા કલ્યાણ છે, અને બ્રહ્મસંબંધ થવાથી પાંચ પ્રકારના દોષ જતા રહે છે. ત્યાર બાદ અસમર્પિત વસ્તુનો ત્યાગ અનન્યભાવ બ્રહ્મસંબંધ ને આત્મસમર્પણ વગેરે બાબતો જો સતત સ્મરણમાં રાખીશું તો અવશ્ય આપણું કલ્યાણ છે, એથી વિરુદ્ધ વર્તનારને માટે તો સર્વથા અકલ્યાણ છે.

અત્યારે અંગ્રેજી શિક્ષણથી નાસ્તિકવાદ પ્રસરી ગયો છે તે માટે બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવાની ખાસ જરૂર છે, અને માબાપોએ ધાર્મિક શિક્ષણની કેળવણી પ્રાપ્ત કરી ઘરની અંદર બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવું જોઈએ. જેથી ભવિષ્યમાં થનારી પ્રજાને તે બરોબર કેળવણી પ્રાપ્ત થઇ ધર્મભાવના જાગૃત રહે અને તે ભુંસાઈ ન જાય માટે ધાર્મિક પાઠશાળા હોવી જોઈએ. જેમ હાલમાં અમદાવાદ, સુરત, દાહોદ વગેરે સ્થળે છે. વળી ધાર્મિક પરીક્ષાઓની પણ પ્રથા છે તે ચાલુ રહેવી જોઈએ, અને તેનો લાભ બહોળા પ્રમાણમાં લેવો જોઈએ, ને તે સ્થળે સ્થળે થવાની ખાસ જરૂર છે. વાસ્તવિક સભાઓ કાઢવા પૂર્ણ જ્ઞાનની જરૂર છે. નનાના પ્રકારમાં ખટીઓનો સહકાર ટકતો નથી. એથી કેટલાક સભાઓ દૂર થશે ને સાંપ્રદાયિક ધાર્મિક જીવનથી બધા કૃતાર્થતાને પંથે વળશે. અમે ગોસ્વામીઓ શાસ્ત્રીઓ રોકીને ધાર્મિક શિક્ષણ અપાવીએ પણ તેનું ફળ જોઈએ તેવું પ્રાપ્ત થતું નથી, પણ જો અમો ગોસ્વામીઓ તેનું કાર્ય કરી ઉપદેશ આપી કર્તવ્યપરાયણ રહ્યા હોઈએ તો અત્યારની જે આ સંપ્રદાયની સ્થિતિ છે તે દૃષ્ટિગોચર ન થાત, પણ ગયેલી વાતનો શોક વ્યર્થ છે, તેથી ગઈ વસ્તુનો શોક ન કરતાં હવે ધર્મભાવનાથી જાગૃત રહી ભ્રાતૃભાવના એક સૂત્રમાં પરોવાઈ જઈ અજ્ઞાન દૂર કરવા સદ્વિચારો પોષવા શ્રીકૃષ્ણભક્તિનો પ્રચાર કરવા તૈયાર રહેવાની ખાસ જરૂર છે. દયારામ ભાઇ ભક્તિપોષણમાં કહે છે કેઃ—

પ્રેમ આસક્તિ વ્યસન એ ત્રણ સ્નેહનાં લહીએ,
તે ઉપર ચોથી તન્મયતા તે થકી કાંઈ ના કહીયે;
કહીએ પ્રેમનું લક્ષણ એહ જ્યારે મળે ત્યારે તેનો તે સ્નેહ,
વિયોગ થાય ત્યારે તપે તન ત્યાંહાંનું ત્યાંહાં વળગ્યું રહે મન.

પ્રેમ આસક્તિ વ્યસન ને તન્મયતા એ સ્નેહનાં રૂપો છે. પ્રેમનું લક્ષણ એ છે કે પ્રેમ થતાં વળી જ્યારે ને વસ્તુ મળે ત્યારે ત્યારે સ્નેહ ચાલુ રહી વૃદ્ધિ પામે છે ને ઉભરાય છે. ને જો વિયોગ થાય તો શરીર તપે છે, દુઃખી થાય છે, ને તેની પ્રાપ્તિ માટે ઝંખના થયા કરે છે. કોઈ રુચતું નથી. શરીરના ધર્મો પણ સચવાતા થઈ શકતા નથી. તે વસ્તુ મળતાંજ આનંદ પ્રકટે છે ને અહર્નિશ ચિત્ત તેમાં ને તેમાંજ ભમણ કરે છે.

એકવાર આખા દિવસમાં મળ્યા વિના નવ રહેવાય,
જો ના મળે તો વિકળ થાય આસક્તિ એ તો કહેવાય,
કહેવાય વ્યસન આવું જ્યારે થાય સ્વામી સ્વામી હૃદયો વિષય,
તન્મયતા તે મૃત્યુસમાન આ ચારે આવે આપે હરિ દાન.

એકવાર આખા દિવસમાં મળ્યા વિના ચેન પડતું નથી તે જો ન મળાય તો વ્યાકુળ થાય. પીડા થાય એ આસક્તિનું સ્વરૂપ છે ને હસતાં રમતાં હૃદય વિષય ત્યારે વ્યસનદશા પ્રાપ્ત થાય છે ને તે ભાવના ચાલુ રહેતાં મૃત્યુસમાન જેવી સ્થિતિમાં દેહના ધર્મો વગેરે વિસરી જાય

છે. ચિત્ત શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં ચોંટી જાય છે અન્ય દિશામાં તો જાયજ નહિ. એ પ્રમાણે તલ્લીનતા પ્રાપ્ત થતાં તેની સ્થિતિ ચાલુ રહે છે ને તે શ્રીહરિ દાન આપે તોજ જીવમાં ઉતરે છે.

જાતિ તો જુઓ આહીરની તેમાં અબળા અધમ અવતાર,
એ વેદાદિ નહોતી ભણી ન્હોતો ઉત્તમ કર્મ અધિકાર,
અધિકાર વણ એક પ્રતાપ કર્યા આધીન શ્રીકૃષ્ણજી આપ,
તે ગોપીની પદરજ વંદે હરિ પ્રેમલક્ષણા તે સહુને શીશ,

શ્રીગોપીજનોની જાત આહીરની હતી અને વળી તેઓ અબળાઓ હતી. આહીરનો અધમ તરીકેનો અવતાર ગણે છે એ અબળાઓ વેદ વિગેરે કંઇ ભણી ન્હોતી. ઉત્તમ કર્મનો અધિકાર પણ નહોતો છતાં શ્રીકૃષ્ણજીને વશ કર્યા તે પ્રેમલક્ષણા ભક્તિનો પ્રતાપ છે ને તે પ્રેમલક્ષણા સહુથી શ્રેષ્ઠ છે તે ગોપીજનોની ચરણની રજને પણ શ્રીહરિ વંદે છે જેથી શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ છે તેને પ્રેમપૂર્વક સેવો.

ધ્રુવજીને ક્યાં વય હતું? સુદામાને હતું ક્યાં ધન?
કુબજાને હતું રૂપ ક્યાંહાં? ઉગ્રેસેન શું પુરુષાતંન?
પુરુષાતન નહોતું ઉગ્રરાય ગજને ક્યહાં હતી વિદ્યાય,
પારધિમાં ક્યહાંથી શુભ આચરણ કેવળ ભક્તિ પામ્યો ગિરિધરણ.

શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાં વય-ધન-રૂપ-પુરુષાતન વિદ્યા શુભ આચરણ જોવાતું નથી. પ્રભુ કૃપાથી સર્વે ક્રમે ક્રમે પ્રાપ્ત થાય છે. ભક્તિ જીવમાં પ્રવેશી વૃદ્ધિ પામી વિશાળતાને પામી જીવન પ્રભુમય બની જાય છે. માટે હમેશાં આગ્રહપૂર્વક ભક્તિને સેવો. જુઓ કે ધ્રુવજીની વય નાનીજ હતી છતાં શ્રીહરિની આરાધના કરી પ્રભુ પ્રસન્ન કર્યા. વળી સુદામાને ક્યાં ધન હતું? નિર્ધનજ હતા છતાં કૃષ્ણ ઉપર કેટલો બધો પ્રેમભાવ હતો કે તેમના મુષ્ટિ તાંદુલ શ્રીકૃષ્ણએ આરોગી તેમને અઢળક ધન આપી દીધું. છતાં જીવન પર્યંત સુદામાએ શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરી પણ એકક્ષણ શ્રીકૃષ્ણને વિસાર્યા નથી. જો રૂપથીજ ભક્તિ થતી હોય તો કુબજાને ક્યહાં રૂપ હતું? છતાં તેણે પ્રેમથી શ્રીકૃષ્ણ આરાધના કરી જેથી શ્રીકૃષ્ણ તેને આધીન થયા. જો પુરુષાતનથી પ્રભુ પ્રસન્ન થતા હોય તો ઉગ્રસેનને ગાદી ઉપરથી ઉઠાડી મૂકી કંસે રાજસત્તા હાથમાં લીધી. ઉગ્રસેનને કેદ કર્યાં બાદ કંસે ઘણોજ અધર્મ કરવા માંડ્યો ઉગ્રસેન શ્રીકૃષ્ણભક્તિ વિસરતા નહીં જેથી શ્રીકૃષ્ણજીએ ઉગ્રસેન ભક્તની આતુર ભક્તિથી વેગે આવીને કંસને મારીને રાજ્યાભિષેક ઉગ્રસેનને કર્યો એ શું ભક્તિનો પ્રભાવ ઓછો છે? વળી જુઓ વિદ્યા પ્રાપ્ત કર્યાથી શ્રીહરિ દર્શન આપતા હોય તો જુઓ કે હાથીમાં વિદ્યા ક્યાં હતી? છતાં મગરથી ગ્રહેલા હાથીએ દુઃખી થતાં હરિસ્મરણ ચાલુ રાખી અંતિમ સ્થિતિમાં કમળ શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કર્યું તે શુદ્ધ ભાવનું હોવાથી શ્રીકૃષ્ણ ગરુડ ઉપર સ્વારી કરી. ત્યાં પધારી તેનો ઉદ્ધાર કર્યો. વળી આચરણથી જો પ્રભુ પ્રાપ્તિ થતી હોય તો પારધી વાલ્મીકિ વગેરેમાં કંઇ શુભ આચરણ ન હોતું, છતાં પ્રભુએ કૃપા કરીને ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ અભયપદ આપ્યું. પ્રભુ ભાવના ભુખ્યા છે. શ્રીકૃષ્ણ ભક્તિથીજ પ્રસન્ન થાય છે પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધાર ભક્તિથીજ છે. આપણે જીવન સાત્વિક રીતે ગાળીશું તો અવશ્ય આપણો ઉદ્ધાર થશેજ. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવા અને તેની પરતંત્રતા નષ્ટ કરવાને જો આપણે આપણા આદર્શ આદેશો પાળીશું તો શ્રીકૃષ્ણ અવશ્ય આપણને વિજય અપાવશે તેમાં સંદેહ નથી. પ્રભુની ભક્તિ તો પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધારી શકે છે. પ્રભુ સ્વયં આજ્ઞા કરે છે કે મારામાં નિષ્ઠાપૂર્વકની ભક્તિ એજ અંત્યજોને ઉદ્ધારે છે. મસ્તુ

લિ. ફુલચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, (મંત્રી-શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય, પાદરા.)

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

(લેખકઃ—શ્રીયુત વિનોદરાય જેસુખરાય, બી. એ. એલ્‌એલ્. બી. અમરેલી.)

(અનુસંધાન પૃષ્ઠ ૬૦ થી.)

રસિક બિન કો રસપાન કરે ?
નન્દનન્દન વૃષભાનનન્દિની લીલાઝરન ઝરે—રસિકબિન ॥૧॥
છાય રહ્યો છબીસોં જગમહિંયાં, પુષ્ટિ પ્રવાહ ધરે,
પ્રેમીજન પીવત નિસવાસર કર્મઠ કછુ ભરે—રસિકબિન ॥૨॥
શ્રીવલ્લભ કરુણા સત્સંગત, ઉભય ઉપાય ખરે,
શ્રીકૃષ્ણદાસ અન્ય સાધનતેં, કાજ કછુ ન સરે—રસિકબિન ॥૩॥

ગયા અંકના પૃષ્ઠ ૫૯ ના અંત ભાગમાં "ભક્તિયોગ એવ પ્રશસ્યતે" એટલું સંસ્કૃત છાપ્યા પછી અર્થ તરીકે જે વાક્યો પૃષ્ઠ ૬૦ ઉપર એકથી દસ લીટી સુધી છાપેલાં છે તે વાક્યો "મારા પોતાના વિચારો" હોય તેવો ભાસ થાય છે પણ તેમ સમજવાનું નથી. મૂળમાંજ "ભક્તિયોગો નિરુપદ્રવ" થી શરૂ કરી "ભક્તવત્સલઃ સ્વયમેવ સર્વેભ્યો" વગેરે અવાન્તર લાભો બતાવીને અંતે ભગવતી શ્રુતિ આજ્ઞા કરે છે કે "તસ્માત્ત્વમપિ સર્વોપાયાન્ પરિત્યજ્ય ભક્તિમાશ્રય ભક્તિનિષ્ઠો ભવ ભક્ત્યા સર્વસિદ્ધયઃ સિધ્યન્તિ ભક્ત્યાઽસાધ્યં ન કિંચિદસ્તિ" એ પ્રમાણે શ્રુતિ અનુસારે શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાં પણ શ્રીમુખની આજ્ઞા છે કેઃ—

૧ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज " २ न मे भक्तः प्रणश्यति ३ भक्त्या त्वनन्यया शक्यः ४ नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ५ मन्मना भव मद्भक्तो" ઇત્યાદિ અને આપણા સંપ્રદાયમાં તો શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાંનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો એટલે કે "શ્રીકૃષ્ણવાક્યાનિ" સાક્ષાત્ વેદવાણીજ છે. કારણ કે શ્રુતિજ બૃહદારણ્યકમાં આજ્ઞા કરે છે કે "અસ્ય મહતો ભૂતસ્ય નિઃશ્વસિતં ઋગ્વેદો યજુર્વેદઃ સામવેદોઽથર્વાંગિરસઃ ઇત્યાદિ; તો પછી શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાંનાં શ્રીકૃષ્ણવાક્યો બોલનાર "અસ્મિ વેદે લોકે ચ પ્રથિતઃ પુરુષોત્તમઃ" "વેદાન્તકૃત્ વેદવિદેવ ચાહં" છે. જેથી તેમનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો જે વેદવાણી જાણવામાંજ અને ગણવામાંજ આવે છે અને આવવાંજ જોઇએ એમાં શી નવાઈ ? તે શ્રીમુખની વાણીમાં:—

૧ શ્રવણભક્તિ માટે " उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन અ. ૪ શ્લોક ૩૪માં આજ્ઞા કરે છે.

૨ કીર્તન ભક્તિ માટે અધ્યાય ૯ શ્લોક ૧૪ सततं કીર્તયન્તો માં યતન્તશ્ચ દૃઢવ્રતાઃ થી.

૩ સ્મરણભક્તિમાં અનન્યચેતાઃ સતતં યો માં સ્મરતિ નિત્યશઃ અ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં તથા યજ્ઞાનાં जपयज्ञोऽस्मि અ. ૧ શ્લોક ૫ માં આજ્ઞા કરેલી છે.

૪ પાદસેવન માટે ઉપર લખેલા અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં ઉપદેશ કરનારની સેવા કરવાની આજ્ઞા છે ત્યારે પ્રભુની તો મન્મના ભવ મદ્ભક્તો બનવાની આજ્ઞામાં સમાવેશ હોયજ એમાં શી નવાઇ ?

૫ અર્ચનભક્તિ એજ મન્મનાભવવાળા અ. ૯ ના શ્લોક ૩૪ માં મદ્યાજી બનવા આજ્ઞા છે અને ઉપર કહેલા અ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં દૃઢ વ્રત રાખીને યત્ન કરવામાં સમાવેશ છે.

૬ છઠ્ઠી વન્દનભક્તિ તો અ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં નમસ્યન્તો ચ માં ભક્ત્યા અ. ૯ શ્લોક ૩૪ માં નમસ્કુરુ અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં પ્રણિપાતેન એમ આજ્ઞા કરી તે મુજબ અ. ૧૧ ના શ્લોક ૫, ૩૯ અને ૪૦ અર્જુને પ્રણામો કર્યા પણ છે.

૭ દાસ્યભક્તિ તો "शाधि मां त्वां प्रपन्नं" એમ અર્જુને પહેલી દીનતા બતાવીને છેવટે અ. ૧૮ ના શ્લોક ૭૩ માં "करिष्ये वचनं तव" એમ આજ્ઞાકારી બનવાનું વચન પણ આપ્યું છે અને પછી તે વચન પાળ્યું પણ છે.

૮ સખ્યભક્તિ તો અર્જુનની પહેલેથીજ હતી માટે અ. ૧૧ શ્લોક ૪૧ માં સખેતિ મત્વા "તથા સખેવ સખ્યુઃ પ્રિયઃ પ્રિયાયાર્હસિ દેવ સોઢું" એવી વિનતિ કરેલી અને નવમી આત્મ નિવેદન ભક્તિની આજ્ઞા તો અ. ૩ શ્લોક ૩૦ માં मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्मचेतसा અ. ૪ શ્લોક ૨૪ માં જે બ્રહ્માર્પણંબ્રહ્મહવિઃ કહ્યું તેની સ્પષ્ટતા અ. ૯ શ્લો. ૨૭ માં યત્કરોષિ યદશ્નાસિ વિગેરે કુરુષ્વ મદર્પણં" એમ આજ્ઞામાં કરી છેવટે અ. ૧૮ શ્લોક ૬૬ માં તો મહાવાક્ય "સર્વધર્માન્પરિત્યજ્ય મામેકં શરણં વ્રજ" ફરમાવીને અવધિ કરી છે પછી તેથી વધારે અર્જુન પોતે પુષ્ટિમિશ્ર ભક્ત હોવાથી અને શુદ્ધ પુષ્ટિનો અધિકાર ધરાવતો નહીં હોવાથી તે સ્થળે આજ્ઞા કરવા જરૂર નહોતી. જ્યાં જરૂર હતી ત્યાં "ન પારયેઽહંનિરવદ્યસંયુજાં" ઇત્યાદિથી કહેલી છે તે આગળ આવશે. કારણકે તે પહેલાં તે કોટિ આપણે સમજવાની પ્રથમ જરૂર છે અને યોગ્યતા પણ પ્રાપ્ત કરવી જોઇએ. "તાનાવિદન્નત્મ્યનુષંગબદ્ધધિયઃ સ્વમાત્માનમદસ્તથેદં" એકોહિ તથા "धामीयुरंजसा" એ કોટિએ પહોંચવું મુશ્કેલ છે તે સમજવાનું હવે પછીને માટે રાખીને હાલ તો બાલભાવના પદથી સમાપ્તિ કરૂં છું.

જસોમતિ અપને લાલકો શૃંગાર બનાવે,
બદન પોંછી દે બિંદુકા નથની પહેંનાવે. ॥૧॥
કરનફૂલ કટિકિંકિની ઉરહાર ધરાવે,
કાજર નૈંનન આંજીકે મિસ મટુકા લાવે. ॥૨॥
અંગદ કંકન મુદ્રિકા નૂપુર છબિ છાવે,
કુલહી ઝગુલી જરકસી હૈંસિ મોદ બઢાવે. ॥૩॥
કંઠહાંસુરી બાંસુરી કરલકુટી ગહાવે,
દર્પન હાથ દિખાયકેં કછુ હસેહસાવે. ॥૪॥
કબહૂંક કંઠ લગાયકેં પયપાન કરાવે,
કબહૂંક નવનવનીત લે રુચિ રુચિ ખવાવે. ॥૫॥
જો સુખ વિલસત જસોમતિ બ્રહ્માદિ ન પાવે,
જન ત્રીકમ, અપુને કહા બડભાગ્ય સિરાવે;
જસોમતિ અપુને લાલકો શૃંગાર બનાવે. ॥૬॥

આ પદોના રચનાર ત્રિકમદાસ જબરા પુષ્ટિભક્ત હતા અને પુષ્ટિકવિ દયારામજી જે ગુરુના પ્રતાપથી નામાંકિત વૈષ્ણવ થયા તે પ્રદીપકાર ઇચ્છારામ ભટ્ટજીના મિત્ર હતા તેનાં પદની વાનગી પ્રસંગોપાત્ત લેખમાં સામેલ થઇને આવે તો જેમ પ્રાચીન કીર્તન છાપો છો તેમ છાપવામાં અડચણ નહીં. તેમની પુષ્ટિભક્તિની વાનગીઓ હું મોકલાવ્યા કરીશ. તેમની દૃઢ પુષ્ટિભક્તિથી તો તેમના પૌત્રના પૌત્ર જેમને આપ તથા ઘણાખરા કાઠીઆવાડના પુષ્ટિવૈષ્ણવો ઓળખો છો તે મારા પિતાશ્રી આજે તાદૃશી જેવા હયાત છે ત્યાં સુધી અવિચ્છિન્ન પરંપરા ચાલી આવેલી છે.

भक्ति के उपासना?

(લેખકઃ-રા. રા. જેઠાલાલ મોહનલાલ દવે, B. A.)

श्रमलकमलदल लोचन भवमोचन ए। त्रिभुवनभवननिधान जयजय देव हरे।
अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए। श्रीमुखचन्द्रचकोर जयजय देव हरे॥

અનાદિ કાળથી સારા જગતની ભાષાઓમાં સનાતન તત્ત્વની ઉપાસનાનું માહાત્મ્ય દૈવી શ્લોકો મુક્ત કંઠે ગાયું છે. અંગ્રેજ રાજકવિ ટેનિસન કહે છે "More things are wrought by prayer than this world dreams of." ઉપાસનાથી આપણે ધારીયે છીએ તેથી વધારે મેળવી શકીયે છીયે. ખરેખર પ્રાર્થનાનું બળ અદ્ભુત છે.

આર્યોનાં ધર્મરત્નોરૂપી વેદ ઉપનિષદ અને પુરાણોમાં ઉપાસનાનાં તત્ત્વો દૃષ્ટિગોચર થાય છે. અતિપ્રાચીન ઋગ્વેદનાં વરુણદેવની ઋચાઓમાં નિષ્કપટી આર્યોનું ભક્તિભીનું હૃદય પ્રતિબિંબિત છે.

"All religions originate in Fear and culminate in Love." તત્ત્વચિંતક કાર્લાઇલ તેના પીઢ પુસ્તક "Sartor Resartus" માં લખે છે કેઃ-"Wonder is the basis of worship." "ચમત્કાર સિવાય નમસ્કાર ન હોય."

કેવળ કુદરતના દશ્યોમાં વિચરતા, પ્રગતિ કરતા આર્યોએ તારકિત નભોમંડળ, વિજળીના ચમકારા ને મેઘગર્જના સાંભળી વિસ્મય પામી પોતાનું ભાવિક હૃદય ઋચાઓમાં પ્રદર્શિત કર્યું. કેટલીક ઋચાઓ, પવિત્ર લાગણીઓનો અદમ્ય ઉભરો દર્શાવતી હોવાથી સાહિત્યમાં રત્ન જેવી અમૂલ્ય છે. તેમાં કવિતા અને ધર્મનો સુંદર સમન્વય છે.

यो मे राजन्युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह।
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान्॥

ઋ. મં. ૨. સૂ. ૨૮/૧૦.

અર્થઃ—ઓ વરુણ દેવ! કોઈ મારો ભાંડુ અથવા મિત્ર જે મારી સમક્ષ સ્વપ્નમાં જોયેલ દૃશ્યો વર્ણવે અગર છેતરવા પ્રયત્ન કરનાર ચોર તથા વરુઓથી મને બચાવ. અમારૂં રક્ષણ કર.

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरामन्युर्विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता॥

ઋ. મં. ૭. સૂ. ૮૬/૬.

અર્થઃ—ઓ વરુણ દેવ, મારો કંઈ પોતાનો એવો આશય ન હતો. એ, સૌ દારૂ, ક્રોધ, પાસાની રમત તથા અવિવેકનુંજ પરિણામ હતું. ઓ દેવ, મોટા પુરુષોના વાકમાં નાનાં માણસો સદાય હોય છે. મારાં ખોટાં કૃત્યો અનેક રાત્રિઓ વીતી ગઇ તો પણ ભૂલાતાં નથી.

આવી રીતે મંત્રોમાં ક્ષમા યાચતું હૃદય માલુમ પડે છે. બધા વેદોનો સાર શુદ્ધ અદ્વૈતમાં પરિણમે છે. મુખ્ય ઉપનિષદોનો સાર ભગવાન બાદરાયણે વેદાન્તસૂત્રોમાં ગ્રથિત કર્યો છે. તેના પર ઉપવર્ષ, શ્રીશંકર, શ્રીરામાનુજ, શ્રીવલ્લભ ઇત્યાદિ આચાર્યોએ ભાષ્ય લખ્યાં છે.

ઉપનિષદો, વેદાંતસૂત્રો તથા ભગવદ્ગીતા મળી પ્રસ્થાનત્રયી કહેવાય છે. આ સર્વમાન્ય પ્રમાણભૂત પ્રસ્થાનત્રયી ઉપરથી પણ ઉપાસના એ ઇશ્વરાનુભવનું એક સરળ અંગ છે એમ સાબીત થશે.

ता वां वास्तून्युष्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः। ऋग्वेद.

પૂર્ણાવતાર શ્રીબાલકૃષ્ણચંદ્રની દૈવી લીલાનું સૂચન આ ઋચામાં ગર્ભિત રીતે થયતું છે.

પ્રેમલક્ષણાભક્તિનો ફલાનુભવ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। (તૈ સ. ૧-૩-૬૧) માં બતાવ્યો છે.

"सोऽश्नुते सर्वान्कामान्सह ब्रह्मणा विपश्चिता।" શ્રુતિ ઉપરથી જીવ ઇશ્વરાનુગ્રહથી તેના સાન્નિધ્યમાં રહી સર્વ પ્રકારનો આનંદ ભોગવે છે એમ જણાશે.

પટ્સ્તોત્રમાં પણ શંકરાચાર્યે ગાયું છે:—

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाऽहं न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो न तारंगः ॥

જીવ એ પરમાત્મા પરબ્રહ્મનો અંશ છે. "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।" એ ભગવદ્વાક્ય છે. "अधिकं तु भेदनिर्देशात् । ઇત્યાદિ વેદાન્ત સૂત્રો પરથી તથા बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य तु। भागो जीवः स विज्ञेयः॥ શ્વે૦ ૩-૫-૮ ના મંત્ર ઉપરથી જીવનું અણુત્વ અને પરબ્રહ્મની મહત્તા સ્પષ્ટ છે. "सर्वोपेता च तद्दर्शनात्" સૂત્ર પરથી પરબ્રહ્મ સર્વશક્તિયુક્ત છે એ પણ નિર્વિવાદ છે.

માતા યશોદાજી શ્રીબાલકૃષ્ણને અનેક દોરીયોથી બાંધી શક્યાં નહતાં જે ચિદાનંદે દુઃખાર્ત દ્રૌપદીનાં ચીર ખેંચતાં ખેંચતાં દુષ્ટ દુઃશાસનની ભીષણ ભુજાઓ થાકી ગઇ એટલાં ચીર સતત પૂર્યાંજ કર્યાં. અનેક વિશુદ્ધ ભક્તોની ભીડ ભાંગી, જીવાત્મા ભક્ત અર્જુને જેને-"अनंतवीर्यामित विक्रमस्त्वं" કહી ઉપાસના કરે છે એવા કર્તુમકર્તુમન્યથાકર્તું શક્ય ભગવાનને તો નેતિ નેતિ કહીનેજ વારી જવાય તેમ છે.

પરબ્રહ્મ પરમાત્મા અખિલાધાર છે. સર્વકર્તા અને શુદ્ધબુદ્ધમુક્ત સ્વભાવવાળા હોઇ વિરુદ્ધ ધર્માશ્રય છે. "आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः।" એવી અને અન્ય શ્રુતિઓ વડે પરબ્રહ્મનું વિરુદ્ધધર્માશ્રયત્વ ફલિત થાય છે. પરમાત્માનાં જન્મ અને કર્મ દિવ્ય અને અદ્ભુત છે.

જાણવું એટલે ભજવું. પ્રેમથી વળગવું. જો તમે ભજો નહિ, પ્રેમથી વળગો નહિ તો તમારામાં જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું નથી એમ સમજવું. પરમાત્મા એ પ્રેમી ભક્તો માટે પ્રેમનું આલંબન છે. ભગવાન્ પ્રેમ વડેજ વશ થાય છે. તે પ્રેમાનુભવ તો મીરાં, દયારામ કે નરસિંહ જેવાં વિશુદ્ધ અને નિઃસીમ ભક્તિભાવવાળાં હૃદયોજ જાણી શકે.

શ્રદ્ધાવિત ભક્તે સારી પેઠે સમજવું જોઇએ કે બ્રહ્માતિરિક્ત કંઇ છેજ નહિ. જીવ અને બ્રહ્મ વચ્ચે આધારાધેય સંબંધ છે. જીવ ધ્યાતા, આશ્રિત છે. બ્રહ્મ એ ધ્યેય, આધાર અને અંતર્યામી છે.

દયાઘન પરમાત્મા ભક્તની વિશુદ્ધ ઉપાસનાથી પ્રસન્ન થાય છે. પ્રભુકૃપા થઇ એટલે કંઈ પ્રાપ્તવ્ય રહેતુંજ નથી. ભક્તનાં પાપ બળી જાય છે. તેનું હૃદય વિશુદ્ધ બને છે. "धर्मेण पापमपनुदति" એવી મહાનારાયણોપનિષદમાં શ્રુતિ છે. કાલાન્તરે તૈલધારાવત્ સતત પરાનુરક્તિથી મનોવૃત્તિ સ્થિર થાય છે; અન્તઃકરણ અતિવિશુદ્ધ બને છે અને સર્વત્ર બ્રહ્મદૃષ્ટિ થાય છે. આવા ભક્તો તો સર્વપ્રાણી માત્રમાં હરિદર્શન અનુભવે છે. તેને તો "જ્યાં જ્યાં નઝર મારી ઠરે ત્યાં ત્યાં નિશાની આપની." એમ તદાકાર વૃત્તિ થઇ ઉપમન્યુસ્તોત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે विरहेऽपि विभो प्रियामहं परिपश्यामि भवन्मयं जगत्।" અનુભવે છે. આવી ચરમાવસ્થાની ધન્ય પળોમાં જ્ઞાન અને ભક્તિનો ભેદ રહેતોજ નથી. જ્ઞાની કવિ અખો કહે છે તેમ "ધ્યાતા ધ્યેય સમરસ રહે" છે. આ દૈવી સ્થિતિમાં અલૌકિક અને અવાચ્ય આનંદ પ્રાપ્ત થાય છે.

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः । यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥

આ રીતે ભક્તિ વડે દુઃખની આત્યંતિક નિવૃત્તિ થઈ નિરતિશય સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. માટે ભગવાનની ભક્તિ એજ સાચો પુરુષાર્થ છે. ॥ पुरुषार्थो हि भगवानेव ॥ અણુભાષ્ય.

ઘણાંને શંકા થાય છે કે ક્યા દેવની ઉપાસના કરવી ? આનો જવાબ એ કે શ્રદ્ધા એ ઉપાસનાનું પ્રથમ પગથીઉં છે. સાધકે ઉપનિષદ્માં તથા ગીતામાં કહ્યા પ્રમાણે શ્રદ્ધાવિત્તઃ થવું. શ્રદ્ધાવિહીન કરેલાં કાર્યો નિષ્ફળ જાય છે. મહાભારતમાં કહ્યું છે કે " अश्रद्धा परमं पापं श्रद्धा पापप्रमोचनी ॥ "

બીજી બાબત भिन्नरुचिर्हि लोकः । જેમ એકજ જાતના ખોરાક પર બધાને એક સરખી રુચિ ઉત્પન્ન થવી અસંભવિત છે તેમ એકજ દેવની ઉપાસના ઉપર બધાને આસ્થા થવી શંકાસ્પદ છે. દરેકને તેના પૂર્વકર્માનુસાર, તેની પ્રકૃતિ અનુસાર અમુકજ દેવ પ્રત્યે સ્વાભાવિક વિશેષ પ્રીતિ ઉદ્ભવે છે. તેને તેમાં શ્રદ્ધા ઝટ ચોંટે છે. તો સાધકે સ્વરુચિકર દેવમાં બ્રહ્મદૃષ્ટિ કરી સર્વાત્મભાવે ઉપાસના કરવી. શ્રેયસ્સાધકે તો પ્રતીકમાંથી સ્થૂલદૃષ્ટિ દૂર કરી મૂળ બ્રહ્મદૃષ્ટિએ જોવાનું છે. રસાત્મક બ્રહ્મના સાધકને તો सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥ એવી દૃઢ ભાવના હોવી જોઈએ. ઉપાસના એ મનોવ્યાપાર છે.

દેશ અને કાળાદિ ધ્યાનમાં લેતાં ઉપાસનાનું રહસ્ય, આત્મસમર્પણ અને નિષ્કામ કર્મવીર થવામાંજ સમાયેલું છે. શ્રીભગવદ્વાક્ય પણ છેઃ—

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ॥

निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥३।३०

ભગવદ્ગીતાના પુરુષોત્તમયોગમાં ગીતાસાર સમાયેલ છે. ઉપાસ્ય તત્ત્વનું તથા આત્મસમર્પણનું સૂચન નીચેના શ્લોકમાં આલેખ્યું છે.

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।

तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥१५।४॥

[લેખક સાંપ્રદાયિક નથી, છતાં તેમનો ધાર્મિક ઉત્સાહ વધાવવો રહ્યો. તંત્રી.]

आर्यत्वना रक्षणहार.

(વક્તા—લાલજી દયાળજી રાણપુરા, મંત્રી—શ્રીવૈષ્ણવધર્મમહાસભા ટંકારા.)

શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રાકટ્યનું રહસ્ય યત્કિંચિત્ આપ સજ્જનો સમક્ષ બોલવા રજા લઉં છું. આ મેળાવડામાં કેટલાએક ગ્રેજ્યુએટોની હાજરી હોઇ તે તે મહાન્ વક્તાઓ સમક્ષ મારા જેવા બેચાર ચોપડીના જ્ઞાનવાળા બોલી આવી આદર્શ સભામાં શું અજવાળું નાંખવાના? તો પણ મારી બોલવાની કંઇક અંશે ફરજ લેખાય એ દૃષ્ટિએ આજના ઉત્સવપતિના પ્રાકટ્ય ઉપર મારી અલ્પ બુદ્ધિઅનુસાર કહી ફરજ અદા કરીશ.

આપણે ઇતિહાસના પાનાઓ ઉથલાવીને જોઇએ છીએ કે જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય હોય તે ધર્મ અધિક પ્રબળ હોય છે. પરંતુ જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય નથી તે ધર્મની પ્રબળતા તે ધર્મના સત્ય સ્વરૂપને સત્ય શક્તિપર રહેલી છે. રાજ્યની શક્તિ કરતા ધર્મની શક્તિ અધિક છે. કારણ કે રાજ્યશક્તિ એ લૌકિક શક્તિ અને ધર્મની શક્તિ એ અલૌકિક શક્તિ છે. જેથી લૌકિક શક્તિ ગમે તેટલી પ્રબળ હોય પણ ધાર્મિક અલૌકિક શક્તિ આગળ તે તૃણવત્ છે. હિન્દુસ્થાનમાં જ્યારે ઇસ્લામીઓનું શાસન પ્રવૃત્ત હતું, ત્યારે આર્ય ધર્મ ઉપર ઇસ્લામીઓ અમાનુષી જુલ્મ ગુજારવા જરાયે ચુકતા નહતા. છતાં પણ પ્રાચીન અને સત્ય સ્વરૂપને ધારણ કરનારો આર્ય ધર્મ મક્કમપણે પોતાની સત્તા તેવીને તેવીજ જાળવી રહ્યો છે.

હિન્દુસ્થાનમાં ઇસ્લામીઓની સત્તા લગભગ છસો વર્ષ સુધી રહી હતી ને તે દરમ્યાન હિન્દુ ધર્મ ઉપર ને હીન્દુ કોમ ઉપર પ્રસંગોપાત્ત જુલ્મો થયાજ કર્યાં, છતાં હિન્દુ ધર્મને પ્રકાશમાં લાવનારા આચાર્યો ઉદ્ભવ પામી મુસ્લીમોના જુલ્મને જેર કરી હિન્દુ ધર્મનો પાયો મજબુત કરતા જ ગયા છે.

હિન્દુ ધર્મના મહાન્ આચાર્યો પૈકી શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, નિમ્બાર્ક; ચૈતન્ય અને **શ્રીવલ્લભાચાર્ય** આદિ મહાન્ આચાર્યોએ પોતાના બહુવિધ મહામૂલ્ય જીવનને ધાર્મિક પરિસ્થિતિને અંગે સર્વસ્વ હોમી આર્યત્વ અને આર્ય ધર્મનું રક્ષણ કરી વેદ ધર્મનો લોપ થતો અટકાવી પુનઃ સ્વધર્મના મોરચા માંડ્યાજ છે. એ મહાન આચાર્યો પૈકી એક **શ્રીવલ્લભાચાર્યજી શ્રીમહાપ્રભુજી** છે કે જેમની જયંતિ ઉજવવાને આપણે આજે આ સ્થળે મન વચન અને કર્મથી એકત્ર થયા છીએ. આજે એ મહાપુરુષવરના જીવનકાર્યની રૂપરેખા ચિતરવા આપ સમક્ષ આ સેવકે હીમ્મત તો કરી છે પરંતુ એ રૂપરેખા સંપૂર્ણ રીતે દોરી શકીશ કે કેમ એનો મને વિશ્વાસ નથી, તો પણ એ શ્રીવલ્લભપ્રભુની કૃપાથી યત્કિંચિત રીતે પણ યશોગાન ગાઇ મને કૃતકૃત્ય માનીશ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે અને તે પહેલાં અશાન્તિનોજ યુગ હતો, એટલે કે હિન્દુ ધર્મની સ્થિતિ ઘણીજ વિષમ હતી. જો કે તે વખતે વિજયનગરનું હિન્દુ રાજ્ય કંઇક અંશે હિન્દુ ધર્મની સત્તા, ને ગૌરવ જાળવવાને પ્રયત્ન કરતું હતું ખરૂં, પણ તે હિન્દુ ધર્મના વિશાળ પ્રદેશને હિન્દુ કોમની વિશાળતા આગળ વનરાજ આગળ મૃગની માફક કશા હીસાબમાં નહતું. વળી તેનાથી જોઇએ તેટલી છુટથી તે કામ થઈ શકતું નહતું. કારણ કે દક્ષિણના બ્રાહ્મણી રાજ્યનો દ્વેષ તેના ઉપર ગાજતો હતો, અને તેજ રાજ્યોએ તેને આખરે જમીનદોસ્ત કર્યું હતું. બીજી બાજુ વિધર્મીઓના આક્રમણથી આપણા પૂર્વજો અત્યંત ત્રાસી રહ્યા હતા અને રાજ્ય સંબંધમાં કેવળ અવ્યવસ્થાનુંજ સામ્રાજ્ય પ્રવર્તી રહેલું હતું. મનુષ્યજન્મ જેવું મહાસાધન મળ્યા પછી પણ ઐહિક અને પારલૌકિકની ઉન્નતિ સાધવાનું અશક્ય જેવું થઈ પડ્યું હતું. આજ્ઞાની

રાજ્યધાનીએ રહેલા ધર્માન્ધ સિકંદર લોદી હિન્દુઓ અને હિન્દુઓના ધર્મને જમીનદોસ્ત કરવા જરાએ પાછી પાની કરતો નહિ. તેની સત્તા અને રાજ્ય મજબુત હતાં. તેણે પોતાના આખાય રાજ્યમાં હિન્દુઓને દેવદર્શન કરવાની પવિત્ર નદીઓમાં ન્હાવાની તથા તીર્થાટન કરવાની પણ મના કરી હતી. ટુંકામાં એટલું તો કહીશું કે સર્વત્ર અધર્મજ પ્રવર્તી રહેલો હતો, આવા અશાન્તિના યુગમાં પ્રભુ વિચારે છે અને શાન્તિ અને ધર્મનું સ્થાપન માટેજ અવતાર લે છે. શ્રીગીતામાં કહ્યું છે કેઃ—"હું અજન્મા છતાં અવિનાશી છતાં અને સર્વ પ્રાણીઓનો તથા પદાર્થોનો ઇશ્વર છતાં મારી માયાથી જન્મ ધરૂં છું અને જન્મ ધરૂં છું તે પણ મારી પરબ્રહ્માત્મક સ્થિતિને નહી મુકતાજ ધરૂં છું.

જ્યારે જ્યારે ધર્મની ગ્લાનિ અને અધર્મનો ઉદ્ભવ થાય છે ત્યારે ત્યારે હું પોતાને પ્રકટ કરૂં છું. શાસ્ત્રીય દ્રષ્ટિએ સિદ્ધ થયું કે આ સમય ધર્મગ્લાનિનો હતો. આવા સમયમાં ભારતમાતા પણ ત્રાહી ત્રાહી પોકારી રહ્યાં હતાં. આવા કટોકટીના સમયમાં આર્યધર્મના બુઝાતા દીપકને પ્રજ્વલિત કરનાર ભારતમાતાના અરે આર્યત્વના રક્ષણહાર મલી ગયા. તે શુદ્ધ સનાતન ભક્તિમાર્ગના સ્થાપક જગદુદ્ધારક જગદ્વંદનીય જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી શ્રીમહાપ્રભુજી (તાલીઓ).

આપશ્રીનું પ્રાકટ્ય મધ્ય પ્રાંત રાયપુર જીલ્લાના રાજગ્રામ સમીપ ચંપારણ્યમાં વિક્રમ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ના મંગલમય દિવસે થયું હતું. આપશ્રીના પિતાશ્રીનું નામ શ્રીલક્ષ્મણ ભટ્ટજી, જાતિ તૈલંગ બ્રાહ્મણ કૃષ્ણ યજુર્વેદ શાખા તૈત્તિરીય ગોત્ર ભારદ્વાજ કુલ વેલનાડુ ઓળખાતું હતું. આપશ્રીને સંવત ૧૫૪૦ માં ચૈત્ર કૃષ્ણ અષ્ટમીના દિવસે અનેક વિદ્વાનો અને સજાતીયની હાજરીમાં વૈદિક વિધિનુસાર ઉપનયન સંસ્કાર અપૂર્વ સમારોહથી કરાવ્યો, તદનુસાર આપશ્રીનું વિદ્યાધ્યયન કાર્ય શરૂ કર્યું. આપશ્રી એવા તો વિદ્યાવ્યસની કે ગુરુની પાસે તો વિદ્યાધ્યન તો કરતા પણ આપશ્રીના વિદ્વાન પિતાશ્રી તેમજ અન્ય વિદ્વાનોની પાસે પણ જે જે શાસ્ત્રોની જ્ઞાતા હોય તે તે શાસ્ત્રોનું પણ લક્ષપૂર્વક ગ્રહણ કરતા આપશ્રી ટુંક સમયમાંજ વિદ્યાધ્યયનનું કાર્ય પૂર્ણ કરી લીધું અને આપશ્રી વિદ્યાનો પરિચય કરાવતા અનેક વિદ્વાનોને પરાજીત કરી લેતા આપશ્રી આપશ્રીની અલૌકિકતાનો પરિચય દેવા લાગ્યા. આપશ્રીએ ટુંક સમયમાંજ આખાય હિન્દમાં ફક્ત એક ધવલ (સફેદ) ધોતી અને ઉપરણેજ ચરણે ચાલી યાત્રા કરીને શુદ્ધ વૈદિક પુષ્ટિ-ભક્તિમાર્ગની સત્તા ચારે છેડે સ્થાપી. પશ્ચિમમાં નગરઠઠ્ઠા, દક્ષિણમાંશ્વેતબિંદુ રામેશ્વર, પૂર્વમાં કલકત્તાની પણ પેલીપાર ગંગાસાગરને ઉત્તરે છેક હિમાલયની તલેટીમાં બદ્રીનાથ કેદારનાથ તથા વ્યાસાશ્રમ સુધી પોતાનો વિજયધ્વજ ફરકાવીને અનેક જીવોને શરણે લીધા. આ કાર્યોમાં તે વખતે પરધર્મના રાજ્યો છતાં પણ પરબ્રહ્મત્વના તેજોમય દિવ્યશક્તિએ સર્વેના શિર તેઓશ્રીના ચરણારવિંદમાં ઝુકી જતા, સમયાભાવથી આટલું જ બોલીને હાલ તો વિરમીશ.

નામમાહાત્મ્ય.

[લેખિકાઃ—બહેન સરસ્વતી દાણી.]

આપણે સૌ જગતમાં મોટામાં મોટાં એવા પ્રભુને માનીએ છીએ કારણ કે તેજ આપણા જન્મદાતા રક્ષક અને કલ્યાણકર્તા છે અને તેથી ભગવાનના નામનું સ્મરણ અને રટણ બધાં કરતાં ઉત્તમોત્તમ છે. ભગવાન સર્વવ્યાપક અને અંતર્યામી હોવા છતાં તે આપણી દ્રષ્ટિએ અદ્રશ્ય છે અને તેથી આપત્કાળમાં તેમની સહાયતા મેળવવા આપણે અસમર્થ છીએ. જો કે ભગવાન સદાસર્વદા સર્વવ્યાપક એટલે નજીક હોવા છતાં પણ આપણે માટે તો દૂર જેવા છે.

દરેક મનુષ્ય જ્યારે જ્યારે પોતાના ઉપર કાંઇ પણ આપત્તિ આવી પડે છે અને જ્યારે કંઇ પણ ઉપાય જડતો નથી ત્યારે ભગવાનને સંભારે છે અને ભગવન્નામોચ્ચારણથી ઉપાધિથી ઘેરાયેલા મનુષ્યને એક પ્રકારની શાંતિ મળે છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે અને તે પોતાને નિર્ભય માને છે. આપત્તિના સમયમાં ભગવન્નામ લેવાથી આપણને શાંતિ થાય છે અને અણધારી મદદ મળી જઈ આપણા દુઃખની નિવૃત્તિ થાય છે.

દ્રૌપદીની ઉપર જ્યારે કૌરવોએ જુલમ કરવા માંડ્યો ત્યારે એક પણ રસ્તો ન સુઝતાં દ્રૌપદીએ ભગવાનનેજ સંભાર્યા અને શ્રીહરિએ તેની રક્ષા કરી તે આપણે સૌ જાણીએ છીએ. એવી રીતે અનેક ભક્તોના દુઃખોનું નિવારણ ફક્ત અંતઃકરણપૂર્વક અને ભાવપૂર્વક ભગવત્ સ્મરણથીજ થયું છે તેની સાક્ષી આપણો ઇતિહાસ પૂરે છે. બીકણ મનુષ્યને પણ તેવો પ્રકાર પ્રાપ્ત થતાં ભગવતનામઉચ્ચારથી તેને નિડરતા આવી જાય છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે એવો પ્રતાપ ભગવતનામનો છે. ભગવાનની પ્રાર્થના માટે અનેક પ્રકારના સાધનો હોવા છતાં સાધારણ મનુષ્યોને માટે ભગવત્ નામ સિવાય અન્ય કોઈ સરલ સાધન નથી. કહ્યું છે કે જે લોકો જન્મ મરણથી છૂટવા માંગતા હોય તેણે આદિઅનાદિ પરમાત્માનું અહર્નિશ સ્મરણ કરવું.

કલિયુગમાં બીજાં સાધનો કરતાં ભગવન્નામોચ્ચારણ માત્રથીજ ભગવત્પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે એમ અનેક ઠેકાણે શાસ્ત્રોમાં છે અને કહ્યું છે કે સત્યયુગમાં ધ્યાનથી, ત્રેતાયુગમાં યજ્ઞથી, દ્વાપરયુગમાં અર્ચનથી જે ફળ મળતું તે ફળ કલિયુગમાં ફક્ત ભગવાનના નામસ્મરણ અને કીર્તનથી મળે છે. શ્રીમદ્ભાગવતમાં શ્રીમદ્વેદવ્યાસજી કથે છે કેઃ—

कलेर्दोषनिधे राजन् अस्ति ह्येको महान्गुणः ॥

कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तबन्धः परं व्रजेत् ॥

એટલે કે કલિયુગમાં ભગવતનામ અને કીર્તનથીજ સંસારના બધા બંધનોથી મુક્ત થઈ મનુષ્ય પરમાત્માને પ્રાપ્ત કરી શકે છે.

એવી રીતે ભગવન્નામનું માહાત્મ્ય મહાન છે. તેનું વર્ણન કરવું અશક્ય છે. કલિયુગમાં બીજાં સાધનો ન બની શકે તો ભગવતનામથીજ ઉદ્ધાર થાય છે. માટે બેસતાં ઉઠતાં, હાલતાં, ચાલતાં, સુતાં જાગતાં અને કામકાજ કરતાં ભગવાનના નામનુંજ સ્મરણ કરવાની જો આપણે દરેક ટેવ પાડીએ તો આપણું કલ્યાણજ થાય એ નિર્વિવાદ છે.×

× સૂચિત.

[મજકુર લેખની અનુવાદિકા બ્હેનનો સામાન્ય પરિચય આ છે. કુ. બ્હેન સરસ્વતી અમારા સન્મિત્ર પરમભગવદીય ભાઇ દ્વારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણીનાં સુપુત્રી છે. ચિ. સરસ્વતી માત્ર ષોડશવર્ષીય હોવા છતાં સારાં ઉત્સાહી અને સુસંસ્કારી બાલિકા છે. ધાર્મિક સંસ્કાર સારા છે તદનુસાર સામાજીક કાર્ય પણ આગળ પડતો ભાગ લઇને કરે છે. થોડા સમયમાં તેમણે જ્ઞાતિની બ્હેનો પ્રગતિ કરે તેને માટે એક અપીલ બહાર પાડી હતી તેથી તાજેતરમાં જ્ઞાતિનું 'શ્રીગોહિલવાડ દશા શ્રીમાળી સ્ત્રી મંડળ' સ્થાપી તે દ્વારા શિક્ષણ અને શિવણના વર્ગો ચલાવવા અને પુસ્તકાલયની વ્યવસ્થા પણ ચિ. સરસ્વતી રાખે છે. (મજકુર સંસ્થાના મન્ત્રિણી છે.) ગત વર્ષે તે વર્નાક્યુલર ફાઇનલ પરીક્ષામાં ઉચ્ચકક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયાં છે અને હાલમાં તે સ્થાનીય વનિતાવિશ્રામની ટ્રેનીંગ સ્કુલમાં પ્રથમવર્ષ પણ સારે નંબરે પસાર કર્યું છે. તે અવાર નવાર લેખ કાવ્યાદિ મોકલાવે છે. તેમજ સામ્પ્રદાયિક તથા અન્ય પણ સાહિત્યનું વાંચન સારા પ્રમાણમાં કરે છે.]

ગોવિન્દ.

[અનુવાદક—ડૉ. મોનજી વિશ્રામ ઠક્કર, જી. પી. એ. સી., ખેડોઇ–કચ્છ.]

ગોવર્ધન નામનું એક સુંદર નાનું ગામ હતું. ગામમાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્યોની વસ્તી વધારે પ્રમાણમાં હતી. આ ગામની વચમાં એક મંદિર હતું જેમાં શ્રીનાથજીનું એક સુંદર સ્વરૂપ બિરાજેલું હતું. સ્વરૂપ એટલું સુંદર હતું કે તે જોતાં માણસનું મન ધરાયજ નહિ. તેના ચરણોમાં ઝાંઝર, ગળામાં માળા, મસ્તકપર મુકુટ વગેરે શોભી રહ્યાં હતાં. નેત્રો પણ મનોહર હતાં અને પીતામ્બર પહેરેલું હતું.

આ મંદિરની બાજુમાંજ એક ગરીબ બ્રાહ્મણનું ઘર હતું કે જેનું હૃદય પ્રભુભક્તિમાં રંગાએલું હતું. તેની સ્ત્રી પણ બહુ સરળ સ્વભાવની હતી અને પોતાના પતિની માફક તે પણ પ્રભુભક્તિમાં મસ્ત રહી તે પતિની સાથે રહેતી. એના મુખેથી ક્યારે પણ કોઇને તે કડવા વચન કહેતી નહિ.

માતા પિતાની જેવી પ્રકૃતિ હોય છે તેવીજ બાળકની પણ થાય છે. એ નિયમ પ્રમાણે આ દંપતીને ગોવિન્દ નામે દસ વરસની ઉમરનો બહુ સરળ સ્વભાવનો એક પુત્ર હતો જે એટલો સુંદર હતો કે લોકો તેને કામદેવનો અવતાર કહેતાં પણ અચકાતા નહિ.

ગોવિન્દ ગામની બ્હાર પોતાના મિત્ર સદાનંદ અને રામદાસની સાથે રમતો. એક દિવસ રમતાં રમતાં સાંજ થઇ અને તે પોતાના ઘર તરફ આવતો હતો એવામાં મંદિરમાં આરતી થતી હતી ત્યાં ઘંટા, ઝાંઝ વગેરેનો અવાજ સાંભળીને તેને પણ ત્યાં જઇને તે જોવાની ઇચ્છા થઈ અને તરતજ દોડીને શ્રીનાથજીની આરતિ થતી હતી ત્યાં તે ગયો.

શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરીને બાળકનું મન તેમાંજ રમી રહ્યું. ગોવિન્દ મૂર્તિને એક મૂર્તિ ન સમજતાં તેણે પ્રત્યક્ષ જોયું કે એક સુંદર ચેતનમય બાળક ઉભું ઉભું હસે છે.

ગોવિન્દ શ્રીનાથજીની મધુર મુખાકૃતિ પર મોહિત થયો. તેના મનને થયું કે જો આ બાળક મારો મિત્ર બની જાય અને મારી સાથે રમે તો બહુ મજા પડે. એટલામાં આરતિ સમાપ્ત થઈ અને બધા લોકો પોતાને ઘેર ગયા. સેવક પણ મંદિર બંધ કરી પોતાને ઘેર ગયો પણ ગોવિન્દ મંદિરની બ્હાર અંધારામાં શ્રીનાથજીની વાટ જોતો ઉભો રહ્યો. જ્યારે તેણે ચોતરફ જોઇ લીધું કે હવે અહિં કોઇ પણ નથી ત્યારે મંદિરના દરવાજાના છેદોમાંથી અંદરના શ્રીનાથજીને જોઇ તે હૃદયના બહુગંભીર અવાજથી ગદગદ કંઠે પ્રેમપૂર્વક કહેવા લાગ્યો—"શ્રીનાથજી, તમે શું મારી સાથે નહિ રમો ? મારૂં મન તમારી સાથે રમવાને બહુ આતુર થઇ રહ્યું છે. ભાઈ આવો જુઓ તો ખરા ? કેવી મજાની ચાંદની રાત છે ? ચાલો આપણે બંને મેદાનમાં ગેડીદડે રમીએ હું સાચું કહું છું કે ભાઈ, તમારી સાથે હું લડીશ નહિ અને મારપીટ નહિ કરૂં.

સરળ હૃદયના બાળકના મન ઉપર આરતીના સમયે જે પ્રભાવ પડયો તેનાથી તે ગાંડા જેવો થઇ ગયો. પરમાત્માના મધુર અને અનંત પ્રેમના અમૃત ભર્યા પવિત્ર વાતાવરણથી પ્રેમ-મગ્ન થઇને મંદિરની અંદર ઉભેલા એ ભક્તોના પ્રાણધનને ગોવિન્દ રોઇ રોઇને એજ વિનતિ કરવા લાગ્યો. બાળકના એ આંસુભર્યા શબ્દોએ ભારે કામ કર્યું. "જે મને જેવી રીતે ભજે છે તેવી રીતે હું તેને ભજુ છું. એ પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ભક્તનાં પ્રેમે શ્રીનાથજીને ખેંચી લીધા. ગોવિન્દે સાંભળ્યું. અંદરથી અવાજ આવ્યો કે ભાઈ, ચાલ, આવું છું. આપણે બંને સાથે રમશું.

નિષ્કપટ હૃદયના બાળકનો પ્રેમ પ્રભુને બહુ જલ્દીથી ખેંચે છે. બાળક ધ્રુવને માટે ચાર ભુજવાળા બનીને વનમાં જવું પડ્યું. ભક્ત પ્રહ્લાદને માટે નરસિંહવેશ ધારણ પડ્યો, અને

વ્રજના બાળકોની સાથે પોતે ગાયો ચરાવતા ચરાવતા વનેવન ઘુમ્યા અને આજ ગોવિન્દની પ્રેમભરી વિનંતિથી તેની સાથે રમવાને મંદિરની બહાર આવ્યા.

ધન્ય પ્રભુ, તમે તમારી શકિત સાથે કંઇક નવત જાતની ક્રીડા કરો છો. તમારી કળાને કોણ કળી શકે ? નજીવી માયાની શક્તિના પ્રબળથી પણ મૃત્યુલોકના મનુષ્યો ભ્રમમાં પડી જાય છે. તો તમો તો માયાના પણ અધિષ્ઠાતા છો. બિચારી માયા તો તમારી દાસી છે અને હરહંમેશ તમારા ચરણકમલની સેવા કરી રહી છે તો તમારી માયાને કોણ જીતી શકે ? એટલું તો અવશ્ય જણાય છે કે તમે તમારા ભક્તોની સાથે ગમત કરવામાં બહુ આનંદ માનો છો તેથીજ તમે ભક્ત ધનાજી સાથે ગાયો દોહતા ફરતા હતા. અને એવીજ રીતે આજ પણ ભક્ત બાલક ગોવિન્દનો આર્તનાદ સાંભળીને તેની સાથે રમવાને તૈયાર થયા છો.

શ્રીનાથજી હસતા હસતા ગોવિન્દની પાસે આવ્યા અને બહુજ પ્રેમપુર્વક તેનો હાથ પકડયો. આજે ગોવિન્દના આનંદનો પાર નથી. એ શ્રીનાથજીનું મુખ જોઇને ગાંડો બની જાય છે. તો વળી કયારેક તેમના કોમળ હાથનો સ્પર્શ કરીને પોતાને ધન્ય માને છે. વળી તેમના મનોહર નેત્રો જોઇને મોહિત થાય છે. તો વળી તેમનો મધુર અવાજ સાંભળીને ફરીથી તે સાંભળવાની ઇચ્છા કરે છે. એમ ગોવિન્દના હૃદયમાં આજે આનંદ સમાતો નથી. અને ખરેખર એવુંજ હતું કારણ કે જગતનું સમસ્ત સૌંદર્ય જેના સૌંદર્ય પાસે એક તુચ્છ વસ્તુ જણાય છે એવા સૌંદર્યને મેળવીને એવો કોણ હોય જે મુગ્ધ ન થાય ?

આ નવા મિત્રને પોતાની સાથે લઇને ગોવિન્દ ગામની બહાર ગયો. ચંદ્રમા પૂર્ણ પ્રકાશ્યો હતો. ચાંદની ખીલી રહી હતી. પુષ્પની અર્ધી ખીલેલી કળીઓ જંગલના પવનને પોતાની મધુર સુગંધથી જંગલની ખુબીમાં વધારો કરી રહી હતી. જાણે કે કુદરત પોતાના નાથને પોતાની સેવાથી ખુશી કરવાને તત્પર હતી. આવી મનોહર ચાંદનીમાં શ્રીનાથજી મળવાથી ગોવિંદ પોતાનું ઘર માતા પિતા ઊંઘ ભૂખ સર્વે ભૂલી ગયો અને બંને મિત્રો જુદી જુદી રમતો બહુજ આનંદથી રમવા લાગ્યા.

ગોવિન્દે કહ્યું હતું કે હું તમારાથી લડીશ નહિ અને મારપીટ નહિ કરૂં પરંતુ શ્રીનાથજીની વિનોદપ્રિય માયાથી મોહિત થઇને એ વાતને તે ભૂલી ગયો. રમતાં રમતાં કોઈ વાત ઉપરથી બંને મિત્રો લડી પડયા. ગોવિન્દ ગુસ્સે થઇ ગયો અને શ્રીનાથજીના ગાલ પર એક થપડ ચડાવી દીધી. અને કહ્યું બોલ ફરીથી જો કદી મને ખીજવીશ તો યાદ રાખજે કે મારી મારીને વાંસો લાલ કરી દઇશ. સૂર્ય ચંદ્ર વિગેરે જેના ભયથી પોતાના કામમાં લાગી રહ્યા છે, દેવરાજ ઇંદ્ર પણ જેના ભયથી વખત પર વરસાદ વરસાવવાને બંધાયલા છે, યમરાજ પણ જેના ભયથી પાપીઓને ભય દેખાડવામાં લાગી રહ્યા છે, એવા ત્રિભુવનનાથ આજ એક નાના બાલક ભક્તની સાથે રમતાં તેની થપાટ સહન કરીને કંઇ બોલતા નથી. ધન્ય છે.

શ્રીનાથજી રોવા લાગ્યા. અને કહ્યું ભાઇ ગોવિન્દ, તે કહ્યું હતું કે હું મારીશ નહિ તો પછી તેં મને કેમ માર્યો ? શ્રીનાથજીને રડતા જોઇને અને આમ કહેતાં સાંભળીને ગોવિન્દનું હૃદય ભરાઈ આવ્યું અને દોડીને શ્રીનાથજીના આંસુ લુછીને પોતાને ગળે લગાડીને કહ્યું ભાઈ તું રડ નહિ, તું મને બહુજ વ્હાલો લાગે છે, તારી આંખમાં આંસુ જોઇને મારૂં હૃદય ફાટી જાય છે. બંને મિત્રો ફરીથી રમવા લાગ્યા. રાત્રિ જ્યારે વીતી ગઈ તેથી પ્રભુએ જોયું કે તેના માતા પિતા તેની ચિંતા કરશે એટલે ગોવિન્દના હૃદયમા તેને ઘેર જવાની પ્રેરણા કરી. ગોવિન્દે કહ્યું.

શ્રીનાથજી, બહુ મોડું થયું. હવે હું ઘેર જાઉ છું. આવતી કાલે વળી આપણે રમીશું. શ્રીનાથજીએ અનુમતિ આપી ગોવિન્દ ઘેર ગયો અને અનાથોના એકજ આધાર શ્રીનાથજી પોતાના મંદિરમાં પધાર્યા.

દરરોજ આવી રીતે બંને જણા રમવા લાગ્યા. આ મનોહર મિત્ર મળવાથી ગોવિન્દ તેના જુના બંને મિત્રોને ભુલી ગયો એક દિવસ રમતાં રમતાં ગોવિન્દને દાવ ન આપતાં શ્રીનાથજી ભાગ્યા. ગોવિન્દ પણ તેમની પાછળ દોડયો. શ્રીનાથજી મંદિરમાં ઘુસી ગયા અને મંદિરના દ્વાર બંધ હતા. મંદિરના દ્વાર બંધ થવાથી ગોવિંદ અંદર જઈ શકયો નહિ અને શ્રીનાથજીએ અન્યાય કર્યો સમજીને બ્હાર ઉભો રહીને ખુબ ગુસ્સાથી તેમને સાચી ખોટી સંભળાવવા લાગ્યો.

જેવું મંદિર ઉઘડયું કે તુરતજ ગોવિન્દ અંદર ઘુસી ગયો અને લાકડીથી શ્રીનાથજીને મારતો કહેવા લાગ્યો કે હવે પછી કયારે ભાગશો કે? પુજારીઓએ હાં હાં કરીને ગોવિન્દને પકડી લીધો અને મારી પીટીને બ્હાર કાઢી મુકયો. આથી તો વળી તેને વધારે ગુસ્સે ચડયો અને બોલ્યો કે શ્રીનાથજી, તમે બહુ અન્યાય કર્યો. એક દાવ ન આપતા ભાગી આવ્યા અને હવે પોતાના માણસોથી મરાવીને બ્હાર કાઢી મુકયો ઠીક છે. હવે કાલે જોઇ લઈશ. જ્યાં સુધી હું તને આનો બદલો ન આપું ત્યાં સુધી હું પાણી પણ પીશ નહિ. આમ કહીને તે ગુસ્સામાં ત્યાંથી ચાલ્યો ગયો અને ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો.

અહિં મંદિરમાં ભોગ તૈયાર થયો. ત્યારે સેવકોને પ્રગટ હુકમ• થયો કે તમે જે મારા ભક્તને માર મારીને કાઢી મુકયો છે, તે જ્યાં સુધી અહિં ન આવે ત્યાં સુધી મને ભોગ ધરાવી શકાય નહિ. તેના શરીરે જે માર પડયો તે બધો મારા શરીર પરજ લાગ્યો છે. સેવકોને શુ ખબર કે ભક્ત તથા ભક્તવત્સલ ભગવાન જુદા નથી?

સેવકો બહુ હેરાન થયા. શોધતા શોધતા જ્યાં ગોવિંદ ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો હતો ત્યાં આવ્યા અને કહ્યુ કે ભાઇ, ચાલ શ્રીનાથજી તને બોલાવે છે. એ તારી પાસે પોતાની હાર કબુલ કરે છે અને વળી તારી સાથે રમવાની હઠ કરે છે. ગોવિન્દે કે હું નહિ આવું. એજ અહિં આવે અને જ્યારે હું એને ખુબ મારી મારીને સીધો કરૂં ત્યારેજ એ સરખો ચાલે પણ હવે જ્યારે એ હાર કબુલ કરે છે ત્યારે તો ચાલો હું આવું છું. એમ કહીને ગોવિન્દ વિજયના ગર્વથી હસતો મંદિરમાં ગયો અને બોલ્યો, કેમ શ્રીનાથજી, હવે પછી કયારે એવી ચાલાકી કરશો કે? એ તો ઠીક થયું કે તમે મને બોલાવ્યો નહિતર એવું કરત કે જીંદગી સુધી યાદ કરત. ગોવિન્દે આમ કહ્યું તો ખરૂં પણ જ્યારે તેણે શ્રીનાથજીનું મોઢું ઉદાસ જોયું ત્યારે એના સરલ હૃદયના દુઃખ સાથે કહેવા લાગ્યો, ભાઈ, તમે હજી સુધી ભોગ કેમ નથી લીધો? તમારૂં મુખ ઉદાસ જોઇને મને રડવું આવી જાય છે. હવે હું તમને કયારે પણ મારીશ નહિ. તમારી ઉદાસીનતા મારાથી સહન થતી નથી. હું હવે ગુસ્સે નહિ થાઉ. તમે રાજી થાઓ અને ભોગ લ્યો.

મંદિરના દ્વાર બંધ થઈ ગયા. શ્રીનાથજી પ્રત્યક્ષ થયા અને બોલ્યા ભાઇ, તું પોતે પણ ભુખ્યો છે. આવ આપણે બંને સાથે જમીએ. શ્રીનાથજીને ખુશીમાં જોઈ ગોવિન્દ ખુબ રાજી થયો. બંને હસવા લાગ્યા. અને આનંદના અવાજથી મંદિર ગાજી ઉઠયું. ગોવિન્દ ગોવિન્દને હાથે વેચાણો. અચાનક દરવાજા ખુલી ગયા. ગોવિન્દને દિવ્ય દૃષ્ટિ પ્રાપ્ત થઈ. તે સર્વત્ર શ્રીનાથજીનેજ જોવા લાગ્યો.

સત્સંગમાં.

વલ્લભદાસ—ભાઈ વિઠ્ઠલદાસ, તમોએ જે કડીઆરા દીવાનની વાતો કહી તેવા અધીકારીઓ હાલમાં આપણા સંપ્રદાયના મંદિરમાં છે ખરા ? અમો........ગયા હતા ત્યારે મોટા મહારાજે લીલા કર્યા પછી મંદિરમાં તો ઘણા અધિકારી થઇ ગયાં છે. તેઓ માત્ર વાતો બહાર કરે છે જે અમે તો સેવામિષે કામ કરીએ છીએ, તેવો માત્ર ડોળ દેખાડે છે અને મંદિરમાં ઘણીજ ગેરવ્યવસ્થા દેખાય છે. શાકઘરનાં દર્શન કરવા અમે ગયા પણ તે તો જાણે કેમ લડાઈ ઘર હોય તેવુંજ અમે તો જોયું અને જે નામમાત્રના કહેવાતા અધિકારીઓ પોતાની પ્રતિષ્ઠા પુરતું કામ કરી કેટલાંક સેવા કરનારાંઓને શક લાવીને સેવા છોડવા ફરજ પાડી છે. ઉપરાંત તે વૈષ્ણવો બિચારાં સેવા છોડી બેસી રહ્યાં છે તે વાત આપશ્રી નહી જાણતા હોય કે કેમ ? અસારવા શ્રીઆચાર્યજીમાં કારતક સુદ ૯ રવિવારનો અન્નકૂટ હતો ત્યારે અમે દર્શન કરવા ગયા હતા પણ ત્યાં તો દર્શનમાં ભીડ ન થાય અને વૈષ્ણવોને કોઇ દુઃખ ન પડે તે કારણથી શ્રીરણછોડલાલજીએ બહુજ વોલીન્ટીયરો રાખીને બંદોબસ્ત કરાવ્યો હતો. કોઇ ભીડ બીલકુલ નહી હતી કે ઝાપટનો ખપ પણ નહી હતો છતાં ત્યાં બેઠકજીમાં એક નંદાજી કરીને મારવાડી જેવા કારભારી છે તેણે દરશન કરતાં વૈષ્ણવોમાં એક વૈષ્ણવ દર્શન કરતો હતો ત્યાં એક લુગડાં વળ દઇને ગોટા કરીને એક વૈષ્ણવને ફડાફડ મારવા માંડયું. વૈષ્ણવ તો દર્શનજ કર્યા કરતો હતો છતાં વધારે ગોટા લાગવાથી પાછું જોયું તો ગોટાના ઘા થઈ રહ્યા હતા. ફડાફડ એક પછી બીજો ને બીજા પછી ત્રીજો એમ થાપડતા હતા તે વૈષ્ણવે દરશન છોડીને નંદાજીને કહ્યું કે પથરો ને કાંતો લાકડી મારી લે કે જેથી તારી દાઝ ઉતરે. ત્યારે નંદાએ કહ્યું હું તો તારાં પાપ કાપું છું ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું કે તારે દાઝ ઉતારવી છે તો હું કારણને સમજું છઉં પણ મારે ભગવદ્નામ છોડી દઇને તારી સાથે કોરટ કરવી નથી. ત્યારે નંદાએ કહ્યું જે પાપી હું તો તારાં પાપ ધોતો હતો. હવે વિઠ્ઠલદાસભાઈ તેણે શું તેનાં પાપ ધોવાનું કહીને તે વૈષ્ણવને માર મારીને દુઃખી કરવા ધાર્યું હોય તેવું મને તો દેખાણું તે વૈષ્ણવ તો ત્યાંથી જતો રહ્યો. કહેવાનો મતલબ કે શું શ્રીરણછોડલાલજી મહારાજશ્રી તરફથી તે નંદાજી વગેરેને બીલકુલ ડર નહિ હોય તેવું દેખાય છે કે શું મહારાજશ્રી ત્રીણી નજરથી તે બધું જોયા કરતા હશે કારણ કે આપ બહુજ ચતુર છે.

રમણદાસ કહે છે, જે તમારો પહેલોજ પ્રશ્ન છે જે કડીઆરા દીવાન જેવા અધિકારી હશે ખરા તો ? જવાબમાં:

વિઠ્ઠલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, તેવાજ અધિકારી (કારભારી) તો નહિ પણ મેં તો વડોદરામાં રણછોડદાસ કરીને એક માણસમાં એટલું બધું દૈન્ય દેખાતું હતું તેથી અમો તો વિચારમાંજ પડી ગયા કે આ શું ? વડોદરા મંદિરની કેવી સુંદર સ્થિતિ છે તેનું કારણ શું હશે ? પરિણામે ત્રીણી દ્રષ્ટિથી જોવા લાગ્યા તો તેનું મૂળ કારણ શ્રીગોસ્વામી બાલકોનાં કથાવચનામૃત નહી સાંભળતાં અગર દૈન્યથી સત્સંગ નહીં કરનારની આવી સ્થિતિ થાય. તે લોકોનેજ અધિકારમદ રહે છે, અને તેનાથી સેવાને બદલે વિપરીત કાર્ય થાય છે. તેવીજ રીતે કારખાનાઓમાં, પેઢીઓમાં પણ અધિકારી લોકો અધિકારમદમાં પોતાનો ધર્મ ખોઈ બેસે છે.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિઠ્ઠલદાસ, તે લોકોની તો તેવીજ ગતિ થતી હશે કેઃ—

વિઠ્ઠલદાસ—ભાઇ, કૃષ્ણદાસ જેવાને પ્રેતયોનિ આવી તો બીચારા આવા નાનકડાની તો વિપરીત ગતિ થાય તેમાં શું નવાઇ ?

ગોરધનદાસ—ભાઈ ત્યારે એવા લોકોની સુંદર ગતિ શી રીતે થાય ?

વિઠ્ઠલદાસ—કૃષ્ણદાસ "સુરતે અસુર ભયે અસુરતે સુર ભયે ચરણ છોય" તેવીજ રીતે શ્રીવલ્લભ પ્રત્યે દૈન્ય કરે અને વલ્લભીનો દૈન્યપૂર્વક સત્સંગ કરે તો પાછો ધર્મ આવી જાય. કારખાનાં, પેઢીઓ દ્વારા અધિકારી લોકો પણ નીતિવાળાનો આદરપૂર્વક સંગ કરે એટલે તેઓનાં લક્ષણો તરફ દૃષ્ટિ કરી ગુણનું ગ્રહણ કરે તો તે લોકોની પણ સારી ગતિ થાય.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિઠ્ઠલદાસ, લૌકિક કાર્ય પણ દીનતાથી થતાં હશે ખરાં ?

વિઠ્ઠલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, દીનતા તો ચઊદ લોકમાં માર્ગ કરી આપે છે.

ગોરધનદાસ—ત્યારે આ ચલવલ દ્વારા જે આટલા બધા હેરાન થાય છે અને દુનીઆને હેરાન કરે છે તેનું કારણ તે લોકો આધકાર પદ ભોગવતા હશે, અને તેઓને દૈન્ય બીલકુલ હશેજ નહી તેથી તેનો પોતાના ધર્મો તો નાશ થયા પણ બીજાના ધર્મો પણ બગાડવા તૈયાર થઈ બેઠા છે.

લી૦ વેલજી કેશવજી.

ઘટસ્ફોટ.

ફરીને મહાત્મા ગાંધીજીને ૨૧ ઉપવાસો કરવા પડયા છે. એઓ પોતાના દંભી અનુયાયીઓને હજુએ ઓળખી શકયા નથી તેને માટે અનહદ ખેદ થાય છે. મહાત્માજીને અનેકવાર કહેવામાં આવ્યું, તે પણ મજબૂત પુરાવા સાથે, છતાં તેઓએ પોતાના કહેવાતા અનુયાયીઓ ઉપર અંધ વિશ્વાસ રાખ્યો. આ પરથી એમ કેમ ન માનવું કે તેઓ પોતાની છાયા નીચે બદમાશી કહો કે શયતાનતને પૂર્ણ આશ્રય આપી રહ્યા છે અને તેને છાવરવાનું મહાપાપ વહોરી રહ્યા છે ? વર્ષો પહેલાંની વાત છે. અસહકારના જન્મસમયે સરકારી શાળાઓનો બહિષ્કાર પૂર જોશમાં ચાલુ હતો. મહાત્માજીના પટ્ટ શિષ્ય રા. મહાદેવ દેસાઈ 'નવજીવન' માં લખતા હતા કે પૂતનાની પેઠે સરકારી શાળાઓ હિન્દબાલોને ઝહર પાય છે, માટે તેનો બહિષ્કાર કરો. જાહેરના રા. મહાદેવભાઇ ખાનગીમાં પોતાના એક સગા માટે સરકારી કેળવણીમાં આગળ વધવાને સ્કોલરશીપ મેળવવા વલખાં મારતા હતા. જ્યાં રા. મહાદેવભાઈ જેવાની આ અધમ પાખંડી મનોદશા હોય ત્યાં બીજાઓની તો વાત જ શી કરવી ? તે જ વખતે મેં નીચે મુજબ એક રજીસ્ટર પત્ર લખ્યોઃ

કાર્તિક કૃષ્ણ ૦))
શુક્ર સં. ૧૯૭૭.

રા. રા. મહાદેવ જે. દેસાઈ,

આપ પૂર્ણ અસહકારવાદી છો, એમ 'નવજીવન' માં આવતા આપના લેખોથી સમજાય છે. આપના એક પાસેના સગા યુવક અત્રે 'વિલ્સન કોલેજ' માં અભ્યાસ કરે છે. એમને દ્રવ્યની સહાયતા કરવાની ભલામણ આપે અત્રેના ચોક્કસ ગૃહસ્થને કરેલી, તે વાત શું ખરી છે ? તે કાર્ય એક ચુસ્ત અસહકારીને છાજતું છે ? આનો સત્વર જવાબ લખવા કૃપા કરશો, અને તે જાહેરમાં પ્રકટ કરવાની પરવાનગી આપશોજી એજ. **વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્રી.**

ઉપરના પત્રનો રા. દેસાઈ જવાબ આપે જ શાના ? આવા ને આવા અનેક દંભપાખંડોથી ખીચોખીચ ભરેલા અસહકારી ખોળીયાંઓનું સત્ય કહો કે નગ્ન સ્વરૂપ થોડાં વર્ષ પહેલાં મહા ગુજરાતના કવિસમ્રાટ્ સત્ય વક્તા શ્રીયુત નાનાલાલભાઈએ

"બદમાશોનો સંઘ"

એ નામથી પ્રકટ કર્યું હતું. આ સમયે ભલભલા દંભીઓએ કવિશ્રી સામે ધૂળની મુઠીઓ ફેંકવાની બચ્ચાશાહી ચેષ્ટાઓ કરી હતી. પણ થોડા જ સમયમાં ગાંધીજીનો આશ્રમ જ બદમાશોથી

ઘેરાયલો પૂરવાર થયો. ગાંધીજીના ભત્રીજા છગનલાલ, કે જેઓ વર્ષોથી સત્યાગ્રહાશ્રમનાં નાણાં તથા બીજી વસ્તુઓ ઉચાપત કરતા હતા, જેમની સામે પાંચ વર્ષથી પોકારો થતા પણ મહાત્માજી સાંભળવા ના પાડતા, તેમનાં પાપો ફૂટયાં, અને છગનલાલે

દશ હજાર રૂપીઆ ઉચાપત

કર્યાનું જાહેર થયું. વળી આશ્રમમાં વ્યભિચારની બદબૂ ફેલાયલી જાહેર થઈ. આ બધાંને ઢાંકવા માટે ઉપવાસો થયા તથા 'નવજીવન'માં અગ્રલેખો લખાયા. 'બદમાશોનો સંઘ' સિદ્ધ થયો.

છતાં ગાંધીજી પોતાના અનુયાયીઓ પર અંધ વિશ્વાસ રાખે જ જતા હતા. હાલની અસ્પૃશ્યતાનિવારણની લડત ચાલુ કરવામાં આવી અને તેને શુદ્ધ "ધાર્મિક આત્મશુદ્ધિની લડત" તરીકે ઓળખાવવામાં આવી, ત્યારે પણ બદમાશોનો સંઘ જ અગ્રેસર બન્યો હતો અને તેનાથી ચેતવા માટે મેં નીચે મુજબ એક પત્ર આજથી ૭ માસ પર મહાત્માજી ઉપર લખ્યો હતોઃ—

કાર્તિક સુદ ૧૪
સં. ૧૯૮૯

મહાત્માજી,

"ગુજરાતી પંચ" ની કાપલીઓ મળી હશે. આ સાથે 'અસ્પૃશ્યોદ્ધાર' નામક લેખસંગ્રહ મોકલું છું. શું સને ૧૯૨૧ ની સાલના ગાંધીજી સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં આત્મા સાથે પલટાઇ તો નથી ગયા ને? બાકી આપ જેમને આપના લાખોની સંખ્યાના અનુયાયીઓ કહો છો તેમાં લાખોમાંથી રાજાજી જેવાને બાદ કરતાં **બધાએ દંભ અને પાખંડમાં ડુબી રહ્યા છે. આપને ઠગ્યા છે, ઠગે છે અને ઠગશે. એમના અત્યાચારોની તપાસ કરવા માટે એક કમીટી નીમો તો કાળી ગણાતી પ્રજા ગોરી પ્રજાને પણ કેવી ટપી જાય છે તેની ખબર પડે. એજ** વસંતરામના યથાયોગ્ય.

યરવડા જેલ,
તા. ૧૫-૧૧-૩૨.

ભાઈ વસંતરામ શાસ્ત્રી,

"ગુજરાતી પંચ" ની કાપલીઓ તો હજી મળી નથી, તેમજ લેખસંગ્રહ નથી મળ્યો. મારી પોતાની દ્રષ્ટિ પ્રમાણે તો હું ૧૯૨૧ ની સાલમાં હતો તેજ છું. પણ એવી આશા રાખું છું કે એજ દિશામાં કાંઇક પ્રગતિ મેં કરી હશે. આ જગત્‌માં કાંઇ સ્થિર તો નથી જ, કાં આગળ વધે અથવા તો પાછળ પડે. જે લાખોને વિષે તમે પાખંડ કલ્પો છો એ લાખોને વિષે મેં નથી લખ્યું. પાખંડ ગણી શકાય એવી સંખ્યામાં હોય છે. મેં તો અગણ્ય લાખોને વિષે લખ્યું છે. તેઓમાં અજ્ઞાન હોય, મૂર્ખતા હોય પણ પાખંડ ન હોય. જરા ઉંડા ઉતરીને વિચારશો તો આ વાતની પ્રતીતિ થયા વિના તમને નહિ જ રહે. અત્યાચાર વિષે જરા વધારે ફોડ પાડો એમ હું ઇચ્છું છું. મોહનદાસના બં. મા. (વંદેમાતરમ્)

* ઉપરનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યા પછી ત્રીજે જ દિવસે નીચેનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યું. મારા હમણાં જ પ્રકટ થયલા 'અસ્પૃશ્યોદ્ધાર' નામક પુસ્તકમાંની "એક જ ભૂલ" વિષે તેમાં ઉલ્લેખ છે.

યરવડા જેલ,
તા. ૧૭-૧૧-૩૨.

ભાઈ વસંતરામ,

ભાઈ મહાદેવની ચકોર આંખ તમારા "અસ્પૃશ્યોદ્ધાર" માં એક ગંભીર ભૂલ જોઇ ગઇ છે. જુઓ પાનું ૨૧૪ લીટી ૪-૫. મારી કલમે તમે જે એક નાનકડો શબ્દ ચડાવ્યો છે એણે

અર્થનો અનર્થ કરી મૂક્યો છે. તમારા ચોપાનિઆમાં "વૈષ્ણવો ધરાવે છે" એમ છાપ્યું છે ત્યારે મારી નવજીવનની નોંધમાં 'છે' શબ્દ છે જ નહિ. એટલે જ્યાં મેં શરત રૂપે જે વાક્ય મૂક્યું છે એને તમે કે છાપનારે નિશ્ચિત વિધાન બનાવી દીધું છે; ત્યારે તમે અને હું બન્ને જાણીએ છીએ કે બધા વૈષ્ણવો તમારા લેખમાં તમે જે વિચારો દર્શાવ્યા છે એ વિચારો નથી ધરાવતા. નામધારી વૈષ્ણવ નામને દીપાવનારા કર્મચારી વૈષ્ણવ થઈ જાય તો સ્વર્ગને આપણે આજે પૃથ્વી ઉપર લાવી મૂકીએ. મજકૂર ભૂલ સુધારજો. આટલું પણ કહી દઉં. તમારું ચોપાનીઉં આખું બારીક નજરે જોઈ ગયા નથી. અને હું તો પેલો અક્ષરો 'છે'જ જોતા પામ્યો છું.

મોહનદાસના બં. મા. (વન્દેમાતરમ્.)

ઉપરના બન્ને પોસ્ટકાર્ડનો નીચે મુજબ જવાબ મેં લખ્યો છેઃ–

કા. વ. ૧૦–સં. ૧૯૮૯.

મહાત્માજી! બન્ને પોસ્ટકાર્ડ મળ્યાં.

આ સાથે 'ગુજરાતી પંચ' ની કાપલી ફરીને મોકલું છું. એ આપનો જ ભૂતકાળનો સને ૧૯૨૦–૨૧ નો આદર્શ છે. આપ એ દર્પણમાં બાર વર્ષ પહેલાના ગાંધીજીને સારી પેઠે નિરખી શકશો. અત્યારે એ આદર્શથી કેટલા બધા ચાતર્યા છો, એની પણ આપને ખબર પડશે. આદર્શથી દૂર થવું એને શું આપ 'પ્રગતિ' માનો છો? જાહેરમાં 'દ્વેષપૂર્ણ વ્યવહાર' 'અંત્યજો તરફ ન રહે તેને માટે જ આપની લડત હતી. પણ હવે તો રોટી બેટી વ્યવહાર અને મંદિરપ્રવેશની પણ આપ હીમાયત કરી રહ્યા છો. આને શું આપ 'પ્રગતિ' કહો છો? અસ્પૃશ્યતાનિવારણમાં રોટી બેટી વ્યવહાર અને મંદિરપ્રવેશ પણ આવી જતો હતો તો સને ૧૯૨૦ માં જ એ વાતને સ્પષ્ટ કહી નાખવી હતી કે અંતિમ ધ્યેય આજ છે. આ તો આપે ખચિત જ હિંદુસમાજ સાથે ઉતરપીંડી કરી છે. એમ કરીને આપ દયાનંદી સમાજની સ્થિતિમાં મૂકાયા છો. આપે મહાન પ્રયત્નથી જે હિંદુ–મુસ્લીમ ઐક્યની ઇમારત ઉભી કરી હતી, તે દયાનંદી ભાઇઓએ 'શુદ્ધિસંગઠન' ને નામે કેવી જમીનદોસ્ત કરી નાખી? આપના ઐતિહાસિક યશસ્વિકાર્યને કેવી ઉંડી ખીણમાં નાંખ્યું? આપ તે ભૂલી ગયા નહિ જ હો. આપના તેવી કકળેલા અંતરાત્માના અવાજો હજુ પણ કાનમાં ભણકારા મારે છે, આવી જ રાષ્ટ્રની એકતા તોડનારી આપની ચાલુ પ્રવૃત્તિથી લાખો સનાતનીઓ કકળી ઉઠ્યા છે. આમાં તો હું દેશનું દુર્ભાગ્ય જ સમજું છું. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય એકતાના સ્થાપક તરીકે જોવા ઇચ્છે છે, પણ આપને હાથે તો જાણે અજાણે એકતા પર કુઠરાઘાત થઈ રહ્યો છે. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય તરીકે સન્માને છે. જો આપ સંસાર સુધારાના વિષમ ક્ષેત્રમાં જ સર્વ શક્તિઓ વેડફવા માંડશો તો આપનું સન્માન રહેશે નહિ. હજુએ એ ક્ષેત્રમાંથી પાછા ફરો!

મહાત્માજી! આપ આપના ગણી શકાય તેવા દંભપાખંડપૂર્ણ અનુયાયીઓની આંખે ન જુઓ. આપે તો અગણ્ય લાખો તરફ પીઠ માંડવી રહી. ગણ્યા ગાંઠ્યા દંભીઓ એ 'અજ્ઞાન' અથવા 'મૂર્ખતા' નો કેવો ગેરલાભ લઇ રહ્યા છે તે આપનાથી છાનું હોય એમ હું ન જ માનું. અસ્પૃશ્યતાનિવારણ કરવા નીકળેલા એ કોઇ ફિરસ્તાઓએ એકાદ અંત્યજને પણ પોતાના ઘરમાં કે કાર્યાલયમાં અપનાવ્યો નથી. વર્ષોના વહાણાં વાયાં! હજુ ત્યાંના ત્યાંજ છે. આવા દંભી અનુયાયીઓનાં અજ્ઞાન અને મૂર્ખ રોગો પણ તેવાં જ બને છે.

અત્યાચાર વિષે શું લખું? માફ કરજો. રાજા ગામેરીનને ગુરુવર્ય મંદિરના ટ્રસ્ટી તરીકે આપજ શું કરવાને પ્રેરી રહ્યા છો? ટ્રસ્ટીનો ધર્મ તો સંસ્થાના ઉદ્દેશ જાળવવાનો હોય. આપ

તો ઉદ્દેશનું ખૂન કરવા, વિશ્વાસઘાત તથા બેવફાઇના ગુનાહ કરવાની તાલીમ શું આપતા નથી? શું સત્યાગ્રહાશ્રમના કોઇ ટ્રસ્ટીને આશ્રમના ઉદ્દેશોનું ખુન કરતો આપ સાંખી શકશો? રાજા ઝામોરીનને સંસ્થામાંથી રાજીનામું આપવાનું આપ કહી શકો પણ ગમે તેવા પણ સંસ્થાના ઉદ્દેશોને ઠોકર મારવાના વિશ્વાસઘાત કે બેવફાઈના પાઠ તો આપ નજ શિખવી શકો.

અમદાવાદના જૈન મંદિરમાં પેસાડવા માટે બાર બાર આના રોજથી અંત્યજોને રોકવામાં આવ્યા અને મંદિર ખુલ્લું મૂકવાનું નાટક ભજવાયું. પણ ધર્મવીર બહાદુર જૈન ભાઇઓએ વેળાસર એ કલંકને ઉગતાં જ ડામી દીધું.

ડૉ. મહાદેવભાઇની સફેરી આંખે જણાયલી ભૂલ મેં પ્રૂફમાં સુધારી હતી, પણ બીબાં ગોઠવનારાઓ ફેર્મ છાપવાની રજા મળ્યા પછી ભૂલો સુધારવામાં કેટલા બેદરકાર હોય છે તે આપનાથી અજાણ્યું ન જ હોય. પુરસદે 'અસ્પૃશ્યોદ્ધાર' તરફ દૃષ્ટિપાત કરશો જ.

વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રીના યથાયોગ્ય.

મારા ઉપરના પત્રનો જવાબ મને નીચે મુજબ મળ્યો:-

યરવડા જેલ,
તા. ૩૦-૧૧-૩૨.

ભાઈ વસંતરામ,

તમારો કાગળ મળ્યો. આગલા વિચારો અને આજના વિચારોમાં કાંઈ ફેરફાર હોય એવું મને ભાસતું નથી. અસ્પૃશ્યતાનિવારણની જે હદ મેં પૂર્વે બાંધી હતી તેજ આજે છે. મંદિર પ્રવેશ ત્યારે પણ હતો. મંદિરો ખોલવાના પ્રયત્ન ત્યારથીજ ચાલતા આવ્યા છે. કાશીવિશ્વનાથમાં અસ્પૃશ્યોનો પ્રવેશ થયો હતો અને તે ઉપર ચર્ચા પણ થઈ હતી. તેને આજે સાત વર્ષ થયાં. એમાં હું સાથે હતો. તમે છાપેલા 'અસ્પૃશ્યોદ્ધાર' માંજ મારો લેખ તમે લીધો છે. તેમાંય મંદિરપ્રવેશ છે. પણ હું જોઉં છું કે તમે તો મંદિરપ્રવેશને તમારી ટીકામાં ઉડાવી દીધો છે. તો એમ કહ્યું છે કે બધા દેવાલયોમાં અંત્યજોને જવાનો હક ન હોઈ શકે. આજે પણ હું એમ કહું છું, પણ જે દેવાલયો જાહેરનાં છે, અને જેમાં અંત્યજેતર બધા હિંદુ જઈ શકે છે તેમાં અંત્યજ જવા જોઇએ એમ મેં પૂર્વે કહેલું અને એજ હું આજે કહું છું. રોટીબેટીવ્યવહાર અસ્પૃશ્યતાનિવારણમાં સમાય છે એમ પૂર્વે ન્હોતું કહ્યું તેમ આજે પણ નથી કહેતો. એ વસ્તુ નોખી છે એમ પૂર્વે કહેલું અને આજે પણ કહું છું.

ઝામોરિનને ટ્રસ્ટના ઉદ્દેશોનો ભંગ કરવાનું મેં સૂચવ્યુંજ નથી. ઝામોરિનની પાસે ટ્રસ્ટ જેવું કાંઈ છેજ નહીં. જે હોય તે ચાલતો આવેલો રિવાજ અને આજની અદાલતોના ફેંસલા છે.

તમને નથી લાગતું કે બીબાં ગોઠવનારાઓએ 'છે' રહેવા દીધો તો દરેક નકલમાંથી તમારે કઢાવવો જોઇતો હતો?

પાખંડ અને અત્યાચારનું તો તમે કાંઈ દૃષ્ટાંતો આપો તો હું જરૂર ઔષધ કરૂં. હાલ જે હીલચાલ ચાલી રહેલી છે તેનો ધીરજપૂર્વક અભ્યાસ કરવાનો તમારો ધર્મ છે એમ મને લાગે છે. તમારા કાગળમાં મને અધીરાઈ અને અનભ્યાસની વાસ આવી છે.

મોહનદાસના બં. મા.

ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેંજ પત્રવ્યવહાર કરવો માંડી વાળ્યો. કારણ કે અનુયાયીઓનાં રમકડાં બનેલા ગાંધીજી કેવળ વિતંડાવાદજ કરી રહ્યા હતા. ઉપરના પત્રમાં જેમ કોઇ વકીલ પોતાના ખરા ગુન્હેગાર અસીલનો બચાવ કરે તેવીજ 'વાસ' આવી રહી છે. અંત્યજોના

મંદિરપ્રવેશ માટે ગાંધીજી અને તેમના અનુયાયીઓએ નામ. વાઇસરૉય અને ધારાસભાના સભાસદોની દાઢીમાં હાથ ઘાલીને જે પજાથી કરી છે તે છુપી રહી નથી. પોતાની દત્તક દેહપુત્રી લક્ષ્મીને બ્રાહ્મણ સાથે પરણાવવાનું ચોકઠું ગાંધીજીએજ ગોઠવ્યું છે. વળી રા. રાજગોપાલાચાર્યની બ્રાહ્મણકન્યા લક્ષ્મીની સાથે પોતાના વાણીયા પુત્ર દેવદાસ સાથે લગ્ન કરાવવામાં આગળ પડતો ભાગ મહાત્માજીએજ લીધો છે. આ રીતે ઉપરથી કંઈ અને અંદરથી કંઈ રમતો રમાય છે. આ વાગ્જાળ હવે કોઇને ફસાવનાર નથીજ. પ્રાચીન વર્ણાશ્રમવ્યવસ્થાને છિન્ન ભિન્ન કરીને બધાને ક્રિશ્ચિયન બનાવવાનો ગાંધીજીનો ઇરાદો હવે છુપો રહ્યો નથી. ક્રિશ્ચિયન પાદરીઓ તો ખુલ્લી રીતે સામા આવે છે ત્યારે ગાંધીજી તો અંદર પેસીને ઉપરથી મોહક વાગ્જાળ બીછાવીને ભયંકર વિશ્વાસઘાતની બાજી રમી રહ્યા છે.

ગાંધીજીના સાદીના સાઠ સુવર્ણસૂત્રો એક પત્રિકારૂપે મેં પ્રકટ કર્યા તે વિષે ગાંધીજીએ એક પત્ર મારા ઉપર લખ્યો તથા એક પત્ર મારા સ્નેહી વૈદ્ય ભાટશંકરભાઈ ઉપર લખ્યો, તેની નકલો આ રહીઃ—

ભાઇ વસંતરામ,

તમારી પહેલી પત્રિકા મને કોઈ ભાઇએ મોકલી છે. તે થોડી વાંચી. આટલું અસત્ય તમે લખી શકો એવી મેં સ્વપ્નામાંએ આશા નહોતી રાખી. મને તો તેથી નુકશાન નહિ થાય. પણ વૈષ્ણવ ધર્મનું શું?

૩૦–૧૧–૩૨. મોહનદાસના બં. મા.

ય. મં.

ભાઈ ભાટશંકર વૈદ્ય,

તમે વસંતરામ શાસ્ત્રીની પત્રિકા મોકલી તે ઉપર ઉપરથી વાંચી ગયો. દુઃખદ છે, પણ મારાથી એનો જવાબ ન અપાય.

૩–૧૧–૩૨. મોહનદાસ ગાંધીના બં. મા.

ય. મ.

ઉપરના પત્રનો જવાબ નીચે મુજબ મેં આપ્યો—

મિતિ મા. સુ. ૭ સં. ૧૯૮૯.

શ્રીયુત મહાત્માજી,

મારી પહેલી પત્રિકા મારા એક વૈદ્યરાજ મિત્રેજ આપને બીડી હતી. એ પત્રિકાથી આપને દુઃખ થવાથી મને પણ દુઃખની લાગણી થાયજ. પણ જ્યારે આપ કરોડો સનાતનીઓની આંતરડી કકળાવી રહ્યા છો, ત્યારે આપના વ્યક્તિગત દુઃખને વધુ મહત્ત્વ આપવું નજ ઘટે.

પત્રિકામાં લખેલાં સૂત્રો મેં આજે નવાં છાપ્યાં નથી. સને ૧૯૨૮ માં 'શ્રી રાજકોટ સનાતન ધર્મસભા' તરફથી તે પ્રકટ થયાં હતાં. મારી પત્રિકામાં તો માત્ર તેનો ઉતારોજ છે. સને ૧૯૨૯ માં તેની એક નકલ આપને મોકલી હતી. જ્યારે આપે તે વિષે કાંઈ ખુલાસો ન જ કર્યો ત્યારે તેની નવી આવૃત્તિ સમયાનુકૂલ પ્રકટ કરી છે. એ પત્રિકાની અસલ આવૃત્તિ આ સાથે છે; તેથી મારે વિષે થયલો આપનો સંદેહ દૂર થશેજ.

આપ જેને 'અસત્ય' કહો છો તેને હું સત્ય માનું છું. પત્રિકામાંનાં વાક્યો આપનાંજ છે અને તે 'નવજીવન' તથા અન્ય વર્તમાનપત્રોમાંથી ચુંટી કાઢેલાં છે. આપના સાહિત્યનો ખૂબ બારીકાઇથી અભ્યાસ કરનાર હું તો પત્રિકામાંનાં વાક્યોને આપના હાર્દ વિચારોના પ્રતિબિંબ તરીકે માનતાં અચકાઉં નહિજ.

છતાં તેમાંનાં વાક્યો તથા વિચારો આપના નથી તેવું જાહેર કરશો તો જે આનંદ મને થશે તે બીજાને નહિજ થાય.

સત્ય અને અસત્યની યથાર્થ ખબર તો ઇશ્વરનેજ છે. મનુષ્યની બુદ્ધિ તેમાં કાંઈ કામ કરતી નથી. તેમાં 'ચકરી આંખ' પણ નિરર્થકજ છે. આપ વર્ષોથી અસ્પૃશ્યોની સાત કરોડની સંખ્યા જણાવી, છેક તદ્દન ખોટું લખીને જનસમાજને ભડકાવી રહ્યા છો. એ વિષેનો આપનો ભ્રમ દૂર કરવા માટે ઘણાએ પ્રયાસો કર્યા પણ આપે તો ખોટી વાતજ પકડી રાખી! તે ભૂલ (હિમાલય જેવી!) રા. ઠક્કરે સુધારી. હજુ પણ ચાર કરોડની સંખ્યા ખોટી છે.

આશ્રમમાંના છગનભાઇ માટે વર્ષોની ફરીયાદ હતી. પણ આપે સત્ય શોધવાની દરકારજ ક્યાં કરી હતી? દશ હજાર રૂપીઆ ઉચાપત થયા ત્યારેજ આપે હોહા કરી મૂકી!

જ્યારે આપના જેવા 'મહાન્ સત્યાગ્રહી'ની આ સ્થિતિ છે તો હું કોણ? સત્ય અને અસત્યનો નિર્ણય શક્તિ અનુસારજ કરવો રહ્યો.

આમાં નુકશાનનો પ્રશ્નજ નથી. આપ હયાત છો, હજુએ ભ્રમ દૂર કરી શકો છો.

આપના પત્રિકામાંના સાફ સૂત્રોથી વૈષ્ણવ ધર્મને તો કાંઇ નુકશાન નહિજ પહોચે.

વળી આપના જેવા મહાન્ સત્યાગ્રહી વર્ષો સુધી સાત કરોડ અસ્પૃશ્યોની તદ્દન ખોટી વાતથી જનસમૂહને ભડકાવતા રહ્યા, તેથી વૈષ્ણવ ધર્મને 'નુકશાન' ન પહોચ્યું તો મારી પત્રિકાથી તેમ થશે એમ હું તો માનુંજ કેમ?

આ સાથે પત્રિકાનો બીજો પણ અંક મોકલું છું. **વસંતરામ**ના યથાયોગ્ય.

ઉપરના પત્રનો કશોય જવાબ મલ્યો નહિ, તેથી બીજો પોસ્ટકાર્ડ નીચે પ્રમાણે મેં લખ્યોઃ—

મા. વ. ૩-૧૯૮૯.

શ્રીયુત મહાત્માજી!

મારી આર્ય સંસ્કૃતિ સંરક્ષક પત્રિકા વિષેનો તા. ૩૦-૧૧-૩૨ નો આપનો પોરટકાર્ડ મળેલો હતો તેના જવાબમાં માર્ગશીષ સુદ ૭ મના રોજ એક પત્ર તથા છાપેલી પત્રિકા વગેરે મેં મોકલ્યાં હતાં. આપે તેનો જવાબ આપવાનો શ્રમ લીધો નથી. આપના જવાબની રાહ જોઉં છું, કારણ કે એ બધો પત્રવ્યવહાર જાહેરમાં મૂકવાનો મારો ઇરાદો છે. વસંતરામના યથાયોગ્ય

ઉપરના પત્રનો મુદ્દલે જવાબ મલ્યો નહિ. છેવટે આ અંકમાં બધો પત્રવ્યવહાર પ્રકટ કર્યો છે.

મુખ્ય પોકાર—મારા બધા પત્રોમાં એક વસ્તુ તો ઓતપ્રોત છે. ગાંધીજીને મેં આગ્રહપૂર્વક લખેલું કે, તમારા અનુયાયીઓના દંભો-પાખંડો અને અત્યાચારોની તપાસ કરો. પણ તેમણે એ વાત પર કદી લક્ષ્ય આપ્યું નથી. જલીયાનવાલા બાગના અત્યાચારો કરનાર અમલદારોનો પક્ષ કરવા માટે બધા માજી વાઇસરોય લોર્ડ ચેમ્સફોર્ડને વગોવે છે. હું કહું છું કે ગાંધીજી લોર્ડ ચેમ્સફોર્ડ કરતાં લગારે ઉદાર નથી. તેમણે હિંદુસ્થાનમાં આવીને પોતાના બદમાશ અનુયાયીઓનો ઢાંકપીછોડોજ કર્યો છે. પણ આખરે પાપ ફૂટ્યું અને ધડસ્ફોટ થયો.

પોત પ્રકાશ્યું—એક ગોરી ચામડીની બાઈ યુરોપથી અહીં આવી. આ બાઈ પહેલા નંબરની પુંશ્ચલી હતી. અહીં પણ તેણે ઘણા શીકાર કર્યા હશે. તેની દુન્યવી ખૂબસૂરતીની આગમાં ઘણા પતંગીયા બન્યા હશે. તેણે જોયું કે જાહેરમાં ૩૫ કરોડ સંખ્યાની જનતાના ઉદ્ધારક ગણાઇએ અને ખાનગીમાં વિષયોની લાલસાઓ તથા તનમનની ચેળ પૂરી પણ કરી શકીએ

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

શ્રીમહાપ્રભુજયન્તીમહામહોત્સવ—પ્રથમ દિવસ કરાંચી તા. ૨૦-૨૧-૨૨-૨૩-૨૪ એપ્રીલ ૧૯૩૩ આ પાંચ દિન સનાતન યુવક સભાનું આઠમું અધિવેશન ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપદે થયું હતું. આજે તા. ૨૦ ના રોજ સાંજના ૭ વાગે વેદ ભગવાનની સ્વારી સાથે શ્રીવલ્લભપ્રભુનું સરઘસ ચાર ઘોડાની ગાડીમાં નિકળ્યું હતું, હજારો માણસોની મેદનીથી ભરેલ આ સરઘસમાં નગરના અનેક સદ્‌ગૃહસ્થો અને પંડિતોની ગાડીઓ તથા ગાયકોની ગાડીઓ હતી. નગરકોટા, શિકારપુર, હૈદ્રાબાદ વિગેરેથી ઘણા વૈષ્ણવો આવ્યા હતા, ચતુર્વિધ બેન્ડ, મહાવીરદલના તથા સનાતન ધર્મ યુવક સભાના સ્વયંસેવકો સાથે શ્રીવલ્લભસ્વયંસેવક મંડળના સ્વયંસેવકો હતા, સરઘસ ત્રણ ચાર માઇલના રસ્તામાં પસાર થઇ અધિવેશન માટે સ્વતંત્ર બનાવેલા વિશાળ મંડપમાં પહોંચ્યું હતું. સરઘસમાં નિસાદીરામજી ભજનિકે લોકોનાં મન બહુજ આકર્ષ્યાં હતાં.

મંડપમાં શ્રીમહાપ્રભુજીના દિગ્વિજયનું ગીત ગાયા બાદ ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીએ શ્રીવલ્લભપ્રભુના ચારિત્ર્ય ઉપર સુંદર વિવેચન કર્યું હતું, અન્ય વિદ્વાનોનાં તે પ્રસંગાનુસાર વિવેચનો થયા બાદ શ્રીમહાપ્રભુજીના જયઘોષપૂર્વક કાર્ય પૂર્ણ થયું હતું.

બીજો દિવસ—તા. ૨૧ ના રોજ ૭ વાગેથી અધિવેશનનો પ્રોગ્રામ શરૂ થતાં ગંગારામજી હરવાદના ભજનથી જનતામાં અપૂર્વ શાંતિ આવી ગઇ, ત્યારથી પાંચ હજારની મેદની હોવા છતાં એક પણ બીજા શબ્દનો અવાજ આવતો ન હતો, (રસમાં નિમગ્ન થઇ) પ્રમુખપદ માટે વિનતિ થતાં પ્રમુખપદે મહારાજશ્રીએ પધારીને આ સનાતન યુવક સભાના અધિવેશનનું પ્રમુખપદ સ્વીકારવા ખાસ પ્રયોજન જણાવતાં કહ્યું કેઃ—શ્રીમહાપ્રભુજીની જયન્તીનો સુંદર અવસર સાથે હોવાથી તે મહાન્ આચાર્યશ્રીનો સાર્વજનિક ઉત્સવ ઉજવાય, અને તે દ્વારા અખિલ સનાતન જનતાના ઉપર શ્રીમહાપ્રભુજીએ જે ઉપકાર કર્યો છે તે સનાતની પ્રજા જાણે તે માટે આ પદ મેં લીધુ છે. પછી સનાતન ધર્મનું મુખ્ય અંગ આચારશુદ્ધિ આપે જણાવ્યું હતું. વર્ણ ધર્મ આશ્રમધર્મની સુંદર વ્યવસ્થા મહારાજશ્રીએ જણાવી હતી.

ત્યારબાદ કવિરત્ન પં. અખિલાનંદજીનું બે કલાક સુધી વિદ્વત્તાપૂર્વક વ્યાખ્યાન થયું હતું. જેમાં આજકાલના નાસ્તિકોનાં મુખમર્દન શાસ્ત્રીય પ્રમાણોથી કર્યા હતાં, આ વખતે ઘણા નાસ્તિકોએ પોતાની ગેરસમજનો પશ્ચાત્તાપ કર્યો હતો બાદ ગો. શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીને, કરાંચીના વૈષ્ણવ અને સર્વ સનાતની પ્રજા તરફથી અભિનંદન પત્ર આપવામાં આવ્યું હતું. જે અભિનંદન પત્ર અત્રેના રઇસ પંડ્‌-સેન સદરામ જેઠલી બી. એ. મ્યુનીસીપલ કાઉન્સીલર સાહેબ (ભૂત પૂર્વ) ઓ. મેજીસ્ટ્રેટે આપ્યું હતું.

અભિનંદન પત્રનું ઉત્તર આપતાં મહારાજશ્રીએ જણાવ્યું કે અમને જે અત્રે અભિનંદન પત્ર આપી કુસુમાન કરવામાં આવ્યું છે તેથી અમને આશ્ચર્ય લાગે છે, જેમ એક સીપાહીની ફરજ છે કે, પોતાની ફરજ બજાવવા તેણે રાત્રે પહેરા ઉપર જાગતા અને હોંશીઆર રહેવું જોઇએ, તેવી રીતે હું ધર્મનો સીપાહી છું. માટે મારી ફરજ છે કે આવા ભયંકર સમયે મારે સાવધાનતા પૂર્વક જાગતા રહી ધર્મરક્ષા માટે સર્વથા પેરો ભરવો જોઇએ એમાં હું મારી ફરજ સમજુ છું, આ ફરજ હું અદા કરૂં અને તેમાં ન્યૂનતા હોય તે પૂર્ણ કરવા શ્રીબાલકૃષ્ણ પ્રભુને પ્રાર્થના કરૂં કે મારી ફરજ બજાવવામાં મને પૂર્ણ સમર્થ બનાવે. આ પત્રદ્વારા અમને આજકાલના વાતાવરણમાં થતી ધર્મની હાનિનું સૂચન કર્યુ છે, તે બરોબર છે એને માટે અખિલ ભારતમાં રચનાત્મક કાર્ય કરવાની જરૂર છે. આખા ભારતમાં જે વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ વિગેરે જે જે શુદ્ધ સનાતની-સંસ્થાઓ છે તે સંસ્થાઓની સાથે મળીને અથવા તેવા આદર્શવાળી સ્વતંત્ર સંસ્થાઓ પ્રકટ કરી અત્યારે સંઘશક્તિથી કામ કરવાની જરૂર છે. ત્યારબાદ રાતના સાડા અગી-આર વાગે જયઘોષ અને શાંતિથી સભા વિસર્જન થઇ હતી.

તૃતીયદિન તા. ૨૨ ના રોજ ૭ વાગ્યાથી ભજનિકોનાં રસિક કીર્તન શરૂ થયાં. આ ભજનિક સમાજને અનુસાર કૃષ્ણકીર્તન ગાતા હતા. નિસાદીરામજી રામભક્ત છે, સ્વયં કવિતાઓ ખુદ બનાવીને ગાતા હતા.

ત્યારબાદ શાસ્ત્રીજી શ્રીમનલાલ સાહિત્યભૂષણ શુદ્ધાદ્વૈતરત્ન તથા પં. તાંત્રાચાર્ય રૂપનાથ ઝાનાં આચાર અને વિચાર ઉપર વ્યાખ્યાન થયાં હતાં. ત્યારબાદ ગીતાના પ્રમાણેથી અસ્પૃશ્યતા નિર્વચન એ વિષય ઉપર પં. અભિજ્ઞાનંદજીનું વ્યાખ્યાન શરૂ થતાં તેમણે સામાજીકો વેદોના ખોટા અર્થ શી રીતે કરે છે તે વખતોવખત સત્યાર્થપ્રકાશના ફકરા ટાંકીને બતાવ્યા હતા. સત્યાર્થપ્રકાશમાંથીજ સિદ્ધ કરી બતાવ્યું કે સ્વયં દયાનંદ અસ્પૃશ્યતા માનતા હતા. આજકાલના તેમના શિષ્યો દયાનંદને બહાને અનાચાર કરી રહ્યા છે. પછી ગીતાજીમાં "વિદ્યાવિનયસમ્પન્ને" શ્લોકનો અર્થ સમજાવ્યો હતો. તેમાં સમદર્શી થવાનું લખ્યું છે, સમવર્તી થવાનું લખ્યું નથી. વગેરે વેદશ્રુતિનાં અનેક વચનના પ્રમાણ આપ્યાં હતાં અને ગીતાદ્વારા અસ્પૃશ્યતા સિદ્ધ કરી બતાવી હતી.

અન્તે ત્રણ પ્રસ્તાવ રજુ કર્યા હતા. પહેલો ઠરાવ તો ગૌર તલાક બીલ એટલે છૂટા છેડાના બીલનો ઘોર વિરોધ જાહેર કરી, તેનો તાર વાઈસરોય ઉપર કરવાનો ઠરાવ કર્યો હતો. બીજો ઠરાવ મંદિરમાં અછુતોનો પ્રવેશ કરવાના રંગાચાર્યના બીલ સામે ઘોર વિરોધ જાહેર કરી તેનો તાર વાઈસરોય ઉપર મોકલવાનો ઠરાવ કર્યો હતો, ત્રીજો ઠરાવ અત્રે સંસ્કૃત મહાવિદ્યાલય પ્રકટ કરવા માટેનો હતો, તે વિદ્યાલયમાં હિન્દી, ઇંગ્લીશ, અને સંસ્કૃત, શિખવવાનું રાખવામાં આવે. તે માટે ફંડ કરવાની પણ ગોઠવણ કરવામાં આવી હતી, અને શાંતિથી રાતના બાર વાગે સભા જયઘોષ સાથે વિસર્જન થઇ હતી.

ચતુર્થદિન તા. ૨૩ રોજ પં. અભિજ્ઞાનંદનું શ્રૌત પ્રમાણોથી મૂર્તિપૂજા અને સનાતન ધર્મની વિશાલતા દર્શાવનારૂં વ્યાખ્યાન એક કલાક થયું હતું. ત્યારબાદ ગો. શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીનું વિદ્વત્તાપૂર્વક રસિક વ્યાખ્યાન થયું. બરોબર રાતના એક વાગે પૂર્ણ થયું હતું.

વિદ્વાનનાં સન્માન.

સુરતના વૈષ્ણવોની વિનતિને માન આપીને પુષ્ટિસમ્પ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન ગો. શ્રી ૧ શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહારાજ મુંબઈથી તા. ૩-૬-૩૩ ની રાતના રવાના થઇ બીજે દિવસે સવારના નવ કલાકે અત્રે પધાર્યા હતા તે વખતે પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રી એમ. એ., શ્રી કૃષ્ણલાલ ચુનીલાલ મજમુદાર, શ્રી હીરાલાલ શેઠીઆ, શ્રી હરકીશનદાસ મહેતા, શ્રી નરોત્તમદાસ ચોકસી, શ્રી કૃષ્ણરામ [illegible] વિગેરે વૈષ્ણવોએ મ્હોટી સંખ્યામાં હાજર રહી પુષ્પમાળા વિગેરેથી સત્કાર કર્યો હતો અને તેજ [illegible] સાંજના શ્રીમદ્પ્રભુજીની બેઠકના ચોકમાં પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર અર્પણ કરવાનો મેળાવડો સાંજના ચાર વાગે પૂજ્ય મહારાજશ્રીના પ્રમુખપણા નીચે કરવામાં આવ્યો હતો. જેમાં સ્થાનીક સુપ્રસિદ્ધ સ્ત્રીપુરુષોએ મ્હોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી. તદુપરાંત મુંબાઇથી શ્રીયુત હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી, અમદાવાદથી પ્રો. જેઠાલાલ શાહ, વડોદરાથી પ્રો. ગોવિન્દલાલ ભટ્ટ, નડીયાદથી શ્રીયુત ચીમનલાલ શાહ, જંબુસરથી રાવબહાદુર [illegible] આ મેળાવડામાં ભાગ લેવા ખાસ આવ્યા હતા.

પ્રારંભમાં વધાઈ અને શ્રીકૃષ્ણકીર્તન થયા બાદ વકીલ મણીલાલભાઈએ પ્રમુખશ્રી માટે દરખાસ્ત મુકતા તથા તેને ટેકો મળ્યા બાદ પૂ. ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદય સભાપતિને બિરાજ્યા બાદ શ્રીયુત મણીલાલભાઇએ ઉપક્રમ કરતાં જણાવ્યું હતું કે આજ જ્ઞાનના ઉત્સવનો દિવસ છે. વિદ્વાનોને પોતાના જ્ઞાનનો વિચાર કરવાનો છે. પૂ. શાસ્ત્રીજીએ સંસ્કૃત ભાષાનો સારો અભ્યાસ કરી પૂર્વજોની વિદ્યા મેળવી એમ. એ. ની ડીગ્રી મેળવી પ્રોફેસર તરીકે સંસ્કૃત સાહિત્ય વિદ્યાર્થીઓને શીખવ્યું. વિદ્વાનો ઘણા થયા છે અને થશે પણ વિનામૂલ્યે લેખનદ્વારા, વ્યાખ્યાનોદ્વારા પોતાની વિદ્યાનું દાન કરી, પુષ્ટિમાર્ગીય સાહિત્ય સેવાની નિઃસ્વાર્થપણે સેવા કરી અપ્રગટ સાહિત્યને પ્રસિદ્ધ કરવામાં કોશીશ કરી, ઘણાં પુસ્તકો છપાવ્યાં છે. વિનામૂલ્યે વહેંચવાથી તેમને હજારો રૂપીયા અપાય છે તે એમનું સંપ્રદાયમાં સ્થાન છે અત્રે ૭ થી ૧૦૫ અને ૨ થી ૬ શ્રીસુબોધિનીજી સમજાવે છે. શાંકર, રામાનુજ મત તાત્પર્ય પણ જણાવે છે. સમ્પ્રદાય પાછળ પ્રખર પ્રવાસ કરે છે અને તે સેવાના બદલામાં માનપત્ર અપાય તો તેમાં આપણી શોભા છે. પૂના, મુંબઇ, સુરત, ઇત્યાદિ સ્થળેથી જે કાર્ય કર્યું છે તેજ આપણે કરીએ છીએ. આજની સભાના પ્રમુખશ્રી સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચારાર્થે અખંડોત્સાહ સેવતા તથા યોગ્ય પ્રવાસદ્વારા પ્રવર્તન કરતા અને સામ્પ્રદાયિક તેમજ ગુર્જર સાહિત્ય પ્રતિ અભિરુચિ ધરાવતા શ્રીવલ્લભકુલના બાલક તરીકે પહેલવહેલાજ

છે. પુષ્ટિમાર્ગની પરિસ્થિતિ જાણવા તેમજ યુવક વર્ગને ધર્મ પ્રતિ અભિરુચિ વધારવા આપ સતત પ્રયત્ન કરે છે. વગેરે કહ્યા બાદ શ્રીયુત મુખ્યાજીવાલાએ તાર અને પત્રાદિ વાંચી સંભળાવ્યા હતા જેમાં જામનગરથી ગો. શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ, માંગરોળથી કાશીરામ શાસ્ત્રી, રાજકોટથી પરવારીજી, અમદાવાદથી શ્રીમનલાલ ગિરિધર પરીખ, શ્રીયુત જયન્તીલાલ, વડોદરાથી મધુભાઈ કોટાવાળા, મુંબાઈથી શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્, જમ્બુસરથી શ્રી પુષ્ટિમાર્ગીય મણ્ડલ વિગેરેના મુખ્ય હતા. ત્યારપછી શ્રીયુત હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી 'શબ્દાદ્વૈત વિશારદે' બોલતાં જણાવ્યું હતું કે પુષ્ટિ સંપ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ પંડિતને માનપત્ર આપવાનો સમારંભ છે. એ વ્યક્તિને યોગ્ય માન અપાય છે તેથી કયું વૈષ્ણવ હૃદય ખુશી નહિ થાય? કોઈની વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમાં એમના નામથી કોઈ અજ્ઞાત નથી. ગોસ્વામી બાલકો તેમના માટે જે આગ્રહ ધરાવે છે તે યોગ્યજ છે. શ્રીસુબોધિનીજીનું સતત વાચન, સમ્પ્રદાયના સિદ્ધાંત પ્રચારાર્થે પરિશ્રમ ષટ્દર્શનાચાર્ય પં. પદ્મનાભ સાથે અણુભાષ્યના વૈદિકત્વ માટે કરેલી ચર્ચાજ વિ. શાસ્ત્રીજીની ધર્મ પ્રતિ લાગણી અને સિદ્ધાંતોનો પ્રપૂર્ણ અભ્યાસ જણાવે છે. ત્યારબાદ શ્રીયુત જેઠાલાલ શાહ એમ. એ. પણ કેટલુંક પ્રાસંગિક કહેતા શાસ્ત્રીજીએ અત્યાર સુધી · · · ની સમ્પ્રદાયની સેવા, વિરોધીઓને આપેલાં જવાબો વિગેરે કેટલીક મુદ્દાની બાબત વિવેચી. પછી શ્રીયુત શંકરલાલ વકીલે ભરુચના વૈષ્ણવોની ફરજ પરત્વે કેટલુંક નિરૂપણ કરી શાસ્ત્રીજીએ ભરુચના વૈષ્ણવો પર કરેલાં ઉપકારનું દિગ્દર્શન કરાવ્યા બાદ શાસ્ત્રીજીને આપવાનું માનપત્ર વાંચી સંભળાવી પૂજ્ય પ્રમુખશ્રીને શાસ્ત્રીજીને પ્રદાન કરવા વિજ્ઞપ્તિ કરી હતી. તે માનપત્ર નીચે મુજબ હતું:—

માનપત્ર.

વે. શા. સં. પરવાસ્યપ્રમાણુ પ્રોફેસર મગનલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી એમ. એ. ભરુચ.

પરમમાન્ય શાસ્ત્રીજી, આપની જન્મ ભૂમિભરુચ હોવા છતાં સરકારી નોકરીને અંગે અત્યાર સુધી અહીં વધારે વખત રહેવાનો અવકાશ તો ન હતો. પણ જ્યારથી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થયા ત્યારથી પોતાની જન્મભૂમિમાં આવી છેલ્લા એક વર્ષથી પ્રતિદિન શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના અપાર ગ્રન્થોનું રહસ્ય સ્પષ્ટ રીતે અમને સમજાવી અમારા ઉપર જે મહાન્ ઉપકાર કર્યો છે તેને માટે અમે બધા જીવન પર્યન્ત આપના ઋણી છીએ. અને તે ઋણની ભાવના અને આપના પ્રતિ અમારો નૈસર્ગિક આદર આ માનપત્ર દ્વારા અમે આજે વ્યક્ત કરીએ છીએ.

આપના કુટુમ્બનો અને અમારા કુટુમ્બોનો સંબંધ લગભગ સેંકડો વર્ષનો જૂનો છે. આપના પૂર્વજો પહેલેથી જ અમારા પૂર્વજોને શ્રીમદ્ભાગવતાદિ જેવા ભગવચ્છાસ્ત્રનું તાત્પર્ય સવિસ્તર સમજાવતા આવ્યા છે. આપે આપના કુલની આ અનુપમ પરંપરા સર્વોત્કૃષ્ટ રીતે જાળવી છે અને જેમ શ્રીમદ્ભાગવત નિગમકલ્પતરુનું પરિપક્વ ફલ છે તેમ આપ પણ આપના કુટુમ્બનું પરિપક્વ ફલ છો. આપનો એક ઉત્તમ બ્રાહ્મણ કુટુમ્બમાં જન્મ, બાલ્યાવસ્થાથી જ આપનું ધાર્મિક શિક્ષણ, એક વખતે વિરલ ગણાતી અંગ્રેજી કેળવણીનો આપે લીધેલો લાભ, પશ્ચિમની સંસ્કૃતિથી અલિપ્ત રહીને પ્રાચીન ભારતીય સંસ્કૃતિનો આચાર અને વિચારદ્વારા આપે કરેલો આગ્રહ, સરકારી નોકરીમાં આપે મેળવેલું સન્માન અને નિવૃત્તિકાળમાં જન્મભૂમિમાં આવી પોતાની કુલપરંપરા તરફ આપે આપેલું લક્ષ આ પ્રમાણેની આપના જીવનની રૂપરેખાનો વિચાર કરતાં અમને સાશ્ચર્ય આનન્દ થાય છે અને આપના પ્રતિ અમારો આદર વધતો જાય છે.

આપે કોલેજમાં સંસ્કૃતનું અધ્યયન કરીને કેવલ ભગવત્કૃપાના બળેજ બીજી બધી વિદ્યાએ હસ્તગત કરી છે. વિદ્યાગુરુની અથવા ગોસ્વામિગુરુની કોઈ પણ વ્યક્તિના આશ્રય વિનાજ આપે મેળવેલું ષડ્ શાસ્ત્રનું અને તેમાં પણ વિશેષતઃ ભગવચ્છાસ્ત્રનું જ્ઞાન અનુપમ છે. આપની આ સ્વતઃસિદ્ધ વિદ્યા જોઈને આધુનિક વિદ્વાનો પણ મુગ્ધ થાય છે.

આપે પુષ્ટિમાર્ગની કરેલી સેવા અવર્ણનીયજ છે. સમ્પ્રદાયના સંસ્કૃત ગ્રન્થોને શુદ્ધ રૂપમાં પ્રકટ કરીને અને અસંખ્યવાર લેખો લખીને અને ભાષણો પણ આપીને પુષ્ટિમાર્ગને આ યુગમાં અંધકારમાંથી પ્રકાશમાં લાવવાનું માન જો કોઈ પણ વ્યક્તિને યથાર્થ રીતે ઘટતું હોય તો તે આપને જ ઘટે છે. એમ કહેવામાં બે મત સંભવતા જ નથી. સમ્પ્રદાયનો ઇતિહાસ કહે છે કે સમ્પ્રદાય ઉપર જ્યારે જ્યારે

વિપત્તિ આવી પડતી ત્યારે ત્યારે મહાપુરુષોનો પ્રાદુર્ભાવ અવશ્ય થતો હતો. આ પ્રમાણે જ શ્રીવિઠ્ઠલેશપ્રભુ, શ્રીગોકુલનાથજી, શ્રીપુરુષોત્તમજી અને પંડિત ગટ્ટુલાલજી પોત પોતાના સમયમાં વાદીઓના પ્રહારોને દૂર કરીને સમ્પ્રદાયની સેવા કરી ગયા છે. તે જ પ્રમાણે આપ પણ વર્તમાન કાલમાં અનેક વાદીઓના આક્ષેપો દૂર કરી સમ્પ્રદાયની સેવા કરી રહ્યા છો. આપ સત્યવક્તા અને નિઃસ્પૃહ છો અને તેને પરિણામે કદાચિત આપની વાણીમાં કઠોરતાનો આભાસ જણાય, પણ આપના સહવાસથી અમને જણાય છે કે આપના હૃદયની મૃદુતા ખરેખર લોકોત્તર જ છે. વિદ્યા અને સરકારી અધિકારનો સુયોગ હતો છતાં પણ આપની સરલતા સર્વને આકર્ષી રહી છે. શ્રીવલ્લભાધીશનું શરણ, શ્રીસુબોધિન્યાદિ ગ્રન્થોનું દર્શન અને શ્રીરાધિકાનાથનું આરાધન કરીને આપે વૈષ્ણવી સૃષ્ટિને બતાવી આપ્યું છે કે મનુષ્ય જીવન કેવી રીતે સફલ થઈ શકે છે ? ગોસ્વામિકુલના મહારાજશ્રીઓને કટુ પણ સત્ય અને હિતકારક વચનો કહેવાના જે પ્રસંગો આપને પ્રાપ્ત થાય છે તે શ્રીમહાચાર્યચરણમાં રહેલો આપનો દૃઢ ભાવ જ સિદ્ધ કરે છે. આ પ્રમાણે આપ સમ્પ્રદાયની જ્ઞાનમંજૂષા છો, સમ્પ્રદાયના ભાવના હૃદય છો.

આપ શાન્ત અને સુખિ દીર્ઘાયુ ભોગવો અને સમ્પ્રદાયની પૂર્વવત્ સેવા કરો એજ અમારી ભગવાન પ્રતિ પ્રાર્થના છે.

અમે છીએ,

મિતી સં. ૧૯૮૯ ના }
જ્યેષ્ઠ શુક્લ ૧૧ ભરૂચ }

આપના ઋણી અને ગુણાનુરાગી
ભરૂચના સ્નેહી વૈષ્ણવો.

સભાપતિશ્રીનું વ્યાખ્યાન—સભાપતિ ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદયે મજકુર માનપત્ર નિજ હસ્તારવિન્દે શ્રીયુત શાસ્ત્રીજીને આપ્યા બાદ વ્યાખ્યાન કરતાં જણાવ્યું હતું કે આજે મ્હને અત્યન્ત હર્ષ થાય છે કે ભરૂચના વૈષ્ણવોએ પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર આપવાના મેળાવડામાં પ્રમુખ તરીકે મ્હને ચૂંટી કાઢયો છે તે માટે હૃદયમાં આનન્દ થયો છે. સમ્પ્રદાયના વિદ્વન્મણિઓની કદર કરવી ઘટે અત્યાર સુધીમાં જેટલું કાર્ય કરવું જોઈએ તેટલું કરી શક્યા નથી તેનું કારણ માત્ર તેમની કદર થઈજ નથી. વિદ્વાનોને કાર્યદિશા સૂચવવી પ્રોત્સાહન આપવું તે આપણું કર્તવ્ય છે. અહીંના વૈષ્ણવો તરફથી શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર આપતાં મ્હને આલ્હાદ થાય છે. તેમની વિદ્વત્તાના વખાણ મ્હારી પહેલાના વક્તાઓએ કર્યા છે તેથી વધુ જરૂર નથી. મુંબાઈ અને પૂનામાં મ્હેં તેમનાં વ્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે. તેમની વ્યાખ્યાનશૈલી સુન્દર હોઈ શ્રવણ કરનારના હૃદયમાં સોંસરી પેસી જાય છે. તેનો લાભ ભરૂચના વૈષ્ણવો લઈ રહ્યા છે તેથી મને અત્યન્ત આનંદ થાય છે. આપણે પુષ્ટિમાર્ગના સિદ્ધાન્તો સમજવા જોઈએ નહિ તે આપણે તેનું આલોચન કરી શકશું નહિ.

શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણે વેદ, ગીતા, સૂત્ર, ભાગવત, એ ચાર પ્રમાણોથી આપણા સમ્પ્રદાયના સિદ્ધાન્તોને આદર્શો સેવ્યા છે અને તે અત્યારે પણ તેવા ને તેવાજ છે. શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરે યદાયદાહિ ધર્મસ્ય એ ગીતોક્ત પ્રતિજ્ઞાનુસાર દૈવીજીવોના ઉદ્ધારાર્થે અને ભક્તિમાર્ગનો કીર્તિધ્વજ ફરકાવવા આ ભૂમંડલ પર પ્રાકટ્ય કર્યું તે સમય અત્યારે જેમ કર્મ અને જ્ઞાનાદિ માર્ગો લુપ્ત થઈ ગયા છે એવા અનુષ્ઠાનો દુષ્કર છે. નાસ્તિકવાદ અને સંયમહીન સમયમાં તે કષ્ટસાધ્ય થઈ પડે છે. એટલે તે કરી શકાતાજ નથી તેથી શ્રીકૃષ્ણનું નામસ્મરણ કરીનેજ જીવ પોતાનો ઉદ્ધાર કરી શકે છે. એટલે મહાન દુષ્કર હતો તેથી આપશ્રીએ પુષ્ટિસ્થ સર્વ જીવોનો વિવેકાનુસાર ઉદ્ધાર અષ્ટાક્ષરમંત્રથી કર્યો હતો અને શ્રીગુસાંઈજીના સમયમાં પણ સર્વ પ્રાણીનો ઉદ્ધાર કૃપાબલેજ છે. પ્રો. શાસ્ત્રીજીએ શ્રીમહાચાર્યચરણ અને શ્રીપ્રભુચરણના સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તપ્રતિપાદક સર્વ તત્વને પોતાના હૃદયમાં ઓતપ્રોત કર્યું છે. એટલુંજ નહિ પણ પુષ્ટિમાર્ગનાં આકર ગ્રન્થોનો ઉપદેશ કરે છે. એક સમય અંધકાર યુગનો હતો કે જ્યારે સમગ્ર સમાજમાં અજ્ઞાનતા હતી (અમારામાં અને વૈષ્ણવ વર્ગમાં) કુપ્રથાઓ અને રૂઢીઓ પણ પેઠેલા હતા. સમ્પ્રદાયનું સાહિત્ય અન્ય વ્યક્તિ વૈષ્ણવ સિવાય વાંચી ન શકે. હસ્તલિખિત સાહિત્ય છપાવી ન શકાય, ઇત્યાદિ માન્યતાઓને લીધે પુષ્ટિમાર્ગને કેટલું સહેવું પડયું છે અને કેટલુંક ગ્રન્થ સાહિત્ય નષ્ટ થઈ ગયું છે. અત્યારે જમાનો પ્રકાશયુગનો છે. સમાજમાંથી અજ્ઞાનતા નાશ થતી જાય છે. શાસ્ત્રીજી જેવા વિદ્વાનો સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તપ્રચારનું કાર્ય નિરપેક્ષતાથી સારી રીતે કરી રહ્યા છે. ભગવાન શ્રીવલ્લભાધીશ્વર તેને ચિરાયુષ્ય કરે અને સમ્પ્રદાયની સેવા કરાવતા રહે વૈષ્ણવો તેમના દ્વારા સિદ્ધાન્ત શ્રવણનો વિશેષ લાભ લે એ અમે આગ્રહપૂર્વક સૂચવીએ છીએ.

પ્રો. ગજ્જલાલ શાસ્ત્રીજીનું ભાષણ—પ્રો. શાસ્ત્રીજીએ માનપત્રનો સ્વીકાર કરી જવાબમાં ભાષણ કરતાં જણાવ્યું હતું. આપે મારા પ્રતિ ભાવ દર્શાવ્યો છે તેને માટે માત્ર મારી ભાષામાં ઋણ અર્થાત્ કરજ એ એકજ શબ્દ છે. અન્ય મારે વિષે ગમે તે કહે પરન્તુ અરૂચની કેવળ વૈષ્ણવી સૃષ્ટિજ નહી પરન્તુ મ્હારા જ્ઞાતિબન્ધુઓએ પણ આ સભામાં ઉપસ્થિત થઇને આપે સર્વે મળીને મને એકજ ભાવથી આદર આપ્યો છે આથી મને આનંદ થાય છે કે આખા ભરૂચની મ્હારા ઉપર અભિરૂચિ છે. પંદર માસથી મારી સ્થિતિ અહીં છે. શ્રવણની અભિલાષાવાળાઓને મેં ઘણાઓને ભણાવ્યા, પત્રાવલંબન જેવા કઠિન અને શિક્ષાશ્લોકી જેવા સહેલા ગ્રન્થો ઉપર ધ્યાન અપાયું છે. શ્રીયમુનાષ્ટક, સિદ્ધાન્ત–મુક્તાવલી, બાલબોધ અને પુષ્ટિપ્રવાહમર્યાદાભેદ અને આવતી કાલે સિદ્ધાન્તરહસ્ય શરૂ કરવાનો છું. એક સંયોગ છે. સિદ્ધાન્તરહસ્ય વાંચવાનો પ્રારંભ અને તેજ દિવસે શ્રીમહાપ્રભુજીના રાજકુમાર શ્રીવ્રજનાથલાલજી બાવાનું અત્ર પધારવું. સિદ્ધાન્તરહસ્ય એટલે બ્રહ્મસંબંધનું રહસ્ય. આપણે કોણ? ક્યાંથી આવ્યા? ક્યાં જવું છે ઈત્યાદિ અષ્ટ શ્લોકમાંજ શ્રીમહાપ્રભુજી તેનું નિવેદન કરી ગયા છે. વિ. કહી બ્રહ્મસંબંધનું રહસ્ય સમજાવ્યું હતું. ત્યાર બાદ કેટલાક સામ્પ્રદાયિક સ્વરૂપનું દિગ્દર્શન શ્રીગીતા ભાગવત; નિબંધાદિના સૂત્રોદ્વારા કરાવી જ્ઞાન અને ભક્તિની સમીક્ષા કરી હતી. વળી આગળ બોલતાં કહ્યું હતું કે માહાત્મ્યજ્ઞાન એ ભગવત્પ્રાપ્તિનું પહેલું પગથીયું છે. માહાત્મ્યજ્ઞાન પછી સ્નેહ તે પછી ભક્તિ અને તેનું પરમ ફળ ભગવત્પ્રાપ્તિ છે. શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્ય જેવા આચાર્યો આ ભૂમંડળમાં થયા નથી. તેમના સમા ગુણવાન, આદર્શ, અને ભક્તિપ્રણેતા આદર્શ આચાર્ય ગુરૂ મને ભવોભવ મળો વિ. કહી પોતાનું વક્તવ્ય સમાપ્ત કર્યું હતું. ત્યાર બાદ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય વક્તાઓ અને આગન્તુક ગૃહસ્થોનો આભાર મનાયા પછી મેળાવડો શ્રીગોવર્ધનનાથજીના જયઘોષ વચ્ચે વિખરાયો હતો.

ધારીમાં શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન—કેસરીયા મંડળીવાળા ભાઇ ત્રિભુવનદાસ રણછોડદાસના અંતઃકરણમાં ઘણા દિવસથી એવી ભાવના હતી કે સારા સારા ભગવદીયોનો સમૂહ એકત્ર કરી તે સમૂહમાં બેસી શ્રીમહારાણીજીની ભાવના વિચારવી. આવો મનોરથ ઉદ્‌ભવતાં તે અનુસાર તેમણે શ્રીગોસ્વામી બાલક આગળ વિનંતિ કરતાં તેઓશ્રીની આજ્ઞા અનુસાર કોઈ સારા સ્થલે શ્રી યમુનાજીનાં ૪૧ પદનો એક પાઠ એવા ૪૧ પાઠો દરરોજ કરવા અને તે ૪૧ ભગવદીયોએ સાથે મળીને ૪૧ દિવસ સુધી સંયમ પૂર્વક કરવા. આ પ્રમાણે આજ્ઞા લઇને તેને માટે ત્રિભોવનદાસભાઈ પોતાના વતન તરફ કાઠીયાવાડમાં સારૂં સ્થળ શોધવા નીકળતાં અમો ધારીના વૈષ્ણવોના સદ્‌ભાગ્યે તે કાર્ય ધારીમાંજ આરંભવાનું નક્કી થયું. પોરબંદરના વૈષ્ણવોનો ખુબ આગ્રહ પણ અમારા ઉપર શ્રીયમુનાજીની કૃપાએ અમારા ગામની ભાગોળે વહેતી બન્ને નદીયોએ ધારીને માટે અનુમોદન આપ્યું તે પ્રમાણે આમંત્રણ થતાં સારા સારા ભગવદીયો અમારે આંગણે આવવા લાગ્યા. ગત વૈશાખ સુદી ૧૦ શુક્રવારના મંગળમય પ્રભાતે ગામને પાદર વહેતી ત્રિવેણીમાં સ્નાન કરી અસ્પર્શમાં રહી અત્રેની હવેલીના બગીચામાં ઘણા ભગવદીયો ૪૧ દિવસના નિયમપૂર્વક શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન કરવા બેસી ગયા.

પ્રભાતના ચાર વાગતાં ઉઠી શૌચાદિક કર્મથી પરવારી અસ્પરામાંજ એક આસન ઉપર બેસી પ્રથમ શ્રીયમુનાજીનાં ચિત્રજી સમીપમાં પધરાવી તેમનું ધ્યાન કરી શ્રીયમુનાષ્ટકના પાઠ નવ વખત કરી પછી "પ્રિયસંગ રંગ ભર કલોલ" એ પદથી શરૂઆત કરી "શરણ પ્રતિપાલ ગોપાલરતિવર્ધની" ત્યાં સુધીનાં ૪૧ પદનો એક વખતનો એક પાઠ ગણી એવા ૪૧ પાઠો મધ્યાન્હ કાલ સુધીમાં પુરા કરતા. ત્યારબાદ એક વખત મહાપ્રસાદ લઈ બ્રહ્મચર્યાદિનું સેવન કરી બાકીનો સમય ભગવદ્ ટહેલ અને ભગવદ્ સત્સંગમાં વ્યતીત કર્યો. થોડાં બહેનો પણ તેમાં જોડાયાં. તેમનાં આસન અલગ હતાં.

રાત્રિના ૧૧ વાગતાં સુધી ભગવદ્‌વાર્તામાં શ્રીયમુનાજીના પદના ભાવો વિચારાયા. ચતુરાઈ આદિ મહાન ભગવદીયોના અનુભવનો લાભ આ સમયે મળ્યો. ઘણા ભગવદીયો પોતપોતાના શ્રીને સાથે પધરાવીને આવ્યા, જેથી નિજ મંદિરમાં બધાં સ્વરૂપો સાથે બીરાજતાં હોવાથી અમો ધારીના વૈષ્ણવોને કોઈ દહાડો ન મળેલાં તેવાં અને તે પણ આ ઉષ્ણ કાળના સમયનાં શૃંગાર ધરેલા એવા દર્શનનાં સુખો મળ્યાં. એ અમારાં તો મહદ્‌ભાગ્ય છે. આ અલૌકિક પાઠની સમાપ્તિ જેઠ સુદી ૭ લગભગ થઈ. તે

વખતે પ્રભુ ઇચ્છાએ જે આનંદની ઝાંખી થઈ, તે વળી જુદું. આ પ્રસંગે અમારા આંગણે પધારેલા પ્રભુ અને ભગવદીયોનું સ્વાગત કરવામાં વકીલ ઓધવજી દુર્લભજી અને શેઠ ચત્રભુજ આણંદજી જાંબુડાવાળા એઓ સતત પરિશ્રમ લઈ તનુજાની સાથે વિત્તજા સેવા પણ ભાવપૂર્વક કરી રહ્યા હતા.

જંબૂસરમાં પ્રવૃત્તિ—તા. ૨૭-૪-૩૩ ને રોજ ભરૂચ નિવાસી શ્રીયુત શાસ્ત્રીજી મગનલાલ ગણપતરામ પ્રોફેસર એમ. એ. અને હરિ શાસ્ત્રી પ્રોફેસર એમ. એ. (અમરાવતી કોલેજના સંસ્કૃત પ્રોફેસર) જંબુસર પધારીને જંબુસરની વૈષ્ણવ જનતાને પોતાના તા. ૨૮-૨૯-૩૦ ને રોજ પુષ્ટિમાર્ગ અને તેના સિદ્ધાંતો ઉપર વિવેચન કરી અમૂલ્ય લાભ આપ્યો હતો. ઉપરના વ્યાખ્યાનોથી અત્રેની વૈષ્ણવ જનતામાં પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પુષ્કળ ચેતન પ્રગટ થયું હતું. શ્રીયુત મગનલાલ શાસ્ત્રીજીની સલાહથી તા. ૨૦-૪-૩૩ ને રોજ અત્રેના શેઠ ચીમનલાલ કાળીદાસ ગજેરાવાળાના મકાનમાં રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોત્તમદાસ જુમખાવાળાના અધ્યક્ષપણા નીચે એક પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળની સ્થાપના થઈ. સદરહુ મંડળના ઉદ્દેશો નીચે પ્રમાણે છે. ૧. અત્રેની ભાવિક વૈષ્ણવ જનતામાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના સિદ્ધાંતોનો પ્રચાર કરવો. ૨. દેશ પરદેશના શાસ્ત્રીજીઓને આમંત્રણ આપી ભાષણોદ્વારા વૈષ્ણવોમાં જાગૃતિ લાવવી ૩. પુષ્ટિમાર્ગના પુસ્તકો જેવાં કે સંસ્કૃત, ગુજરાતી, વ્રજ ભાષાનાં પુસ્તકો મંગાવી એક લાયબ્રેરી અત્રેની સાતસ્વરૂપની હવેલીના મકાનમાં સ્થાપવી. ૪. પુસ્તકો ખરીદવાને જે નાણું જોઈએ તેને માટે ફંડ એકઠું કરવું. ૫. દરેક વૈષ્ણવોને પુષ્ટિમાર્ગીય સભાસદો બનાવવા. પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળના હાલના ૩૮ સભાસદો થયા છે. સભાસદ ફી વરસ દિવસે રૂ. ૧) રાખવામાં આવી છે. વધુ સભાસદો થતા જાય છે. મંડળ સ્થાપતી વખતે નીચેના વૈષ્ણવોએ આ મંડળને નીચે પ્રમાણેની ભેટ આપીને આ મંડળ ઉપર મોટો ઉપકાર કર્યો છે. ૨૫) શેઠ ચીમનલાલ કાળીદાસ, ૨૫) શેઠ બાઈલાલ માણેકલાલ, ૨૫) શેઠ રણછોડદાસ ચુનીલાલ, ૨૫) શેઠ મનુલાલ જુગલદાસ, ૨૫) શેઠ મગનલાલ બાળગોવનદાસ, ૨૫) શેઠ ચુનીલાલ નરોતમદાસ, ૨૧) વકીલ મણીલાલ દામોદરદાસ, ૧૧) છગનલાલ ભોગીલાલ, ૧૫) શેઠ નાનાભાઈ ગોરધનદાસ, ૧૧) ગમનલાલ છોટાલાલ, ૧૧ શેઠ નગીનલાલ ભોગીલાલ, ૧૧) રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોતમદાસ, ૧૧) શેઠ લાલભાઈ કૃષ્ણવલ્લભદાસ જુમખાવાળા (મંડળના પ્રમુખ). કુલે રૂ. ૨૪૧) બસો એકતાળીશ ઉપરના સદ્‌ગૃહસ્થોએ આપ્યા છે. બીજા ભાવિક [illegible] પોતાની શક્તિ અનુસાર આ મંડળને ભેટ આપે છે. શ્રીયુત મગનલાલ શાસ્ત્રીજીએ દર મહીનામાં એક વાર ભરૂચથી અત્રે આવી વ્યાખ્યાન દ્વારા વૈષ્ણવોમાં જાગૃતિ લાવવા નક્કી કર્યું છે. આ મંડળના ઉપપ્રમુખ તરીકે વકીલ મણીલાલ દામોદરદાસ અને સેક્રેટરી તરીકે શેઠ રણછોડદાસ ચુનીલાલ ચૂંટાયા છે. ત્યારબાદ મુંબાઈમાં બિરાજતા શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહારાજ ચાંપાસેનીવાળા અત્રે પધાર્યાં હતા તેઓશ્રીએ પણ લાગલગાટ ચાર દિવસ પરિશ્રમ ઉઠાવીને વિશાવાડની વાડીમાં જાહેર વ્યાખ્યાન આપી જંબુસરની વૈષ્ણવ જનતામાં ચેતન આણ્યું હતું. વળી ખંભાત નિવાસી શાસ્ત્રીજી ભદ્રશંકર જયશંકરે પણ બે દિવસ તા. ૨૧-૨૨ મીને રોજ વૈષ્ણવનું કર્તવ્ય અને બાહ્ય આચાર વિચાર પર સારું વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. રણછોડદાસ ચુનીલાલ શાહ. સેક્રેટરી, પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળ જંબુસર.

શ્રી વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા ટંકારા—શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુની અસીમ કૃપાથી શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુના અપરાવતાર શ્રીવલ્લભ પ્રભુની આ આનંદમય જયંતિ પર શ્રીવૈષ્ણવધર્મ મહાસભાનો પાંચ વર્ષનો રિપોર્ટ આપ સજ્જનો સમક્ષ રજુ કરતા મહદ આનંદ થાય છે. સંવત ૧૯૮૫ માં જ્યારે શ્રીમથુરા નગરસ્થ શ્રીમાન્ મહોદય શ્રીપુરુષોત્તમલાલજી ટંકારા પધાર્યા ત્યારે અહીંની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ તથા યુવકોની ધર્મ પ્રવૃત્તિ પ્રત્યેની લાગણીઓનું પુરેપુરૂં નિરીક્ષણ કરીને આપ શ્રીમાને પોતાના પ્રમુખપણાએ શ્રી ટંકારા ખાતે એક ધર્મપ્રચાર સંસ્થા સ્થાપી તેનું નામ 'શ્રી ટંકારા વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા" રાખ્યું. એ સંસ્થાને અંગે બે કાર્યોની શરૂઆત કરી. એક સંસ્કૃત પાઠશાળા, બીજું વાચનાલય, આ બન્ને કાર્યો સ્થાપક અને શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુની પૂર્ણ કૃપાથી અદ્યાપિ પર્યંત ચાલ્યા કરે છે. તેમાં અમો પ્રભુકૃપાનુંજ પ્રાધાન્ય માનીએ છીએ. આ સંસ્થાનું કાર્ય વ્યવસ્થિત રીતે ચાલે તે માટે પ્રમુખ, ઉપપ્રમુખ, મંત્રી અને ટ્રેઝરર એમ નીમવામાં આવ્યા છે. તે દરેક કાર્ય તે તે વ્યક્તિઓ પોતાના કિંમતી વખતનો ભોગ આપીને પોતાની સેવા અદા કરે છે.

સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ—જ્યારે સંસ્થા શરૂ થઇ ત્યારે થોડાક મેમ્બરોના મેમ્બરશીપ ઉપરજ સંસ્થા બહુવિધ જીવનનો વિકાસ કરવા જરાયે પાછી પાની નોતી કરતી. કાળે કરીને જે મેમ્બરો હતા તે મેમ્બરોએ વિદાય લીધી. તે પછી થોડાકજ મેમ્બરોએ ટુંક ખર્ચમાં પણ ચાલુ રાખવા પોતાની મમતા જેવી ને તેવીજ ચાલુ રાખી પણ પ્રભુ કૃપાથી જે રહેલા મેમ્બરોએ આર્થિક સ્થિતિ સુધારવા યાચના સરખીએ કરી પોતાના વિવેકનો ભંગ ક્યારેય કર્યો નહોતો. પાઠશાળા શરૂ થઇ ત્યારે પ્રથમ ૬ વિદ્યાર્થીઓ હતા. ક્રમે ક્રમે સોની, ભાટીયા, વાણીઆ, લુહાણા, ખત્રી, ખેડુત, અને બ્રાહ્મણ આદિ મળી ૩૭ વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા થઇ છે. હજુ પણ રચનાત્મક કાર્યથી અમારી સંસ્થાનું કાર્ય વધવા સંભવ છે. અમારી આ સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ સુધરતાં મોટી બ્હેનો અને માતાઓને થોડું ઘણું વાંચનનું જ્ઞાન થાય અને ધર્મ—નીતિના પુસ્તકો વાંચી શકે તેવી વ્યવસ્થા કરવા માટે કોઈ સુશિક્ષિત બ્હેનને રોકવા અમારો વિચાર છે. વર્ષા ઋતુ અને હેમંત ઋતુના વિદાય થયા પછી અશક્ત ઢોરોને પીડિત ગ્રીષ્મ ઋતુના આવિર્ભાવ થયા પછી તે બિચારા નીધણીઆંતા જેવા બની જ્યાં ત્યાં ભટકતા ફરતા ફરે છે તો આ સંસ્થા એવો મનોરથ કરે છે કે હવે પછી એક ગૌશાળા કરવી અને વિશાળ જગા ભાડે રાખવી અને ગાયોની ખૂબ સંભાળપુર્વક સેવા કરવી. ગયા ત્રણ વર્ષ થયા પાઠશાળાનું કાર્ય અપૂર્ણ જેવુંજ હતું પરંતુ હાલના નવા અધ્યાપક રા. રા. નવલશંકર વિશ્વનાથને શિક્ષણનું કાર્ય તેમને અર્પિત કરતા તેમની સતત મહેનતને અંગે એક વર્ષ ગયા તે કાર્ય ઘણુંજ વ્યવસ્થિત બન્યું છે. આ વર્ષ જેટલી વિદ્યાર્થીઓની હાજરીમાં સરેરાસ ૩૦ ની કાયમ હાજરી રહી છે. ૩ વર્ષ પાઠશાળા ચાલી તે મેમ્બરોના બળે તથા તેમના સતત પ્રયત્નેજ ત્યાર બાદ રૂ. ૯૦) એકી સાથે મદદ પરમ ભગવદીય સોની મોહનલાલ નારણદાસ તરફથી મળેલી છે તથા બીજી જે જે વ્યક્તિ તરફથી મળી છે તે શ્રી. મુળજીભાઇ કહી સંભળાવશે પણ જ્યારે સમૂળગી સંસ્થાને આવક બંધ થઇ ત્યારે ટંકારા હાલ નોસીબે (માડાગાસકર) વાળા સોની જદુલાલ એન્ડ બેચરલાલમાં પ્રભુ વસ્યા અને તે કું. ના વહીવટ કરતા પરમ સ્નેહી ભાઇ પોપટલાલ કાયમ પોતાને ખર્ચે પાઠશાળા ચલાવવા ઉદારતા બતાવી છે તે બદલ આ સ્થળે તેમનો ઉપકાર માનવાનું અમો ચુકતા નથી. પ્રભુ તેમને તેવીજ શ્રદ્ધા કાયમ રખાવે એવી પ્રાર્થના છે. આ સંસ્થાને નડિયાદ વૈષ્ણવ યુવક મંડળ તરફથી પુસ્તકોની મદદ મળી છે તે બદલ તે કાર્યકર્તાનો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનીએ છીએ બીજા પણ ગૃહસ્થોની મદદ મળી છે તે સવિસ્તર રા. મુળજીભાઈ કહી સંભળાવશે. રાજ્યભક્તિ ગુરુભક્તિ, પિતૃભક્તિ વગેરેના ઋણો મનુષ્યની ઉત્પત્તિની શરૂઆતથીજ જકડાયલા છે એટલે આ કાયાને આશ્રયે દર પ્રસંગે સનાતન ધર્મ ધુરંધર ના. મહારાજા સાહેબશ્રી લખધીરજી બહાદુર કે. સી. એસ. આઇ. ને અભિનંદન આદિ સમર્પીને અમો દર વખત ધન્ય બન્યા છીએ. છેવટમાં આપ સર્વ સજ્જનો અને સન્નારીઓનો આભાર માની આપે લીધેલ તસ્દી માટે ક્ષમા યાચી બેસી જવાની રજા લઉ છું. મંત્રી.

વિજ્ઞાન પત્રિકા.

ન્હાનાલાલ બાળકની વ્હારે ધાઓ ! ! !

દૈવી સંસ્કૃતિના કહો કે જગતભરની સંસ્કૃતિના મહાન્ રક્ષણહાર જગદુદ્ધારક પરમકૃપાવંત જગદ્ગુરૂ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી શ્રીમહાપ્રભુજીના પ્રાકટ્યના સુમંગળમય દિવસેજ આ અનેક આશાવંત બાળકનો જન્મ થવા પામ્યો છે. આજે આ બાળકે પણ પોતાની પાંચ પાંચ જન્મતિથિઓ પુરી કરી છઠ્ઠા વર્ષમાં પદાર્પણ કર્યું અને દયાળુ પ્રભુ શ્રીનન્દન પાસે અભયની ભિક્ષા માગી "શ્રીકૃષ્ણાનનદ્વિજવર અવતાર" શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુના અપરાવતાર શ્રીવલ્લભ પ્રભુએ એ ભિક્ષાને યથાર્થ વધાવી લેવાને લગે આશ્વાસન આપ્યું હોયના ! તેમ તે બાળકના જન્મ મેલાવરામાં ટંકારાના ખૂણે ખૂણામાંથી પછી ભલે વૈષ્ણવ કે શૈવ એતન માર્ગી કે જૈન આદિએ ખુબ પ્રમાણમાં આ બાળકની મહામંગળ વધાઈ ઝીલવાને મહામંડપમાં એકચિત્ત થઈ ગયા અને એઓએ આ બાળકના "પારણમાંથીજ બાળકના લક્ષણો જણાયા." એવા દરેકના મુખમાંથી શુકન ભર્યા શબ્દો નીકળી પડયા અને કહેવા લાગ્યા કે આ બાળક ભવિષ્યમાં ટંકારા નહિ પણ સારાએ કાઠીઆવાડમાં પોતાની કુબેરા ઉડાવવાના સોણલા સેવતા હાલ તો આ બાળક સામેજ દગ કટક પોતાના પુષ્કળ સૈન્ય અને બાહોશ સેનાપતિના મોખરે લશ્કર છાવણી નાખીને પડયું છે અને

એ બાળકને પેરે મારવા સતત પ્રયાસ કરાય છે. પરંતુ "જેને રાખે શ્યામ, તેના સામે ન પડે કોઈ હામ" એ સૂત્રના આધારેજ આ બાળક સંકોચાઈ પોતાના કાર્યનો મહામૂલો અવસર પ્રભુ આપશે. એ આશાએ જેવી તેવી સ્થિતિમાંજ પડ્યું છે. પ્રભો "આ ન્હાના બાળકની વ્હારે ધાઓ!!!"

દરમ્યાન તે આર્યસમાજની પુષ્કળ પ્રવૃત્તિ આજે બબ્બે વિદ્યાલયો તે સમાજ તરફથી ચાલે છે. દયાનંદ કન્યા બ્રહ્મચર્યાશ્રમ તેના રચનાત્મક કાર્યોથી સનાતન ધર્મના અરે સ્વમાર્ગના બાળકો લુપ્ત થતા જાય છે ત્યારે એક હજાર ઘરની વૈષ્ણવી શ્રીવલ્લભીય સૃષ્ટિવાળા આ ગામને શ્રીવલ્લભપ્રભુના એકાદ ગૃહસ્થ અનુયાયીની કૃપાનીજ આ માગણી અને એ માગણી એજ આ બાળક સર્વ શક્તિ ધરાવીને પોતાના પ્રચાર કાર્યની જરાએ ઉણપ ન આવવા દે તે બાળકને. હવે ગૃહસ્થો ટગાવો ના બસ લખતાં હૃદય ભરાઈ આવે છે કે બસ આટલી જ માગણી પુરી થવાના અભાવે ટંકારા જેવા સહેરમાંથી આવો વિશાળ અને ઉચ્ચતમ કોટિનો પુષ્ટિમાર્ગ ઝાંખો થઈ જશે! પ્રભુ શ્રીવલ્લભ! તું જ સમર્થ છે તું જ શરણુ છે તું જ રક્ષા કર! રક્ષા કર!! નિવેદક દા. દા. સેવક લાલજી દયાળજી રાણપુરા મંત્રી શ્રી વૈષ્ણવ ધર્મમહાસભા ટંકારા

ગોંડલમાં આનંદ—સંવત્ ૧૯૮૯ ના જ્યેષ્ઠ સુદ ૫–૬ નો ગોંડલમાં લુવાણા વૈષ્ણવ પરમ ભગવદીય રળીયાત બેન તરફથી શ્રીમહારાણીજીની લોટી ખોલવાનો મનોરથ માનવામાં આવ્યો હતો, બાઈનો વિશુદ્ધ ભાવ ને પ્રભુસ્મરણના પ્રભાવે ત્રીસ વરસમાં નહિ થએલો આનંદ આ મનોરથમાં થયો, આહાર ગામથી ૨૫૦ ને આશરે વૈષ્ણવો આવેલા હતા. સામૈયાં વેરી દરવાજેથી અરેડી દરવાજા સુધી પહોંચતાં પાંચ કલાકનો ટાઈમ ગયો હતો. રસ્તામાં પાંચ મંડળીપોના કીર્તનની જમાવટ તેની વચમાં નૃત્ય કરનારનો આવેશ અદ્‌ભુત હતો, થોકે થોકે સમાજ કરી હીચ હમચી લેવાતી જાય, વૈષ્ણવ દુકાનો આગળ નંદમહોત્સવ મનાતા જાય. સાકરના તો મેહ વરસતા જાય, રસ્તામાં ભીશ્તીના પાણી તથા દંડાજલ પંખાથી વૈષ્ણવની અનિર્વચનીય સેવા થતી જાય, અબીલ ગુલાલની તો હદજ ન હતી. "કોઈને જાણે નહિ." એ પ્રમાણે સર્વ વૈષ્ણવ અને ગામના લોકો આવેશી બની ગયા હતા.

બહારગામ (રીનારી) થી મૂળશંકર નામના બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવ કીર્તન વખતે મેથારીનો સ્વાંગ ધારણ કરી માથે ઉપરા ઉપર દૂધનાં બે મેથારાં ચડાવીને દાનલીલા બોલીને જે કોઈ આવેશથી નૃત્ય કર્યું છે, તેની તો પરિસીમાજ ન હતી. નૃત્ય કરતાં બેડું હલેજ નહિ. એ ખુબી વખાણવા જેવી હતી. ? સાથે રાજકોટના ઠા. નાગજીભાઈ દલાલ તેમણે તો રાસના ગરબાં તાનટપામાં લઈ હાવ ભાવ એક તાદૃશ અભિનયથી રાસમંડળનાં દર્શન કરાવતા હોય નહિ એવા ભાવથી સાઠ પાંસઠ વરસની ઉમરે તન તોડ નૃત્ય આવેશથી કર્યું હતું. રળીયાત બેનના ઘેર ઠા. કુરજીભાઈ ભોમા અને સરલ સ્વભાવના તથા તેમના ભાઈ ભુરાભાઈ પોપટભાઈ તથા મંગળજીભાઈ તથા મોટા ભુરાભાઈ બધા તો આઠ આઠ દશ દશ રૂપીયા એક ફેરાના બોલતાં આંચકો ખાતા ન હતા બેટ રૂ. ૪૦૦) શ્રીજી બાવાની એક રાતમાં થઈ તેમ સમાજનો આનંદ લેવરાવનાર રાજકોટના ભ. વીરજીભાઈ રામજી તથા મોચેયાના ગુણ્યાજી તથા સોની વૈષ્ણવ પોપટભાઈ સંગીતનું અદ્‌ભુત કામ કર્યું હતું. ઉપર ગણાવ્યા પાંચ નામ પછી તથા સોની [illegible] ભાઈ તથા [illegible] પ્રાણજીવન ભાઈએ વૈષ્ણવની ટહેલ ભારે પ્રમાણમાં કરી હતી, ધન્ય છે શ્રીવલ્લભ અને શ્રીવલ્લભીને, કે આવા આનંદ લેવામાં દ્રવ્યની કશી કીમત જ ગણતા નથી, ભગવાન ભગવદીયને અર્થેજ એનો ઉપયોગ કરતાં જરાએ મન અચકાતું નથી હવે પણ આશા બંધાય છે ગોંડલમાં, જાગૃતિ આવી છે અને દિન પ્રતિ દિન આવા મનોરથો થવાનો સંભવ પણ રહે છે.

શુદ્ધાદ્વૈતના ગ્રાહકોને ખાસ લાભ—નિ. લી. ગો. શ્રીજીવનલાલજી મહારાજ (મુંબાઈવાળા) કૃત શ્રીવલ્લભાખ્યાન સટીક (જેના ઉપર ભારતમાર્તંડ પં. ગટુલાલજીએ ટિપ્પણ કર્યું છે ને) અને ધોળપદ મહારસાબ્ધિ ભાગ ૧ લો પૃષ્ઠ ૭૦૦ લગભગનું કળદાર પાકા બાઈન્ડીંગનું પુસ્તક 'શુદ્ધાદ્વૈત' ગ્રાહકોને માત્ર સાત આનામાં ગિરિધરલાલ જ. શાહ. બુકસેલર. ઠે. શીતલબાવા મન્દિર, ભુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨ ની દુકાનેથી આપવામાં આવશે. બહારગામથી મંગાવનારે અગીઆરઆનાના પોસ્ટ સ્ટાંપ મોકલવા.

શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભા–ટંકારા—અમને જણાવતા હર્ષ થાય છે કે અમારી સંસ્થાને પાંચ વર્ષ શ્રીવલ્લભ જયંતિના મંગળમય દિવસે પુરા થઈ છે. છઠ્ઠા વર્ષમાં પદાર્પણ કર્યું છે. શ્રીટંકારા પાઠશાળા માટે મોરબીવાળા હાલ મુંબઈ વસતા શ્રીપુષ્ટિમાર્ગપ્રેમી શ્રીયુત સોની ગોકળદાસ વિઠ્ઠલજીભાઈએ રૂપમં

કલ્યાણની સ્તુત્ય વિચારોથી પ્રેરાઈ સ્કાઉટ્રીંગ બેન્ડ રૂા. ૧૩૨ ની કિંમતના ભેટ તરીકે આપ્યા છે તેથી અહીંની શ્રીવલ્લભસૃષ્ટિ તેમનો ઉપકાર માને છે અને તેમનાં એવા ધાર્મિક કાર્યો દિનપ્રતિદિન વૃદ્ધિ પામે તેમ ઈચ્છે છે. આ બેન્ડ પાઠશાળાથી શ્રીમંદિરે જઇ પ્રથમજ શ્રીની સંનિધાન ટંકારાના મુખ્ય અગ્રેસરોની હાજરીમાં બનવી ખુલ્લુ મુકાયું હતું તે દિવસે કુવાડવાવાળા શ્રીયુત દયારામભાઈ આવવાથી શ્રીહાટડીલીલા કરી હતી અને વૈષ્ણવોએ ખુબ આનંદ લીધો હતો.

વૈષ્ણવો પ્રતિ વિનતિ—કુવાડવા (રાજકોટ) એ રાજકોટનું ફરસ્ટ ક્લાસનું મહાલ છે તેમાં પુષ્ટિસ્થ વૈષ્ણવો, બ્રાહ્મણ, વાણીયા, સુથાર, ખેડુત આદિ મળી ૩૦ થી ૩૫ ઘર છે તેઓ શ્રીવલ્લભપ્રભુના શુદ્ધ હૃદયથી ગુણાનુવાદ ગાનારા છે. આ નાનકડા પુષ્ટ સમુદાયમાં હજુ પ્રભુકૃપાથી વીસમી સદીનો ઝેરીહવાનો સંચાર થવા પામ્યો નથી. હાલમાં ધર્મધ્વંસીઓનું પ્રચાર કાર્ય કાઠિયાવાડમાં ગામડે ને ગામડે થવા પામ્યું છે પરંતુ આવા વિષમ વાતાવરણનો દોષ આ ગામમાં પેસે પહેલાંજ સર્વ વૈષ્ણવોને હું દીનભાવે વિનતિ કરું છું કે અમોને ધર્મ રહસ્યનો અનુપમ લ્હાવો લેવાને પ્રભુશ્રી નંદનંદને તમારા જેટલોજ અધિકાર આપ્યો છે, સંપ્રદાયપ્રતિમાન ધરાવનાર ગૃહસ્થ બન્ધુઓ અને બ્હેનોને વિનતિ કરવાની કે અમારે માથે હાલ 'શ્રી' ના ચિત્રજી બિરાજે છે. તે ભાંગીતુટી પર્ણકુટીમાંથી. હાલમાં વર્ષાઋતુના સમય પછી તે પર્ણકુટી તેવીજ સ્થિતિમાં રહેશે કે? તેજ મોટી ચિંતા છે. તો તે પર્ણકુટીને મંદિરની સગવડે તૈયાર કરવામાં હાલ અમોને રૂા. ૭૦૦ ની મદદની જરૂર છે તો કૃપા કરીને શ્રીવલ્લભપ્રભુના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવ બંધુઓ અને બહેનોને અમારી વિનતિ છે. તો સર્વ વૈષ્ણવો આ માગણીને હૃદયથી રાખી પોત પોતાથી બનતું કરશે. લી. લી. ઠાકરજી દયાળજી ટંગારાવાળાના શ્રીસ્મરણ. સરનામું—ભટ્ટ દયારામ ડાહ્યાભાઈ સ્ટેશન માસ્તર. મુ. કુવાડવા, રાજકોટ સોની વીરજી રામજીભાઈ મવડીયા, મુ. રાજકોટ, ઠે. માંડવીચોક.

જવાબ—ધોરાજીના સુતાર પ્રાગજી દેવજીએ પોરબંદરથી શાસ્ત્રીજી પાસેથી ગો. બાળકોના ચિત્રજી મંગાવ્યાં, તેમાં જથ્થાબંધમાં ૫ ડઝનમાં ૧૨ાા ટકા વળતર આપવા નક્કી કરાવીને, ફક્ત ૧ ડઝન ચિત્રો મંગાવ્યાં અને તેમાં વાંધો ઉભો કરીને અમોને કમિશન કેમ ન આપ્યું? તેમાં પહેલાંજ ઉત્તરમાં મેં જણાવ્યું કે તમે પાંચ ડઝન મંગાવશો તો જરૂર કમિશન કાપી આપીશ. ત્યાર બાદ એક કાગળ લખીને ધમકી આપી અને નિંદાનું શસ્ત્ર હાથ ધર્યું અને સ્વસ્વાર્થની હલકામણીના પત્રો લખવા નક્કી કર્યું તે સ્વાર્થીનીતિનું દીગ્દર્શન શુદ્ધાદ્વૈતમાં કરાવ્યું છે. તે સર્વ વાંચકોને ખબરજ છે. ધન્ય છે એ ભાઈની વૈષ્ણવતાને, અત્યાર સુધી સંપ્રદાયમાં ફક્ત પાંચ આનાની નજીવી કિંમતે અને જેના ઉપર-અત્યારે ડબલ જકાત પડી ચૂકી છે એ ફોટોગ્રાફીક આપવાની પરોપકારી યોજના કરનાર શાસ્ત્રીને ધન્યવાદને બદલે અનાવશ્યક આક્ષેપો કરવા એ આ કલિકાલની માયાની દુર્ઘટના તો છે શું? ધન્ય છે.

નવસારીમાં નવું મંદિર—નવસારીમાં શ્રીચંદ્રમાજીની સૃષ્ટિ છે. નિત્યલીલાસ્થ આચાર્યવર્ય ગો. શ્રીદેવકીનંદનાચાર્યજી મહારાજ ત્યાં વર્ષમાં એક વાર તો પધારતાજ. પણ વિદ્યમાન શ્રીપંચમપીઠાધીશ્વર ભાગ્યેજ સૃષ્ટિને સંભાળવાનો પરિશ્રમ લે છે! નવસારીમાં પધારે ૧૦ વર્ષના વહાણાં વાયાં. ઉમરગામ તથા ચીખલી ત્રણ ત્રણ વાર પધાર્યા, બાપાશ્રીના કૃપાપાત્ર શ્રીયુત વાલાભાઈ સરકાર, શેઠ શ્રીજીભૂખણદાસ પારેખ, શેઠ બાલુભાઈ વગેરે ઘણી વાર વિનવે પણ નવસારીનાં ભાગ્યજ ખુલે નહિ. નવસારીનું મંદિર અતિજીર્ણ થઈ ગયું હતું તેનો જીર્ણોદ્ધાર કરવાની ચિંતા મહાજનને માથે વર્ષોથી આવી પડી હતી. મહાજનનાં નામ પ્રમાણે કામ પણ મોટાં, અને તેને માટે સમય પણ ઘણો લાગે! આખરે પ્રભુએ કાંઈ જુદોજ રંગ જમાવ્યો. નવસારીનાજ વતની અને સાધારણ સ્થિતિમાંથી રંગુનમાંના વ્યાપારના પરિણામે ધનાઢ્ય સ્થિતિમાં આવેલા ભગવદીય લલ્લુભાઈ દામોદરદાસ શાહ તથા તેમના ભાઈઓના હૃદયોમાં પ્રભુએ પ્રેરણા કરી. શેઠ લલ્લુભાઈએ કમર કસી અને થોડાજ સમયમાં આલીશાન ભવ્ય મંદિર સિદ્ધ કરાવી દીધું. યાત્રાના સ્થાનોમાં પોતાનાં નામો કાઢવા માટે લક્ષાધિપતિઓ ધર્મશાળાઓ વગેરે બંધાવે છે. જ્યારે પોતાના ગામમાં જે ઉણપ હોય તેની સામું જોતા પણ નથી ભગવદીય લલ્લુભાઈએ તો પોતાના ગામમાંજ દૈવી દ્રવ્યનો ઉત્તમોત્તમ ઉપયોગ કર્યો. વિત્તની સેવા સાથે મંદિર સિદ્ધ થાય ત્યાં સુધી ખડે પગે ઉભા રહીને તનુજસેવા પણ તેમણે કરી. આ નિમિત્તે ગુરુદેવ ગો. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજ નવસારી પધારે અને દૈવી જીવોને બ્રહ્મ સંબંધ કરાવે એવી અંતરની અભિલાષા શેઠ લલ્લુભાઈને હતી. એમણે આપશ્રીને કામવનથી પધરાવવા માટે અથાગ પ્રયાસો કર્યા.

આપશ્રીના કૃપાપાત્ર શેઠ વામનભાઇ સરકાર તથા પારેખ શેઠે પણ ખૂબ પ્રયાસો કર્યા. ચૈત્ર સુ. ૩ ને અને ચૈત્ર વદ ૧૧ અને તે પછીના મુહૂર્તો ઘણીએ બદલવાં પડયાં. આખરે આપશ્રી વૈશાખ સુદ ૬ ના શ્રીકામવનથી મોટર દ્વારા વિદા થઇને, શ્રીપુષ્કરરાજ પધાર્યા. ત્યારબાદ રેલ્વેમાં અમદાવાદ પધાર્યા. અમદાવાદથી આપશ્રી તા. ૨૭–૫–૩૩ ના રોજ પ્રાતઃકાલે નવસારી પધાર્યા. સ્ટેશન પર આપશ્રીનું ભાવભીનું સ્વાગત થયું. આખું બજાર તોરણ વાવટાઓથી શણગારેલું હતું. ૧૦ વર્ષના લાંબા સમય પછી ચાતકવત્ રાહ જોતી વૈષ્ણવ સૃષ્ટિના આનંદનો પાર ન રહ્યો. આપશ્રીને પધરાવવાની અને જ્યાં સુધી આપશ્રી સપરિવાર બિરાજે ત્યાં સુધીની બધી વિત્તજા સેવા ભગવદીય લલ્લુભાઇની હતી. તેમના ભાઇઓ ભ. જેકીસનદાસભાઈ તથા ભ. જગમોહનદાસભાઈ પણ ખડે પગે તૈયારજ હતા. યુવક વર્ગ પણ સેવામાં હાજરજ હતો. દરરોજ રાત્રે સભાઓ થતી. પેટલાદથી શાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠારામભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા. તેમનાં તથા શાસ્ત્રી વસંતરામના દરરોજ વ્યાખ્યાનો થયાં. જેઠ સુદ ૫ ના રોજ શ્રીને નવા મંદિરમાં પધરાવવાનું મુહૂર્ત હતું. ચીખલીની વૈષ્ણવ મંડળીને આગ્રહ પૂર્વક આમંત્રી હતી. શેઠ ભગવાનદાસભાઇ, શેઠ હરગોવનદાસભાઈ, મોથ વયોવૃદ્ધ શેઠ તથા ભ. ઇશ્વરદાસ, ભ. સુંદરલાલ આદિ ચીખલીથી આવી પહોંચ્યા હતા. ચિ. લાલાબાવાશ્રી પ્રભુને પધરાવવા પધાર્યા હતા. બરોબર શુભ મુહૂર્ત અનુસાર વાજતે ગાજતે નવા મંદિરમાં પ્રભુ પધાર્યા. પ્રભુની સુખપાલને પધરાવવાની સેવા ભ. લલ્લુભાઈ તથા તેમના ભાઇઓએ કરી હતી. આ સમયનું દૃશ્ય તો નવસારી કદી વિસરશેજ નહિ. તેજ રાત્રે મહાજનને મહાપ્રસાદ લેવરાવવામાં આવ્યો હતો અને આ ઉદારતા પૂર્ણ સેવા બદલ ભ. લલ્લુભાઇને મહાજન તરફથી શાલ ઓઢાડવામાં આવી હતી. અહીંના નાયબ સુબા પણ સભામાં ભાગ લેતા હતા એ નોંધવા યોગ્ય બીના ગણાય. નવસારીથી મહારાજશ્રી મુંબાઈ પધાર્યા અને ત્યાં ૪ દિન બિરાજીને ચીખલી પધાર્યા. ચીખલીના શુદ્ધ પ્રેમ અને ભાવના સંપ્રદાયમાં અજોડ છે. ત્યાં ૩ દિન આપશ્રી બિરાજ્યા. ચીખલીથી આપશ્રી ઉમરગામ પધાર્યા. ઉમરગામથી સુરત થઇને આપશ્રી હાલમાં ઉમરેઠ બિરાજે છે. અસાડ સુદ ૩ નો જન્મદિન તથા અસાડ સુદ ૯ નો શ્રીગોકુળનાથજીની ગાદી પર બિરાજ્યા તે મંગલમય દિન ત્યાં થશે.

લેખાનુક્રમ.

આષાઢ સં. ૧૯૮૯.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮. | અંક ૪.

આષાઢ ૧૯૮૯. | શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૫.

શુદ્ધાદ્વૈત અને ભક્તિમાર્તંડ.

महाभाग्योदये भवेत्.

धर्मे भागवते श्रद्धा रुचिर्भागवतश्रुतौ । संगो भागवतैः साकं महाभाग्योदये भवेत् ॥१॥
आश्रयो वल्लभार्यस्य सुबोधिन्याश्च दर्शनम् । राधावल्लभसेवा च महाभाग्योदये भवेत् ॥२॥
यमुनायाः पय पानं प्रभूच्छिष्टेन पोषणम् । सदा श्रीगोकुले वासो महाभाग्योदये भवेत् ॥३॥
श्रवणं कृष्णलीलाया. कीर्तनं कृष्णतत्परे । तस्याः स्मरणमेकान्ते महाभाग्योदये भवेत् ॥४॥
गिरिराजोपत्यकाया वासो वल्लभवीक्षणम् । भावनं कृष्णलीलाया महाभाग्योदये भवेत् ॥५॥
प्रपञ्चविस्मृतिर्नियमासक्तिर्हरिचिन्तने श्रीकृष्णप्रवणं चेतो महाभाग्योदये भवेत् ॥६॥
दर्शनं व्रजनाथस्य श्रवणं रसवाद्गिराम् । चिरं चर्याप्रदा जस्य महाभाग्योदये भवेत् ॥७॥
गोप्यनुभूयमानस्य व्रजेशविरहोदधे । तरंगशीकरावाप्तिर्महाभाग्योदये भवेत् ॥८॥
कृष्णभ्रान्त्या तमस्तोमे समालिंगनतत्परः । विकलश्च तथाऽस्वस्थो महाभाग्योदये भवेत् ॥९॥
निधिकुञ्जेषु पद्यानां भावो वै हृदि सुस्थिरः । श्रीवल्लभकृपादृष्ट्या महाभाग्योदये भवेत् ॥१०॥
श्रीखाजीराजपाठशालाध्यापकश्रीत्रिदुर्लभशर्मणा विरचितं महाभाग्योदयदशकम् ॥

श्रीवल्लभाचार्यशरणाष्टकम् ।

(प्रणेता तथा अनुवादक—श्रीयुत नरोत्तम मोतीराम शास्त्री.)

श्रीगोकुलेशपदपङ्कजदानदक्षं श्रीगोकुलेन्दुचरणे विनिबद्धलक्ष्यम् ।
श्रीदेवकीसुततनो प्रकटस्वरूपं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

श्रीकृष्णसेवनपथप्रकटात्मभावं प्रेम्णः प्रतिष्ठितिमहो व्रजगोपिकानाम् ।
सिद्धान्तमर्मविदमप्यखिलश्रुतीनां श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

वैश्वानरावतरणं तदपि प्रशान्तमुग्रप्रतापमपि चन्दनतुल्यचित्तम् ।
कृष्णावतारमपि शुक्लयशःप्रकाशं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥३॥
श्रीलक्ष्मणार्यकुलकौस्तुभरूपदेहं श्रीविट्ठलेशपरिशोभितसुन्दराङ्गम् ।
चन्द्रावलिप्रकटितास्यसरोजकान्ति श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥४॥
ऐश्वर्यपूर्णमथ वीर्यगुणैरनन्यं ओजस्विनं कुमतिखण्डनबुद्धिधन्यम् ।
श्रीसेविताङ्घ्रिमपि कामवने निवासं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥५॥
आनन्दमूर्तिमपि कृष्णवियोगततं शुद्धप्रकाशचरितं प्रभुभावगुप्तम् ।
पूर्णप्रकाममपि कामविनाशकारि श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
व्याप्तं कठोरनियमैः करुणैकसिन्धुम् पाखण्डशत्रुमपि दैवजनैः शरण्यम् ।
त्यक्तान्यदेवभजनं विबुधाश्रयश्च श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥७॥
अन्यं यदंघ्रिकमलाश्रयतः कलौ न निःसाधनस्य हरिसेवनसाधनं हि ।
तन्मङ्गलं नरमणिर्मनसा सदैव श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

સમશ્લોકી—ભાષાન્તર.

શ્રીગોકુલેશ ચરણે ધરવા સમર્થ છે શુદ્ધ લક્ષ્ય વિભુ ગોકુલચન્દ્રમાર્થ,
લીધું પ્રકાશતનુ દેવકિનન્દનાર્થ શ્રીવલ્લભાર્યપદને શરણે સદાયે.
શ્રીકૃષ્ણભક્તિ પથને કરતા પ્રકાશ છે પ્રેમમૂર્તિ વ્રજગોપિજનોની ખાસ,
સિદ્ધાન્ત મર્મ સમજે સહુ વેદના જે શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સદાયે.
છે' અગ્નિરૂપ અવતાર તથાપિ શાંત ઉગ્ર પ્રતાપ મન ચન્દન તુલ્ય અન્ત,
કૃષ્ણાવતાર અતિશુકલ યશઃ પ્રકાશ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે નિવાસ.
શ્રીલક્ષ્મણપ્રભુકુલે મણિરૂપ દેહ શ્રીવિઠ્ઠલેશ, અતિ શોભિત ગોદ એહ,
ચન્દ્રાવલિ પ્રકટ કાન્તિમુખે વિકાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
ઐશ્વર્ય પૂર્ણ પણ વીર્ય ગુણે અનન્ય તેજસ્વિ ને કુપથ ખંડન બુદ્ધિ ધ-
લક્ષ્મી રહી ચરણ કામવને નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે સમાસ.
આનન્દમૂર્તિ પણ કૃષ્ણ વિયોગ તપ્ત શુદ્ધ પ્રકાશ ચરિતે પ્રભુભાવ ગુપ્ત,
છે પૂર્ણકામ વનકામ કરે નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
પોતે કઠોર નિયમે કરુણા સમુદ્ર પાખંડશત્રુ પણ દેવ મનુષ્ય ભદ્ર,
ત્યાગી બીજું ભજન પંડિત પૂર્ણઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો સમાસ.
ના અન્ય પાદ કમલાશ્રયથી કલીમાં નિઃસાધનોનિ હરિસેવન સિદ્ધિભૂમાં,
હૈ મંગલે નરમણિ પ્રભુમાં સ્વઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો નિવાસ.

विद्वद्गणकेसरी श्री १०८ गो. श्रीव्रजरत्नलालजी महाराजश्रीनुं व्याख्यान.

શ્રીમદ્ભગવન્નિઃશ્વસિતવેદાદિપરમાપ્તપુરુષકૃપાપાત્રસભ્યગણ !

શ્રીમહાપ્રભુજી શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણના ઉત્સવના દિવસથી આરંભી આજે ચાર દિવસ થયા. સુવકસભાના અષ્ટમ વાર્ષિક મહામહોત્સવ નિમિત્ત અનેક વિદ્વદ્ગણનાં વ્યાખ્યાનો થયાં. ત્રણ અગત્યના પ્રસ્તાવો પણ ગત રોજ આપણે ચાર પાંચ હજાર સંખ્યાની જનતાની મેદિની વચ્ચે સર્વાનુમતે પસાર કર્યા. હવે આજે અમારે સર્વ કાર્યની સમાલોચનાપૂર્વક આવશ્યક કર્તવ્યનું સૂચન કરવું છે.

ધર્મ–અધર્મ.

આપ જાણો છો કે આ બહુજ ગહન સમય આવી પહોંચ્યો છે, [ધર્મ અને અધર્મ આ બન્ને શ્રીકૃષ્ણાવતારમાં પણ વારાફરતી ઉત્થાન પામતા હતા. અધર્મનું અભ્યુત્થાન થાય ત્યારે ધર્મની ગ્લાન દૂર કરી પુનઃ પૂર્વ સ્થિતિમાં સંસ્થાપન કરવા ભગવદવતાર અંશ કલા આવેશથી થાય છે, અને સર્વોદ્ધાર કરવા પૂર્ણ રૂપે પણ કદાચિત્ પધારે છે.

ધર્મની વ્યાખ્યા શાસ્ત્રમાં જુદા જુદા સ્વરૂપે દર્શાવી છે, તેની વ્યાપક વ્યાખ્યાઓ આ છે.

यतो निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः, वेदप्रणिहितो धर्मः, अधर्मः तद्विपर्ययः ६–४ भा.

"જેનાથી પરમ કલ્યાણ જીવને પ્રાપ્ત થાય તે ધર્મ. અથવા વેદ જે કહે તે ધર્મ. તેનાથી વિપરીત તે અધર્મ. પરમ કલ્યાણના માર્ગો દર્શાવીને વેદ, સ્મૃતિ અને પુરાણ વગેરે શાસ્ત્રોએ બહુજ ઉપકાર કર્યો છે પરંતુ અત્યારે શાસ્ત્ર જેને ધર્મ કહે છે તેને અધર્મ દેખે, અને જેને શાસ્ત્ર અધર્મ કહે તેને ધર્મ દેખે એવી તમસાવૃત બુદ્ધિનું પરિણામ ચાલી રહ્યું છે, આવું દેખાય ત્યારે ગીતાશાસ્ત્ર કહે છે.

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ॥ सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ।

ધર્મનું યથાસ્થિત પાલન કરવા માટે ભારતના ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વરૂપ વર્ણ અને આશ્રમના વ્યવસ્થિત વિભાગ છે. વેદ ભગવાન પણ વર્ણવ્યવસ્થા દર્શાવતાં કહે છે કે—

ચાતુર્વર્ણ્ય.

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत । यजुः ।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः । गीता ।

બ્રાહ્મણ મુખથી, બાહુથી ક્ષત્રિય, ઊરથી વૈશ્ય, પગથી શૂદ્ર થયા, ચાતુર્વર્ણ્ય મેં ગુણ અને કર્મો સાથે ઉત્પન્ન કર્યું, અર્થાત બ્રાહ્મણાદિ તેના કર્મ અને તેના ગુણ સાથેજ પ્રકટ કર્યા. નહિ કે પ્રકટ કર્યા પછી કર્મનું દાન કર્યું, તેના સહજ કર્મ આગળ ગીતાજીમાં જણાવ્યાં છે.

શ્રુતિ તેના ગુણોનું વર્ણન કરે છે. ચાર વર્ણના રંગ અને સ્વભાવ વિષે શાસ્ત્રો કહે છે કે આ પ્રભુએ ચાતુર્વર્ણ્ય સત્ત્વ રજ તમના ભેદથી સરજ્યું. અર્થાત્ ગુણાનુસાર સત્ત્વગુણથી બ્રાહ્મણ, સત્ત્વ ન્યૂન અને રાજસ વધુ એવો ક્ષત્રિય, અને તામસન્યૂન અને રાજસપ્રધાન વૈશ્ય. અને તમઃપ્રધાન એવા શૂદ્રને પ્રકટ કર્યો, આ ચાર વર્ણનાં કર્મ પણ જુદાં જુદાં શાસ્ત્રમાં છે. કાર્ય કરવાથી તેવો વર્ણ પ્રાપ્ત થયો એમ ન માનવું. પરંતુ ચાર વર્ણ જન્મથીજ છે, કર્મથી નથી. આપસ્તંબ પણ એજ આજ્ઞા કરે છે કે—ચાર વર્ણ બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય શૂદ્ર આ ચાર વર્ણમાં

પૂર્વ પૂર્ણ એટલે શૂદ્ર કરતા વૈશ્ય, વૈશ્ય કરતા ક્ષત્રિય, ક્ષત્રિય કરતા બ્રાહ્મણ ઉત્તમ છે. તે જન્મથી જાતિશ્રેષ્ઠ છે.

(ગીતાજી) બ્રાહ્મણનાં કર્મ—બ્રાહ્મણના સ્વભાવસિદ્ધ કર્મ, શમ, દમ, તપ, શૌચ, શાન્તિ, નમ્રતા, જ્ઞાન, વિજ્ઞાન, શ્રદ્ધા આ મુખ્ય કર્મ કહ્યા અ ૧૮-૪૨. **ક્ષત્રિયનાં કર્મ**—તેજ, ધીરજ, ચપળતા, યુદ્ધમાંથી પાછા ન ફરવુ, દાન અને ઐશ્વર્ય આ ક્ષત્રિના સ્વાભાવિક કામ છે. **વૈશ્ય કર્મ**—ખેતિ, ગોરક્ષા, વેપાર એ વૈશ્યના સ્વાભાવિક કાર્ય છે. આપણા દેશમા ગોરક્ષા સાથે ખેતી, અને ખેતી સાથે ગોરક્ષા મુખ્ય છે અને વેપાર ત્રીજે નંબરે છે તે વેપાર કરતા ગોરક્ષાની આવશ્યકતા વધારે જણાવે છે. **શૂદ્રકર્મ**-પરિચર્યા શૂદ્રનુ એકજ કામ છે આ પ્રમાણે વાક્યની અંદર શ્રીગીતાજી કહે છે કે—પોતાનુ ખાસ કર્મ-સહજ કર્મ તે ભલે સદોષ (દોષવાળુ) હોય પણ તે તેણે છોડવુ નહિ

પોતપોતાના કર્મમા લાગ્યો રહે તોજ માણસ સિદ્ધિને મેળવે છે. સ્વધર્મ વિગુણ હોય તો પણ પાળવો, પણ પારકા ધર્મનુ પાલન કરવુ તે દોષમય છે અર્થાત્ બ્રાહ્મણે ક્ષત્રિયના, ક્ષત્રિયે બ્રાહ્મણના કે શૂદ્રે બ્રાહ્મણના કર્મ કરવા મંડી ન જવુ, એ તેનુ તાત્પર્ય છે.

ભાગવતમાં વર્ણધર્મ.

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा मुखबाहूरुपादजा । वैराजात् पुरुषात् जाता य आत्माचारलक्षणा ।

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય શૂદ્ર આ ચારે વર્ણ વિરાટપુરુષના મુખ બાહુ ઊરુ અને પગથી થયા છે. બ્રાહ્મણ વિગેરેના કર્મ દર્શાવે છે, તેના કર્મ શમ, દમ, તપ, સંતોષ, શાન્તિ, નમ્રતા, ભક્તિ, દયા, સત્ય આ બ્રાહ્મણની પ્રકૃતિ છે તેજ, બળ, ધીરજ, શૌર્ય તિતિક્ષા, ઉદારતા, ઉદ્યમ, સ્થિરતા, ઐશ્વર્ય આ ક્ષત્રિય પ્રકૃતિ છે ૨ શ્રદ્ધા, દાનનિષ્ઠા, દંભરહિતતા, બ્રાહ્મણસેવન (દ્રવ્ય પેદા કરવામા) અસંતોષ આ વૈશ્ય પ્રકૃતિ છે ૩ બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય અને ગાયની સેવામા જે કંઇ મળે તેનાથીજ સંતોષ માનવો, આ શૂદ્રકર્મ છે, હવે અન્ત્યજમાંથીના કર્મ પણ ભાગવતે બતાવ્યા છે અપવિત્રતા અસત્ય ચોરી નાસ્તિકતા શુષ્કશરીર કામ ક્રોધ લોભ આ સ્વભાવ અન્ત્યવસાયીનો છે આ ધર્મોની શ્રીશુકદેવજી સનાતન ધર્મથી ઓળખાણ આપે છે

સાક્ષાત્ ભગવાને મનુ વગેરેનુ પરમ કલ્યાણ કરવા માટે આ ઉપરના સનાતન ધર્મો કહેલા છે, આ સનાતન ધર્મની સાથે સર્વ સમ્પ્રદાયની એકવાક્યતા છે, આ સનાતન ધર્મ જોડે કોઇનો પણ વિરુદ્ધ મત નથી.

જાતિલક્ષ્ય.

આ પ્રમાણે વેદ ગીતા ભાગવતમા ચાર વર્ણ દર્શાવ્યા, મનુ પણ ચાર વર્ણ કહે છે

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, ત્રણ વર્ણ દ્વિજાતિ છે. કારણ કે તેમને ઉપનયન વિહિત છે શૂદ્ર પુન ચતુર્થ વર્ણ એક જાતિ છે કારણ ? ઉપનયન નથી પાંચમો કોઇ પણ વર્ણ નથી, એ ઉપરથી નિર્ણય થયો કે પાંચમો શુદ્ધ વર્ણ નથી, પણ ખચ્ચર જેવી સંકીર્ણ જાતિઓ છે તેમને વર્ણ નથી કહેવાતી. વર્ણ તો તેને જ કહેવાય કે જે બ્રાહ્મણસ્ત્રીમા બ્રાહ્મણથી, ક્ષત્રિયસ્ત્રીમા ક્ષત્રિયથી, વૈશ્યસ્ત્રીમા વૈશ્યથી અને શૂદ્રસ્ત્રીમા શૂદ્રથીજ થ

જાતિનું લક્ષણ આમ જાણવુ ગો વગેરેના અવયવસંનિવેશ એટલે સાસ્નાદિલક્ષણથી જેમ ગોત્વ સિદ્ધ થાય છે તેમ બ્રાહ્મણને ક્ષત્રિયને સમજાવવા વૈશ્ય અને શૂદ્રને સમજાવવા તેના શરીરના અવયવોના લક્ષણ દર્શાવવામા આવતા નથી પણ શાસ્ત્રકાર કહે છે કે—સમાન જાતિની સ્ત્રીમા સમાન જાતિ પુરુષથી પેદા થનાર માણસને તે જાતિનો જાણવો, એજ વર્ણની નિશાની

જો પોતાનાં કર્મ ન કરે તો

બ્રાહ્મણ જેવાં કર્મ ન કરે તો જાતિએ બ્રાહ્મણ રહે છે, પણ બ્રાહ્મણ દેહથી જે ઉત્કૃષ્ટ ફળ મેળવવું જોઇએ તે મળતું નથી. મહાભાષ્યકાર કહે છે કે—तपः श्रुतं च योनिश्च તપઃ શાસ્ત્ર અને જન્મ આ ત્રણ બ્રાહ્મણનાં કારણ છે. આ ત્રણથી બ્રાહ્મણત્વનું રક્ષણ કરી શકશે. જો તપ કે શાસ્ત્ર ન હોય તો જન્મ માત્રથી જાતિ બ્રાહ્મણ તો રહે છે. અર્થાત્ બ્રાહ્મણધર્મરહિત હોવા છતાં નામે બ્રાહ્મણ રહે છે. આ મનુવિચારને અમે સિદ્ધાંતીઓ પણ કહીએ છીએ કે અનાચાર કરવાથી "બ્રાહ્મણપણું" જતું રહે છે. જો બ્રાહ્મણોચિત આચાર શાસ્ત્રાદિસ્વાધ્યાય રાખે તો "બ્રાહ્મણપણું" રહે. જેમ પૂજામાર્ગમાં કોઈ મૂર્તિમાં મંત્રથી દેવતા આવાહન થાય તે વખતે તે મંત્રબળથી દેવતા પધારે અને જો અનાચાર થાય તો દેવતાનું તિરોધાન થઈ જાય. તેમ બ્રાહ્મણપણું જતું રહે, એ વાત મનુ કહે છે. લાકડાનો હાથી હાથીના કામમાં ઉપયોગ ન આવે. પણ નામે હાથીજ કહેવાય. ચર્મનો મૃગલો મૃગયા કરવામાં કામ ન આવે પણ નામે મૃગલો કહેવાય છે. તેવી રીતે સ્વાધ્યાયરહિત બ્રાહ્મણ બ્રાહ્મણના ઉત્તમોત્તમ ફળમાં અયોગ્ય રહે છે. કારણ કે નામનો જ માત્ર બ્રાહ્મણ છે. આ શ્લોકથી જાતિને ફેરવી નાંખનારાઓની દાળ ગળે એમ નથી. જાતિ પરિવર્તન તો બીજા જન્મમાં જ થશે.

અમારા શ્રીમહાપ્રભુજી ભાગવત દશમના, આઠમા અધ્યાયના છઠ્ઠા શ્લોકમાં जन्मना ब्राह्मणो गुरुः આનો અર્થ उत्पत्तिमात्रेण सर्वोपि ब्राह्मणो गुरुर्भवतीति સર્વ બ્રાહ્મણ ઉત્પત્તિ માત્રથીજ ગુરુ થાય છે એમ કહે છે. આ વાક્યમાં હું "ઉત્પત્તિમાત્ર" શબ્દ ઉપર આપનું ધ્યાન ખેંચું છું.

જાતિપરિવર્તન અન્ય જન્મમાં.

આ પ્રસંગમાં જે લોકો જાતિપરિવર્તન કરવાને પ્રમાણ આપે છે તે જ પ્રમાણનો વિચાર કરીએ.

शूद्रायां ब्राह्मणाज् जातः श्रेयसा चेत् प्रजायते । अश्रेयान् श्रेयसीं जातिं गच्छेत्यासप्तमायुगात् ॥

આ શ્લોક પછી તુરતજ

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् । આ શ્લોક છે, સ્વાર્થી લોકો આટલોજ શ્લોક બોલીને ભોળાઓને છેતરે છે. ધર્મચર્યાથી જઘન્ય વર્ણ ઉત્તમ ઉત્તમ વર્ણને પ્રાપ્ત કરે છે. પણ તે ક્યારે? તેનો ભ્રમ ન થાય તે માટે કહે છે કે જાતિ (જન્મ) પરિવર્તન થતાં, બીજા જન્મમાં ઉત્તમ વર્ણને પ્રાપ્ત કરે. આ ચાલુ જન્મમાં નહિ. કારણ કે પૂર્વ સૂત્રમાં અધર્મ સેવે તો અન્ય જન્મમાં जन्मतः श्रेयान् બ્રાહ્મણાદિ ઉત્તમ વર્ણપદ પોતાનાથી ઉતરતી યોનિમાં જન્મે છે. આ વાક્યથી આપણે નક્કી કર્યું કે, બીજા જન્મમાં જ વર્ણ બદલાય છે કારણ "य इह रमणीयचरणा" શ્રુતિ પ્રમાણ છે.

જન્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા છે. કર્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા નથી. એકજ જન્મમાં જો કર્મથી જાત્યન્તર થઇ શકતું હોય તો "जन्मत श्रेयान्" પદ વ્યર્થ પડી જાય.

य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयां योनिं आपद्येरन् । श्वयोनिं वा शूकरयोनिं वा चाण्डालयोनिं वा.

सोपि तैस्तत्कुले जातः कर्मणा जायते यतः । श्रीमद्वल्लभाचार्यजी.

આ શ્રુતિ આપણને શું દર્શાવે છે? જેવાં આચરણ તેવો જન્મ પામે. કપૂય આચરણવાળાને કૂતરાની કે ભુંડની કે ચાંડાલની યોનિ મલે છે. સારાં આચરણ કરનારને બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય

હવે ધર્મ અધર્મની વ્યાખ્યા ગીતાજીના વાક્ય સાથે જોડી શકાશે—

ચાર વર્ણ શાસ્ત્રમા તેમજ વેદમા પણ છે, પરતુ ચાર વર્ણ અતિરિક્ત પાચમો કોઈ વર્ણ નથી એમ મનુ કહે છે—" नास्ति वर्णस्तु पचम "

તો બીજી જાતિ ક્યાથી આવી ? જગતમા અનેક જાતિ જણાય છે તેનું શુ ?

અર્થાત બ્રાહ્મણીમાંથી શુદ્ર નામનો પુરુષ જે પ્રજા કરે તે ચાડાળ, ચાડાળાદિ જેવી હીન પ્રજાનું વર્ણન શાસ્ત્રમા છે, દસ્યુ કરીને એક જાત તે ઋગ્વેદમા પણ લખી છે તેના વિચારનો મંત્ર છે. આગળ ચાલતા પાચમા વર્ણમા પાચમી વર્ણસકર જાતિ લખી છે. એવી ઘણી જાતિ વેદે કહી છે આ સિવાય મનુના અ. ૧૦ માના ૩૦ થી ૫૦ શ્લોક સુધી અનેક હીન જાતિઓનું વર્ણન કર્યું છે, અને તે યજુર્વેદના ત્રીશમા અધ્યાયમા સ્પષ્ટ નામ છે, છતા વેદમા અન્ય કોઈ જાતિનુ નામ નથી એવી બુમ પાડનારાએ વેદ જોયો નથી. મનુ કે યાજ્ઞવલ્ક્ય તેને દેખાતા નથી ફક્ત કલ્પનાના ઘોડા ઉડાવવા છે શાસ્ત્રમા ચાડાલ શ્વપચે શુ કરવુ ? તે પણ લખ્યુ છે

चाण्डालश्वपचाना तु बहिर्ग्रामात् प्रतिश्रयः। अपपात्राश्च कर्तव्या धनमेषा श्वगर्दभम्।
वासासि मृतचेलानि भिन्नभाण्डेषु भोजनम्। कार्ष्णायसमलङ्कार परिव्रज्या च नित्यशः॥ मनु॥

ચાડાલ શ્વપચોનો વાસ ગામથી બહાર છે. પાત્રથી તેમનો બહિષ્કાર છે એટલે કે તેમણે વાપરેલુ પાત્ર કોઈ પણ સસ્કારથી શુદ્ધ થતુ નથી, કુતરા—ખર તેમનું ધન છે. શબના વસ્ત્ર તે લે. આ માણસો સાથે મનુ ભગવાન આજ્ઞા કરે છે કે ધર્માનુષ્ઠાન સમયે ચાણ્ડાલાદિ સાથે બોલવાનો કે તેને જોવાનો વ્યવહાર ન કરવો હવે તમને સમજાશે કે જ્યા શાસ્ત્રમા ધર્મક્રિયા મૂર્તિપૂજા કે સેવા કરતી વખતે તેમની સાથે બોલવાનો કે કોઈપણ વ્યવહાર કરવાની શાસ્ત્ર મના કરે છે, તો તેને મદિરમા પેસાડીને આપણાથી ધર્મની ક્રિયા થાયજ કેમ ? અન્ત્યજ અને અત્યેવસાયી જુદા છે.

ધોબી, ચમાર, નટ, વાશ ફોડા કૈવર્ત્ત, મેદ, (વ્યાધની કોઈ જાત) અને ભીન સાતનો અન્ત્યજમા સમાવેશ છે ચાડાલ—શ્વપચ—ક્ષત્તા—સૂત—વૈદેહક—માગધ અયોગવ આ સાત અન્ત્યાવર્સાયીઓ છે. એવા ભેદ પાડવાનુ કારણ એ છે કે પરસ્પર તે કોમમા પણ તરતમ રાખવાથી અતિ નીચ કર્મચાડાલ શ્વપચ જેવા—ચર્મકાર સાથે ભળી જાય નહિ એ તેમા પણ ગૂઢ તત્ત્વ છે

દરેક જાતિ સમાજનુ અંગ છે.

તમારા ઉપર કોઈ પ્રહાર કરવા આવશે ત્યારે મસ્તકરૂપી બ્રાહ્મણનું રક્ષણ કરવા હાથ રૂપી ક્ષત્રિય ઉચા થઇ રક્ષણ કરશે જ્યારે ઊરુ તથા ચરણ ઉપર પ્રહાર આવશે તો પણ રક્ષણ કરવા માટે હાથ રૂપી ક્ષત્રિય નીચા આવીને રક્ષણ કરશે જ જો બ્રાહ્મણ રૂપી મસ્તક બગડશે તો આખું શરીર મેડ-(ગાડા) જેવુ બનશે માટે આખા શરીરમા બ્રાહ્મણ રૂપી મસ્તકનું ખાસ રક્ષણ કરવાની જરૂર છે. બ્રાહ્મણને સર્વ વર્ણનો ગુરુ કહેવાનુ કારણ સમજ્યા હશો. તેના દાખલા સર્વ કાઈ વ્યવહાર થાય છે સમાજમા સુધારો વધારો કરવાનો વિચાર પ્રથમ મસ્તકમા થાય છે આપને અમારે જણાવવુ જોઇએ કે જે અન્ત્યજ છે તે પણ અગ છે, પણ તે અગ તેને સ્થાને પોતાની ફરજ બજાવતું રહે તોજ શોભે, તે અગ બીજા અગો જેટલુંજ વહાલું અને ઉપયોગી છે,, ગુદા અગ આપણુ છે, ઉપયોગી છે, શુદ્ધિ વિના જરા પણ જીવી શકાય નહિ. અગનો જેમ પરસ્પર ઉપકારક ભાવ છે તેમ વર્ણનો પણ જાણવો. પોતપોતાના કર્મમા જે અભિરત રહે તેજ કલ્યાણને મેળવે છે. " स्वे स्वे कर्मणि " શ્લોક એજ કહે છે પૂર્વ જન્મના કારણથી તો આ દેહ તમને મલ્યો છે. શ્રુતિ પણ કપૂયચરણ રમણીય ચરણ કહે છે દુષ્કૃતથી કપૂયયોનિ—શ્વાન સૂકર

ચાંડાલ-યોનિ સુકૃતથી બ્રાહ્મણયોનિ મળે છે. બ્રાહ્મણ-ક્ષત્રિય-વૈશ્યની યોનિ પૂર્વ જન્મના કર્મથીજ મળે છે. એ તમારે ભૂલવું નહિ.

એક પાશ્ચાત્ય વિદ્વાન શું કહે છે.

જેઓ વર્ણવ્યવસ્થા પ્રગતિમાં બાધક છે, કોઇ પણ રીતે ઉપકારક નથી, વર્ણવ્યવસ્થાની જરૂર નથી એવા વિચારોને પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોના જ અભિપ્રાય જણાવીએ છીએ.

"The system of Cast," says Sir Henry Cotton, "far from being the source of all troubles which can be traced in Hindu Society, has rendered most important service in the past, and still continuse to sustain order and solidarity.

"Caste in India cannot be either abolished or extinguished. The system will lost for untold centuries, because in suits India on the whole. Hindu Society without caste is inconcei ble. Reformers must be content to mrke the best of a system wich cannot be destroyed........The deep waters of Hinduism are not easily stirred. Ripples on the surface have the depths unmoved.

સર હેનરી કોટન કહે છે કે "જાતિપ્રથા" હિન્દુ સોસાયટીમાં જણાતાં દુઃખોનું મૂળ નથી, પરંતુ તે પ્રથાએ તો ભૂતકાળની અંદર ઘણી ઉત્તમ સેવા બજાવી છે. અને હજુ પણ તેણે વ્યવસ્થા અને સ્થિરતા ટકાવી રાખી છે.

જાતિપ્રથા હિન્દુસ્તાનની અંદર દૂર થઇ શકે કે નાશ પણ થઇ શકે એમ નથી. એ પ્રથા ન કહી શકાય એટલા સૈકાઓ સુધી ચાલશે. કારણ કે તે હિન્દુસ્તાનને સંપૂર્ણ બંધબેસતી છે. જાતિપ્રથા વિનાની હિન્દુ સોસાયટી (સમાજ) કલ્પી ન શકાય એવી છે. સુધારકોએ, જે પ્રથાનો નાશ ન થઇ શકે તેનો ઉત્તમ ઉપયોગ કરી સંતોષ માનવો જોઇએ. હિન્દુત્વનાં એટલાં ઉંડાં જળ છે કે તે સહેલાઇથી હલાવી શકાય એમ નથી. ઉપરના તરંગો તો જળની ન હલાવી શકાય એવી

શૂદ્ર, સ્ત્રીઓ વૈશ્ય અને પાપયોનિ ચાંડાલ જેવાની ભક્તિથી પરાગતિ માની છે. નહિ કે વર્ણાશ્રમ બદલી નાંખવાની પરવાનગી આપી છે.

આ આપત્કાલ નથી. જાણીબુજીને ધર્મ ન તજો.

આપત્કાલનો ખોટો અર્થ ન કરવો. આપણને ટેવ પડી છે કે જ્યારે ત્યારે આપણી નબળાઇને આપત્કાલ માની લઇએ છીએ. જ્યારે દુષ્ટોના આક્રમણો હોય, જ્યારે જંગલમાં પ્રાણ જવાની તૈયારી થતી હોય, દુર્ભિક્ષ હોય તેવા ભયંકર સમયનો દાખલો લઈ ઘરની પથારીમાં પ્રમાદથી પડેલાએ આપત્તિકાલના ધર્મશાસ્ત્રની છૂટ ન લેવી, ઉપનિષદની એક વાર્તા યાદ આવે છે (છાંદોગ્યના પ્રથમ પ્રપાઠકના દશમા ખંડમાં છે) ચક્રનો પુત્ર ઉષસ્તિ નામનો એક ઋષિ અશ્મવૃષ્ટિકૃત દુષ્કાળથી દૂષિત કુરુ દેશમાં પોતાની યુવતિ સાથે જતો હતો. રસ્તામાં તેને માવતનું ગામ આવ્યું. ત્યાં ભૂખથી પ્રાણ નીકળતો હતો તેણે એક માવત પાસે અડદની યાચના કરી-મને અડદ ખાવા આપ, હું મરણાંત ભૂખ્યો છું. આનો ઉત્તર માવત કેવો સુંદર આપે છે? માવત "બધરહડ" કરવા માગતો નથી, "આજે હું અડદ ખાઈ રહ્યો છું તેનાથી હવે બીજા મારી પાસે નથી, જે છે તે ઉચ્છિષ્ટ રહેલા છે તે છે માટે હવે હું શું કરૂં? ઉષસ્તિએ વિચાર્યું કે મારે પ્રાણની રક્ષા કરવી છે તેથી તે પણ ખાવા. પછી કહ્યું કે ઉચ્છિષ્ટ માષમાંથી મને આપો. પછી તે માવતે પ્રાણાન્ત દુઃખિત ઉષસ્તિની પ્રાર્થનાથી માષ આપ્યા અને તે તેણે ખાધા. પ્રાણ રક્ષા થઇ, હવે આપત્કાલ દૂર થયો, તે પછીની ક્ષણે માવત કહે છે કે આ અનુપાન લો (જલપાન કરો) આ વખતનો ઉષસ્તિનો જવાબ ધ્યાનમા રાખજો.

નહિ ખાધા હોત તો મારી પ્રાણરક્ષા ન થાત. તેથી તે મેં આપદ્ધર્મથી માષ સ્વીકાર્યા. હવે માષ ખાવાથી મારી પ્રાણરક્ષા થઇ ગઇ. હવે કામનાથી ઉચ્છિષ્ટ જળ પીવું એ અધર્મ છે, આ બારીક જ્ઞાન તમોને શું સમજાવે છે? મોટાઈની કામનાથી હવે આજ કાલના દેશસેવાના બહાનાથી અથવા કોઈપણ કામનાથી અત્યારે ગમે તેનું પાણી પીવા લાગ્યા, તેના ઘરમાં ખાદ્ય લીધું, આ કામનાના ધમોધાતોથી ધર્મ ગયો. તેથી દેશનો ઉદ્ધાર તો સો ગાઉ દૂર ગયો, અનાચારના કારણથી બુદ્ધિ બગડી, અને પુનઃપુનઃ અનાચારપરંપરામાં ભારતના સંતાનો, બગડવા માંડ્યા. કારણ કે અન્ન તેવું મન થાય તે શ્રુતિ કહે છે. ખાધેલું અન્ન ત્રણ પ્રકારે વહેંચાય છે, જડભાગનો પરિણામ મલ...સૂક્ષ્મનું મન બને છે. આ છાંદોગ્યમાં અન્ન, જલ, તેજ આ ત્રણ મન, પ્રાણ વાણી રૂપે પરિણમે છે તે સ્પષ્ટ જણાવે છે, આજ હેતુથી હમારા પૂર્વજ દશદિગન્તવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી વર્ણાશ્રમધર્મની ઉપયોગિતા સેવાપ્રકારમાં જણાવતાં કહે છે કે—વર્ણાશ્રમધર્માનુસાર જે દ્રવ્ય સંપાદન કર્યું હોય તે દ્રવ્યથી સામગ્રી સંપાદન કરી તે પ્રભુને ભોગ ધરાવવો અને પવિત્ર અન્નથી વ્યવહાર કરવો. આ આપણી પ્રાચીન ભારતની સભ્યતા છે. આ ભગવાનના ઉચ્છિષ્ટને બદલે ગમે તેનું ઉચ્છિષ્ટ ખાનારા આસુરી પ્રવાહોમા તણાયેલને શાસ્ત્રમાં કહેલી ભગવન્મંદિરની બુહારી કરતાં શરમ લાગે, અને ઝાડુ લેઈ પાયખાના સાફ કરવાની અનાધિકાર દાંભિક ચેષ્ટાઓમાં પડતાં જરાપણ શરમ ન આવે. એનું કારણ પ્રભુજ જાણી શકે છે, જ્ઞાની થઈ ગયા હો તો પણ આચારવિરુદ્ધ વર્તવાનું ફરમાન નથી. તો સાધારણ કક્ષાના માણસો સ્વચ્છંદતાથી કેમ વર્તી શકે? ભગવાન ઉત્તરમીમાંસાસૂત્રકાર પણ કહે છે કે— આ સૂત્રમાં પણ આજ્ઞા કરે છે કે અંતઃકરણશુદ્ધિ જ્ઞાનમાં સાધન તરીકે ઉપયોગમાં આવે અને જ્ઞાન થયા પછી સાધનની જરૂર નથી પણ આપત્તિ સિવાય બાકીના વખતમાં જ્ઞાની અને સાધારણ બન્નેને માટે છુટ આપવામાં આવતી નથી આપત્કાલને માટે તો "જીવિતાત્યય" વચનથી

આપત્કાલમાં ખાવા માટે આજ્ઞા કરે છે, આજ માટે ગમે તેવા અનાચાર કરનારાથી ભારતની સંસ્કૃતિ સો ગાઉ દૂર છે.

ભક્તિમાર્ગ સર્વનો ઉપકારક છે માટે પાપી યોનિ માટે તેજ ઉપાય છે.

હવે તેમણે શું કરવું ! તેમને માટે વૈદિક કર્મ નથી, તેમને માટે ઉપાય સારામાં સારો ગીતાજી બતાવે છે તે સ્વીકારે. ભગવદ્દર્શનની ઇચ્છા હોય તો સ્વરૂપ દર્શનથી પૂર્ણ કરી શકે.

પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણનો આશ્રય સ્વીકારી પોતપોતાની કક્ષામાં રહેનાર પાપયોનિ હોય અર્થાત્ અંત્યજ અન્ત્યેવસાયી જેવો પાપયોનિ અને સ્ત્રિયો વૈશ્ય કે શૂદ્ર પણ પરાગતિને પામે છે. માટે ભક્તિમાર્ગ જેવો વિશ્વવ્યાપક ધર્મ તેમને માટે તૈયાર છે, તે પોતાને ઘેર ભગવાનમાં પૂર્ણ પ્રેમ રાખી દઢતર ભક્તિ દ્વારા રોહીદાસની માફક પોતાને ઘેર ભગવાનને હાજર કરી દે તેમાં પરમ શ્રેય છે. મંદિરમાં પેસવાથી તો વિકર્મનું પાપ લાગશે. બીજા ધર્મમાં દાખલ થવાથી તેમનું કલ્યાણ થાયજ નહિ. પોતે વધારે પાપી થાય છે. માટે પ્રભુના ચરણમાં ભક્તિદ્વારા ઘણા તરી ગયા. તે પરમભક્ત જગતમાં પ્રસિદ્ધ છે. પણ ભક્ત બન્યા વિના ભક્તનાં દંભમાં ઉચ્ચ ભક્તોના ઓઠાં આપી તેમને સમાન ઉત્તમ કક્ષા તો અમને કેમ નહિ ? એવું બોલનારા શાસ્ત્રને કચરે છે. માટે સર્વને બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, શૂદ્ર, અન્ત્યજ, અન્ત્યેવસાયી ગમે તે હો તે પોતે પોતાની કક્ષામાં ધર્મ પાળીને તેમાંજ રહીને ભક્તિથી ઉત્તમ કક્ષા ભગવત્પ્રાપ્તિ કરી શકે. એજ

शुद्धाद्वैत–भक्तिमार्तंड.

(લેખકઃ—શ્રીયુત વિનોદરાય જયસુખરાય મજમુંદાર બી. એ. એલ્એલ્. બી., અમરેલી.)

ગયા અંકે માતા જસોદાનાં અહોભાગ્ય વર્ણવ્યાં છે તે ભાગ્યનો લાભ જે ભક્તિભાવ ભીનું હૃદય કરે તો આપણા સંપ્રદાયમાં દરેક સ્ત્રીપુરુષ લઇ શકે છે તેમ છે. કારણ કે જીવ કાંઇ સ્ત્રી જાતિ જુદો અને પુરુષજાતિ જુદો નથી. તે તો એક સરખો બન્ને જાતિઓમાં એક સરખોજ છે માટે ગદ્યમંત્રના શબ્દોમાં સ્ત્રી માટે કાંઇ પણ ફેરફાર રાખવામાં આવ્યો નથી.

વળી સ્વરૂપસેવાથી જે વિશેષ લાભ છે તે ચિત્રજીની વગેરેની સેવામાં નથી તેનું કારણ એ છે કે શ્રીઆચાર્યચરણની આજ્ઞા "ચેતઃ તત્પ્રવણ" કરવાની છે તે શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ શ્રીમુખથી જે તારતમ્ય બતાવ્યું છે તેને અનુસરીને છે તે એ રીતે કે "તપસ્વિભ્યોઽધિકો યોગી જ્ઞાનિભ્યોઽપિ મતોઽધિકઃ કર્મિભ્યશ્ચાધિકો યોગી **તસ્માદ્યોગી** ભવાર્જુન ॥ પરમાત્મા અર્જુનને યોગી થવાની આજ્ઞા એટલા માટે કરે છે કે યોગી તપસ્વીઓથી, જ્ઞાનીઓથી અને કર્મનિષ્ઠથી અધિક (ચડે) છે. એમ કહેવાનું કારણ સમજવાની જરૂર છે. તપ કરવામાં મનને જે વસ્તુ મેળવવાની તથા ભોગવવાની શક્તિ હોય છે (છતાં) તે વસ્તુઓ નહિ મેળવવાનો દઢ નિશ્ચય કરીને મન વશ કરવું અને શરીરને કષ્ટ પડે તો ભલે પડે તેમાં પાછા હઠવું નહીં એમાં તાત્પર્ય નકારમાં અથવા નિષેધમાં વિગેરે પરિણામોમાં રહેલું છે. અને ભાર શું છે ! કેમ ન રહેવાય ? વિગેરે પરમાત્મા સિવાયની વાત ઉપર ભાર આવ્યો અને પ્રભુ પ્રસન્ન કરવા નિમિત્તે તપ હોય તોપણ પરમાત્મા સાથે દઢ બાંધીને વાત્સલ્ય ભાવ ખીલવ્યા વિના અભિમાન (દઢ) અહંભાવ ખીલવીને અમુક કામનાને આગળ કરીને તપોબળથી પ્રભુને પ્રકટ થવાની ફરજ પાડવામાં અને તેની પાસેથી વરદાન માંગવામાં તાત્પર્ય છે. અને જ્ઞાનીને તેથી ઉલટું "અમાનિત્વં" ઇત્યાદિ દઢ નથી માટે કંઈ જોઇતું નથી એ સારા ગુણો ખરા પણ તે સાથે વૈરાગ્ય ઉપર ભાર હોવાથી.

અને વૈરાગ્યપોષક નકારાન્ત રહેણી પસંદ હોઈ ભગવાન પ્રત્યે પ્રેમવાત્સલ્યાદિને પણ "રાગ" ગણીને વિરાગ એટલે પ્રભુમાં રાગ પણ ઉત્પન્ન ન થવા દેવાનું વર્તન ગ્રહણ કરવામાં આવે છે કેમકે રાગથી બન્ધન થાય છે એવો (without exception) ભય અસ્થાને ખીલવ્યાથી ભગવત્સંબંધી બાબતોમાંથી પણ વિરાગ એટલે બહિર્મુખતા ઘણી વખતે પેસી જાય છે અને પ્રભુને માત્ર જાણ્યા એટલું શુષ્કજ્ઞાન પૂરતું મનાય છે. ત્રીજા કર્મનિષ્ઠ વર્ગને વિધિ નિષેધને આધીન વર્તવુંજ જોઇએ છીયે. હવે વિધિ એટલે વેદમા જે આજ્ઞાર્થ વાક્યો વાપર્યા છે પણ વેદ તો સંપૂર્ણ ઉપલબ્ધ થતા નથી–દાખલા તરીકે ઋગ્વેદની શાખા કેટલાક ૨૪ કહે છે કેટલાક ૨૧ કહે છે તેને બદલે આજે બે ચાર ઉપલબ્ધ છે. યજુર્વેદની ૧૦૧ શાખાને બદલે આજે ૧૧ ભાગ્યે ઉપલબ્ધ હશે! સામવેદની તો એક હજાર શાખા કહેવાય છે તેને બદલે દસ વીસ ઉપલબ્ધ હશે!! અને અથર્વ વેદની કોઇ ૧૨ કહે છે અને કોઇ ૯ કહે તેમાં બે ત્રણ ઉપલબ્ધ હશે છતાં તકરાર ખાતર જેટલું ઉપલબ્ધ છે તેમાનાં વિધિવાક્યો ઉપર ભાર દઇ કર્મના કાયદા પ્રમાણે પ્રભુએ ફળ દેવુંજ જોઇએ એવું તપના જેવું તાત્પર્ય રાખીને દેશકાળ દ્રવ્ય મંત્રકર્તા અને કર્મને કાળ (સમય) જેવાં શુદ્ધતમ રહ્યા નથી એ મોટી વાત ભુલાઇ જવાય છે માટે શ્રીમુખે "યોગી" બનવાની અર્જુનને આજ્ઞા કરી યોગને અધિક કહ્યો તેનું કારણ એજ છે કે "યોગઃ કર્મસુ કૌશલં" એમ શ્રીમુખે વ્યાખ્યા આપી કે "કુશલતા" ચતુરાઇ ઝીણી સમજ ઉંડી સમજનું (રહસ્ય) તું ગ્રહણ કર એમ કહીને તુરત તેજ અધ્યાય છઠ્ઠાના સડતાળીસમા શ્લોકમા છેવટનો નિર્ણય આપી દીધો કે "યોગિનામપિ સર્વેષા મદ્ગતેનાન્તરાત્મના, શ્રદ્ધાવાન્ ભજતે યો માં સમે યુક્તતમોમતઃ" અર્થાત્ ૧ મદ્ગતાન્તરાત્મા થઇને શ્રદ્ધાયુક્ત બનીને ૩ મારૂં ભજન કરે તે પાછલા શ્લોકના અનુસંધાનમા અર્થ કરીયે તો તપસ્વીથી, જ્ઞાનીથી, અને કર્મીથી જેઓ (શ્રેયાન્) છે તેવાઓમાં પણ શ્રેષ્ટ એ છે કે જે મારૂં (શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માનું) શ્રદ્ધાયુક્ત ભજન મદ્ગતાન્તરાત્મા થઇને કરે તે શ્રેષ્ટ યોગી છે.

વળી જ્ઞાન વિજ્ઞાન બ્રહ્મ, અધિભૂત અધિદૈવ અધ્યાત્મ, અધિયજ્ઞ, રાજવિદ્યા વિગેરે કહી બતાવીને છેવટે અધ્યાય નવમાના ચોત્રીસમાં શ્લોકમાં એજ આજ્ઞા કરી કે मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी ઇત્યાદિ એ હું સર્વવ્યાપક છું છતા અનેક વિભૂતિ (વિશિષ્ટતેજ સત્તા વિગેરેવાળે સ્થળે અને વ્યક્તિઓ) મા હું વધારે પ્રકટ છું અને એ વ્યષ્ટિ ઉપરાંત સમષ્ટિરૂપ વિરાટ્ પણ હું છું. એમ બતાવ્યું એ બ્રહ્મરૂપને ભજનારા સ્તવનારા પણ તેની સાથેજ અર્જુનને બતાવ્યા અને મત્કર્મકૃત્ મત્પરમો મદ્ભક્તઃ થવા આજ્ઞા કરી તેથી અર્જુને અધ્યાય બારમાના પહેલા શ્લોકમાજ પ્રશ્ન પૂછ્યો કે "આપ એટલે કે અ. ૧૧ ના શ્લોક ૪૬ અને ૫૦ માં કહેલું "ચતુર્ભુજ" "સૌમ્યવપુ" ઇત્યાદિવાળા શ્રીકૃષ્ણ પોતાને ભજનારા "યોગવિત્તમ"? કે આ જગદ્વ્યસ્ત હમણા મેં જોયું તેનું અવ્યક્ત અક્ષર સ્વરૂપ ભજનનારા "યોગવિત્તમ" છે? તેનો સ્પષ્ટ જવાબ તુરતાતુરત શ્રીમુખે આવ્યો છે કે "મય્યાવેશ્ય મનો યે માં નિત્યયુક્તા ઉપાસતે શ્રદ્ધયાપરયોપેતાસ્તે મેયુક્તતમા મતા એ જવાબને ઉપર જણાવેલા છઠ્ઠા અધ્યાયના સડતાળીસમા શ્લોક સાથે સરખાવવામા આવશે તો તેની તેજ વાતે વધારે ભાર દઇને આજ્ઞા કરી છે કે "મદ્ગતેનાન્તરાત્મના અને" પણ "નિત્ય" તેવી રીતે યુક્ત રહેવું જોઇએ અને શ્રદ્ધાવાન થઇને ભજન કરવાનું કહ્યું છે તે શ્રદ્ધા પરાશ્રદ્ધા હોવી જોઇએ એટલે તે યુક્તતમ ગણાય. અર્થાત્ અક્ષરને ભજવાવાળા માટે એકદમ પહેલી પસંદગી શ્રીમુખમાંથી નીકળી નથી પણ તેને ભજે છે તે આટલી આટલી યોગ્યતાવાળા (હોય તો) અધિક ક્લેશ પડે ત્યારે મનેજ પામે છે એમ ઠીક ઠીક સમાધાન

નહીં તેમ બીજી કોઈપણ વસ્તુ તરફના સ્નેહ કરતાં ન્યૂનતા અથવા બીજા સ્નેહ સાથે સમાનતા પણ રહેશે નહીં. અર્થાત ખરેખરૂં માહાત્મ્યજ્ઞાન હૃદયારૂઢ નહીં થયું હોય ત્યાં સુધી સુદૃઢપણામાં તથા સર્વશ્રેષ્ઠતામાં ન્યૂનતા રહેશે. ત્યાં સુધી "પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ" ઉત્પન્ન થશે નહીં. માટેજ કવિવર્ય દયારામભાઈએ ગાયું છે કે "નિશ્ચયના મહેલમાં વસે વ્રજવાડિલો" અને નિશ્ચય થવો એ કોટિ મનથી પર છે. મન છે તે સંકલ્પ વિકલ્પાત્મક છે અને શ્રીમુખેથી કઠ ઉપનિષદ્ વાક્ય અર્જુનને કહ્યું છે તેમ મનસસ્તુ પરા બુદ્ધિ છે તે બુદ્ધિનું લક્ષણ "નિશ્ચયાત્મિકા બુદ્ધિ" એવું છે. મન તો અત્યારે નાસ્તિકોનાં પણ ખીલેલા છે તેથી અનેક વિકલ્પો અને ઉંધા સંકલ્પો કરે છે તેથી તેની બુદ્ધિ ભગવદ્વિમુખ જોવામાં આવે છે.

શ્રીવ્રજયાત્રા.

વલ્લભદાસને ઘેર જ્યાં ભગવદ્વાર્તા હમેશાં થાય છે ત્યાં સર્વે ભગવદીયો આવે છે. સર્વે જેશ્રીકૃષ્ણ કરીને બેસે છે. કૃષ્ણદાસ બત્તી જોડે છે, વૈષ્ણવો મંગલાચરણ કરીને પુસ્તકજી ખોલે છે. ત્યાં રતનમાં કહે છે—રામદાસજી વલ્લભદાસભાઈને પુછો જે કાલે રાત્રે "વ્રજ વહાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું." તે ધોલ બોલાવ્યું તેનો અર્થ અને સહેજ ભાવાર્થ સમજાવો તો ઘણું સારૂં.

વલ્લભદાસ—માજી, તમે બહુ સારૂં પુછ્યુ છે. આપણા મહારાજશ્રી આ વરસમાં વ્રજયાત્રા કરાવવાની આજ્ઞા કરી રહ્યા છે. તે શ્રવણ કરી ગુજરાત, કાઠીઆવાડ, કચ્છ, વરાડ, મારવાડ પ્રભૃતિની શ્રીવલ્લભસૃષ્ટિ વ્રજયાત્રાનાં સુખ લેવા તલસી રહી છે આ વર્ષની વ્રજયાત્રાનાં સુખ તો ભાગ્યશાળીઓને પૂર્ણ મળવાનાં છે.

રામદાસ—વહાલા વલ્લભદાસભાઈ, માજીએ પુછ્યું છે તે કરુણા કરી કાંઇ શ્રવણપાન કરાવો તો સારૂં.

વલ્લભદાસ—રામદાસભાઈ, આપણને સર્વેને વિઠ્ઠલદાસભાઇ તે રસનું પાન કરાવશે.

વિઠ્ઠલદાસ—મારા વહાલાના વહાલાં ભગવદીયો, શ્રીવલ્લભ અને વલ્લભીદારા મેં જે પાન કર્યું છે તેનું ફરીને અવગાહન કરાવવા તમોએ મારા ઉપર કૃપા વિચારી છે તો જે મેં સાંભળ્યું છે તે નિવેદન કરૂં છું. પરંતુ ભગવદીય રણછોડદાસ માસ્તરની મંડલીમાં એક વખત મેડા ઉપર વૈષ્ણવો રાત્રે "વ્રજ વહાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું ના ના નહી આવું રે ના નહી આવું વ્રજ વહાલુરે વૈકુંઠ નહિ આવું." તે ધોળ ગાઈ રહ્યા હતા. નીચે રસ્તા ઉપરથી એક ઓંકાર-શંકર નામના અન્યમાર્ગી પંડિત નીકળ્યા તેના કાન ઉપર આ શબ્દ પડતાં મનમા વિચારવા લાગ્યા, જે આ મોડાઓ મરજી આવે તેમ ગાયા કરે છે, ઠીક છે, પણ કાલે સવારે હરિદાસ મારા પડોશમાં રહે છે તે વખતો વખત ખડાકાં (ગપ્પા) માર્યા કરે છે, જે અમારા પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલું જેના અનુભવમાં આવ્યું હોય તેટલું તે ગાય છે, તો આ માસ્તરની મંડલીવાળા જ્ઞાન વિનાના વૈષ્ણવો કહે છે જે વૈકુંઠ નહિ આવું, જે વૈકુંઠ દેવતાને દુર્લભ છે તેના કરતાં વ્રજમાં શું અનુભવ્યું હશે? તે પ્રશ્ન હરિદાસને પુછીને તેને હરવખત ગપ્પાં મારતો બંધ કરી દઇશ. તેવીજ કલ્પનામાં રાત આખી કાંઇ ઉંઘ કાંઈ કલ્પના કરી વીતાવી દીધી. સવારમાં ઉતાંજ હરિદાસને બોલાવીને કહે છે હરિદાસ, આજે તમારી પોલ પકડી લાવ્યો છું. જવાબ પુરો કરજો.

હરિદાસ—પંડિતજી, આજે તો કાંઇ બહુ જોરશોરમા વાત છે? એવડી બધી ભારે પોલ શું પકડી લાવ્યા છો?

પંડિતજી—રાત્રે દશ વાગતાને સુમારે દોશીવાડાની પોળમાંની નીકળતાં ઘોડીજ વારે કાલુપુરના રસ્તા અને રીચીરોડ સડક વચ્ચે જે ગલી આવે છે તેમાં મેડા ઉપર માસ્તરની મંડળીમાં વૈષ્ણવો બોલી રહ્યા હતા જે "વ્રજ વહાલુંરે વૈકુંઠ નહિ આવું, ના ના નહિ આવુંરે, ના નહી આવું. વ્રજ વહાલુંરે વૈકુંઠ નહિ આવું." તો ભાઇ હરિદાસ, તમો વખતોવખત ગપ્પાં મારો છો જે અમારા પુષ્ટિમાર્ગમાં જેણે જેટલું અનુભવ્યું છે તેટલુંજ તે ગાય છે તો આ વૈષ્ણવો કહેતા હતા જે વૈકુંઠ નહિ આવું. તો ભાઈ હરિદાસ, વૈકુંઠના દર્શનનો તો જેને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ગઇ હોય તેનેજ થાય છે અને મોક્ષ પણ ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મલે છે. આવડું બધું કઠિન કામ છતાં તે લોકો રાત્રે ગાતા હતા જે વૈકુંઠ નહી આવું, ના નહી આવું. તો મોક્ષ કરતાં અધિક શું હોય જે મોક્ષને તરછોડીને કહે છે જે નહી આવું? અને તેથી પણ વ્રજમાં વધારે શું અનુભવ્યું જે વ્રજ વહાલું તેમ કહે છે. તો તે ગપ્પાં નહિ તો શું કહેવાય?

હરિદાસ—પંડિતજી તમારો પ્રશ્ન હું સમજ્યો છું. હવે મારે તમોને પુછવાનું છે જે તમે કહો છો જે ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મોક્ષ મલે છે તો તે ચાર આશ્રમ કયા કયા અને તે આશ્રમમાં શી રીતે વર્તવાનું તે જરા ઠીક કરીને કહો.

પંડિતજી—પહેલો બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અને તેમાં એક વખત જમવાનું છે. ભોંય પર સુવું, નશાવાળા કોઈ પદાર્થ ખાવા પીવા નહી, એકાંતમાં કોઇ સાથે ઉઠવું બેસવું નહી વગેરે વગેરે. બીજો ગૃહસ્થાશ્રમ તેમાં ઘર બાંધીને રહેવું અને ઘર આગળ આવેલા અતિથિનો બનતો વાણી પાણી ને સાથરી સંપત સાથે અન્ન, બધી રીતે સત્કાર કરવો. ત્રીજો વાનપ્રસ્થાશ્રમ તેમાં જંગલમાં (વનમાં) રહેવું સ્ત્રી સાથે હોય પણ સંસાર સુખને માટે નહિ. ભગવદ્ધર્મની અનુકૂલતા સારૂજ. ચોથો સંન્યસ્તાશ્રમ છે છતાં સર્વસ્વ ત્યાગ કરવો તેનું નામ.

હરિદાસ—"નારી મુઇ ઘર સંપતિ નાસી મુંડ મુંડાઇ ભયે સંન્યાસી" તેવા તો શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે કાશીમાં દશ હજાર સંન્યાસીનું સૈન્ય યવનની સેના સામે લડવા તૈયાર થયેલું હતું. સંન્યાસીના વેશના પડદા પાછળ મનમાને તેમ કરે તેવું તો નહીને?

પંડિતજી—તેવું સંન્યસ્ત તો નરકમાં બોળવાનું છે. તેનો આશ્રય કરનાર પણ સંસારમાં ડુબે. ઉપર કહેવા પ્રમાણે ચારે આશ્રમ જેને સિદ્ધ થાય એટલે યથાસ્થિત વર્તનમાં આવે તેનેજ મોક્ષ મળી શકે છે છતાં એવી કઠિનતાએ જે મોક્ષ મળી શકે છે તેને તે લોકો તરછોડે છે તે તેમની કેટલી બધી અજ્ઞાનતા ગણાય છતાં તમે તો હર વખત તેવા લોકોની સરાહના કર્યા કરો છો. હવે તેણે શું અનુભવ્યું તે જવાબ હું સમજી શકું તેવી રીતે આપો.

હરિદાસ—પંડિતજી તમે કોઇ વખત વૈષ્ણવોને વ્રજયાત્રા કરાવવા શ્રીવલ્લભકુલ બાલકો (ગોસ્વામી મહારાજો) પધારે છે તે જોયેલું કે સાંભળેલું છે?

પંડિતજી—દશ બાર વરસ પહેલાં એક વખત અમે એક શેઠની સાથે ગંગાજીએ ગયા હતા. ત્યાંથી પછી ગોકુલ મથુરાંની જાત્રા કરી વંદરાવન જોયું. પછી તે શેઠ વૈષ્ણવ હતા અને તેણે અમને જાત્રા કરવા રેલનું ખરચ આપ્યું હતું તથા ખાવા પીવાનું ખરચ પણ તે શેઠજ આપતા હતા. તે શેઠ શ્રીગુસાંઇજી મહારાજની સાથે વ્રજયાત્રા કરવા રોકાયા અને અમે પણ તે વખતે વ્રજની પરિક્રમામાં સાથે હતા તે વખતે જોયેલું તો છે પણ હવે બરાબર યાદ રહ્યું નથી.

હરિદાસ—પંડિતજી, સાંભળો બધા વૈષ્ણવોએ તે વખતે વિશ્રાંતઘાટ ઉપર જાત્રાના નિયમ લીધા. તેમાં બ્રહ્મચર્ય સર્વે પાળ્યાં. તે ચાળીસ દિવસની જાત્રા થઇ ત્યાં સુધી તમારા જોવામાં આવ્યું કે?

પંડિતજી—હા તે વખતે બધાં ભોય સુતા, પંચકેશ રાખતા, તેલ લગાડતા નહી, એક વખત જમતા, તેવું બધુ બ્રહ્મચર્ય આશ્રમ જેવો મેં બરાબર જોયેલો છે તે મને હજી યાદ પણ આવે છે પણ ભાઈ ગૃહસ્થાશ્રમનું શું ?

હરિદાસ—ગૃહસ્થાશ્રમ તેઓએ પાલ નાખેલા તે તેનાં ઘર સમજો. પોતાને પાસે આવે તેને ટાઢ તડકો વરસાદથી બચાવવા જગ્યા પણ આપે છે. લોટ દાલ અગર ખપતાને દાળ બાટી તૈયાર હોય તેથી પણ બનતો સત્કાર કરે તે ગૃહસ્થાશ્રમના ધર્મ ખરા કે નહિ ?

પંડિતજી—હા, તેમ પણ બન્યું હતુ તે પણ હવે મને યાદ આવે છે પણ વાનપ્રસ્થાશ્રમનુ શું ?

હરિદાસ—ત્યા ડેરા વનમાજ પડે છે. કોઈ દિવસ ગામમાં વાસ નથી કરતા. ચાર્તીમે ડેરા વનમાંજ પડે છે અને સ્ત્રીજન સાથે હોય તે ભગવદ્ધર્મમા અનુકૂલના માટેજ હોય છે. ત્યાં સંસારસુખને માટે સ્ત્રીઓ સાથે રાખતા નથી.

પંડિતજી—હા, તે પણ બન્યું હતું તે પણ મને યાદ આવે છે પણ સંન્યસ્તાશ્રમનું શું ?

હરિદાસ—ઘરમા લાખો રૂપીઆનો વહીવટ સગા મ્હોદર સર્વે છે છતા તે બધામાથી ચિત્તનો નિરોધ કરીને એટલે અમારૂં કોઇ નથી અમારા એક શ્રીગોવર્ધનધર છે એવું મન સાથે નિશ્ચય કરી આનંદથી ભગવદ્ટહેલ કરવી તે સંન્યસ્ત.

પંડિતજી—હા. તેમજ હતુ, અમારા શેઠને બહુજ જંજાલ ઘર આગળ હતી. રાતદિવસ વેપાર રોજગાર વહેવારમાથી બીલકુલ નવરા થાય નહિ છતા પણ ત્યા સર્વને કહી દીધુ હતુ જે ઘરના સારા યા માઠા કોઇ ખબર તમારે મને આપવા નહિ.

હરિદાસ—કેમ પંડિતજી, તે ચારે આશ્રમના ધર્મો તે લોકો વ્રજમાં ત્યાં ચાલીસ દિવસમા સિદ્ધ કરી લે છે એટલે વર્તનમા લાવે છે તે તમે નજરે જોયેલુ છે અને તેનુ ફલ મોક્ષ તરછોડે છે. ચાથી જે તેને વ્રજમા જે ચાલીસ દિવસમા જે સુખ થોડા પ્રયાસમા વિના ને શ્રીગુસાઇજી મહારાજની કૃપાથી મળેલુ છે એટલે અનુભવમા લીધેલુ છે તેથીજ તે ગાય છે જે વ્રજ વહાલું રે વૈકુંઠ નહી આવુ.

પંડિતજી—હરિદાસજી, હુ તો વ્રજમા ગયો છતા તમે જે સુખનું વર્ણન કર્યું તે બધું નજરે જોયેલુ છતા તેમાનો કાઇ અનુભવ કરી શક્યા નહી તેનું કારણ ?

હરિદાસ—પંડિતજી, તમે વાત કહી જે અનુભવમા આવી નહી તે બરાબર છે. વ્રજના સુખની ખબર તે અનુભવવાળા ભગવદીયોના સત્સંગથીજ મળી શકે અને તેવા ભગવદીયોનો સગ દાસધર્મવાલાઓનેજ ફલરૂપ થાય છે. તમોને તમારી પંડિતાઇએ એ સુખથી વેગળા રાખ્યા છે. શ્રીગુસાઇજી મહારાજ પણ પોતાની દૈવી સૃષ્ટિ ઉપર જ્યારે અતિશય કરુણાદ્રષ્ટિ વિચારે ત્યારે સત્સંગદ્વારાજ તે સુખ લેવરાવે છે અને તેવા સત્સંગનું સુખ વ્રજમા તેવા વ્રજના અનુભવવાલા ભગવદીયો હોય ખરા અને વ્રજયાત્રામિષે આવે પણ ખરા તેટલાજ પુરતું વ્રજયાત્રા કરાવવાનુ શ્રીગુસાઇજી મહારાજ વિચારે છે જેથી દૈવી જીવોના આનંદમા વૃદ્ધિ થાઓ. આ પ્રમાણે મે સાધારણ રીતે સાભલ્યુ છે તે મેં નિવેદન કર્યુ છે. ભાવ સંબંધ પ્રસંગ એટલે શ્રીગોપીજનોનો ભાવ કુંજન કુંજમે ભટકી હુ તો આવી વૃંદાવન અટકી તે કોઈ દિવસ કોઇ ભગવદીને પુછશુ.

જમનાદાસ—ભાઇ વલ્લભદાસ આજતો બહુજ આનંદ થયો. આપણી આખી મંડલી આ વરસે વ્રજયાત્રા કરવા જઇએ. આ વરસમા શ્રીગુસાઇજીએ કાઈ અગણિત દાન કરવા વિચાર્યું છે. આપણી આખી મડલી વચ્ચે એક અગર બે પાત્ર મોટા મોટા લઇએ. અને સર્વે મળીને સેવા

ગૂહરસ ગ્રંથોનો ઉપોદ્ઘાત જે છપાવ્યો છે તે મે (વસંતરામે) જ લખીને 'આસેતુહિમાચલ પંડિત'ના નામે પ્રકટ કરી નાંખ્યો છે. આવી ભયંકર અપ્રામાણિકતા કે બેઇમાની મેં જાહેરમાં કરેલી હોય તેની મને યાદ નથી. હું પણ ગૃહસ્થાશ્રમી છું, પણ મારી ધર્મપત્નીને કે પુત્રીને ના એક પણ લેખ છપાવીને દુનિયાને ઠગવાનું હીચકારાપણું બતાવ્યું નથી. એમ કરનારને 'પ્રતિમલ્લ' પણ ન જ ગણું, પણ એક કાયર-ક્લીબ જ ગણું.

ખેર, હવે ખરી વસ્તુસ્થિતિ તો મારે જાહેરમાં મૂકવી જ જોઇએ. 'રસાલય ગૂઢરસ' ગ્રંથોના ઉપોદ્ઘાતના અસલ લેખક કોણ? આ વિષે આસેતુહિમાચલ પંડિતના હાથના લખેલા બોલતા કાગળો મારી પાસે છે. તે ક્રમશઃ પ્રકટ કરૂં છું. આ મજબૂત અને સંગીન પુરાવા પરથી વાચકો સમજી શકશે કે, દુશ્મનને દુશ્મન તરીકે જાહેરમાં ઓળખાવવામાં જેટલી ખાનદાની બતાવાઇ છે તેટલી દુશ્મન ઉપર પ્રહાર કરવામાં બતાવાઇ નથી. રસાલય અને ગૂઢરસ ગ્રંથ હું જુદા પ્રકટ કરવાની તૈયારીમાં હતો. મારે એક નાનીશી પ્રસ્તાવના અમુકજ લીટીમાં લખવી હતી. ગ્રંથમાં જો વિરુદ્ધ અંશ હોય તો તે પ્રસ્તાવનામાં લખવાથી ગ્રંથપ્રકાશકની પત્રકારનીતિને ઝાંખપ લાગે છે તે તો 'આસેતુહિમાચલપંડિત' જ કહી શકે. ગ્રંથ અને ગ્રંથકારના ગુણદોષનું વિવેચન ન થાય તો તે ઉપોદ્ઘાત જ શા કામનો? ગ્રંથના માત્ર વખાણ જ કરવાં અને વિરુદ્ધાંશનો પણ ખોટો બચાવ કરવો એવું નવું 'મીમાંસાશાસ્ત્ર' જૈમિનિ મહર્ષિએ રચ્યું હોય તો તે 'આસેતુહિમાચલપંડિત' જ જાણે. હું તો એક નાનીશી પ્રસ્તાવના લખી નાંખવાના વિચારમાં હતો તેવામાં જામનગરથી તા. ૧-૮-૨૦ નો નીચે મુજબ પત્ર મળ્યોઃ—

"પૂજ્ય ભાઇશ્રી, રસાલય ગ્રંથ કોઇ **ભરૂચીનો** છે એમ **મારા જાણવામાં** છે. રસાલયમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણપ્રતિપાદિત પુષ્ટિમાર્ગ સાથે અનેક વિરોધો વિદ્યમાન છે. અરે એટલુંજ નહિ પણ શ્રીગોકુલેશના પુષ્ટિમાર્ગ સાથે પણ. જો ભરૂચીના પક્ષપાતીઓ સામે તે વિરોધો મૂકાય અને સમાધાનની ચેલેંજ અપાય તો જેઓ આપને ભાષ્યપ્રકાશ ભણવાની ભલામણ કરતા હતા, **તેમને પડકારી શકાય.** જો તમે સ્થાન આપો તો હું ચર્ચાપત્ર લખું. પરંતુ પાછળથી અને ચર્ચાપત્રોના જવાબો છપાવવા માટે ફાંફાં મરાવો તે ઠીક નહિ. જવાબ લખશો.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ઉપરના પત્રમાં શ્રીયુત પ્રોફેસર મગનલાલ શાસ્ત્રીજી એમ. એ. ને ખુલ્લો પડકાર છે. જાહેરમાં તો શ્રીયુત મગનલાલ શાસ્ત્રીજી મારે લખાય કે, સંપ્રદાયમાં તેઓ સૂર્ય જેવા છે, અને ખાનગીમાં તેમને શીંગડાં મારવાની આ ચાલબાજી આસેતુહિમાચલપંડિત તથા ૪૦ રીમ સફેદ કાગળોને કાળા લેખોથી શણગારનાર કોઈ વિરલાજ બતાવી શકે. ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેં તેમને લખ્યું કે સિદ્ધાંતોની ચર્ચા કરવામાં કાંઈપણ વાંધો નજ હોઇ શકે. તમે એ ભરૂચી ગ્રંથોનું ખંડન લખશો તો હું પ્રસ્તાવનામાં છાપીશ. મારા આ જવાબ પછી આસેતુહિમાચલ પંડિતજીનો બીજો પત્ર આ પ્રમાણે મળ્યોઃ—

શ્રીમત્સુ—નતિતતયઃ—

કૃપાપત્ર નથી તે લખશો. મહાવદાસસંબંધી (રસાલયગ્રંથના કર્તા) લેખ તૈયાર છે. પૂર્ણ વિચાર કરીને નિર્ણય કર્યો છે. જો આ લેખ છપાશે તો **સાંપ્રદાયિકોનો ક્રોધાગ્નિ** ભડકી ઉઠશે. ભરૂચીની વિરુદ્ધ લખવાથી પ્રોફેસર સાહેબનો (શ્રીયુત મગનલાલ શાસ્ત્રીજીનો) પારો ઉછળશે અને તે સમાજ ઉપરાંત **આપણા પણ વૈષ્ણવો છો. બાલકો અને પંડિતો નારાજ થશે.** જેઓ અત્યારે મારાથી વિરુદ્ધ છે, તેઓ આ કાર્યમાં મદદ કરશે. વિના કારણ

[illegible] ઉત્પન્ન કરવા અને દરેકનો ક્રોધ વહોરી લેવો, એ શા માટે? પુષ્ટિમાર્ગની વિરૂદ્ધ જે કહેવાતું પુષ્ટિમાર્ગીય સાહિત્ય છે તે સર્વનો વિરોધ **મારા ઉપોદ્ઘાતથી** ઉપલક્ષણવિધયા થાય છે. મારો પક્ષ લેનાર કોણ છે? પૃષ્ટપોષકના અભાવે વ્યર્થ કલહ કરવો અયોગ્ય લાગે છે. આપ ક્રિયાકુશલ છો. તેથી ભરૂચી ઝઘડાને પહોંચી વળ્યા. મારાથી તેમ થવું શક્ય નથી. જ્યારે મારૂં પોતાનું પત્ર થશે અથવા પૃષ્ટપોષક મળશે ત્યારે છપાવીશ. અથવા **જો મારો ઉપોદ્ઘાત** તમારા પોતાના નામથી છાપવા ઇચ્છા હોય તો તેમ કરવા હું ખુશી છું. પ્રત્યુત્તર લખશો.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ઉપરનો પત્ર કેટલો બધો ભયંકર છે? 'આસેતુહિમાચલપંડિત'જીના હૃદયને જાણવા માટે આથી વધુ પુરાવો બીજો શો હોય? મેં ફરી પત્ર લખીને ઉપોદ્ઘાતની માંગણી કરી. પણ તે મારે નામે છાપવાની કબૂલાત તો મેં નજ આપી. 'આસેતુહિમાચલપંડિત'જીનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. જડાવ બહેન તો તેમનાં એક ધર્મપત્ની કહેવાય, એટલે 'પત્રકાર' પતિદેવ ધર્મપત્નીને નામે ગમે તેવા લેખો લખીને છાપે તો તેને માટે તેઓ બિચારાં મુંગા રહીનેજ બેસી રહે, પણ હું એ મહાપંડિતના પ્રયાસજન્ય લેખને મારે નામે છાપીને તેનો 'યશ' ખાટવાની બેવકૂફી શા માટે બતાવું? તેથી એ ઉપોદ્ઘાત મૂલ લેખકના જ નામે બહાર પાડવાની રજા માગી.

આખરે એ ઉપોદ્ઘાત આખો એ મહાપંડિતના હાથનો લખેલો મને મળ્યો. તેની સાથે એક પત્ર મળ્યો; તે આ રહ્યો:—

ભાઈશ્રી, આપનો રોષ ભર્યો પત્ર વાંચ્યો. અનિચ્છાથીજ **આ લેખની તૃતીયાવૃત્તિ** (ઘણી કાપકુપ કરીને) સેવામાં રવાના કરી છે...આ લેખ મારે નામે પ્રકટ થાય એમ મારી સર્વથા ઇચ્છા નથી. જો તમારા નામે છાપશો તો સારૂં થશે. **તેમ છતાં જો છાપશો તો હવે હું તેનો નિષેધ પણ કરીશ નહિ.** **હરિશંકરના પ્રણામ.**

જ્યાં સુધી તેઓ પોતાને નામે ઉપોદ્ઘાત છાપવાની મને રજા ન આપે ત્યાં સુધી તે તેમને નામે છાપવાનો મારો પત્રકારધર્મ ન ગણાય. ઉપરના પત્રમાં તેમની રજા મળી તે સ્પષ્ટજ છે. તે પછી એમના ઉપોદ્ઘાત સાથે મેં એ ગ્રંથો બહાર પાડ્યા. આ ઉપરાંત બીજા પણ પત્રો મારી પાસે છે. સ્થળસંકોચથી મુદ્દાના પત્રો જાહેરમાં મૂક્યા છે. ઉપરના પત્રો તેમજ બીજા પત્રો તથા આખો ઉપોદ્ઘાત એ આસેતુહિમાચલપંડિતના હાથનાજ લખેલા મારી પાસે મોજુદ છે. કોઇ પણ તટસ્થને તે બતાવવા તૈયાર જ છું.

ઉપરના પત્રો પર વિવેચન કરવાની જરૂર નથી. એ બોલતા કાગળોજ ખરી વસ્તુસ્થિતિ કહી દેશે. આટલો પત્રવ્યવહાર છતાં 'પ્રતિમલ્લ' પંડિતજીએ જે નોંધ લખી તે કેમ લખી? કદાચ આસેતુહિમાચલમાં, નદી, તલાવ કે સમુદ્રાદિના જલપ્રવાહમાં બુદ્ધિ વહી ગઈ હશે અથવા તો પહાડો સાથે અથડાઇને હાથ પગ વિનાની 'મૃતવત્' થઇ ગઇ હશે. 'સ્મૃતિભ્રંશાત્' એ પરંપરાથી એ મહાપંડિતને પ્રભુ બચાવો એ અભ્યર્થના.

બે શબ્દો કપડવંજપંથી ભાઈ શોભાલાલને લખવા રહ્યા. તેમણે એ ચર્ચાપત્ર છાપવા મને મોકલવું જોઇતું હતું. વળી સિદ્ધાંતની ચર્ચામાં અંગત ચર્ચાને સ્થાન નજ હોય. પણ ભાઈ શોભાલાલ પોતેજ સ્વાર્થમાં એવા ડૂબાડૂબ હશે છે કે તેમને બધા સ્વાર્થી દેખાય છે.

હું સ્વાર્થથી (પૈસાની ઇચ્છાથી) કામ કરૂં છું કે કેવી રીતે તે એક ક્ષણમાં પૂરવાર કરી શકું છું. પણ ભાઈ શોભાલાલ લલ્લુ, નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રી ૬ શ્રીકન્હૈયાલાલજી મહારાજના સેવક થયા, તે પછી ગો. શ્રીરમણલાલજીના સેવક થયા, એઓશ્રીના બ્રહ્મસંબંધ ખાધાં, તે પછી

મંદિરોના પ્રસાદ લીધા. હવે પાવટીઆ પંથના મહંત બન્યા. આમાં તેઓને પૈસાનો સ્વાર્થ તો નજ હોય. પણ ભાઈ એમ્બ્રલાલ-લક્ષ્મ રસિક ભગવદીય હોય અને ભમરાની પેઠે જુદા જુદા રસ ચાખવાની ટેવથી (એમના શબ્દોમાં કહું તો પુંશ્ચલીની પેઠે) એક ભવમાં અનેક ભવ કરવા પ્રેરાયા હોય અને બીજાને પણ તેમજ જોતા હોય તો તેમાં એ ભાઇનો દોષ હું નજ ગણું.

તટસ્થ વાંચકોની એટલી તો ચોક્કસ ખાતરી થઈ ગઈ હશે કે, રસાલય—ગુહરસ ગ્રંથનો ઉપોદ્ઘાત મેં ઉપજાવીને રા. હરિશંકરજીને નામે પ્રકટ કર્યો નથી; પણ તે તેમણે વિના પ્રેરણાએ લખ્યો છે અને તેમની છેલ્લી રજા પછીજ તેમને નામે તે છાપ્યો છે. છતાં જાણે કાંઇ તે વિષે પોતે જાણતાજ ન હોય તેવી નોંધ તેઓ લખે છે, એ શું એમના ચિત્તની દયાજનક દશાનો પુરાવો નથી? આ ચાલબાજીને કુટિલતા કહેવી કે બદમાશી? લોકોની આંખોમાં ધૂળ નાખવાની ચેષ્ટા કહેવી કે પોતાની પ્રતિષ્ઠાપર પાણી ફેરવવાની બાલિશતા? ચિત્તભ્રમ કહેવો કે વિપરીત મતિ ગણવી? હું શું કહું? વાચકોજ નિર્ણય કરી લેશે. આવા આસેતુહિમાચલ પંડિતોથી સંપ્રદાયને પ્રભુ બચાવે એવો ધ્વનિ સહજજ નિકળે છે. તંત્રી.

ઓ! વૈષ્ણવ યુવક!

(ભાઇ ગટુલાલ કેશવલાલ શેઠ બીલખાવાળા.)

૧. કદી સવારમાં ' ચ્હા ' ને બદલે પ્રભુનું નામ લીધું છે?

૨. કદી ગપાટા કે કુથલીને બદલે સત્સંગ કર્યો છે?

૩. નોવેલો જેવાં કૃત્રિમ પુસ્તકો વાંચવાને બદલે સ્વમાર્ગીય રસિક ગ્રંથો કદી ઉઘાડ્યા છે?

૪. અમલદારોની ખુશામત કરવાને બદલે કદી પ્રભુસેવા કે દેશસેવા કરી છે?

૫. સ્વધર્મની નિંદા કરવાને બદલે માર્ગમાં "શું કહેલું છે અને ધર્મની પ્રણાલિકા શું છે" તે કદી જોયું છે?

૬. આપણા દરેક કાર્યનું કેન્દ્ર પ્રભુ થાય એવી કદી પ્રવૃત્તિ કરી છે?

૭. નાટક, સિનેમા જોવાને બદલે પ્રભુના દર્શન કરવા કદિ મંદિરે ગયા છો?

૮. નાટકી ગાયનો ગાવાને ગાવાને બદલે પ્રભુનાં કીર્તનો કદી ગાયાં છે?

૯. આપણે જગતની પરીક્ષામાં પાસ થવા વિચાર કરીએ છીએ પણ પ્રભુને આપવાની પરીક્ષામાં પસાર થવા વિચાર વટીક કર્યો છે?

૧૦. રખડવામાં જીંદગી ગાળવાને બદલે ધર્મના સડાઓ અને કુરિવાજો દૂર કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે? અને કદી સ્વમુખે "તોડી પાડો અધર્મના કુરિવાજો રે" ગાયું છે?

૧૧. વધારે અને વધારે પૈસા મેળવવાને બદલે તે પૈસાનો ઉપયોગ ધર્મની ઉન્નતિમાં કર્યો છે?

૧૨. આપણે પશ્ચિમના રંગમાં રંગાઇને નેકટાઇ ચડાવી પણ ' ટાઇ ' ને બદલે કદી તિલક કર્યું છે?

૧૩. દેહને સુશોભિત વસ્ત્રોથી શણગારવાને બદલે પ્રભુને કદી શણગાર્યાં છે? અને યથા દેહે તથા દેવે નું સૂત્ર કદી યાદ કર્યું છે?

૧૪. પાખંડી વૈષ્ણવ થવાને બદલે ખરા વૈષ્ણવ થયા છો?

૧૫. ઉપરના પ્રશ્નો, હે! વૈષ્ણવ યુવક! તારા મનને કદિ તેં પુછ્યા છે?

વળી કલિયુગમાં પ્રભુપ્રાપ્તિનું સબળ સાધન કયું ? આ કાળમાં એટલે સામ્પ્રત કલિયુગમાં પ્રભુનું નામ, ધ્યાન, શરણાગતિ અને દૃઢ આશ્રય તથા વિશ્વાસ (પ્રભુ ઉપર) એ વિઘ્ન વગરનાં સબળ સાધનો છે. પરંતુ આ ભવસાગરમાંથી પાર ઉતારવામાં નૌકા રૂપ શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ તે કેવી રીતે કે:—

कृष्णे रताः कृष्णमनुस्मरन्ति रात्रौ च कृष्णं पुनरुत्थिता ये ।
ते भिन्नदेहाः प्रविशन्ति कृष्णं हविर्यथा मंत्रहुतं हुताशे ॥

શ્લોકાર્થ:—શ્રીકૃષ્ણમાં આસક્ત શ્રીકૃષ્ણનું પળે પળે સ્મરણ કરનાર સુતાં પણ શ્રીકૃષ્ણનું જેને સ્મરણ થાય છે તેવો જીવાત્મા ભિન્ન દેહવાળો છતાં જેમ મંત્ર ભણી હોમેલું હવિ (હોમવાનું સાધન) અગ્નિમાં મળી જાય છે તેમ (આસક્ત) પણ શ્રીકૃષ્ણમય બની જઈ-પરા ભક્તિ સુધી પહોંચે છે. વળી પણ સબળ સાધનનો પ્રયત્ન કરવો હોય તો જેમ બે હાથ વતી તાળી પડે તેમ ભક્તિમાં અન્ય સત્ પુરુષોનો સંગ કરવો પડે છે તો પછી સંત જનોની નિરપેક્ષ દૈન્ય ભાવે (સંયુક્ત) સેવા આટલાં મહત્ સાધનો છે કે જેથી સહજમાં પાર ઉતરી શકાય છે.

ચિન્તાનો સર્વાંશે નાશ થઈ પ્રભુમાં આસક્તિ ક્યારે બંધાય કે-પ્રભુ સર્વસમર્થ છે, સર્વાંતર્યામી છે એમ જ્યારે જીવને દૃઢ નિશ્ચય થાય અને પ્રભુ પોતાનીજ ઇચ્છાથી સર્વ કાર્ય કરે છે તથા પ્રભુજ મારું સ્મરણ છે-શરણ છે એમ જ્યારે જ્ઞાન થાય છે ત્યારે ચિન્તાનો સર્વાંશે નાશ થઈ પ્રભુમાં દૃઢ વિશ્વાસ બંધાય છે અને તેથી જીવ નિઃસંશય કૃતાર્થ છે.

ભક્તની અનન્યતાનું સ્વરૂપ શું ?—કે સ્ત્રી ગમે તેવી ડાહી, ગુણવંતી અને ચતુર હોય તદપિ પોતાના ધણીનું શરણ ત્યાગી અન્યનો આશ્રય કરવાથી જ પતિત થઈને વળી પતિને જેમ અપ્રિય થઈ પડે તેજ પ્રમાણે પોતાના ઇષ્ટ દેવનો આશ્રય તજીને અન્ય દેવ, દેવી, મનુષ્ય જીવ માત્ર જડ ચૈતન્ય તથા અચેતન પદાર્થ પર્યંત કોઈનો પણ આશ્રય તે પ્રભુને અપ્રિય લાગે છે એમ જાણી સર્વાંશે અન્યાશ્રયનો ત્યાગજ ધરે છે. શ્રીકૃપાળુ કૃષ્ણચંદ્રનું ગીતાજ્ઞાનમાં કથન છે કે—

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ (१८–४७)

શ્લોકાર્થ—પોતાનું કર્મ (ભક્તિ) ગુણથી રહિત છે તો પણ બીજાના સારી રીતે આચરેલાં કર્મ કરતાં સારું છે. પોતાના સ્વભાવથી જે કર્મ કરવાનું હોય તે કર્મ કરવાથી કોઈ પ્રકારે હાનિ છેજ નહિ.

ટીકા—બીજાએ પોતાના શ્રેષ્ઠ ગુણસ્વભાવને લીધે વિશેષ ગુણવાળો ધર્મ પાળ્યો હોય છતાં પોતાને માટે તો તે પરધર્મરૂપજ હોય છે; માટે તેવા બીજાઓએ આચરેલા પરધર્મ કરતાં સ્વધર્મ ઓછા ગુણવાળો હોય તો પણ તેજ પોતાને માટે શ્રેયસ્કર સમજવો. કેમકે સ્વભાવનિયત કર્મ કરનારને પાપો લેપી શકતાં નથી; અને ઉપર્યુક્ત જ્ઞાન જેને છે તે ગુણાતીત કહેવાય છે એવા (ગુણાતીત) તથા એકનિષ્ઠ ભક્તિયોગ વડે પ્રભુપ્રાપ્તિ થવાને યોગ્ય છે.

વળી વૈરાગ્ય અને જ્ઞાનને ભક્તિના પુત્ર તરીકે નારદજીએ કહ્યાં છે તેજ પ્રમાણે જેમ કોઈ પુરુષને લક્ષ્મી પ્રાપ્ત થઈ કે તેની સાથે તેના અનુયાયી તરીકે અહંકાર, લોભ, કામ, મોહ, માયા, (પ્રકૃતિ) એ સર્વનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. તેવીજ રીતે ભક્તિ કરવાથી તેની ભેળેજ જ્ઞાન-વૈરાગ્યનો પ્રાદુર્ભાવ થાય તે વાત શક્ય છે જ. જેમકે અમુક ગામ જવું હોય તેના રસ્તામાં અમુક ગામ આવતું હોય તો તે ગામ જવા માટે બીજા રસ્તાની જરૂર પડતી નથી. તેથી ભક્તિ એ શ્રેષ્ઠ માર્ગ કહ્યો છે. અસ્તુ.

કદાચ મહાપુરુષોનો સંગ થયા છતાં જીવ કૃતાર્થ કેમ થતો નથી?—જીવના યત્ કિંચિત્ સદ્ભાગ્યે કરી મહાન્ પુરુષનો સંગ થયો તો પણ પૂર્વના દોષના પ્રભાવે તેમાં અનન્ય નિષ્ઠા બંધાતી નથી અને મનોવૃત્તિઓમાં ફેર પડી જાય છે તેથીજ અકૃતાર્થ રહે છે. જો તેમાં ફેરફાર કરવો પુરુષના પોતાનાજ કરમાં (હાથમાં) છે. ઉપર્યુક્ત પ્રકારની પ્રાપ્તિ સમજ્યે કે વગર સમજ્યે પણ જો મનસા, વાચા, કર્મણાએ કરી મહાપુરુષોની શરણાગતિ થાય તો કાર્યની સિદ્ધિ નિઃસંશય થાય છે. કહ્યું છે કે મહાવિદ્વાનોનો સંગ કરો; પ્રતિદિવસ તેની પાદુકાનું સેવન કરો. તોજ પ્રભુને મળવાનો સપાટ અને ધોરી રસ્તો દેખાય અને પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય. આ (ભક્તિ) પ્રકારે સબળ અરે નિર્ભય સાધનો કહ્યાં.

હવે આત્મિક કર્તવ્યોની સિદ્ધિઓ દૈહિક સંબંધીઓને વિઘ્નરૂપ દેખાય છે તેથી તેનો ત્યાગજ ઘટે છે કેવી રીતે કે—તેમનાથી ઉદાસીન રહેવું છતાં પણ વિઘ્નકર્તા પિતા, પુત્ર, માતા, ભ્રાતા, બંધુ કે મોટા જન હોય તોપણ સર્વથા તેનો ત્યાગજ ઘટે છે. વળી શંકા થશે કે—ભગવાનને વિષે પ્રેમભાવની દૃઢતા–સ્થિરતા થઈ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ તથા કર્મ છોડી શકાય કે કેમ? તો જણાવવાનું કે—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મામાં અતિશય ગાઢ સ્નેહ સ્થિરતા થઈ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ એ તો કેવળ દોષરૂપજ ગણાય. ભાવની પરિપૂર્ણતાએ કરી સ્વતઃ સાધન છુટી જાય તો ભલે પણ જાણીબુઝીને સાધન છોડવાં નહિ. શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ અર્જુનને સ્વમુખે કહ્યું છે તે—ગીતોપનિષદ્‌ની ઉક્તિ માટે કર્મનો જ્યાં સુધી એની મેળેજ લોપ નથી થતો ત્યાં સુધી તો છોડવાંજ નહિં બલકે સ્વતઃ છુટે તો કોઈ પ્રકારે હાનિકારક છેજ નહિં એ ગીતોક્તિથી પુરવાર થાય છે માટે સદાસર્વદા પ્રભુમાં અનુરાગી રહી તેનું સ્મરણ કરતા રહી આત્મચિંતનમાં સુપ્રસન્ન રહેવું એજ સર્વોત્કૃષ્ટ છે.

કોઈપણ પ્રાણીની હિંસા ન કરવી, કોઈને દુઃખ ન થાય એવું વચન બોલવું, મન અને ઇન્દ્રિયોનો નિગ્રહ કરવો. દાન, દમ, દયા, દુઃખીનું રક્ષણ આ સર્વે સામાન્ય ધર્મો બ્રાહ્મણથી અંત્યજ વર્ણ સુધીના સર્વના છે.

ઉપર્યુક્ત ધર્મોનું પાલન કરતાં આપણી પ્રજા શિખે અને અન્યને શિખવે એવું પ્રભુ પાસે યાચતો અત્રેજ વિરમીશ.

चहा!

(લેખકઃ—ભગવતીદાસ ગોવિન્દદાસ દેસાઇ.)

(નીચેનો સંવાદ અ. સૌ. સુન્દરબાઇ તે શેઠ ગોકુળદાસ મોરારજીનાં ધર્મપત્ની શ્રીમાંગરોલ વૈષ્ણવ સુબોધની કન્યાશાળાની બાળાઓએ મેળાવડામાં ભજવી બતાવ્યો હતો.)

સરસ્વતી—કાં રેવા શું કરે છે.?

રેવાકુંવર—જો ને બ્હેન! ચા પીને પાઠ કરૂં છું.

સરસ્વતી—બ્હેન હજુ તેં ચાને નથી મૂકી?

રેવા—બ્હેન! મેં તો ચાને મૂકી છે પણ મને ચાહે નથી મૂકી.

સરસ્વતી—રેવા! એવું અવળું શું કામ બોલે છે? તું તો ચા પીએ છે; અને વળી એમ કહે છે કે "મેં તો ચાને મૂકી છે."

રેવા—બ્હેન સરસ્વતી! મારો કહેવાનો આશય જરા પણ ખોટો નથી, હું કહું છું તે તદ્દન સાચુંજ કહું છું. સાંભળ!

સરસ્વતી—કહે જોઈએ શું કહે છે ? પણ થોડેથી પતાવજે હો, કારણ કે મને રોકાવાનો વખત નથી; મારાં માતુશ્રી રાહ જોતા હશે.

રેવા—ભલે. સાંભળ; જ્યારથી આપણી બાઇએ ચા પીવાથી પ્રભુસેવામાં આપણાં પાઠ વગેરેમાં ખલેલ થાય છે; વિગેરે નુકશાનો સમજાવ્યા પછી હું જરા પણ ચાહ પીવાનું મન કરતીજ નથી. પણ સવારે દાતણ કર્યું એટલે ગજેજ વળગે, માંડ માંડ નાહીએ. સેવા વિગેરે તો પછીજ. ! હું તો મારા મનને મનાવું છું અને સામું પણ જોવા નથી ઇચ્છતી પણ તે દોડની દોડતી વળગે એમાં હું શું કરૂં ? હવે તું કહે કે મેં એને નથી મૂકી કે એણે મને નથી મૂકી !

સરસ્વતી—(પ્રસન્ન થઈ) બ્હેન ! ખરેખર તેં તો એને તિલાંજલિ આપી છે. પણ એ ચીજ એવી છે કે માણસને બહુજ હેરાન કરે છે; આપણી જાતને પણ ખાય, અને રોટલા ન ખાઇએ તેટલા પૈસાની તો મહિને દાડે ચા જોઇએ. આ ઓછી વાત છે ? હવે તું એમ કર; બ્હેન. !

રેવા—બ્હેન ! કહો, તમે કહો તેમ કરૂં.

સરસ્વતી—તું હંમેશાં બે ટાણા ચા પીએ છે તેને બદલે એકટાણુંજ પીવાની ટેવ રાખ. બે ટાણા પીધા વિના ન ચાલે તો પંદર (૧૫) દિવસ પોણો પોણો પ્યાલો પીવો પછી અર્ધો અર્ધો પછી એકજ ટાણું પછી પાજ પીવો એમ કરીશ તોજ તેનું વ્યસન છૂટશે.

રેવા—જેવી મોટાં બ્હેનની આજ્ઞા. હવે તેમજ કરીશ. જય શ્રીકૃષ્ણ.

સરસ્વતી—બ્હેન ! જય શ્રીકૃષ્ણ.

"अभ्यर्थना."

(લેખકઃ—શા. ઘનશ્યામલાલ મણિલાલ, પેટલાદ.)

વૃન્દાવનની શોભિત વનકુંજોમાં—
ફાયેલ તારાં મીઠાં બંસીધ્વનિઓ—
વિલીન થયા છે આજ અહિંયાથી-પ્રભો !
ઝુરે છે હૃદય આજ વિરહથી તો—
વર્ષાવજે એ નાદવૃષ્ટિ હૃદયાકાશમાં,
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×

યૌવનના ઝુલે ઝુલંતી વ્રજયુવતિઓને—
આકર્ષિ યમુનાજીના સુંદર તટ ઉપર—
પાન કરાવ્યું મીઠા વેણુનાદનું— પ્રભો !
આકર્ષજે આજ ભારત યુવતિઓને—
ભણાવી "પ્રેમભક્તિના" સુંદર પાઠો—
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×

શરદચંદ્ર સહસ્ર ધારે ચંદ્રિકા વર્ષાવે—
કોકિલા ગગનભેદી ટહુકારાથી વનકુંજો ગજવે
તેમ ગજવજે-વર્ષાવજે. પ્રભો !
આ ભારતને તારાં મીઠા મુરલી નાદોથી.
એ અભ્યર્થના છે.

× × × ×

ચંદ્ર સુધાકિરણથી વનકુંજને નવડાવે—
તેમ પ્રેમામૃતથી ન્હવરાવજે—
આ યુવકને. પ્રભો
એ પ્રેમામૃતથી ન્હાએલ ઉગતી પ્રેમની આશાઓને—
પૂર્ણ વિકસાવજે આ યુવકની.
એ અભ્યર્થના છે.

चर्चापत्र.

તંત્રી-શુદ્ધાદ્વૈત—વિનય લખવાનું જે એક માસિકમાં પ્રાસંગિક નોંધમાં કનકાભિષેકની ચર્ચા બાબત મ્હારી પાસે તંત્રીએ ખુલાસો માગેલો, મેં તે ખુલાસાના પ્રત્યુત્તરમાં એક ચર્ચાપત્ર મોકલ્યું તો તે "યેન કેન પ્રકારેણ મ્હારી ઉપર દોષારોપણ કરીને દ્વેષપૂર્ણ ચર્ચાઓ છાપવાની બંધ કરી છે, અતઃ તે ચર્ચાપત્રને સ્થાન નથી. એ નોંધ લઇ ચર્ચાપત્ર લીધું નહિ. "મકરસ-રસાલય" નું ચર્ચાપત્ર જે તંત્રીનો વિરોધ દર્શાવનાર છે, તે માટે ખાસ રા પેજના કોલમો રોકીને છાપવા બદલ તંત્રીને ધન્યવાદ ઘટે છે. કારણ કે "નિંદાખોરને જવાબ આપવાની કે તે માટે કોલમો કાળા કરવાની જરૂર નથી" એમ લખનાર તંત્રી તે ચર્ચાપત્ર છાપી, અને કાશી ઉપાડાવીને ગુજરાતમાં તેડાવનાર મિત્રના "શુદ્ધાદ્વૈત" પ્રત્યેના રાગદ્વેષને લઇને મ્હારા ચર્ચાપત્રને સ્થાન આપે નહી તે તો દીવા જેવી વાત છે. મ્હારો ખુલાસો (ચર્ચાપત્ર) તંત્રીએ છાપેલ નહિ હોવાથી સુપ્રસિદ્ધ "શુદ્ધાદ્વૈત" માં છાપવા સાગ્રહ વિજ્ઞપ્તિ કરૂં છું.

મ્હારો ખુલાસો—આપના પુષ્ટિપીયૂષ માસિક વર્ષ ૨ જાના અંક ૧-૨ માં પાને ૪૮ માં પ્રાસંગિક નોંધ તરફ મ્હારૂં ધ્યાન ખેંચાયું. તંત્રીજી પોતાની વિદ્વત્તાની પેઢીમાં ખુલ્લી રીતે મ્હારી ઉપર પુષ્ટિપીયૂષને હલકી પાડવાનો આક્ષેપ કરે છે, તે ખોટો છે. ખેદ સાથે લખું છું કે અમદાવાદમાં આવી સભા મળીજ નથી છતાં અમદાવાદની સભા ઠોકી બેસાડની એ પ્રખર પંડિતની બુદ્ધિની બલીહારી છે. તે સભા ક્યાં મળી છે, તે "શુદ્ધાદ્વૈત" માં ઇલેક્ટ્રીક બત્તીના તેજથી ચશ્મા ચડાવીને જોવું રહ્યું. અને તે ઠરાવો પણ સાથેસાથ જોઇ વાંચી વિચારીને સમજ્યા હોત તો ઉપરનો આક્ષેપ મ્હારી ઉપર ઠોકી બેસાડવા પ્રયત્ન કરત નહિ. હજી પણ તંત્રી મહાશય મગજ ઉપર સમતોલપણું રાખીને જોશે તો જરૂર સત્ય વસ્તુનું ભાન થશે. ઠરાવ બીજો તો મુકવાનું કારણ એ હતું કે સંપ્રદાય બહારના તરફથી સંપ્રદાય ઉપર આક્રમણ થાય જેમ કે હમણા કનકાભિષેક ઉપરના આક્રમણ વખતે શુદ્ધાદ્વૈતના તંત્રીજી થતા હુમલાઓ સામે થઇને સંપ્રદાયની જે સેવા બજાવે છે તે બદલ અભિનંદન અર્પેજ મુકેલ અને પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચવા માટે ઠરાવ ઉપર મેં વિવેચન કર્યું પણ પુ. પી. ને હલકી પાડવા માટે તો નહીજ, તે ધ્યાનમાં રાખશો. અને પુ. પી. માં કનકાભિષેકનો ઇસારો સરખો કર્યો નહિ એટલે તે સભામાં પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચી "શુદ્ધાદ્વૈત"ને અભિનંદન આપ્યું પણ શ્રીયુત તંત્રીજીને "શુદ્ધાદ્વૈત" પ્રત્યેના રાગદ્વેષને લઇને મ્હારી ઉપર પુ. પી. ને હલકી પાડવાનો આક્ષેપ મુકવા તૈયાર થયા છે. તેમાં પુ. પી. ને હલકી પાડવાનો પ્રયાસજ નથી. રા. રા. લલ્લુભાઇ પાસે તપાસ કરી તો તે છપાએલા લેખની નકલો દરેક વર્તમાનપત્રોને મોકલાવેલ છે, તેમાં તંત્રી ઉપર પણ મોકલાવેલ છે, અને તે રા. રા. લલ્લુભાઇ સાથે અંગત દ્વેષભાવનાને લઇને તે લેખ અમર તો કીધુ લીધો નથી. "જગતના મહાન ઉદ્ધારક શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના સિદ્ધાન્તોને નિડરપણે ચર્ચવાનો એકરાર કરવું પણ આ ઐતિહાસિક ચર્ચામાં ભાગ લે નહિ અને મૌનાવલંબન સેવે એટલે શું? શ્રીમદાપ્રભુજીના સિદ્ધાન્તો ઉપર બીજા લોકો ઐતિહાસિક લેખો આક્રમણ કરે અને ઉપર્યુક્ત એકરાર કરતા માસિકના તંત્રીજી ચશ્મા ચડાવીને જોયા કરે! શું આ સિદ્ધાન્તની ચર્ચા નથી? દરેક વર્તમાનપત્રે તેમજ પ્રસિદ્ધ ઇતિહાસજ્ઞ સાક્ષરોએ સાફ ઉચ્ચ અભિપ્રાયો આપ્યા કે "કનકાભિષેક ઐતિહાસિક છે. સંપ્રદાયના વિદ્વાનો અને સાક્ષરો અત્યારે ઐતિહાસિક સમીક્ષા કરે છે. ધોળકાવાળી વિદ્યાવિભાગ તરફથી રા. રા. શાસ્ત્રીજી જટાશંકરભાઇએ મદ્રાસમાં કનકાભિષેકની ઐતિહાસિક શોધખોળ કરીને મજબુત પુરાવા મેળવ્યા તે માસિકમાં પ્રસિદ્ધ કરવાના છે. અને વિદ્યાવિભાગ તરફથી સંપ્રદાય ઉપર અદ્ભુત પ્રકાશ પાડતા ગ્રંથ "સંપ્રદાયપ્રદીપ" નામના મહાન ગ્રંથમાં એ ઐતિહાસિક સત્ય ઘટના આલેખાશે. ત્યારે આ વિદ્વાન તંત્રીજી સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રકાશ કરવામાં પોતાનો સમય વ્યતીત કરનાર પ્રખર પંડિત મૌનાવલંબન સેવે એ શું સંપ્રદાયની સાહિત્યસેવા કહેવાય? ધર્મનુયાયિનીજીના મુદ્રણમાં સારી રકમની મદદ મળેલી. જ્યારે કીમત માટે લિલાપોલ થયો અને સંપ્રદાયના નિડર અને નિઃસ્પૃહિ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ હીસાબ માગ્યો ત્યારે પુષ્ટિપીયૂષના વિદ્વાન તંત્રીજી તેનો જવાબ નહિ આપતાં કંટાળાર થયા. એ બધી બીનાઓ મારી નજર સમક્ષ તરવરતાં અને નિડરતાથી "શુદ્ધાદ્વૈતે"

ઉપર્યુક્ત ચર્ચા ચલાવી ઐતિહાસિક ક્ષેત્રમાં ઝુકાવ્યું તે બદલ ઠરાવ બીજો અભિનંદન અર્થેજ મુકેલો, સિદ્ધાન્તની ચર્ચાનો ઈસારો પણ ન કરવામાં આવે તો અવશ્ય પ્રોટેસ્ટ ઉઠાવી શકાય પણ સાંપ્રદાયિક (સાહિત્ય) માસિકને ઉતારી પાડવાનો પ્રયાસ હું ન કરી શકું. મારે રાગદ્વેષ નથી કે જેથી હું પુ. પી. ને ઉતારી પાડવા પ્રયાસ કરૂં! હું આપને સવિનય જણાવીશ કે સિદ્ધાન્તની ચર્ચા સાંપ્રદાયિક માસિક નહિ કરે ત્યારે કોણ કરશે? અને તેવી ઐતિહાસિક ચર્ચા વગરનું અધુણુ સાહિત્ય (માસિક) આજના યુવક સમાજને ની-રસ છે. અર્થાત રુચિકર નથી. આ ઉપસ્થિત થયેલી ચર્ચાએ સંપ્રદાયના મૂળમાં કુઠારાઘાત કર્યો છે. તેથી યુવક હૃદયો ખળભળી ઉઠયાં છે. હૃદયો વિદીર્ણ બન્યા છે, તેમાં સાંપ્રદાયિક માસિકના તંત્રીના મૌનાવલંબનથી સખત આઘાત થયો, અને તે આઘાતનો પડઘો તે ઠરાવ ઉપરની ગાત્ર ચર્ચાજ છે. બેતાલીશ રીમ જેટલા કાગળોનું સાહિત્ય લખવાનો ફાંકો રાખનારા શા માટે કનકાભિષેકની ઐતિહાસિક ચર્ચા માટે છ છ માસના વ્હાણાં વાયાં છતાં એક શબ્દ પણ લખતા નથી તેનું કારણ જણાવશો. રાગદ્વેષ છોડીને વાંચશો તો વસ્તુસ્થિતિ સમજાશે. લી. આપનો અમૃતલાલ હરજીવનદાસ પારેખ.

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

विपयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वथा हरेः ।

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम । वदद्भिरेवं सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥

શ્રીઅષ્ટાક્ષરજપયજ્ઞસમારંભ.

હે નાથ! મ્હેં નથી કર્યા કંઇ પુણ્ય કર્મો, કીધાં અનેક અતિપાપ ભર્યાંજ કાર્યો;
છું દુષ્ટ, પાપી, અપરાધી, પતિત પ્રાણી, ત્હારોજ છું તદપિ કેશવ! હે મુરારી!!

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદે આ ચાતુર્માસમાં શ્રીગોવર્ધનધરણ શ્રીનાથજીની કૃપાથી શ્રીઅષ્ટાક્ષર જપયજ્ઞનો સમારંભ કરવાનો નિશ્ચય કર્યો છે. કલિયુગમાં આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદૈવિક ક્લેશોથી મુક્તિ મેળવવાનું એકનું એક સાધન જપયજ્ઞજ છે. પુષ્ટિમાર્ગનું તો એ ખાસ સાધન છે. મહાનુભાવ આચાર્યવર્ય શ્રીમદ્ હરિરાયચરણ આજ્ઞા કરે છે કે 'ભગવન્નામોચ્ચાર વિનાની એક નિમિષ જાય તો આસુરાવેશ થાય' પુષ્ટિમાર્ગનો આવિર્ભાવ નિઃસાધન જીવોને તારવા માટેજ છે. જપયજ્ઞ સરલમાં સરલ અને કશાય સાધનની લેશ પણ અપેક્ષા વિના જીભમાત્રથી સાધી શકાય એવો છે છતાં એનું ફળ ઉત્તમોત્તમ છે. આજના કઠણ કાળમાં ત્રિતાપને હરનારૂં નિઃસાધનોને માટે એક સાધન પ્રભુ-સ્મરણ છે એમ વિચારી 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।' એ ભગવદાજ્ઞાનુસાર શ્રીમહાચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ પુષ્ટિજીવોપર અનુગ્રહ કરી "श्रीकृष्णः शरणं मम" (શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ) જેવા ઉત્તમોત્તમ અષ્ટાક્ષર મહામંત્રનો ભૂતલપર પ્રાદુર્ભાવ કર્યો. એ સરલ છતાં અલૌકિક મંત્રના પ્રેમપૂર્વક કીધેલા સતત જપથી જીવ ત્રિવિધતાપથી નિમેષમાત્રમાં મુક્ત થાય છે એ નિશ્ચિત વાત છે. આ કારણથી આ ચાતુર્માસમાં મુંબઈની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદે આરંભેલા આ જપયજ્ઞમાં આબાલવૃદ્ધ સર્વ પ્રેમપૂર્વક પોતાનો ફાળો આપે એ વાંચ્છનીય હોવાથી એ માટેના નિયમો નીચે મુજબ સાદર રજુ કરવાની રજા લઇએ છીએ.

૧. ચાતુર્માસ (આષાઢી પૂર્ણિમા ને શુક્રવાર તા. ૭-૭-૩૩ થી કાર્તિકી પૂર્ણિમા ને ગુરૂવાર તા. ૨-૧૧-૩૩) દરમ્યાન પ્રતિદિન શુદ્ધ ઉચ્ચારપૂર્વક અત્યન્ત પ્રેમથી યથાશક્તિ યથાકાલ 'શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ' નો જપ માળા ફેરવતાં વા માનસિક રીતે કરવો. જપની સંખ્યા ઓછી થાય તેની ચિન્તા નહિ પણ એ મન, વાણી અને ક્રિયાએ સંયમ અને શુદ્ધ ચિત્તથી પ્રેમપૂર્વક થાય એની ખાસ કાળજી રાખવી. ૨. આપના આપ્તજનને પણ એ સંદેશો પહોંચાડી તેમને પણ જપયજ્ઞનો આરંભ કરવા પ્રેરો, આપનાથી એક પણ મનુષ્યને આ શુભકાર્યમાં પ્રેમપૂર્વક યોજી શકાય તો જાણજો કે આપના જપ સફળ છે. ૩. જપની સંખ્યા અમને લખી મોકલવાની જરૂર નથી પણ નિયમ એકમાં જણાવ્યા મુજબ જપ કરવાનો અને બીજાઓને એમાં પ્રેરવાનો આપે નિશ્ચય કર્યો છે એટલું પત્રદ્વારા અમને નીચેને સરનામે જણાવવા કૃપા કરશો તો બસ થશે. આ કામ મુશ્કેલીભરેલું નથી એ સહેજે સમજી શકાય છે. ઘણાંઓ 'ફુરસદ

નથી ' એમ બ્હાનું કાઢે છે પણ જપયજ્ઞમાં એ બ્હાનું ચાલે તેમ નથી. ગમે ત્યાં ચાલતાં, બેસતાં, ઉઠતાં, સુતાં ગમે તેવી સ્થિતિમાં પણ પ્રેમપૂર્વક એક મિનીટથી માંડીને ચોવીસ કલાક પર્યન્ત આ યજ્ઞ ચાલુ રાખી શકાય છેજ એમાં ઝાઝી દલીલની જરૂર નથી. પુષ્ટિભક્ત અજામિલ જેવો પાપી 'નારાયણ' ના ઉચ્ચારથીજ તરી ગયો તો સમજપૂર્વક પ્રેમથી જપેલા જપનો મહિમા કયાંય વધી જાય. અમ્હારી આ પ્રેમપૂર્વક કીધેલી વિજ્ઞપ્તિને આપ સાથ આપશો કે?

નિવેદકો—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ અને દ્વારકાદાસ જેઠાભાઇ દાણી.
માનદ મંત્રીઓ—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્.

તા. ક.—(૧) સૂચના કે પત્રવ્યવહાર નીચેને સરનામે કરવો 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્' કાર્યાલય ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મંદિર ભુલેશ્વર મુંબઈ નં. ૨.

ગોવધ સામે વિરોધ—મુંબાઇની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ તરફથી એક ખાસ સભા સોમવાર તા. ૧૦-૭-૩૩ ના દિને પૂ. પા. ગો. શ્રી૧ શ્રીદ્વારકેશલાલજી વિ. મહારાજ (કચ્છ માંડવીવાલા) ની અધ્યક્ષતા નીચે નં. ૪૧ ૪૩ કેથેડ્રલ સ્ટ્રીટમાં માંગરોલના દરબાર શેખ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગોવધની છૂટ કરી તેનો વિરોધ તથા આવશ્યક ઠરાવ કરવા મળી હતી. તે સમયે સંસ્થાના સભાસદો ઉપરાંત ગૌરક્ષાપ્રેમી સજ્જનોની હાજરીથી સભાસ્થાન ચીકાર ભરાઈ ગયું હતું. નિયત સમયે સંસ્થાના મંત્રી ગિરિધરલાલ જ. શાહે પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરી સભા પતિશ્રી તથા અન્ય ગો. બાલકોને પુષ્પમાળા ધરાવ્યા બાદ ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી શ્રી. ગિ. જ. શાહ બી. એમ. વી. મ્હેતા અને પૂજ્ય સભાપતિ મહોદય પ્રભૃતિના ગોરક્ષા ગોપાલનની આવશ્યકતા પરત્વે પ્રાસંગિક વ્યાખ્યાનો ઉપરાંત નીચેની દરખાસ્ત શ્રીયુત ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહે રજુ કરી હતી. "સ્થાનીય 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ' ની આજની આ સભા ઠરાવ કરે છે કે માંગરોલના દરબાર નામદાર શેખ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગૌવધ કરવાની છૂટ આપી છે તે હિન્દુ-વૈષ્ણવોની લાગણીને સખ્ત આઘાત પહોંચાડનાર હોવાથી તેને માટે સખ્ત વિરોધ જાહેર કરે છે અને તે કાયદો સદાને માટે રદ કરવા ખાસ આગ્રહ કરે છે અને આ ઠરાવ ઘટતે સ્થળે મોકલવા આ સભા સભાપતિશ્રીને વિનંતિ કરે છે. ઉપર્યુક્ત દરખાસ્તને શ્રીયુત મથુરાદાસ ગોવિન્દજી કોઠીનો ટેકો મળતાં મજકુર ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયા બાદ શ્રીયુત દ્વારકાદાસ જેઠાભાઇ દાણીએ સભાપતિશ્રી ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી તથા ગોરક્ષા પ્રેમી સભાસદોનો સંસ્થા તરફથી આભાર માન્યા પછી સભાનું કામકાજ પુરૂં થતાં (સ્ટા. ટા.) દસ કલાકે શ્રીગોવર્ધનનાથજીના જયઘોષ વચ્ચે સૌ વિખરાયા હતા.

વૈદ્યશાસ્ત્રીને જવાબ—સુજ્ઞ વૈષ્ણવ બંધુઓ અમોએ વૈશાખ અંકમાં જે ચોકખી પ્રતારણા લખી છે તેને અસત્ય ઠરાવી પોતાની પ્રામાણિકતા સાબીત કરવા નીકળેલા બર્ડ ફાર્મસીવાળા વલ્લભદાસજીની કેટલી ધૃષ્ટતા છે તે અત્ર સ્થળસંકોચને લીધે અક્ષરશઃ આપી શકતો નથી પરંતુ રા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇને ઈશ્વરને વચ્ચે રાખી સર્વ સત્ય હકીકત જણાવી દીધી છે. એમના પુરાવા રૂપ બધા પત્રો અમારી પાસે મોજુદ છે તેમણે પ્રથમના પત્રમાં ચાર ડઝન લેનારને કમીશન લખેલ પરંતુ અમોએ એક ડઝનમાં માગણી કરી તે તેમણે કબુલ કરી લખે છે કે તમારા લખવા મુજબ ફોટા મોકલું છું. આ પ્રમાણે તેમણે જો કબુલ કર્યું હોય તો અમોએ માઉંટ તથા વધારે લીધેલાં નાણાંની માગણી કરી ત્યારે "તમારા લખવા મુજબ અમલ થશે. મારી ગેરહાજરીમાં તમોને અન્યાય થયો છે" વગેરે શા માટે લખે? વળી તા. ૧૩-૬-૩૩ ના પત્રથી "તમારા ત્રેવીસ આના ત્યાંના ગોવર્ધનદાસ ભગવાનજીભાઈ પાસેથી લઇ લેશો તેમની પાસે અમારા પુસ્તકોના લેણા છે" આમ અમારાં લેણા નથી તો શા માટે લખે છે? ખેર. એ પણ ઠીક આપણે કમીશનની વાત બાજુ પર મુકી એમની જાહેરાત મુજબ હીસાબ તપાસીએ. તેમણે ક્વાટર સાઈઝ પુઠાં પર ચોટાડેલા ફોટા પાંચ આને વૈષ્ણવોને ઘેર બેઠાં આપવાનું જાહેર કરેલું તે તો પ્રિય વાંચકોને યાદીમાં હશે. એ હીસાબે ૧૧ ફોટાના પંચાવન આના થાય જ્યારે અમોને પુઠાં વિનાનાં માત્ર અગીયાર પેપરોનું રૂા. ૪) નું વી. પી. કર્યું તે અન્યાય ખરો કે નહી? આટલું છતાં ચોર કોટવાલને દંડે એ ન્યાયે અમારા પર જે વિશેષણો લગાડયાં છે તે પ્રભુ કદી સાંખશે નહિ:પ્રભુ સત્યનો બેલી છે આ કાર્ય મારૂં અંગત નથી તેમણે જે ધક્કો પહોંચાડયો છે તે આ ધાર્મિક સંસ્થાને જ પહોંચેલ છે. આવા તેમના અન્યાયભર્યા વર્તણને માટે પ્રભુ તેમને સદ્બુદ્ધિ આપો.

લી. શાસ્ત્રી પ્રાનજી નાગજીના શ્રીસ્મરણ-વ્યવસ્થાપક ભગવદ્મંડળી-ધોરાજી.

उमरेठमां आनंद.

પૂજ્યપાદ ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મહારાજ જ્યેષ્ઠ કૃષ્ણ ૧૩ ના રોજ નવસારીથી નડિયાદ થઇ મોટર દ્વારા ઉમરેઠ પધાર્યા. વૈષ્ણવ સૃષ્ટિમાં આનંદ ઉદધિ ઉમડયો. હમેશાં રાત્રિના સભા થતી. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈ સાંપ્રદાયિક વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાન આપતા હતા. પેટલાદથી જન્મ દિન ઉત્સવનો લાભ લેવા શાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠારામભાઈ તેમજ રમણ શા.શ્રી આવી પહોંચ્યા. શરૂઆતમાં બ્રહ્મ સંબંધ, પુષ્ટિમાર્ગ, સેવા વિગેરે જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાનો થયાં. શાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠારામભાઈ તેમજ રમણ શાસ્ત્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વ્યાખ્યાન આપતા. પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વચનસુધાનું પાન કરાવતા. ચાર પાંચ વ્યાખ્યાન પછીથી જનતા વધવાથી મોટા મંદિરના નીચેના ચોગાનમાં સભા થતી.આષાઢ શુક્લ ૩ ના રોજ આપશ્રીનો જન્મદિન હોવાથી સુંદર તૈયારીઓ થવા લાગી. આજનું પ્રભાત વૈષ્ણવ સૃષ્ટિને 'આનંદસાગર ઉલટયો રે લોલ' આ કડીનો સાક્ષાત્કાર કરાવતું હતું. શહેરના જુદા જુદા લતાઓ ધ્વજ પતાકા અને તોરણો દ્વારા શણગારાયા. બાર વાગતાં શ્રીમાર્કન્ડેય પૂજન તથા કેસરસ્નાન થઇ ગયાં. ગણુપતિની વાડીમાં પેટલાદ, કપડવણજ, વાડાસીનોર, ઓડ, લુણાવાડા વિગેરે ગામોના ૫૦૦ વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. બપોરના બે વાગતાં ઉમરેઠની ,ભજનમંડળીના સભ્યો આવી પહોંચ્યા. ચાર વાગ્યા સુધી ભજન ધૂન મચી રહી બીજી બાજુ વરઘોડાની તૈયારી થઈ ગઈ હતી. શરૂઆતમાં ડાકોરથી મંગાવેલ ડંકો નિશાન રાખ્યાં બાદ બેન્ડ તેમજ દેશી વાજીંત્ર ગોઠવાયાં ઉમરેઠની બન્ને ભજનમંડળીઓ ભજન ધૂન સાથે હથિયાર બંધ ચાલવા લાગી. મોટા પ્રમાણમાં પુરુષ વર્ગ ગોઠવાયો. પોલીસ અને ઉત્સાહી આગેવાનોના કોર્ડન વચ્ચે મહારાજશ્રી જયનાદપૂર્વક મોટરમાં બિરાજ્યા ફુલહાર અપાયા બાદ સરઘસની શરૂઆત થઈ. પાછળ ૫૦૦ ની સંખ્યામાં સ્ત્રીવર્ગ કલશ અને થાળ લઈ ઘોળ પદ ગાતાં ગાતાં ચાલતો હતો. મોટા મંદિરથી ગાંધી શેરીમાં થઈ સરઘસ વડા બજારમાં આવી પહોંચતાં ઠેક ઠેકાણે આપશ્રીને ફુલહાર થવા લાગ્યા. જયનાદથી સડક ગાજવા લાગી. બંદુકોના આવાજ સાથે પંચવટી સ્થળે આવી પહોંચ્યા. દર્શનાતુર જનતાની વધુ ઠઠ જામેલી હોવાથી થોડો વખત રોકાયા બાદ ભાટપીપળી તરફ પ્રમાણ કર્યું. બ્રાહ્મણોની સંખ્યા દર્શનાર્થે અહીં જામી હતી. ત્યાંથી ઓડ બજારના શણગારેલા નવીન દરવાજામાં પ્રવેશ કર્યો પુષ્પવૃષ્ટિથી મોટર શણગારાઈ જયધ્વનિ પૂર્વક ત્રણ પોળના રસ્તે આવી પહોંચતાં વ્યવસ્થાબંદ લાઈટ ગોઠવાઇ ગઇ. પુનઃ પંચવટી આવતાં ભજન મંડળી તરફથી બે સુન્દર પરીઓ શણગારાયલી મોટર આગળ ગોઠવવામાં આવી. કોર્ટના રસ્તે કંસારાવાડમાં થઈ સરઘસ રા કલાકે પાછું આવી પહોંચ્યા બાદ ભજનમંડળીના ઉત્સાહી છડીદારો અને કીમતી છત્ર ધારણ કરેલા માણસો સાથે જયનાદપૂર્વક સરઘસ વિખરાયું. જનસંખ્યા ૧૨૦૦ લગભગ હતી. શ્રીગોવિન્દ મહાપ્રભુજીનો ઉત્સવ પણ ઉત્સાહપૂર્વક ઉજવાયો. કીર્તન સમાજે થયા. રાત્રિના ભજનમંડળ તરફથી બીજી વખત મંદિરમાં ધૂન શરૂ થઇ વચ્ચે સવા કલાક સુધી શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ જયન્તી નાયકનો ઇતિહાસ 'જ્વલન્ત જ્યોત' નામક પુસ્તક દ્વારા જોરદાર ભાષામાં વાંચી સંભળાવ્યો. પુનઃ ભજન ધુન ૧૨ા સુધી રહી. અડધો કલાક પૂજ્યપાદ આચાર્યશ્રીએ ભજનમંડળને સુન્દર બોધપ્રદ વ્યાખ્યાન આપી પોતાનો સન્તોષ જાહેર કર્યો. રાત્રિના ૧ વાગ્યા બાદ જયધ્વનિ પૂર્વક સભા વિસર્જન થઈ. આષાઢ સુદ ૯ નો પાટોત્સવ પણ અહીં જ થયો. આષાઢ શુક્લ ૧૧ ના રોજ ઉમરેઠથી આપશ્રી મોટર દ્વાર રાણીયા ગામમાં પધાર્યાં ત્યાંનો આનંદ જડ કલમ શું આલેખી શકે ! ગામના મુખી તેમજ અમૃતલાલભાઇ વિગેરે આગેવાનોએ ૫૦ માણસો રોકી રસ્તાઓ દુરસ્ત કરાવ્યા હતા. શુદ્ધ હવા પાણી, નિષ્કામ પ્રેમ, આદિ સરળ ગ્રામ્ય ભાષા, નાના પણ સ્વચ્છ અને શણગારાયલ મકાનમાં નિવાસ વિગેરેએ સારી અસર કરી. સાંજના ૫ વાગે પધરામણીમાં આપશ્રી પધાર્યાં ત્યાંથી પાછા ફરતાં જનતા સરઘસના રૂપમાં ગોઠવાઈ દેશી વાજીંત્ર, ભજનમંડળ, પુરુષવર્ગ, ક્રમશઃ ગોઠવાયા. આપશ્રી પગે ચાલતાજ પધાર્યાં. પાછળ બ્હેનો કલશ થાળ સાથે ભજન ગાતાં ગાતાં ચાલતાં હતાં. મુકામ પર પધારતાં સરઘસ વિખરાયું. સાંજના મહી નદીએ પધાર્યાં. ત્યાં અનેરો આનંદ આવ્યો. રાત્રિના સભા થઇ. રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રીએ 'ભક્તિ' મુખ્ય વિષય લઇ સાંપ્રદાયિક વિષયોને સમાવતું સુંદર વ્યાખ્યાન કર્યું. બાદ આપશ્રીએ અડધા કલાક સુધી ગુજરાતીમાં સુંદર 'ભક્તિ અને આચાર

વિહાર' વિગેરે વિષયોને સમાવતું પ્રવચન કરી ઉપદેશ આપ્યો. જયનાદપૂર્વક ૧૧ વાગે સભા વિસર્જન થઇ. રેહવારના આપશ્રી નદીએ પધાર્યા અને ત્યાંજ શ્રીની સેવા, સન્ધ્યાવંદનાદિ કરી બ્રહ્મસંબંધ પણ નદીએજ આપ્યાં. લોકોના આગ્રહથી ચાર વાગ્યા સુધી બિરાજી આનંદ આપ્યો. મોટરમાં બિરાજતી વખતે પણ બ્હેનોને દયારામભાઈનાં પદ ગાવા તથા પુરૂષવર્ગને મંદિર બનાવે તે સમયે નાનુ પુસ્તકાલય ખોલવા ગુજરાતી ભાષામાં ઉપદેશસુધાનું પાન કરાવ્યું. શણીયાથી સુન્દલપુર પધારતાં રસ્તામાં કોટ અને દૂધાપુરા ગામમાં પધાર્યા. કોટમાં મનસુખલાલભાઈની આગેવાની સાથે એક માઇલ દૂર લોકો આવ્યા હતા. બંદુકના અવાજ અને ભજન ધૂન સાથે કોટમાં અડધો કલાક બિરાજ્યા. ત્યાંના દેશી વાજીંત્ર સુંદર હતાં. દૂધાપુરા ત્રિભુવનભાઇને ત્યાં પધારી ત્યાંથી સુંદલપુરા પધાર્યા. ગામ લોકો એક માઇલ દૂર સ્હામા આવ્યા હતા. દેશી વાજીંત્ર, ભજન મંડળ, કીર્તન સમાજ ક્રમશઃ ગોઠવાયાં. છડીદાર મોટર આગળ ચાલ્યા. પુરૂષવર્ગ પણ ઠીક પ્રમાણમાં ચાલતો હતો. પાછળ બ્હેનો કલશ સાથે ગીત ગાતાં ગાતાં ચાલતાં હતાં. સાત વાગે બેઠકજીએ આવી પહોંચ્યા. રાત્રિના સભા થઈ. રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રીએ સેવા અને શ્રીસર્વોત્તમ 'સ્તોત્ર' ઉપર વિસ્તૃત વ્યાખ્યાન કર્યું. પૂજ્યપાદ મહારાજશ્રીએ પણ અરધા કલાક સુધી સુધી વચનસુધાનું પાન કરાવી ૧૧ વાગે સભા વિસર્જન થઇ. આષાઢ શુકલ ૧૩ ના રોજ ઓડ તરફ કૂચ કરી. રસ્તામાં ભરોડા ગામમાંથી જનતા ભાગોળે દર્શનાર્થ આવી હતી. તેમને દર્શન દઇ આનંદ આપ્યો. ઓડ ૦ા। કલાક બિરાજી પેટલાદ પધાર્યા. માર્ગમાંના વૈષ્ણવોને એક કલાક લાભ આપ્યો. દાતાર શેઠજી રમણલાલ કેશવલાલના બંગલે ત્રણ દિવસ બિરાજ્યા. લાલબાવા શ્રીગોવિન્દરાયજી પણ શ્રીઅંગ ઠીક નહિ હોવાથી અહીંજ બિરાજે છે. ચાંગા, મહેળાવ, બાંધણી વિગેરે ગામોને પણ કેમ વિસારાય! આષાઢ કૃષ્ણ ૧ શનિવારના રોજ સાંજના પાંચ વાગે પેટલાદથી કૂચ કરી. ચાંગ, મેહેળાવ, બાંધણી ત્રણે ગામોનો આનંદ પણ અવર્ણનીયજ છે. મહેળાવના આગેવાન જેઠાલાલભાઈ સાથેજ હતા. ભજન મંડળી અને વાજીંત્ર ત્રણે ગામમાં સ્હામા આવ્યા હતા. મંદિરે બેઠક તૈયાર કરી હતી. ત્રણે ગામને આનંદનું દાન કરી આપશ્રી નવ વાગે નડિયાદ શ્રીયુત નાનાસાહેબ દેસાઇને ત્યાં પધાર્યા. અડધો કલાક બિરાજી ત્યાંથી ઓડ તરફ પધાર્યા. રસ્તામાં હીંગડા ગામને બીજી વખતે દર્શન આપી રાત્રિના ૧૦ વાગે ઓડ પધાર્યા. આષાઢ કૃષ્ણ ૨ રવિવારે રાત્રિના સભા થઈ. શરૂઆતમાં રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રીએ 'નવવિધ ભક્તિ' પ્રમાણ અને દૃષ્ટાંતથી સમજાવી બાદ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ એક કલાક સુધી વિસ્તૃત વિવેચન કર્યું. ૧૧ વાગે સભા જયનાદપૂર્વક વિસર્જન થઇ. બીજે દિવસે પણ સભા થઇ. ગામની ભજન મંડળીએ પણ રાત્રિના ભજન ધૂન પુષ્કળ મચાવી મુકી. ભક્ત પુરૂષોત્તમનો શુદ્ધ પ્રેમ તરી આવતો. શંકાસમાધાનો થયા. પટેલ હીમાભાઇ, શાહ મગનલાલ, પટેલ ઉંટાલાલ, શેઠ ભાઈલાલભાઈ વિગેરે આગેવાનોનો પ્રયત્ન પ્રશંસનીય છે. ૫. ભ. ભાઇલાલભાઇની પ્રકૃતિ નરમ હોવાથી આપશ્રી તેમને ત્યાં દરરોજ પધારી દર્શનનો લાભ આપતા હતા. આષાઢ કૃષ્ણ ૬ ગુરૂવારે ઓડથી ૪ વાગે આપશ્રી મોટરદ્વારા ઉમરેઠ પધાર્યા. સાડા પાંચ વાગે નજીકમાં થામણા ગામે પધાર્યા. ત્યાંની તૈયારી પ્રશંસનીય હતી. બેન્ડથી સ્વાગત થયું. ફુલહાર થયા. જનતાની ઇચ્છાથી શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ ટુંકું વ્યાખ્યાન આપ્યું. એક કલાકમાં પાછા ઉમરેઠ પધાર્યા. આષાઢ કૃષ્ણ ૭ શુક્રવારના સાંજના ૬ વાગે આપશ્રી વેદશાળા અને વ્યાકરણ શાળાના વ્યવસ્થાપક, જોશી બાલાશંકરભાઈની વિનંતિથી પધાર્યા. બેન્ડથી સ્વાગત થયું. ફુલહાર થયા. બાલકોએ ગણેશની અને પુરુષસૂક્તથી મંગલાચરણ કર્યું. વ્યવસ્થાપકના આગ્રહથી રમણલાલ શાસ્ત્રીએ પાઠશાળાનો હેવાલ અને કાર્યક્રમ વાંચી સંભળાવ્યો બાદ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ વિદ્યા સંબંધી વ્યાખ્યાન આપી પાઠશાળા આવશ્યકતા સમજાવી મહારાજશ્રી તરફથી રૂ. ૫૧) ની મદદ જાહેર કરી હતી. શાળા તરફથી રમણ શાસ્ત્રીએ આચાર્યશ્રીનો આભાર માની મદદ સ્વીકારી હતી. આચાર્યશ્રીએ ઉપસંહારમાં ટુંકું પણ અસરકારક પ્રવચન કર્યું હતું. અ.પ.ઠ કૃષ્ણ ૭ ના રોજ સાંજના સાત વાગે શ્રી ગણપતિની વાડીમાં જાહેર સભા રાખવામાં આવી. શરૂઆતમાં પુરાણીજી જ્યેષ્ઠારામે ધાર્મિક ઉપક્રમ કર્યો. બાદ રમણલાલ શાસ્ત્રીએ સભાનો હેતુ અને 'ધર્મ' એ વિષય ઉપર પ્રાચીન કાલની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ રામાયણ મહાભારતના દૃષ્ટાંતોથી વ્યાખ્યાન આપ્યું. તેમજ ગાંધી ઓગાલાલ ભીખાભાઇએ પોતાનું જીવન વૃત્તાંત તેમાં સાહિત્ય વાંચનથી થયેલ પડેલો તેમજ 'શુદ્ધાદ્વૈત-

'બ્રહ્મવાદ' એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન આપ્યું. બાદ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ 'ધર્મ' એ વિષય ઉપર કાલીદાસના શ્લોકથી વર્ણાશ્રમની વ્યવસ્થા સુંદર સમજાવી હતી. બ્રહ્મચર્ય અને ગોપોષણની મહત્તાનો ચિતાર આપ્યો હતો. બાદ પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ અડધા કલાક સુધી હિન્દી ભાષામાં સચોટ રીતે 'ધર્મ' એ વિષયનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું હતું. આહાર વિહારની ઉત્તમતા સમજાવી હતી. રાત્રિના નવ વાગે સભા જય ઘોષપૂર્વક વિખરાઇ. જન સંખ્યા લગભગ ૧૪૦૦ હતી. ૭ શુક્રવારે રાત્રિના શ્રીરણછોડરાયજીના પગથામાં ભજન મંડળના આગેવાનોની વિનંતિથી પધાર્યા. રાત્રિના ૯॥ થી ૧૨ સુધી બિરાજ્યા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ ત્રણ પદ ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઇનાં ગવરાવ્યાં, ભજન મંડળને આનંદ આપી બાર વાગે ઘેર પધાર્યા. આષાઢ કૃષ્ણ ૮ શનિવારે રાત્રિના શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ દયારામભાઇનાં પાંચ પદ ગાયાં અને રહસ્ય સમજાવ્યું. પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ તેમનાં કાવ્યોની મહત્તા અને તે ગાવાની બ્હેનોને ખાસ ભલામણ કરી હતી. હિન્દુ તરીકેનાં ચિન્હ ચોટી, રોટી, બેટી એ વિષયનું રહસ્ય સમજાવ્યું હતું. ઉમરેઠમાં પટેલ સોમાભાઈ, તલાટી મંગુભાઈ ઉર્ફે ગોપાળદાસ, ગોરધનદાસ, શાહ ભાઈજીભાઇ, શાહ ગોરધનદાસ, કોટવાળા પુંજાભાઈ, શાહ મૂળજીભાઈ, રા. મણિલાલ સાહિલીવાળા વગેરેનો પ્રયત્ન પ્રશંસનીય છે. આષાઢ વદ ૯ ના રોજ મહારાજશ્રી મોટર મારફત ડાકોર થઇને કપડવણજ પધાર્યા. આ વખતે ઉમરેઠના વૈષ્ણવોનાં હૃદયોનો પ્રેમ અનુભવૈકગોચર હતો. બધાની આંખો અશ્રુભીની થઇ હતી.

કપડવંજમાં—ઉમરેઠથી ડાકોરમાં શ્રીરણછોડરાયજીના હીંડોળાનાં દર્શન કરીને મહારાજશ્રી ગોધૂલિ મુહૂર્તમાં કપડવંજ પધાર્યા. મહાજનના અગ્રેસરો ઉમરેઠ સુધી પધરાવવા આવ્યા હતા. વળી રસ્તામાં પાંચ છ માઇલ સામે મોટર લારીમાં કેટલાક વૈષ્ણવો આવ્યા હતા. બાળક વિદ્યાર્થીઓ તો ત્રણ માઇલ દૂર સુધી સામા આવેલા હતા. કપડવંજની સીમનો દેખાવ તો અવર્ણનીયજ હતો. વૈષ્ણવોએ મોટી સંખ્યામાં સામૈયું કર્યું હતું. નાના બાલકથી લઇને વૃદ્ધાવસ્થાનાં વૈષ્ણવ સ્ત્રીપુરૂષોથી છવાઈ રહેલા રાજમાર્ગનું દૃશ્ય કોઈ અનેરી અસર ઉપજાવતું હતું. મેઘરાજ પણ વૈષ્ણવમનોરથમાં અંતરાય નહિ નાંખતાં થંભી ગયા હતા. પ્રચંડ જયધ્વનિ વચ્ચે અને વાજતે ગાજતે અસંખ્ય માનવ સમુદાય સાથે સમારંભ શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરમા રાત્રે આવ્યો. વૈષ્ણવોનો ભાવસમુદ્ર આજે ભરપૂર ઉછળી રહ્યો હતો. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની સૃષ્ટિના આ ભાવસ્વરૂપને કોટિ વાર વંદન છે.

એ ઠીંગુજી કોણ છે ?—'શુદ્ધાદ્વૈત' માં ઠીંગુજીપુરાણના બે રમુજી અધ્યાયો છપાઇ ગયા. તે વિષે કેટલાકો પ્રશ્નો પૂછે છે કે, એ ઠીંગુજી કોણ છે ? તેનો જવાબ એ પુરાણના લેખક નીચે મુજબ લખે છે:—"ઠીંગુજી એ કોઈ ચોક્કસ જીવતી જાગતી વ્યક્તિ નથી અને તેને ઉદ્દેશીને પુરાણ પણ શરૂ થયું નથી. તે વિષે વધુ અજવાળાની અભિલાષા સેવનાર R. (રેવાશંકર ?) M. (મેઘજી ?) P. (પુરોહિત ?) ને નમ્ર સૂચના છે કે ઠીંગુજી કોણ છે તે પહેલાં 'સાહિત્યપુસ્તક'માં બહાર આવેલા ગુજરાતના વૈષ્ણવ વિદ્વાનનાં નીચ અપવિત્ર વર્તન વિષે સવાલો પૂછો અને તેવું અધમ વર્તન કરનારને બહાર લાવોને. ઠીંગુજી પુરાણનો ત્રીજો અધ્યાય તો તુરત બહાર પડશે અને એક ગામના સ્મશાનમાં એ ઠીંગુજીએ પૈસા તથા યશ માટે કેવી ભયાનક મલિન મંત્રસાધના કરેલી છે તેનું વર્ણન આવશે."

અનુપમ માન—વડોદરાના સુપ્રસિદ્ધ શહેરી અને સદ્‌ગૃહસ્થ રાજરત્ન શેઠ ચીમનલાલ ગિરધરલાલ (ઝવેરચંદ લક્ષ્મીચંદવાળા) ને નામદાર શ્રીમંત ગાયકવાડ નરેશે પોતાના મિત્રમંડળમાં ગણીને જે અદ્વિતીય સન્માન કર્યું છે તે યોગ્ય વ્યક્તિની યોગ્ય કદર જ થઇ છે એમ કહી શકાય. શેઠ શ્રી. ચીમનલાલભાઇ ભાઇ એક ધર્મનિષ્ઠ અને ભગવદ્‌ધર્મપરાયણ સદ્‌ગૃહસ્થ છે. એમના પિતાશ્રી અમદાવાદમાં ધર્મપરાયણ અગ્રેસર સદ્‌ગૃહસ્થ તરીકે જાણીતા છે. શેઠ ચીમનલાલભાઈએ પોતાના કુળનું ગૌરવ સુરક્ષિત રાખ્યું છે. વડોદરામાં શ્રીકલ્યાણરાયજીના મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવામાં તેમણે વિત્તજા સેવા ઉપરાંત તનુજા સેવા ઘણા પ્રમાણમાં કરી છે. સંપ્રદાયની સેવા બધી રીતે તેઓ બજાવે છે. વડોદરામાં શ્રીમંદિર પાસે એક પુસ્તકાલય આજે વર્ષોથી તેઓ ચલાવી રહ્યા છે, અને ગ્રંથમુદ્રણમાં પણ ઉદારતાપૂર્ણ સહાયતા આપે છે. એમને જે અસાધારણ સન્માન મળ્યું તે પુષ્ટિમાર્ગને અને સનાતન ધર્મને મળ્યું છે એમ અમે સમજીએ છીએ.

રાજરત્ન—શેઠ શામળ બહેચરનું વૈષ્ણવ કુટુંબ ગુજરાતમાં સુપ્રસિદ્ધ છે. તેમના કુટુંબના વૈષ્ણવતા આદર્શ હતી અને અત્યારે પણ સદ્‌ગત શેઠ ચીમનલાલભાઈના સત્પુત્રો પોતાના કુળનું ધાર્મિક ગૌરવ

જાગતી રહેલા છે. શેઠ ટોડરમલ એક વૈષ્ણવ હોઇને સાહિત્યપ્રેમી ધાર્મિક ભાવનાવાળા લેખક છે. સાંપ્રદાયિક સાહિત્યના તેઓ ઉત્તેજક છે. હમણાં તેમણે પચાસ હજાર રૂપીઆ જેટલી મોટી ઉદારદીલી રકમ મન્દિરોની ચાવી બાંધવા આપી છે. તેમનો આ સદ્‌ગુણોની કદર ના. મહારાજા ગાયકવાડ સરકારે રાજરત્નનું સુવર્ણપદક આપીને કરી. છે ખચિતજ, આથી આવા યોગ્ય ધર્મપરાયણ નાગરિકની કદરજ થઈ છે.

એક સુધારો—અલીખાન આદિ અસ્પૃશ્યોને બ્રહ્મસમ્બન્ધ સર્વથા ન્હોતું થયું તેમ કહેવું ઉચિત નથી. પણ તેમને આધુનિક પ્રકારે બ્રહ્મસમ્બંધ ન્હોતું અપાયું. એ વાત નિર્વિવાદ છે કે બ્રહ્મસમ્બન્ધ વિના સેવાધિકાર નથી મળતો. અસ્પૃશ્ય વૈષ્ણવો સેવા કરતા હતા અને તેમના સેવ્ય સ્વરૂપો (શ્રીઠાકુરજી) અત્યારે સામ્પ્રદાયિક મન્દિરોમાં બિરાજે છે એટલે તેમને બ્રહ્મસમ્બન્ધ ન્હોતું થયું એમ કહેવું અસ્થાને છે. લી. ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી. મુંબાઇ, તા. ૧૪-૭-૩૩.

નોકરી છોડી પણ તિલક ન છોડયું—બરેલીના પંડિત રામ આધાર જેઓ યોગવિદ્યા જાણે છે અને કેટલાંક વર્ષોથી યોગીના જેવી જીંદગી ગાળતા છતાં સબઈન્સ્પેક્ટર તરીકે નોકરી કરતા હતા, તેમને ત્યાંના હાલના પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે પોતાના કપાળ ઉપર તિલક નહી કરવા જણાવ્યું. પંડિતજીએ તિલક કરવાનો પોતાનો હક્ક હોવાનું તથા તિલક સાથે તેઓ ઘણા વાઈસરોયો, ગવર્નરો અને પોલીસના ઇન્સ્પેક્ટર જનરલોને મળેલા હોવાનું તથા કોઇએ પણ તિલક સામે વાંધો નહી લીધાનું જણાવ્યું હતું. પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે આથી ઇન્સ્પેક્ટર જનરલને રીપોર્ટ કર્યો હતો જેના જવાબમાં ઇન્સ્પે. જનરલે તિલક ન કરવા જણાવ્યું હતું. પંડિતે આથી નોકરીનું રાજીનામું આપી થોડાજ દિવસો ઉપર અવધુત સાધુનો વેશ થઈ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટની ઓફીસના કંપાઉન્ડમાં પોતાનો અડ્ડો જમાવ્યો. આ બનાવે ત્યાંની સનાતની જનતામાં ચકચાર ફેલાવી હતી અને લોકોનાં ટોળાં આ સાધુનાં દર્શનાર્થે ત્યાં જમા થવા લાગ્યાં હતાં.

વઢવાણ શહેર—માં શ્રીસ્નાનયાત્રાના દિવસે સભામાં ભાષણ શ્રીયુત મુખીયાજી જીવનલાલ કૃષ્ણદાસ ત્રીવેદી ખેડાવાળાએ કર્યું હતું તે તો ટુંક સાર નીચે પ્રમાણે છે. પુ. વૈ મહાસભાના મેંબરો તથા સભાસદો અને મહાસભામાં આનંદનો લાભ લેવા આવેલા સદ્‌ગૃહસ્થ વૈષ્ણવ જનોનો ઉત્તમ લાગણીવાળો ભાવ જોઇ મારૂં ચિત્ત ઘણુંજ પ્રસન્ન થાય છે આવા ધાર્મિક પ્રવચનો વારંવાર જો થતાં હોય તો નિરંતર ભાવની વૃદ્ધિનું પોષણ થયા કરે. વર્તમાન સમયમાં અનેક પ્રકારની ભિન્નભિન્ન વાતાવરણ જોતાં આધુનીક યુવકોનાં મન ધર્મ પ્રત્યેથી વ્યગ્ર થઇ ગયાં છે પણ વઢવાણ શહેરમાં કેવળ કંસારા જ્ઞાતિ યુવક સંઘના ભાવે શ્રીમહાપ્રભુજીની દયાથી વિશેષ અહિલિકપણું થોડું છે તે ઘણી હર્ષની વાત છે. કારણ કે એમના ધંધાથી કાર્ય નિમિત્તે હવેલીથી ઘર એમ જે ઇતર વાતાવરણ પ્રત્યે લક્ષ આપવાનો વખત બહુજ ઓછો મળે છે ને એમનું દ્રવ્ય ઘણુંજ મહેનતનું ને શુદ્ધ છે માટે શુદ્ધ દ્રવ્યના પ્રતાપે અન્ય દોષિત નથી બનતું માટેજ એમના ભાવે ઉત્તમ અનુમાન છે. ઘણે ઠેકાણે સમયને ઉત્તમ સંગના અભાવે કન્યાવિક્રય જોવામાં આવે છે એ દ્રવ્યની તો પછી વાતજ શી કરવાની ? એ દ્રવ્યની અધમતાની વાત દરેક ધાર્મિક પુરૂષોને સમાનજ છે. પણ જે સારી રીતે જાણે છે તેમાં એ લેશ દબાતો નથી. આપણા ઉપર શ્રીમહાપ્રભુજીએ કેટલો અનુગ્રહ કર્યો છે આ પુષ્ટિમાર્ગના જીવો પર કેટલી દયા કરી છે આપશ્રીએ કેટલો પરિશ્રમ લીધો છે ભક્તિમાર્ગી ગ્રંથને ઉત્તમ ભગવદીય સત્સંગ કરેથી આપણને ભાવ થાય તે સિવાય અશક્ય છે પ્રભુનું માહાત્મ્યજ્ઞાન સુદ્રઢ સર્વથી અધિક સ્નેહ જ્યારે થાય ત્યારે નિરંતર દરેક વસ્તુમાં ભગવાનમાં દૃષ્ટિ થવી જોઇએ જેમ જેમ ભગવાનથી ઉત્પન્ન કરેલી આશ્ચર્યદાયક વસ્તુ જોઇને ભગવાન પ્રત્યે ઉપકાર દશા દર્શાવી ઘટે પણ આ દશા કયારે બને કે કેવળ શ્રીમહાપ્રભુજીના આશ્રિત થઇએ ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીના આશ્રય સિવાય ભગવાનનો અનુગ્રહ આદર થવો દુર્લભ છે. વિશેષમાં મહાસભા કેવા કેવા કહેવો જોઇએ તથા વૈષ્ણવોને સભાસદોને તેમના મેમ્બરો ઈત્યાદિને ઘણોજ બોધ પાડયો હતો અને છેવટમાં કહ્યું જે આવા આનંદિત કાર્યો દર સાલમાં મોટા પ્રમાણમાં થવા જોઇએ જેથી ઉછરતી પ્રજાને ઉત્સાહ વધે અને આનંદ આવે તેવા સુંદર રાગરાગણીથી નાના બાળો માર્ગીય ગ્રંથ સંગીત સાથે શીખવવાની અરજ કરી હતી. આ સુંદર વ્યાખ્યાનથી સભામાં આવેલ વૈષ્ણવોને ઘણો આનંદ થયો હતો. અને પોતે પોતાનું ભાષણ શ્રીની જય બોલણા સાથે સમાપ્ત કર્યું. ત્યારબાદ ચતુરદાસે ઉત્તમ રીતે વિવેચનપૂર્વક શ્રીગોપીસંગીતનો અર્થ સરળ રીતે સમજાવ્યો હતો. અન્યપૂર્વા ને અનન્યપૂર્વા એજ અગ્નિકુમારો તેમજ

ગોપીકાગીતમાં ૧૯ પ્રકારના વ્રજભક્તો પ્રભુનું અંતર્ધ્યાન થવાનું કારણ અને અગ્નિકુમારોનું પૂર્વ વૃત્તાંતની અંતરઅડગતા વેણુનાદ કોને માટે હતો. આ સર્વે વૃત્તાંતો વિવેચન સાથે ઘણીજ અસરકારક રીતે સમજાવી અને પોતાનું વિવેચન પુરૂ કર્યું હતું. ત્યાર બાદ શ્રી. પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાના મંત્રી ભાઇ ગોપાળદાસે પોતાના ભાષણમાં કહ્યું જે પ્રિય વૈષ્ણવો આજે ઘણી જ હર્ષની વાત છે જે સ્નાન યાત્રાને દીવસે આવો ઉત્તમ આનંદનો દીવસ હોઈ તેમજ આપ સર્વે વૈષ્ણવ સમુદાય અત્રે પધારેલ છો તેથી ઘણી જ હર્ષની વાત છે આ મહાસભા સ્થાપવાનું કારણ માત્ર એ જ છે કે વિશેષ વૈષ્ણવ વૃંદ આપે જે ઉત્તમ શિક્ષણ મળે અને અનેક વિદ્વાનદ્વારા સતસંગનો લાભ મળે તેથી ભક્તિની વૃદ્ધિ થાય આ વર્તમાન સમયમાં દુઃસંગ વિશેષ પ્રબળ છે માટે દુસંગથી બચાવ કરવાના હેતુથી આવી સંસ્થાઓની જરૂર છે આ સભાના ઉદ્દેશને અનુસરીને દરેક શ્રી. પુ. વૈષ્ણવ સભાસદ થઈ શકે છે આ સંસ્થામાં એક નાનું સરખું પુસ્તકાલય પણ રાખવામાં આવેલ તેથી દરેક પુ. વૈષ્ણવોને અમારી ખાસ વિનંતિ છે જે પુસ્તકાલયના નીયમને અનુસરીને આપ પુસ્તકો વાંચવા લઈ જવા કૃપા કરશો દરેક પુ. વૈષ્ણવને વાંચવા લાભ મળે તેવા હેતુથી કાંઇ પણ ફી અગર તેવા કાંઈ ઠરાવો રાખવામાં આવેલ નથી. તેથી સર્વેને ઉત્તમ લાભ મળે તેમ છે આ ઉપરાંત ભગવદીય ભાઇશ્રી લલ્લુભાઇ છગનલાલ દેસાઈ (અમદાવાદ) વાળા તરફથી આ સંસ્થાને મળેલ ભેટ શ્રીગોપીકાગીતના પુસ્તકો દરેક પુ. વૈષ્ણવને ઘર દીઠ ૧ પ્રત ભેટ તરીકે આપવામાં આવે છે તો દરેક વૈષ્ણવોએ લઇ જવા કૃપા કરવી અને તે વાંચી અને ગ્રહણ કરવાની ભલામણ કરી અને પોતાનું ભાષણ પુરૂં કર્યુ હતું અને આ સભામાં આવેલ વૈષ્ણવો તથા મુખીયાજી જીવનલાલભાઇનો ઉપકાર માનવામાં આવ્યો હતો. ત્યારબાદ ભ. ભાઇશ્રી શ્રીભોવનદાસે સુંદર રાગ રાગણીથી એક ધોળ પેઢીના સુર સાથે બોલી અને આવેલ વૈષ્ણવોને લાભમાં ઉમેરો કર્યો હતો. ત્યારબાદ શ્રીની જયઘોષણા સાથે સભા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

મોટા મંદિર-મુંબાઈમાં—પૂજ્યપાદ ગોસ્વામીશ્રી ૧૦૮ ગોકુળનાથજી મહારાજશ્રીની પ્રમુખપદ નીચે મોટા મંદિરની વિશાળ પાઠશાળા ગૃહમાં થયું હતું. તે વખતે પાઠશાળાના મુખ્યાધ્યાપક પં. શ્રી. બ્રજનન્દન શ્રા., પં. શ્રીકૃષ્ણ માધવ શ્રા. ન્યાયતીર્થ, વ્યાકરણાચાર્ય, પં. ગૌરગોપાલ શર્મા, ચંદ્રશેખર શ્રા. બી. એ, પં. ગંગાદત્ત શ્રા. જ્યોતિષાચાર્ય ઈત્યાદિ ઘણા પ્રતિષ્ઠિત વિદ્વાનો તથા વૈષ્ણવ બંધુઓની તથા બ્હેનોની સંખ્યા ઠીક પ્રમાણમાં ઉપસ્થિતિ હતી. વ્યાખ્યાન પહેલા મહારાજશ્રીને પુષ્પમાળ અર્પણ થઇ હતી. તદનંતર વિદ્યાર્થી ગિરધરલાલ વલ્લભજી જોશીએ ભારતવર્ષમા ધર્મની હાનિનુ કારણ આ વિષય ઉપર એક સારૂં ભાષણ આપ્યું હતું. આ ભાષણથી જનતા ઉપર સારો પ્રભાવ પડયો હતો. તદનન્તર કાશીવાલા રઘુનાથ શાસ્ત્રીએ વર્ણાશ્રમ ધર્મ ઉપર એક કલાક સુધી સારૂં વ્યાખ્યાન આપેલું અને ગાંધી માલવી વગેરે નેતા લોગોની સારી રિતે પોલ ખોલી હતી અને અન્તમાં કહેલું કે પ્રસિદ્ધ નામધારી ગાંધી માલવી વિગેરે નેતા લોકોએ ભારતને પ્રત્યેક રીતથી નુકસાન પહોંચાળ્યું છે અને અન્તે ભારતમા રહેલા વર્ણાશ્રમ ધર્મને પણ ભારતથી ઉઠાડિ દેવા ઇચ્છે છે. પરંતુ આપ સજ્જનો તે નેતા લોગોની માયામાં ન ફસી જઇને પોતાના ધર્મમાં દૃઢ રહેવું. અને ધર્મમાં દૃઢ રહેલા મનુષ્ય પોતાના કાર્યમા સિદ્ધિને પ્રાપ્ત કરે છે. યદિ આપ લોગ ધર્મથી નષ્ટ થઇ ગયા તો પછી સ્વરાજ મલવું તો દૂર રહ્યું. પરંતુ આ લોક તથા પરલોક બંનેને બગાડશો. એટલા માટે વર્ણાશ્રમ ધર્મને ન છોડવો. આવા પ્રકારનું શાસ્ત્રીજીએ સુંદર તથા માર્મિક ભાષણ આપેલું હતું. શ્રોતા લોક ઉપર સારી રીતે અસર થઈ હતી. તદનન્તર રાત્રે ૮॥ વાગે શ્રી. બાલકૃષ્ણ પ્રભુની તથા મહારાજશ્રીની જયધ્વનિ સાથ સભા વિસર્જન થઇ હતી. વિદ્યાર્થી ગિરધરલાલ શર્માએ આરંભમાં શ્રીબાળકૃષ્ણ પ્રભુની તથા શ્રીમદ્ આચાર્ય ચરણની શરણાગતિ માંગી હતી. તદનન્તર સભાનું કાર્ય ચાલુ થયું હતું. પૂજ્યપાદ સભાપતિ મહોદય એવમ્ ઉપસ્થિત વિદ્વદ્વૃન્દ તથા વૈષ્ણવ ભાઈઓ તથા બ્હેનો આજકાલ એવો સમય આવી ગયો છે કે ધર્મ ઉપરથી લોકોની શ્રદ્ધા ઉઠતી જાય છે. બીજુ ઈંગ્લીશ ભણવાની તથા ભણાવવાની પરિપાટી એવા પ્રકારની છે કે સનાતન ધર્મની શ્રદ્ધા તે લોકોના હૃદયમાંથી પોતાની મેળે નિકળી જાય છે. શ્રદ્ધા ઉઠી જાય તેમાં કહેવાની કોઈપણ જરૂર નથી. કારણ કે સંસ્કૃત ગ્રંથ ભણાવતા પહેલા ભગવત્સ્મરણ એવમ્ ભગવત્ પ્રાર્થના તે ગ્રંથોમાં પહેલી હોય છે. સબબ કે ઈંગ્લીશ પુસ્તકોમાં પહેલાથીજ રામ, કેટ રેટ ઇત્યાદિ અશુભ નામોની પહેલા પ્રાર્થના થાય છે. તદનંતર ઇંગ્લીશ ભણાવતા માસ્તરોમાંના બાલકોને નાની વયમાં નમસ્કાર પ્રણામ શિખડાવવાને બદલે ગુડમોર્નિંગ સર ઇત્યાદિ શિખડાવવામાં આવે છે. હવે આપ સજ્જનો વિચાર

કેમ કે જે બાળકોને હજુ કપડાં પહેરતા પુરા આવડતાં નથી. તથા શૌચ જઈને હાથ-પગ ધોતાં નથી આવડતા. આવા નાના બાળકોના કોમળ હૃદયમાં યુરોપ અમેરિકા વિગેરે ભ્રષ્ટ પ્રાંતોના બાળકોની જેવી ઘડાય છે. બીજું કહેવાનું તો એ છે કે ઘરમાંથી જ્યારે તે સ્કુલમાં જાય છે. ત્યારે દેખાદેખીથી પેન પેન્સિલ મોઢામાં નાખવાનું પહેલા શીખે છે, અને હિન્દુનો બાળક મુસલમાનની પેન-પેન્સિલ મોઢામાં નાખે બ્રાહ્મણનો બાળક ધોબીની પેન-પેન્સિલ મોઢામાં નાખે આવી રીતથી નાનપણથી ખરાબ સંસર્ગથી વધે તે બાળક મોટા દર્જા ઉપર પહોંચે. પણ પોતાનો ધર્મ શું છે. તે કાંઈપણ સમજતા નથી.

હવે આપ સજ્જનો વિચાર કરો કે આ ઇંગ્લીશ ભણેલા જેન્ટલમેનોએ પહેલા તો સંસ્કૃત ભાષા ભણી નહિં. અને સંસ્કૃત ભાષા પહેલા ન ભણવાથી ધર્મ શું વસ્તુ છે. તે લોકો ક્યાંથી જાણે અને જાણે તો એ જાણે કે એશીયા બિન સી એબીયન નામની જાતિના મનુષ્યો ચારે તરફ ફરેલા છે. અને જે લોકો ભારત વર્ષમાં આવ્યા તેના વંશમાં અમે ઉત્પન્ન થયા છીએ. તથા તેની અંદરથી નીકળેલી ભાષા સંસ્કૃત ભાષા તથા તેની અંદરથી નીકળેલો મત સનાતન ધર્મ કહેવાય છે. આવી રીતની વાત તે લોકોની બુદ્ધિમાં જલદીથી સમાઈ ગઈ. પરંતુ આપ વિચાર કરો કે નથી તે ભારત વર્ષના કે નથી અમારા પૂર્વજો પરંતુ જે જાતિના લોકોને ભારત વર્ષના લોકો મ્લેચ્છ કહીને ઘૃણા ઉત્પન્ન કરતા અને યદિ તેનો અજાણતાં સ્પર્શ થઈ જતો તો પ્રત્યેક વસ્ત્ર સહિત સ્નાન કરતા તે લોકો યદિ અમારા ગુરૂ પ્રશંસક થઈ ગયા. આવા વિચારવાળા બાળકોના હૃદયમાંથી દેવ દર્શન શ્રાદ્ધ તર્પણ તીર્થયાત્રા માતા પિતાની સેવા વગેરે ઉપરથી શ્રદ્ધા નષ્ટ થઈ જાય તેમાં વિશેષ કહેવાની આવશ્યકતા નથી. સત્ય રીતથી જોઈએ તો તેમાં તે બાળકોનો દોષ નથી. પરંતુ તેઓના માતા પિતાનોજ દોષ છે. કારણ કે નાનપણમાં તેઓને સ્વધર્મના પુસ્તકોનો અભ્યાસ કરાવવો જોઈએ તે વાત તો બાજુ પર રહી, પરંતુ કથા સમાજ સભા સત્સંગ વિગેરેમાં આપણે તેઓને લઈ જતા નથી.

કોઈ પુછે તો કહિયે કે, કથા-સત્સંગ વિગેરેમાં તો અમારા સરખા વૃદ્ધોના કામ છે. બાળકોનું શું કામ છે? અને નાટક સિનેમા ઇત્યાદમાં પોતાના બાળકોને લઈ જઈને અમે બેસાડીયે તથા આવા કાર્યોમાં તેઓને આપણે અસિદ્ધ કરતા રહિયે છીયે. હવે આપ સજ્જનો વિચાર કરો કે. બાળકો મોટા થતા દેવ દર્શન શ્રાદ્ધ તર્પણ માતા પિતાની સેવા વિગેરે ન કરે તેમાં તે બાળકનો દોષ છે કે તેઓના માતા પિતાનો? આ ઉપરથી આપ લોકોએ એવા પ્રકારનું અનુમાન ન કરી લેવાનું કે ઇંગ્લીશ ભણેલા લોકોની ધર્મ ઉપરથી આસ્થા ઉઠી જાય છે. પરંતુ ઘણા ખરા બ્રાહ્મણ વિદ્વાનોની પણ ધર્મ ઉપરથી આસ્થા અસત થઈ જાય છે. કારણ કે બજારના ગાંઠીયા ભજીયા પુરી કચોરી વિગેરે પદાર્થો તો જાણે તે બ્રાહ્મણ વિદ્વાનોના હૃદયમાં તો પવિત્ર દુધપાક છે તથા હોટલના સોડા વોટર ચા વિગેરે પદાર્થોને તે લોકો પરમ પવિત્ર જળ સમજે છે. આટલાથી તે લોકોના હૃદયમાં સંતોષ ન થવાથી યુરોપિયન લોકોનું અનુકરણ કરતા શિખ્યા શૌચ જઈને માટીથી હાથ ન ધોવા સાબુથી હાથ ધોવા બીજાને પણ માટીથી હાથ ન ધોવા સાબુથી એવા પ્રકારનો ઉપદેશ આપવો. પરંતુ સમજમાં નથી આવતું કે તે લોકો શા માટે યુરોપિયન લોકોનું સંપૂર્ણ અનુકરણ નથી કરતા કારણ કે શૌચ વખતે જળ પણ ન લઈ જવું જોઈએ કાગળના ટુકડાઓ તો ઘણા મળે છે. પરંતુ (મિયાંનો કુતરો નહિ ઘરનો નહિં ઘાટનો) તદ્દન આ લોકો નહિ હિન્દુ નહિં યુરોપિયન તો આ લોકોને કેવા પ્રકારના સમજવા તે સમજાતું નથી. અન્તે જણાવું છું કે તમારે બુદ્ધિને પવિત્ર કરવી હોય તો પવિત્રતા પાળો તમારાથી પવિત્રતા ન પાળી શકાય તો બીજાને ભ્રષ્ટ ન કરો અસ્તુ. આ ઉપરથી આપ લોકોને સમજમાં આવી ગયું હશે કે ઇંગ્લીશ ભણેલા લોકોની ધર્મ ઉપર આસ્થા નથી રહેતી તે નથી કહેવાનું પરંતુ પશ્ચિમની સભ્યતા એવા પ્રકારની છે કે સંસ્કૃત ભણેલા લોકોની પણ બુદ્ધિમાં ફેરફાર કરી દીધે છે. પરંતુ જેના ઉપર ભગવત્કૃપા તથા ગુરૂકૃપા હશે તેજ લોકોની ધર્મમાં બુદ્ધિ સ્થિર રહેશે. નહિ તો પછી ભોરિંગાય નમોનમઃ અસ્તુ. તેટલા માટે પ્રિય સજ્જનો આપણા બાળકોને ધર્મ ઉપર દૃઢ આસ્થા રખાવવી હોય તો તેને બાળપણથી જ ધાર્મિક ઉપદેશ આપવો પોતાના ધર્મના ગ્રંથોનો અભ્યાસ કરાવવો સભા કથા સત્સંગ વિગેરેમાં લઈ જવા તો તેમની ધર્મ ઉપર આસ્થા રહેશે વૃદ્ધાવસ્થામાં તમારી સેવા શુશ્રૂષા કરશે. અને નાનપણમાં ધર્મનું જ્ઞાન ન મળ્યું તો પછી યાદ રાખવાનું કે આ પાપી યુગની સ્વતન્ત્રતામાં તમારા જ પુત્રો તમોને જ દુઃખ દેવા તત્પર થઈ જશે. ઇતિશમ્.

પાંચ રૂપીઆ પહોંચ્યા—શેઠ વેણજી ગિરિરાજ ગુજરાતી સમાજ, મુ. જયપુર મારફ પાંચ

જાહેર ખબર.

સર્વે આત્મા સુખ સર્વે ચમત્કાર—શ્રી. શ્રી. ૧૦૮ શ્રીમહારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીવલ્લભલાલજી શ્રીમદગોકુલગાદી શ્રીમદકામવન ગાદી જગતગુરૂ મહારાજશ્રી અષાડ વદી ૭ ને શુક્રવાર કે કે દીવસ મહારાજશ્રી શ્રીમુખસે આજ્ઞા ભઇ આજ રાત્રી વરસાદ પાણી બહોત આવેગા શાન્ત ચમત્કાર નિરપેક્ષ નિસ્વાર્થ ચમત્કાર સકલ જીવનકા સુખ કા દવેકે વાસ્તે શ્રીમુખસે આજ્ઞા ભઈ. એજે બીજે મારગ માયાવાદીનને અલ્પચેષ્ટા ચમત્કાર કરે હે કેમકે પાણી કા દુધ બના દે હે, પત્થરકી સાકર બનાવે હે. સો લોભ સ્વાર્થ કે લીયે બનાવે હે. શ્રી મહારાજશ્રી સકલ પ્રાણી માત્ર કે સુખકે વાસ્તે અનુભવિ ચમત્કાર તાતકાલીક સકલ જગતકે વાસ્તે પ્રાણી માત્ર તલર્ફ રહી હતી જીનપે દયા કરકે શ્રીમુખસે આજ્ઞા ભઈ આજરાત્રે જલ-વરસાદ આવેગા. શાન્તી બચનસે આનંદ વચનસે સકલ પ્રાણી માત્ર કે વાસ્તે બચન ઉચ્ચારણ કીયા અસાડ વદી ૭ કે રોજ કીયા સકલ વૈષ્ણવ ઉમરેઠ, ઓડ, પેટલાદ તથા મોડાસા, નડિયાદ, કપડવણજ તથા બાલાસીનોર તથા ટીમ્બા સજ્જનકે બીચમે વચન ઉચ્ચારણ કીયા એઈ ચમત્કાર અલૌકીક આપકી ઇચ્છાનુસારે બચન કીયા સબ પ્રાણી માત્રકુ સુખ પહોંચ્યા. આપશ્રીને એસો વચન કીયા મીતિ ૧૯૮૯ના અષાડ વદી ૮ ને શનીવાર.

લી. વૈષ્ણવ કૃષ્ણદાસ પરમાનંદદાસ ગોવરધનવાસી.

श्रीगिरिराजजीमां वृक्ष रोपो !

वैष्णवो ! श्रीगिरिराजजीनी तरहेटीमां प्राचीन वृक्षो तिरोधान थई जवाथी सख्त तड़काना प्रतापे चणा पण शेकाई जाय एवी गरम रजमां ज्यारे श्रीवल्लभकुल, वैष्णवो, व्रजवासीओ, साधु, महात्मा तथा ऋषि-महर्षिओने दंडवती तेमज सादी परिक्रमा सात कोसनी करता जोईए छीये त्यारेज आपणने वृक्षोनी केटली आवश्यकता छे तेनो कंईक अनुभव थाय छे,

एवा संजोगोमां आवेला वैष्णवो तरफथी प्रेरणा अने सहायताना परिणामरूपे अत्रे चार वरस थयां बाबूजी जदुनाथजी द्वारा अहीं वृक्ष लगाडवानुं काम चालु थई रह्युं छे अने आशरे ९००-१००० आज सुधी वृक्षो लागी चुक्यां छे ।

स्थल:—तरहटी पूछरीथी जतीपुरा गाड १ वृक्ष ३०० माईल १॥ (बहारनी परिक्रमा) पूछरीथी, सुरभीकुण्ड माईल ॥। वृक्ष २०० । हरजी कुण्डथी गुलालकुण्ड माईल १॥, २१० श्रीगोवर्द्धन, दानघाटी वृक्ष ८०; श्रीगोवर्द्धनथी चन्द्रसरोवर रस्ता १००.

ए प्रमाणे अत्यार सुधीमां वृक्षो लाग्यां छे, हजु घणां बाकी छे, जो दरेक वैष्णवो पोतानुं, पोताना पिता, माता विगेरेना नामथी एक एक वृक्ष लगाडावे तो सहजमां ६०० वृक्ष तैयार थई जाय अने तरहटीनी सेवा थाय, वृक्षो लगाडवानुं अने तेमां व्रजभूमि अने श्रीगिरिराजजीनी पवित्र तरहटीमां पोताना तरफथी वृक्ष लागे तेनी शीतल छाया अने फल-फूल हरि, गुरु, वैष्णवो व्रजवासीओ, पशु, पंखी विगेरे अंगीकार करे एना जेवी बीजी सेवा कई होई शके ? अहींना वृक्षो शास्त्रमां भगवत्स्वरूप कहेलां छे । श्लोकः—वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुज । दोहाः—वृन्दावनके वृक्षको मरम न जाने कोय । डार पान फल फूलमें श्रीराधे राधे होय ॥

वृक्षोनुं खर्च दरेकने सरल थाय ते माटे आ प्रमाण लेवाय छेः—

शरूआतमां रुपैयो १) वृक्ष, खामणुं, कांटा विगेरेनो त्यार बाद महीनानो रु. ।) प्रमाणे पाणी सिंचाई ते पांच वर्ष सुधी लेवाय छे । पोतानी सवड प्रमाणे एक वर्ष छ महीने ते खर्च साल सालनुं मोकलाववुं । नाम लगाववा रु. ।) [साईनबोर्डना].

ठिकानाः—श्रीगिरिराज वृक्षछाया सुख समाज, जतीपुरा (पोस्ट गोवर्द्धन जिल्ला मथुरा.)

सहायता करनारानां नामः—श्रीतिलकायत श्रीनाथद्वारा, श्रीव्रजभूषणप्रभु तथा बावासाहेब श्रीविट्ठलनाथजी कांकरोली, श्रीकृष्णगढनरेश, रामबासाहेब पोरबन्दर, २१, पेटलादना दातार सेठ रमणभाईए आ कार्यने बारीक रीते तपास करी पाणीनी अडचण उनाळामां न पडे ए माटे रुपया ४००) मां लोढानी टांकी तथा बळद जोडी तथा ३०० नगद आप्या छे ।

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮.
આશ્વિન
૧૯૮૯.

શુદ્ધાદ્વૈત
અને
ભક્તિમાર્તંડ.

અંક ૭.
શ્રીવલ્લભાબ્દ
૪૫૫.

श्रीअष्टाक्षरमहामंत्रधारणप्रकार।

अष्टाक्षरमहामंत्र जो है ताके अंग और उपअंगकूं धारन करके मंत्रके स्वरूपकी भावनामें अहर्निश निमग्न रहनो आवश्यक है। कारन कि जीवकूं लौकिक वैदिक कदापि बाधा न करे और उनके जालमें न फसे, और निश्चय पुष्टिरसकी प्राप्ति होय, और पुष्टिसृष्टिको यथार्थ ज्ञान तथा अनुभव तबही जीवके हृदयारूढ होय.

अब मंत्रके अंग और उपअंगनकूं जानके कोनसे प्रकार व्यवहार करे सो लिखे हैं:—

प्रथम अंग श्रद्धा है ॥ और याको उप अंग पूर्वसंयोग रसकी जो प्राप्ति ताके अभावको दुःख ॥

अब याको व्यवहार ॥ जो जीव शरण गयो है सो क्यों गयो है? (कारनकि) जब कोई जीवकूं ऐसो महादुःखको संताप होय और वा संतापकी निवृत्ति अपने पुरुषार्थसुं नहीं होय सके, तब वा दुःखके तापसुं तपायमान होय वाकी निवृत्तिके लीये काहू महापुरुषकी शरन जाय है। तो विचारना करे के मोकूं कोनसो दुःखरूप ताप तपायमान करे हैं? जाकी निवृत्तिके लीये अपन शरन आये हे? जो कदाचित अपनकूं दुःख तो हे नहीं तो शरन जानो वृथा है। और वाकी सिद्धि तथा फलकी और कैसे आशा करे? याही कारनसुं अपनकूं कछु फलकी प्राप्ति नहीं होय है। सो हे विद्वद्वर्य अपनी शरणागतिकू सिद्ध करनेके लीये महामंत्रके प्रथम अंग रूपके स्वरूपको चिंतन करनो। वो कैसे के—हाय में पुष्टिसृष्टिको जीव हूं. भगवान्के श्रीअंगसु मेरी उत्पत्ति है। (वचसा वेदमार्गं हि पुष्टिं कायेन निश्चय. ॥ ९ ॥) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और प्रभुके ही उपयोगी मेरो शरीर है। (तस्मान्जीवा पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशय ॥ भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् ॥ १२ ॥) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और अहर्निश लीलाहीमें मेरी इंद्रिय और मनकी वृत्ति लगी रहनी चाहिए। सो याको तो अभाव है और अपने स्वरूपको भी ज्ञान नहीं है ॥ तासूं या संसाररूप महासमुद्रमें प्राप्त होय प्रभुसु दूर

होय रह्योहूं । सो हे नाथ मैं आपकी शरन हूं ॥ आपहीके संकल्पसु मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध होयंगे ॥ या प्रकार पूर्व संयोगके अभावके पूर्ण दुःखसूं तापयमान जो मैं हूं, यह भावना कर प्रभुको चिंतन करनो हे प्रभु ! मैं श्रद्धा करके आपकी शरन आयो हूं ॥ सो मेरो दुःख और तापत्रयकी निवृत्ति करवेमें केवल आप ही निश्चय करके सर्वसमर्थ हे । या प्रकारसु या बातको सतत चिंतन कर प्रभुकी सरन लेनी ये प्रथम अंग श्रद्धा और उपअंग याको मनन है ॥

॥ या प्रकार प्रथम अंग और उपअंगकी भावना संपूर्ण भई ॥

भगवान श्रीकृष्ण.

ધર્મપદાર્થ—આ જગત્ કોના આધારે સ્થિતિ કરે છે? એ બાબતનો વિચાર કરતાં જણાશે કે (૧) એક પ્રકૃતિ અને (૨) બીજો ધર્મ. પ્રકૃતિ એ જગતની રચનાનો પદાર્થ છે. જ્યારે ધર્મ એ જગત્પ્રવાહને શાન્તિપૂર્વક ચલાવનારી શક્તિ છે. સત્ય, દયા, પરોપકાર, અસ્તેય, શૌચ, ધૈર્ય, આત્મનિગ્રહ, બુદ્ધિ તથા ઇન્દ્રિયનિગ્રહ આ બધા ધર્મનાજ પ્રભેદ છે. આ બન્ને—પ્રકૃતિ અને ધર્મ—પદાર્થોની જગતને કેટલી બધી જરૂર છે, એ બાબત એ બન્નેના સ્વરૂપ-વિવેચનથીજ સ્પષ્ટ છે. આ બન્નેમાંથી એકને પણ જગતથી જૂદું કરી નાંખવામાં આવે તો સંસારની સ્વરૂપરક્ષા થવીજ અસંભવ છે. અર્થાત્ પ્રકૃતિ અને ધર્મ ઉપર સઘળો જગતનો આધાર છે. ધર્મના વિષયમાં મહારાજ મનુ પોતાના ધર્મશાસ્ત્રમાં લખે છે કે:—

न वैराज्यं न राजासीत् न दण्डो न च दाण्डिकः ।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम् ॥

"સંસારના પ્રારંભમાં ન કોઇ રાજ્ય હતું, ન રાજા હતો, ન કોઈ પ્રકારનો દણ્ડ હતો, ન કોઇ દણ્ડ દેનાર હતો. કારણ કે દરેક પ્રજા ધર્મપૂર્વક ચાલતી હતી." આ વાક્યાનુસાર વિદિત થાય છે કે પૂર્વકાલમાં કોઇ રાજા નહતો, પણ કેવલ ધર્મના આધારપરજ પ્રજા સાનંદ જીવનયાત્રા વ્યતીત કરતી હતી. ધર્મના આધારપરજ જીવનયાત્રા-નિર્વાહની રીતિ સંસાર-રચના પછી ઘણા સમય સુધી અબાધિત રૂપથી ચાલુ રહી હતી. અને કોઈ ગવર્નમેન્ટની આવશ્યકતા તે વખતે પડી નહતી. પરન્તુ જેમ જેમ અધિક સમય વ્યતીત થતો ગયો તેમ તેમ પ્રજાના ચિત્તમાં કંઇક કંઇક સ્વાર્થ પ્રવેશવા લાગ્યો અને તે સ્વાર્થેજ ધાર્મિક બન્ધનોને શિથિલ કરવા માંડયા. જેના પરિણામે એક મનુષ્ય બીજાના સ્વાતન્ત્ર્યનું હરણ કરવા લાગ્યો અને અન્યને ગુલામ બનાવવો એજ મનુષ્યકર્તવ્ય સમજવા લાગ્યો.

રાજ્યસ્થાપના—વિચાર કરતાં સમજી શકાય છે કે આ પ્રકારની અન્ધેર દશામાં પ્રજા કયે પ્રકારે સુખી રહી શકે? અતઃ તે સમયની પ્રજાએ પરામર્શ કરી એક નિશ્ચય કર્યો કે એક રાજ્યની સ્થાપના થવી જોઇએ અને તે રાજ્યનો નિર્વાહ બરોબર થાય એટલા માટે પ્રજાનુમોદિત એક ધાર્મિક રાજા હોવો જોઇએ અને તે રાજાને અધિકાર હોવો જોઇએ કે તે ધર્મવિરુદ્ધ ચાલનાર અધર્મી લોકોને દણ્ડ દઇ ધર્મમાર્ગપર ચલાવે કે જેથી કોઇ સબળ મનુષ્ય કોઇ નિર્બળને બળપૂર્વક ગુલામ બનાવી ન શકે. આ નિશ્ચયાનુસાર પ્રજાનુમોદિત તથા ધાર્મિક પુરુષોને રાજા બનાવવામાં આવ્યા અને દુષ્ટોને શાસન કરવા આવશ્યક તમામ અધિકાર પણ તેને આપવામાં આવ્યા. અર્થાત્ ધર્મને સુરક્ષિત રાખવા માટેજ રાજનીતિનો જન્મ થયો. પ્રાચીન સમયમાં રાજનીતિનું આવું સ્વરૂપ તથા ધ્યેય સમજનારા અને તે પ્રમાણે રાજ કરનારા અનેક રાજાઓ થઇ ગયા છે. તેમાં મહારાજા સગરનું નામ પણ ઉલ્લેખનીય છે. મહારાજા સગરને સ્વપ્નમાં પણ 'પ્રજા મારા માટે છે' એવી કુબુદ્ધિ થઇ નહતી. એનો પ્રબલ પુરાવો આપણને મળે છે કે મહારાજા સગરનો પુત્ર અસમંજસ દુષ્સંગતને લીધે ઉચ્છૃંખલ બની ગયો હતો અને પ્રજાના બાળકોને પાણીમાં ડુબાડતો હતો. થોડો સમય તો પ્રજાએ રાજકુમાર સમજી તેના અત્યાચારોને સહન કર્યો પણ જ્યારે અતિ થઇ ગઇ ત્યારે સમસ્ત પ્રજાએ મહારાજાની પાસે જઇ પ્રાર્થના કરી. પ્રજાદ્વારા પોતાના પુત્રના દુષ્કૃત્ય કાર્યને સાંભળીને મહારાજાએ પુત્રમોહને દૂર કરી 'હું પ્રજા કરતાં મારા પુત્ર અથવા સ્ત્રી વગેરેને પ્રિય માનતો નથી.' એમ પ્રજા આગળ જાહેર કરી પોતાના પ્રિય પુત્રને દેશનિકાલની કઠિન સજા ફરમાવી દીધી. અને પ્રજાને બતલાવી આપ્યું

મધ્યરાત્રિએ પોતે સોમવંશમાં જન્મ ગ્રહણ કરનાર હોવાથી ચંદ્રનું જ્યારે કિરણ કુરતાં હતું તેવે ખાનામાં વસુદેવજીને ત્યાં પ્રકટ થઇ ગયા. એને પ્રકટ શું થવાનું હતું? પોતે તો સર્વત્ર પ્રકટજ છે પણ પોતાની માયાને લઇને આપણે તેનાં દર્શન કરી શકતા ન હતા, એટલે વસુદેવદેવકીજીની સમક્ષ માયાનો પડદો દૂર કરી દીધો અને તે બન્નેને પોતે દેખાયા. અને જેલમાં જન્મ ધરી જગતની અન્દર એ પણ સિદ્ધાન્ત પ્રકટ કર્યો કે ધર્મની ખાતર જેલમાં પણ જવું પડે તો તે વખતે તે સ્થાનને જેલ ન સમજતાં મારૂં જન્મસ્થાન સમજવું. ત્યારબાદ આપ નન્દબાવાને ઘેર ગોકુલ પધાર્યા અને ગોવંશની રક્ષા કરી કે જેના કારણે ભારતનું અસ્તિત્વ સ્થિર છે અને ત્યારબાદ જુલમગાર રાજાઓનો નાશ કરી તેને સ્થાને પ્રજાહિતૈષી ધર્માત્મા રાજાઓને નિયુક્ત કરી રાજનીતિને ધર્મોદ્ધારિકા બનાવી. રાજાઓનો વધ ભગવાને એ માટે નહિં કર્યો હતો કે તે તેના દુસ્મન હતા પરન્તુ રાજનીતિ અને ધર્મ જે પ્રજાની સ્થિતિના મુખ્ય સ્તંભ છે તેનો તે રાજાઓએ દુરુપયોગ કર્યો હતો તેથી દેશ અને ધર્મના નેતા ભગવાન્ કૃષ્ણે તેનો વધ કર્યો હતો.

આ બાબતમાં ભાગવતનીજ કથા પૂરાવો આપે છે કે અવતારનું કાર્ય સમાપ્ત થતાં બ્રહ્માજીની પ્રાર્થનાથી જ્યારે ભગવાને વૈકુંઠમાં પધારવાની તૈયારી કરી ત્યારે આપે વિચાર્યું કે જે યાદવવંશદ્વારા મેં રાજાઓનો વધ કર્યો છે તે યાદવ વંશ અને તેના મ્હોટા મ્હોટા સરદાર તો હજી પૃથ્વીપર વિદ્યમાન છે અને તેઓ એમ પણ માને છે કે જરાસન્ધાદિ મ્હોટા મ્હોટા યોદ્ધાઓનો વધ તો અમેજ કર્યો છે તેથી ભગવાન્ કૃષ્ણ ભૂતલ ત્યાગ કર્યે ન્હાના રાજાઓને કેદ કરી આપણેજ ભારતના શાસક રાજા કાં ન બનીયે? આવો વિચાર ધરાવતા ઉન્મત્ત યાદવોને ભૂતલપર છોડી ચાલ્યા જવું એ તો અવતારના ઉદ્દેશથી સર્વથા વિપરીત કહેવાય. અતઃ આપે બ્રહ્મશાપ દ્વારા સ્વવંશનો પણ નાશ કરાવી પ્રજાને નિષ્કંટક બનાવી દીધી. આ પ્રસંગથી સ્પષ્ટ થાય છે કે ભગવાન્ કૃષ્ણનો અવતાર શત્રુતા કિંવા મૈત્રી મૂલક થતો નથી પણ રાજનીતિ તથા ધર્મના ઉદ્ધાર માટેજ થાય છે. તે અવતાર કોઇ વખતે અંશ કે આવેશ, કલા, વિભૂતિ, આવેશ તથા વ્યૂહરૂપે થાય છે. અને તેમાં કૃષ્ણાવતાર એ પાંચેયથી વિલક્ષણ સ્વયં પોતેજ પ્રકટ થયા છે. તેથી શ્રીભાગવતમાં કહ્યું કે एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्! અર્થાત્ કૃષ્ણ એ અવતારી સ્વરૂપ છે કે જેના અન્ય અવતારો થાય છે અને તે ગયું છે.

શ્રીહરિરાયજી.

(વ્યાખ્યાતા—સાહિત્યસુધાકર ગોસ્વામી શ્રીવ્રજનાથલાલજી બી. મહારાજ મુંબાઇ.)

શ્રીમદ્ધરિરાયચરણનું પ્રાકટ્ય સં. ૧૬૪૭ માં થયું હતું. આપશ્રી ભૂતલ ઉપર ૧૨૦ વર્ષ બિરાજ્યા તે દરમીયાન તેઓશ્રીએ સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય ઘણુંજ રચ્યું હતું. તેઓશ્રીએ એકજ જમાનામાં ગ્રન્થ લખ્યા હોય એમ જણાતું નથી, પરન્તુ પ્રયાસમ. પણ લખેલા જણાય છે. તેઓશ્રીએ શુદ્ધાદ્વૈત સિદ્ધાન્ત અને પુષ્ટિમાર્ગનું સમ્પૂર્ણ જ્ઞાન શિક્ષાપત્રોમાં ભરેલું છે. આવી રીતે પત્રોદ્વારા સામ્પ્રદાયિક જ્ઞાનનો ઉલ્લેખ કરનાર પોતેજ હતા. અને સમગ્રપત્રો ભગવજ્જ્ઞાનથી ભરેલાં હતાં વગેરે પ્રાસંગિક વિવેચન કરી તેઓશ્રીએ શ્રીહરિરાયજીપ્રણીત 'જન્મવૈફલ્ય નિરૂપણાષ્ટક' ના આધારે સમજાવ્યું હતું કે જેણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો આશ્રય કર્યો નથી, શ્રીસુબોધિનીજીના દર્શન યા શ્રવણ કરેલ નથી, અને શ્રીરાધિકાનાથ શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરી નથી તેનો જન્મ આ ભૂતલપર વ્યર્થજ છે. વગેરે સમજાવી શ્રીમદ્ધરિરાયચરણપ્રણીત 'શિક્ષાપત્ર' માંથી

તેમની દીનતાનું સારી રીતે નિરૂપણ કર્યું હતુ અને તેનો ભાવ જોતાં તેઓને શ્રીગોવર્ધનધરણનો સાક્ષાત્કાર થયેલો જણાય છે. ત્યારબાદ શ્રીહરિરાયજીવિરચિત 'શ્રીમધુરાષ્ટકતાત્પર્ય' ઉપર વિવેચન કરતા સમજાવ્યુ હતુ કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીને જે જે લીલામધ્યપાતી અનુભવો થયા તેનુ સચોટ વર્ણન શ્રીમધુરાષ્ટકની અન્દર તેમણે વર્ણવેલું છે. મધુરાષ્ટક એટલે પ્રભુના સાક્ષાત્કારનું વર્ણન એટલે તેમા માધુર્યની શી ખામી હોય ? કારણ કે પ્રભુસ્વરૂપ રસાત્મક છે તે ઉપોદ્ઘાત કર્યા પછી 'શ્રીમધુરાષ્ટકતાત્પર્ય' નામના ગ્રન્થને બરાબર ઘણીજ સારી રીતે સમજાવ્યો હતો

ત્યારબાદ તેઓશ્રીના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા ગો. શ્રીદ્વારકેશલાલજી મહોદયે પ્રાસંગિક કેટલુક વિવેચન કરી શિક્ષાપત્ર નામે વૈષ્ણવો વિશેષ કેટલા સારી રીતે તે સમજાવ્યું હતું કારણ એવુ એક પણ ઘર નહિ હોય કે જે શ્રીહરિરાયજીના શિક્ષાપત્રથી અજાણ હોય ? શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ અગાધ સમુદ્રરૂપી જે સાહિત્ય રચેલ તેમાથી જેમ સાગર તારાઓ સમુદ્રને તળીયે જઇ સમુદ્રમાથી મોતીને બહાર શોધી લાવે છે તેમ તે અગાધ સમુદ્રમા ડુબકી મારી મોતીરૂપી તાત્પર્ય સાર શ્રીહરિરાયજીએ તેમના ન્હાના ન્હાના ગ્રન્થોમા પ્રદર્શિત કરેલો છે તેમાના ગ્રન્થોમાથી 'સ્વમાર્ગીયમુક્તિદ્વૈવિધ્ય નિરૂપણ' નામક ગ્રન્થમાથી 'મુક્તિ' શબ્દને માટે જુદા જુદા મતવાળાઓ જુદો જુદો અર્થ કરે છે. જેમ કેટલાક મુક્તિ એટલે જીવને સંસારના જન્મ મરણમાથી છુટવુ એજ મુક્તિ એવો કરે છે પણ પુષ્ટિસમ્પ્રદાયવાળા આવી મુક્તિને ઇચ્છતા નથી કારણ કે તેમ થવા બાદ ઉપનિષદોમા દર્શાવ્યા પ્રમાણે શ્રુતિ ભગવતી દર્શાવે છે તે પ્રમાણે પરબ્રહ્મ, પરમાત્મા ભગવાનના આનન્દનો અનુભવ કરવાનો બાકીજ રહે છે અને તે રસનો અનુભવ તેજ પરામુક્તિ છે. જન્મ મરણનો ફેરો તો ભગવાન સાથેનો સમ્બન્ધ થતાજ છુટી જાય છે અને તેથી આવી મુક્તિને ગૌણ માનનારાઓને વિચિત્રપણ લાગે છે વગેરે તે અન્તર્ગૃહગતા અને રાસસ્થ ગોપીજનોનો દૃષ્ટાન્તો આપી જીવને ભગવત્પ્રાપ્તિરૂપી મુક્તિના લક્ષણો બહુજ સારી રીતે સમજાવ્યા હતા" વળી જીવને નાશ થાય કે પાપપુણ્યના ક્ષય વિના મુક્ત કેમ થાય તો તે પાપપુણ્યોનો ક્ષય પણ ભગવાન પોતેજ કરે છે. જેમ અન્તર્ગૃહગતાનો કામ તેમના પ્રભુ પ્રત્યે મેળાપને માટે પ્રતિબન્ધક થયો તેથી તેમને જે દુખ થયુ તેવુ દુઃખ બીજા કોઇ પણ પાપોથી થાય નહિ તેવું હતુ જેથી તે દુખથી તે પાપો ક્ષય થયા અને પ્રભુના સંયોગના આનન્દથી જે પુણ્ય હતુ તેનો પણ ક્ષય થયા વગેરે વિસ્તારથી સમજાવી પોતાનુ વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતુ

શ્રીપુરુષોત્તમજી.

(ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજીનુ વ્યાખ્યાન.)

આજના ચરિત્રનાયક શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીનું પ્રાકટ્ય વિ. સં. ૧૭૨૪ (ઇ. સ. ૧૬૬૮) મા શ્રીમદ્ગોકુલમા થયુ હતુ આપશ્રીના પિતાજીનુ નામ શ્રીપીતામ્બરજી હતું અને આપશ્રીના દિક્ષાગુરુનુ નામ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રજી હતુ અને વિદ્યાગુરુ પણ તેજ હતા પોતે બાલ્યાવસ્થામાજ ધુરંધર પંડિત હતા. અને ત્યાંજ વિદ્યાધ્યયન તથા ગ્રન્થલેખનાદિ અપૂર્વ કર્યું હતું.

તેઓશ્રીએ નવ લાખ શ્લોકો લખી પુષ્ટિમાર્ગના સાહિત્યમા અત્યધિક વૃદ્ધિ કરી હતી. આપને વિદ્યાવ્યાસંગ એટલો બધો હતો કે તેઓશ્રી પ્રવાસમા ૩૨ ગાડાઓ ભરી ગ્રન્થો રાખતા. સ્નાનમા વિરાજતી વખતે પણ સુબોધિન્યાદિ ગ્રન્થોનુ મનન ચાલુ રાખતા. તેઓશ્રી નવ લેખકોને

સાથ રાખતા અને જ્યારે જે સ્ફુરતું તે તેમને લખાવતા જતા. તેઓશ્રી એકજ સાથે ૪૫ શાસ્ત્રીય લેખો લખાવતા. એવી કુશાગ્ર બુદ્ધિ અને એવું ગંભીર પાંડિત્ય હતું.

શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીના સમકાલીન શ્રીહરિરાયચરણ ચાપાસેનીસ્થ શ્રીવિઠ્ઠલેશરાયજી થઈ ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજનું તારુણ્ય અને શ્રીહરિરાયચરણનું વાર્ધક્ય ઇતિહાસ કહે છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશરાયજી કદાચ શ્રીપુરુષોત્તમજીની વયના હોય, પરન્તુ શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિત્યલીલાપ્રવેશ ક્યારે અને કેટલી વયે કર્યો? એનો ઇતિહાસ હજુ અપૂર્ણ છે. ગોલોકવાસી ભગવદીય લલ્લુભાઇ પ્રાણવલ્લભદાસ પારેખ આદિનું કથન છે કે શ્રીપુરુષોત્તમજી ૪૫ વર્ષ ભૂતલપર બિરાજ્યા અને ગોલોકવાસી ભગવદીય શ્રીયુત તેલીવાળાનું કથન છે કે દશદિગન્તવિજયી શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીની કાર્યદિશા જોઈ તેઓશ્રીની અવસ્થા અલ્પ કલ્પવી ઠીક નથી પણ ૧૦૦ વર્ષની હોવી જોઇએ. તેઓ પોતાના મતની પુષ્ટિમાં પુષ્ટિસુધાના એક અંક 'શ્રીપુરુષોત્તમજી' એ શીર્ષકના લેખમાં જણાવે છે કે—

દિગ્વિજય કરી આવ્યા પછી શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિયતનિવાસ સુરતમાં કર્યો. સુરતમાં શ્રીબાલકૃષ્ણજીના મન્દિરમાં લગભગ શતવર્ષ બિરાજીને શ્રીબાલકૃષ્ણપ્રભુની નામસેવા અને સ્વરૂપસેવા કરી વિપ્રયોગ રસ અનુભવી નિત્યસંયોગરસ અનુભવવાને માટે સં. ૧૮૧૦ પછી અથવા છગનલાલ અમરજી શાસ્ત્રીના કહેવા પ્રમાણે સં ૧૮૨૦ પછી જે નિત્ય ગોકુલધામમાંથી ભૂતલ ઉપર પધાર્યા હતા ત્યાંજ પાછે પધારી ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજીને કેટલાક સજ્જન લ. પ્રા. પારેખ પ્રભૃતિ ૮૧ વર્ષની વયે પધારી ગયાનું જણાવે છે, પરન્તુ તે ઐતિહ્ય પ્રમાણભૂત લાગતુ નથી. ઉક્ત ઐતિહ્યના વિરુદ્ધમાં બે વાર્તા ધ્યાનમાં રાખવાની છે. પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજી સાથે પં. ગટ્ટુલાલજીનો સામ્પ્રદાયિક પુસ્તક સંગ્રહ જોવાનો લાભ મળ્યો હતો, ત્યારે એક પુસ્તક-નિબન્ધના ભાગવતાર્થપ્રકરણની દ્વાદશસ્કન્ધની કારિકા મ્હારી દૃષ્ટિએ પડી. ઉક્ત પુસ્તકથી ત્રણ વાર્તા મારા લક્ષમાં આવી (૧) એ કારિકા સં ૧૮૧૦ માં લખાયલી હતી. (૨) એ કારિકાનું પુસ્તક શ્રીપુરુષોત્તમજીનું હતું કારણ કે ગ્રન્થ ઉપર પુરુષોત્તમનામ્ એમ તે ગ્રન્થના સ્વામીનું નામ લખેલુ હતુ. અને (૩) એ કારિકાઓ સામાન્ય રીતે શ્રીમહાપ્રભુજીની કહેવાય છે તેમ નહિ કહેતાં ઉક્ત ગ્રન્થના ટીકાકાર શ્રીમત્પુરુષોત્તમજી તેને શ્રીમત્પ્રભુચરણ શ્રીગુસાંઇજીની કહે છે. પંક્તિને યોગ્ય એવી રીતે ગ્રન્થમાં સૂક્ષ્મ અક્ષરોમાં ટિપ્પણ કરેલુ હતુ. તે ઉપરથી એટલુ સિદ્ધ થયુ હતુ કે એ શ્રીપુરુષોત્તમજીનું સ્વહસ્તાક્ષરનું ટિપ્પણ તે ન હોય તો પણ એ પુસ્તક ૧૮૧૦ ના સંવતનું હોવાથી અને એ પુસ્તકના સ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજી હોવાથી સં. ૧૮૧૦ માં શ્રીપુરુષોત્તમજી ભૂતળ ઉપર બિરાજતા હતા એ સિદ્ધ થાય છે. છગનલાલ શાસ્ત્રીના અન્ત સમયે હું તેમને મળ્યો હતો. સમ્પ્રદાય સમ્બન્ધી વાત કરતાં અને ખાસ કરી શ્રીપુરુષોત્તમજી સમ્બન્ધી વાર્તા કરતા એમણે કહ્યું કે શ્રીપુરુષોત્તમજીનો સં. ૧૮૨૦ માં કાશીના વેણીભટ્ટ જોડે શાસ્ત્રાર્થ થયો હતો. જે વેણીભટ્ટના વંશજો હાલ કાશીમાં છે. આ બે વાતો ઉપરાંત શ્રીપુરુષોત્તમજીની અગાધ સાહિત્ય-પ્રવૃત્તિપ્રતિ દૃષ્ટિ કરતાં દીર્ઘજીવનના અનુમાનને પુષ્ટિ મળે છે. (પુ. સુ. પુ ૫ અં ૩, પૃ ૪૯–૫૦)

આવી રીતે બે મત છે ત્યારે એક ત્રીજો ૬૦ વર્ષની વય હતી એમ કહે છે. મ્હને તેલીવાળાનું કથન અન્યોના કરતાં ઠીક લાગે છે. શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર અકાટ્ય ઐતિહ્ય પ્રમાણોથી ભરપૂર પ્રકટ થવું જોઈએ. તેના અભાવમાં કંઇ પણ નિશ્ચય નથી થઈ શકતો.

આવા ઉત્સવો સભાઓથી માન ઉજવાયા એમ ન માની લેવું. પરન્તુ શ્રીપુરુષોત્તમજીના ઉત્સવરૂપ 'શ્રીપુરુષોત્તમગ્રન્થમાલા' પ્રક. થવી જોઇએ અને તદ્દ્વારા શ્રીપુરુષોત્તમજીના ગ્રન્થોનું

વ્યવસ્થિત મુદ્રણ અને અનુવાદોનુંએ પ્રકાશન થતું રહેવું જોઈએ. 'શ્રીપુરુષોત્તમપાઠશાળા' દ્વારા તેમના ગ્રન્થોનું પઠન-પાઠન પણ થતું જોઇએ. જો આવા રચનાત્મક કાર્યોને ક્રિયાનું સ્વરૂપ અપાય તોજ ખરો ઉત્સવ ઉજવ્યો કહેવાય. દશદિગન્તવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજીના કેટલાક ગ્રન્થરત્નોના રમ્ય નામ આ પ્રમાણે છેઃ—

(૧) ભાષ્યપ્રકાશ, (૨) સુવર્ણસૂત્ર, (૩) આવરણભંગ, (૪) સુબોધિની પ્રકાશ, (૫) પ્રસ્થાન રત્નાકર, (૬) ષોડશગ્રન્થવિવૃત્તિ, (૭) અવતારવાદાવલી. (૧) પ્રદસ્ત, (૨) પંડિતકરભિન્દિપાલ, (૩) સૃષ્ટિભેદવાદ, (૪) આવિર્ભાવ તિરોભાવવાદ, (૫) ખ્યાતિવાદ, (૬) પ્રતિબિંબવાદ, (૭) અન્ધકારવાદ, (૮) બ્રાહ્મણત્વાદિજાતિ ખણ્ડનવાદ, (૯) જીવવ્યાપકત્વખણ્ડનવાદ, (૧૦) જીવપ્રતિબિંબત્વ ખણ્ડનવાદ, (૧૧) ઊર્ધ્વપુણ્ડ્રનિર્ણયવાદ, (૧૨) તુલસીમાળાધારણવાદ, (૧૩) શંખચક્રધારણવાદ, (૧૪) મૂર્તિપૂજનવાદ, (૧૫) ખલાલપનવિધ્વંસવાદ, (૧૬) ભાગવતશંકાનિરાસવાદ, (૧૭) ઉપદેશશંકાનિરાસવાદ, (૧૮) ભક્ત્યુત્કર્ષવાદ, (૧૯) વસ્ત્રસેવાવાદ, (૨૦) ભેદાભેદવાદ, (૨૧) અભાવવાદ, (૨૨) આત્મવાદ, (૨૩) સ્વવૃત્તિવાદ, (૨૪) જયશ્રીકૃષ્ણોચ્ચારણવાદ: આ સિવાય અન્ય પણ સ્વતંત્રવાદગ્રન્થો હશે જેનો સમાવેશ વાદાવલીમાં નથી.

(૮) ઉત્સવપ્રતાન, (૯) દ્રવ્યશુદ્ધિ, (૧૦) ભક્તિહંસવિવૃત્તિ, (૧૧) ભક્તિહેતુવિવૃત્તિ, (૧૨) પૂર્વમીમાંસાભાષ્યવિવૃત્તિ, (૧૩) ન્યાસાદેશવિવૃત્તિ, (૧૪) ગાયત્રીકારિકાવિવૃત્તિ, (૧૫) વલ્લભાષ્ટકવિવરણ, (૧૬) ઉપનિષદ્સંગ્રહ, (૧૭) માંડુક્યદીપિકા, (૧૮) છાન્દોગ્યદીપિકા, (૧૯) શ્વેતાશ્વતરદીપિકા, (૨૦) અધિકરણમાલા, (૨૧) ભાવપ્રકાશિકા ઇત્યાદિ.

આવા સમર્થ સાર્વદેશિક વિદ્વાન ગ્રન્થકાર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ પંડિતમણ્ડલેશ્વર હતા એમાં સન્દેહ નથી. તેમના દિવ્ય જીવનમાંથી માત્ર સેવારસનો પ્રવાહ અને વિદ્યાદધિ ઉછળી રહ્યો છે. આજે આપણે ત્હેમનો ગુણાનુવાદ ગાઇ ઉત્સવ ઉજવી કૃતાર્થ થઇએ છીએ.

શ્રીપુરુષોત્તમજીના દિવ્ય જીવન ઉપરથી અમ્હારા લોકો માટે પ્રભુસેવા સાથે પ્રખરવિદ્યા-વિનોદ અને વિદ્યાધ્યયન સચ્ચારિત્ર્ય, પાઠન લેખનાદિ કર્તવ્યજ સ્પષ્ટ થાય છે.

(રા. રા. ચુનીલાલ પરીખનું વ્યાખ્યાન.)

આજે પરમપૂજ્ય દશદિગન્તવિજયી ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજી સત્તરમા સૈકામાં પધારી તેઓએ જે અનહદ આભાર આપણા પર કર્યો છે અને તેઓ આજે પણ સ્વહસ્તાક્ષરદ્વારા, નામસ્મૃતિદ્વારા, ગ્રન્થોદ્વારા આપની સમક્ષ બિરાજી રહેલા છે. તેવા ગોસ્વામીશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ આજના રળીઆમણા દિને આ ભૂતલપર થયેલો છે. તેમનાં ચારિત્ર્યથી આજે અઢી સદી થયાં જાણે હાલ બિરાજતા હોય નહિ તેમ સ્પષ્ટ સમજાય છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૭૨૪ ભાદ્રશુકલ એકાદશીએ થયો હતો. આપણે પણ આજનો દિન તે તિથિ હોવાથી ઉત્સવ ઉજવવા એકઠા થયા છીએ.

ઉત્સવ દિને સભાઓ ઘણી વખત ભરી છે છતાં કોઈકજ સભા વિસર્જન પછી સભામાં ઉચ્ચારાયેલ-મહાપુરુષોના ચારિત્ર્યનું મનન કરતું હશે ? ઉત્સવ ઉજવવાનું પ્રયોજન શું ? શામાટે એકઠા થવું ? તે વિચારીયે તો દીવા જેવું સ્પષ્ટ છે જે તેમના ચારિત્ર્યમાંથી જેટલું વધુમાં વધુ બને તેટલું ચારિત્ર્ય આપણા જીવનમાં ઉતારી જે મહાન્ પુરુષોએ આપણે માટે અગાધ મહેનત લઇ શ્રમ વેઠી જે સાહિત્ય આપેલ છે, તેનો ઉપયોગ કરી તેમના ઋણમાંથી મુક્ત થવુંજ જોઇએ.

આ ચારિત્ર્યોનું શ્રવણ કરી આપણી જીજ્ઞાસા પ્રદીપ્ત થાય તે માટે આપણે એકઠા થયા છીએ. જો તે જીજ્ઞાસારૂપી જ્યોત પ્રકટે નહિ તો આ સર્વ વ્યર્થજ જાય. હું આશા રાખું છું જે આજે આપની સમક્ષ ગોસ્વામી શ્રીવ્રજનાથલાલ બાવાએ અને શાસ્ત્રીજી હરિશંકરજીએ તેમની વિદ્વતા,

હવે તેમણે અગાધ શ્રમ લઇ જે સાહિત્ય આપણને આપ્યું તે શું વૃથા? શું આપણી ફરજ તે ભણવા ભણાવવાની નથી. આજથી ૫૦–૬૦ વર્ષ પહેલાંના આપણા સંપ્રદાય માટેના વિચારો જ્યારે વાંચવામાં આવે છે ત્યારે રુવે રુવું ફરકે છે કે કયાં સાહિત્યસમુદ્ર અને ક્યાં તેઓની તે માટેની અજ્ઞાનતા. હવે પ્રભુકૃપાથી આ સમય પછી ઘણાં ખરા ગ્રંથો છપાઇ બહાર પડેલા છે તો શું આપણે તે લાભ ન લઈ શકીએ? કદાચ કોઈ કહેશે જે તે માટે પ્રબંધ ક્યાં છે? ક્યાં ભણવા જઇએ? અસ્તુ. જાહેર રીતે હાલ પુરેપુરો પ્રબંધ ન હોય તેથી શું ખાનગી રીતે તો તે જાણવા, પૂરેપૂરો પ્રબંધ છેજ. જેમ અર્જુન શિષ્યસ્તેહં શાધિ એમ કહીને બે હાથ જોડી શ્રીકૃષ્ણને શરણે ગયો તો તેમને ગીતામૃત અવશ્ય મળ્યું તો આપણે પણ ગાઢ નિદ્રાનો ત્યાગ કરી અવશ્ય તે ભજનાનંદ–રસાનંદ રૂપી અમૃત મેળવવા પ્રયત્ન કરવોજ જોઇએ. મારી પોતાની ખાત્રી છે કે જો જીજ્ઞાસા થાય અને પ્રેમ હોય તો શ્રીમહાપ્રભુજી જરૂર તેની સર્વ સગવડ કરી આપે છે તેમાં જરા પણ શંક નથી અને મને આજે પણ શ્રીસુબોધિનીજી તેમના વંશજદ્વારા તેમના વચનામૃતથી સાંભળવાનું ભાગ્ય પ્રાપ્ત થયું છે–જે સ્વપ્ને પણ નહિ માનેલ તે કાર્ય પ્રત્યક્ષ અનુભવું છું, હવે એવો જમાનો નથી જે આપણાં બાળકો આંધળાની માફક તમારૂં અવલોકન કરે. હવે વિચારશૈલીનો જમાનો છે તેથી આપણી પ્રથમ ફરજ સિદ્ધાન્તો જાણવાની છે જો બાળકોને તે નાનપણથી નહિ જણાવાશે, અને તેમની શંકાઓ દૂર નહિ કરીએ તો તેઓ નાસ્તિક થશે તે દોષ આપણો પોતાનોજ છે. બાળકોનો નથી. બાળકોને ઉધ્ધતો પાસ બેસવા ન દેવો હોય, સદ્‌ગુણી બનાવવા હોય તો અવશ્ય આપણેજ સિદ્ધાન્તો જાણવા જોઇએ. રોજ પ્રભુ તેમ કરવાને આપણ સર્વને શુદ્ધ હૃદયપૂર્વક બુદ્ધિ અર્પે અને શ્રીમહાપ્રભુજી કૃપા કરી અનુગ્રહ કરી સર્વ સગવડો પૂર્ણ કરે એવું ઇચ્છી આજનું વ્યાખ્યાન સમાપ્ત કરૂં છું.

વડવાણમાં ભગવદીય ગોપાલદાસજીનું ભાષણ.

પુજ્ય વૈષ્ણવો, આજે આપણી આ સભા આજના ઉત્સવનાયક દશદિગંતવિજયી પંડિત પુરન્દર શ્રીમદ્‌ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના જન્મમહોત્સવ નિમિત્તે મળી છે. અને સાથે સાથે કવિવર ભક્તશિરોમણિ શ્રીદયારામભાઈના પણ જન્મદિન નિમિત્તે છે. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીના વંશમાં સાતમા પુરુષ છે. શ્રીમદ્‌વિઠ્ઠલનાથજી (શ્રીગુંસાઇજી) ના તૃતીય કુમાર શ્રીબાલકૃષ્ણજીના વંશમાં શ્રીપીતામ્બરજી મહારાજના આ શ્રીપુરુષોત્તમલાલજી છે. આ મહાન્ આચાર્યશ્રીનું પ્રાકટ્ય ગોકુલમાં સંવત્ ૧૭૨૪માં થયું હતું. આ આચાર્યશ્રીએ (શ્રીપુરુષોત્તમલાલજી) એ નાની ઉમરમાં વેદ વેદાન્ત સ્મૃતિઓ શાસ્ત્રનો સારો અભ્યાસ કર્યો હતો અને પોતાની લાયક ઉમર થતાં તેઓશ્રીની ગણત્રી સમર્થ પંડિતોમાં થતી હતી. આ આચાર્યશ્રીને પોતાના આદ્યગુરુ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજી અને તેમના રચેલા ગ્રંથો ઉપર ઘણોજ સ્નેહ હતો. આ આચાર્યશ્રી વિષે એવું પણ સાંભળ્યું છે જે તેઓશ્રી બાલ્યાવસ્થામાં હતા. તેઓશ્રીને પ્રથમ શાસ્ત્રોનું જ્ઞાન ન હતું. જ્યારે તેમના પિતાશ્રી પરદેશ પધાર્યા ત્યારે કોઈ પંડિત આ શ્રીપુરુષોત્તમજી સાથે વાદ કરવા માટે આવ્યો. ત્યારે પોતે શ્રીસર્વોત્તમજીનો પાઠ કરી શ્રીમહાપ્રભુજીનું સ્મરણ કરી પંડિત સાથે વાદ કરવા બેઠા અને તેમાં પંડિતને નિરુત્તર કરી પોતે વિજયી બન્યા. ત્યાર પછી શ્રીમહાપ્રભુજીએ તેમને દર્શન આપી પોતાના સઘળા ગ્રંથો વાંચવા જણાવ્યું અને તે ગ્રંથો આપશ્રીને હૃદયારૂઢ થયા અને શ્રીપુરુષોત્તમજી પંડિતાઇને પાત્ર થઈ આપશ્રીએ નિબંધ આદિ ગ્રંથોમાં ટિપ્પણ વગેરે લખીને મૂળ ગ્રંથોમાં ભળી ગયેલા અન્ય લેખોનું પૃથક્કરણ કરી બતાવ્યું હતું.

આ કામ એમણે ઘણી બારીક દષ્ટિ અને તીવ્ર બુદ્ધિથી કરેલું છે. આ શુભપરિણામને લીધે શ્રીમહાપ્રભુજીના ગ્રંથોમાં વધારો થઇ શક્યો નથી અને હવે પછી વધારો થવાનો સંભવ પણ નથી. કારણ કે અમુક ગ્રંથ શ્રીમહાપ્રભુજીનો લખેલ છે કે નહીં એવી શંકા થાય ત્યારે તેનું નિરાકરણ એ ગ્રંથ ઉપર શ્રીપુરુષોત્તમજીની ટીકા છે કે નહીં એ પ્રશ્નના નિરાકરણથી થાય છે. જો આ કાર્ય દશદિગંતવિજયી પંડિતપુરંદર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીએ કર્યું ન હોત તો આપણ વૈષ્ણવ ભારે મુશ્કેલીમાં આવી પડત. આચાર્યશ્રી વિદ્વાન કે પંડિત હતા એટલુંજ નહિ, પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની માફક એમને સેવામાં પણ ઘણોજ સ્નેહ હતો. પોતે મંગળાથી સેવામાં પ્રવેશ કરતા અને શૃંગાર આરતી સુધી રહેતા. વૈષ્ણવોમાં ભક્તિ અને જ્ઞાનનો વધારો થાય તેટલા માટે પોતે નિત્ય કથા કરતા. આ આચાર્યશ્રી ઉત્તમ વક્તા અને સમર્થ લેખક હતા. આ આચાર્યશ્રીનો વિજય દશે દિશામાં થયો હતો અને પોતે બનાવેલા ગ્રંથોમાં નવલક્ષ શ્લોક થાય છે. સુરતમાં મોટી આગના સમયમાં ઘણા ગ્રંથો બળી ગયા તેથી એમના બધાય ગ્રંથો હાથ લાગતા નથી. આ ધર્મધુરંધર આચાર્યશ્રીએ ચાર ધામની યાત્રા કરી અનેક પંડિતો સાથે વાદ કરી તેમાં પોતે વિજય મેળવ્યો હતો. આ આચાર્યશ્રી આપણા આ પુષ્ટિમાર્ગમાં બીજા દિગ્વિજયી પુરુષ થઇ ગયા છે અને આ મહાન્ આચાર્યશ્રીએ પોતાની ૬૦ વર્ષની વયે લીલાપ્રવેશ કર્યો છે. વૈષ્ણવો આ ધુરંધર આચાર્યશ્રીના ઋણી છે. આ આચાર્યશ્રી વિષે વિશેષ ઓળખાણ આપવાની જરૂરજ નજ હોય. આજે હું મારી અલ્પ બુદ્ધિઅનુસાર શ્રીગુરુદેવની કૃપાબળે આપ સમક્ષ કાંઇ બોલી રહ્યો હતો. તે પણ આ આચાર્યશ્રીની કૃપાથીજ બોલ્યો છું.

શ્રીતિલકાયિત.

(૧)

શ્રીગોવર્ધનલાલ ! ક્યહાં જઇને નિવસ્યા કહો ? વૈષ્ણવજન આધાર, શ્રીજીદ્વારતણા ધણી;

(૨)

કરુણાના ભંડાર, કરુણા કરી દેવી પરે; છોડી આ સંસાર, વિલસો છો કઈ સૃષ્ટિમાં.

(૩)

પુત્રપ્રેમને કાજ, છોડયાં શ્રીજીના ચરણ; પાછા નાચ્યા આપ, શ્રી કેરા સાન્નિધ્યમાં.

(૪)

હૃદય રડે છે આજ, સમાચાર શ્રવણે સુણી; ક્યાં વિલસો મહારાજ ! કહી ઘો, કહી ઘો આપશ્રી.

(૫)

તોડયા આશા તાર, છોડયા બન્ધન જગતનાં; નિવસ્યા શ્રીની પાસ, લીલા કરી ગયા ભૂતલે.

(૬)

શ્રીગિરિધરના બાલ, 'ગિરિધર' કેરી અંજલિ; સ્વીકારજો શિરતાજ, શ્રદ્ધાંજલિ 'સત્યપ્રિય' તણી.

"સત્યપ્રિય"

कनकाभिषेकनों अनुभव.

શુદ્ધાદ્વૈત ભક્તિમાર્તંડમાં આઠમા વર્ષના પાંચમા અંકમાં કનકાભિષેકનો લેખ શાસ્ત્રીજી જટાશંકરભાઇનો વાંચ્યો. વાંચી તે સંબંધમાં મને મારો અનુભવ પ્રકટ કરવાનું મન થઇ ગયું. જટાશંકરભાઇને કનકાભિષેક સંબંધમાં તપાસ કરવાનું કાર્ય સોંપનાર અને મને સાક્ષાત કનકાભિષેકનાં દર્શન કરાવનાર એકજ અવતારી પુરુષ છે, તે તો મારો આ અનુભવ વાંચ્યા પછી વાચક બંધુઓ જાતેજ વિચારીને તેમાંથી શોધી લેશે. લૌકિક દષ્ટિએ કામ કરાવનાર જુદો હોય ને આંતરશક્તિ પ્રેરી કામ કરાવનાર જુદો હોય એ વસ્તુ અહીં ખૂબ સમજવા જેવી છે. શુદ્ધાદ્વૈતના છઠ્ઠા (કનકાભિષેક સંબંધના લેખના) પેજ પર જે પદ આપ્યું છે તે પદની બારમી અને તેરમી તુક ભવિષ્ય વાણીની છે, તેની સાથે મારા અનુભવનો સંબંધ છે. માટે અહીં આપું છું તે બેઉ તુક અહીં હું ફરીથી આપું છું. નરસિંહ મહેતા જેમ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના વર્ણવ્યા છે ને "શ્રીવલ્લભ વિઠ્ઠલ ભૂતળે પ્રકટીને પુષ્ટિમાર્ગ ને વિશદ કરશે" ને દૈવી નિઃસાધન તણો આપ ઉદ્ધાર કરશે; એવું એક કીર્તનમાં વદે છે. આજ પ્રમાણે આ લકુડિદાસ હાલના પ્રાકટ્યનાં ચારસો વર્ષ પરના વદેલા છે એમ કહીશું તો ખોટું નહિ કહેવાય. આ લકુડિદાસ કોણ હતા તે સંબંધી અત્યારે ખુલાસો આપવામાં નહિ આવે. કારણ કે લેખ બહુ લાંબો થઇ જાય, માટે મૂળ વાત પર આવીએ.

દેવકીસુતસો વલ્લભ જન્મે મેરે અંશ કહાયો;
તબ ફિર શ્રીહરિ યમુનકૂપતે આપ પ્રકટ હોઇ જાયો. તુમ પ્રભુ ૧૨
શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય બાનિ સુનિ સકલ શિષ્ય સુખ પાયો;
દાસ લકુરિ પદરજ શિર ધરી શ્રીગુરુકે ગુન ગાયો.
પ્રભુ તુમ વલ્લભનામ ધરાયો. ૧૩

ઉપરની તુકમાં "દેવકીસુતસો વલ્લભ જન્મે" એવું જે કાવ્યમાં છે તેનો ભાવ એવો છે કે નિત્યલીલાસ્થ પંચમપીઠાધીશ્વર બાપાશ્રી દેવકીનંદનાચાર્યશ્રી તે છે. આપશ્રીનું નામ "શ્રીદેવકીનંદન" છે. આપશ્રીના કુમાર બિરાજમાન ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર શ્રી૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ને "વલ્લભ જન્મે" આ વચનનો ભાવ છે. ભવિષ્ય વાણીનું કથન આ પ્રમાણે હોવાથી એ સાતલીના યમુનાકૂપમાંથી નીકળેલી વસ્તુઓ તેમજ પ્રભુનું સ્વરૂપ અન્ય કોઇ આચાર્યશ્રી પાસે ન જતાં પોતાની પાસે પધાર્યું છે. એ સ્વરૂપ મૂળ શ્રીમહાપ્રભુજીએ મીનાક્ષી રાણીએ પુષ્ટ કરવા સેવવા આપેલું તે છે, ને એજ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું આ પ્રાકટ્ય હોવાથી ભવિષ્યવાણી પ્રમાણે પોતાને માથે પધાર્યું છે ને વસ્તુઓ પણ પોતાની પાસે આવી છે.

એ રામપ્રપન્નાચાર્યજી અથવા રાજેન્દ્રનાથજી કોણ છે, તે ખુલાસો અત્યારે નહિ આપવામાં આવે, પણ તેમની મારફતે આ વસ્તુઓ તેમજ કુવો પ્રકટ થયો તેનું કારણ પણ પ્રાચીન સંબંધે છે. જે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો, તેનું કારણ પણ પ્રાચીન છે. જેમણે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો તેમના (બેનને) હાથે સંપ્રદાયના ઘણા ગ્રંથોનો નાશ પૂર્વના જન્મોમાં થયો છે.

આની બીજી તુકમાં (તેરમીનાં) "શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય બાનિ" એ શબ્દો લખ્યા છે તેનું કારણ એ છે કે શ્રીમહાપ્રભુજીએ મ્લેચ્છોનો ઉપદ્રવ શમતાં ફરી તે વસ્તુઓની શોધ માટે ૭ માસ પ્રયત્ન કરવા છતાં હાલની માફક ભૂગોળના જ્ઞાનની શુદ્ધિ નહિ હોવાથી તે જગા સાતલીની યમુનકૂપની જડી નહિ તેથી તે બધું પોતાના પુનઃ પ્રાકટ્ય સમયે પ્રકટ થશે એવી એમાં સ્પષ્ટ

સંજ્ઞા છે, એ તેજ પ્રાકટ્ય ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર શ્રી. ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રી છે. આપશ્રી આર્ય સંસ્કૃતિના મહાન્ રક્ષક છે, ને તે કાર્ય ભવિષ્યમાં પણ આપશ્રીને જ કરે પ્રભુએ ધર્યું છે. આપશ્રીની શક્તિઓ તે કામ કરીજ રહી છે. આમાં જે સંસ્કૃત લિપિનું "विद्यानगरम् समर्पयेत" સુધીનું લખાણ છે, તે શ્રીમહાપ્રભુજી પરિક્રમામાં સાથે રાખતા કારણ કે પોતે વિદ્યાનગરમાં (વિજયનગરમાં) સર્વ ધર્મો પર દિગ્વિજય કરી શુદ્ધાદ્વૈત ભક્તિમાર્ગનું સ્થાપન કર્યું, ને તેથી કનકાભિષેક સાથે અન્ય અભિષેક થયા તેના પુરાવા તરીકે યુવરાજકુમાર પ્રમુખસેનાનિ (ભવિષ્યની કૃષ્ણદેવ રાજાની) સહી સાથેનું સર્ટિફિકેટ છે. તે સમયે સર્વત્ર ખબર આપનારાં હાલના જેવા સાધનો નહિ હોવાથી તે સાથે રાખવાથી વારંવાર કોઇને દિગ્વિજયની સાક્ષી આપવાની જરૂર ન પડે, માટે સાથે રાખવામાં આવતું. તે ઉપરણને શીવે રૂપમાં પધરાવી દીધું ને પોતે ઉપરણ રામતાં લઈ જવાનો નિર્ણય કરેલો પણ ભવિષ્યના પુનઃ પ્રાકટ્યના પુરાવા માટે તે જગા પ્રભુએ ન દેખાડી ને તે વસ્તુ સ્પષ્ટ આપણે અત્યારે અનુભવી રહ્યા છીએ.

યુવરાજોને પહેલાં ને આજે પણ યુદ્ધની તાલીમો આપવા માટે મોટા લશ્કરી હોદ્દા પર સ્થાપન કરવામાં આવે છે. તેમ યુવરાજ કૃષ્ણદેવને સેનાનિ તરીકે સ્થાપન કરવામાં આવ્યા હતા કે પોતાના પિતા વીર નૃસિંહના સદ્ગત થયા પછી ગાદી પર આવ્યા. વીરનૃસિંહ તે ધાર્મિક વિજયના વાદવિવાદને સમયે તથા કનકાભિષેક સમયે સખ્ત બીમાર હતા, તેથી યુવરાજ કૃષ્ણદેવને હાથે કનકાભિષેક સ્નાન કરાવ્યું, પણ એથી વીરનૃસિંહને સંતોષ ન થયો તેથી નિમણે બીજે દિવસે પોતાની અર્ધાંગના મીનાક્ષીને હાથે રજતસ્નાન (રજત અભિષેક) કરાવ્યું. એ નિત્ય વિજયના પુરાવા માટે સાતેય દિવસ જુદી જુદી વસ્તુઓથી અભિષેક સ્નાન કરાવ્યું. જેમ પ્રભુએ સાત દિવસ ગિરિરાજ ધારણ કર્યો, તે માત્ર જ દિવસ નહિ; પણ અઠવાડિયાના દિવસ સાત વાર છે તે નિત્ય છે તેથી ભાવ એવો છે કે સાત દિવસ એટલે સાત વાર જેમ નિત્ય છે તેમ પ્રભુ સાતેય વારે નિત્ય ગિરિરાજ ધારણ કરે છે, તેથી ગિરિરાજધરણની લીલા નિત્ય હોવાથી આપણે શ્રીગિરિરાજધરણ કી જય હમેશાં બોલીએ છીએ. આમ કનકાભિષેક સાથે રજત અભિષેક વગેરે સાથે સાત અભિષેક કરાવ્યા તે શ્રીમહાપ્રભુજીના નિત્ય વિજય માટેનું નિશાન છે. ત્રૈકાલાબાધિત જય દર્શાવે છે.

મારો સાક્ષાત અનુભવ ખાસ નજરે જોએલો.

આ કનકાભિષેક મેં નજરે જોયો છે. તે હું કહું છું. અહીં જેટલું જરૂરી છે તેટલું આપું છું.

બિરાજમાન ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર શ્રી ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કે જે શ્રીમહાપ્રભુજીનું પુનઃ પ્રાકટ્ય છે તેઓશ્રીનો વૈશાક સુ. ૭ નો પ્રાકટ્યદિવસ હતો. તે મનોરથ કરવા પોતાની પાસે ગયો. આગલે દિવસે રથયાત્રા હતી. તેથી રથયાત્રાના ઉત્સવથી પરવારી આપશ્રી ગાદીપર બિરાજ્યા. આ વખતે આપશ્રીને હું પંખો કરતો હતો, આપશ્રીએ પોતાના ચરણારવિંદ બગલમાં તકીઆ તરફ માગ તરફ લાંબા કર્યા એટલે હું ચરણારવિંદના ચિન્હ નિરખવા લાગ્યો. ચિંતન મને બધાં શ્રીગુસાંઈજીના ચરણારવિંદનાંજ મને દર્શન થયાં. પછી પોતાની પોનીમાં મારી દૃષ્ટિ ગઇ. આ વખતે આપશ્રીના ચરણારવિંદની પાનીમાં મને સૂર્ય સમાન તેજ દેખાયું. આ તેજ મારી દૃષ્ટિમાં (ચક્ષુમાં) જેમ સૂર્યનાં કિરણ પડે તેમ પડ્યું. મને મારી દૃષ્ટિ તુરત બદલાયલી લાગી. પોતાનું અંગ નિરખું છું તો સાક્ષાત શ્રીમહાપ્રભુજીનાં મને દર્શન થયાં. શ્રીઅંગ તદ્દન કૃષ્ણ-શ્યામ દર્શનમાં આવ્યું. વીસ મિનીટ આ દર્શન થયાં. પછી પાછું શ્રીગુસાંઇજી સ્વરૂપ નિરખવામાં આવ્યું.

આ પછી ચોથી વાર પછી આપશ્રીએ મને શ્રીગોકુલેશ સ્વરૂપે દર્શન આપ્યાં ને છેવટે જાણે શ્રીહરિરાયજી સાક્ષાત બિરાજ્યા હોય તેવાં દર્શન થયાં. આમ સવા કલાકમાં આ બધું બની ગયું. આપશ્રીના શ્રીઅંગનો વર્ણ (રંગ) શ્યામ છે, તે વર્ણ શ્રીમહાપ્રભુજીના શ્રીઅંગનો વર્ણ છે, છે શ્રીઅંગનો દેખાવ ને અંગ સાક્ષાત શ્રીગુસાંઇજી છે. પછી રાતના હું સુતેલો ત્યાં આની આ ઠેકાણા વગરની દશામાં મને સાક્ષાત શ્રીમહાપ્રભુજીની ઝાંખી થઈ તેમાં આપશ્રી જાણે પાંચ વર્ષના બિરાજ્યા છે ને પાસે લક્ષ્મણભટ્ટજી શ્રીગીતાજીનો અરાટમો અધ્યાય વાંચે છે ને સંસ્કૃતમાં તેના અર્થનો ભાવ વિચારે છે, તેમાં "સર્વધર્માન્પરિત્યજ્ય મામેકં શરણં વ્રજ, અહંત્વા સર્વ પાપેભ્યો મોક્ષયિષ્યામિ મા શુચઃ" આ શ્લોક વિચારતાં શ્રીમહાપ્રભુજી લક્ષ્મણભટ્ટજીને સંસ્કૃત ટીકા સમજતાં ભૂલ બતાવી ન્યાસાદેશ ગ્રંથ સમજાવે છે. લક્ષ્મણભટ્ટજી સંસ્કૃતમાં સમર્થ વિદ્વાન હતા. આ દશ્ય મે બોલતી સીનેમાની ફીલમની પેઠેજ જોયું અને સાંભળ્યું ને શ્રીમહાપ્રભુજીએ આ શ્લોક સમજાવ્યો તે પણ મેં પાસે બેસીને જાણીને સાંભળ્યો.

પછી એકલા કનકાભિષેકની મને ઝાંખી થઇ તેમાં મેં એક મોટી સુવર્ણની કથરોટ જોઈ. આ કથરોટમાં કોઇ કોઈ જગાએ હીરા વગેરે નંગ જડેલાં હતાં, તેની અંદર મેં સુવર્ણના ચાર છોટા પણ સુંદર હાથી જોયા. આ ચાર હાથી પર ચાર સુવર્ણની પુતળીઓ હતી, તે દરેક પુતળીને ચાર ચાર હાથ હતા. બે હાથમાં કનકાભિષેકના સિંહાસનના પાયા હતા ને બીજા બે હાથ વિજેતાને જોડેલા હતા. સિંહાસનના પાયા પુતળીઓના હાથમાં હોઈ તે સિંહાસનપર શ્રીમહાપ્રભુજી બિરાજેલા હતા. આ શ્રીની કિશોરઅવસ્થા હોઈ સુંદરતાનો પાર નહોતો. કૃષ્ણદેવને મેં અત્તર ફુલેલાદિથી અભ્યંગ કરાવતાં નિરખ્યા, ને પછી સુવર્ણ કલશથી કેસરસ્નાન કરાવ્યું. આજુબાજુ "શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજકી જય" એવા ઘોષ પ્રફુલિત ચિત્તે સર્વે ખૂબ ઉમળકાથી બોલતાં સંભળાતા હતા. શ્રીમહાપ્રભુજીના સુંદર સ્વરૂપમાં મારૂં ચિત્ત પ્રવેશી જવાથી કનકાસન અને અભ્યંગ સ્નાન કરાવનાર સિવાય બીજું ન જોવાયું. પણ જયઘોષ ખૂબ સંભળાતા. બીજા અભિષેક મેં નથી જોયા, પત્ર ઉપરથી રજત અભિષેકની વાત આવી ત્યારે મને તે સમયની વિશેષ સુધ આવી. અને દશ્યનો કેટલોક ઉકેલ પણ પડ્યો. આ બાબત મેં મારા એક બે સુરતી વૈષ્ણવોને બારેક માસ પર ખાનગી રીતે લખી હતી. અને આજે જ્યારે કનકાભિષેકને માટે ખૂબ ચર્ચા બુદ્ધિવાદે થઇ, પણ તેથી કંઇ તેનો અંત આવે નહિ એટલે મેં મૌન ધારણ કર્યું પણ જ્યારે સાવલીના યમુનકૃપનો સંસ્કૃત લેખ ને આ ભવિષ્યકીર્તન વાંચ્યું એટલે મને તે સંબંધી સ્પષ્ટ ખુલાસો કરવાની આકાંક્ષા થઈ. કનકાભિષેક થયાની વાત માનનારાને તો કંઈ શંકા થવાનીજ નથી, પણ નથી માનનારા તે તો નજરે દેખશે તો પણ નંહિજ માને. માટે જે વસ્તુ સત્ય છે તેને પુરાવાની જરૂર નથી. અને અનુભવની વાતને પુરાવાની શી જરૂર છે? મિસરી ગળી છે પછી તેને ચાખ્યા પછી તેને માટે ગ્રંથોમાં ગળી છે એવું લખ્યું હોય કે ન લખ્યું હોય પણ ચાખનાર તો તે જાણેજ છે કે મિસરી ગળી છે. એક વાર એક વૈષ્ણવે શ્રીવલ્લભ (ચોથા લાલજી શ્રીગુસાંઇજીના) ને કહ્યું કે રાજ, શ્રીમહાપ્રભુજીને શ્રીગુસાંઇજી શ્રીકૃષ્ણ છે એવું પ્રાચીન ગ્રંથોમાં લખાણ છે. આ વખતે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે લખાણ પ્રાચીન ગ્રંથોનું હોય કે ન હોય પણ જે વાતો નજરના અનુભવની છે, તેને પ્રમાણની શી જરૂર છે?

શ્રીમહાપ્રભુના સિદ્ધાંતો એ વાતો વિશાળ છે કે એક વાર આખું જગત તે માન્ય કરશે. અનુભવગમ્ય તે વસ્તુ છે. માટે તર્કથી અલૌકિક બાબતો વિચારવી તે એક મહાન્ અન્યાય છે. શ્રદ્ધા ને અનુભવ એજ એજ સાધન અલૌકિક બાબતો વાંચી શકે છે.

આ ભવિષ્ય વાણીનું કીર્તન આ સંપ્રદાયના અનુયાયીનું મોકલેલું નથી. પણ મહાત્મા અમીધર-પ્રસાદજી અન્ય સંપ્રદાયના છે, એટલે તે બાબતમાં કોઈ પણ પ્રકારની શંકા ઉદ્‌ભવવાને પણ સ્થાન નથી. પ્રભુની સાર્વત્રિક શક્તિ સર્વત્ર આ વિશ્વમાં બેસી રહી છે ને તેથી શ્રીમહાપ્રભુજી જગતને સત્ય અનુભવાવે છે. એ સિદ્ધાંત ત્રિકાલાબાધિત ધાર્મિક ગ્રંથાદિકને પૂર્વાપરના સંબંધે તપાસતાં સ્પષ્ટ જણાય છે, પણ જેના હૃદયમાં કૃપા કરીને શ્રીમહાપ્રભુજી ઉતરે તેનેજ આ વસ્તુ અનુભવમાં આવે છે.

દીનકિંકર.

[આવા અલૌકિક અનુભવો આલેખનાર દીનકિંકરે મારા પર નોટીસ મોકલાવી છે અને કોર્ટમાં મારી સામે ફોજદારી પગલાં ભરવાની દમદાટી આપી છે. આ પણ પ્રભુનું લીલા-વૈચિત્ર્ય નહિ તો બીજું શું ? કદાચ શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા આપી હશે ! તંત્રી.]

जनता जनार्दन !

(લી. ધીરજલાલ પરમાનંદ શેઠ–' અનૂપ ' મુંબઇ)

જનતારૂપી જનાર્દન સાચા, તે ' જનદેવ ' ને પાય નમું;
' એક પ્રભુનાં બાલ સર્વ છે ' એ સમભાવના ચિત્ત ધરું.
વસે-દેવ જે મન્દિરમાં, તે અખિલ વિશ્વમાં દેખી રહું;
સર્વભૂતસ્થિત પ્રભુ સેવીને જીવન માહરૂં ધન્ય કરું.

દેખી ન શકું, પ્રભુ ! દુઃખ દુઃખીયાનાં, દુઃખ ટાળવા શક્તિ ચહું;
ત્હારાં બાળ, ને મુજ બન્ધુ સમ, વિશ્વજનોનું શુભ ચહું.
[1]દુઃખ ટળે દુઃખ તપ્તોનાં તો મુક્તિનો નવ લોભ ધરું;
જનસેવા અને યત્કિંચિત, તે ધ્રુવ-પદ મોક્ષનું ભાન ધરું.

[2]' સેવા ધર્મ પરમ ગહન છે ' સંત જનો એમ વાણી વદે;
ગહન માર્ગનો પથિક થાવા ઓ પ્રભુ તું મુજને બળ દે !
તુજ કૃપાથી, કંટક-વેર્યો-માર્ગ, પુષ્પ-મય બની રહે;
તેમ છતાં યદિ ખૂમે જ કંટક તોયે તે સુખરૂપ ખરે !

પ્રજાળતાંય સુગંધ પ્રસરાવે, ચંદન એવા ગુણ ધરે;
જળી આપ, ને તિમિર નિવારે પરોપકારી દીપ ખરે !
' સુગંધ ધરતાં ચુંટશે લોકો ' કહી, ન ખીલે શુ પુષ્પ અરે !
' અનૂપ ' કહે જે જીવે પરાર્થે ત્હેને મુક્તિ વરેજ વરે !

[આ કાવ્યના લેખક રા. ધીરજલાલ પા. શેઠ. ' અનૂપ ' ઉદ્દવી (શ્રીસ્વામીનારાયણ) સમ્પ્રદાયના એક આદર્શવાદી અને સુસંસ્કારી યુવક છે. ત્હેમણે પોતાના જીવનમાં ધાર્મિકભાવના ખીલવી છે એટલુંજ નહિ પણ ત્હેને વિશેષ સુપલ્લવિત કરવા અને પોતાના જીવનમાં ઉતારવા, સસ્તાસાહિત્ય વાચન અભ્યાસની દૃષ્ટિએ અવલોકી ત્હેમાંથી સાર ગ્રહણ કરી, પોતાના જીવનને ઉજ્વલ બનાવી રહ્યા છે. તેઓ સાદા, સરળ, ઉત્સાહી અને સદ્‌ભાવનાશીલ છે એટલુંજ નહિ પણ ધાર્મિક, સામાજીક પ્રભૃતિસત્સાહિત્ય પ્રતિ અભિરુચિ ધરાવનારા છે. ઇશ્વરે તેમને કાવ્ય પ્રણયન શક્તિ પ્રદાન કરેલી હોવાથી તેઓ કેટલીકવાર, પ્રાસંગિક અનુવાદિત કે પ્રતિકાવ્યાદિ લખી ' અનૂપ ' ના નામથી સામયિકોમાં પ્રકાશનાર્થે મોકલે છે.]

---

1. कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्। 2 सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।

કે અલી ચંદ્રાવલી તું ભાન સાંન મુકીને તો આજે નથી આવી! હા, ખરેખર તું આજે આંધળીજ થઈ છે, તારા હસ્તમાં પકડેલો કોણ છે? તે તો જરા નિહાળીને જો! મારો બાલકૃષ્ણ તો મારી પાસેથી આજે કંઇ પણ ગયેલો નથી! અને મારી ગોદમાં બેઠેલો છે. તું તારા પુત્રને પકડી લાવી છે તે પણ જોતી નથી! હર વખત તમો મુર્ખીઓ મારા ભોળા બાળકને વગોવો છો! ક્યાં પાંચ વરસનો મારો બાળકૃષ્ણ ને ક્યાં તમો આધેડ વયતી વ્રજલલનાઓ! તમને આવા જુઠાં આળ મુકતાં શરમ પણ નથી આવતી કે શું! બીચારી ચંદ્રાવલીજી મહામુશીબને નેત્ર વિકાસીને પોતાના હાથમાં પકડેલા પોતાનાજ શ્રીદામાને જોતાં ખસીઆણાં પડી ગયાં! સર્વ ગોપીજનો મનમાં બોલ્યાં કે હે શ્યામ! તારી લીલાની બલીહારી છે! ગોપીજનો ચંદ્રાવલીની ઠઠ્ઠામશ્કરી કરી આનંદ કરવા લાગ્યાં ને બાળ પ્રભુ પણ સર્વ સખા તરફ જોઇ હાસ્ય વિનોદ કરવા લાગ્યા. સુરદાસજી ગાય છે કેઃ—

માખન કી ચોરી છોડ કનૈયા મેં સમજાવું તોય, મેં સમજાવું તોય કનૈયા મેં સમજાવું તોય. (૧)
નવ લાખ ધેનુ નંદ બાબાકે ઘર નિત્ય નયો માખણ હોય, જો ચાહે સો લેઓ મેરે લૈયા હાંસી હમારી હોય.૨
બરસાનેસે આઈ સગાઈ તેરી નિત્ય નઇ ચર્ચા હોય, બડે ઘરનકી રાજ દુલારી નામ ધરેગી તોય. (૩)
ગોપીનકે સંગ ગાય ચરાઈ ગયો કદમ તરસોય, કાહુ ગ્વાલ સો મેલ મીલ્યો હે મેરી ગઈ કામરીયાં ખોય.(૪)
ના છોડુ માખનકી ચોરી હોની હોય સો હોય, સુરસ્યામ જસોમતી કે આગે દિયો નેન ભર રોય. (૫)

અહા! જે કોટિ બ્રહ્માંડનો કર્તા હોઈ જે વ્રજનો નાથ છે! જેની પલક માત્રથી કાળ પણ ભય પામે છે, ને જેના ભયે દેવ, સૂર્ય, ચંદ્ર, વાયુ, અગ્નિ સર્વ પોતપોતાનું નિયત કરેલું કાર્ય કરે જાય છે. શિવ, બ્રહ્મા, નારદાદિક જેના ચરણકમળમાં અહર્નિશ ધ્યાન મગ્ન રહે છે, ને જેનાં દર્શન દેવમુનિઓને પણ દુર્લભ છે, એવા પ્રભુ હોવા છતા તે ભક્તવત્સલ હોવાથી ભક્તોને આનંદ આપવા માટે વ્રજ બાળકો, ગોપીજનો સર્વ વ્રજવાસીઓ સામે આનંદમા રમણ કરી પ્રેમબંધને પ્રત્યક્ષ દર્શન સ્પર્શ સુખ આપી રહેલા હતા! ધન્ય છે એ વ્રજવાસીઓને કે જે પ્રભુ વ્રજજનો પાસે પ્રત્યક્ષ માખણ જેવી વસ્તુ નહીં માગતાં તેઓના ઉપર કૃપા કરવા લૈકિક ચોરની પદવી પ્રાપ્ત કરી માખણ ચોર જેવી અનેક બાલલીલાઓ કરી ભક્તોને પરમાનંદ સુખમાં રસલુબ્ધ કરી રહેલા, એજ પ્રભુનું ભક્તાધીન પણું બતાવી આપે છે. રાજા દુર્યોધનનો છપન્ન ભોગ ત્યાગીને વિદુરપત્નીએ ફેંકેલા કેળાનાં છોડાં જ ફક્ત પ્રભુ ઘણા પ્રેમે આરોગ્યા, એ શું બતાવે છે! ફક્ત પ્રભુ ભક્તના પ્રેમભાવને જ વશ છે. પ્રભુ શ્રી મુખે કહે છે કે. "હું નથી વસતો યોગી તપસ્વી કે વૈકુંઠધામમા પણ મારો જે પરમ પ્રિય પ્રેમાર્દ્ર ભક્ત છે તેના હૃદય મંદિરમાં જ હું બિરાજું છું. ભક્ત મને અનિશય પ્રિય છે." અલૌકિક પ્રેમ એજ પ્રભુનું સ્વરૂપ છે, આ સર્વ તેના કૃપાબળે જ પ્રાપ્ત થાય છે. અને જ્યારે પ્રભુની કૃપા થાય છે ત્યારે જીવ ગમે તેવી માયામાં લુબ્ધ બનેલો હોય છતા તે પોતે તેને પોતાના ચરણમાં રાખે છે. ફક્ત જીવનું કંઇ સાધન ખપમાં આવતું નથી. પ્રભુ સ્વમુખે આજ્ઞા કરે છે કે "પોતાના કૃપાપાત્ર ભક્તનું, ચિત્ત પોતાનામાં રહેવા માટે તેનું સર્વ લૌકિક સંસારકાર્ય હું બગાડું છું, ધનમાં ચિત્ત હોય તો ધન હરી લઉં છુ, પુત્રમાં ચિત્ત હોય છે, તેનો લય કરૂં છું, તેમજ તેની લૌકિક વસ્તુમા વિશેષ આસક્તિ હોય છે તે તમામ પ્રિય વસ્તુને હું હરી લઉં છું, અને એ રીતે ભક્તના ચિત્તનો નિરોધ મારામાં કરૂં છું" એટલા માટે જ "જે ગોપીજનો અબળાઓ હતાં પણ પ્રભુમાં અનન્ય નિષ્કામ પ્રેમવાળાં હોવાથી તેઓનું ચિત્ત ગૃહ સંસારમાં મગ્ન ન રહે તે માટે શ્રીકૃષ્ણ ચોરી કરી નવનીત આરોગી તેમ દરેક પ્રકારે હેરાન કરી તે દ્વારા અહર્નિશ તેઓના ચિત્તનો નિરોધ

પોતાનામાં નિયુક્ત કરતા હતા." અને લૌકિક દ્રષ્ટિએ જ્યુવો માખણ ચોર તે વિચિત્ર ચોર છે! કારણ તે માખણ ચોર નહિ પણ "શ્રીગોપીજનોનું જે માખણ રૂપી મન હરણ તે ચોરી તેઓને કૃપાદ્વારા પોતાનામાં નિરોધ સિદ્ધ કરતા હતા." આવી આહીરના બાળકરૂપે કરેલી અનેક આવલીલા તેમજ નિર્દોષ રાસલીલાને લૌકિક દ્રષ્ટિથી પીળાં ચશ્માં ચઢાવી દોષરૂપ જોતા અજ્ઞાનીઓ શ્રીકૃષ્ણને ભલે અન્ય રૂપે દેખે પણ "જ્ઞાની ભક્ત જનના તો તે શ્રીવ્રજવિહારી બાળપ્રભુ સાક્ષાત્ અલૌકનાથ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર છે."



क्य्हारे ?

૧.

વ્યાપી છે નિરાશા બધે, મળતો સુપન્થ નહિ; લૂટ તો ચલાવી રહ્યા, લોભ, મોહ, ક્રોધ, કામ,
પૂર્વ-જ્ઞાન દીપક થયો છે મન્દ ધૂમ સમ; પશ્ચિમી પવન જ્ઞાન ચાલી રહ્યો અભિરામ
દીન હીન નિજ દેશમાં ન લવલેશ સુખ; પેનુ વંશ નાશ થઈ રહ્યો દીનબન્ધુ! શ્યામ!
લેશો સુધિ ક્યહારે હે અનાથના સનાથ નાથ! દેશો ક્યહારે જીવન નવીન પુનઃ પુણ્ય ધામ!

૨.

વ્રજ-રજમાં આળોટી, જીવન સફલ કરી; વૃન્દાવન વિપન સમોદ વિચરશો ક્યહારે!
યમુના પુલિનમાં સુસ્નેહથી પોકાર કરી, માનસ પટલ મુગ્નેલ ઉઘાડશો ક્યહારે!
ગીતા-જ્ઞાનરસની પીપાસા તૃષ્ણાની તીવ્ર; પધારી શ્રીમાધવપ્રભુ! મોહને હરશો ક્યહારે!
ઉદ્ધવની પાસે ગોપીઓનો પ્રેમ-યોગ ભણી; આંસુઓથી ભવસને નીરસ કરશો ક્યહારે!—

સ. ગિરધરલાલ જ. શાહ. મુંબઈ.

शरद् चंद्र.

શાન્ત સુન્દર રજની આ, રસરાજ અનન્ત દેશનો
વ્રજરાજ વૃંદાવનમહીં, રસકુંજ માંહી બેસનો. ૧
રસગાન સુન્દર આદર્યું, વેણુ તણા ઝણકારમાં;
ભર ઊંઘમાંથી ઝબકી ઉઠી, રાચી રહ્યા એ તાનમાં. ૨
પશુ પક્ષીઓ કલરવ કરે, મુગ્ધ થઈ એ નાદમાં;
વ્રજનાર મન્મથ મારવા, નિમંત્રી મોહક સાદમાં. ૩

રણછોડલાલ કેશવલાલ પારેખ.

ચર્ચાપત્રો.

૧. તમસ્છન્ન તંત્રીની દ્રષ્ટિ.

'પુષ્ટિપીયૂષ" પા. ૬૮ ઠામવનમાં પાઠશાળા એ મથાળા નીચે હરિશંકર શાસ્ત્રીએ તોછડી ભાષામાં ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર મહારાજશ્રી તરફ જે કટાક્ષ કર્યો છે, તે માટે વૈષ્ણવોની લાગણી દુખાઈ છે તેના જવાબમાં નીચેની હકીકત આપના માસિકમાં પ્રકટ કરશો. ઉક્ત શાસ્ત્રીજી મહિમામહિની દફતરમાં શાસ્ત્રીજી વસંતરામ તરફનો ગુસ્સો કાઢી, મહારાજશ્રીને અધ્યયન કરી સંસ્કૃતમાં ભાષણ કરવા દર્શાવે છે. એ પોતાની મહાન પંડિતાઈની તિમિર ભરેલી દ્રષ્ટિના કારણ સિવાય બીજું શું હોઈ શકે? અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં તો "જોલોં હરિ આપનપો ન જનાવે તોલોં સકલ સિદ્ધાંત મારગકે પઢે સુને નહીં આવે" એ પદ શાસ્ત્રી આંખો ઉઘાડીને જોઈ જશે તો જણાશે કે આ કૃપામાર્ગમાં તો એક સાધારણ વૈષ્ણવ પણ તમારી સંસ્કૃતની ગોખી પહોંચેલી પંડિતાઈનો મદ પણ કૃપાબળથી સહેજમાં ઉતારી શકે છે, તો શ્રીવલ્લભકુળનાં બાળક તરફ કટાક્ષ કરવામાં તમારી વિદ્વતાનો આડંબર જણાવો છો, પણ સૂર્ય સામે ધૂળ નાખવાથી કંઈ વળવાનું નથી. માટે પંડિતાઈનો ઉપયોગ વસંતરામ શાસ્ત્રી સામે ચલાવો તો તમને જવાબ પણ મળે.

અક્ષી મ. હ.

"આસેતુહિમાચલ પંડિત" તંત્રીજી અને પ્રકાશકે જે નોંધ લખી અને પ્રકટ કરી, તે વિષે શ્રીયુત બદ્રીદત્તનું ઉપરનું ચર્ચાપત્ર છે. એ નોંધ કેવળ અશિષ્ટતાપૂર્ણ તથા દ્વેષપૂર્ણ છે, કેમ કે "આસેતુહિમાચલ પંડિત" ચારેક શ્રીગોસ્વામી બાળકો પાસે રહી આવ્યા, પણ તેમના સહવાસથી કેટલા સંસ્કૃત ભાષામાં વ્યાખ્યાતા થયા તે તો જાણીતી વાત છે. છતાં આખરે "આસેતુહિમાચલ પંડિત" ની આંખો ઉઘડી છે અને એવી ગંદી નોંધ પોતાના માસિકમાં પ્રકટ થતાં બદલ શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજની લેખી માફી તથા રૂબરૂ ક્ષમયાચના કરવાનું તેમને સવેળા સૂઝ્યું છે. એટલે આ ચર્ચા અહીંથીજ અટકે છે

તંત્રી.

૨. લંપટજયંતી કે ગુંડા-શતાબ્દિ.

આજે કેટલાક ગુજરાતીઓ અને સાક્ષરો કવિ નર્મદની 'શતાબ્દી' ગાંડા બની જઈ ઉજવી રહ્યા છે. તેનું શું કારણ હશે? તે સમજાતું નથી. કવિ નર્મદના ગ્રન્થો જોતાં એ મહાન્ નિંદક નાસ્તિક હતો એ સ્પષ્ટ તરવરી આવે છે. પૂજ્ય આચાર્યશ્રીઓ સામે તેણે એવું ખરાબ લખી માર્યું છે કે જે તેના મિથ્યાચુપણાનું સબળ પ્રમાણ છે કવિ નર્મદે પહેલાં પુષ્ટિમાર્ગની તથા શ્રીમહાપ્રભુજીની ગેરનિંદા કરી છે, પણ એ કેઈ બદલવાની શીખવણીથી અને લાંચ થઈ કરેલી જણાય છે, અને તેવા નિંદ કરેલા લખાણોનાં સારા રૂપીઆ મળે એ સંભવિત છે. અને એ લખ્યા પછી કેટલાક વર્ષો બાદ પુષ્ટિમાર્ગની ભારે સ્તુતિ કરી છે તેનું કારણ કવિએ પાછા પૂજ્ય મહારાજશ્રીઓ પાસેથી રૂપીયાની લાંચ લઈ કવિએ કેમ ન કરી હોય' કવિ નર્મદ દુષ્ટ બુદ્ધિવાળો હતો. આવા ગુંડાઓની શતાબ્દિઓ ઉજવવાથી શતાબ્દિ શબ્દનું ગૌરવ ઘટી જવા સંભવ છે. કવિ મહાન્ માયાવાદી નિંદક નાસ્તિક હતો, વ્યભિચારી હતો. બધા દુર્ગુણોનો ભંડાર હતો. તેનું વ્યક્તિત્વ તે કાળમાં કંઈ પણ નહોતું. હા, ગુજરાતી ભાષા ઉજાળવા તેણે મહેનત સારી કરી હતી ખરી, પણ તેથી તેની દુર્ગંધ નથી મટતી. અધિકારને ઉજાળવાની નવી અવસ્થાથી કોણ તે ધોઈ શકશે?

લી. તમારો શુભેચ્છક,

એમ. એન. મીઠાણી—ઠે. ઇતવારી બજાર નાગપુર સીટી.

નોંધ—એક વ્યભિચારી લંપટને સુધારક કવિ તરીકે માનીને શતાબ્દી ઉજવનારો આજને સાક્ષર સમાજ (!) શું વ્યભિચારપૂજક અને અનીતિ-ઉત્તેજક મનાવા માગે છે? લંપટ અને વિધર્મી નર્મદની શતાબ્દી ઉજવીને આજના સાક્ષર સમાજે અનિચ્છનીય પ્રજા માટે શો વારસો આપ્યો છે? નર્મદ કોઈ સુધારક કવિ હતો. મોટે ભાગે તે તો ઉદ્ધત, બંડેલ ટોળાંનો નેતા હતો. તેની શતાબ્દીઓ ઉજવીને હિન્દુ જનસમાજ તે પંથે શું વિચરવા માગે છે? મહાત્મા શ્રીગોવિંદાચાર્યજીના શિષ્ય સાક્ષર શ્રીયુત શંકરલાલ ... સાઈ જાની (જેમણે સનાતની મનુષ્ય છે) શું જોઈને કમિટિના સભ્ય બન્યા હશે? પુષ્ટિમાર્ગીઓને વિનંતી કરીને

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

શ્રીનાથદ્વારામાં લાગી ગયેલાં સીલ—તા. ૨૨ મીના દિવસે સવારના ૭ વાગે એક તાર શ્રીનાથદ્વારામાં કૃષ્ણ ભંડાર પર સીમલાથી આવેલો, તેમાં ગો. તિલકાયતશ્રી ગોવર્ધનલાલજીના લીલામાં પધારવાના મહદ્‌ખેદક સમાચાર આવતાં વડા કારોબારી પં. રમાકાન્ત સાહવિયા શ્રીરણુપોડ સજી અધિકારી તથા ફોજ બક્ષી અંબાલાલજી તથા કેશીયર પન્નાલાલજીએ મહારાજના રહેવાના મોતી મહેલના ચંગણામાં જઈને ખાનગી મકાનને સીલ માર્યા હતા, તેમજ શ્રીનાથજીના આભૂષણ વિગેરે જોખમી ઝવેરાત પર પણ કૃષ્ણભંડાર નાગજીરામના નામનાં સીલ માર્યા છે.

બીજે દિવસે સાંજના ૪ વાગે ઉદેપુરથી લોરીમાં રાજના સરદારો તથા બીજી મોટરમાં પં. મદનમોહનજી તથા મંગીરસિંહજી આવ્યા હતા તેઓએ જ્યાં સીલો હતાં તેની બીજું ઉપર સીલો મારી ફોજબક્ષીની સહી લીધી હતી. કુલે ૧૮ જગ્યાએ સીલ માર્યાં છે, અને કૃષ્ણભંડારના દરેક આમદનીના તથા ખર્ચના ચોપડાઓની આખરી મીતિની નોંધ લઈ તે કુલ ચોપડાએ અધિકારીને સોંપીને સહી લીધી હતી. કૃષ્ણભંડારમાં તે વખતે રૂ. ૬૦,૦૦૦ જ સીલકમાં હતા.

ટંકારામાં શોક સભા—શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી શ્રી તિલકાયતશ્રીના અચાનક લીલાપ્રવેશથી ટંકારા શહેરના વૈષ્ણવ નરનારીઓમાં ભારે શોકની લાગણી ફેલાઈ હતી. તા. ૨૫-૬-૧૯૩૪ ના રોજ આખા શહેરમા ચૂલે કરી નહી તેવી હડતાલ પડી હતી, શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્ય કૃત સ્તોત્રોથી ખાસ પ્રભુ પ્રાર્થના કરવામાં આવી હતી. અને શોક પ્રદર્શિત કરવા સમસ્ત વૈષ્ણવોની એક સભા સાત સ્વરૂપની હવેલીમાં બોલાવવામાં આવી હતી. તે સભામાં નીચેના ઠરાવો થયા હતા ૧ ટંકારાની સમસ્ત બ્રાહ્મણ જ્ઞાતીની તેરમાને દિવસે શોકથી જમાડવી. ૨ ગૌચરમાં ઘાસ આપવું ૩ ગરીબ પારેવાને ચણમાં જાર આપવી. ઉપર મુજબ ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ થયો હતો અને વખતે ફંડ કર્યું હતું એમાં સર્વ વૈષ્ણવોએ પોતાની શક્તિ અનુસાર ભંડાળ્યું હતું.

સાવલીમાં શોક—શ્રીમદ્ ૧૦૮ ગોસ્વામી તિલકાયત શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજે લીલાપ્રવેશ કર્યાની ખબર મળતાં વૈષ્ણવ સમાજમાં ફેલાયેલી ગમગીનીથી તેઓશ્રીના માનમાં બજારમાં હડતાલ પાડી ર. રા. દેસાઈ જશભાઈ છોટાભાઈ સાહેબના પ્રમુખપણા નીચે જાહેર સભા થઈ શોક પ્રદર્શિત કરવામાં આવ્યો.

કલ્યાણમાં શોક—મુંબાઈ પાસેના કલ્યાણમાં પણ વૈષ્ણવ વ્યાપારીઓએ હડતાલ પાડી હતી.

સુરતમાં શોક—પૂજ્યપાદ ગો. શ્રી ૧ શ્રીવ્રજરત્નલાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપદે એક શોક સભા મળી હતી, તેમાં શોકનો ઠરાવ પસાર કર્યો હતો

માણસામાં—ડૉ. મગનલાલ જોઈતારામના પ્રમુખપદે સભા મળી હતી, અને શોકનો ઠરાવ થયો.

ગોરાગામમાં શોક સભા—નાથદ્વારાધીશ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજશ્રીએ નિત્યલીલાપ્રવેશ કર્યો તે માટે શોક બતાવવા અત્રેના વૈષ્ણવોની એક જાહેર સભા ગત આસો સુદિ એકાદશી શુક્રવારના બપોરના ચાર વાગે મળી હતી. સભાનું પ્રમુખસ્થાન વૈ. સાંકળચંદ છગનલાલ શાહે સ્વીકાર્યું હતું. શરૂઆતમાં સભા બોલાવવાનો હેતુ રા. મોહનલાલ ગાંધીએ સમજાવી પછી નીચે મુજબ ઠરાવ રજુ કર્યો હતો. ઠરાવ—એક કરોડ વૈષ્ણવોના સમાદરણીય આચાર્ય શ્રીનાથદ્વારાધીશ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજશ્રીએ નિત્યલીલાપ્રવેશ કર્યો તે માટે આ સભા શોક પ્રદર્શિત કરે છે અને વૈષ્ણવોના પ્રાણાધાર શ્રીનાથજીની સેવા માટે યોગ્ય મહારાજશ્રીની યોજના થાય એમ આ સભા ઇચ્છે છે. તે માટે તેજ પ્રભુ શ્રીનાથજી સત્વર યોગ્ય પ્રેરણા કરે એમ પ્રાર્થના છે. ઠરાવ ઉપર રા. મોહનલાલ ગાંધીએ વિવેચન કરતાં નિત્યલીલાસ્થ મહારાજશ્રીનું ટુંકું જીવન ચરિત્ર આલેખ્યું હતું. અને શ્રીનાથજીની સેવા માટે સત્વર યોગ્ય પ્રતિબંધ થાય, વગેરે જણાવ્યું હતું. પછી ઠરાવને યોગ્ય ટેકા મળ્યા પછી સર્વેએ ઉભા થઇ ઠરાવ પસાર કર્યો હતો. પછી સભા વિસર્જન થઇ હતી.

મહારાજશ્રીના નિત્યલીલાપ્રવેશ માટે આસો સુદિ અષ્ટમી મંગળવારે પાળી પાડવાની હતી. પરંતુ અહીં વૈષ્ણવોમાં બે તડ હોવાથી વિચારવિનિમય થયો. તેમાં કહેવાના બેઠાબોલના દલાલોએ શુક્રવારે હડતાળ પાડવામાં આવે તો સહકાર કરવા જણાવ્યું. તે મુજબ શુક્રવારના દિવસે હડતાળ માટે કહેવામાં આવ્યું પરંતુ ધર્મના સંસ્કારો જેઓના મન ઉપરથી ઉડી ગયેલા તેવા આ લોકોએ હડતાળ પાળી નહિ. બાકી એક પક્ષમાં બધી દુકાનો બંધ હતી. આ પણ વૈષ્ણવતાની બલીહારીજ સમજવું.

બીજી સભા રાત્રે આઠ વાગે શ્રીવૈષ્ણવધર્મવર્ધિની સભા તરફથી શા. વેલજીભાઈ સાકરચંદ શાહના પ્રમુખપદે બોલાવવામાં આવી હતી. તેમાં નીચે મુજબ ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો—ઠરાવ—"શ્રીનાથદ્વારાધીશ તિલકાયત ગોસ્વામી શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજશ્રીના નિત્યલીલાપ્રવેશ માટે આ સભા શોક જાહેર કરે છે. તેઓશ્રીની સંપ્રદાયના ઉન્નતિ માટેની અનેક પ્રવૃત્તિઓ માટે વૈષ્ણવો તેમના ઋણી છે. તેઓશ્રીની ખોટ તે ગાદીએ યોગ્ય આચાર્યશ્રી બીરાજી પૂરે એમ આ સભા ઇચ્છે છે.

પચાસને બદલે પચીસ—ગયા અંકના મુખપૃષ્ઠ ઉપર પ્રો. જે. ગો શાહની સહાયતામાં "પચાસ રૂપીઆ" ભૂલથી છપાયા છે. પચીસ રૂપીઆ સહાયતાના મળ્યા છે. તંત્રી.

નડીઆદમાં અપૂર્વ ઉત્સાહ—શાસ્ત્રી વસંતરામે બરાબર ૪ થી ૫ દિવસ સુધી વેદ શાસ્ત્રોનાં પ્રમાણો આપી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા જુદા જુદા પ્રકારે પણ અનાદિથી ચાલુ આવેલી તેને સમયને અનુસરી શ્રીવલ્લભે જીવોના અધિકાર મુજબ આ દીક્ષા આપવી શરૂ કરી છે તે સિદ્ધ કરી બતાવ્યું હતું અને બીજા પણ ધાર્મિક જીવના પુષ્ટિધર્મી સમજતી નડીઆદની પ્રજાને ઘણોજ આનંદ આપ્યો હતો. તદ્ ઉપરાંત શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલયની જગા ઘણીજ સંકોચવાળી જોઈ હિંદુસ્તાનમાં એટલુંજ નહિ, પણ યુરોપ સુધીમાં જેની ખ્યાતિ છે એવી આ એકજ પુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલયની જગો ઘણીજ સંકોચવાળી જોઈ દીલગીરી દર્શાવી તે માટે વિચાર કરવા વૈષ્ણવોને સૂચના કરી હતી, તેમજ ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર પૂ. પા. મહારાજશ્રીએ પણ વખતોવખત પોતાની વચનસુધાનું પાન વૈષ્ણવોને કરાવી અત્યંત આનંદ આપ્યો હતો અને આ પુસ્તકશાળાના મકાનની સંકોચવાળી જગા જોઇ ઘણીજ દીલગીરી દર્શાવી હતી અને તે મકાન મોટું કરવા વૈષ્ણવોને સૂચના કરીને તેની સહાયતામાં મંગળસૂચક રૂ. ૫૦૧) આપે પોતે મકાન ફંડ ખાતે બક્ષીસ આશીર્વાદ સાથે આપ્યા હતા. બાદ જે જે રકમો ભરાઇ હતી. લગભગ ૬ દિવસ સુધી અત્રે વિખ્યાત મહારાજશ્રીનાં વચનામૃતોની વૃષ્ટિ થઇ હતી, તે દરમીયાન અત્રેના વૈષ્ણવોમાં પણ શા. મોહનલાલ લલ્લુભાઇ તથા શા. ગિરધરલાલ નારણદાસ તથા શા. અંબાલાલ જમનાદાસ તથા શા. મણિલાલ સરૈયા વગેરે પણ તે અનુસરતું બોલ્યા હતા.

ફંડ—રૂ. ૫૦૧) (રોકડા) મહારાજશ્રીના, ૫૦૧ શા. મગનલાલ જાદવજીભાઈ, ૫૦૧) શા. મોતીલાલ ગિરધરદાસ કાનપુરવાળા, ૨૦૦૧ શા. છગનલાલ ગિરિધરદાસ કાનપુરવાળા, ૨૦૧ શા. ગોરધનદાસ ચુનીલાલ, રૂ. ૧૦૧) ભરનારા-(રોકડા) દેસાઇ હીરાલાલ ચુનીલાલ, વોરા માણેકલાલ છગનલાલ, " સોમચંદ ત્રીકમદાસ, સરદાર બહાદુર ગોપાળદાસ વિહારીદાસ દેસાઈ, રૂ. ૫૧) ભરનારા-શા. હીરાચંદ ઝવેરદાસ ધોળકા, તલાટી રણછોડદાસ ઝવેરદાસ, રૂ. ૨૫) ભરનારા—શા. મૂળાભાઈ નરોત્તમદાસ, ગાંધી ચુનીલાલ દામોદરની દીકરી બાઈ જડાવે રોકડા આપ્યા, રૂ. ૧૫) રોકડા ભરનારા-શા. હરિલાલ બાપુજીભાઇ, શા. જેઠાલાલ છગનલાલ, રૂ. ૧૦) રોકડા ભરનારા-શા. ચુનીલાલ લક્ષ્મીદાસ અર્ણદ્રાવાળા, શા. મૂળજીભાઇ બહેચરદાસ દાવડાવાળા, તલાટી હરિલાલ મથુરદાસ, શા. મગનલાલ બાપુજીભાઇ, રૂ. ૧૧) (રોકડા) શા. ગોકુળદાસ જેશીંગદાસ, રૂ. ૧૦) (રોકડા) ભગવદીય મંછાબહેન તે શા. રમણલાલ પુરુષોત્તમદાસનાં માતાજી, રૂ. ૫) (રોકડા) ભરનારા-શા. ગોરધનદાસ મનસુખલાલ, શા. માણેકલાલ લલ્લુભાઇ, ગાંધી ચુનીલાલ દામોદર, પરી. સોમચંદ ગોકુળદાસ, શા. મોતીલાલ વનમાળીદાસની દીકરી બાઈ જડાવ, શા. ચુનીલાલ નાથાભાઇ, શા. કૃષ્ણદાસ ગોરધનદાસના માતુશ્રી, શા. બાપુભાઈ ચુનીલાલનાં માતુશ્રી બાઇ દીવાળીબા, દેસાઈ ઇશ્વરભાઈ મોતીભાઇ, પા. શંકરભાઈ મનોરભાઈની દીકરી બહેન ડાહીબા, શા. મગનલાલ વનમાળીની દીકરી બહેન મહાલક્ષ્મી, શા. જેશીંગદાસ બહેચરદાસ, શા. શામળદાસ છગનલાલ માસ્તર, બહેન પારવતી મૂળજીભાઈ મગનની દીકરી, શા. મગનલાલ પીતાંબરદાસ, બહેન રેવા મોહોલાલ, ગાંધી મોહનલાલ મગનલાલ, શા. મોહનલાલ રઘુનાથદાસ, ગીરધરદાસ ભાઈજીની દીકરી બહેન મહાકોર, રૂ. ૫) (બાકીવાળા) બહેન ડાહી, શા. જશવંતદાસ ચુનીલાલ, શેઠ છોટાલાલ માણેકલાલ જોગાઈ, શા. બાપુલાલ ગોરધન, સોની તારાચંદ વસરામ, વોરા પરશોત્તમ શીવલાલ, સરૈયા મણીલાલ જેશીંગદાસ, રૂ. ૨) (બાકી) બાઈ પરસન ગાંધી પાનાચંદની દીકરી, રૂ. ૨) (રોકડા) પા. રણછોડભાઈની પુત્રી બહેન દીવાળી, શા. મનસુખ પાનાચંદની દીકરી બહેન જમના, મોહનલાલ છગનલાલની પુત્રી બાઈ પ્રેમાબા, ચુનીલાલ જેઠાભાઇની પુત્રી ચંચળબા, બહેન રૂખીબા, બહેન ડાહીબા, બહેન ચંચળબા,

શા. નવનીતલાલ બાપુજી, રૂ. ૧) ભેટ: અર્પનાર. શા. મૂળજીભાઈ દુર્લભદાસ, બાઈ રતીબા, બાઈ ગિરજબા, બાઈ હીરાબ્હેન, દેસાઈ દામોદરભાઈ ભાઇચંદભાઈ, બ્હેન ચંચળ, રૂ. ૩) (રોકડા) બાઈ મંગો, રૂ. ૨) (રોકડા) બાઈ હરિબા, રૂ. ૫) (રોકડા) બાઈ શકરી બ્હેન તથા ડાહી બેન, રૂ. ૨) (રોકડા) શાહ રતીલાલ છોટાલાલ, શા. છગનલાલ નરસીદાસ. કુલ રૂ. ૭૫૧૩-૦-૦; વસુલ આવ્યા રૂ. ૮૫૬-૦-૦.

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

પારિતોષિક પરીક્ષાઓ.

શુદ્ધાદ્વૈત પુષ્ટિસંપ્રદાયના અનુયાયીઓ—ખાસ કરીને યુવાન વર્ગ સાંપ્રદાયિક સાહિત્યના અભ્યાસમાં વિશાળ દૃષ્ટિએ પ્રવૃત્ત થાય એવા શુભ ઉદ્દેશથી આ ઇનામી પરીક્ષાઓ યોજવામાં આવી છે.

પ્રવેશપરીક્ષા—દીનકિંકર કૃત બાલશિક્ષા ભાગ પાંચમો સંપૂર્ણ, પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ પૃષ્ઠ ૧૦૮, ચતુઃશ્લોકી, કૃષ્ણાશ્રય, મધુરાષ્ટક, સર્વોત્તમસ્તોત્ર અને મંગલાચરણ. આ સંસ્કૃત સ્તોત્રો કંઠસ્થ કરવાના છે. (આ સ્તોત્રો " આટલું તો કરજોજ " નામના પુસ્તકમાં છે.)

મધ્યમાપરીક્ષા—રસેશ શ્રીકૃષ્ણ, ષોડશ ગ્રંથ, શ્રીનાથજીનો ઇતિહાસ તથા ભક્તિપોષણ અર્થ સહિત.

ઉત્તમાપરીક્ષા—શુદ્ધાદ્વૈતમાર્તંડ, શુદ્ધાદ્વૈતસિદ્ધાંત, ગુજરાતી (વૈષ્ણવમહાસભાવાળો), શ્રીહરિરાયજી કૃત શિક્ષાપત્રમાંથી પત્ર ૨૦, શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર (શાસ્ત્રી હરિશંકરનું લખેલું ગુજરાતી અથવા વ્રજભાષામાં).

વિશિષ્ટપરીક્ષા-પ્રથમ વર્ષ—શ્રીમદણુભાષ્ય અધ્યાય ૧ લો અને ૨ જો, વિદ્વન્મંડન, આવિર્ભાવ-તિરોભાવવાદ સુધી, પ્રસ્થાનરત્નાકરમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અહ્નવાદ સટીક અથવા સુબોધિનીજી જન્મપ્રકરણ અને તામસ ફલ પ્રકરણ, ભક્તિહેતુનિર્ણય પૂરો, ભક્તિરસત્વવાદ પુરો અને અહ્નવાદ સંગ્રહમાંથી શ્રીવ્રજરાયજીનો અહ્નવાદ.

દ્વિતીય વર્ષ—શ્રીમદણુભાષ્ય અધ્યાય ૩ જો અને ચોથો, વિદ્વન્મંડન અવશિષ્ટાંશ લીલાનિત્યત્વવાદ સુધી, અને અહ્નવાદસંગ્રહ પૂરો, શુદ્ધાદ્વૈત પરિષ્કાર સાથે; અથવા શ્રીસુબોધિનીજી દ્વિતીય સ્કંધ પુરો તથા તૃતીય સ્કંધ ૧૫ થી ૨૪ અધ્યાય, ભક્તિહંસ, આવિર્ભાવતિરોભાવવાદ, અહ્નવાદ સંગ્રહમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અહ્નવાદ અને શુદ્ધાદ્વૈતપરિષ્કાર, સાંખ્યકારિકા અથવા ભેદાભેદ, અવિકૃતપરિણામવાદ ગીતા ૧૫ મો અધ્યાય તત્વદીપિકા સાથે, તથા વિદ્વન્મંડનમાંથી નિત્યલીલાવાદ.

આ પરીક્ષાઓમાં ઉત્તીર્ણ થનારાઓને વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી યોગ્ય પ્રમાણસર પારિતોષિક વહેંચવામાં આવશે.

સામાન્ય નિયમો.

(૧) આ પરીક્ષાઓમાં પુષ્ટિમાર્ગની સાંપ્રદાયિક દીક્ષા લેનાર કોઇ પણ વૈષ્ણવ સ્ત્રી કે પુરુષ બેસી શકશે. પરીક્ષામાં બેસનાર ઉમેદવાર ગમે તેટલી ઉંમરના હશે તો પણ તેને માટે હરકત આવશે નહિ. (૨) પરીક્ષાનો સમય સં. ૧૯૯૦ ના માર્ગશીર્ષ વદ ૯ શ્રીગુસાંઇજીના ઉત્સવનો રહેશે. પરીક્ષાનું પરીણામ સં. ૧૯૯૦ ના માઘ સુદ ૫ વસંતપંચમી ઉપર જાહેર કરવામાં આવશે. (૩) બધી પરીક્ષાઓ લેખી લેવામાં આવશે. (૪) પ્રશ્નપત્રો તે ગામના નીમાયલા પ્રતિષ્ઠિત નિયામકોને પહોંચાડવામાં આવશે. (૫) પરીક્ષાનાં સ્થલ આદિની તજવીજ પહેલેથી નિયામકો સાથે કરીને તેમના દ્વારા તે તે ગામમાં પહેલેથીજ જાહેર કરવામાં આવશે. (૬) ઉમેદવારોએ અરજીમાં પોતાનાં નામ ઠામ સાફ અક્ષરે લખી મોકલવાં તથા કઇ પરીક્ષામાં બેસનાર છે તે પણ સ્પષ્ટ રીતે જણાવવું. (૭) પરીક્ષા માટેનું અરજીપત્ર મોડામાં મોડું સં. ૧૯૯૦ ના કાર્તિક સુદ ૧૫ સુધીમાંજ સ્વીકારાશે.

મંત્રીઓ,

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા, ૧૧૦—રીચીરોડ, અમદાવાદ.

પ્રશ્ન ૧૦૭—મનુષ્યમાત્રે ધર્મનો કિયો સર્ગ અવશ્ય સંગ્રહ કરવા યોગ્ય છે?

ઉત્તર—શમ, દમ, તપ, તિતિક્ષા, શૌચ, બ્રહ્મચર્ય, અહિંસા, આદિક સમગ્ર એવો જે ધર્મનો સર્ગ તે ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૮—ત્યાગ કરવા યોગ્ય અધર્મનો સર્ગ કિયો છે?

ઉત્તર—કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, દંભ, મદ, મત્સર, ઇર્ષ્યા, અભિમાન આદિક સમગ્ર અધર્મનો જે સર્ગ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૯—સર્વ કાળને વિષે શ્રવણ કરવા સાંભળવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર—શ્રીપરબ્રહ્મનાં જે ચરિત્ર તે સર્વ કાળને વિષે સાંભળવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૦—પંડિતને પણ ભણવા ને ભણાવવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર—જેણે કરીને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનને વિષે માહાત્મ્યજ્ઞાને યુક્ત ને દૃઢ અનન્ય પ્રીતિએ સહિત ભક્તિ થાય તથા જેણે કરીને પોતાના ધર્મને વિષે અચળ નિષ્ઠા થાય એવું જે સત્શાસ્ત્ર તે તો યદ્યપિ પંડિત હોય તેમણે પણ ભણવું તથા ભણાવવું.

પ્રશ્ન ૧૧૧—વિચાર કરવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર—જગતમાં જે અહંતામમતાત્મક રૂપ જે મિથ્યા પ્રપંચ તેને વિષે આસક્તિ કદી પણ ન થાય એ વિચાર કરવા જેવું છે. તથા ક્ષણે ક્ષણે આયુષ્ય-મર્યાદાને ક્ષય થતો જાણી પરબ્રહ્મોપાસના કરવા કાળજી રાખવી.

પ્રશ્ન ૧૧૨—ભગવદ્ધર્મ ધારણ કરનારે શ્રેષ્ઠ કિયાં વ્રત ધારણ કરવા યોગ્ય છે?

ઉત્તર—અધિક પુરુષોત્તમ માસ અને બારે માસમાં આવનારી બંને પક્ષ (શુક્લ, ને કૃષ્ણ પક્ષ) ની એકાદશીઓ અને મુખ્યત્વે કરીને ચાર જયંતીઓ શ્રીકૃષ્ણજન્માષ્ટમી, શ્રીરામનવમી, શ્રીવામનદ્વાદશી અને શ્રીનૃસિંહચતુર્દશી એ ઉત્સવોનાં વ્રત અવશ્ય ધારણ કરવા.

પ્રશ્ન ૧૧૩—ત્યાગ કરવા યોગ્ય તે કિયો છે?

ઉત્તર—જેનાં વચન પથ્થરની પેઠે વા વજ્રબાણ જેવાં પડતાં હોય, ને અસત્ય બોલનારો હોય, હરિગુરુ શાસ્ત્ર, મહાન પુરુષની આજ્ઞાનો વિરોધ કરનારો (કહેતાં આજ્ઞા થકી અવળો ચાલનારો) ને જ્યાં ત્યાં મનુષ્ય સાથે વેરનો કરનારો ને ક્રોધ કરીને-પછી કામકાજ કરવાનો આરંભ અનાદરે કરીને કરતો હોય, ને સામાન્ય કરીને રહિત, ને પોતાના ગુણનાં વખાણ પોતે કરતો હોય એવો જે પુરુષ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૪—ઉત્તમ પુરુષ તે કોને જાણવો?

ઉત્તર—સર્વ પ્રાણી માત્રનું રૂડું થાય એવું ઇચ્છતો હોય ને કોઇનું ભૂંડું થાય એવું તો ક્યારે પણ ઇચ્છતો ન હોય ને ગમ્ભીર બોલો હોય ને કોમળ સ્વભાવવાળો હોય એવો જે પુરુષ, તેને ઉત્તમ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૫—અધમ પુરુષ તે કોને જાણવો?

ઉત્તર—કર્મે કરીને, મને કરીને, તથા વાણીએ કરીને તથા દેહે કરીને જેને વિષે જે પ્રકારે વર્તતો હોય તેને વિષે પણ તેજ પ્રકારે જે પુરુષ વર્તતો હોય, ને ગુણને ગુણ, ને દોષને દોષ; એ બન્નેનો ગ્રહણ કરનારો એવો જે પુરુષ હોય તે મધ્યમ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૬—કનિષ્ઠ પુરુષ તે કોને કહિયે?

ઉત્તર—કર્યા (કૃત) (કરેલા ઉપકારને) ન જાણે, ને કોઈ મિત્ર હોય તેનુ મિત્રપણું પણ કાંઈ રાખે નહિ, ને પરથકી પોતાની શંકાનો કરનારો ને પોતાના હિતની વાર્તામાં પણ શ્રદ્ધારહિત, અને કરવા યોગ્ય ને ન કરવા યોગ્ય જે કર્મ અકર્મ વિકર્માદિ તેને જાણે નહિ ને કેવળ પારકાના દોષનેજ દેખતો હોય એવો જે પુરુષ તેને કનિષ્ઠ પુરુષ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૭—સકામ પુરુષ તે કોને જાણવો?

ઉત્તર—શ્રીભગવાન વિના ધર્મ, અર્થ, કામ, ને મોક્ષ; એ પદાર્થને જે ઇચ્છે છે પણ એ ચારેથી અતીત થઈ કેવળ શ્રીહરિના હિતાર્થની સેવા તેનેજ હરિપ્રસન્નતાર્થે કરવા ઉપર દૃઢમતિપૂર્વક આસક્તિ થઈ ન હોય તેવા જનો ચતુર્દશ લોક ભોગના સુખને ઇચ્છનારા જેવાને સકામી જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૧૮—રાત્રિ દિવસ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય તે શું છે?

ઉત્તર—પ્રબલ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ નારાયણ તેમનાં જે યુગલ ચરણારવિંદ તેથી આરંભીને તે મસ્તક પર્યંતનું શુદ્ધ રસાત્મક આનંદમય અપ્રાકૃત દિવ્ય સ્વરૂપ તેજ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૯—નિરંતર જીહ્વાએ કરીને ઉચ્ચારણ કરવા યોગ્ય તે શું છે?

ઉત્તર—સત્ ચિત્ આનંદરૂપ શ્રીકૃષ્ણ, નારાયણ, માધવ, મુકુંદ, ગોવિંદ, હરે, હે હરિ, હે ભક્તવત્સલ, હે કેશવ, હે કરુણાસિંધુ, હે દીનબન્ધુ, હે અશરણ-શરણ, હે પતિતપાવન, હે અધમોદ્ધારણ ઇત્યાદિ શ્રીપરબ્રહ્મનાં નામો અગણિત છે, તે નામોનું ઉચ્ચારણ નિરંતર કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૦—મનુષ્યે કોના થકી નિરંતર ભય પામવો?

ઉત્તર—જીવની હિંસા આદિક જે અધર્મ તે થકી, તથા નાસ્તિકરૂપ જે કાળો નાગ તેથી, તથા ઉપર ઉપરથી દેખ્યા પામે તો ધર્મનો આભાસ જેવું આચરણ જણાતું હોય ને અંદરથી તપાસેલો તે પાપે ભરેલો એવો જે પાખંડી પુરુષ તે થકી, તથા પતિ જીવતા છતાં પરપુરુષ થકી ઉત્પન્ન થયા એવા જે વર્ણસંકર પુરુષ તેમના સંગ થકી, તથા સુરાપાનને તથા માંસભક્ષણ કરનારા એવા અધર્મમાર્ગી પુરુષોના સંગ થકી તથા પોતાની અપકીર્તિ થકી, મનુષ્ય તેમણે નિરંતર ભય રાખવો ને સર્વ કરતાં પણ અધિક ભય મહાન સાર્વભૌમ ચક્રવર્તી રાજાના પણ રાજારૂપ પરાત્પર પૂર્ણ પરિબ્રહ્મ તે સદા સર્વદા સર્વ સ્થળે અખંડિત બિરાજમાન છે એમ જાણી અધર્મમાર્ગે ન પડવાનો ભય વિશેષ રાખવો.

પ્રશ્ન ૧૨૧—નાસ્તિક કોને જાણવો ?

ઉત્તર—જે સર્વ અખિલ જગતમાત્રના કર્તા પતિ એવા મૂળ પરબ્રહ્મ જે માયિક ગુણોથી સદા રહિત એવા, અને અમાયિક (અપ્રાકૃત દિવ્ય) ગુણે યુક્ત એવા ને સદા દિવ્ય અપ્રાકૃત સાકાર મૂર્તિ એવા જે કૃષ્ણ નારાયણ; તેમને કેવળ શૂન્યરૂપ આકારરહિત કહેનારા તથા તેજ જગત્કર્તા કોઇ છેજ નહિ એવું કહેનારા, અને જગતની ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને લયને કરનારું તો માત્ર સ્વતંત્ર કર્મજ છે, કર્મના ફલદાતા ઈશ્વર છેજ નહિ, એ પ્રકારે કહેનારા જાણનારા જે કેવળ કર્મજડ અજ્ઞાની જનો તેને નાસ્તિક જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૨૨—નિષ્કામ પુરુષ તે કોને જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીપરાત્પર પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ ભગવાન વિનાની પ્રસન્નતા પૂર્વકની સેવા તથા ધર્માદિક ૪ પદાર્થને (પુરુષાર્થને) પણ ન ઇચ્છે ને જેમાં શ્રીહરિને સુખ, શ્રીહરિની પ્રસન્નતા, એ બે વસ્તુના ઉપરજ પ્રાધાન્યપણે અંતઃકરણની વૃત્તિથી આગ્રહ હોય તેવા જન તેજ નિષ્કામી પુરુષ છે.

પ્રશ્ન ૧૨૩—નિત્યપ્રલય તે કોને જાણવો ?

ઉત્તર—જેમ રાત્રિદિવસને વિષે નિરંતર ન દેખ્યામાં આવતી એવી જે ફલપુષ્પની વૃદ્ધિ તે થતી જાય છે, ને તેની પૂર્વ અવસ્થાનો લય થતો જાય છે, તેમ જોબન આદિક જે અવસ્થા તે આવતી જાય છે ને બાલપણાદિક જે અવસ્થા તેનો નિરંતર ક્ષણ અધક્ષણે વ્યતીતરૂપ લય થતો જાય છે તે નિત્યપ્રલય જાણવો.

દષ્ટાંત—જેમ પ્રજ્વલિત દીપકમાંથી ઘૃત તૈલાદિક બળી જતું રહે છે. નદીઓમાં નિરંતર જળનો પ્રવાહ વહન કર્યા કરે છે. જળાશયમાત્રમાંથી પવન તાપાદિકદ્વારાએ નિરંતર જળનું શોષણ થતું જાય છે ઇત્યાદિ દષ્ટાંતો અનેક છે. સર્વનો સાર સિદ્ધાંત એ કે—દરરોજ ક્ષણ ક્ષણ કાળ બદલાય છે ને ગયેલો કાળ ફરી આવતો નથી. એમ અવસ્થાઓ દેહની બદલાયા કરે છે તેમ નિત્યપ્રલય ઉપર દષ્ટિ સૂક્ષ્મ વિવેકી જનનીજ હોય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૪—નૈમિત્તિક પ્રલય તે કોને જાણવો ?

ઉત્તર—બ્રહ્માની રાત્રિને નિમિત્તે કરીને પાતાળથી લેઇને તે સ્વર્ગપર્યંત ૧૦ દશ લોકનો જે લય, અતળ, સુતળ, તળાતળ, વિતળ, મહાતળ, રસાતળ, પાતાળ, ભૂર્લોક, ભુવર્લોક, સ્વર્ગલોક, એનો જે લય તેને નૈમિત્તિક પ્રલય જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૨૫—આત્યંતિક પ્રલય (મહાપ્રલય) કોને જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીપુરુષોત્તમના ધામરૂપ જે અક્ષરબ્રહ્મનું તેજ, તેને વિષે જ્યારે પ્રકૃતિપુરુષથી આરંભીને સર્વ લીન થઈ જાય ત્યારે તેને આત્યંતિક પ્રલય જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૨૬—આસ્તિક કોને જાણવો ?

ઉત્તર—સર્વ લોકના કર્તા ને સર્વજીવમાત્રને કર્મના ફલપ્રદાતા અને દિવ્ય અપ્રાકૃત છે મૂર્તિ જેમની એવા જે મૂળ પરબ્રહ્મ તે, તેમના જે દિવ્ય અનંત

અવતાર તે સહિત માનીને તથા મૂળ એક બ્રહ્મ તેમ અગણિત સ્વરૂપે થઇ ચરાચર સર્વ પ્રાણી માત્રમા બિરાજે છે એવુ જ્ઞાન ધરાવીને જે પુરુષોત્તમ પરબ્રહ્મને સર્વોત્તમભાવ રાખીને ભજતો હોય ને તેમના વચન (વેદશાસ્ત્ર, ગીતા, ભાગવતાદિ પુરાણ સહિત-ઉપનિષદ-શ્રુતિ-સ્મૃત્યાદિની આજ્ઞારૂપના) તેને વિષે દૃઢ વિશ્વાસયુક્ત હોય તેને આસ્તિક જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૨૭—દુર્લભ વસ્તુ કયી છે?

ઉત્તર—જગતમા શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા તેજ દુર્લભ છે ને જેવા તે દુર્લભ છે તેવાજ તેમના પરમ એકાંતિક ભક્ત મહાનુભાવ ભગવદીય અને શ્રીસદ્ગુરુ પણ દુર્લભ છે. એટલુજ નહિ તે કદાચ મેળવ્યા હોય પણ તેમને ઓળખીને સેવા વિષે દૃઢ પ્રીતિ રાખવી, એટલુજ નહિં પણ તે કહે તે પ્રમાણે સદા સર્વદા વર્તવુ, એ પણ અતિશય દુર્લભ છે ને સર્વથી દુર્લભ તો એ છે કે એ મૂળ પરબ્રહ્મની નિષ્કામ અચલિત પરાભક્તિ પ્રાપ્ત કરવી તે છે.

પ્રશ્ન ૧૨૮—જન્મ થવાનુ મૂળ શુ છે?

ઉત્તર—અંતઃકરણને વિષે રહેલી એવી જે શુભ અશુભ વાસનાઓ તેજ જન્મ લેવાનુ મુખ્ય કારણ છે

પ્રશ્ન ૧૨૯—વાસના તે કોને કહિયે?

ઉત્તર—સર્વકાળને વિષે કર્મની ગ્રંથિ (ગાંઠ) રૂપી જે વિકલ્પરૂપ તૃષ્ણાઓની વૃત્તિ રૂપી જે વાસના (ઇચ્છા, અભિલાષા) અંતરમા જડાયા જેવી હોય તેને વાસના કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૦ મોટા કવિ તેમણે મનુષ્યને કરવા યોગ્ય મુખ્ય કર્મ શુ કહ્યુ છે?

ઉત્તર—જે કર્મ કરીને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા પ્રસન્ન થાય તેવુ કર્મ તેજ કરવા યોગ્ય કહ્યુ છે. અનેક પ્રકારની ચતુરાઇ ડહાપણ હોય તો પણ જો શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને ન રીઝવ્યા ત્યારે તો એ સર્વ ડહાપણ અને ચાણાક્યપણાને પણ ધિક્કાર છે

પ્રશ્ન ૧૩૧—તમોગુણ તે કોને કહિયે?

ઉત્તર—અજ્ઞાન છે સ્વરૂપ જેનુ, ને જેને વિષે મૂઢપણુ રહ્યુ છે, ને દુઃખને દેનારો, ને જીવોને મુઝાવનારો એવો જે ગુણ તેને તમોગુણ જાણવો

પ્રશ્ન ૧૩૨—રજોગુણ તે કોને કહિયે?

ઉત્તર—રાગ (આસક્તિ પ્રીતિ) છે સ્વરૂપ જેનુ, એવો ને ચચળ એવો ને, નાના (વિવિધ) પ્રકારની ક્રિયાને વિષે આસક્તિનો કરાવનારો ને વિષયને વિષે જીવની વૃત્તિઓને ચોટાડી દેનારો એવો જે ગુણ તેને રજોગુણ કહિયે

પ્રશ્ન ૧૩૩—સત્વગુણ તે કોને કહિયે?

ઉત્તર—રૂડુ છે જ્ઞાન તે જેને વિષે એવો તે પ્રકાશનો કરનારો ને આનંદનો કરનારો ને નિર્મળ પ્રશાંતરૂપ એવો જે ગુણ તેને સત્વગુણ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૪—સાત્વિક તપ તે કયુ જાણવુ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનને પામવાનેજ અર્થે કર્યું હોય ને પછી તે શ્રદ્ધાભક્તિએ ...તા હોય ને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની મૂર્તિને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની પ્રાપ્તિ માટે ...જા કાંઇપણ ફળની ઈચ્છાયે રહિત એવું જે તપ હોય તેને સાત્વિક તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૫—રજોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પોતાની કીર્તિ વધારવાને અર્થે કર્યું હોય, ને લોકને વિષે પૂજાવું જ છે એક ફળ તે જેનું એવું જે તપ તેને રજોગુણી તપ જાણવું..

પ્રશ્ન ૧૩૬—તમોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—શત્રુ આદિક કોઈક જીવના નાશ અર્થે અથવા બીજાને દુઃખાદિ ઉપદ્રવ ...વાને અર્થે (જેમ કે મારણ મોહન ઉચ્ચાટન વશીકરણાદિ કરવા સારૂ) કર્યું ...ય તે કેવળ મૂઢબુદ્ધિયે કરીને (કોઈપણ પ્રકારના જ્ઞાનરહિતપણે કરીને) કર્યું ...ય, ને પોતાને દુઃખરૂપ ફળનું દેનારૂં એવું જે ફળ, જેના થકી પ્રાપ્ત થાય, ...વા પ્રકારનું જે તપ તેને તમોગુણી તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૭—સત્પુરુષોનો નિરંતર મત જગતમાત્રના જીવોને માટે કેવો તે વર્તતો હોય છે ?

ઉત્તર—પ્રવાહી જીવોનું જન્મમરણ સંસૃતિ ટળી જાય અને અખંડાનંદની ...રુપધિ પ્રાપ્તિ થાય તે સારુ હરકોઇ જીવને શ્રીભગવાનની સન્મુખ કરવાને વિમુખ ...નોથી અલગ કરવા, ને આ લોકમાં તથા પરલોકમાં એ જીવનું અત્યંત રૂડું ...ાય એવા હિતોપદેશનું કહેવું તે રૂપી જે મહાન પરોપકારનું દાન દેવું એજ ...ત્પુરુષના હૃદયે નિરંતર અભિપ્રાય રહેલો હોય છે. પોતે જેવું બ્રહ્માનંદનું સુખ ...હાલે છે તેવું સર્વ કોઇ પામે એવો આશય નિરંતર વર્તતો રહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૮—સત્ શિષ્ય કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પરમ એકાંતિક નિત્ય મુક્તજનો જે પ્રમાણે ભગવદ્ધર્મનેજ વિષે ખંડિત વર્તે છે તેવા ધર્મને વિષે કુશળ એવા જે સદ્ગુરુ તેમની શિક્ષાને અનુ...ારેજ નિરંતર વર્ત્યા કરે તેને સત્ શિષ્ય કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૯—ચતુર પુરુષ કોને સમજવો ?

ઉત્તર—સ્ત્રીના કટાક્ષે કરીને અને કાંચનાદિને દેખીને જે મોહને ન પામે તેજ ...તુર જન છે. જગતમાં રીત પ્રસિદ્ધ છે કે, સ્ત્રી સર્વ વ્યવહારે ચતુર હોય પણ ...ો જો પોતાના સ્વામીને રીઝવી તેની પ્રસન્નતા (કૃપા) ન મેળવી તો તે સર્વ ...ક્કારવા યોગ્ય ગણાય તેમ સર્વ ઉપાયે કરીને પ્રભુને રીઝવવા એજ છે.

પ્રશ્ન ૧૪૦—વિશ્વાસ કરવા યોગ્ય નહિ એવો કીયો પદાર્થ છે ?

ઉત્તર—વિષ કરતાં પણ અધિક ઝેરરૂપ વિષય અને તેના નિવાસરૂપ સ્થાન ...વી જે નારી તેનો કદિ પણ વિશ્વાસ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૧૪૧—કયી તૃષ્ણા જીર્ણ (જૂની) થતી નથી ?

ઉત્તર—દેહની જીર્ણ, વૃદ્ધ, જનાવસ્થા ને તેમજ મૃત્યુની છે પણ તે સમીપમાં આવ્યા છતાં પણ ધનાદિકની આશા, તથા જીવવાની આશા તે તો કદી પણ જીર્ણ થતીજ નથી.

પ્રશ્ન ૧૪૨—જગતમાં લાભહીન કોણ છે?

ઉત્તર—શ્રીહરિ થકી વિમુખ હોય તેને લાભહીન જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૩—સાચો લાભ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીહરિની જે પ્રાપ્તિ તેજ ખરો લાભ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૪—સત્વગુણી કર્મ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—રાગદ્વેષાદિથી રહિત એવું ને રૂડી બુદ્ધિયે કરિને કર્યું એવુ ને પોતાના વર્ણાશ્રમને યોગ્ય એવું કર્મ કર્યું હોય ને શ્રીભગવાન વિના બીજા કોઇપણ ફળના અનુસંધાને રહિત જે કર્મ તેને સત્ત્વગુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૫—રજોગુણી કર્મ તે કોને જાણવું ?

ઉત્તર—ફળની અભિલાષાને વિષે યોગ્ય એવો જે ઉપાય તેણે યુક્ત, ને પ્રીતિએ સહિત એવું જે કર્મ તેને રજોગુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૬—તમોગુણી કર્મ તે કોને જાણવું ?

ઉત્તર—હિંસામય એવુ ને પોતાને દુઃખ થાય એવું હોય તેને ન જુવે, તથા પોતાનો નાશ થાય એવું હોય તેને ન જુવે, તથા પોતાનું જે બળ તેને ન જુએ, એ પ્રકારે જોયા વિના ને તપાસ કર્યા વિના જે પુરુષ કર્મ કરે છે તેને તમોગુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૭—સત્વગુણી કર્ત્તા તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—ઉત્સાહે યુક્ત, અને ધીરતાયે યુક્ત, ને પોતાનુ ધાર્યું થાય તથા ન થાય તો પણ તેને વિષે હર્ષ શોક ન પામે એવો, ને અહંકારે રહિત એવો, ને ફળની ઇચ્છાયે રહિત એવો જે કર્ત્તા તેને સત્ત્વગુણી કર્તા જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૮—રાજસી કર્મનો કરનારો તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—નિરંતર પંચ વિષયને વિષે આસક્ત એવો ને ક્રિયાના ફળની ઇચ્છાવાળો જે પોતાના સ્વાર્થને અર્થે બીજાને પીડાનો કરનારો એવો ને હર્ષ શોકને પામનારો એવો જે કર્તા હોય તેને રજોગુણી કર્તા જાણવો

પ્રશ્ન ૧૪૯—તમોગુણી કર્તા તે કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—પારકામાં યદ્યપિ સદ્દગુણના ભંડાર હોય છતાં તેને વિષે દોષબુદ્ધિએ કરીને જોવું તેનું નામ અસૂયા કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૫૧—ઈર્ષ્યા કોને કહે છે?

ઉત્તર—બીજાની જે મ્હોટમતા તેને દેખી ન ખમાય તેનું નામ ઈર્ષ્યા કહે છે?

પ્રશ્ન ૧૫૨—કામના ઉદ્દભવ થવાનું મૂળ કારણ શું છે?

ઉત્તર—મનને વિષે પંચ વિષયના અનુભવનો કરનારો એવો જે ઘાટરૂપ સંકલ્પ તેજ કામનાનું મૂળ છે.

પ્રશ્ન ૧૫૩-૧૫૪—સાચું મરવું અથવા જીવવું કોને જાણવું?

ઉત્તર—જહેનો પુનઃ જન્મ ક્યારે પણ ન થાય, એટલુંજ નહિ, પણ જે માતાયે જન્મ આપવા માટે ગર્ભરુંધનમાં રાખી પ્રસવ્યો તે માતાને પણ ફરી ગર્ભવાસનામાં આવવું ન પડે એવા સાચા ભગવદ્દભક્તોનું મરણ તેજ સાચું મરણ, અથવા અખંડિત જીવ્યુ ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૫—જન્મ્યો કોને જાણવો?

ઉત્તર—જેનું ફરીથી મરણ ન થાય ને જેણે જન્મીને મનુષ્યદેહ ધર્યાનું સાફલ્ય સાર્થક્ય પોતાનું કરી બીજા જનોને પણ એવા ભગવદ્ધર્મને માર્ગે લગાડયા એજ સાચું જીવન જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૫૬—જન્મ ધર્યાનું સાફલ્યપણું તે ક્યારે સમજવું?

ઉત્તર—દેહને વિષે આત્મબુદ્ધિ તેનો સર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરીને અને અજાક્રૂપ એવો જે જીવાત્મા તેને પોતાનું સ્વરૂપ માનીને પરમેશ્વરનો દૃઢ આશ્રય કરવો. એજ જન્મ ધર્યાનું સાફલ્યપણું છે, કેમકે સર્વ પદાર્થ માત્ર વિષે પોતાની સત્તા ન માનતાં હું કર્તાપણું ને આ મ્હારૂં એ બે વાતની અહંતામમતાના ત્યાગપૂર્વક સર્વના કર્તા ભર્તા સંહર્તા પરબ્રહ્મનેજ સર્વ આત્મનિવેદન સમ્યક રીતે અર્પી દેવું તે, પરમાત્માનો અંશરૂપ આત્મા તેણે અંશીરૂપ બ્રહ્મ તેમને ઉદ્દેશીનેજ તે પરબ્રહ્મના નિતાર્થે નિષ્કામ બુદ્ધિએ ભગવદ્ધર્માચરણ સદ્દગુરુ સત્પુરુષોના સત્સંગમાં રહીને કરવું એજ ખરેખર જન્મ ધર્યાનું સાફલ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૭—સત્વગુણી બુદ્ધિ તે કયી જાણવી?

ઉત્તર—પ્રવૃત્તિકર્મ ને નિવૃત્તિકર્મ, તેના સ્વરૂપને જે યથાર્થપણે કરીને જે બુદ્ધિ જાણતી હોય તથા કરવા યોગ્ય અને ન કરવા યોગ્ય તથા ભયને અભય તથા બંધનને મોક્ષ તથા ન્યાયને અન્યાય એ સર્વના સ્વરૂપને યથાર્થપણે કરીને જે બુદ્ધિ જાણતી હોય તે બુદ્ધિને સત્વગુણી જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૫૮—રજોગુણી બુદ્ધિ તે કયી જાણવી?

ઉત્તર—ન કરવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય એવું જે કર્મ તથા અધર્મ તેમને યથાર્થપણે કરીને જે બુદ્ધિ જાણતી ન હોય તે રજોગુણી બુદ્ધિ જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૫૯—તમોગુણી બુદ્ધિ તે કયી જાણવી?

ઉત્તર—જે બુદ્ધિ અધર્મને વિષે ધર્મને માનતી હોય ને જે અર્થ હોય તેને અનર્થ કરી નાખતી હોય તેવી બુદ્ધિને તમોગુણી જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૦—તમોગુણી ભક્તિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—પોતાના શત્રુનો નાશ કરવાને અર્થે અથવા બીજાનુ અહિત કરવાને અર્થે શ્રીલક્ષ્મીપતિનુ જે ભજન કરવુ તથા દભે કરીને જે ભજન કરવુ તથા બીજો કોઇક દેવપૂજન કરતો હોય તેને દેખીને તેના ઉપર મત્સર લાવીને જે પૂજન કરવુ તેને તમોગુણી ભક્તિ જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૧—રજોગુણી ભક્તિ કયી જાણવી ?

ઉત્તર—રાજ્ય ધન આદિક ઐહિક માયિક સુખાદિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે સકામપણે ભગવાનની ભક્તિ કરવી તથા સાલોક્ય સાયુજ્ય સામીપ્ય અને સાર્ષ્ટિ એ ચાર મુક્તિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે ભક્તિ કરવી તથા લોકને વિષે પોતાની કીર્તિ વધારવા સારૂ જે ભક્તિ કરવી તેને રજોગુણી ભક્તિ જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૨—સત્વગુણી ભક્તિ તે કયી જાણવી

ઉત્તર—પોતાના પાપોનો નાશ કરવાને અર્થે સમગ્ર પાપને નાશ કરનાર એવા જે શ્રીહરિ તેમની જે ભક્તિ કરવી તથા આ વસ્તુ શ્રીભગવાનને બહુ પ્રિય છે ને આ પદાર્થ શ્રીભગવાનને અતિશય ગમે છે એવા પ્રકારે શ્રીહરિના સુખ સતોષને સરીખપણાનાજ સકલ્પે કરીને અતિશય શ્રદ્ધાએ સહિત શ્રીભગવાનનુ અપાર માહાત્મ્યજ્ઞાન જાણીને શ્રીભગવાનની અનન્યભક્તિ કરવી તેને સત્વગુણી ભક્તિ જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૩—દર્ભના અગ્ર સરખી ઝીણી બુદ્ધિ જેની હોય એવો પુરુષ કોને જાણવો ?

ઉત્તર—પાતાલલોક થકી કરીને તે મૂળ પ્રકૃતિ પુરુષના લોક પર્યંત સર્વ લોકના વૈભવમાત્રને અસ્થિર જાણીને જે શ્રીહરિનેજ નિષ્કામબુદ્ધિએ અખડિત ભજે તેને દર્ભના અગ્ર સરખી તીક્ષ્ણ બુદ્ધિવાળો જાણવો

પ્રશ્ન ૧૬૪—મોભાગ્ર જેવી અથવા મૂસળના અગ્ર ભાગ સરખી સ્થૂળ બુદ્ધિ વાળો કોને જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીપરબ્રહ્મ પરાત્પર પૂર્ણ પુરુષોત્તમ વિના ૧૪ ચૌદ લોક લઇને પ્રકૃતિ પુરુષ પર્યંતના નાશવત સુખને વિષે સત્યપણાની બુદ્ધિ કરીને તેવા સુખોને જે ઇચ્છે છે તેને મોભાગ્ર અથવા મૂસલાગ્ર જેવી જડબુદ્ધિવાળો જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૬૫—સત્ય વિષય તે કિયા જાણવા ?

ઉત્તર—યદ્યપિ પચપર્વાત્મક અવિદ્યા સબધી જે પચવિષય તે બાધ્યમાન છે, તથાપિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનોજ જેમા સબધપણે દઢ સબધ ચાલુ હોય તેવા, એટલે પરમાત્માને ઉદ્દેશી તેમના સબધી જે શબ્દ, સ્પર્શ રૂપ, રસ ને ગધના જે ભગવત્પ્રસાદી તુલ્યના જે પાચ પ્રકારના બ્રહ્મરસના વિષય તેજ માત્ર સત્ય છે ને

આર્તિપૂર્વક કૃષ્ણપ્રપત્તિવાળા તે જે જે દેશને વિષે વિચરતા હોય અથવા વાસ કરીને વિરાજતા હોય એવા જે દેશ, તથા ભગવદવતારે અથવા શ્રેષ્ઠભક્તિજ્ઞાનાદિ પંથના વૈષ્ણવાચાર્યોએ પધારીને પોતાના ચરણારવિંદે કરીને અંકિત એવો જે દેશ, તથા શ્રીયમુનાજી, શ્રીગિરિરાજજી, વૃંદાવન, ગોકુલ, મથુરા, દ્વારિકા આદિ સપ્ત પુરીનાં મહાધામો તથા શ્રીવિષ્ણુપાદોદકી શ્રીગંગાજી આદિ લઇને સર્વ તીર્થો, તથા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનાં મંદિર સંબંધી સમીપ એવો જે દેશ, શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ અને વૈષ્ણવોના ગંધને પામ્યો એવા જે તે સર્વ દેશને તે ઉત્તમ સુદેશ જાણવો ?

પ્રશ્ન ૧૭૨—અસત્ દેશ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—ચારે વેદ તથા શ્રીમદ્ભાગવતાદિક પુરાણ તથા યાજ્ઞવલ્ક્ય પરાશરાદિ મહાન્ ઋષિપ્રણીત સ્મૃતિ આદિ લઇને ભગવદ્ધર્મપ્રતિપાદક સર્વ સ્મૃતિઓને વિષે કહ્યા એવા જે વર્ણ આશ્રમના ધર્મપૂર્વક ભગવદ્ધર્મ તે થકી અવળા એવા જે પાખંડધર્મના આચરણ કરનારા જે દેશમાં રહેતા હોય એવો જે દેશ તે અસત્ દેશ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૩—સત્ કાલ કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ, શ્રીરામચંદ્ર, શ્રીનૃસિંહજી, શ્રીવામનાવતાર આદિક જે શ્રીભગવાનનાં ઉત્સવ દિવસ તથા ૨૪ એકાદશીઓ શુદ્ધ ભાગવતધર્મપ્રણાલિકા સિદ્ધાંતાનુસાર વર્તન થતું હોય એવો જે કાળ તે સત્ કાળ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૪—અસત્ કાળ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—જે કાળને વિષે મનુષ્યોની મતિઓ મલિન વર્તતી હોય ને કેવળ અધર્મ તેજ સર્વ પ્રકારે વર્તતો હોય એવો જે કાળ તે અસત્ કાલ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૫—સત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોક અને પરલોકને વિષે પોતાને સર્વ સુખને પ્રાપ્ત કરનારી એવી અને સ્વધર્મ જ્ઞાન ને વૈરાગ્ય એ ત્રણે અંગે કરીને યુક્ત એવી જે પરમેશ્વરની નવધા પ્રકારની ભક્તિ જેમાં દશમી પ્રેમલક્ષણાત્મક વરહ સંયોગાનુભવ રૂપની સ્નેહાસક્તિપ્રધાન એવી ભક્તિ શ્રી ભગવાનને પ્રસન્ન કરનારી જે ભગવદ્ધર્મપણાંની સર્વ ક્રિયા તેજ સર્વ પ્રકારે શુદ્ધ નિર્ગુણ સત્ ક્રિયા જાણવી

પ્રશ્ન ૧૭૬—અસત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોકને વિષે અને પરલોકને વિષે પોતાનુ ભુડું કરે એવી અને જેણે કરીને શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ કે સત્પુરુષ રાજી નહિ એવી જે ક્રિયા તે અસત્ક્રિયા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૭—સત્સંગતિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—શ્રીહરિને વિષે તથા ધર્મજ્ઞાન અને વૈરાગ્યાદિક ષટ્સંપત્તિ ગુણે કરિને યુક્ત એવા જે શ્રીહરિના ભક્તજન તેમને વિષે પ્રીતિએ કરિને જે પ્રસંગ કરવો તેનું નામ સત્સંગતિ જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૮—દુઃસંગ કોને જાણવો ?

ઉત્તર—સતધર્મેરહિત એવા જે અસતપુરુષ તેમને વિષે જે પ્રસંગ તેને દુઃસંગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૯—સત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું?

ઉત્તર—શ્રીરામકૃષ્ણાદિક ભગવદવતારની દિવ્ય એવી મૂર્તિઓ તથા જેમાં પરબ્રહ્મ ને તેમના અવતારોનું પ્રાકટ્ય, લીલા, ચરિત્રયુક્ત ધર્મ જ્ઞાન ને વૈરાગ્યાદિક ગુણયુક્ત એવી જે શ્રી ભગવાનની અચલ સ્નેહાત્મક નિષ્કામ બુદ્ધિરૂપની ભક્તિ તેનું પ્રતિપાદન કરનારૂં એવું જે શાસ્ત્ર તે વેદાદિક સમાન ઉત્તમ સત શાસ્ત્ર છે એમ જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૮૦—અસત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું?

ઉત્તર—જે શાસ્ત્રને વિષે શ્રીપૂર્ણપરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનું ને ધર્મનું યુક્તિએ કરીને ખંડન કર્યું હોય એવું જે શાસ્ત્ર તે સકલ, અસત શાસ્ત્ર લહીને તેનો સર્વથા અનાદર રૂપે ત્યાગ કરવો.

પ્રશ્ન ૧૮૧—સત દીક્ષા તે કંઇ જાણવી ?

ઉત્તર—વેદ શાસ્ત્ર પુરાણ ઇતિહાસ પંચરાત્રાદિ તંત્ર ગ્રંથ ભાગવત ગીતા ઉપનિષદ વ્યાસસૂત્ર ને ભગવદ્ભક્તાચાર્યો રચિત ભાષ્યો સ્મૃતિઓ આદિકમાં સ્થાપન કરેલો વર્ણ આશ્રમ ને ઉચિત મહામાંગલ્યસંસ્કારપૂર્વક પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ માટે મુમુક્ષુ કોટિનાં લક્ષણે યુક્ત થઈ શુદ્ધ વૈદિક ભક્તિમાર્ગના પ્રાચીન અનાદિસિદ્ધ સતસંપ્રદાયોમાંથી પોતપોતાના રુચિ અનુકૂલતા પ્રમાણે શુભ વૈષ્ણવી દીક્ષા સ્નેહાર્ત પૂર્વક લેવી–કે જે ઉપાયે ચાલવાથી બ્રહ્મનો સાક્ષાત્કાર સંબંધ થાય. મંત્રાર્થપૂર્વક ગ્રહણ કરી મંત્રના શબ્દો પરત્વે લક્ષપૂર્વક બ્રહ્મસ્વરૂપના ધ્યાને પ્રવર્તમાન થઇ તેમના સ્મરણે સંયુક્ત થઇ અહિંસા આદિક રુડા સત્ ધર્મે પ્રવર્તમાન થઈ બ્રહ્મની શરણાગત પૂર્વક સર્વાત્મનિવેદન કરી, ઊર્ધ્વપુંડ્ તિલક દ્વાદશ સ્થાને ધરી, શુદ્ધનિર્ગુણ કરી શ્રીતુલસીજીના કાષ્ઠની ભગવત્પ્રસાદી બેવડી કંઠી કંઠે ધારણ કરી તથા ભગવદાયુધાદિ પટ્ મુદ્રાયે યુક્ત ગોપીચંદનનાં ચિન્હ ધારણ કરવાં. સર્વ દીક્ષાઓમાં ઉત્તમ દીક્ષા આત્મધર્મની તો વૈષ્ણવ દીક્ષા તેજ છે ને તે સર્વોપરી છે.

પ્રશ્ન ૧૮૨—અસત્ દીક્ષા તે કયી જાણવી?

ઉત્તર—જેનું વિધાન વેદશાસ્ત્રાદિ શુદ્ધ સત્ત્વ પુરાણ ઇતિહાસ સ્મૃત્યાદિ પંચરાત્રમાં ન હોય એવા પાખંડધર્મરૂપની કોઇ પણ દીક્ષા ન લેવી. જે અસત દીક્ષામાં આગળ વેશ ભુંડો કુરૂપ થઇ જતો હોય, જેમાં વામમાર્ગી કુંડાપંથી કોલ માર્ગી આદિમાં અધર્માચરણ માર્ગે દોરવતા હોય તેવી દીક્ષાએ કરીને શાંતિ તો થાય નહિં, પણ ઉલટો ઉદ્વેગ થાય ને વિષ્ણુભગવાનના ચિન્હે રહિત એવી જે દીક્ષા તે તો અસતદીક્ષા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૮૩—સત્ મંત્ર તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—મંત્રનો જે ભણનારો તેની બુદ્ધિને શાંતિનો કરનારો એવો ને શુદ્ધ સત્વગુણી નિર્ગુણ એવા પરબ્રહ્મ ને તેમનાજ અવતારાદિક સ્વરૂપના યતે નામે યુક્તતમ અથવા દાસધર્મે શરણાગતિપૂર્વક સર્વાત્મનિવેદન બ્રહ્મસંબંધ થાય એવો કહેનારો જે મંત્ર તેજ સત મંત્ર જાણવો. ઉત્તમ બ્રાહ્મણાદિકને માટે પ્રણવબીજ મંત્રોચ્ચારસંયુક્ત તે પરબ્રહ્મનો મંત્ર તેનું ગ્રહણ કરવું તેજ સન્મંત્ર છે.

પ્રશ્ન ૧૮૪—અસત્ મંત્ર કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—રજોગુણી અને તમોગુણી વા મલિન ક્ષુદ્ર દેવતાદિકના મંત્રો મારણ, મોહન, ઉચ્ચાટન, વશીકરણાદિક બીજાને ઉપદ્રવ કષ્ટ કે હાનિ દેનારા તેવા મંત્રોને સદા અસત્મંત્ર જાણી તેનો અનાદર કરી ગ્રહણ કરવા નહિં.

પ્રશ્ન ૧૮૫—સત્ધ્યાન તે કીયુ જાણવું ?

ઉત્તર—મૂળ અનાદિ સ્વયંસિદ્ધ જે પરાત્પર ત્રિગુણાતીત પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ અને તેમના અવતારો અને તેમની ૮ પ્રકારે શિષ્ટ પુરુષોએ સિદ્ધાંત સ્થાપન કરેલી મૂર્તિઓ તથા સ્વયંભૂ ભાવી મહા અવતારો (જેના કે શ્રીજગન્નાથરાયજી, શ્રીનાથજી, શ્રીરંગજી, શ્રીબદરીનારાયણાદિ) તથા ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ નિરૂપણ કરેલી રીતે પૂર્ણ પરબ્રહ્મની અપ્રાકૃત દિવ્ય વેદ શ્રુતિસ્મૃત્યાદિપૂર્વક પ્રતિપાદન કરેલી રીતે તેમનું એકાગ્રચિત્તે સંલગ્ન મનબુદ્ધિ વૃત્તિ તાદાત્મ્યૈકપણે જોઈને તદ્રૂપ રસાત્મક ભાવે ધ્યાન કરવું.

પ્રશ્ન ૧૮૬—અસત્ ધ્યાન કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—મનઃકલ્પિતપણે સતશાસ્ત્રના સિદ્ધાંતોથી વિરુદ્ધપણે અથવા ઉપાસન ધ્યાન કહ્યું તેથી ઉલટ કિંવા વિપરીતપણે માયિક પ્રાકૃત ધ્યાન અન્ય જીવાદિકનું કરવું તે તે અસત્ ધ્યાનજ સમજવું.

પ્રશ્ન ૧૮૭—શાસ્ત્ર શું હોય તે કહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ, અધર્મ, કામ, ને મોક્ષ અથવા ધર્મ, અર્થ, કામ ને મોક્ષ એ પદાર્થના બોધને જે કરતું હોય તે શાસ્ત્ર જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૮૮—જે પુરુષ પોતાના આત્યંતિક કલ્યાણની વૃત્તિવાળો હોય અથવા પોતાની વૃદ્ધિ થાય એવું જે ઈચ્છતો હોય તેણે શું કરવા યોગ્ય છે.

ઉત્તર—પૂર્વે કહ્યા એવા જે સત્ દેશ સતકાલ, સતક્રિયા, સતસંગ, એ આદિક જે સારાં આઠ વાનાં તેમનો જોગ રાખવો, એ કરવાથી ત્યાં આત્યંતિક કલ્યાણ તથા સર્વ શુભવૃદ્ધિ જરૂર થાયજ.

પ્રશ્ન ૧૮૯—ધર્મનો સર્ગ તે કિયો ?

ઉત્તર—શમ તથા સત્ય, શૌચ તથા ક્ષમા, તપ તથા દાન, દયા તથા દમ, એ આદિક સર્વે ધર્મનો સર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૯૦—અધર્મનો સર્ગ કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—ખોટું બોલવું તથા ક્રોધ કરવો તથા જીવહિંસા તથા મલિનપણું તથા ઇંદ્રિયોનો નિગ્રહ ન કરવો એ આદિક સર્વે અધર્મનો સર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૯૧—શમ તે કોને કહેવો ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનના સ્વરૂપને વિષે સ્થિરતાએ કરીને જોડાયલી જે બુદ્ધિ તેને શમ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૯૨—દમ કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પોતાનો જે ઇંદ્રિયોને સમૂહ તેનને વિષય થકી પાછાં વાળી તે સવ મનોનિગ્રહ કરીને નિયમમાં રાખવો તેને દમ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૯૩—ધીરજપણું તે કોને જાણવું ?

ઉત્તર—શિશ્નુ ઇંદ્રિય અને જીભ્હા એ બન્નેને વિશેષપણે કરીને જે જીતવું તેને ધીરજ (ધૈર્ય) જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૯૪—તિતિક્ષા કોને કહે છે ?

ઉત્તર—દેહને વિષે દુઃખ આવી પડે તે સહન કરવું તેને તિતિક્ષા કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૫—શૌચ કોને કહે છે ?

ઉત્તર—શુદ્ધ પવિત્રતા આચારપૂર્વક કર્મને વિષે અંગપણે કરીને જે વર્તવું તેને શૌચ કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૬—સત્ય કોને કહે છે ?

ઉત્તર—સત્ય પરબ્રહ્મ છે, ને તેનાંજ અખિલાત્મક ચરાચર સર્વસ્વરૂપ છે, તે એકજ સત્ય પરબ્રહ્મ સર્વમાં કાર્યકારણપણે વ્યાપક અનુસ્યૂત રહ્યા છતાં તે અલિપ્ત નિર્વિકાર શુદ્ધ અદ્વૈત વ્યતિરિક્ત (જુદા) પણ છે. તેજ અખિલાત્મક બ્રહ્મનો અંશરૂપ આત્મા છે તે પણ સત્ય છે. તેમાં આત્મબુદ્ધિનિષ્ઠ, સ્પષ્ટ નિઃસંદેહ, જેનો બીજો અર્થ ન થઇ શકે એવું સત્ય ધર્મ નીતિયુક્ત જે વચન બોલવું તે સત્ય કહેવાય છે.

પ્રશ્ન ૧૯૭—તપ કોને કહે છે ?

ઉત્તર—કાયાવડે કરીને, વાણીવડે અને મને કરિને તપ થાય છે. કામનો જે ત્યાગ કરવો તે પણ તપનુંજ (અંગ) લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૧૯૮—શ્રેષ્ઠ દાન કોને કહિયે ?

ઉત્તર—માયાના અને કાળના ભયે રહિત એવું જે આત્યંતિક કલ્યાણનું જે મોક્ષરૂપ અથવા મોક્ષાધિક શ્રીકૃષ્ણના ભજનાનંદ સ્વરૂપાનંદનું જે દાન કરવું તે સર્વથી શ્રેષ્ઠ દાન જાણવું

પ્રશ્ન ૧૯૯—સ્વર્ગસ્થાનરૂપ સ્થિતિ તે આને આ દેહમાં ક્યારે થઈ શકે ?

ઉત્તર—જ્યારે જ્યારે સત્વગુણનો ઉદય થતો હોય ત્યારે ત્યારે સ્વર્ગસ્થાન અનિરૂપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૨૦૦—શૌર્યવાન કોને કહિયે?

ઉત્તર—કોઈક જાતનો ભૂંડો સ્વભાવ પડી ગયો હોય તેને જીતવો તેનુ નામ શૌર્ય કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૧—સમગ્ર જગતને કોણ જીતી શકે?

ઉત્તર—જે પોતાના મનને જીતી લે તેણે અખિલ જગતને જીત્યુ એમ કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૨—માહાત્મ્યે સહિત જ્ઞાન તે કોને કહ્યું છે?

ઉત્તર—ક્ષરાક્ષર અને લોકાલોકાદિ પર્વતથી ઉલ્લંઘીને આગળ જતાં શ્વેતદ્વીપ ક્ષીરાબ્ધિ અને બદરીકાશ્રમાધિપતિ નરનારાયણાદિ અનંત કોટિ બ્રહ્માંડ બ્રહ્માંડે બિરાજતા શ્રીહરિનાં અગણિત સ્વરૂપોથી પણ પર, રમાવૈકુંઠાદિ સ્થાનથી પણ શ્રેષ્ઠ, અક્ષરાત્મક નારાયણ વિષ્ણુ પ્રધાનપુરુષ આદિ ત્રિવિક્રમ વિરાટ સ્વરૂપાદિથી પણ પણ શ્રેષ્ઠ સર્વ ધામને સર્વ સ્વરૂપોની ઉત્પત્તિનું મૂળ સ્થાન, ને સર્વ અવતારના અવતારી શ્રીરાધિકારમણ શ્રીવેદશ્રુતિરૂપ શ્રીગોપીજનોના પ્રાણવલ્લભપ્રિય ગોલોક અધિષ્ઠિત વિરાજમાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સ્વયંપ્રકાશિત, જેમના એક એક નખચંદ્રને વિષે કોટાનકોટ સૂર્યસમપ્રભારૂપ તેજની કાન્તિએ કરીને સર્વ પ્રકાશમાત્રને ઝાંખાં કરી નાખે એવા અગણિત પ્રકાશવત પરમાનંદ છતાં ભક્તોને શીતળ કોટાનકોટિ ચંદ્રના સમાન મધુરામૃતથી વૃષ્ટિરૂપ અદેયદાનકર્તા ને સર્વ કારણના પણ કારણ, મહાકારણના પણ મૂળ સ્વેચ્છાએ સર્વ કરનાર એવા જે સદા નિત્ય મહાન્ દિવ્ય અમાયિક મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, તે પોતે જીવોના કલ્યાણને અર્થે દૈવી જીવોને નિજ સ્વરૂપની પ્રાપ્તિ કરાવી આનંદદાન વાસ્તે, તથા ધર્મના સ્થાપનને અર્થે અધર્મનું છેદન કરવા સારૂ, તથા સાધુ, ગાય, પૃથ્વી આદિક દૈવીજનો ઉપર અનુગ્રહ કરવા, તેમને સુખ હિતાર્થ કરવા આદિ અનેક કારણને અર્થે પોતાના અનંત પ્રકારના અમાપ દિવ્ય પ્રતાપને સંતાડીને પ્રાકૃતવત્ માનુષી લીલા ચેષ્ટા કર્તા સદા નિર્દોષ પૂર્ણ સદ્ગુણ વિગ્રહ દિવ્ય મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ જેવા ભગવદવતાર બિરાજમાન છે તેને સદા સર્વદા નિત્ય અખંડિત છે એ પ્રકારે જે જાણવુ ને તેને માહાત્મ્યે સહિત જ્ઞાન કહીએ.

પ્રશ્ન ૨૦૩—અંતઃકરણની શુદ્ધિ થવાનો શ્રેષ્ઠ ઉપાય તે કિયો છે?

ઉત્તર—સત્ અને અસત્ એવા જે ભોગ તેમને યથાર્થપણે જાણીને સત્શાસ્ત્ર તેમણે પ્રતિપાદિત એવા જે સત્ વિષયના ભોગ તેમને ભોગવવા તે સત્શાસ્ત્ર તેમણે પ્રતિપાદન કર્યા એવા જે અસત્ વિષયભોગ તેમનો સર્વથા ત્યાગ કરવો એ અંતઃકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે. અથવા શ્રીભગવાન સબંધી જે વિષયને ભોગવવા, તે ભગવાનના સંબંધથી રહિત એવા જે સર્વ અસત્ પંચવિષયભોગ તેનો સર્વથા તીન ત્યાગપણે છોડવો એ અંતઃકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે.

પ્રશ્ન ૨૦૪—શબ્દનું શું લક્ષણ છે?

ઉત્તર—અર્થમાત્રનું આશ્રયપણુ ને સર્વ વ્યવહારનું હેતુપણુ જે બોલનારી વ્યક્તિ સ્વરૂપ એ આદિકનું જણાવી દેવાપણું ને આકાશને વિષે રહેવાપણું ને આકાશની માત્રાપણુ એ શબ્દનું લક્ષણ છે,

પ્રશ્ન ૨૦૫—સ્પર્શનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—ઉષ્ણપણું ને શીતળપણું ને કઠણપણું ને કોમળપણું ને ત્વચા ઇન્દ્રિયે કરીને ગ્રહણ કરવાપણું ને વાયુનું માત્રાપણું એ સ્પર્શનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૦૬—રૂપનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—સર્વ પદાર્થમાત્રના આકારનું જણાવી દેવાપણું ને દેશ કાળ ને જાતિ ને ગુણ તેમણે કરીને અન્ય અવસ્થાને પામવાપણું ને નેત્રે કરીને ગ્રહણ કરવાપણું ને તેજનું માત્રાપણું એ રૂપનું લક્ષણ જાણવું.

પ્રશ્ન ૨૦૭—રસનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—જળનું માત્રાપણું ને માધુર્ય ને તીખાપણું ને કષાયતાપણું ને ખાટાપણું ને કડવાપણું ને જીહ્વા ઇંદ્રિય કરીને ગ્રહણ કરવાપણું એ રસનું લક્ષણ છે,

પ્રશ્ન ૨૦૮—ગંધનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—પૃથ્વીની માત્રાપણું ને સુગંધપણું ને દુર્ગંધપણું ને ઘ્રાણ ઇંદ્રિયે કરિને ગ્રહણ કરવાપણું એ જે તે ગંધનું લક્ષણ જાણવું.

પ્રશ્ન ૨૦૯—પૃથ્વીનું લક્ષણ શું છે ?

ઉત્તર—સ્થાવર જંગમ પ્રાણિમાત્રના શરીરનું પ્રગટવાપણું ને લોક કરીને સ્થાનકપણું ને દેહધારિમાત્રને ધરી રહેવાપણું ને આકાશાદિક ૪ ભૂતને વિભાગ કરવાપણું એ પૃથ્વીનું લક્ષણ જાણવું.

પ્રશ્ન ૨૧૦—જળનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પૃથ્વી આદિક દ્રવ્યનું પીંડીભાવ કરવાપણું ને પૃથ્વી થકી ભેદુપણું ને આર્દ્ર કરવાપણું ને તૃપ્તિ કરવાપણું ને મૃદુતાનું હેતુપણું ને તરસ્યાને તાપનું હરવાપણું પ્રાણિમાત્રનું જીવવાપણું એ જળનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૧—તેજનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પચાવવાપણું, ને પ્રકાશ કરવાપણું, ને રસાદિનું પાન કરવાપણું, ને ક્ષુધાપણું ને તૃષાપણું ને કાષ્ઠાદિકનું ભસ્મ કરવાપણું ને સુકાવી નાંખવાપણું ને દ્રુત દ્રવ્યનું સ્તંભન કરવાપણું શીતને હરવાપણું એ તેજનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૨—વાયુનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—તૃણપણું એ આદિકને ભેગું કરવાપણું ને વૃક્ષાદિકને કંપાવવાપણું ને શબ્દાદિક પાંચ વિષયનું જ્ઞાનેન્દ્રિયાદિ પ્રત્યે પમાડવાપણું એ વાયુનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૩—આકાશનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—શબ્દમાત્રને દેહની બારલી કોર ને દેહની અંદરની કોર અવકાશ દેવાપણું એ આકાશનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૪—કલ્યાણનો હેતુ કોણ છે ?

ઉત્તર—મનુષ્ય સરખી મૂર્તિને ધારણ કરનારા એવા જે શ્રીકૃષ્ણાદિક ભગવદવતાર તે તથા તે શ્રીકૃષ્ણની જ્ઞાનોત્તર પરાભક્તિ પ્રવર્તાવી વિસ્તાર કરી સ્વના

વર્તન કરી બીજાને બોધ લેવા યોગ્ય આચરણની છાપ જડીત બેસાડનારા એવા સંપ્રદાયના આચાર્યો શ્રીસદ્ગુરુ તથા એવા શ્રીહરિને શ્રીઆચાર્યોના કૃપાપાત્ર પરમ એકાંતિક ભક્તજનો તથા એવી શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની અને તેમના એકાંતિક ધર્મ પ્રવર્તક આચાર્યોની પ્રતિમા એ સર્વે કલ્યાણના હેતુરૂપ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૫—વૈરાગ્ય ત્રણ પ્રકારે, ઉત્તમ, મધ્યમ અને કનિષ્ઠ હોય છે તેના શા લક્ષણો છે?

ઉત્તર—ઉત્તમ વૈરાગ્યવાન હોય તે ભગવતની ઇચ્છા વા આજ્ઞા અનુસારે કે પોતાના પ્રારબ્ધ કર્મવશે કરીને વ્યવહારમાં રહે પણ તેમાં જનક વિદેહીની પેઠે તે વ્યવહારમા આસક્તિરહિત રહે અને પોતાના પ્રારબ્ધાનુસારે પંચ વિષયના ભોગ પ્રીતિયે રહિત ઉદાસીયુક્ત ભોગવે અને વિષયને વિષે નિરંતર દોષનેજ દેખતો રહે ને વિષયને શત્રુ જેવા જાણે અને સંત, સત્‌શાસ્ત્ર અને ભગવાનની સેવાનો નિરંતર સંગ રાખે અને કદાચ દેશકાળ પાત્ર ક્રિયા સંગ આદિ વિપરીત વિષમાપત્તિ આવી પડે તો પણ એની ઉપર કહી સમજણ તે નિરંતર દૃઢ કાયમ રહે તે ઉત્તમ વૈરાગ્ય છે મધ્યમ વૈરાગ્યવાળો ઉપરનાં લક્ષણોવાળો દેશ, કાળ. ક્રિયા, પાત્ર, સંગ મળે ત્યા સુધીજ તે દૃઢપણે પણ કઠણ વિષમાપત્તિમાં વૈરાગ્ય મંદ પડે તેને મધ્યમ જાણવો. કનિષ્ઠ વૈરાગ્યથી.તો સારા પાંચ વિષય પાત્ર થાય ત્યારે તે ભોગવવામાં આસક્તિયુક્ત બંધાઈ જાય તેને મંદ વૈરાગ્યવાન જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧૬—સત્સંગમાં વિવેકીજન કેવી રીતે વર્તે છે?

ઉત્તર—નિનદિન પ્રત્યે પોતાના અવગુણને દેખે. અને શ્રીભગવાન આચાર્ય અને ભક્તને વિષે સદાય સદ્‌ગુણીજ દેખે અને સંત મહાન પુરુષો સંગત કરાવે તેમા ગર્વના ધર્મ હિતને સારૂ કઠણવચન કહે, તો તેથી માત્ર ન દુભાતાં અતિશય રાજી થાય અને એથી અધિક કઠણ વચન કહેતા જાય એવી વાંછના રાખી શ્રવણ કરી પરમ અનુગ્રહ માને, પ્રપંચથી વૈરાગ્યનિષ્ઠ રહી માન–લડાઇ–અરિષ્યા આદિ દુર્ગુણનો ત્યાગ કરી લોભ, લાલચ, અતિશમાનને રચ પણ ન ઇચ્છે, અને મહાન પુરુષો જો જો કહે તે સર્વ વચનો ઉપર દૃઢ વિશ્વાસ પ્રીતિ સંયુક્ત રાખે.

પ્રશ્ન ૨૧૭—વારંવાર જીવને જન્મ લેવો પડે છે તેનું કારણ શું?

ઉત્તર—બીજરૂપ રહેલી વાસના તે વડે જન્મ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૧૮—વાસનાની અંકુરીઓ ક્યાથી સ્કુરે છે?

ઉત્તર—મનથી સંકલ્પ વિકલ્પ ઉભા થાય છે તેમાથી વાસના સતત ચાલુ રહે છે.

પ્રશ્ન ૨૧૯—વાસનાનુ રૂપ શું છે?

ઉત્તર—પહેલાં જે જે પ્રકારના પાંચ વિષયને ભોગવ્યા હોય દીઠા હોય કે સાંભળ્યા હોય તેની અંતઃકરણને વિષે ઇચ્છા વર્તે તે વાસનાનું રૂપ છે અને જે ભોગવ્યા નથી એવા ઉત્તમ ભોગ ભોગવવાની અંતરમાં તૃષ્ણા ઉદ્દભવતી હોય તે પણ વાસનાનું રૂપ છે

Regd. No. B. 2035.

॥ श्रीविठ्ठलवदनानलाचार्यचरणा विजयन्तान्तमाम् ॥

વિશ્વના તારણહાર શ્રીમહાપ્રભુજીના વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો
પ્રચાર કરતું સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

વર્ષ ૮] કાર્તિક, સંવત્ ૧૯૮૦. [અંક ૮.

આવતો અંક.

પહેલેથી જાહેરખબરમાં જણાવ્યા મુજબ નથી. ચિત્રોનું સામુદાય મોકલવું આપીને, ચિત્રો વિગેરે મોટી બાબતો ખુલાસીને [illegible] ને ગ્રાહકોને લવાજમ ચઢત [illegible] થતી નથી. હજુ [illegible] લવાજમ ઉઘરાવ્યું નથી હજુ વી. પી. કર્યા નથી. અમારા [illegible] ગ્રાહકો ઉપર અમને પૂર્ણ વિશ્વાસ છે [illegible] એ ગ્રાહકોએ લવાજમ [illegible] મોકલવા ભાવ્યા કે ન મોકલ્યા હોય તેમને મોકલવા વિનતિ છે આવતા અંકના અંકથી [illegible] કરવા [illegible] ધ્યાનમાં આવે ત્યારે અંકનો અભિપ્રાય દર્શાવશો એ અંક લવાજમ નહિ મોકલનાર સર્વ ગ્રાહકને વી. પી. થી જશે તે રૂ ૨-૫-૦ ભરીને સ્વીકારવા વિનતિ છે [illegible] ધ્યાન [illegible] યોગ્યતાને [illegible]

ભગવદીયાંક—આપ [illegible] સુદ ૪ ના રોજ [illegible] શ્રી [illegible] ના [illegible] છે. [illegible] આમનો અંક [illegible] ભગવદીયોની [illegible] થી ભરપૂર બનશે

તંત્રી.

ન ૧૦૨૮, મોનમહંત ની પોળ, અમદાવાદ. | તંત્રી અને પ્રકાશક, વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

વાર્ષિક લવાજમ બે રૂપિયા. (ટપાલખર્ચ સહિત)

શ્રી [illegible] પ્રિન્ટીંગ પ્રેસમાં [illegible] મણિલાલ [illegible] છાપ્યું [illegible], અમદાવાદ.

લેખાનુક્રમ.

કાર્તિક સં. ૧૯૯૦.

"પિતૃસ્મરણાંજલિ"

પુનિત પિતાના પ્રેમાશુ અગ્નિમાં વિકસિત થએલા,
પોતાના જનકના આજ્ઞાંકિત વ્યાવહારિક જ્ઞાનમાં ખપેલા,
શુદ્ધાદ્વૈત માર્ગમાં સુપ્રતિષ્ઠિત સ્વારૂઢ નિમગ્ન બનેલા,
સુખે વેદવિહિત આજ્ઞા પાળીને મર્મમાં અણમૂલા રહેલા
દયારામભાઈ કૃત દૈવી પ્રસાદી જનતાને સુખે સમજાવતા,
વ્યાવહારિકમાં જનતાને પ્રામાણિક વાણીનું યથાશ્ચિત દાન કરતા
અનન્યતા સહિત શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદનું પાલન-પોષણ કરતા,
અગ્નિમુખમાં પ્રકાશને દર્શાવતી વૈષ્ણવી જનતાને હમણાં
શું વિભો, એવા વિચિત્રણ પુરુષને સાન્નિધ્યમાં બોલાવી,
સુખે પાસે રાખી, દર્શાવતી વૈષ્ણવી કુલીન હીરો ઝૂંટી,
પ્રેમાતુર નયન પટળમાંથી ઝરમરતા સમીરને રેડાવી,
પ્રેપ્સિત ભાવુકોની ઇપ્સિતા જીજ્ઞાસાને શોકમય કરી નથી?
અરે ! વિભો, અમ રંક આપની માયામાં મોહનારના,
એક સાંસારિક પ્રેમીની જનતા સમક્ષ સંગઠન કરાવતા,
શું એઓથી આ સત્કૃત્યોને પ્રેમાશ્રુમાં ભીંજવીએ ને ભલા,
શું પિતૃવાત્સલ્યના અભિનયોને સંભારીએ ન રામના?
શું આપના અંકિત વ્યાધિને ધન્વન્તરી પહોંચતા નહિ હોય
શું જ્વર-ખાંસીનો એવો પ્રતાપ કે સાન્નિધ્યમાં અવાય,
શું આપની માયામાં મોહવાયેલા જીવો એ સમજતા હશે,
શું દર્શાવતી જનતા કાજે પ્રેમાશ્રુ-રેલી રેલવાનું નક્કી કર્યું।
હે વિભો અમ પામર જીવપર કૃપાદાન આહ્વાન કરો,
પૂજ્ય પિતાશ્રીના આચાર-વિચારને અનુસરનારો બનાવી,
પૂર્ણ કૃપાથી વેદવિહિત-સંચિત ક્રિયાવાનાદિ અનુરક્ત કરી,
પણ આપની પાસે આસંગો ન રાખતા સ્વાશા રખી
આપના સરોજ યુગ્મચરણમાં પિતૃસ્મરણાંજલિ અર્પું છું

જીવણલાલ છગનલાલ જોષી, ડભોઇ-મનાપોર ચકલા
(ભાઈના પરશિષ્યના પ્રપૌત્ર)

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮. | અંક ૮.

કાર્તિક ૧૯૮૦. | શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૫.

શુદ્ધાદ્વૈત અને ભક્તિમાર્તંડ.

अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ।

देवी निशा याम्यदिशं गतोऽर्कः शेते हरिर्भाद्रलिके निषेधः
कपालिमासः समलं दलं च कालाष्टमी पङ्गुगतिर्बुधश्च ॥१॥
निशीथकालः शुभकर्मवर्ज्यः कारागृहं कंसमहासुरस्य ।
प्राकट्यतः कृष्णविभोः स्म सर्वम्–अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥२॥
यद्धिक्कृतं नाम जना विदन्ति यत्स्पर्शतः स्नान्ति सचैलमार्याः ।
वामे प्रयाणे ध्वनितं खरस्य ह्यमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥३॥
स्वप्नेऽपि यद्दर्शनतोऽशुभं स्याद् यदाकृतिर्नो जनतोषहेतुः ।
श्रीरामभक्त्या स्म कुलं कपीनाम्–अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥४॥
रथ्योदकं यन्मलिनं सदैव ह्यमेध्यगर्ताऽऽप्लवसङ्गदुष्टम् ।
भागीरथीसङ्गमतः पवित्रम्–अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥५॥
क्षारं जलं यल्लवणाम्बुराशेः स्वादुर्भवेदास्यगमम्बुदानाम् ।
स्याज्जीवनं स्थावरजङ्गमानाम्–अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥६॥
यदोर्दुरापानरतं कुलं यत् ययातिना शप्तमराज्ययोग्यम् ।
प्राकट्यतस्तस्य जगन्नियन्तुर्–अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥७॥

चिरन्तनेन.

(१) यद् "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" श्रुतौ तु सम्बन्ध उदाहृतस्ते ।
रे जीव ! तेनैव बधान मैत्रीं स्वकीयमित्रेण चिरन्तनेन ॥१॥
पितामहौ देवगतिं प्रयातौ सुस्नेहवन्तौ पितरौ च यातौ ।
रे जीव ! कृष्णेन बधान मैत्रीं स्वकीयमित्रेण चिरन्तनेन ॥२॥

वामाङ्गभूता गृहिणी गता द्यां गता अनेके गुरवश्च मान्याः ।
सार्धं सदा संव्यसतात्र मैत्रीं बधान मित्रेण चिरन्तनेन ॥३॥
विहाय याता बहवो भवन्तं विहाय यातासि तथैव शेषान् ।
सदा स्थिरेणैव बधान मैत्रीं श्रीकृष्णचन्द्रेण चिरन्तनेन ॥४॥
कथा शुभा भागवते पुराणे स्कन्धे चतुर्थेऽस्ति पुरञ्जनस्य ।
हंसोक्तिमाधाय बधान हंसेन मित्रेण चिरन्तनेन ॥५॥
विद्युच्चलं जीवनमस्ति जन्तोराब्रह्मलोकात्सकलं चलं च ।
सख्या सदा पूर्णतमेन तेन बधान सख्यं तु चिरन्तनेन ॥६॥
य ईक्षते त्वां न तमीक्षसे त्वं सुहृत्तमं सर्वजनस्य नित्यम् ।
भजस्व तं, तेन बधान मैत्रीं मित्रेण कृष्णेन चिरन्तनेन ॥७॥
यः सर्वरूपोऽपि विलक्षणश्च सर्वेश्वरः सर्वगतश्च कृष्णः ।
सदा स्वकीयार्तिहरेण मैत्रीं बधान तेनैव चिरन्तनेन ॥८॥
नेत्रस्य नेत्रं मनसो मनश्च यत्प्रेरिता वागसवश्चरन्ति ।
सूर्याग्निचन्द्रादिषु यस्य तेजः सदा सुखं तेन चिरन्तनेन ॥९॥

---

(२) रामारमे यौवनजीवने च वपुःसुखे शक्तिमदान्वते च ।
स्वार्थान्धभर्तुः करुणाथ तेन दत्तं पदं, ते तु चिरन्तनेन ॥१॥
स्रोतोऽम्बुनद्या विषयान्नसम्पद् वेश्याभजाशालिमपात्रमैत्री ।
राज्यं प्रजापीडयितुः सुखं च कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥२॥
पर्णं फलं यत्कमलं प्रफुल्लं विरक्तिरङ्गस्य रतिश्चलायाः ।
विद्युत्प्रभा दर्शनमायमिन्दोः कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥३॥
चिरन्तनः कोऽपि न कृष्णचन्द्राद् रे चित्त ! सञ्चिन्तय शब्ददेनम् ।
भातादिदं कृष्णकृपाबलेन सतां प्रसादेन चिरन्तनेन ॥४॥
नन्दाष्टनन्दचन्द्रैश्च मिते वैक्रमहायने ।
जयन्त्यां कृष्णचन्द्रस्य रचिता कृष्णसूनुना ।
स्यादियं कविता तुष्ट्यै गुणज्ञानां विपश्चिताम् ॥५॥

(ले.—कृष्णात्मजकाशीरामशास्त्री-मांगरोलबन्दर.)

શ્રીભાગવતના ચતુર્થસ્કન્ધમા સુન્દર પુરંજન રાજાની કથા છે ત્યા " इत्येवं मानसो हंसो हंसेन प्रतिबोधितः " આ હંસ ભગવાનના વચનને મનમા ધારણ કરીને મિત્ર એવા હંસની સાથે મિત્રતા બાંધ. (૫)

પ્રાણી માત્રનું જીવન વિજળી જેવુ ચંચલ છે, અને બ્રહ્મલોક સુધી બધું ચલ છે, માટે સદા પૂર્ણરૂપ ચિરન્તન મિત્ર એવા શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે સમ્બન્ધ બાંધ. (૬)

જે સાથે રહેલ અન્તર્યામી પ્રભુ તને જુવે છે પરન્તુ તુ તેને જોઇ શકતો નથી જે પ્રાણીમાત્રના સુહૃત્તમ છે, તે પ્રભુનું ભજન કર, અને મિત્ર શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે મૈત્રી બાંધ (૭)

જે સર્વરૂપ છતાં પણ સર્વત્ર વિલક્ષણ છે. સર્વના ઇશ્વર, સર્વવ્યાપક શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, છે. હમ્મેશા પોતાનાઓની પીડાને હરનાર, મિત્ર, તે પ્રભુ સાથે જ મૈત્રી બાંધ. (૮)

જે નેત્રનુ નેત્ર અને મનનું મન છે. જેથી પ્રેરાયેલા વાણી અને પ્રાણ પોતપોતાની ગતિમા વિચરી રહ્યા છે. સૂર્ય-અગ્નિ અને ચન્દ્ર વગેરેમા જેનું તેજ છે, તે ચિરન્તન પ્રભુથી જ જગતમા સદા સુખ છે. (૯)

પ્રભુ સિવાય બીજુ ચિરન્તન નથી.

સ્ત્રી અને લક્ષ્મી, યૌવન અને જીવન, શરીર અને સુખ, શક્તિ અને મદાન્ધતા, સ્વાર્થાન્ધ ધણીની દયા અને તેણે આપેલુ પદ તે ચિરન્તન નથી. (૧)

ક્ષુદ્ર નદીનો પ્રવાહ અને વિષયાન્ધ પુરુષની સમ્પત્તિ, કુલટાસુતાનુ શીલ અને અપાત્ર સાથેની મિત્રતા, પ્રજા-પીડક રાજાનુ રાજ્ય અને સુખ કદી પણ આ લોકમાં લાંબો કાળ ટકતા નથી. (૨)

પાકેલુ ફલ અને ખીલેલુ કમળ, મૂર્ખનુ વૈરાગ્ય અને ચંચળ સ્ત્રીનો સ્નેહ, વીજળીની કાન્તિ અને ચન્દ્રનું પ્રથમ દર્શન આ લોકમાં કદિ પણ ચિરન્તન નથી. (૩)

માટે હે ચિત્ત ! શ્રીકૃષ્ણસમાન કોઈ પણ ચિરન્તન નથી માટે નિરન્તર આ પ્રભુને તુ ..દ કર. આ કાવ્ય ચિરન્તન એવા સત્પુરુષોની કૃપાથી અને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની કૃપાના બળથી શોભો. (૪)

युवकोनो धर्म.

(વ્યાખ્યાતા—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગાબ્જમાર્તંડ શ્રી૬ વ્રજનાથલાલજી મહોદય, મુંબઈ.)

પ્રભુએ નિજેચ્છાથી एकोऽहं बहुस्याम् प्रजायेय આ વચનાનુસાર અખિલ બ્રહ્માંડનું સૃજન કર્યું અને સ્વયં વિશ્વમા અનેક સ્વરૂપે ક્ષણમાત્રમા થઈ ગયા. સર્વસમર્થ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રના ક્રીડાબાગ આ વિશ્વની રચનામા સર્વ પ્રાણીઓથી મનુષ્યોમા કાંઈક એવા બે ત્રણ તત્ત્વોની પ્રધાનતા દેખાય છે કે જેની સહાયતાથી અન્ય પ્રાણીઓથી મનુષ્યપ્રાણીનુ પૃથક્કરણ સ્હેજે થઇ શકે છે. તે તત્ત્વોમાંથી પ્રધાનતત્ત્વ સનાતન ધર્મજ છે. અત એવ ધર્મહીન પશુ અને ધર્મવાન મનુષ્ય એ સ્પષ્ટજ છે શાસ્ત્રોમાયે ઉલ્લેખ છે કે 'धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।' આધિદૈવિક ધર્મથી મનુષ્યને અભ્યુદય કરનારી સમગ્ર સિદ્ધિઓ હસ્તામલકવત થઈ જાય છે. અન્ય દેશો કરતાં ધર્મનું યત્કિંચિત સ્વરૂપ પ્રભુકૃપાએ ભારતવર્ષમા જળવાઇ રહ્યુ છે. એજ ભારતના અભ્યુદયની ક્ષીણ આશા છે. ભારત વર્ષને ધર્મપ્રાણનું જે અભિમાનસૂચક વિશેષણું અર્પાય છે તે ઉપરથી એ નિશ્ચિત થાય છે કે આર્યો પૂર્વે અત્યન્ત ધર્મમય જીવન વિતાડતા હતા. આ નગ્ન સત્ય છે, માત્ર કવિઓની કપોલકલ્પના નથી, આપણા પૂર્વજોમાં ધર્મનું અત્યધિક અભિમાન હતું. એની

ભાતૃભાવની એકત્વભાવનાથી પરોવાઇ ગયા હતા. પ્રથમ વિદ્યાર્થીઓને અધ્યાપકો મુખ્યત્વે ધર્મ અને નીતિનું શિક્ષણ આપતા હતા. અને ત્યારપછીજ અન્ય વિષયોનાં શિક્ષણો અપાતાં હતાં. તૈત્તિરીય ઉપનિષદમાં વિદ્યાર્થીઓને ધર્મ અને નીતિના ઉપદેશનો ઉલ્લેખ મળે છે.

सत्यं वद धर्मं चर, स्वाध्यायान् मा प्रपदः सत्यान्न प्रमदितव्यम्, धर्मान् न प्रमदितव्यम्, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ।

દુર્ભાગ્યે સામ્પ્રતમાં કરાલ કલિકાળમાં આપણા રાષ્ટ્રમાંથી ઉક્ત પ્રકારના ધર્મ અને નીતિના શિક્ષણોનો હ્રાસ શનૈઃ શનૈઃ આરંભાયો અને તેની સાથેજ ધાર્મિક સંગઠન પણ નષ્ટ થતું ગયું. એના કટુ ફલસ્વરૂપે આજે આપણા ભારતની શોચનીય દશા દષ્ટિગોચર થઇ રહી છે. આધુનિક ભારતીયોએ અત એવ ધર્મ અને નીતિ પરત્વે ભવિષ્યમાં ભારતનિર્માણકાર્યમાં વિશેષ લક્ષ આપવું જોઇએ. અને ધાર્મિક સંગઠનનું કાર્ય પણ નિઃસ્વાર્થ બુદ્ધિથી શીઘ્ર કરવું જોઇએ.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રની આજ્ઞાનુસાર "कर्मण्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन ।" નિષ્કામ કર્મજ કરવું જોઇએ અને તેવું નિષ્કામ કર્મજ શીઘ્ર ફલિત થાય છે.

આપણો યુવક વર્ગ કંઇ નિર્બલ નથી. માત્ર તેમાં એકત્વભાવનાનો અભાવ છે. મ્હેં ગુર્જર સાહિત્યના પ્રસિદ્ધ 'કુમાર' માસિકના એક અંકમાં 'રાષ્ટ્રીય યુવક દલની શક્તિનો લેખ વાંચેલો તેમાં ઉલ્લેખ હતો કે ભારતવર્ષમાં પ્રતિ દશ હજારની વસ્તીમાં પંદરથી પચીસ વર્ષની વયના ૧૯૬૨ યુવકો તથા યુવતીઓ છે. પ્રજાનો આ છ્ઠો ભાગ ધારે તો કંઇનું કંઇ કરી નાંખે. યુવક દલની શક્તિ એક સપ્તાહમાં સંસારની સાતે વસ્તુઓ ચીનની ભીંતિ, અમેરીકાનું ખોજ; તાજમહાલ, પીસાની મીનાર, દીલ્હીનો લોહાનો સ્તંભ, પીરામીડ અને બેબીલોનના ઝુલન્ત ઉદ્યાનો બનાવી શકે છે. એટલુંજ નહિ પણ એક સપ્તાહમાં સંસારના સમગ્ર ખેતરોને યુવક દલ ખેડી શકે છે. માત્ર સંગઠનના તિરોધાનથીજ યુવકોમાં નિરુત્સાહ અને નિરાશા દષ્ટિગત થાય છે. માટે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રના ઉપદેશાત્મક શબ્દોમાં કહું તો અસ્થાને નહિ જણાય કે "क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ।" હૃદયદૌર્બલ્યને સમૂળ નષ્ટ કરીને ઉઠવું જોઇએ, કર્તવ્ય પંથે પડવું જોઇએ, પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિના મોહમાં અંજાઈ ન જોવું જોઇએ, આર્ય સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો ઘટાડે છે અને પશ્ચિમની જડવાદની સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો વધારે છે. માટે આપણને આપણા જીવનની બધી જરૂરીઆતોને ઘટાડી દેવી જોઇએ. સ્વદેશી વસ્તુઓને અને સ્વદેશને ઉત્તેજન આપવું જોઇએ. પશ્ચિમના લોકો કોઈ દિવસ પોતાના ધર્મને કે દેશની વસ્તુઓના અભિમાનને ત્યાગતા નથી. ભલે તેઓના જીવન એનાથી મોંઘાં થઈ જતાં હોય. તો પણ તેઓ પોતાના તેવા ધર્મને વળગી રહે છે. અતઃ આપણને પણ એમની પાસેથી સ્વદેશપ્રેમનો આવો ગુણ ગ્રાહ્ય છે. આપણું બધું સારૂં અને સસ્તુ છે. યદિ કોઈ વિચારે તો ભારતમાં ઓછામાં ઓછા ખર્ચે પોતાનું જીવન સુખથી નીભાવી શકે છે. માટે આર્ય સંસ્કૃતિનેજ અપનાવવી જોઇએ. "તમારૂં તે તમારૂં અને અમારૂં એ તમારૂં" એ આર્ય સંસ્કૃતિના ઉદાર સૂત્રનો હૃદયમાં કોતરી રાખવા જોઇએ. પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિ આપણી નથી એ વાત ન ભૂલાવી જોઇએ. આપણા માટે બધી વાતમાં એ સંસ્કૃતિ હાનિકારક છે. સદાચારપૂર્વક આર્યોની આર્ય સંસ્કૃતિ અને આદર્શ સિદ્ધાન્તોનું પાલનજ આપણા ઉત્થાનના સાધનો છે. ધર્માગ્રહી બનવું, સ્વદેશાભિમાની બની રાષ્ટ્રના ઉદ્ધાર કાર્યમાં ભોગ આપવો, એટલુંજ નહિ પણ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રની નિર્મળ પ્રેમભક્તિ દ્વારા જીવનને સફળ બનાવવું, એજ આપણો ધર્મ છે અને એજ આપણી નીતિ છે. પ્રભુ સર્વેને સદ્બુદ્ધિ અર્પો !!!

શ્રીજન્માષ્ટમીના પવિત્ર દિવસના આ મહોત્સવે શ્રીટંકારાના વૈષ્ણવ સમાજને આથી વધુ શું સંદેશ હોય ?

सेवा अने पूजा.

(લેખક:—રા. રા. વ્રજવલ્લભ રતનલાલ પરીખ.)

રોમેશચંદ્ર—કેમ ભાઇ પૂજા કરવા બેઠા છો કે?

ભગવતીપ્રસાદ—હજુએ તું સમજ્યો નહિ કે? ગઈ કાલે તને ભાષણ સાંભળવા લઇ ગયો હતો ત્યાં તે શું સાંભળ્યું?

રોમેશચંદ્ર—કોણ જાણે. હું તો ભાઇ ભુલી ગયો, એવું કાંઈ આપણને યાદ રહેતું નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તને શું યાદ રહે છે? નાટક, સીનેમા અને રેડીઓમાં ગવાતા ગાયનો, કેમ ખરૂંને?

રોમેશચંદ્ર—હા! હા! હવે મને યાદ આવ્યું. પૂજા અને સેવા વિષે કંઇ કહ્યું હતું.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તને યાદ હશે કે સેવા એટલે શું? અને પૂજા એટલે શું?

રોમેશચંદ્ર—ના ભાઇ એવું કાંઇ યાદ નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તું ખરેખર તમાશો જોવાને આવેલો હોય એમ લાગે છે.

રોમેશચંદ્ર—ના, ના, એમ કાંઇ હોય? મારો સ્વભાવ જરા ભુલકણો છે એટલે ભુલી જવાય છે. બહુ લાંબુ લાંબુ યાદ રહેતું નથી. જો આપ કૃપા કરી મને સમજાવશો તો તમારો ઘણો આભાર માનીશ.

ભગવતીપ્રસાદ—ઠીક! તારી ઇચ્છા છે તો સાંભળ, પૂજા હમેશાં એકજ પ્રકારથી થાય છે અને સેવા હમેશાં ભાવથી થાય છે.

રોમેશચંદ્ર—એકજ પ્રકાર એટલે શું?

ભગવતીપ્રસાદ—શરૂઆતથી જે પ્રમાણે વિધિ ચાલતો હોય અગર પહેલા દિવસે આપણે જે પ્રમાણે પૂજન કર્યું હોય તે પ્રમાણે બારે દિવસ કર્યા કરવું તેનું નામ એકજ પ્રકાર.

રોમેશચંદ્ર—વાહ! આ બાબતનો મને ખુલાસો મળવાથી ઘણો આનંદ થયો છે પણ હજુ એક શંકા છે; તે દૂર કરશો કે?

ભગવતીપ્રસાદ—હા! શું છે, બોલો.

રોમેશચંદ્ર—ત્યારે સેવા કોને કહેવી તે જરા સમજાવો.

ભગવતીપ્રસાદ—સેવા એ ભાવનાથી થઇ શકે છે. શિયાળામાં ઠંડી હોય છે માટે પ્રભુજીને ગાદી ધરવામાં આવે છે અને દેવતાની સગડીઓ આજુબાજુ મુકવામાં આવે છે. વળી ઉનાળામાં ગરમીને લીધે ઝીણા વસ્ત્રો ધરાવવામાં આવે છે તેમજ ફૂલના શૃંગાર વગેરે કરવામાં આવે છે જન્માષ્ટમીને દિવસે પ્રભુજીને પારણે ઝુલાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેહના જુદી જુદી ભાવનાથી ઋતુ અનુસાર લાડ લડાવાય છે. શ્રાવણ માસમાં હિંડોલે ઝુલાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેહનાં વસ્ત્રો તેમજ આભૂષણો ધરાવવામાં આવે છે. વળી ભોજન પણ ઋતુ અનુસાર ધરાવવામાં આવે છે. આવી રીતે જુદી જુદી ભાવનાથી ઋતુ અનુસાર લાડ લડાવાય છે તેને સેવા કહે છે.

રોમેશચંદ્ર—ભાઇ ભગવતીપ્રસાદ તમે ઘણા ઉંડા ઉતરેલા લાગો છો. આપે મને આજે કૃપા કરી આ વિષયને સ્પષ્ટતાથી સમજાવ્યો તે માટે હું આપનો ઘણોજ આભારી છું. હવે વખત ઘણો થઇ જવાથી રજા લઉં છું.

ભગવતીપ્રસાદ—ઠીક, ત્યારે! જયશ્રીકૃષ્ણ.

રોમેશચંદ્ર—જયશ્રીકૃષ્ણ.

જેનાથી શરૂવાત કરી છે તે) એકસો આઠ ઉપનિષદોના ગુટકાના પૃષ્ઠ ૫૨૧ થી ૫૨૩ સુધી આપેલું "કૃષ્ણોપનિષત્" મૂકું છું. તેની શરૂવાત ઋષિરૂપી-ગોપીઓની ઉત્પત્તિ તથા રુદ્રાદિની માગણીથી કરીને જે જે લીલા-સામગ્રી તરીકે તથા લીલોપયોગી દેહો ધારણ થયા તે ગણાવીને "गोपरूपो हरिः साक्षात्" શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને માટે શબ્દોથી અથર્વ શ્રુતિ ગાય છે અને તેના માહાત્મ્યનું જ્ઞાન એથી પણ વધુ યાદ રાખવા લાયક શબ્દોમાં ગાય છે (જુવો ઋચા ૧૧-૧૨). "हरो येन कृतो वंशः" इंद्रः कनकासनः शृंगनिन्दः ઇત્યાદિ એવા સમર્થ "कृष्णो मदीव शाश्वतं" ॥१२॥ એ પ્રમાણે મહાદેવજી, બ્રહ્માજી, ઇંદ્ર વિગેરેએ લીલોપયોગિ, સેવાપયોગી દેહો ધારણ કર્યા છે તેમ "यः शंखः स स्वयं विष्णुः॥१६॥ "खड्गरूपो महेश्वरः ॥२०॥ गदा च कालिका साक्षात् ॥२३॥ વિગેરે લીલા અને સેવાઉપયોગી દેહે તેમને અંગસંગનો લાભ આપ્યો છે અને વેદઋચાઓ; ઉપનિષદો, મુક્તિ, ભક્તિ, પરમાનંદ, વેદાર્થ, સરસ્વતી, ધરા વગેરે સ્વરૂપ ધારી સર્વનાં વર્ણન તથા ગોકુલવૃન્દાવન વગેરે વર્ણવીને "भूमावुत्तारितं सर्वं वैकुंठं स्वर्गवासिनां એમ વર્ણન સમાપ્ત કરીને ફલશ્રુતિમાં એ જાણવાથી સર્વતીર્થ ફળ મળીને **દેહબંધનમાંથી વિમોચન** થાય છે એમ શ્રુતિ અનુવાદ કરે છે. એ સર્વ લંબાણથી સંસ્કૃત ભાષામાં છે. પરંતુ તેનું થોડુંક "પદ્યાત્મક" ગુજરાતી ભાષાના (संस्कृता गुर्जरीना) આદિકવિનરસિંહ મેહેતાજીએ કર્યું છે તે તેમના કાવ્ય સંગ્રહ પાન ૪૮૩ ઉપર છપાયું છે તે અત્રે ઉતાર્યું છે, અને ઉપરના શ્રીકૃષ્ણોપનિષદ્ મૂળ સાથેજ સરખાવ્યાથી ખાત્રી થશે કે નરસિંહ મહેતે પોતાનું મનઃકલ્પિત જોડી કાઢ્યું નથી પણ વેદપ્રતિપાદિત શ્રીકૃષ્ણમાહાત્મ્ય જ નીચે પ્રમાણે બહુ ટુંકામાં વર્ણવ્યું છેઃ—

રાગ પ્રભાતિયું.

"ધન્ય રે ધન્ય મહાપુણ્ય જશોદાતણું પુત્રભાવે પરિબ્રહ્મ બિરાજે, **"નંદનો નંદ આનંદ થયા"** અવતર્યા (સરખાવો "પ્રજ્ઞાનં આનંદ બ્રહ્મ" "आनन्दमयो ऽभ्यासात्" ઇત્યાદિ) "શેષ બલિભદ્ર સંગે બિરાજે" ॥ ધન્ય ધન્ય ॥૧॥ "અમર (દેવતાઓ) આહીર અર્ધાંગ ગોપાંગના બ્રહ્મવેલી સર્વ **ઋષિરાણી** "भक्ति" તે રાધિકા (મૂળમાં "वृन्दा ભક્તિઃ" છે) મુક્તિ જસોમતિ મત્ત્વૈકુંઠ તે વેદવાણી ॥ ધન્ય રે ધન્ય ॥૨॥ નિગમ વસુદેવજી ગાય ગોપી ત્રાષ દેવકી બ્રહ્મવિદ્યા કહાવે, **બ્રહ્મા કર લાકડી વેણુ મહાદેવજી** પંચ વદને કરી ગાન ગાવે ॥ધન્ય રે ધન્ય ॥૩॥ ઇન્દ્રે અર્જુન અહંકાર દુર્યોધન, **દેવે તો સર્વે અવતાર** લીધો; ધર્મ તે રાય યુધિષ્ઠિર જાણજો, દાસનો દાસ નરસૈંઇને કીધો ॥ ધન્ય રે ધન્ય ॥૪॥ ઉપરાંત ગોપાલતાપિની શ્રુતિ ગાય છે કે **"કૃષ્ણો વૈ પરમં દૈવત.** ગોવિન્દાત્ મૃત્યુર્બિભેતિ ગોપીજનવલ્લભજ્ઞાનેન એતદ્વિજ્ઞાતં ભવતિ." ॥૧॥ ચિન્તયન્ ચેતસા कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः ॥૩॥ આગળ ચાલતાં "कृष्णं तं विप्रा बहुधा यजन्ति गोविन्दं सन्तं बहुधा आराधयन्ति ॥ તેમજ वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो जन्ये जन्ये पंचरूपो बभूव कृष्णस्तथैकोऽपि जगद्धितार्थं शब्देनासौ पंचपदो विभाति." एको वशी सर्वगः कृष्ण ईड्य एकोऽपि सन्बहुधा योऽवभाति तं पीठस्थं येऽनुभजन्ति धीराः तेषां सिद्धिः शाश्वती नेतरेषां"

અર્થ:—એવા શાસ્ત્રની ઋચાથી સ્તુતિ કરીને "तस्मात्कृष्ण एव परमो देवः तं ध्यायेत् तं रसयेत्, દેવકીના પુત્ર **શ્રીકૃષ્ણ** એજ પૂર્વતાપિની પૂરી થાય છે પછી ઉત્તરતાપિનીમાં પ્રેષ્ઠઃ આત્મા, અમોલક ની **સેવા** એજ કર્મ છે. મન્ય સમજાવી ગ્રંથમાં શ્રીકૃષ્ણની બાર મૂર્તિઓ છે તેમાંની એકનું રૂપી આ કાળ આપણને ત્રીજીનું બ્રહ્માજીના પુત્રો, ચોથીનું મરુદ્ગણો, પાંચમીનું વિનાયકો, છઠ્ઠીનું

યજનવસ્તુઓ, સાતમીનું ઋષિઓ, આઠમીનું ગન્ધર્વો, નવમીનું અપ્સરાઓ, દશમી વૈ બ્રહ્મચારિણે તિષ્ઠતિ, एकादशी स्वपदानुगा, द्वादशी भूम्यां तिष्ठति तां हि ये यजन्ति ते मृत्यु तरन्ति એવી પણ આજ્ઞા કરેલી છે ઉપરાંત થોડા થોડા ઉલ્લેખો છાંદોગ્ય, મહાનારાયણ. વાસુદેવ, ગોપીચંદન વિગેરે ઉપનિષદોમાં છે. ભુજ હોવાથી લંબાણ કરવા કરતાં પુષ્ટિકવિ દયારામભાઈની ગરબીઓ નીચે આપી છે તેથી ભાવિક જનો સંતુષ્ટ થશે. તેમાંનો મજકુર પુરાણ ઇતિહાસમાથી પણ લીધેલો છે.

૫૬.

સર્વના શિરોમણિ શ્રીનાથજીરે લોલ,
આપના સ્વરૂપ વિષે સર્વ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વ સેવાયું તમને સેવતાં રે લોલ. ૧
સંગે આભૂષણ આયુધ છે રે લોલ સેવામાં રહું તજી ગર્વ મ્હારા વ્હાલાજી હો, સર્વે સેવાયું. ૨
બ્રહ્મલોક મુકુટ મહારાજનો રે લોલ, સાંખ્યયોગ કુંડલ બેઉ કર્ણ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૩
છત્ર છે વૈકુંઠ ચમર ધર્યો છે રે લોલ વિંજન જસરૂપ શિરધિરણ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૪
ચક્ષુ સૂરજ ચંદ્રમા છે મન વિષે રે લોલ, ભૃકુટી યમરાજ કેરૂં એન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૫
ઐશ્વર્ય અધો અધર, લજ્જા, લોભ છે રે લોલ, દંતકાંતિ તત્ત્વ કમલનેન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૬
મળ્યા વનમાળા હારથને વિષે રે લોલ, વૈજયન્તી ભક્તિનો નિવાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૭
કેશ મેઘ, દિશા શ્રવણને વિષે રે લોલ, વદનવહ્નિ નાસાવાયુ વાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૮
પ્રણવ તો જનોઈ પ્રાણનાથજી રે લોલ, પીતાંબર સ્વર છંદ સાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૯
શ્રીવત્સલાંછન મહાલક્ષ્મીજી રે લોલ, જીવતત્ત્વ કૌસ્તુભ સાક્ષાત્ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૦
વેદ ત્રણ, તત્ત્વ છે ગરુડજી રે લોલ શેષ શય્યારૂપે કરે સેવ, મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૧
કૌમુદી ગદા મહાકાળી છે રે લોલ, મુરલીનું સ્વરૂપ મહાદેવ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૨
છે ષટ્ ઐશ્વર્યકળા કમળમાં રે લોલ, મુદ્રિકા છે અભય વરદાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૩
ચક્ર તેજ સાર, સલિલ શંખ છે રે લોલ, કમળ વિશ્વ, ધનુષ કાળસ્થાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૪
અશ્વ જ્યોતિષને શૃંગી ઇન્દ્ર છે રે લોલ, તિલક શુદ્ધ સ્નેહનું સ્વરૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૫
નખ શિખ આભૂષણ સહુ ભક્ત છે રે લોલ વનસ્પતિ રોમાવલી રૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૬
તીર્થ છે સમુદ્ર નદી નાડીઓ રે લોલ, પર્વત છે પતિ ધરા અસ્ત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૭
અગણિત બ્રહ્માંડ રોમકૂપમાં રે લોલ, ઉદર વિષે જગત છે સમસ્ત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૮
શુદ્ધ ભક્તિરૂપ રાણી રાધિકારે લોલ, જસોમતિ મુક્તિ મૂર્તિમાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૧૯
ગોપી ઋચા વેદ મંત્ર ગોપ છે રે લોલ, રામ, શેષ, શાસ્ત્ર કરે ગાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૨૦
નિગમ વસુદેવજી જાણીયેરે લોલ, બ્રહ્મવિદ્યા દેવકીજી માત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૨૧
ઇત્યાદિક સકલ સહિત શ્રીહરિરે લોલ, દાસ દયાના પ્રભુ વિખ્યાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે૦ ૨૨

આ પદ ઘરનાં તમામ માણસો મોઢે યાદ કરીને રાતે કામકાજ પરવારીને એકઠાં થઈને મોટે સ્વરે લલકારવાનો એટલે કે ઈંગ્રેજીમાં કોરસ કહે છે તેમ સૂર મિલાવીને ગાવાનો રીવાજ દરેક વૈષ્ણવ કુટુંબમાં પાડવામાં આવે તો કેવો આનંદ આવશે એ કરી જોયા પછી કોઈ અનુભવી વર્ણવશે તથા આપના માસિકમાં લખી મોકલશે એમ આશા રાખી હવે 'સત્સંગને માટે દયારામજી તે વાત ટુંકમાં આપે છે તે પણ ઉપર આવી ગયેલા મજકુરોનો ભુજ. દેરકારવાળો સાર છે તે સર્વ વૈષ્ણવોને બ્રહ્મસંબંધ સંપાદના કાર્યક્રમમાં ઉપયોગી થશે તેથી અત્રે આપું છું

પ્રથમ પ્રભાતે શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ કરીયે રે, વ્રજલીલા સઘળી હરિની સંગે ધ્યાન ધરીયે રે. ૧
હરિનો મુગટ તે તો વૈકુંઠનો સાર લહીયે રે, હરિનાં કુંડળ તે તો સાંખ્ય યોગ નિશ્ચે કહીયે રે ૨
હારને નાકે મોતી રાધિકાનું રૂપ છે રે, ચંદ્રાવલી ચિબુક આભરણનું સ્વરૂપ છે રે. ૩
હરિનું હસવું તે તો મોહિની માયા કહેવાય રે, **મુરલી શિવજીનું સ્વરૂપ** એવું વેદ ગાય રે. ૪
હરિનું તિલક શુદ્ધ પ્રેમને પ્રમાણિયે રે, કૌસ્તુભમણિ હૃદયે જીવ તત્ત્વ જાણીયે રે. ૫
શ્રીવત્સલાંછન તે મણિની છાય, જાણજો રે, વનમાળા ગુંજા છે તે ભક્તો ઉર આણજો રે. ૬
માયા પીતાંબર ને **છડી બ્રહ્મરૂપ** લહ્યું રે, **ઇંદ્ર શૃંગી** મેઘ કેશનું સ્વરૂપ કહ્યું રે. ૭
સંગે ગોપીજન તે શ્રુતિઓ છે વેદની રે, ગોપ મંત્ર તેની વાત કહું ભેદની રે. ૮
શ્રીરાધાજી કૃષ્ણ આત્મરૂપ પ્રેમભક્તિ રે, નંદજી તો અક્ષરબ્રહ્મ, જસોદા જાણો મુક્તિ રે,
શ્રીગોકુળ તે વ્યાપી વૈકુંઠ સાક્ષાત્ છે રે, કરમાં કમળ વિશ્વરૂપ વેદે વાત છે રે. ૧૦
એવું ધ્યાન સદા શ્રીકૃષ્ણનું પ્રીતે ધરીયે રે, વ્રજમાં વાસ મળે, ભવસાગરને ક્ષણમાં તરીયે રે. ૧૧
સરવે વિસ્તારીને કહેતા ગીત વધી જાય રે, માટે દાસ દયો, **કાંઇ એક,** હરિના ગુણ ગાય રે ૧૨

અને એથી પણ થોડાક ટુંકામા જોઇએ તો નરસિંહ મેતાજીનું પ્રભાતિયું પહેલું આપેલું છે તે તો રાગદારીમાં ગાઇને સવારમાં સર્વ કુટુંબીઓનાં મનરંજન કરી શકો તેવું છે. તેમા માત્ર મોઢાનુંજ કાર્ય કરવાનું નથી પણ તેની સાથે **શ્રીકૃષ્ણનું ધ્યાન હૃદયમાં નજર** આગળ સ્વરૂપ ખડું થાય તે રીતે ખાસ સાથે સાથ કરવાની ખાસ ટેવ પાડવી જરૂરની છે જેથી દેહ પ્રાણ ઇન્દ્રિયધર્મો દારા આગાર પુત્ર આદિ બધાના દેહ અને મનબુદ્ધિ ચિત્ત પણ રંજિત થશેજ થશે. અજમાવીને અનુભવ લેવા વિનંતિ છે.

આ રીતે વિવેચન કર્યું અને હજુ પણ વેદરૂપી સાક્ષાત્ પરબ્રહ્મના શ્રીમુખમાંથી નીકળેલી શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતા, જે હૃદયપ્રેરિત પશ્યન્તી વાણી (વેદ) ત્રીજ વૈખરી અવસ્થા છે, એટલે પૂર્ણપણે વેદરૂપજ છે અને લેશમાત્ર પણ ન્યૂન નથી તેમાંથી માહાત્મ્ય સમજાવનાર વાક્યો વિવેચનસહિત આગળ લખાશે. તેનું કારણ સહેલાઇથી સમજી શકાય તેવું છે કે હરકોઇ મનુષ્યને માત્ર નામથી જાણતા હોઇએ તેના કરતા તેનાં વખાણ બીજાને મોઢેથી સાભળ્યાં હોય તેમજ પ્રતિપક્ષી તરફથી આક્ષેપો પણ સાંભળ્યા હોય તો ખરૂં શું છે તે જાણવાની સ્વાભાવિક ઇચ્છા થાય. અને તેથી વિશેષ પ્રયત્ન કરીને તેનું-ખરૂં માહાત્મ્ય ભરેલુ સ્વરૂપ શું છે એ ઉંડા ઉતરી (ઉપર ઉપરથી અટકળો કરનારા માખીની પેઠે ગંદકીજ શોધનારા પ્રતિપક્ષીઓ (જેવા કે જૂના વખતના શિશુપાલાદિ અને આજના અંધાભ્યાસીઓના મિથ્યા આક્ષેપો, તથા વૃથા આલાપોના ખંડન આજે નહીં પણ હજારો વર્ષો પહેલા તદ્દન સોકોએ તેમજ દૈવી દૃષ્ટિવાળા ઋષિ મુનિઓએ, શાસ્ત્રજ્ઞોએ તેમજ યુગે યુગે અને કલ્પે કલ્પે પ્રસંગાનુસાર આ વર્તન થનારા અવતારોનાં માહાત્મ્ય બતાવનારા ઉપનિષદાદિ ગ્રન્થોએ કરી રાખ્યાં છે) તેનાં રહસ્ય સમજીને ઓળખવામાં આવે તો બધી શંકા તથા સાંભળેલા આક્ષેપો દૂર થઇ ખરૂં માહાત્મ્ય જણાય. ત્યાર પછી જે બહુમાન જે પ્રેમ વાંકુ બોલવાવાળા સામે લડવાની વૃત્તિ, આદરભાવ, તેમની સેવા શી રીતે હું કરૂં ? એવી ભક્તિ વગેરે જાગૃત થાય આ સ્થળે જરા ક્ષમા માગીને વકીલ તરીકેની દલીલ એક બે વખત જાહેર સભા આગળ મેં કરી છે (સનાતન ધર્મમંડળ અમરેલીના પ્રમુખ તરીકે) તે સર્વ વાચકો આગળ રજુ કરૂં છું. કેમકે યુવકોને તે જાણવાની જરૂર છે, એમ ધારૂં છું. એ કે (૧) શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને દોષ આપનારા લોકોને જાતમાહિતી તો નથીજ. (૨) ત્યારે દોષદૃષ્ટિ તેમનામાં આવી ક્યાંથી ? પાદરીઓ, ઇતર નાસ્તિકો અથવા આસ્તિક વિરોધીઓ

પાસેથી સાંભળીને પણ (૩) જે સ્થળે લીલાઓ વર્ણવી છે તે સ્થળે વાપરેલા શબ્દોના અર્થો સ્વતઃ અભ્યાસ અને પૂર્વાપર સંબંધ વક્તા–શ્રોતા કોણ છે. પ્રસંગ ઉમ્મર, વર્ણ, દૈવીશક્તિ વિગેરે સમગ્ર વિચાર કર્યા વિના–તેવા બોલનારા પુરાવાના કાયદા પ્રમાણે બિન ભરોસેદાર છે. (૪) (Expertdirect નથી, knowledge નથી.) આંખમાં કમળો (prejudice) કિંવા દ્વિચન્દ્રદષ્ટિદોષ છે. (૫) તેઓ જે પુરાણવાક્યોના અનર્થ કરે છે તે પુરાણવાક્યો લખ્યાં અને રચ્યાં કોણે ? તે વિચારતા નથી, બ્રાહ્મણોએ રચ્યાં છે. શ્રીકૃષ્ણાવતાર પછી તે બ્રાહ્મણોને આખા હિન્દુસ્તાનમાં રહેનારાને એક દ્વારકાંના ખૂણામાં થઈ વસેલા અથવા વ્રજમાં વસેલા શ્રીકૃષ્ણને પરમેશ્વર તરીકે વર્ણવવા, માનવા, પૂજવા, બીજા પાસે પૂજાવવા, તેની-કથાનું નિત્ય અધ્યયન કરવાની જરૂર આસેતુહિમાચલ પ્રદેશ સઘળામાં શું જરૂર કે ગરજ હતી ? (૬) મદ્રાસ ઇલાકા, મલબાર, દ્રવિડ તેલંગણ વિગેરે દેશોના બ્રાહ્મણ, આચાર્યોએ એકકે એ ગોપબાલક અને રાજ્ય વગરના યુવકને પરમેશ્વર તરીકે કબુલ રાખવાની શી જરૂર હતી ? કોની ખુશામત ખાતર ? તેનો તો વિચાર કરો. શ્રીમદ્ભગવદ્‌ગીતાજી ઉપરની ટીકામાં વાપરેલા દરેક આચાર્યના શબ્દો વાંચો. અતિ ઉચ્ચ ગણાતા બ્રાહ્મણો એજ વાતની ઘોષણા કરે છે કે જે શ્રીમદ્ભાગવતાદિ પુરાણમાં તથા શ્રીમન્મહાભારતમાં શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સમક્ષ તે વખતના ઋષિઓ જાતમાહિતીથી તથા દિવ્યદષ્ટિથી કહેતા હતા અને તેમની પહેલાંના વેદવાક્યો (ઉપનિષદો) જેની વાનગી આજે આ લેખમાં આપના વાચકોને મેં આપી છે, તે વેદવાણીથી તથા શ્રીકૃષ્ણાવતાર પહેલાંના ઋષિ–મુનિઓ, ગર્ગાચાર્ય, નારદજી આદિ જાણતા હતા અને આતુરતાથી વાટ જોઈ રહ્યા હતા. તેવા ત્રિકાળજ્ઞાની, ત્રિકાળદર્શી મહાત્માઓએ સ્પષ્ટ શબ્દોમાં સંદેહનિવારણ કરી તે ઉચ્ચારી હતી. માટે ભાઈઓ, ઉપરચોટીયા જ્ઞાનવાળાના શબ્દોથી નહીં ભરમાતાં તલસ્પર્શી વિચારક બનો તો સંપૂર્ણ ખાત્રી થશે કે "कृष्णस्तु भगवान् स्वयं" જેને માટે આપણા સંપ્રદાય શિવાયના એક આચાર્યશ્રી ગાય છે કેઃ—

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषं, अशेषकल्याणगुणैकराशिं ।
व्यूहाङ्गिनं, ब्रह्मपरं, वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिं ॥

એ પ્રમાણે ગાયત્રી મંત્ર તથા "जन्माद्यस्य यतोऽन्वयात्" ઇત્યાદિ શ્રીમદ્ભાગવતના મંગલાચરણમાં અનુક્રમે ભર્ગઃ અને સત્ય એવા મોઘમ શબ્દો વાપરેલા છે તેને બદલે સ્પષ્ટ "कृष्णं" વાપરીને જગત્ આગળ ગાયત્રીદ્વારા અને શ્રીમદ્ભાગવતદ્વારા પ્રતિપાદિત શ્રીકૃષ્ણજ છે એમ બતાવી तं ध्यायेत् तं रसयेत् तं भजेत् એવી શ્રી ગો. તા. શ્રુતિની આજ્ઞા છે તે મુજબ તેનુંજ ધ્યાન કરીએ છીએ. કેમકે તે વરેણ્ય છે, તે પરબ્રહ્મ છે, બીજા બધા તેના વ્યૂહો છે. શ્રીકૃષ્ણ પોતે "પર" છે તેમાં દોષ તો સ્વભાવથી (શ્રીકૃષ્ણનું સ્વઃ પોતાનું ભાવ એટલે અસ્તિત્વજ એવું છે કે આપોઆપ) દૂર કે કાંઈ જાય. નજીકજ આવી શકે નહીં તો અડવા કે વળગવાની તો વાતજ શાની ? તમામ ગુણોનો ઢગલો છે અને દોષોના પ્રતિયોગી (anti) છે, એવું માહાત્મ્ય છે.

भक्तने प्रारब्ध होय के ?

(લેખક—પરમ ભગવદીય વેલજી નથુભાઇ મીસ્ત્રી.)

વિચાર કરીએ તો ભગવદ્‌ભક્ત કરણીને વશ હોય એ સંભવિત જણાતું નથી. કારણ એવું છે કે જે કાંઈ પ્રારબ્ધને ઉત્પન્ન થવાના સાધનો છે તેનો તો પ્રભુમાં સંબંધ જોડી તેનો વિનિયોગ કરી આપ્યો છે, તો પછી પ્રારબ્ધનો પણ તેમાં વિનિયોગજ તત્સમ્બંધીજ તેથી જે કાંઈ જન્મમરણના ભોગ પ્રારબ્ધ સિવાય બનતાં નથી તો હવે કેવે પ્રકારે (કરણીને વશ ન

હોય તો) રહી શકે? આ શંકાને સ્થાન છે. પરંતુ એ સાધનો (કર્મો) કર્માધીન સંસારી પ્રવાહી જીવનાં હોવાથી તેને જન્મમરણના કારણરૂપ અવશ્ય હોઈ શકે ખરાં, પરંતુ ભગવદ્ભક્તોને ભક્તિના પ્રભાવે જેના હૃદયમા પ્રભુનો વાસો હોય, તે કર્માધીન કેમ બની શકે? પ્રારબ્ધનું વિધાન દેહાભિમાની હાડમાંસના વ્યાપારવાળાને માટે જણાય છે. ભક્તનો દેહ તો, જગતના જીવવત્ પંચમહાભૂતનો છેજ નહિ, અને કર્મ તો જડ છે, (તેમાં ક્રિયાશક્તિનો અભાવજ હોય) એ કાર્ય જન્મમરણાદિની યોજના, અનાકારાજ કર્મ કેવા પ્રકારની શક્તિએ કરવા સમર્થ છે? એ તો ચૈતન્યનું કાર્ય રહ્યું, તો જડમા ચૈતન્યપણાની ભાવના માનીએ તો, દેહાદિકનું રક્ષણ ને પોષણ કેવે પ્રકારે કરી શકે છે? ભક્તને તો એનું (અલૌકિક જીવન છે) તે વડેજ એના દેહાદિનું રક્ષકને પોષક માની શકાય. કાંઇ પ્રારબ્ધ તો નહિંજ, કારણ કે જેને રાજાથી સીધી મળી હોય તેને અન્ય કોઈ વ્યક્તિનું વ્યવધાન જરૂરનું નથી રહેતું. પ્રારબ્ધ તો અજ્ઞાન અંધકારનું કાર્ય છે, પણ કોટિસૂર્યવત્ પ્રકાશિત હૃદયમાં એ અજ્ઞાનજનક અંધકારનું કાર્ય (પ્રારબ્ધ) કયે સ્થાને રોકાઈ રહે છે? અવશ્ય જગત તરફ દષ્ટિ કરીએ તો પ્રાણ રોકાઈ જવાથી સાધારણ પ્રવાહી સૃષ્ટિને મરતાં દેખીએ છીએ. અને યોગી લોકો પ્રાણોને રોકી શકે છે, તો તેનું આયુષ્ય અનિયમિતજ રહે છે માટે સાધારણ મનુષ્યને એ ઘટે છે કે પ્રારબ્ધ વિના રહેવું અસંભવિત છે. પરંતુ યોગશક્તિથી કોટિ ગણી શક્તિવાળા પુરષોત્તમ છે, કે જે શક્તિનું તેજ કોટિ બ્રહ્માંડને પ્રકાશે છે, ને રક્ષણ પણ કરે છે, એ શક્તિ સાક્ષાત્ શ્રીપ્રભુઆનકુમારીજ છે, કે જે યુગલ સ્વરૂપના આંતર તત્ત્વમાં ભક્તના હૃદયતંતુઓ ઓતપ્રોત થઇનેજ રહે છે, ત્યાં પ્રારબ્ધનો લાગ કયે પ્રકારે લાગી શકે? દષ્ટાન્ત લઇ લો—જેમ તેલ છે તે જ્યોતમા પ્રવેશ કરી જાય છે, તેમ ભગવદ્ભક્તોનું સર્વ કર્મ પણ પુરૂષોત્તમમાં લય થઇ જવાથી પ્રારબ્ધની ઉત્પત્તિ કેવે પ્રકારે થઈ શકે?

વળી ભગવદ્ભક્તોમા કોઈ દુઃખ સુખનો અનુભવ કરતું હોય તો એ કરનારનું અજ્ઞાનજ છે, વસ્તુતત્ત્વથી તો એ ભગવદ્ભક્તો દુઃખ અને સુખથી, વિલક્ષણ થઇ જાય છે, ભગવદ્ભક્તો તો જીવન્મુક્તજ છે જેને શાસ્ત્ર સમાધિ કહે છે તેમ ભક્તોની પ્રભુ પ્રત્યેની તન્મયતારૂપ માનસી સિદ્ધિ છે, તેથી તેને સુખદુઃખની ગણના કરી હોતી નથી. એ ગણના તો જગતમા ઉપાધિરૂપે સુખ દુઃખનું ભાન રહ્યા કરે છે, સિદ્ધાન્તદષ્ટિ કરીએ તો અજ્ઞાની જીવ દુઃખ સુખનો ભાગી બને છે. પણ ભગવદિચ્છારૂપ દષ્ટિએ જોનારા ભગવદ્ભક્તો સર્વ ઉપાધિઓ ભગવદિચ્છારૂપ માને છે, જગતના જીવો સુખદુઃખનો અનુભવ કરે છે, તેમા માત્ર માયાનું કારણ પ્રબળ છે, શ્રીહરિની ઉત્પન્ન કરેલી તેની પોષણ કરેલી વસ્તુમા પોતાનો આત્મસંગ જોઈ વહ મમતાના બંધનમાં આપી દુઃખસુખનો અનુભવ કર્યા કરે છે.

જે વસ્તુનો સંગ થાય તેનો વિયોગ થવા સંભવ છે, અને તેથી કરી દુઃખની ઉત્પત્તિ પણ થાય છે. આપણે હજારો સ્ત્રી પુરુષ, બાળકોને દુઃખી દેખીએ છીએ. તથાપિ તેનું દુઃખ આપણા આત્મામા સ્વ૦ પણે થતુ નથી; પરંતુ એમાથી જેની સાથે સંબંધ છે તેનું દુઃખ થાય છે. જેટલે દરજ્જે સ્નેહનું વધતાઓછાપણું તે પ્રમાણે દુઃખ પણ ઓછા વધતું થાય છે. પરંતુ સંગરહિતને માટે કોઇ પ્રકારનુ દુઃખજ નથી. કેમકે તે મમત્વના બંધનથી દૂર છે, માટે સંગજ દુઃખ રૂપ છે. તે બહારના સંબંધની વાત થઈ, પરંતુ આન્તરીય ભાવના સ્વાર્થને લઈને શરીરના સંગનું પણ દુઃખ પેદા થાય છે, પરંતુ अहंता-ममतानाशे सर्वथा निरहङ्कृतौ આ વચન પ્રમાણે ભગવદ્ભક્તોની ભાવના હોવાથી, તેને આન્તરીય દુઃખ મનોજન્ય તે પણ થતું નથી. કેમકે જેણે સંગ અને સંમદોષને જીતી લીધો છે અને મોહરૂપી પાશમાંથી મુક્ત થએલ છે, તેને સુખ વા

श्रीकृष्णजयंती.

(લે—રા. રા. રમણલાલ સાકરલાલ શાહ, વાલાસીનોર.)

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની જયંતી ઠેરઠેર ઉજવાય છે. આખા ભારતની અંદર આ મહામહોત્સવ મનાય છે, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની અણમોલી બંસીનો નાદ તમામ પ્રજાને કાને લાગ્યો છે, ભારતની પ્રજા ઉપરાંત પાશ્ચાત્યોને પણ તેનો અવાજ પહોચ્યો છે, અને તે પ્રજા ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ચરણોમાં શિર ઝુકાવતી માલમ પડે છે તેમજ તેની ગીતાની મુક્ત કંઠે પ્રશંસા કરી તેનું ઇશ્વરત્વ સ્વીકારે છે. સારાય ભારતની અંદર આજ તેનું યશોગાન થઈ રહેલું જોવામા આવે છે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની બંસીએ આ જગતને મુગ્ધ બનાવી દીધુ છે અને આખું જગત તેની દિવ્ય પ્રતિમા પ્રતિ આકર્ષાઈ તેના સ્વરૂપમા તલ્લીન થઈ રહ્યુ છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ભજનસ્મરણથી હૃદયના તાપો નાશ પામે છે. અને તેના અલૌકિક સ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય છે. યોગી લોકો તેના દર્શન માટે હજારો વર્ષ સુધી તપશ્ચર્યા કર્યા કરે છે. ત્યારે તેમને દર્શન થાય છે. આ કળિયુગમા તેવી તપશ્ચર્યા કરવાનુ નથી ફક્ત ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ પોતે દર્શન આપે છે, અને તે હૃદયની પ્રેમરૂપી ભક્તિજ. ગોપીજનો વગેરે તેની પ્રેમભક્તિથી પ્રભુને મેળવી શક્યા છે તે વિના ઘણા દાખલાઓ મોજુદ છે. એ ભક્તવત્સલ ભગવાન પોતાના ભક્તોને તાપ જોઇ દર્શન આપી કૃતાર્થ કરે છે. માટે કળિયુગની અંદર કંઇ પણ સાધન કર્યા સિવાય कलौ केशवकीर्तनात् એ સૂત્રાનુસાર ભગવત્પ્રાપ્તિ માટે તેનું ભજન, સ્મરણ, કીર્તન, હૃદયના પ્રેમરૂપી ભાવવડે કરીને કરવામા આવે તો પ્રભુભક્તોની મનોવાઞ્છનાઓ પૂર્ણ કરી પોતાના ચરણારવિન્દમા સ્થાન આપી પોતાની લીલાનો સાક્ષાત્કાર કરાવેજ. તેટલા માટે શાસ્ત્રકારોએ નવધાભક્તિ કરવાનુ કહ્યુ છેઃ—

श्रवण कीर्तनं विष्णोः स्मरण पादसेवनम् । अर्चनं वन्दनं दास्य सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

એવી રીતે નવ પ્રકારની ભક્તિ આ કળિયુગમા કરવામા આવે તો જરૂર ભગવત્પ્રાપ્તિ થઈ શકે

ભગવાન અવતાર ક્યારે લે ?—પ્રથમ તો અવતાર એટલે શું તે સમજવું જોઇએ. અવ=એટલે ઉપરથી તર=નીચે આવવું=એટલે કે ભગવાન જગતના કલ્યાણ અર્થે પૃથ્વી ઉપર જન્મ ધારણ કરે છે. તેને આપણે અવતાર કહીએ છીએ. ભગવાને જે શ્રીગીતાજીમા કહ્યુ છે કે, यदायदा हि धर्मस्य । હે અર્જુન જ્યારે જ્યારે આ પૃથ્વી ઉપર અધર્મ વધી જાય છે અને ધર્મ ઝાંખો પડી જાય છે, ત્યારે હુ મ્હારા દેહને સજુ છું. મતલબ કે હુ મનુષ્યાકારે પ્રકટ થાઉં છુ. સાધુસંત પુરુષાનુ રક્ષણ કરવાને અને દુષ્ટ પાખંડી લોકોનો નાશ કરવાને હુ યુગેયુગે અવતાર લઉં છુ. એવી રીતે આ પૃથ્વી ઉપર અનેક જાતના જુલમો વધી જાય છે, લોકો અધર્મી બની જાય છે, ગોબ્રાહ્મણો અને ભક્તો ઉપર ત્રાસ વર્તે છે અને પૃથ્વી ઉપર દુષ્ટ વાતાવરણ પથરાઈ જાય છે, ત્યારે ભગવાન અવતાર ધારણ કરી ગોબ્રાહ્મણ અને સાધુ—પુરુષોનું રક્ષણ કરે છે. ઉપર પ્રમાણે પૃથ્વી ઉપર જુલમ વધી ગયો ત્યારે ભગવાન્ પ્રગટ થઇ મોટા મોટા દૈત્યો જેવા કે અઘાસુર, બકાસુર, ચાણુર તથા કંસ જેવા રાક્ષસોનો સંહાર કરી ભારતમા સર્વત્ર શાંતિ સ્થાપી, પોતે અવનવી બાળક્રીડાઓ કરી, ગોપીજનો તથા ભક્તોને આનંદના રસનુ દાન કરી તમામ ગોકુલવાસીઓનો ઉદ્ધાર કર્યો અને ભગવાને પોતાની બંસીના સ્વરે સમગ્ર ભારતવાસીઓનું મન હરી લઈ, બંસીના મીઠા સ્વરોથી હૃદયના રોગો દૂર કરી, પોતાના સ્વરૂપાનંદનું દાન કર્યુ ભગવાને તમામ વ્રજવનિતાઓને નિષ્કામ વૃત્તિથી રાસક્રીડા કરી પ્રેમામૃત પાઇ પોતાની અલૌકિક

દિવ્ય લીલાનો સાક્ષાત્કાર કરાવી પોતાની લીલામાં હંમેશને માટે સ્થાન આપ્યું છે. એ ભક્તવત્સલ ભગવાનનો આજ પ્રાકટ્યમહોત્સવ છે. તેનું સ્મરણ કીર્તન કરી ભારતની પ્રજા ભક્તિરસની અંદર તલ્લીન થઇ ગઇ છે. ભક્તિસંપ્રદાયોમાં તેના પ્રાકટ્યનો મહામહોત્સવ ઘણી ધામધૂમથી ઉજવાય છે. પુષ્ટિસંપ્રદાયમાં તો એ બાળકૃષ્ણ પ્રભુને પલને ઝુલાવી પુષ્ટિભક્તો આનંદ આનંદ માને છે. એ વ્રજના રક્ષણહાર કનૈયાને એવો કયો ભારતવાસી હશે કે તેના ઉત્સવને ન માને? આજ એને પ્રકટ થયે હજારો વર્ષ વીતી ગયાં છે. પરંતુ આજ એ મંગળ તિથિ હોવાથી જાણે એ કનૈયો આજેજ પ્રકટ થયો છે એવો અનુભવ માલમ પડે છે. એ કનૈયે પ્રકટ થઇને ભારતની અંદર ભક્તિની રેલમછેલ વહેવડાવી છે, વન્દન હો એ નંદનંદનને, જય હો એ ભક્તવત્સલની.

શ્રીયમુનાજી.

સેવું સદા હું યમુને પવિત્રે! તારાં લસન્તાં મૃદુ પાદ–પદ્મે;
તું પાર પાડે જનવાંછનાઓ, તું છે ભગિની યમદેવતાની. ૧
તારે તટે કાનનકુંજ શોભે, મ્હેકંત લે'રે મધુરા સમીરો;
તારા જળે પુષ્પરસો ઢળેથી, ભાગીરથીનાં પય સ્હેજ હેરે. ૨
જન્મી કલિન્દે ભુવને વહે તું, ગંગા વહેતી શિવની જટાથી;
ગંગા ગણાયે સુરની ધુની ને, તું કૃષ્ણની પાદરજે પવિત્ર. ૩
જ્યારે પધાર્યા હૃષીકેશ રાગે, રક્ષાઇને વાસુકિની ફણાએ;
ને તાત સાથે નિજ, નંદગેહે, ત્હેં માર્ગ દીધો પળમાં જ ત્યારે. ૪
ધારી રહ્યું માનવરૂપ આજે, સંહારવા દાનવવૃંદ કાજે;
સાક્ષાત્ પધાર્યા પરબ્રહ્મ અત્રે, તે જાણનારી પ્રથમા જગે તું. ૫
કાલિન્દિ! કૃષ્ણે વિપિને ચરાવી, ગોપાલ સાથે નિત ખેલી ધેનુ;
સંહારતા રાક્ષસવૃંદ બાલ્યે, આશ્ચર્ય પામે જન મુગ્ધ ભાળી. ૬
હે સૂર્યપુત્રી! તુજ ઘાટ બેસી, તેણે બજાવી કલનાદ બંસી;
સુણે ધ્વનિ એ પશુપંખી મીઠો, આબાલવૃદ્ધો, વનિતા મનુષ્યો. ૭
તીરે નિહાળી નિત કા'ન કાળા, ગોપાલ બાલા નયનો નચાવે;
કુંજે વળી આદિરની વધૂનાં, ચાખ્યાં દહીં માખણ દૂધ મીઠાં. ૮
તારા પુલિને રસરાસ ખેલ્યા, વિશુદ્ધ ભક્તિ ઉછળી અનંતે,
ને પ્રેમછોળો ઉછળી દિગંતે, રાધા રમે ત્યાં નિત શ્યામ સાથે. ૯
પ્રેમે ન તે યૌવનના વિલાસો, ના વાસના ત્યાં જરીએ જ્વલંતી;
ના ભોગ તૃષ્ણા, નહિ ત્યાં વિકારો, જે પીડતા આ જગના જનોને. ૧૦

રાધાનો શ્યામ સાથેનો, પ્રેમ હેતો સદા ખરો,
કળે ના સ્થૂળ ચક્ષુ જે, કામના ના વિકાર ત્યાં. ૧૧
અનંગો કોટિનાં ધાર્યા તેજ સૌન્દર્ય મૃદુતા;
લાજીને કામદેવો ત્યાં પાદ–અબ્જે નમી પડે. ૧૨

ઉઘાડે અક્ષિઓ મીચી પ્રભુના નેત્રની પ્રતિ,
પુરારિ મમ અર્પે ના કદાયે દેહ દગ્ધ જે ૧૩
'ખેલ્યા'તા સ્વર્ણરેણુમા રાસ રુડા રસિકડે,
શરદના ચંદ્રની શાખે ભાખે એવુ જગે જનો ૧૪
રમ્યા વળી આહિર બાળ સાથે, તારા પુલિને યમુને' સદા તે,
નીરે પડ્યો કન્દુક, ધીર ઉંડા, લેવા પડ્યા બાળક કૃષ્ણ વાસે ૧૫
ધારા સખાના નયનેથી વ્હેતી, વ્હેતી યમુના ઘનશ્યામ થભી,
થભ્યા વળી વાયુ દશે દિશામા, ને મેઘ છાયા ગગને અગણ્યે ૧૬
રોયા યશોદા નિજ પુત્ર કાજે, ચોધાર આસુ ઢળતા નદીમા,
ને નદનેત્રો વરસે અજસ્રમ્, મેઘે રુડો શ્રાવણ માસ જાણે ૧૭
મનુષ્યો બાપડા જાણે ના કદા જન્મહેતુને ?
ગયા શ્રીકૃષ્ણ નાનાશા, નાથવા કાલિ નાગને ૧૮
કાલિન્દિ તારા જળમા જઇને, કૃષ્ણે જગાડ્યો અહિરાજ સૂતો,
કાલિય પત્ની વિનવે હજારો, ત્હોયે ન માને, હરિ તો હઠીના ૧૯
ફેણો હજારો ફફડાની સાથે, જાગ્યો તહીં કાલીય નાગ કાળો,
ફેણે ફણે ત્યા મણિરાજ ભાસે, તેજે મણિના અરિને નિહાળો ૨૦
ને બાળ ભાળી હસતો વદે તે, 'શું બાળ નીરે વિખુટો પડ્યો તુ ?
તા'રે શરીર લસતી પ્રભા છે, ત્હોયે તુ માનો અણખામણો છે ? ૨૧
છુ બાળ નાનો હજુ દૂધ પીતો, કા વીરના સાહસ આદરે તુ ?
ભાગી અહીંથી દૂર ભાગી જાને, કા તુ ખુવે જીવન તારૂ સારૂ ? ૨૨
વાકા ઉભેલા, હસતા મધુરૂ, શ્રીકૃષ્ણ બસી મધુરી બજાવે
'છુ બાળ નાનો હજુ દૂધ પીતો, ત્હોયે સદા આચરૂ સાહસો હુ ૨૩
હુ લાડીલો છુ મુજ માત કેરો, ભૂલ્યો ન ઉંડા જળમા હું આજે,
આવ્યો અહીં હુ તુજ પ્રાણ લેવા, તુ આ નદીમા નિત નિત્ય ઝેરે ૨૪
સૂણી ઇશના વચનો, નાગને ઝાળ લાગી ત્યા,
પછાડી દેહ આખોયે, ઉછળી ઝેર ફુકતો ૨૫
તડૂક્યો કૃષ્ણની સામે, નાગણો ત્યા ખસી ગઈ,
જળે દ્વદ્વો રૂડા જામ્યા, બાહુના બળીયા લડે ૨૬
પછાડી હસ્તથી ઝાલી, ચાપતા પાદ શ્રીહરિ
હરાયો દર્પ કાળીનો. મોહ પામી ઢળી પડ્યો ૨૭

(દ્રુતવિલંબિત.)

કરુણ કંઠથી નાગણ વિનવી, વિનતિ તે કરતી કર જોડીને
'નહિજ ઓળખીયા જગનાથને, હરિ ગુનેગારી નાથ સદા મરે ૨૮
નમન વદન નાથ હજાર છે, નહિજ પ્રાણ હરો અમ નાથના
લઈ અમે પતિને વસીશુ દૂરે, નહિ કદા વિષ તે જળમા ફુકે. ૨૯
વિપત વાદળ છે પ્રભુ એક તે, હરિ ! સદા હરજો, સુખ આપજો.
ગરુડ તો અમને નિત ભક્ષતો, ગરુડથી અમને નિત રક્ષજો. ૩૦

જાણે તેમને અને પુષ્ટિમાર્ગને કંઈજ સંબંધ ન હોય તેમ આ પાઠમાં એક પણ પુષ્ટિસિદ્ધાંતને અથવા તેમના આદ્યગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી માટે એક શબ્દ પણ લખવામાં આવ્યો નથી. તે હું ધારૂં છું કે વૈષ્ણવ વિદ્વાન વર્ગ આ પ્રત્યે હવે જરા પણ દુર્લક્ષ કે ઢીલ નહિ કરશે અને સતત પ્રયાસ ચાલુ રાખશે. આને માટે એક યોગ્ય લખાણ લખી અને તેના પર સેંકડો સહીઓ લઇ નામદાર ગવર્નર સાહેબ પાસે એક ડેપ્યુટેશનની મારફતે આ અરજી લઇ જવાની ખાસ જરૂર છે. કોઇ પણ રસ્તે વિદ્વાનોએ આ વસ્તુ ધ્યાનમાં લઈ ગવર્નમેન્ટમાં લાગતા વળગતા અધિકારીઓ સાથે મસલત ચલાવી આ લડતને અનેક રીતે પૂર્ણ પણે ઉપાડી લઇ પ્રાથમિક શાળાઓની વાચનમાળાના ઉપલા પુસ્તકોમાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના શીર્ષક નીચે તેઓશ્રીનું જીવનચરિત્ર અને તેઓશ્રીના સિદ્ધાંતોને મિશ્ર કરી એક સ્વતંત્ર પાઠ મુકાવરાવવો જોઇએ. શ્રીમદ્વલ્લભાધીશની કૃપાથી લડત ઉપાડતા આપણે તેમાં જરૂર ફળીભૂત થઈશું અને પુષ્ટિસિદ્ધાંતથી અજ્ઞાત સમાજ તરફની કેટલીક મુંજવણમાંથી મુક્ત થઇશું

તા. ક.—જૈન ધર્મ, બૌદ્ધ ધર્મ, શંકરાચાર્યજી, મુસલમાન, પારસી

જૈન ધર્મ,	બૌદ્ધ ધર્મ,	શંકરાચાર્યજી,	મુસલમાન,	પારસી
સાતમી ચોપડી	સાતમી ચોપડી	સાતમી ચોપડી	પાચમી ચોપડી	પાચમી ચોપડી
પાઠ ૬૦	પાઠ ૫૯	પાઠ ૬૫	પાઠ ૫૬	પાઠ ૫૭

ઉપરાંત પાચમી ચોપડી પાઠ ૨૦ અને પાઠ ૯ સાતમીમાં પાઠ ૬૪ છઠ્ઠીમાં પાઠ ૨૮ વગેરે અનેક સ્થળે જુદા જુદા ધર્મોનું સ્પષ્ટીકરણ કરેલું છે.

નોંધ:—રા ચીમનલાલભાઇનો આ એક પ્રેરક સૂચના છે—કહો કે અર્ધ જાગૃત લાખો વૈષ્ણવોના હૃદય સુધી પહોંચનારો દુંદુભિનાદ છે. મુંબાઈ ઇલાકામાં લાખો વૈષ્ણવો છે અને તેઓ ધનાઢ્ય હોઇને મોટી લાગવગ ધરાવનારા છે તેમના અઢળક દ્રવ્યના દાનથી અનેક ઇતર સંસ્થાઓ પોષાય છે. પણ સંપ્રદાય તરફ તેઓનો આત્મવિશ્વાસ બુઝાતા દીવો જણાયો છે, એટલે તે દીવાને સંકોરીને તેલ પૂરવાની જરૂર છે. જો તેઓ આ કામમાં અગ્રેસર બને તો? ઘણું થાય. બીજું કેળવણીખાતામાંના આપણા પુષ્ટિમાર્ગીય વિદ્વાનો છે, તેઓ પણ આ દિશામાં પ્રગતિ કરી શકે છે જો કે તેઓ મોટા મોટા ઓહ્દાઓપર હતા અને છે, તેથી બાલમનોદશાના અનુભવોના અભાવે તેમણે ઉપેક્ષા કરી છે, છતા હવે તો તેઓએ જાગૃત થવું ઘટે છે. આવી લડતની આગેવાની લેનાર પુષ્ટિમાર્ગના એક શૂરવીર યોદ્ધા નડિયાદવાળા ભગવદીય રા. રા. મોહનલાલ લલ્લુભાઇ શાહ એ કાર્ય હાથ ધરી શકે, પણ તેઓ હાલ લાચાર (મોતીયા ઉતરવાથી) બની ગયા છે. શું સુરત મંડળ આ લડત નહિ ઉપાડી લે?

તંત્રી.

ચર્ચાપત્રો.

૧. છંદોભંગદોષ !

રા. રા. શ્રીમાન્ "सुदर्शन" ના અધિપતિ સાહેબ, વિ. "પીયૂષપત્રિકા" ના પ્રથમ પુસ્તકની નવમી સંખ્યામાં અમારો મોકલાવેલો અભિપ્રાય પ્રકટ કરી તે નીચે ટિપ્પનીમાં "छन्दोभङ्गदोषः" એવું છાપ્યું છે, તે જોતામાં અત્રેથી "छन्दोभङ्गदोषः" સંબંધે ખુલાસો લખી મોકલવા ત્રણ પત્રો લખાયા પણ કોઈનો જવાબ નહીં મળવાથી અમે "तूष्णीं०" ન્યાયનું અવલંબન કર્યું હતું, પણ ઈશ્વરેચ્છાએ આપના સાતમા વર્ષના ૧૦ મા અંકમાં તે સંબંધે પ્રકટ થએલું "चर्चापत्र" ચાલુ અઠવાડીઆમાં અમારા જોવામાં આવ્યું છે. જેથી ખરી હકીકત જાહેર કરી જવાબ આપવા ફરજ પડી છે. સબબ આ નીચેના લેખને આપના માસિકમાં સ્થાન આપી આભારી કરશો અને આ બાબત જે અંકમાં આવે તે અંક અમને મોકલાવી આપવા તજવીજ કરશો.

"चर्चापत्र" માં "વાસ્તવિક પંક્તિ આ મુજબ છે. હરિશંકર शाङ्गीवरप्राहिता "पीयूषपत्रिका" પ્રામા ઉપર જણાવેલી પંક્તિ તદ્દન અશુદ્ધ છે." એવું લખીને "छन्दोभङ्गदोषः" એ ટિપ્પનીનો નિર્વાહ કરેલો છે. ટિપ્પનીમાં તો ફક્ત "छन्दोभङ्गदोष" લખીને માત્ર છન્દઃશાસ્ત્રનીજ નિપુણતા બતાવી હતી. હવે વળી આ ચર્ચાપત્રમાં 'इजन्त" શબ્દ સમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય એવું લખી વ્યાકરણ ની હોંશીયારી જાહેર કરી છે, પણ એ બધી જુદી બનાવટ છે. કેમકે અમારા લખેલા અભિપ્રાયમાં शाङ्गिवर એવો હ્રસ્વઇકારવાળોજ શબ્દ છે. "पीयूषपत्रिका" માં છાપવા મુજબ અને "चर्चापत्र" માં લખવા મુજબ शाङ्गीवर એવો દીર્ઘઈકારવાળો શબ્દ છેજ નહીં. જેથી દીર્ઘઈ-કારનો ખોટો આશ્રય લઈને જેટલું "चर्चापत्र" માં લખવામા આવ્યું છે, તે બધું તરકટભરેલું છે અને "तुषकण्डनन्याय" નું અવલંબન કરી તદ્દન જુદી ચર્ચા કરેલી છે.

"पीयूषपत्रिका" માં છપાએલા અમારા અભિપ્રાયમાં મોટી ભુલો ૫ અને ન્હાની ભૂલો ૭ મળીને બાર ભુલો સ્પષ્ટ જોવામાં આવે છે, તે ઉપરથીજ પ્રૂફ તપાસનારની હોંશીયારી સોવજ્ઞ જનોને સુવિદિત થાય છે. વધારે લખવાની જરૂર રહેતી નથી.

"इजन्त" શબ્દસમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય તેનું આક્ષેપકર્તાએ સમાધાન કરવાનું રહ્યું એમ જે લખ્યું છે તે આકાશકુસુમ જેવું છે, કેમકે રા. નરોત્તમ શાસ્ત્રીએ इजन्त શબ્દનું સમાસમાં દીર્ઘ થવાનું કે દીર્ઘઈકારવાળો શબ્દ શુદ્ધ હોવાનું જણાવેલું જ નથી.

"સાથેજ જો આ પ્રમાદને હસ્તદોષ માની લેવામાં આવે તો હ્રસ્વ થતાં કેટલી માત્રાઓ થાય છે તે આપેજ ગણી જોવી." એ પ્રમાણે લખીને ચર્ચાપત્ર લખનારે જો शाङ्गिवर એવો હ્રસ્વઇકારવાળો શબ્દ હોય તો પણ छन्दोभङ्गदोष કાયમ રહે છે નિવૃત્ત થતો નથી, એવી માન્યતા જણાવી પોતાનો "श्रुतबोध" નો અભ્યાસ અને માત્રાઓ ગણવાનું વિજ્ઞાન કેવું છે તે સોવજ્ઞ જનોને વિદિત કરી આપ્યું છે. જો હસ્તદોષ માનીને शाङ्गिवर એવો હ્રસ્વઇકારવાળો શબ્દ માની માત્રાઓની ગણત્રી ગણાય અને "श्रुतबोध" ની ઉપસ્થિતિ બરાબર હોય તો "यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्राः" એ પ્રમાણે પ્રથમ પાદમાં બાર માત્રાઓ બરાબર થાય છે. પછી छन्दोभङ्गदोष કે વ્યાકરણદોષ કેવી રીતે રહે છે ? તેમજ "આપેજ ગણી જોવી" એમ લખ્યું છે તો હ્રસ્વ માની લીધા પછી નિર્દોષ બનેલા વૃત્તને ગણી જોવાની શી જરૂર રહે છે ? બાર માત્રાઓ બરાબર

થઈ ગયા પછી શું ગણવાનું બાકીમાં રહે છે ? તેનો ખુલાસો ચર્ચાપત્ર લખનારે પોતાની સમજણ મુજબ જાહેર કરવાનો બાકી રહ્યો છે.

"ઉપર જણાવેલા સંમતિપત્રની અસલ પ્રત મારી પાસે મોજુદ છે. જો રા નરોત્તમ શાસ્ત્રી તેનો બ્લૉક બનાવવાનું ખર્ચ સહન કરે તો તેમને ખરચે અસલપ્રત વિદ્વાનોની દૃષ્ટિમાં આવી શકે તેમ છે." એ મુજબ ખરચનો બોજો બતાવીને રા. નરોત્તમ શાસ્ત્રીને અને "આ પ્રમાદને જો હસ્તદોષ માની લેવામાં આવે તો હ્રસ્વ થતાં કેટલી માત્રાઓ થાય છે તે આપેજ ગણી જોવી." એ મુજબ માત્રાઓ ગણી જોવાનું જણાવી આપને પણ ઠગવાની ચાલાકી વાપરીને "निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फणा" એ વચનનો પરિપૂર્ણ ઉપયોગ કર્યો છે. બ્લૉક બનાવવાનો ખર્ચ સહન કરવા અમો તૈયાર છીએ પણ તે સાથે "असत्यमप्रत्ययमूलकारणम्" એ વચનનો અનુભવ થવાથી વિશેષમાં જણાવીએ છીએ કે "જેમની પાસે સેંકડો વિદ્યાર્થીઓ છન્દોગ્રન્થ અને વ્યાકરણ ભણી ગયા છે, અને હાલમા ભણી રહ્યા છે તેવા પાઠશાળાના અધ્યાપકોની કમીટી નીમીને તેમાં અમારી અસલ પ્રત રજુ કરી બ્લૉકની સાથે અધ્યાપક કમીટીનું પ્રમાણપત્ર પણ જાહેર કરવું." તે સંબંધે જે ખરચ થશે તે પણ સહન કરવા અમો તૈયાર છીએ, પરંતુ તેમ કરતાં પહેલાં જો અમારા લખેલા અભિપ્રાયમા શાસ્ત્રિવર એવો હ્રસ્વઈકારવાળોજ શબ્દ હોય અને અમારી લખેલી "आर्या" દોષ વિનાની હોય તો "चर्चापत्र" લખનારે બ્લૉક અને અધ્યાપક કમીટી બાબત જે ખરચ થાય તેથી બમણી રકમ આપવાની પ્રતિજ્ઞા જાહેર કરવી જોઇએ.

"चर्चापत्र" માં જે સંસ્કૃત પત્રની કૉપી આપી છે તે પત્ર અમોને મળ્યો નથી. જેથી તા. ૨૦–૧૦–૩૨ નો પત્ર લખવાની ચેષ્ટા સ્વપ્નાવસ્થામાં થએલી લાગે છે. જો જાગ્રદવસ્થામાં સદરહુ પત્ર પોસ્ટ થયો હોય તો અમને મળ્યા વિના રહેજ નહીં, અને, અમારે અત્રેથી જા. નં: ૧૧ થી (૩૦–૧૦–૩૨ જે પત્ર લખવો પડ્યો હતો તેની દરકાર પછી રહે નહીં.

સંસ્કૃત પત્રના જવાબમા જણાવવાનુ કે:—

नास्त्येवास्मत्प्रेषिते पत्रे सम्बोधनान्त पदं दुष्टम् । नहि सर्वेषां सर्वत्र सर्वदा सम्भवन्ति प्रमादाः । शास्त्रिशब्दस्य समासान्तर्गतत्वादेव दीर्घशास्त्रस्याप्रवृत्तौ, ह्रस्वेकारवत्त्वसत्त्वे, नैव सम्भवति कथञ्चिदपिच्छन्दोभङ्गदोषः । भवतु नाम टिप्पनी यस्य कस्यापि, दोषश्चेत्तदाविष्करणे कीदृशः स्यात्कस्यचिदपि विरोधः ? किन्त्वभिप्रायस्त्वस्माभिः स्वयमेव लिखित इति नैवास्ति तस्मिन्दोषशङ्कावकाश इति दृढं विश्वसिम

"चर्चापत्र" मा "शिष्योना पत्रनी उपेक्षा करी" એમ લખ્યું છે, પણ અમોએ અત્રેથી જા. નં. ૧૧ નો (૩૦–૧૦–૩૨) છેલ્લો પત્ર મોકલાવેલો હતો તે મળતાં તેનો જવાબ આપવા પુરતુ પણ સૌજન્ય વાપરી શકાયુ નથી, છાત્રધર્મ ચુકાયો છે કે સચવાયો છે, અને ગુરુબંધુત્વ ગુમાવ્યું છે કે પાલન કર્યું છે, તથા ટિપ્પનીમાં લખેલો "छन्दोभङ्गदोष" જ્ઞાનપૂર્વક છે કે અજ્ઞાનપૂર્વક છે. તેમજ "चर्चापत्र" વાસ્તવિક છે કે અવાસ્તવિક છે, અને દુઃસાહસ કોનું અને કેવા પ્રકારનું છે. વિગેરેની સદર મુજબ બ્લૉક સાથે અધ્યાપક કમીટીનો અભિપ્રાય પ્રકટ થવાથી યથાપેક્ષ ખાત્રી થઇ જશે. અસત્ય બાબતમાં મૌન સેવવું કે ઉપેક્ષા કરવી સન્માર્ગ ગણાય નહીં.

गोपालकृष्ण शास्त्री, श्री मं. पा. मुख्यगुरु.

શ્રદ્ધા છે અને અમે માનીએ છીએ (અંધશ્રદ્ધાથી નહિ) બીજાઓ માનો કે ન માનો તેથી અમોને શું? બીજાઓ ન માને તેથી કંઈ આચાર્યશ્રીની કીર્તિ ઝાંખી પડે તેમ નથી. કદરદાન વિદ્વાનો તો કદર કરી રહ્યા છે અને કરે છે. સૂર્યની સામે ગમે તેટલી ધૂળ ઉરાડો તે કંઈ ઝાંખો પડવાનો નથી. તેવી રીતે આ સૂર્ય સમાન તેજસ્વી સંપ્રદાય ઉપર અમે તેટલી ધૂળ ઉરાડો, ગમે તેવા આક્ષેપો મૂકો, તેથી કંઈ સંપ્રદાયને હાનિ થવાની નથી. પૂજ્યપાદ આચાર્યચરણો તથા સંપ્રદાયના વિદ્વાનો પ્રત્યે મ્હારી પ્રાર્થના છે કે આચાર્ય શ્રીમહાપ્રભુજીના "કનકાભિષેક" ની વધુ શોધખોળ કરી આચાર્યશ્રીના નિષ્કલંક ચરિત્ર ઉપર વધુ પ્રકાશ પાડવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. હાલના આચાર્યો ધારે તો તે કામ પાર પડયા વિના રહેશે નહિ, વિદ્વાનો શોધખોળને માટે તૈયાર છે. પરંતુ નાણાંને અભાવે કરી શકતા નથી. તે ખરેખર શરમાવા જેવું છે. આવા મ્હોટા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ નથી. હે ધનિક વૈષ્ણવો, તમારા દ્રવ્યનો સદુપયોગ પ્રભુની સેવામાં કરી કૃતકૃત્ય થશો એવી આશા છે અને વૈષ્ણવોને પ્રાર્થના છે કે આજના કલુષિત વાતાવરણમાંથી બચવા માટે શ્રીમહાપ્રભુજીના સિદ્ધાંતોનું મનન કરશો તો પુષ્ટિમાર્ગનું રહસ્ય સમજાશે. એજ વિજ્ઞપ્તિ. લી. વાડાસીનોરવાસી શા. રમણલાલ સાકરલાલના શ્રીસ્મરણ.

૩. રાધાકુંડના મુખ્યા.

લી. દાસાનુદાસ વ્રજજીવ વલ્લભદાસ રાધાકુંડના મુખીયાજી તમોને તસદી આપવામાં આવે છે કે, જુવો ભાઈ આ કેવો ન્યાય છે? હમોને શ્રીજીદ્વારથી તો હમોને રાધાકુંડ શ્રીબેઠકજીની સેવા ટેહલ કરવા મોકલ્યા તે બે વરસ આનંદથી જે બની તે ટેહલ કરી પેટ ભરૂં છું. પરંતુ હવે હમારી સાથમાં ઘણી અનીતિથી આરંભ લેવાયો. જુવો જે માણસ પહેલાં રહેનો હતો જેના બારામાં તમો પહેલાં છાપ્યું હતું, તે ઘાસીરામ ઉર્ફે કીસનદાસ પાછો કર્મચારીઓને સમજાવી દઈ પાછા રહ્યો છે ને મારાથી એકાએકી સંભાળી લીધો, ન તો મને ઉત્થાપન કરવા દીધાં ને ચાર પાંચ સીપાઇ કામદાર આવી ઘેરીને મને ધમકાવીને બધા સંભાલી લીધો તેમાં કાંઈ લખ્યું કાંઈ ના લખ્યું ને આપસમાં ધોતીઆ ફેટા વાંટી લીધાં ને મને બોલવા ના દેય. હું કેવા જાઉં તો મને ધમકાવે. બાર દરવાજા પર સીપાઈ બેસાડી દીધા કે કોઈ આવે જાય નહિ. ને જબર મારાથી દસ્કત કરાવી લીધા ને મને પાછી રસીદ પાંહચી આપી નહી. માગી ત્યારે કેવા લાગ્યા કે તુમકું ફીસ બાતકી રસીદ ચાહે એવી રીતે મારા માથે ગુજરી છે, ને મારા પાસે એક પાઈ નથી. હવે મારે શું કરવું? તમોને સુચના આપી છે કે માથે જાત્રા આવી રહી છે. બીજું થોડાસા પાનાં છાપીને મને મોકલો તો હું જાત્રામાં બધા વૈષ્ણવોને વેચી દઉં પછી તો આપની મરજી માફે ડેકાનું શ્રીમદ્ગોકુલજી શ્રીદ્વારકાનાથજીના મંદિરમાં કોટડીમાં ફારમ મોકલો તો કાકાજીના મંદર પર અગર શ્રીદ્વારકાનાથજીના મંદર પર મોકલજો આપને તસદી આપી છે તે માફ કરજો

નોંધ—વૈષ્ણવો તરફથી ઘણી સખ્ત ફરીયાદો થયા પછી સ્થળે સ્થળે પ્રસિદ્ધ થઈ ગયલા રાધાકુંડના મુખ્યા ઘાસીરામ ઉર્ફે કૃષ્ણદાસને શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરે શ્રીબેઠકજીમાંથી કાઢી મૂકયા હતા. પણ પાછા તેઓ તે સ્થળે દાખલ થયા છે. શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણ બદલાયું છે. નવી વ્યવસ્થા થાય છે. હવે બહુ અંધેર નભશે નહિ અને ઘાસીરામો ભાગ્યેજ ફાવી જશે. થોડા વખત માટે ભલે ઘાસીરામજી કૂદાકૂદ કરી લે. તંત્રી.

श्रीनाथद्वाराप्रकरण.

શ્રીનાથદ્વારાની અઢળક દ્રવ્યની સંપત્તિની નવી વ્યવસ્થા ઉદયપુરનરેશ કરે તો તેમાં ભાગ લેવાની ઇચ્છાથી કેટલાક માલેતુજાર ધનાઢ્ય વૈષ્ણવો ઉદેપુર જઇ પહોંચ્યા હતા. તેમાં મુંબાઇથી ૧. સર મનમોહનદાસ રામજી, ૨. શેઠ લાલજી નારણજી, ૩. શેઠ વલ્લભદાસ કરસનદાસ નાથા, ૪. શેઠ રેવીદાસ માધવજી ઠાકરશી, ૫. શેઠ ભગવાનદાસ મનમોહનદાસ, ૬. શેઠ જમનાદાસ રતનચંદ, ૭ અમદાવાદથી—શેઠ ચીમનલાલ ગીરધરલાલ, ૮. શેઠ ગોવિન્દદાસ આલેકલાલ, ૯. શેઠ હરિદાસ અચરતલાલ, ૧૦. શેઠ જીવણલાલ ગિરધરલાલ, ૧૧. શેઠ ચીમનલાલ ગીરધરલાલ વડોદરા, ૧૨. શેઠ મંછારામ ખાંડવાળા સુરત, ૧૩. મદ્રાસથી દિ બા. ગોવિન્દદાસ ચતુર્ભુજદાસ, ૧૪. શેઠ પુરુષોત્તમદાસ ગોકુળદાસ, ૧૫. રાજબાજી નારાયણદાસજી બર્મન

કલકત્તા, ૧૬. શેઠ નવલકિશોર દાગા કલકત્તા, અને દિવાન સાહેબ પટવારીજી એ ગૃહસ્થો હતા. આમાં શ્રીગોસ્વામી બાળક, મહત્વનું વિદ્વદ્વર્ગ અને સાધારણ સ્થિતિના તથા ગરીબ વૈષ્ણવો; એઓની લાખોની સંખ્યાનો કોઈ પ્રતિનિધિ નથી એ આશ્ચર્યજનક છે! આ ગૃહસ્થો સાથે વાટાઘાટ કરીને મહારાણાજીએ તા. ૧૦-૧૨-૩૩ ના રોજ હુકમ નં. ૨૮૯૯૮ થી એવો હુકમ ફરમાવ્યો કે, શ્રીનાથદ્વારાના શ્રીતિલકાયિત તરીકે ચિ. ગો. શ્રીગોવિન્દલાલજીને જાહેર કરવા. સગીર બાળબાવાની મીલકતના વહીવટદાર તરીકે (Court of words ની રૂએ) પંડિત રમાકાંત માલવીય અને પંડિત મદનમોહનલાલજી (કાશ્મીરી)ને નીમ્યા છે. આ ઉપરાંત એક વ્યવસ્થાપિકા સભા બનાવી છે. તેમાં ઉપરના બે અધિકારીઓ ઉપરાંત મહેતા ફતેહલાલજી, પારેખ રતનલાલજી ગોટીવાળા તથા શેઠ લાલજી નારાણજી, શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશી, શેઠ વલ્લભદાસ કરસનદાસ નાથા, રાજાબાબુ નારાયણદાસ, શેઠ ગોવિન્દલાલ મોતીલાલ, શેઠ શામળદાસ ગીરધરલાલ, શેઠ રણછોડદાસ વૃન્દાવનદાસ પટવારી, શેઠ પુરુષોત્તમદાસ ગોકુળદાસ, એ ગૃહસ્થોની વ્યવસ્થાપિકા સમિતિ નીમાઇ છે. પ્રભુ જે કરે છે, તે સારૂં જ કરે છે. ઉકળી રહેલ સંપ્રદાય વૈષ્ણવોમાં સળગી રહેલી જ્વાળા પર એક રીતે કાંઈક શીતલતા પ્રસરશે. કમીટીના સદ્‌ગૃહસ્થોને પ્રભુ સદ્‌બુદ્ધિ અર્પો! અને જે અઢળક દ્રવ્ય ત્યાં છે તેનો સદુપયોગ કરવા માટેની હિમ્મત પ્રેરો. ધનાઢ્યો એ દ્રવ્યને વધારવા માટેના મિથ્યામોહમાં નહિ પડતાં સંપ્રદાયની ઉન્નતિ માટેની એક યોજના કરીને તેનો સદુપયોગ કરશે એવી આશા છે. શ્રીયુત પટવારીજીને આ સૂચના ધ્યાનમાં લેવા જેવી છે; ભાગ્યેજ કરવાની હોય.

ઉક્ત સદ્‌ગૃહસ્થોમાંના કેટલાક તો ગયે વર્ષે શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરના સાગ્રહ આમંત્રણથી ઉદયપુર ગયા હતા અને ત્યાં તેઓની એક કમીટી નીમવામાં આવી હતી. પણ પાછળથી એ કમીટીને ઉડાડી દેવામાં આવી હતી. આ પગલાં સામે મેં જાહેરમાં વાંધો ઉઠાવ્યો હતો. આ વર્ષે તો ઉપર જણાવેલા સદ્‌ગૃહસ્થો સ્વેચ્છાથી ઉદયપુર ગયા હતા. ત્યાં જવામાં તેમના બે હેતુઓ હોઇ શકે. એક તો આવી પડેલી વિકટ પરિસ્થિતિથી સંપ્રદાયને હાસ્યાસ્પદ થતો અટકાવવાની ધગશ અને બીજી શ્રીનાથદ્વારાના અઢળક દ્રવ્યની સુવ્યવસ્થા થાય તેવી મુરાદ. આ બે મુખ્ય ઇરાદા સંભવી શકે. મહારાણાજીએ નીમેલી કમીટીમાંના સદ્‌ગૃહસ્થો એવા ધનાઢ્યો છે કે તેઓને પોતાની મીલકતોનો વહીવટ કરતાં પણ પોતાની પણ ફુરસદ મળે નહિ: તેઓ રાજપ્રપંચથી છલકાતા શ્રીકૃષ્ણભંડારનો વહીવટ કેમ કરી શકશે? સમયનો ભોગ ક્યાંથી આપી શકશે? અલબત્ત, ત્યાંની કરોડોની રોકડ રકમોનું વ્યાજ મેળવવા માટે તે સદ્‌ગૃહસ્થોની સહાયતા આવશ્યક ગણાશે. સંપ્રદાયની ધગશ માટે ત્યાં એ ધનાઢ્ય મંડળ ઉદયપુર સુધી ગયું હોય તો તેને અમે તો શુભ ચિહ્ન ગણીએ છીએ. ત્યાં ગયેલા સદ્‌ગૃહસ્થોમાંના સંપ્રદાયનું મર્મ સમજનારા અને સંપ્રદાયના મહાન્ વિશાળ આદર્શોથી વિરુદ્ધ જતી હાલ ચાલતી ખરાબ રૂઢિઓને સમજીને તેને દફનાવી દેવાની હીંમત ધરાવનારા કેટલા છે એ જો સવાલ કોઇ કરે તો ખરેખર, માથું જ ખંજવાળવું પડશે; કેમકે ત્યાં ગયેલા માલેતુજાર સદ્‌ગૃહસ્થો શ્રીનાથદ્વારાની તેમજ પોતાના જ ગામોમાંના મોટાં મોટાં ગણાતાં મંદિરોની એવી રૂઢિઓની બરદાસ કરી રહ્યા છે કે તે રૂઢિઓ સાંપ્રદાયિક આદર્શોની કસોટીએ ચડાવતાં કથીર જેવી જ સાબીત થાય. ખેર, "જાગ્યા ત્યાંથી સવાર" એ કહેવત પ્રમાણે શ્રીનાથદ્વારાનો વહીવટ સુધારવા ગયેલા સદ્‌ગૃહસ્થોની ધગશને અમે અનેક વંદન કરીએ છીએ અને એ ધગશ ચિરાયુ બનો અને અભિવૃદ્ધિ પામો એવી આંતર આતર અભિલાષા છે. આશા છે કે, સંપ્રદાયને નિષ્કલંક બનાવવાની ધગશ ધરાવનારા સદ્‌ગૃહસ્થો સંપ્રદાયનું મર્મ સમજીને, પોતાનાં ઘરમાં અને કુટુંબમાં સંપ્રદાયને નામે ચાલતી અનેક રૂઢિઓને નેસ્તનાબૂદ કરીને, પોતાનાં ગામોનાં મંદિરોને પણ આદર્શ મંદિરો બનાવવા માટેના પ્રયાસોમાં હવે પાછા નહિ જ પડે. નહિતર આ દોડાદોડીનો અર્થ ભવિષ્યમાં કાંઇ નહીં જ થશે!

શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણની આ ઉથલપાથલ વખતે કેટલાક નિસ્વાર્થ શ્રીગોસ્વામિબાળકોનું સ્મરણ થાય છે. જો તેઓશ્રી અત્યારે ભૂતલપર બિરાજતા હોત તો આ સ્થિતિ ન જ આવત. શ્રીનાથજીનું તિલકાયિત પદ બદલાઈ રહ્યું છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરપ્રભુના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી પહેલા તિલકાયિત થયા. તેઓશ્રીના આસુરવ્યામોહ પછી સાત ઘરના અન્ય પાંચ બાળકોએ-શ્રીગોવિંદજી આદિએ-ચતુર્થ પુત્ર શ્રીગોકુલેશજી પ્રભુને તિલકાયિત પદ અર્પ્યું. આ ઐતિહાસિક સત્યથી અત્યારે પણ માત્ર સાત ઘરના શ્રીગોસ્વામિબાળકો

પણ આવી ગયેલા, બહુ મોડું થવા લાગ્યું, ત્યારે આપ (શ્રીવ્રજભૂષણજી) બેઠકમાં પધારી કુમકા પધરાવી લાવી અને તાળાં ખુલાવી શંખનાદ કર્યો, એવામાં શંખનાદ સાંભળીને તિલકાયતશ્રીની નિંદ (ઉંઘ) ઉડી ગઇ, જાગૃત થયા. અને ખવાસને પૂછ્યું કે અમારા કહ્યા સિવાય ચાવીનો કુમકો કોણે પધરાવ્યો ? ત્યારે ખવાસે વિનતિ કરી, જે કૃપાનાથ ! શ્રીકાંકરોલીવાળા બાલક પધાર્યા છે તે કુમકા પધરાવી ગયા છે. તેવું સાંભળીને શ્રીતિલકાયતશ્રી ચૂપ થઈ ગયા ! પછી આપશ્રી (શ્રીવ્રજભૂષણજી) સ્નાન કરી મંદિરમાં પધાર્યા અને રાજભોગ આર્તિ કરી કુમકા લઇને આપના મંદિરમાં (શ્રીનાથદ્વારા-માંના શ્રીદ્વારકાધીશના મંદિરમાં) પધાર્યા, પછી ઉત્થાપનસમયે કુમકા પધરાવીને શ્રીનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા, સેન પર્યંત સેવા પહોંચી શ્રીઠાકોરજીને પોઢાડી, અનોસર કરી, પછી તાળામંગળ કરી, કુમકા લઇને પોતાના મંદિરમાં પધાર્યા આમ આપશ્રી બે દિવસ સુધી બીરાજ્યા, ત્યાંસુધી કુમકા આપની પાસેજ રહ્યા, એ વખતે શયન સમયે ભોગ ધરીને આપ બીરાજ્યા હતા ત્યારે શ્રીતિલકાયતશ્રીને કહ્યુ **કે શ્રીનાથજીના સુખાર્થ સર્વ શ્રીગોસ્વામિબાલકોએ મળીને આપને શ્રીનાથજી સોંપ્યા છે;** અને આપને જાગવામાં કોઈ કોઈ વખતે બહુ મોડું થાય છે, અને શ્રીનાથજી બિરાજી રહે છે, માટે કુમકા પ્રસાદી ભંડારમાં રાખવા, એવી આજ્ઞા કરી. તે વખતે તિલકાયતશ્રીએ કહ્યુ કે આપ તો મ્હોટા છો, આપ એટલી શિક્ષા ન કરો, તો કોણ કરે ? અને અમારી આ થયેલી ભૂલ, કસુરને, આપશ્રી ક્ષમા કરો, અને આપની આજ્ઞા પ્રમાણે કુમકા પ્રસાદી ભંડારમાં રહેશે, અને પ્રસાદી ભંડારી મુખીયાજીને આવર્તાની સાથેજ આપી દેશે અને અનોસર વખતે સંભાળી લેશે. એ પ્રમાણે કહી શિખામણ આપી. પછી તિલકાયતશ્રી આપની બેઠકમાં પધાર્યા બેઠકમાં પધારતી વખતે અધિકારીજીએ વિનતિ કરી જે કૃપાનાથ ! ઝઘડો સુધર્યો ? ત્યારે આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે ઝઘડો શેનો ? એ તો ભૂલ ચૂકની વાત છે. અને મ્હોટા ન કહે ત્યારે કોણ કહે ! અને પહેલેથીજ ભૂલચૂકની વાત **કાંકરોલીવાળા બાળક કહેતા આવે છે.** તેમાં કાંઇ નવી વાત નથી, એમના ચિત્તમાં શ્રીનાથજીની વત્સલતા આવી એટલે તેમણે અમને શિખામણ આપી, એમ કહી બહુ સરાહના કરી. શ્રીજીદ્વારથી વિજય કરી બેઉ તાતજી શ્રી કાંકરોલી પધાર્યા એક વખત ઉદયપુરનરેશ શ્રી સરદારસિંહજી અને તિલકાયતશ્રી ગોવર્ધનજીને ઝઘડો થયેલ તેથી શ્રીનાથજીને જાગતા ચાર ઘડીની વાર લાગી, ત્યાં શ્રી દાદાજી મહારાજ શૃંગાર કરવા પધારેલા હતા, તે ઝઘડો જોઇને આપશ્રી શ્રીનાથજીને જગાવી સેવા શૃંગાર કરીને શ્રી ગોવિંદરાયજીને કહ્યુ કે તમ્હારા ઝઘડામાં શ્રીનાથજીને કેમ દુ:ખ આપો છો ? **આવી રીતે શ્રીનાથજીના ઘરમાં વ્યતિક્રમ થતો ત્યારે સર્વ શ્રીગોસ્વામિ-બાલકો મળીને કહેતા તે તિલકાયતશ્રી કબુલ રાખતા.** અત્યારે તો શ્રીનાથજીના ઘરમાં શ્રીતિલકાયત શ્રીગિરિધારીજી મહારાજની એવી ઇચ્છા થઈ કે સર્વ બાળકોનો હક ઉઠાવી દીધો, તેવી (પ્રણાલિકા વિરુદ્ધ) મરજી થવાથી તેમને પ્રત્યક્ષ ફળ મળ્યું અને તે આપણે સર્વેએ જોયુ કે વ્રજવાસ કરવો પડયો. તેથી શ્રીનાથજીને અભિમાન સુહાતું નથી, આગળ જેમણે જેમણે અભિમાન કર્યાં તે બધાનું અભિમાન નિવૃત્ત કર્યું જેમ કે અર્જુનાદિક બધાને, માટે શ્રીપુષ્ટિમાર્ગમાં પ્રભુને "ગર્વ" સારો લાગતો નથી—"

શોકસભા—રાયપુર (સી પી) તા ૨૧-૯-૩૩ ના રોજ શ્રીનાથદ્વારાના તિલકાયત ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજના લીલાપ્રવેશના અત્યંન્ત ખેદયુક્ત ખબર પેપરોમાં વાંચતા અહીંના શ્રીવલ્લભાશ્રિત વૈષ્ણવ સમાજમાં ઘણીજ દીલગીરી ફેલાઈ ગઈ હતી અને શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીના મંદિરની દેખરેખ કરતા બેકર્સ શેઠ બાલકિશન નથાનીજીએ સમસ્ત વૈષ્ણવોને શોકસભા ભરવા નિવેદન કર્યું હતું. સાંજે ૪ વાગે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીના મંદિરમાં શોકસભા ભરવામાં આવી હતી

(૧) પ્રારંભમાં શોકસભા બોલાવવાનું કારણ વૈદ્યશાસ્ત્રી દ્વારકાદાસભાઇએ કહી સંભળાવ્યું હતુ અને સભાનું પ્રમુખસ્થાન રાયબહાદુર શેઠ બંસીલાલ અબીરચંદજીની અત્રેની પેઢીના મુનીમજી એ. મેજરફે શેઠ જગન્નાથજી મુંદડાને આપવા દરખાસ્ત કરી હતી તેને શેઠ શીવદાસજી ડાગા બેંકર ગોવર્ધનદાસ કોઠારી તથા રાયસાહેબ નંદલાલના સાહાણીજી તથા ગોવરધનદાસભાઇએ ટેકો આપ્યો હતો. (૨) ત્યારબાદ શેઠ રામકીશનજી નથાનીજી તરફથી પ્રસ્તાવ રાખવામાં આવ્યો હતો કે સમસ્ત વૈષ્ણવો આવતી કાલે પોતાનો કારભાર બંધ (હડતાલ) રાખે તેને શેઠ સુંદરદાસજી દમાણી, મોતીભાઈ લાલજીભાઈ દ્વારકા-

દાસભાઈ, દેવકરનભાઇ જેઠાભાઇ વગેરે અનુમોદન આપ્યું હતું અને સર્વાનુમતે ઠરાવ પાસ થયો હતો. (૩) બાદ દ્વારકાદાસભાઇએ એક ઠરાવ એવો રજુ કર્યો હતો કે આપશ્રીના લીલાપ્રવેશ માટે કેવળ ભગવદ્ નામોચ્ચાર (જપ) તથા શ્રીમદ્વલ્લભાશ્રિત ગ્રંથોનું પઠન કરવું જોઇએ તે ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ થયો હતો તેમ ગાયોને ઘાસ નંખાવવા પ્રબંધ થવો જોઇએ. (૪) બાદ સભાપતિ તરફથી આપશ્રીના ગુણાનુવાદનું સ્મરણ અને આપશ્રીની ઉત્તમ સેવા પ્રવૃત્તિ અને આપશ્રી અત્રે ૫) સાલ પેહલાં શ્રીચંપારણ્ય પધાર્યા હતા તે વખત વૈષ્ણવો પરની કૃપા જાહેર કરી અને પરિચય બતાવ્યો હતો આપશ્રીની સંપ્રદાયમાં મોટી ખામી પડી છે તેની શોકોદગાર કહ્યા હતા અને વૈષ્ણવોએ આંખોમાં જળ ભરાઈ આવ્યાં હતાં બાદ આવ્યાં ગાયોને ઘાસ નંખાવવામાં આવ્યું હતું અને સભા વિસર્જન થઈ હતી.

અભિનંદન—સુપ્રસિદ્ધ સાક્ષરવર્ય શ્રીયુત અંબાલાલ બુલાખીરામ જાની બી. એ. એઓએ 'ગુજરાતી' પત્રદ્વારા મહાગુજરાતની જે સેવા બજાવી, તેને પચાસ વર્ષ પૂર્ણ થાય છે. 'ગુજરાતી' પત્રની ગૌરવમય કારકીર્દીમાં, લોકપ્રિયતામાં શ્રીયુત જાનીજીનો મહાન્ હીસ્સો છે. એક પત્રકાર તરીકે, એક સાહિત્યસેવક તરીકે અને ધર્મનિષ્ઠ તરીકે શ્રીયુત જાનીજીને અમારાં અનેક અભિનંદન છે અને તેઓના જીવનમાં સુવર્ણ મહોત્સવ ઉજવવાનો અવસર પ્રાપ્ત થાઓ એવી આંતર અભિલાષા સાથે મહાગુજરાતને આવા એક વિદ્વાન્‌ને આ શુભ પ્રસંગે સત્કારવા નમ્ર વિનતિ કરીએ છીએ.

નૂતનવર્ષાભિનંદન—નીચે જણાવેલા વિદ્વાનો, સાહિત્યરસજ્ઞો, વૈષ્ણવોએ અમને નૂતન વર્ષાભિનંદન પાઠવ્યું છે જેને માટે અમે પૂર્ણ કૃતજ્ઞ છીએઃ—૧. 'ગુજરાતી' ના સદ્ગતશ્રી શ્રીયુત અંબાલાલ બુલાખીરામ જાની બી. એ., ૨. આસેતુહિમાચલ પંડિત મીમાંસાભૂષણ, વેદાંતવિશારદ, મીમાંસક વગેરે વગેરે રા. રા. હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી M. R. A. S. (કાશીવાળા ગો. શ્રીમુરલીધરલાલજીના અને ગો. શ્રીમગનલાલજી મહારાજ તથા ગો. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજના ભૂતપૂર્વ શાસ્ત્રી અને હાલમાં ગો. શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજના શાસ્ત્રીજી) ૩. પુરાણભૂષણ શાસ્ત્રી નરોત્તમ મોતીરામજી, ૪ શેઠ લક્ષ્મીદાસ ભીમજી મરાણી, ૫. રા. રા. ગિરિધરલાલ જે શાહ, ૬. મંત્રી શ્રીગોપાલકૃષ્ણ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ સિદ્ધપુર, ૭. મુખ્યાજી અમૃતલાલ ગિરિધરલાલ પંડ્યા. ૮. રા. રા. મોહનલાલ રવચંદ વેણીચંદ, ૯. શ્રીયુત પ્રભુરામ પ્રાગજી ઠાકર, ૧૦. શેઠ સુંદરલાલ પ્રભુરામ મણીયાર. ૧૧. કીર્તનીયાજી ધીરજલાલ ભગવાનદાસ, ૧૨. રા. રા. મોહનલાલ વલ્લભભાઇ શાહ, નડીયાદ, ૧૩. ભગવદીય મીસ્ત્રી પ્રાગજીભાઈ નાનજીભાઇ, ૧૪. શેઠ મણીલાલ ચુનીલાલ, ૧૫. દેસાઇ ચંદુલાલ ઓચ્છવલાલ ૧૬. રા. કાંતિલાલ મગનલાલ શાહ, ૧૭. રા. ધીરજલાલ ઓચ્છવલાલ શાહ, ૧૮. શેઠ ધરમસી કેશવજી મરચંટ, ૧૯. રા. રા. છોટાલાલ મનસુખદાસ.

પ્રશ્ન ૨૨૦—એકાંતિક ભક્ત કોને કહિયે ?

ઉત્તર- જેને શ્રીહરિ વિના બીજી કોઇ પણ પ્રકારની વાસના કદિ સ્વપ્નાદિકમાં પણ નથી થતી ને પોતાને શ્રીહરિનો અંશાંશ વિભૂતિ દાસરૂપ માનીને જે પરબ્રહ્મની ભક્તિ કરતો હોય તેને એકાંતિક ભક્ત જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૨૧—વિવેકી હરિભક્તમાં શાં લક્ષણો હોય ?

ઉત્તર—સત્ય, અસત્ય, સાર અસાર, નિત્ય અનિત્યને જાણતો, પોતાના અવગુણોને પોતે જાણી તેનો વિચાર કરી તેને સારી રીતે ત્યાગ કરતો હોય, બીજા મહાન પુરુષોમાં સદા ગુણજ દેખે ને ગુણમાત્રને ગ્રહણ કરે, નિરંતર પોતામાંજ અવગુણ જુએ, પરબ્રહ્મને સદા નિર્દોષ જાણી તેમની સર્વ લીલા જન્મ કર્મ ચરિત્ર દિવ્ય પ્રભુવત્ નિર્દોષ જાણે, શ્રીહરિ અને મહાપુરુષ ધર્માચાર્યો જે જે હિતકારી વચન કહે તે સર્વ પરમ સત્ય હિતકારી ગણી, સંપૂર્ણ સ્નેહયુક્ત ગ્રહણ કરી, તદ્વત્ વર્તે, તેમાં લેશ માત્ર સંશય ન રાખે, દેહાદિક પ્રપંચ અહંતા મમતાથી સદા દૂર રહે, પોતાને બંધન થાય એવું કાંઇ પણ કરે નહિ, ભગવદ્ધર્મમાં પ્રતિબંધ કરનારા પદાર્થો ને અસત્સંગતિ તેનો મન કર્મ વચને ત્યાગ કરી હંમેશાં સરળ અને સીધો વિચાર હોય તેનેજ અનુસરે.

પ્રશ્ન ૨૨૨—પ્રભુ પ્રસન્ન થવાનાં સાધન કીયાં ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત થઇ પ્રભુનું યથાર્થ માહાત્મ્યજ્ઞાન જાણીને પ્રેમપુરઃસર ધર્મ જ્ઞાન વૈરાગ્ય ભક્તિ સત્સંગતિમાં દૃઢ ચુસ્તપણે સર્વથી અધિક સ્નેહ રાખે અને સદા સર્વદા (સર્વકાળે સર્વ ક્રિયા કરતાં) અખંડિત શ્રીભગવાનના સ્વરૂપમાંજ વૃત્તિ રાખી ભજન કીર્ત્તન સ્મરણમાં તો અવશ્ય કરીને પ્રભુની સ્મૃતિ ક્ષણે ક્ષણે રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૨૩ -કયી વાસનાને બીજરૂપ જન્મ લેવાના કારણરૂપ માનવી ?

ઉત્તર—અનેક સંકલ્પવિકલ્પો થાય તેમાંથી જે દૃઢ નિશ્ચયાત્મકપણાની વાસના કે જે ટાળી ટાળી શકાય નહીં એવી મજબુત ગ્રંથિરૂપ બંધાઇ જાય છે તે જરૂર અંતકાળે મતિમાં સજ્જડ ઠસેલી સ્ફુરાયમાન થઇ આવેજ, ને તે દૃઢવાસનાએ કરીને અંતકાળે થએલી મતિ પ્રમાણે ગતિ થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૪ અંતકાળે (મરણસમયે) વાસના ન રહે આવા ઉપાયની શી યુક્તિ ?

ઉત્તર—અહંતામમતારૂપ સંસાર (પ્રપંચ) ની નિવૃત્તિ જનક વિદેહીની માફક સર્વ કાર્ય કરતા છતાં હું અને મ્હારૂં એ બેથી રહિત થાય. પરમાર્થનેજ સ્વાર્થરૂપ ગણે. પ્રાપ્ત થયે હર્ષ ન હોય ને વિયોગ થયે કષ્ટ ન થાય. એવી રીતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં વર્તે ને સર્વમાં કાર્યમાં તથા કારણાદિમાં એક પરમાત્માનેજ જાણે તો વાસનાથી રહિત થવાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૫—અમુક મનુષ્ય સુધર્મી છે એમ શી રીતે જણાય ?

ઉ૦ ૨—જે સ્વતઃ પોતે સદાચાર પાળી, સ્વધર્મયુક્ત રહી, પ્રભુને ઉપાસે તે તો પ્રત્યક્ષ રીતે સુધર્મી સમજી શકાય તેમ છે. પણ જેનાથી તે પ્રમાણે કદાચ આચરાય

નહિ તો પણ જે કોઇ સુધર્મનું આચરણ કરતા તેને વિષેજ પેલાનુ નિરંતર વહાલ પણે રહેલાનું જણાતું હોય એટલે તે એવું જાણે જે મ્હારાથી તો સદોદિત તેમના જેવું વર્તન થતું નથી, પણ એ સુધર્મને બહુજ સારી રીતે સંભાળીને પાળે છે, આ પ્રમાણે સુધર્મી ઉપર વહાલ રાખે છે કે સુધર્મ પાળનારની પ્રશંસા કરે છે તે પણ સુધર્મીની કોટિમાંજ ઉત્તમ પ્રતિનો થઇ જશે, કેમકે પોતે પોતાથી સુધર્મ ન પળાયાનુ હીનપણું માની સુધર્મ પાળનારના ધર્મ ઉપર જેને અંતઃકરણથી વહાલ છે.

પ્રશ્ન ૨૨૬—ગુરુ કોને કહેવા ?

ઉત્તર—તત્ત્વવેત્તા અસ્તાં પ્રાણિમાત્રનું ઉત્તમ હિત કરવાને નિરંતરે તત્પર રહેતા હોય તેમને.

પ્રશ્ન ૨૨૭—મનુષ્યત્વે પથ્ય રૂપ તે શું છે ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત ભક્તિનિષ્ઠ સદાચાર.

પ્રશ્ન ૨૨૮—પવિત્ર કોણ ?

ઉત્તર—બાહ્યશુદ્ધિ પૂર્વક જેનું અંતઃકરણ નિર્મળ (શુદ્ધ) વર્તનનું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૨૯—પંડિત કોણ ?

ઉત્તર—સુબુદ્ધિવાળો વિચારશીલ પુરુષ.

પ્રશ્ન ૨૩૦—મ્હોટો ભય કોનો ?

ઉત્તર—જન્મમરણાદિ સંસૃતિ ચાલુ છે, તેને મટાડનાર સર્વાધીશ કાળના કાળરૂપ પ્રભુની આજ્ઞા કે મર્યાદ ન પળાય તેનો.

પ્રશ્ન ૨૩૧—શૂરો કોને જાણવો ?

ઉત્તર—જેણે અંતરના ષડ રિપુને જીત્યા છે, અને તીવ્ર વૈરાગ્યયુક્ત છે, અને અનેક પ્રકારની આપત્તિ આવ્યા છતાં ભગવદ્ધર્મકાર્યમાં જે લેશ માત્ર પણ મોળો પડતો નથી તે.

પ્રશ્ન ૨૩૨—જાગૃત કોને જાણવો ?

ઉત્તર—સદા સારાસાર નિત્યાનિત્યનો વિવેક તારતમ્યપૂર્વક ઉત્તમ સારનેજ ખોળે છે, ને તે શ્રેષ્ઠસારરૂપ માર્ગ અનુસારે જે નિરંતર વર્તે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૩—શ્રવણ કરવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જેણે કરીને સંસારની અહંતામમતાનો પ્રપંચ ટળી અખંડ પૂર્ણ પરમાનંદ પુરુષોત્તમનું યથાર્થ માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સારી રીતે દૃઢ અને અચળ શુદ્ધ નિષ્કામ સ્નેહ પરબ્રહ્મ વિષે ઉત્તમ પ્રકારે થાય એવો સદુપદેશ.

પ્રશ્ન ૨૩૪—નિદ્રાસ્થ કોને જાણવો ?

ઉત્તર—જે નિત્યાનિત્ય સારાસારને ન સમજે એવો મૂર્ખજન.

પ્રશ્ન ૨૩૫— ચંચળ શું છે ?

ઉત્તર—તારુણ્ય, સંપત્તિ, આયુષ્ય અને મન; કીટથી આરંભીને તે બ્રહ્માજીના

પ્રશ્ન ૨૩૬—ઉત્તમ અલંકાર કીયો ?

ઉત્તર—સુશીલપણાંથી યુક્ત સત્ વિદ્યા (બ્રહ્મવિદ્યા)ના જ્ઞાનપૂર્વક સદ્‌ગુણરૂપી આભરણનેજ ધારણ કરે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૭—પક્ષ કોની કરવી ?

ઉત્તર—ધર્મન્યાય માર્ગની.

પ્રશ્ન ૨૩૮—જય, પરાભવ (પરાજય) વિષે શી રીતે સમજુન કરવી ?

ઉત્તર—ન્યાયમાર્ગે કદાચ પરાભવ (પરાજય) થાય તે તો બહેતર પણ અન્યાયે (અધર્મમાર્ગે કરીને) જય મેળવવાની ઇચ્છા ન રાખવી. પરોપકાર કરતાં કદાચ દુઃખ આવી પડે તો વિચારે કરીને આનંદ માનવો.

પ્રશ્ન ૨૩૯—સદાચરણ પ્રાપ્ત થવાને શું કરવું ?

ઉત્તર—સત્પુરુષો પાસેથી સુશિક્ષણ લેવું.

પ્રશ્ન ૨૪૦—જગતમાં મનુષ્યે જન્મીને શું સદા કરવું ને શું ન કરવું ?

ઉત્તર—પોતાને અને સર્વને ઉત્પન્ન કરનાર જગદીશસંબંધી પૂર્ણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને તેમની કીર્તિ પ્રતિપાદક ભક્તિ સંબંધી પ્રાર્થનાદિક ગુણગાન કરતા રહેવું અને જે બાબત અચલ સર્વસારમય અને સકળ સુખની સીમારૂપ અવિનાશી ન હોય તેની કદી પણ વાંછના ન કરવી.

પ્રશ્ન ૨૪૧—અત્યંત અલભ્ય (દુર્લભ) અપ્રાપ્ય વસ્તુની પણ શું કરવાથી ઝટ પ્રાપ્તિ થાય ?

ઉત્તર—સદા સર્વદા સ્વતંત્ર અને સંપૂર્ણ સત્તાધીશ પરબ્રહ્મ પરમાત્માની કૃપાથી ગમે તેવી અસાધ્ય દુઃપ્રાપ્ય હોય એવું સકળ સાહિત્ય અનાયાસ અને અલ્પ સમયમાં શીઘ્ર પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૪૨—પરમેશ્વર તરફથી જેને જેને શિક્ષા કરવામાં આવે છે તે તે પ્રભુને ક્રૂર વા સદોષ વા વિષમ દોષભાવની બુદ્ધિવાળા માને છે તે યોગ્ય ગણાય કે ?

ઉત્તર—ના, સર્વને સન્માર્ગવર્તી કરવાને માટે અને તેના ઉપર પરમાનુગ્રહ કરવાને સારૂ પરમહિતાર્થે સદા નિર્દ્વેષ બુદ્ધિથી પરમ દયાળુપણે નિરંતર કાયમ રાખીને તેના હિતનેજ અર્થે પ્રભુ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૪૩—દરરોજ નિત્યનિયમપૂર્વક કઇ કઇ બાબતનો વિચાર કરવો ?

ઉત્તર—હું કોણ છું ? મને શા સારૂ જગતકર્તાએ સર્જ્યો છે ? હું શું કરૂં છું ? આજે મ્હારે હાથે કાંઇ પણ પાપાચરણનું કૃત્ય બન્યું છે કે મ્હારૂં કર્તવ્ય કર્મ આવશ્યક ધર્મરૂપ ફરજનું ચુકથી કરવું રહ્યું છે કે કેમ ? બુદ્ધિપૂર્વક મેં એકાદું કર્તવ્ય કર્મ ત્યાગ કર્યું છે કે શું ?

પ્રશ્ન ૨૪૪—ગૃહસ્થાશ્રમમાં કેવી રીતે વર્તીએ તો પરમાર્થ સધાય ?

ઉત્તર—સુથાર લોકોનો વાંસલો રંદો ને કરવત તે સર્વ કોએ જેયાં હશે. પણ તેની કૃતિ ઉપર વિચાર કરીને ધ્યાન આપનારા થોડા જનો હોય છે. (૧)

વાંસલાની કૃતિ કેવળ સ્વાર્થપરાયણજ હોય છે. સર્વ કાંઈ છોલેલું પોતાના ખોળા-માંજ ખેચી લે છે. તેમ સર્વ કાંઇ સ્વાર્થ અને કુટુંબીનું જ પોષણ કરવું એટલુંજ સમજે છે તેવી કૃતિ ન કરવી, (૨) રંદો સર્વ બહાર આપી દે છે તેમ પણ ન કરવું. (૩) જેવી રીતે કરવત બન્ને બાજુ તરફ સરખુ નાખે છે, તેવી રીતે કુટુંબનું પોષણ પણ કરવું ને કુટુંબ વરામાં પરોપકાર રૂપ ધર્મવરો (ખર્ચ) પણ કરવો. આથી કરીને ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં પોષ્ય વર્ગનું પોષણ કરીને, બ્રહ્મચારી, સંન્યાસી, સંત સાધુ, આચાર્યાદિનું પણ તન મન અને ધને કરીને સન્માન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૪૫—કઇ કઈ વસ્તુની શુદ્ધતા રાખવાની જરૂર છે?

ઉત્તર—બાહ્યોપચારિક સર્વ પદાર્થો તથા શરીર અને અંતઃકરણ (મન) એ ૩ વસ્તુ સદા પવિત્ર રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૪૬—સચરાચર વાસુદેવ શી રીતે જાણીને વર્તવું?

ઉત્તર—સમગ્ર જગતને ઇશ્વરના અંશરૂપ વિભૂતિ જાણી પ્રભુથી પૃથક કોઇને પણ ન જાણવા. જે પ્રમાણે આપણને ટાઢ તડકો સુખદુઃખાદે લાગે છે એજ પ્રમાણે સર્વે પ્રાણિમાત્રને થતુંજ હશે એમ જાણી કોઇ પણ પ્રાણીને ન દુભવવાં. તથા પોતાથી બને તેટલું યથાસંપત્ શક્તિ અનુસારે પરગજુ (પરમાર્થ)પણું રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૪૭—કેવું બોલવું અને કિયું ન બોલવું?

ઉત્તર—સદા સત્ય, પ્રિય અને હિતકર ભાષણ કરવું. ભગવતનામસ્મરણ કરવું, પરમાર્થરૂપની સર્વ સત્કૃતિ થવા અર્થે ભગવત્સંબંધ જોડાયલી બાબતોમાં બોલવું. ગ્રામ્યવાર્તા ન કરવી. અસત્ય, અપ્રિય ને અહિતકારક કડવું કે મર્મસ્થાન ભેદાય તેવું વક્ર ભાષણ કે અપશબ્દથી ન બોલવું.

પ્રશ્ન ૨૪૮—ગૃહસ્થાશ્રમ સાર્થક કયારે ગણાય?

ઉત્તર—ગૃહસ્થાશ્રમ કેવળ ભગવત્સેવા સધાય અને આતિથ્યનો સત્કાર થાય. દેવ ઋણ, મનુષ્ય ઋણ, પિતૃ ઋણથી મુક્ત થવાય તે માટે શ્રીહરિને સર્વાત્મનિવેદનપૂર્વક ભગવત્ શરણાગતિ એ ભગવત્કાર્ય સાધી શકાય તોજ તે સાર્થકરૂપ સાધ્ય ગુણાય. ને તેથી વિપર્યય (ઉલટું) થાય તો બાધક થઇ પડે. ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં તેમાં અહંતામમતારૂપ પ્રાપંચક આસક્તિ ન હોય ને જનક વિદેહી જેવું જળકમળવત્ રહેવાય ત્યારે તો તે બાધક ન થાય. પણ જો અહંતા-મમતાયુક્ત રહે ત્યારે તો તેને ગૃહસ્થાશ્રમ બાધક થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૪૯—પંડિત કોણ?

ઉત્તર—જેમાં અપાર વિદ્યા છતાં તેનો રંચ માત્ર પણ ગર્વ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૦—જ્ઞાની કોણ? ઉત્તર—જેને સર્વ સમજાયું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૧—તપસ્વી કોણ?

ઉત્તર—જેને કદી પણ કોઇ પણ પ્રકારનો સંતોષ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૨—યોગી કોણ? ઉત્તર-જેણે દુર્વાસનાને જીતેલી છે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૩—શ્રેષ્ઠ કોણ?

ઉ ૨ ધર્મ ન્યાયને અનુસરીને બોલનારા ઉપરાંત તે પ્રમાણે વર્તન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૪—કીર્તિ કયી?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનનો જ્ઞાની ભક્તજન એવો થાય કે જે સાંભળીને સત્પુરુષને પણ શીસ હલાવવું પડે, તેવા પુરુષને ધન્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૫૫—પુણ્યવાન કોણ?

ઉત્તર પરોપકારજ જેને સદા પ્રિય છે એવી કૃતિવાળો.

પ્રશ્ન ૨૫૬—ધનવાન કોણ?

ઉત્તર--દીન માણસને યથાશક્તિ સમજ અનુસારે મદદ કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૭--મ્હોટો કોણ?

ઉત્તર-પારકું દુઃખ જાણીને તેને પોતાની શક્તિ પ્રમાણે કષ્ટમાંથી મુક્ત કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૮—સર્વમાં આસક્તિ ઉઠાડી દેઈ ભગવાન ઉપરજ પ્રીતિ આસક્તિ કરવાનું શું કારણ?

ઉ ૨—સંસાર અસારરૂપ છે. માયિક પદાર્થોમાં અહંતામમતા રાખવાથી જન્મમરણરૂપ સંસૃતિના બંધનપણાને પમાય છે સંસારમાં વાસ્તવિક રીતે કંઇ પણ સુખ છેજ નહિ. સુખરૂપ ભાસે છે એજ માયા છે. ઋષિએ એ કહ્યું છે કે મ્હારા આગળ અનેક બ્રહ્માનો પણ લય થયો. એટલી મુદતનો હું ચિરંજીવી જેવો છતાં મેં તો સર્વત્ર દુઃખ દુઃખ ને દુઃખજ જોયું છે. જે સુખ ક્ષુદ્ર વળી જેમાં અનેક પ્રકારના અનંત દુઃખો જોડાયલાં હોય છે, તેને સાચું સુખજ કેમ કહેવાય? યદ્યપિ ૧૪ ચૌદ લોક પર્યંતનું સુખ ભૂતળ કરતાં અધિકાધિક વૈભવ ભોગ રાગાદિનું કહેવાય છે. તથાપિ તે પણ માયાવેષ્ટિત છે. માટે ક્ષુદ્ર ને નાશવંત જાણી તેને વિષે પણ આસક્તિ ન રાખવી. કલિયુગમાંજ નહિ પણ સર્વ યુગમાં નિર્ભય સ્થાન તો એક અખંડાનંદ બ્રહ્મનુંજ સર્વ સત્પુરુષોએ નિર્ધાર કરેલું છે કેમકે તેજ એક નિર્ભય સ્થાન છે. તે સિવાય સર્વત્ર દુઃખ ઉપદ્રવ ભય હાનિ વા ગલિત અલ્પાનંદ ને પતન થવાના ભયવાળું અસાર રૂપનું છે. માટે મુમુક્ષુ જને નિર્ભય પરમાનંદ પદમાંજ ૧ સર્વ પ્રકારે સ્નેહાસક્તિ જોડવાની છે.

પ્રશ્ન ૨૫૯—કીયું કામ સર્વ વર્ણ ને સર્વ આશ્રમીએ કરવું જરૂરનું છે?

ઉત્તર—શ્રીમૂલાચાર્ય પરબ્રહ્મથી આરંભીને શ્રીસદગુરુ પર્યંતને વંદન નમન સેવન કરી, તેમના કૃપાપાત્ર પરમ વૈષ્ણવોનું પણ તેજ પ્રમાણે પ્રીતિભક્તિપૂર્વક સર્વ પ્રકારે સન્માન કરવું એ અવશ્ય કર્તવ્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૦ - ભગવત્‌ની પ્રાપ્તિનું મૂળ શું છે?

ઉ ૨—સત્પુરુષનો સદા સત્સંગ કરવો અને અસત્ પુરુષથી દૂર રહેવું એજ મુખ્ય ઉપાયે કરીને ભગવન્માર્ગ જણાઈ તેથી અજ્ઞાન ટળી જ્ઞાનભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૧—સત્પુરુષ કે અસત્પુરુષ કેમ ઓળખાય ?

ઉત્તર—પરોપકાર કરવામાં પ્રીતિ ને નમ્ર કોમળ વાણી હોય ને પરમ પ્રીતિ શ્રીભગવાન ઉપર હોય તેને સત્પુરુષ કહેવા ને નિર્દય ને કેવળ આપ સ્વાર્થી હોય ને ભગવાનથી વિમુખ હોય તેને અસત્પુરુષ કહેવા.

પ્રશ્ન ૨૬૨—મ્હોટમતાનો નાશ કિયા કિયા કારણોથી થાય છે ?

ઉત્તર—પોતાની મેળે પોતાની પ્રશંસા (વખાણ) કરે ને અન્યની નિંદા કરે ને વગર પ્રયોજને જરૂર વગર અસત્ય કે મિથ્યા ભાષણ કરે કે કડવું અપ્રિય બોલે તેણે કરીને મ્હોટમતાનો અસ્ત થઇ જાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૩—સંસારમાં ઘણા પ્રસંગોએ ઘણા માણસો જુદું જુદું કહે છે તેમાંથી સાર રૂપ કીયું વચન ગ્રાહ્ય કરવું ?

ઉત્તર—કેવળ સંસારાસક્ત જનોનું ટોળું બહુ મ્હોટું હોય પણ તે જ્ઞાનથી રહિત હોય તો તો તે મૂર્ખોના વૃંદનું વચન પણ ત્યાગ કરવું ને જ્ઞાની વિવેકી સત્પુરુષ કદાચ એકાદ હોય તોપણ તેનું વચનજ પરમાર્થતત્ત્વનું સ્વીકારવું, કેમકે લક્ષાવધિ મૂર્ખોથી કંઇ શાણપણું ન આવે, ને જ્ઞાની તત્ત્વદર્શી વિવેકી પુરુષનોજ સત્સંગ કરવો.

પ્રશ્ન ૨૬૪—સંસારમાં સુખી શી રીતે વર્ત્યાથી રહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ ન્યાય નીતિએ કરીને દ્રવ્યોપાર્જન કરવું, ધર્મે કરીનેજ અર્થ સાધવો, તે અર્થ સાધવામાં મુખ્યત્વે પરમાર્થનેજ શ્રેયસ્કર જાણવો: વિવેક વૈરાગ્યે કરીને આપ્તકામ (સંતોષી થવું) સંતોષે કરીને પૂર્ણ કામનો લાભ થાય છે અર્થાત મોક્ષાદિનો શ્રેષ્ઠ સ્વાર્થ આપ્તકામ થયા વગર સધાતો નથી. જ્યાં લગી ક્ષુદ્ર પંચ માયિક વિષય પર લાલચ રૂપ તૃષ્ણા હોય ત્યાં સુધી પરમ પદના સુખની આશા રાખવી નિષ્ફળ છે.

પ્રશ્ન ૨૬૫—વાણીનો ઉચ્ચાર શી બાબતમાં કરવો ?

ઉત્તર—ભગવદ્ધર્મસંબંધી કાર્યોમાં તથા ભગવત્નામસંકીર્તનાદિમાં કરવો. અથવા પરોપકારાર્થે પ્રીતિપૂર્વક મૃદુ વાણી સ્પષ્ટ સત્ય ને સર્વના હિતકરપણાંની બોલવી.

પ્રશ્ન ૨૬૬—આપતકાળે દુઃખાદિ સમયે શું કરવું.

ઉત્તર—ધૈર્ય અને સહનશીલતા રાખી સર્વને સુખદાતા શ્રીહરિની ઇચ્છા જાણી પુરુષોત્તમને અનન્યશરણાગત સર્વાત્મનિવેદન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૭—સદા સર્વદા મુખ્ય ધર્મ કિયો જાળવવો ?

ઉત્તર—પરમ ધર્મ તો શ્રીપરબ્રહ્મની ભક્તિજ છે, તથાપિ પરોપકાર, દયાદિ એ યથાશક્તિ પ્રમાણે પ્રાણી માત્રનું ઉત્તમ હિત થાય તેમ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૮—મુમુક્ષુ જને સાર સિદ્ધાંત શો ગ્રહણ કરવો ?

ઉત્તર—સદ્ગુરુની જે જે આજ્ઞા રૂપી વચનો નીકળ્યાં હોય તે સર્વ

પ્રશ્ન ૨૬૯—ત્યાગ કરવા યોગ્ય શું ?

ઉત્તર—જે કરવાને અયોગ્ય તેવું અવિહિત નિષિદ્ધાચરણ ત્યાગ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૭૦—ક્ષમા, ધર્મ, સહનશીલતા ધૈર્યપણે રાખવાનું શું ફળ છે ?

ઉત્તર—કોઇક અસહ્ય વચન મર્મસ્થાન ભેદાય એવું કઠણ કુવેણ કહે કે નિંદા કરે યા તિરસ્કાર કરે કે તાડન કરે કે દુઃખ દે તો પણ તે સહન કરવું, પણ તેના સામો ક્રોધ ન કરવો અને તેનું પણ ભલું થાય એમ ઇચ્છવું એ ગુણ સત્પુરુષો રાખે છે. તેમાં હેતુ એ સમાયલો છે કે જે નિંદક જન કે દુઃખ દેનાર જન કે અપશબ્દથી ખોટું ભાષણ કરનાર જન તેની કુકૃતિથી હણાયલા જેવોજ છે. તે નીચ ગતિ ભોગવીજ રહેલો છે. ત્યારે એવા દબાયલા જનને વિશેષ દબવો એ સાધુ પુરુષોને ન છાજે. વળી નિંદા તિરસ્કારકે અપરાધ કરવાથી તે જન પેલા સત્પુરુષથી જે કાંઇ અધર્માદિક આચરણરૂપ દોષાસ્પદ કૃતિ થઇ હોય તે નિવૃત્ત થઇ ફળ તે અહિત કરનારને થાય, વિભાગી થઈ ભોગવવું પડે છે, અને સત્પુરુષે સહન કરી લેવાથી સહન કરનારના જે ક્રોધાદિક દુર્ગુણો તે પેલા તિરસ્કાર કરનાર અસત્પુરુષને બાળી નાખવા રૂપ થાય છે. એટલુંજ નહિ, તે તિરસ્કાર કે નિંદાદિક કરનારનું સર્વ સુકૃત્યકર્મ પણ તેજ સાથે હણાઈ જાય છે. માટે અપકાર કરનારને પણ સામો પ્રત્યુપકાર ન કરવો, પરંતુ તે અપકાર કરનારા જનો પુનઃ કોઇ સાથે એવું ન વર્તે તે સારૂ તેમાં સુગુણ આવવા સારૂ શ્રીભગવાનની પ્રાર્થના કરવી. અને પોતાથી બને ત્યાં સુધી પોતાની સંપત્ત શક્તિ અનુસાર તનમન અને ધનથી તેનું હિત થવાને સદા પ્રવર્તવું. આ પ્રમાણે કરવાથી ભગવદ્‌ભક્તમાં શ્રીભગવાનના ગુણો પ્રવેશે છે. આવું ક્ષમાધર્મમાં શ્રેષ્ઠ ફળ અપાયલું છે અને આવા પુરુષો તે દેવોને પણ માન્ય કરવા યોગ્ય ગણાય છે.

જે સત્પુરુષ સ્તુતિ કરવાથી હર્ષને પામતો નથી, અને નિંદા કરવાથી ઉદ્વેગને પામતો નથી અને સદા દ્વૈતપ્રપંચથી રહિત રહે છે, તે સત્પુરુષોનો આદર સર્વ કોઇ કરે છે અને તે સદા નિર્ભય રહે છે. ક્ષમાધર્મ સમર્થને શોભાવૃદ્ધિકારક છે. અને અસમર્થને સુખકારી છે.

પ્રશ્ન ૨૭૧—અસત્ પદાર્થને વિષે વાસના કેમ બંધાઇ જાય છે અને તે કયો ઉપાય કરવાથી ટળે ?

ઉત્તર—વાસના ઉદ્‌ભવ થવાનું કારણ મનની રુચિના સંકલ્પરૂપ મનોરથ છે. ઘણા જન્મથી લાગેલા અધ્યાસથી વાસના જડીત થઇ જાય છે. જેને નિત્યા નિત્ય પદાર્થનો વિવેક અજ્ઞાને કરીને હોતો નથી તેવા જનને અસત્ પદાર્થને વિષે મોહાસક્તિ થઇ વાસનાનું મૂળ બંધાય છે, જુવોને, સૌભરી ઋષિ સરખાને તથા ચ્યવન ઋષિને સ્થૂલ શરીરે કરીને તો વાસના જણાતી ન હતી, પરંતુ અંતરમાં વાસના હતી, જેથી બન્ને તપ વટાવી બન્ને પરણ્યા હતા. જે સારાસાર અને

નિત્યાનિત્ય પદાર્થને યથાર્થ રીતે સમજે અને તેને સમ્યક્ રીતે અંતઃકરણના સાચા વૈરાગ્યે કરીને ત્યાગ કરે અને નિરંતર બ્રહ્મનું ચિંતન ભજન સ્મરણ ધ્યાન બાહ્યાંભ્યંતર સર્વત્ર બ્રહ્મદૃષ્ટિની ભાવના રાખે તો સહજમાં તે વાસના નિર્મૂલ થઇ જાય. જેહને નિત્ય પદાર્થનું અને ઉત્કૃષ્ટ સાર પદાર્થનું અવિચ્છિન્ન જ્ઞાન છે અને જે સદા સત્પુરુષોની સંગતિમાંજ રહી અસત્પુરુષોના પ્રસંગથી દૂર રહે છે, તેને માયિક પાંચ વિષયની સર્વ વાસના સ્વપ્ને પણ ઉદ્ભવતી નથી. જેની વાસના અંતઃકરણમાં બીજ તરીકે જડાયલી નથી તેવા જનની મલિન વાસના તો સત્પુરુષના સમાગમે કરીને જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતાં તરતજ નિવૃત્ત થઇ શકે છે. દૃષ્ટાંત (૧) જેમ પક્ષીઓ ઈંડા મુકે છે તે ઈંડાં જ્યાં સુધી કાચાં હોય ને તે પડી જાય તો તરતજ તે ફુટી જાય ને તેમાંનું પાણી બહાર સવી જાય. પરંતુ જે ઇંડુ કાંઇક આકાર રૂપનું પાકુ થઇ ગયું હોય ને તે જો કોઈ ફોડે તો તેમાંથી બચ્ચુ નિસરે કેમકે તેમાં ઈંડાં મુકનારની આકૃતિ બધાઇ ગયેલી હોય છે. માટે જડીત વાસના રૂપનું ઈંડુ આકારવાળું સમજવું અને સહજ વાસનાવાળા રૂપનુ ઇંડુ તો કાચું સમજવું.

પ્રશ્ન ૨૭૨—અખંડ વૃત્તિ ભગવાનમાં રહે તેનાં કાંઇક દૃષ્ટાંત કહો?

ઉ ૨—જે પ્રમાણે નદીઓ નાળા વગેરે જળાશયોમાં મેઘનું અટુટ પાણી આવ્યાં છતાં તેનો કાંઇ પણ ભાર તે નદી પોતાના વિષે ન રાખતાં પોતાના પતિ સમુદ્રને મળવાને સારૂ કેટલા બધા તીવ્ર વેગથી વહન અહર્નિશ કર્યા કરે છે, તેને રોકવા માટે વચમાં મ્હોટાં મ્હોટાં વૃક્ષો અને પહાડ પત્થર વગેરે પ્રતિબંધ કરે છે, તથાપિ તેથી ન રોકાતાં તે ઝાડ પહાડ પત્થર આદિનાં રોકયાં ન રોકાતાં તેને તોડી ફોડીને માર્ગ પાડીને પોતાના ધારેલા નિશાને પોતાના સ્વઇષ્ટ સમુદ્ર તરફ પહોંચવાને માટે સદા આતુર રહે છે, તેમ શ્રીભગવાન્ આપણ સર્વેના સ્વામી છે, તેમના મિલનને માટે ચોપ રાખવી. (૨) જેમ વરકન્યા હોય ને તેમના માતા પિતા તે તો જુદે જુદે દૂર વસતાં હોય તોપણ એ બન્નેની અખંડ સ્મૃતિ પરસ્પરમાં કેટલા બધા સ્નેહથી પ્રોવાયલી રહે છે. ભલે તે વેગળે છે તથાપિ અને તે પોતપોતાનાં અન્ય સર્વ કાર્યો કરે છે તથાપિ નિઃસીમસ્નેહ સહિતની મનોવૃત્તિ તે તો અરસપરસ એકમેકમાં કેવી રીતે જોડાયલી રહે છે એ દૃષ્ટાંતના સિદ્ધાંતે પ્રાણાધિક પ્રિયશ્રી પુરુષોત્તમને વિષે અખંડ સ્નેહ વૃત્તિ સર્વ કરતાં અધિક સદોદિત રાખવી.

દૂહા—જલમેં બસે કુમોદિની, ચંદા બસત અકાસ;
જો જા કે મન બસે, સો તાહી કે પાસ.

શ્રીવ્રજભક્ત મુખ્ય શ્રીગોપીજનોની સ્થિતિ વિચારો કે જુઓ. પ્રભુએ મધ્યરાત્રે વેણુનાદ કર્યો, તો તે શ્રવણ કરતાં માત્રમાં પોતાના સર્વ પતિ પુત્રાદિકના સુખ ભોગરાગ ઐશ્વર્યાદિ પટ ભૂષણ વસ્ત્રાલંકારનું કાંઇપણ ભાન ન રહેતાં માયિક સર્વ બાધકરૂપ ઉપાધિનો ત્યાગ તત્ક્ષણ કરી કોઇની લેશ માત્ર પણ પરવા કે

મર્યાદ ન રાખતાં અર્ધ રાત્રિએ જે જેવી સ્થિતિમાં હતાં તે તેવીજ સ્થિતિમાં ઉઠી દોડીને ગયાં. કોઇનાં રોક્યાં ન રોકાયાં, અને ત્યાં પ્રભુની સમીપમાં પણ બોલ્યાં કે—संत्यज्य सर्वविषयान्. न खलु गोपिका० तन्मनस्कास्तदालापाः એવી ગતિ થઇ ગઈ હતી. દ્રષ્ટાંત ઇંદ્ર અને ચંદ્ર બને જણાએ પોતાના ગુરુ બૃહસ્પતિનાં પત્ની (ગુરુપત્ની કે જે માતારૂપ થાય) તેમની સાથે ગમન કર્યું (૫) ચ્યવન ઋષિ એટલા બધા સમર્થ હતા કે બીજાના દેહની નાડીઓને પણ બંધ કરી શકે તેવા હતા, તથાપિ તે પણ સ્ત્રી વરવાનાં આસક્ત થઇ પરણ્યા હતા. (૬) એકશૃંગી મુનિ કે જેહને સ્ત્રી કે પુરુષનું ભાન પણ ન હતું, એવા સમર્થ છતાં તે પણ કામમાં આખરે બંધાયા (છેતરાયા) છે (૭) સૌભરી ઋષિએ પૃથ્વી ઉપર માયાનું વિશેષ આકર્ષણ થાય છ તથી દૂર રહેવાને શ્રીયમુનાજીનાં જળમાં પેસી ૬૦ સાઠ હજાર વરસનું તપ કર્યું તેવા ઋષિ એકવાર મત્સ્યનો સંગ દ્રષ્ટિએ પડતાંજ કામથી વિહ્વલ થઇ માંધાતા રાજાને ત્યાં જઇ ૫૦ કન્યા પરણ્યા. (૮) પરાશર મુનિ, તેમણે શ્રીગંગાજીના મધ્યપ્રવાહમાં દિવસે સૂર્ય વિદ્યમાન છતાં ઢીમરની કન્યા (કુમારિકા કન્યા) સાથે બળ જોરીથી જારકર્મ કર્યું હતું. ઈત્યાદિ અનેક દાખલાઓ છે કે પુરાણ અને (મહાભારત રામાયણાદિ) ગ્રંથ પ્રસિદ્ધ છે. જ્યારે ઐતિહાસિક ઉપર લખ્યા સમર્થ પુરુષોને પણ માયાએ જીત્યા ત્યારે પ્રાકૃત મનુષ્યને તે માયા દુર્જય થાયજ. એ માયાના રૂપ અનેક પ્રકારે છે. કંચન-કામિની-ગૃહાદિ માયિક વૈભવના ભોગરાગના મોહક પદાર્થો (પાંચ વિષયના પદાર્થો) માન બડાઇ અભિધ્યા ઈત્યાદિ માટે શ્રીમદ્‌ભાગવતે કહ્યું છે કે બદરીકાશ્રમવાસી શ્રીનરનારાયણ ઋષિ સિવાય બીજો એવો કોઇ પણ ધીર પુરુષ થયો છે કે જેણે સંપૂર્ણપણે કામને જીત્યો હોય?

પ્રશ્ન ૨૭૩—જેહને સત્પુરુષનો દુર્લભ સત્સંગ પ્રાપ્ત થયો હોય તેવા મુમુક્ષુ જને શું શું કરવું અને શું શું ન કરવું?

ઉ૦ ૨—વર્ણાશ્રમના સ્વધર્મયુક્ત શ્રીપરબ્રહ્મનું માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક અને સારી રીતે દ્રઢ (કદિપણ ન ડગે તેવો સંપૂર્ણ પરાત્પર પર્યંતનો મહિમા જાણવો અને સર્વ કરતા અધિક સ્નેહે કરીને તે પુરુષોત્તમને પ્રસન્ન કરવાને અર્થે નિષ્કામ ભાવે પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ કરવી. અહંતામમતારૂપ સાંસારિક પ્રપંચનો ત્યાગ કરવો દ્રઢ વૈરાગ્ય તીવ્રપણે રાખી તેનો સમ્યક્ રીતે ત્યાગ કરવો. વેદશાસ્ત્રાદિકમાં કહ્યા પ્રમાણે વિહિત પદાર્થનું જ ખાનપાન કરવું અને નિષિદ્ધ વસ્તુમાત્રનો સદા ત્યાગ કરવો. સદાચારવિચારસંપન્ન થઇ શિષ્ટ પુરુષોએ ગ્રાહ્ય કરેલા શિષ્ટાચાર પ્રમાણે વર્તવું. નિત્યાહિકકર્મ કર્તવ્ય કર્મ સમજીને અનાસક્તિથી બ્રહ્મ પ્રત્યે કરવાં અને નૈમિત્તિક કર્મપણ પ્રસંગાનુસાર કરવાં પણ કામ્ય કર્મ તો નિષિદ્ધ જાણી ત્યાગ કરવાં. સારરૂપ મોક્ષોપયોગી બાબતો શીખવવામાં વયઆદિ ન વિચારવાં. શ્રીભગવાનના પરમ એકાંતિક ભક્ત થવા માટે અધર્મસર્ગ માત્રનો ત્યાગ કરવો. જ્યારે વિશેષ દેશકાળનું માન પ્રવર્તતું હોય ત્યારે એટલે આપત્કાળે ધર્મ સંકટ

પ્રસંગે પણ સ્વધર્મરૂપ પરબ્રહ્મસંબંધી કર્મ જ્ઞાન ને ઉપાસનાનો કદિ પણ લોપ ન કરવો. વખતે કાલલોપ થાય તો તેની ચિંતા બહુ કરવી નહીં. અર્થાત્ કદાચ કાલલોપ થાય પણ કર્મનો લોપ તો સર્વથા ન કરવો. પરબ્રહ્મથી વ્યતિરિક્ત કોઈપણ પદાર્થને વિષે આસક્તિ ન રાખવી. આપત્તિ કાળે ભગવત ભરોસે દઢ ધૈર્ય રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૭૪—સત્યમાર્ગમે કરીને અવશ્ય જાણવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય સાર રૂપની કઈ કઇ બાબતો છે ?

ઉત્તર—અંતરમાં રહેલા ષડરિપુ (કામ, ક્રોધ, મદ લોભ, મોહ, માત્સર્ય) ને પોતાના સ્વાધીન કરવા. યમનિયમાદિ પાળી પરબ્રહ્મનું ધ્યાન ચિંતન સ્મરણ સેવન કરવું. આસ્તિકબુદ્ધિથી દઢ શ્રદ્ધાએ કરીને સત્પુરુષનાં લક્ષણ શિખવાં ને તે પ્રમાણે વર્તવા ઉપર દઢાગ્રહ રાખવો. શ્રીભગવાનની ભક્તિ વગર વ્યર્થ કાળ ક્ષણાર્ધ પણ ન ગુમાવવો. સર્વમાં અત્યંત સારરૂપ પરાત્પર પુરુષોત્તમ છે એ ભગવાનની અને તેમના રૂપ તાદાત્મ્યપણાંને પ્રાપ્ત થયેલા આચાર્ય સદ્‌ગુરુની અને વેદશાસ્ત્ર પુરાણાદિકમાં કહેલી આજ્ઞાઓ તે પણ ભગદ્વચનતુલ્ય શ્રેષ્ઠ પ્રમાણી તેમનાં વચનોનો કદી પણ લોપ ન કરવો. સર્વના મૂળ પાયારૂપ ધર્મ છે એ ધર્મની બાબતો જાણીને ધર્મનો સદા સર્વદા સંગ્રહ કરવો અને અધર્મને તિલાંજલી આપવી. સર્વ સુખ માત્રનું મૂળ ધર્મમાં રહેલું છે એમ જાણીને કદી પણ ધર્મનો ત્યાગ ન કરવો. એકાદ પણ ધર્મનો ત્યાગ કરવાથી સર્વ અધર્મનો સર્ગ પ્રવેશ કરે છે. જ્યાં ધર્મનું પાલન હોય ત્યાંજ ભગવાન અને ભગવાનની ભક્તિ વાસ કરીને રહે છે અને નવ પ્રકારના ભેદે કરીને મુખ્ય ગણાતી નવધા ભક્તિ ને ૧૦ દશમી પરા (અથવા પ્રેમલક્ષણા સ્નેહાત્મકપણાની ભક્તિ) પરબ્રહ્મની કરવી એ અત્યંત સારરૂપ છે અને સર્વ કામમાં શ્રેષ્ઠ કર્મ શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સેવા એજ છે એમ શ્રીજગદીશ પ્રભુની પણ આજ્ઞા છે. एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं વગેરે નિર્મળ મને કરીને શ્રીભગવાન વિષે તથા તેમના અંતરંગ આચાર્ય અને ભગવદ્‌ભક્તો પરત્વે નિષ્કામ ભાવ રાખી, તેમને સેવવા એમ કરવાથી પ્રભુ શીઘ્ર પ્રસન્ન થાય છે. શ્રીમદ્‌ભાગવતમાં શ્રીભગવાનનું વચન છે કે મ્હારા ભક્તજનોને હું ચારે પ્રકારની મુક્તિ પર્યંતનું દાન આપુ છું છતાં મ્હારા તે નિષ્કામી ભક્તજનો મ્હારી ભક્તિ સિવાય અન્ય કોઈને પણ ઇચ્છતા નથી; ને હું પણ સર્વ કોઇને મ્હારી ભક્તિનું દાન આપતો નથી. કેમકે હું સ્વતંત્ર છતાં ભક્તિવડે કરીને તે ભક્તને પરાધીનવત્ થઈ જાઉં છું એવો મ્હારી ભક્તિનો અત્યુત્તમ પ્રભાવ છે. જુઓ શ્રીમદ્‌ભાગવત ૩-૧૧ સ્કંધ અને ૯ સ્કંધ. સર્વ સાધનો વડે કરીને ફલાત્મક શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી એજ અંતિમ સાર છે.

પ્રશ્ન ૨૭૫—અંતઃકરણ મલિન રહે છે તેનું શું કારણ અને તે ચિત્તવૃત્તિ શુદ્ધ થવાનો ઉપાય શો ?

ઉત્તર—માયિક પાંચ વિષયના મનોરથો (સંકલ્પો) જારી રહે ત્યાં સુધી અંતર્વૃત્તિ મલિન રહે છે વળી દેવાદિકનો કે સત્પુરુષનો અવગુણ અંતરમાં આવે

તો તેણે કરીને પણ અંતઃકરણ દોષવંત થાય છે. એ ચિત્તમાં (અંતઃકરણમાં) ભરાયલા મલિન દોષવાળી વૃત્તિઓ ટળવાનો ઉપાય પરબ્રહ્મપ્રીત્યર્થે નિષ્કામ કર્મ ભક્તિયુક્ત કરવાં એ છે તથા સત્પુરુષનો સુસંગ કરવાથી પણ અજ્ઞાને કરીને ભરેલી કુબુદ્ધિનો સમ્યક્ રીતે નાશ થાય છે તથા શ્રીભગવાનનું અપરિમિત જ્ઞાન થાય છે તેણે કરીને પણ અવિદ્યા નિવૃત્ત થઈ અંતઃકરણ શુદ્ધ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૭૬—અહંતામમતાત્મકપણાંનો પ્રપંચ ત્યાગ કરવામાં એક પ્રકાર છે.

ઉત્તર—ના. અનેક પ્રકાર છે. કેટલાક તો સંપત્તિનો નાશ થઈ દરિદ્રપણાંના કારણથી (નિર્ધનતાથી) કેટલાક સ્ત્રીપુત્રાદિકના મરણથી અને આલસ્યાદિ દુર્ગુણોથી અને ક્રોધથી કોઈ અજ્ઞાનથી ને કોઈ વિચારપૂર્વક ત્યાગ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૭૭—શ્રીભગવાનનું યથાર્થ જ્ઞાન શી રીતે સમજી શકાય?

ઉત્તર—પ્રથમ સત્પુરુષદ્વારા ભગવત્કથાવાર્તાનું શ્રવણ કરવું. શ્રીભગવાનના યશ અને લીલા ચરિત્ર તથા તેમનામાં રહેલું કર્તુંમ્, અકર્તુંમ્, અન્યથાકર્તુંમ્પણાનું અને તેમાં રહેલી અક્ષય સર્વ પ્રકારની ઐશ્વર્યાદિક સામર્થ્યનું તથા પ્રભુના અપાર સદ્‌ગુણોનું જ્ઞાન થાય છે. કેવલ પોતાની મેળે સદ્‌ગ્રંથો વાંચવાથી સંપૂર્ણ યથાર્થ જ્ઞાન થતું નથી, માટે વિજ્ઞાની જેને પરબ્રહ્મનું અવિચ્છિન્ન જ્ઞાન બ્રહ્મના સાક્ષાત્કાર અનુભવવાળું પ્રત્યક્ષાનુભવનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું હોય તેવા સત્પુરુષ મહાત્માના સદુપદેશ વડે શુદ્ધ જ્ઞાન જેવું છે તેવું યથાર્થ થઈ શકે છે. જેમ જેમ ઉત્તમ સજ્જનના વચનોનો સંગ મળે તેમ શ્રેષ્ઠ સમજવું. વિદુર નીતિમાં કહ્યું છે કે यादृशैः सन्निवसते જેવા પ્રકારના સંગનું સેવન કરે તેવા પ્રકારના રંગનું તેને જ્ઞાન થાય છે. શ્રીમદ્ ભાગવતે प्रसंगमजरं पाशमात्मनः ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન ૨૭૮—ભગવદ્‌ભક્તને તીવ્રતર વૈરાગ્ય થવાની ક્રિયા શેનાથી જરૂર છે?

ઉત્તર—ચતુર્દશ લોક પર્યંતના (૭ સાતે પાતાળથી આરંભીને તે ઉપરના ૭ સાતે લોક સુધી બ્રહ્માજીના સત્ય લોક સુધીના સર્વ સ્થાનો તેના) ભોગ ઐશ્વર્ય તુચ્છ અને અસારરૂપના અને અનિત્ય છે એમ જાણી માયિકના કોઈપણ પદાર્થમાં કદિ પણ મોહાસક્તિ ન થાય તો અનન્ય પરબ્રહ્મમાં નિષ્કામે દૃઢાસક્તિપણાથી સ્નેહ બંધાય. વળી નાશવંત પદાર્થો પ્રભુની પ્રાપ્તિ થવામાં બાધક રૂપ છે એમ સમજાય. વળી સર્વ વસ્તુમાત્રને પરમાત્માએ સરજી છે માટે ખરેખર સર્વ પદાર્થના તેજ માલીક છે એમ જાણે અને તેનો વિનિયોગ પરમ પરમાર્થ રૂપ બ્રહ્મપ્રીત્યર્થે થાય, નિત્યાનિત્યવિવેક સમજાય તો સાર અસાર અલ્પ સાર અને સારમાં પણ વિશેષ સાર ઓળખી અસાર તથા અલ્પસારને છોડી સારના સારરૂપ (અત્યુત્તમ સાર) ને વિષે જ આસક્તિ સ્નેહ બંધાય એ હેતુથી ત્યાગ, વૈરાગ્યનો સર્વાત્મનિવેદન ભક્તિ કરાવવા ઉપર લક્ષબિંદુ રહેલો સમજાય છે. માટે કાં તો સત્પાત્રને દાન દેવું. (પરમાર્થ માર્ગે કરવાં) યા ઉત્તમોત્તમ સત્પાત્ર

પરબ્રહ્મને જાણી જે માલીક છે તેનાજ વિનિયોગમાં તે આવે એ સાર તે પરબ્રહ્મને સર્વ સમર્પણ કરવું. પ્રાકૃત ભોગ રાગ ઐશ્વર્ય ઇત્યાદિકનાં સુખ તે તો કહેવા પૂરતાં છે (કથનમાત્ર છે) કારણ કે ક્ષુદ્રાનંદ છે વળી અનિત્ય છે (નાશવંત છે) અને તેમાં અનેક પ્રકારના કષ્ટ વિઘ્નની રેખાઓ થઇ રહે છે. અસાર રૂપ છે માટે બાહ્ય સુખોને નાશવંત ને નિરાનંદ જાણી શ્રીભગવત્સંબંધી અત્યંત સાર રૂપ અને પરમાનંદ નિત્ય છે તેનેજ વિષે સાચું સુખ માનવું. ધર્મશાસ્ત્રમાં પણ કહ્યું છે કે-यौन्तः सुखोन्तरागमः

પ્રશ્ન ૨૭૯—સારની વાતો ગ્રહણ કરવામાં વયાદિનો વિચાર ન કરવો એમ કહ્યું છે તેનો સ્પષ્ટ બોધ સમજાવો.

ઉત્તર—મોક્ષને ઉપયોગી વાતો સારરૂપ કહેવાય છે, તેવી શ્રેષ્ઠ વાત જો ન્હાના બાળકમાંથી મળતી હોય તો તેની પાસેથી પણ શીખવી, જુઓને, શ્રીશુકદેવજી મહારાજ પરીક્ષિતે કરેલી શ્રેષ્ઠ પુરુષોની સભામાં પધાર્યા ત્યારે શ્રીશુકદેવજી કરતાં પણ વયે કરીને મ્હોટા એવા શ્રીશુકદેવજીના પિતા શ્રીવેદવ્યાસજી આદિ અનેક મહર્ષિ વયોવૃદ્ધ બિરાજેલા હતા છતા તેમનાથી વયમાં નાના એવા શ્રીશુકદેવજી જ્યારે પધાર્યા ત્યારે તે સર્વ વૃદ્ધઋષમંડળે પણ ઉઠીને તેમને ઉંચા સિંહાસન ઉપર પધરાવી પૂજા સ્વાગત કરી અને તે સર્વ ઋષિઓએ પણ પરીક્ષિત રાજાની સાથે શ્રીમદ્ભાગવતની કથા શ્રવણ કરી માટે વયોવૃદ્ધતાના કારણથી કાંઈ શ્રેષ્ઠતા ન સમજવી. પણ તપોવૃદ્ધ કે જ્ઞાને વૃદ્ધ હોય તેનીજ જ્યેષ્ઠતા ગણવી. વૃદ્ધ થયા છતાં પણ પરબ્રહ્મના સ્વરૂપને જાણતા ન હોય ને ન્હાની વયના કોઈ જ્ઞાને કરીને સંપન્ન હોય તથાપિ તે બાળક જ્ઞાનવંત હોવાથી મ્હોટા સમજવા. વળી કદાચ ઉકરડામાં રત્ન પડયું હોય તો પણ તે શુદ્ધ કરીને ગ્રહણ કરી શકાય છે તેમ કોઇ કદાચ જાતિએ કરીને નીચ હોય તથાપિ જો તેમાં જ્ઞાન વિશેષ હોય તો તે જ્ઞાન તે દ્વારાએ ગ્રહણ કરવું. જુઓને સૂતપુરાણી લોમહર્ષ જાતિના હતા તથાપિ તે શ્રીભગવાનનું જ્ઞાન જાણવામાં પુરાણ ઇતિહાસાદિમાં પ્રવીણ હોવાથી શૌનકાદિ અનેક ઋષિઓએ તેમની કથા શ્રવણ કરી તેમનાથી જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું, ધ્રુવ, પ્રહ્લાદાદિ ભગવદ્ભક્તો ન્હાની વયના હતા ને તેમણે તે અવસ્થામાં શ્રીભગવાનની જ્ઞાને સહિત ભક્તિ કરી તો તેમના વર્તનનું અનુકરણ અદ્યાપિ અર્થાત શિષ્ટ પુરુષોની માફક સર્વ સજ્જનો કરે જાય છે માટે જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામાં વય કે જાતિની લઘુતાનો વિચાર ન કરવો. જો શ્રેષ્ઠ જ્ઞાન દાતા વક્તાને વિષે અતિશય હેત ને તેમનાં વચનને વિષે અતિશય દૃઢ શ્રદ્ધા અને તેઓ શ્રોતાના સ્વભાવ મુકાવવા કઠણ વચન કહે તે હિતકારી સમજી સહન કરી વર્તે તો સાર સમજાય. જેમાં જેટલું વિશેષ જ્ઞાન હોય તેને ભગવાન સંબંધી કાંઇ અટપટી લીલા જોઇને કુતર્ક વિપરીત સંભાવના ન થાય તે સદા સંશયરહિત નિર્દોષ ભાવ મનાય.

સદુપદેશનું તે ગ્રહણ ન કરે ને તેમ ન વરતે વા તે સત્પુરુષ ઉપર અભાવ આણે ત્યારે પણ તે સત્સંગતિને છોડીને કુપથેજ જશે. આવા જનો તો સત્સંગ શ્રવણ કરવાના પણ અધિકારી નથી. જે કોઈ શ્રવણાધિકારી જન પોતાની અશુભ વાસનાઓ રૂપ કુબુદ્ધિને સદુપદેશ પ્રમાણે સુધારવાને સારૂ તીવ્ર લાગણીથી વારંવાર છેદન કરતો જાય તો કાળે કરીને કુભાવ, કુતર્ક, કુવાસના કુત્સિત વૃત્તિની જડ મૂલસહિત તદ્દન નાશ થાય. દ્રષ્ટાંત—જેમ વૃક્ષનાં ડાળાં પાદડાં પાંખડીને વારંવાર કાપ્યા કરતો રહે તો તે વૃક્ષનો મધ્ય ભાગ અને થડીયું હળવે હળવે સુકાઈ જાય છે. ને જો વચમાંથીજ કાપી નાખે ત્યારે તો થડ અને ડાળાં પણ સુકાઇ જાય છે, તે મૂળમાંથી કાઢી નાંખે ત્યારે તો મધ્ય ભાગ ને ડાળાં સર્વ સુકાઈ જાય, માટે સત્પુરુષનાં વચનો ઉપર દ્દઢ વિશ્વાસ રાખી તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તવાનો દ્દઢાગ્રહ રાખવો. દ્રષ્ટાંત (૧) સંગસંબંધે કરીને સંયોગમાં મિશ્રણ થવાથી મૂળરૂપ બદલાય છે, જેમકે તલને ફુલમાં વસાવીને પછી તેને ઘાણીમાં પીલે છે. તો તે તલનું મૂળ સ્વરૂપ ન રહેતાં ફુલેલજ સુગંધીવાન થાય છે. તેમ સંગની વાસ જરૂર લાગે છે. દ્રષ્ટાંત (૨) જેમ કોઇ નદીના ધરામાં અતિશય મલિન (અશુદ્ધ) જળ ઘણા દિવસનું કહોયલું ભરાઇ રહેલું હોય પછી તે જળમાં ચોમાસાનું શુદ્ધ સ્વચ્છ આકાશી જળ પુષ્કળ પડે ને તે નવું પાણી જુના મલિન પાણીને સારી પેઠે ધોઇને વ્હેવડાવી નાખે ત્યારે તે ધરામાંનું પાણી પણ શુદ્ધ સ્વચ્છ નિર્મળ જણાય છે તેમ મલિન અંતઃકરણવાળો જન સ્વલ્પ સમાગમે કરીને સુબુદ્ધિવાળો બની જાય છે. જે જનો મૂળથીજ આસુરી સંપત્તિવાળા હોય તેવાની કુબુદ્ધિ જડમૂળથી ટળી બદલાય નહિ પણ જે મીઠા જળની નદી જેવા સમુદ્રના ઝરાના સંયોગ મિશ્રણે કરીને ક્ષારવાળા થયા હોય તે તો અસત્પ્રસંગથી મુક્ત થાય તો સુધરી શકે.

પ્રશ્ન ૨૮૧—સત્પુરુષમાં મુખ્ય શાશા ગુણો જોઇએ ?

ઉત્તર—૧ સ્વધર્મ, ૨ ધર્મ, ૩ જ્ઞાને સહિત ભગવદ્ભક્તિ, ૪ ભગવાનનો દ્દઢાશ્રય, ૪ વૈરાગ્ય, ૫ પ્રપંચને વિષે અનાસક્તિપૂર્વક પરમાત્માને વિષે સ્નેહાસક્તિ.

પ્રશ્ન ૨૮૨—સત્પુરુષને મુખ્ય દૂષણરૂપ બાધક કર્તા કીયા ગુણો છે ?

ઉત્તર—૧ કામક્રોધાદિ ષડ્રિપુનો સંગ્રહ, ૨ અસત્પુરુષનો નિરંતર સંગ, ૩ માન, ૪ બડાઇ, ૫ ઇરીષ્યા, ૬ અશ્રદ્ધા, ૭ અવિવેક, ૮ કંચન અને કામિનીનો પ્રસંગ, ૯ જીભ્હા ઇંદ્રિયની લોલુપતા, ૧૦ સત્ય હિતકારી ઉપદેશ દેવામાં કોઇ પણ પ્રકારની સ્પૃહા કે શરમ રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૮૩—ભગવદ્ભક્તમાં મુખ્ય કિયાં લક્ષણ બાધકરૂપનાં ગણાય છે.

ઉત્તર—કપટ, માન, લોભ, છલ, ઇર્ષ્યા, હાંસી, નિંદા, દ્રોહ.

પ્રશ્ન ૨૮૪—ભગવદ્ગીતામાં શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ પોતાની દૈવી માયાને

દુરત્યય કહી તેથી મુક્ત થવાનો ઉપાય પ્રભુની અનન્યશરણાગતિનો કહેલો છે. એ માયાનો એટલો શો પ્રભાવ તે સમજવા રૂપ કંઇ દાખલા કહો.

ઉત્તર—(૧) જુઓ બ્રહ્માજી કે જે સર્વ પ્રજાના પિતામહરૂપ કહેવાય છે તેમણે કામદેવને ૫ પાંચ બાણ આપ્યાં હતાં. તે કામે મોહરૂપ બાણ બ્રહ્માજી ઉપરજ મુકયું તો તેણે કરીને તે બાણ આપનાર બ્રહ્માજી તે પણ પોતાની પુત્રી સરસ્વતીજીના રૂપ ઉપર મોહાસક્ત થઇ તે કન્યાની પાછળ કામવાસનાથી દોડવા વ્યાકુળ થઈ ગયા. (૨) જેણે એ કામદેવના આધિભૌતિક શરીરને બાળીને ભસ્મ કર્યું તેવા શ્રીમહાદેવજી તે પણ શ્રીભગવાનના મોહિનીજી સ્વરૂપમાં અત્યંત લંપટપણાંને મોહથી પામી ગયા, ને શિવજી સરખાનું વીર્યપતન થવાથી નતમસ્તક થયા. (૩) બ્રહ્માના માનસી પુત્ર દેવર્ષિ કે જે નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચારી એવા નારદઋષિ તેમને પણ કન્યા સાથે પરણવાનું (વરવાનું) મન થયું. ને તેમાં ભંગ થવાથી શ્રીવિષ્ણુભગવાનને પણ શાપ દેવા લાગ્યા. સૂર્ય સરખા દિવ્ય દેવને પણ મંદેહા નામનો દૈત્ય સૂર્યોદય સમે દુઃખ દેવા આવે છે અને ચંદ્ર તથા સૂર્ય ઉભયને રાહુ ગળવાને માટે આવે છે. ત્યારે અન્ય પ્રાકૃત સામાન્ય જીવોને કામક્રોધાદિ રિપુ કનડગત કરવા આવે એમાં કાંઈ નવાઈ ન કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૮૫—સુખદુઃખાદિ દ્વંદ્વપણું કેમ મનાય છે? અને દ્વંદ્વપણાંથી રહિત કેમ વર્તવાથી થવાય?

ઉત્તર—સર્પની કાંચળીની પેઠે જ્યાં સુધી દેહભાવને ત્યાગી આત્મનિષ્ઠારૂપ ન થાય, એટલે જ્યાં સુધી જીવ પોતાને દેહરૂપે કરીને માને છે, ત્યાં સુધી તેને સુખદુઃખાદિપણું ચાલુ રહે છે. પરંતુ જો પોતાનું સ્વરૂપ દેહરૂપ નથી. પરંતુ આત્મરૂપ પોતે છે, એમ જો દેહાભિમાનથી રહિતપણે વર્તે તો તેને કોઈ પણ પ્રકારનું દ્વંદ્વપણું ન રહે. દેહને સાંખ્યયોગના વિચારે કરીને અનિત્ય નિર્જીવરૂપ જાણે, સુખદુઃખનો આધાર મને માનવા ઉપર છે માટે આત્મનિષ્ઠાથી થવું. સ્થૂલ સૂક્ષ્મ અને કારણ એમ દેહનાં ૩ પ્રકારનાં શરીર છે, ને તે અસ્થિર છે. આ આધિદૈવ પાંચમહાભૌતિક (પંચતત્ત્વનો) છે એમ જાણી શરીરને પોતાનું રૂપ ન સમજતાં આત્મરૂપે માનવું. માટે દેહાભિમાનને ગલત કરવું. અનિત્ય શરીરને વિષે મમત્વ અજ્ઞાને કરીને અહંતામમતાથી રહે તે દેહથી આત્મા પૃથક છે એવું જ્ઞાન થાય તો દ્વંદ્વપણું સહજ મૂકાય માટે આત્મરૂપે વર્તવું. જેવી રીતે આત્મલાભે કરીને શાંતિ તેવી શાંતિ કેવલ વૈરાગ્યે કરીને કે વેદાંત શાસ્ત્ર પુરાણના શ્રવણે કરીને પણ થતી નથી. માટે વિજ્ઞાની ભગવદ્ભક્તના સમાગમે કરીને દેહાતીતપણાંનું જ્ઞાન મેળવી આપ્તકામ થઇ સ્વાત્મલાભપણારૂપ આત્મનિષ્ઠારૂપે વર્તે તો જરૂર દ્વંદ્વપણાથી રહિત થાયજ ત્યારે દેહનું જડત્વપણું જાણી આત્માનેજ ચૈતન્યતત્ત્વ માની નિત્ય જાણે ત્યારે દ્વંદ્વપણું ટળે.

પ્રશ્ન ૨૮૬—નિત્ય નૈમિત્તિક કર્મો ક્યાં સુધી કરવાની જરૂર છે?

ઉ ૨—સારી રીતે અંતઃકરણની શુદ્ધિ થઇ બ્રહ્મનો સાક્ષાત્કાર થાય ત્યાં સુધી કર્મ કરવાની જરૂર છે. સદાકાળ બ્રહ્મપણાયણુ તાદાત્મ્ય બ્રહ્મમય થાય ત્યારે. એટલે જેને શૌચાદિકનું પણ ભાન ન રહે એવી રીતે સર્વ પ્રકારે જેહને પ્રપંચની વિસ્મૃતિ થઇ ગઈ છે તેવા પરમહંસ જેવા વિજ્ઞાની ભક્તોને કર્મ કરવાની જરૂર નથી, કર્મનું પ્રયોજન ચિત્તશુદ્ધિ છે.

પ્રશ્ન ૨૮૭—સંચિત ક્રિયમાણ અને પ્રારબ્ધ કોને કહે છે અને તે મુક્ત થવાનો કાંઇ ઉપાય છે ?

ઉત્તર—અનેક જન્મ પર્યંત સુકૃત અથવા દુષ્કૃત જે કર્યાં હોય તેવાં એકઠાં થયેલાં કર્મને સંચિત કહે છે. ક્રિયમાણ એટલે કર્મ કાંઇ પણ ક્રિયા કરવી તેનું ક્રિયમાણ. પૂર્વજન્મનાં એકઠાં થયેલાં સંચિત કર્મોમાંથી જન્મ પર્યંત ભુકતમાન થઇ શકે તેટલાં ઈશ્વરેચ્છાથી જે નિર્માણ થાય તેનું નામ પ્રારબ્ધ અથવા ભાવી અથવા અદષ્ટ અથવા દૈવ અગર ભાગ્ય એવા જુદા જુદા નામથી કહેવાય છે તેનું નામ પ્રારબ્ધ સંચિત અને ક્રિયમાણ શ્રીહરિને શરણે અનન્યપણે શ્રીસદ્‌ગુરુદ્વારા જવાથી તથા વિજ્ઞાની થવાથી ટળી જાય છે. પરંતુ પ્રારબ્ધરૂપ ભાવી ફળ તે તો અવશ્ય ભક્તમાન કરવું પડે છે. અદષ્ટરૂપ ભાવી પદાર્થ ફેરવવાને સામર્થ્ય સર્વેશ્વર પર બ્રહ્મમાં છે તથા તેમના પરમ એકાંતિક સ્વાત્માનુભવી મહાન્ સત્પુરુષોને છે કર્મફલપ્રદાતા સર્વેશ્વરની ઇચ્છાનુસાર નિર્મિત થયેલા પ્રારબ્ધને ફેરવવાને કર્તુમકર્તુમન્યથાકર્તુમ્ સ્વતંત્ર પરાત્પર પરબ્રહ્મ અને તેમના પરમૈકાંતિક વિજ્ઞાની ભગવદ્‌ભકતો સિવાય અન્ય કોઇપણ દેવદેવી કે મનુષ્યાદિકને લેશ માત્ર પણ સત્તા કદિપણ છે જ નહિ. મંત્ર યંત્ર કે ઔષધાદિકે પણ તેમાં ફેરફાર થઇ શકતો નથી વિવેકી પુરુષો પ્રારબ્ધ કર્મને ફેરવવાને કદિપણ પ્રભુને કહેતાજ નથી. પ્રારબ્ધ સંચિત ક્રિયમાણને અનુસરીને ઇશ્વરે નિર્માણ કરેલું હોવાથી તેને ફેરવવાને તે પુરુષોત્તમ કે તેમના કૃપાપાત્ર અંતરંગ મહાનુભાવ ભગવદીયોજ સમર્થ છે. તથા પે તે વિવેકી ભગવદ્‌ભ તો તે ઇશ્વરેચ્છા માનીને ફેરવવા રહતા નથી.

પ્રશ્ન ૨૮૮—કેટલાક ભગવદ્‌ભકતોમાં દોષ પણ રહે છે, તેનું શું કારણ ?

ઉત્તર—દોષનાં નામ	તે ન થાય તેના ઉપાય શા ?
૧ અજ્ઞાન=	જેને બ્રહ્મનું સાક્ષાત જ્ઞાન હોય તેવા વિજ્ઞાની ભક્તનો સદા સમાગમ રાખે તો ટળે
૨ મોહ=	તીવ્ર વૈરાગ્ય પ્રપંચને વિષે આવી સાચો સ્નેહ પ્રભુમાં થાય તો ટળે.
૩ પ્રમાદ=	શુદ્ધ અવિચ્છિન્ન જ્ઞાન સદા રાખે તો ટળે.
૪ આળસ=	જ્યારે તીવ્ર ભક્તિએ કરીને પ્રભુની આરત જાગે ત્યારે ટળે.
૫ નિદ્રા=	પોતાને પરમ પ્રિય એવી ભગવત્કથાકીર્તનાદિમાં વૃત્તિ જોડે તો ટળે.

આ પ્રમાણે ૫ દોષને છોડીને સદાકાળ ભગવત્પરાયણ રહે તો સર્વ દોષ ટળી જાય

પ્રશ્ન ૨૮૯—ભક્તો દોષ જાણતા છતાં પણ કેમ તેને ગ્રહણ કરે છે?

ઉત્તર—દોષમાં પણ કોઈ જાતનો ગુણભાવ રહેલો હોય છે. તે ગુણને આ તે ગ્રહણ કરે છે. જુઓને જેમ વત્સનાભાદિ વિષ પદાર્થો વિષમકારક છે. તથા કોઈ કોઈ પ્રસંગે અસાધ્ય રોગ મટાડવાને ધન્વંતરી જેવા વૈદ્યો સરખાપણ તેન ઓષધમાં તે વિષને મારીને દવા આપે છે. તો તેણે કરીને અસાધ્ય રોગ પા મટે છે. તેમ અનંત અવગુણોમાં પણ એકાદ મહાન્ ગુણ હોય તો તેટલા ગુણનં ખાતર દયા લાવીને તે વિષમ છતાં તેને જરૂર પૂરતાં સ્વીકારે છે. વળી જુઓ શ્રીમહાદેવજીએ ચંદ્રને ગુરુપત્નીગમનના દોષવાળો જાણ્યા છતાં તેમાં શીતળતાદિ સુગુણ જાણી તેને પોતાનો શરણાગત જાણીને સ્વીકારી પોતાના ભાલને વિષે સદ રાખ્યો છે. વળી શ્રીમહાદેવજીએ સમુદ્રમંથનના પ્રસંગે નિકળેલા વિષને સર્વ પ્રજાને વિષમ દુઃખદાયક થઇ પડશે એમ જાણીને દેવ દાનવ કે મનુષ્ય કોઇને પર તે ઉપદ્રવ ન કરે એમ જાણીને શ્રીભગવાનની સંમતિથી સમર્થભક્તિદાતા શ્રીમહા દેવજીએ પોતાના કંઠને વિષે રાખ્યું હતું. મહાન્ પુરુષોના અભિપ્રાય બહુજ ઉત્તમ છતાં તેનું કારણ તેમણે પ્રકટ કરેલું ન હોવાથી સ્પષ્ટ સમજવામાં આવતું નથી તેટલા કારણથી કાંઇ તે ભક્તો દોષિત છે એમ કહી શકાય નહિ.

પ્રશ્ન ૨૯૦—અહંકાર શાથી થાય છે અને તેથી રહિત થવાના ઉપાય શા?

ઉત્તર—જાતિ (વર્ણન), આશ્રમ, કુળ, રૂપ, ગુણ, સામર્થ્ય અધિકાર, માન, રાજ્ય, યશ, (કીર્તિ) દ્રવ્યાદિ વૈભવ સંપત્તિ કુટુંબની વૃદ્ધિ ઇત્યાદિ મહોટમતા-પણાને લીધે અહંતા થાય છે માટે એ સર્વ ઉપાધિથી રહિત થવાથી અથવા તે ઉપરની મોહાદિ તૃષ્ણા તુટી નિર્માન થઈ મહાપુરુષની મન કર્મ વચને કરીને તનમન અને ધનથી સેવા કરે તો તેમના સત્સંગ અને પ્રસાદ (કૃપા) થી અહં-કારની નિવૃત્તિ થાય. જ્યાં સુધી દેહાભિમાનની ગ્રંથિ હોય ત્યાં સુધી નિર્માનીપણું સાચું પ્રાપ્ત ન થાય માટે દેહાભિમાનથી રહિત થઇ આત્મસત્તારૂપથી વર્તે તો જરૂર અહંકાર નિવૃત્ત થાયજ. જેવી રીતે નહાના બાળકને માનાપમાન કે પૂજા કરે યા ધૂળ નાંખે તે સર્વે સમાન ભાસે છે, તેમ વરતે, નીચી ઉંચી તમામ પ્રકારની સેવા શ્રીહરિનો સંબંધ જાણીને પોતાનું ભાગ્ય માનીને કરતો રહે તો તે જરૂર અહંકારદોષથી મુક્ત થશેજ.

મુનિશ્રી ભક્ત કવિશ્રી દયારામકૃત પ્રશ્નોત્તરવિચારમાળા સંપૂર્ણ.

પદ.

કામણગારે કામણ કીધું રે, હો કામણગારા, બંસીમાં કામણ કીધું રે;—ટેક.
વેણુ વજાડી વ્હાલે વનમાં તેડ્યાં, ચિત્ત ચોરીને કાંઇ લીધું રે. હો કામણગારા. ૧
એરે મોરલીએ મ્હારૂં સર્વ વણસાડ્યું, મહુડી હેરીને મદી પીધું રે. હો કામણગારા. ૨
ઘેલી કીધી ગોકુળની નારી, મોરલીને નાદે મન વિંધ્યું રે. હો કામણગારા. ૩
દયાના નાથે મને દયા કરી છે, આજ સર્વે કારજ મ્હારે સીધ્યું રે. હો કામણગારા. ૪

उत्तम भगवदीय.

સર્વ ઉપર કૃપાવંત રહે. ક્યારે પણ કોનો દ્રોહ ન કરે.

કોઇ અપરાધ કરે તો પણ તે સહન કરી ક્ષમા રાખે પણ તે ઉપર ક્રોધ ન કરે.

ભગવદીય કદી ક્રોધ કરે અથવા દુર્વચન બોલે તો તે વેળાએ પણ તેમનો ન ગણે, ને પોતાનો અપરાધ માની (વિચારી કાઢી) તેમનું બુરું ન કરે.

ઉલટું તેમના પગમાં માથું મૂકી મધુરાં વચન બોલીને પોતાના અપરાધની કરાવે. ભગવદીય તથા પ્રભુથી અને ગુરુથી સદાચાર રહે.

તેમના ઉપર સદા નિર્મળ મન રાખે. પોતાની સ્ત્રીપુત્રાદિક ઉપર પણ ભગવત્ ધ જાણીને મન સમાધાનપૂર્વક સમજ રાખે.

સર્વના ઉપકારમાં રહે. અનધિકારી આગળ માર્ગ રહસ્ય પ્રકાશ ન કરે.

હરિ ગુરુ ભગવદીય, ઉપર સદા ભર ભાવ રાખે, મન ડગવા ન દે.

મન કોમળ રાખે. અશ્રદ્ધાનુ પ્રભુને કામ ન આવે.

ભગવન્નિવેદિત પ્રસાદી માથે રાખી અહોભાગ્ય માની અંગીકાર કરે.

ઘણો પ્રસાદ લીધામાં આળસ-નિદ્રા રોગાદિ થાય ત્યારે ભગવત્સેવામાં રાય થાય. મન વિહ્વલ થાય તો પણ મનનો ભરોંસો ન રાખે.

સદા ભજનમાંજ સાવધાન રહે. સકલ કારજ કરતાં મન પ્રભુના ચરણકમલમાં રાખે.

બહિર્મુખ લોક ચર્ચા કરે ત્યારે મૌન ધારણ કરી રહે. લોભાદિને વશ ન થાય.

ભગવદીયને માથે પ્રભુ વિરાજે છે, તેનો સદા ભય રાખે.

અનુચિત કર્મ ન થવા માટે પ્રભુજીની બીક રાખે.

સદા ચિત્ત શ્રીજીનુ ચિંતન કરે. પ્રભુ સ્વામી ને હું દાસ એ ભાવ કદી ન છોડે.

સર્વોત્તમભાવ સહેજે હોય. બ્રહ્મવર્ચસ, બ્રહ્મ તેજ બ્રહ્મનું જાણે.

પ્રભુથી વ્યતિરેક અન્ય દૃષ્ટિએ ન પડે.

(પરમભગવદીય શ્રીદયારામભાઇના જુના હસ્તલિખિત સંગ્રહમાંથી)

(૫૬.)

ત જા હરિપદ પંકજ ચિત્ત જા જા. ટેક.
માત્મ સમીર રવિ ચક્ષુ રચ્યા, વિધિ નાભિ અંબુજસર [illegible] જા. હરિપદ. ૧.
ુરસનકાદિ પાર ન લહે, જેણે કામક્રોધ વરજ્યા. હરિપદ. ૨.
ાવ અંબરીષ શુક વ્યાસ પરાશરે, પ્રેમભક્તિથી ભજ્યા. હરિપદ. ૩.
ાનદયાલ કૃપાનિધિ કેશવ, સૌ ગાતાં લજ્યા. હરિપદ. ૪.
ાજ દયા હરિ ભજન તજશે નહિ, રંક અથવા રાજા. હરિપદ. ૫.

अप्रसिद्ध पदों.

(પદ, રાગ બિભાસ.)

ભજ સદા શ્રીકૃષ્ણ ચરણ, મૂરખ મનરે.—ટેક.
મૂઢ કાં થયો ઓ અજાણ; મન વિષે સુમતિ આણ;
કૃષ્ણ ચરણ અર્પણ કર, તું તન મન ધનરે. ૧ ભજ સદા.
કાળ કાદવમાં નિવાસ, કાં કરે વિષય વિલાસ;
ચેત ચેત જાય, હરિ ભજન વિના દનરે. ૨ ભજ સદા.
સકલ ઘટમાં વ્યાપ્ત કોણ ? હરિ વિના અવર ન જાણ;
કૃષ્ણ ચરણ કર ગ્રહણ, અવર મા કર અન્યરે. ૩ ભજ સદા.
દૃઢ કપટ કાઢય બહાર, જ્ઞાન પાણ ખડગ ધાર:
કામ ક્રોધ લોભ મોહ, માર ચોર જનને. ૪ ભજ સદા.
દયા કે પ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર, ચણ કે મન ભયોં આનંદ;
ભવતારણ કૃષ્ણ નામ, કૃષ્ણ પંકજલોચનરે. ૫ ભજ સદા.

(પ્રભાતીઉં.)

ચરણ ત્હારા વિષે જન્મ જન્મ સદા, લય રાખે હરિ મન મ્હારૂં
દીન જાણી મુને કર કૃપા એટલી, નિત્ય રસના કરે રટણ ત્હારૂં. ૧ ચરણ
શિવસનકાદિક શેષ શારદસુતા, ચરણપંકજનું સેવન કરે છે;
હરિચરણ હરિચરણ તુલ્ય કો અન્ય ન્હે, વદત વાણી સદા એમ કહે છે. ૨ ચરણ
નાભિ અંબુજ થકી બ્રહ્મા જે પ્રકટીયા, તે ચરણમાહાત્મ્ય વરણી ન જાણે;
સહસ્ર જીભ્હા થકી શેષ ગાયે સદા, વેદ પુરાણ નિગમ વખાણે. ૩ ચરણ.
ચરણ અમૃત તણું પાન કીધા થકી, કોટિ કલિમલ કપટ કલેશ જાએ;
હરિચરણસેવના જે કરે તે તણા, સંગથી હરિચરણ પ્રાપ્તિ થાશે. ૪ ચરણ.
સુરનર મુનિજન પાર પામે નહિ. ચરણ જશ વર્ણવા કોણ શક્તિ ?
ભણે દયો દીન તુને જાચું જદુપતિ; સદારે આપો ત્હારી ચરણભક્તિ. ૫ ચરણ.

કૃષ્ણ કીર્તન કથા કૃષ્ણના નામની, શ્રવણ કરતાં સકલ પાપ જાયે;
ભવ જન્મ ગરભની યાતના નવ અટે, લક્ષ ચોરાશીમાં નવ ભમાય. ૧ કૃષ્ણ
મૂઢ માયા વિષે કાંસાં થયો મગ્ન તું, કોણ છે તાત ને કોણ માત ?
પ્રેમયુક્તે પ્રભુચરણ આશ્રય કરો, જે થકી અખિલ આનંદ થાય. ૨ કૃષ્ણ.
નજીવી તન ધનથી મન હાલાઈ કરી, કૃષ્ણ કીર્તન સદા શે ન ગાય.
અલ્પ આયુષ્ય રહ્યું ક્યાંસાં તું લેહેતો નથી ? ચેતરે ચેત ક્ષણ ભંગ કાય. ૩ કૃષ્ણ.
ગંગ તરંગ જલ જાન્હવીને તજી, અલ્પ જલમાં જઈ શીદ ન્હાયે ?
ક્ષુધા કરવા સુધાતુલ્ય ભોજન મળે, તે તજી રેતુકા શીદ ખાયે ? ૪ કૃષ્ણ.

દેહ અભિમાન તુજ મન છે અતિ ઘણું, વદન મદ વાણી કહી સુચ્છય સ્હાયે;
જોરે લંકાપતિ કાળ કર આવીયો, મૃત્યુ મન કો નહી રંક રાયે. ૫ કૃષ્ણ.
દામ બેસે નહીં શ્રમ ન્હોંયે નહીં, વદનથી કૃષ્ણ કહેતાં શું થાય ?
ભણે દયો દીન હરિનામનૌકા વિના, દુષ્ટ ભવ પાર તે નહીં પમાયે. ૬ કૃષ્ણ.

(પદ, પ્રભાત ગુર્જરી મિશ્રિત.)

હરિ ભજન કર્યું વ્હેલો પ્રાણી, જન્મ જાય છે એળેરે;
ઘડી પલકની વાત ન જાણે, જે શું નીપજશે કાલે રે. ટેક.
ઊંચા મંદિર માળ રચીરે, બેઠા મોજે મ્હાલેરે;
વરણાગીમાં વાંકા ફરતા તેને સાહ્યા કાલેરે. ૧ હરિભજન.
મદરૂપી મદ્યપાન કરીને, પરદારા શું નિહાલેરે;
સ્વપ્નતુલ્ય સુખ દેખી પ્રાણી, શું પડયો મોહની જાલેરે? ૨ હરિભજન.
ક્ષણ ક્ષણ રથ હસ્તી ને ઘોડા, આગળ અનુચર ચાલે રે;
તે જન કાલ તણે કર આવ્યા, જે બેસી ફર્યા સુખપાલેરે. ૩ હરિભજન.
કુત્સિત કર્મ કરી ધન લાવે, નિજ કુટુંબને પાલેરે;
અંતે કો ત્હારૂં નહિ પ્રાણી, જ્યારે યમકિંકર લઇ ચાલેરે. ૪ હરિભજન.
માત તાત ને સગાં સહોદર, કો બેલી નહીં અંતકાલેરે;
દયો ભણે પારકું શું પડયુ છે? તું ત્હારૂં સંભાલેરે? ૫ હરિભજન.

(પદ, ઉપરના જોટાનું.)

હરિ નામનું નાવ ગ્રહીને, ભવસાગર પાર ઊતરનીરે;
અનેકવાર અવતરવે મરવું, તે ભયથી તું ટળનીરે. ટેક.
દુર્લભ મનુષ્યદેહ પામ્યો છે, હાવાં હરિભજન તું કરનીરે;
ચેતી લે નિશદિન ગોવિંદ ગા, પ્રેમે પ્રભુને મળનીરે. ૧ હરિનામનુ.
લોભ મોહ મદ મત્સર મુકી, પરનિંદા પરહરનીરે;
અખંડ અદ્‌ભુત અવિનાશીનું, ધ્યાન હૃદયમાં ધરનીરે. ૨ હરિનામનું.
અહંકારે તું અંધ થઇને, વાત કરે છે આડંબરનીરે;
પણ કાળ ખપ્પર કોઇ નહિ મૂકે, કૃષ્ણચરણ સ્મરનીરે. ૩ હરિનામનું.
અશ્વગજની મુકી સ્વારી, કયાં કરે છે ખરનીરે?
દયો ભણે હરિચરણ તજી, કયાં ભ્રમણ કરે અવરનીરે. ૪ હરિનામનુ.

(પદ, ઉપરના જોટાનું.)

અનેક ભક્તનાં કામ કર્યા પ્રભુ, ભક્તવત્સલ તમો કાહાવોરે;
દીનદયાળ કૃપાનિધિ કેશવ, માટે દાસ કરે છે દાવોરે. ટેક.
નરસૈંયાને હારજ આપ્યો, સાચી ભક્તિ જાણીરે;
ત્રિલોચનને મંદિર વ્હાલા, તમો ભર્યું છે પાણીરે. ૧ અનેક.
ચંદ્રહાસ ત્રણ વાર ઉગાર્યો, વિષ ફેડી વિષયા કીધીરે;
સબરીનાં બદરી (બોર) આરોગ્યા, કુબજાની અર્ચા લીધીરે. ૨ અનેક.

(પદ, શ્રીવલ્લભ શ્રીવિઠ્ઠલ શ્રીજીસ્વામી સામળીયા વ્હાલા તે પદની તરેહ.)

શ્રીહરિ વાહાલા જેહને કહીયે, સાહેલી માહારી; વૈષ્ણવ વાહાલા તેહને લહીયે, ૧.
નીકર પાખંડ પ્રમાણો, સાહેલી માહારી; શ્રમ કરે તે ઠાલો જાંણો, ૨.
હરિ સેવે હરિજનને તરછોડે, સાહેલી માહારી, પગ પૂજે ને મસ્તક મોડે, ૩.
નિર્મળ ભાવેથી સત્સંગ કરીએ, સાહેલી માહારી, દોષ કોઇના ના ઉર ધરીએ, ૪.
જેહેમાં બાનુ શ્રીહરિનું દેખો, સાહેલી માહારી, પ્રભુ સરીખા તેહને પેખો, ૫.
હરિજન જેહેણે સંતોષ્યા, સાહેલી માહારી, પુરુષોત્તમ તેહેણે પોષ્યા, ૬.
અંતરની વાત તે તો જાણે, સાહેલી માહારી, હરિ ભાવે હરિ રસ માણે, ૭.
ભક્ત ભગવંતની તોલે, સાહેલી માહારી, દયો કહે એકાદશમાં બોલે. ૮.

(પદ, રાગ કાફી.)

પ્રેમ રસ તે પિયેરે જેહેમાંરે અતિ અનુજપણું;
મોટાઇ ઘણી માઠીરે, સમજી ન રાખે ક્ષણું. ટેક.
સુંદર સ્વાદ શર્કરામધ્યે, દીઠી વેલુમાં વેરાઇ
હસ્તી હુતા તે હારી બસ્યા પાછા, તેને ગઇ પિપીલિકા ખાઇ;
મોટમ રખે રાખોરે. જે હું ગ્હોટો બણું. પ્રેમરસ. ૧
મ્હોટા વૃક્ષને ઘણું વિટંબણુ, પીડાય બહુ પેરે કરી;
સ્વપ્ને દુઃખ દેખે નહીરે, દૂર્વા સદા રહે હરીની હરી;
સમજુ વિચારોરે, સુખ છે શામાં ઘણું. પ્રેમરસ. ૨
કમલતણો મકરંદ તે મધ્યે, જે ભુકતે જે સમીપે હોય;
ગુરુદલ દૂર નિકટ દલ નાનાં; તેહ વિચારો સહુ કોય,
પ્રકટ જઇ પેખો રે, જો હું જુઠું ભણું. પ્રેમરસ. ૩
એક સિદ્ધાંત સમજવા માટે, કહ્યાં સર્વ દ્રષ્ટાંત;
શ્રીહરિ પણ દીનબંધુ કહાવે, નથી નથી મિત્ર મહાંત, ,
માટે દયા થાનીરે તું તો નાહાનો અણુથી અણુ. પ્રેમરસ. ૪

બ્રજભાષાકે પદ.

મુરलीકે નાદ નાર બ્રજકી બસ ભઇ હો; બંસીકે નાદ નાર બ્રજકી બસ ભઇ હો—ટેક.
બંસરી બજાઇ નાથ, ચકિત ભયો સકળ સાથ;
બ્રજબનિતા વ્યાકુલ ભઇ, સાન બિસર ગઇ હેરી. બંસરી. ૧
બંસીકો સખી સુન્યો સ્હોર, બૃંદાવન આઈ દોર;
કદમ છાંય ઠાડે હરિ, બંસરી બજે હેરી. બંસરી. ૨
બૃંદાવન રચ્યો રાસ, બિધબિધ કિયો બિલાસ;
નાચત મુરલીધર, સખી મુખસે તતથૈ હેરી. બંસરી. ૩
દયાકે પ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ, સબકે મન કરત આનંદ;
મેં મુખપેં કહા બરનોં, ગતિ ગોકુલ નિત્ય ને હેરી. બંસરી. ૪

પદ.

કામણગારી ત્હારી વાંસળી, કામણ કીધું છે ભારી રે.—ટેક.
મોરલીને નાદે મન મોહી રહ્યું છે, મારૂં ગિરિવરધારી રે;
ઘરધંધો ગમતો નથી, હવે મુને લાગી છે ત્હારી રે. કામણગારી. ૧
મોર મુકુટ સિર સોહિતો, કુંડલકી છબી ન્યારી રે;
ચતુરા ચપળ ચુકી ઘણું ઘણું, મોહી રાધે પ્યારી રે. કામણગારી. ૨
મુરલી નાદ મધુરો સુણી, ચુકયા શ્રીત્રિપુરારી રે;
સુરનર મુનિજન મોહી રહ્યા, કોણ માત્ર વ્રજનારી રે. કામણગારી. ૩
તનમનધન અર્પણ કરૂં, ચરણે કુંજ બિહારી રે;
દયાના સ્વામી તમો શામળા જીત્યા ને અમો હારી રે. કામણગારી. ૪

આરતી (શ્રી પૂર્ણપુરુષોત્તમની.)

(ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઇ કૃત.)

જય જય શ્રીવ્રજરાયા ગોપીનાથ ગિરિવરધરા હો,
શ્રીયશોદોત્સંગલાલિત નંદાત્મજ શ્રીરાધાવરા હો. જય જય.
નવાંબુદાનીક ચારુ ત્રિલોક સંમોહન શ્રેયસ્કરા હો,
બર્હાપીઠ વિભુનાથ, મકરાકૃતિ કુંડલ સુંદરા હો. જય જય.
પ્રફુલ્લરાજીવલોચન, આનન મદનાધિક મનહરા હો,
વેણુરવામૃત મોદક ગોકુલ રસમય રસિકેશ્વરા હો. જય જય.
તિલક સુ લલાટ પટલે રાજીત કસ્તૂરીકેસરા હો,
નાસાગ્રે વરમુક્તા અમલ પ્રતિબિંબિત બિંબાધરા હો. જય જય.
વક્ષઃસ્થળ કૌસ્તુભમણિ શ્રીવત્સાંકિત શ્રી શ્રી ધરા હો,
વૈજયંતી વનમાલ વૃંદા ગુંજાદિક આદરા હો. જય જય.
લસતાંગદ કંકણ કર મુદ્રિકા કટિતટ પીતાંબરા હો,
કટિમેખલાપદાંબુજ નૂપુર કલરવાદિ વિચરા હો. જય જય.
ગોપસ્ત્રીપરિવેષ્ટિત ગાન તતથૈઇ રાસોત્સવરા હો,
નંદસ્મિત મધુ ભાષણ વિલોકન પરમાનંદાકરા હો. જય જય.
ત્રિભંગલલિત મનોહર અગણિત મદહર સ્મરા હો,
દ્વિભુજ સદા પ્રભુ ગદા, પદ્મ, રથાંગાહિર્ણ્યધરા હો. જય જય.
ભક્તાર્તિહર શરણાગતવત્સલ હરિ અઘમોહરા હો,
હરિ ઇચ્છા ભગવાન અનાદિ અચ્યુત વિશ્વંભરા હો. જય જય.
વેદ વિદ્યા શિવ શેષાદિ વંદિત પૂર્ણ સર્વેશ્વરા હો,
ઇતિ સ્તવ કૃષ્ણ નીરાજનસમયે યે પઠંતિ સ્ફુટ સુખ્હરા હો, જય જય.
દયાનાથ સુપ્રસિદ્ધ ભવેદ્ ધ્રુવ સુરાધિકેશ્વરા હો.

अलौकिक शिक्षा

(કવિશ્રીના શિષ્યપૌત્ર ગોલોકવાસી જોષીજી નાથાભાઈએ કવિશ્રીના ગ્રંથમાં તારવેલી શિક્ષા.)

દરરોજ નિરંતર ભગવદ્ધર્મસંબંધી મુખ્ય બાબતો સ્મરણમાં રાખી વર્તન કરવા ખા વિશેષ રીતે લક્ષમાં રાખવાની તે—

૧. શ્રી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ જે પરબ્રહ્મ પરાત્પર અનિર્વચનીય સર્વના આધાર તેમનોજ દ આશ્રય સદોદિત રાખવો. એ ઈશ્વરેશ્વર અનેક દ્વારા (કોઈપણ નિમિત્ત યા બ્હાનાથી સર્વનું હિત કરે છે. માટે કદી પણ અન્યનો આશ્રય ન માનવો.

૨. સર્વના કર્તા સર્વના ભર્તા સર્વના નિયંતા એ ઈષ્ટજ સર્વના સ્વામી આલીક છે. તેથ તેમની સમગ્ર ચીજ હોવાથી તેમને નિવેદન થવા બ્રહ્મસંબંધ શ્રીગુરુદેવ કરાવે છે. માટે પરબ્રહ્મના અર્થે સર્વનો વિનિયોગ થવા આગ્રહ રાખી પાછલ પ્રસાદી (ઉચ્છિષ્ટ) લઈ દાસત પદવી લેવી. જસ પ્રશંસા માટે સમર્પિત કરેલાનો પણ ઉપયોગ અન્યમાં ન કરવો. પણ ઔષધ કડવટ અને નિષેધ કરેલી અભક્ષ્ય વસ્તુ શ્રીને કદી પણ ન ધરાવવી. કેમકે શ્રીહરિ સર્વ ઉત્તમમાત્રથી પણ ઉત્તમ હોવાથી તેમને ઉત્તમોત્તમજ અંગીકાર થાય છે. જેથી સર્વ ઉત્પન્ન તે તેમના ઉત્પન્નકર્ત્તાને આપવાની ફરજ છે, સપાડું નથી. ન આપ્યાથી દોષ થાય છે.

૩. ભગવદ્ધર્મો અનેક પ્રકારના છે. એ સર્વમાં શ્રેષ્ઠ ધર્મ : એ શ્રીહરિની સેવા કરવી એજ છે. પણ એ સેવામાર્ગનું રૂપ લક્ષણ ક્રિયાવત્ પૂજામાર્ગાદિકથી અત્યંત ભિન્ન છે. તેથી નિરૂપણ થવું પણ અશક્યવત્ છે, તેમાં પણ પ્રથમ તો પરબ્રહ્મનું માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સ્વરૂપ અનુસંધાનમાં વિસ્મૃતિ કે અજ્ઞાનતા ન થાય એ માટે મહદ્દ્વારા સમજવું. પછી તેની પ્રાપ્તિ અને તેમનું જ હિત થાય, એ કૃતિમતિથી અતિ આતુરતા થાય. : એ માટે પશ્ચાત્તાપ ક્ષમા સ્તુતિ વિજ્ઞપ્તિ કરવી, અને એમાં મુખ્ય સ્નેહ રસ અને તેથી ચઢતી પાયરી શ્રીહરિસંબંધી તાપકલેશવિરહાદિ વિપ્રયોગાત્મક સંયોગાત્મકની સમજ પડે એ માટે આ લક્ષણ છે. પ્રમાદ વ્યવસાય અન્યાસક્તિ ઈત્યાદિ પ્રતિબંધક માત્રનો ત્યાગપૂર્વક પ્રયત્ન કરવો. અને તેમાં જેટલી કસર પડે અગર અશક્યપણું આવે, તે માટે પણ શ્રીહરિનું શરણ (આશ્રય) ગ્રહેવું. (લેવું).

૪. સત્કાર્ય ઇશ્વરપ્રેરણાનુંજ માની કુકૃત્યને નિજ કૃતિ (જીવકૃતિ) માની અપરાધપરિહારાર્થ સદા ભગવન્નામોચ્ચારણ કરવું, યા મન શ્રીહરિમાં સંલગ્ન કરી અપરાધક્ષમાસ્તોત્ર સ્તુતિ વિજ્ઞપ્તિ કર્યા કરવી.

૫. નિરંતર શ્રીહરિનું ચિંતન કરવું. ક્ષણાર્ધ પણ ભગવત્સ્વરૂપની વિસ્મૃતિ ન થવા ધ્યાન રાખવું.

૬. બીજી બાબતમાં વિશેષ ખુલાસો. વૃદ્ધિસૂતકાદિ પ્રસંગે અસમર્પિત ભોજન કરવું પડે ત્યારે શ્રીહરિચરણામૃત પધરાવીને પ્રસાદવત્ જાણી પ્રત્યેક ગ્રાસે અને પ્રત્યેક ઘુંટડે ભગવન્નામાલાપ કર્યા જવો.

॥ श्रीवैश्वानराचार्यचरणा विजयन्तान्तमाम् ॥

સર્વોદ્ધારપ્રયત્નાત્મા, વિશ્વના તારણહાર જગદ્ગુરુ આચાર્યસમ્રાટ્
વિશ્વધર્મસ્થાપક શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોને
પ્રકાશનાર

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તણ્ડ.

પુષ્ટિમાર્ગીય-ઈતિહાસ-પ્રકાશતો

ખાસ અંક.

વર્ષ ૮.] શ્રીવલ્લભાબ્દ: ૪૫૫ માર્ગશીર્ષ સં. ૧૯૯૦. [અંક ૯.

प्राचीन-कीर्तन. १

सहेरो ॥ अब गंध लावोरी मालिनीयां सहेरो। शुभ घरी शुभ दिन शुभ मुहूर्त लगो बनामे नेहरो ॥ हरी चमेली गूलाब निवारो महेक्त आवे केवरो । बना बन्यो नवलप्रिय श्रीगोकुल में गेहरो ॥

दूमालो । अति छवी देत दूमालो सीस ॥ मन्मथ मान हरत हस चितवत आज बनेहे गोकुल ईस ॥ ठाडे सिंघपोर अपने रंग संग सखा दसबीस । दियो सिरान चतुर्भुज प्रभु लम्न जीयो कोटि वरीम ॥

टीपारो । श्रीगिरधर बनते आवत सोहत ॥ पीत टीपारो सीस रह्यो फब छबीली चारु मन मोहत ॥ गायनके पाछे पाछे आवत चलरी दीखाउ तोय ॥ छीतस्वामी सबको मन मोहत चहुंधा दृष्टि करि जोय ॥

श्रीहरिरायजीकृत श्रीयमुनाजीके छप्पय.

अंस वंस अवतंस परम रसाल प्रशंसित । वरकलिन्दगिरि पतन शिखर सुरवृंद विपोसित ॥
सेवित तट वटनिकट वेद सुरी नरमुनि झुंडन । सहज परम सुख करन धरन भुव मंडल मंडन ॥
सद्रूपपत्रगोकुलकर्मग्लग्नितपत्र अविचलचरन। लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय श्रीयमुनाचरन॥
तीर समीर गंभीर चिर प्रफुल्लित व्रत मुनि सुर । सारस हंस चकोर मोर शुकपिक मति कलरव॥
त्रिविध भाँत रस पुंज कुंज रस पुंजसो वरखत । सहज वदत निज धर्म घन निर्मल मुन हरखत ॥
परम हंस मुनिगन गुनत मड कच्छ स्वेच्छाचरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०

सकटाविकट भवनरुप निकट संकटाविनदारन । वारन दुरित हरन रहत जन उपमहारन ॥
जीत शक्ति अघ हरन, ते तेही नाहि । जे अघलोकप्रसिद्ध मीटत मुन्न नीर प्रवाह ॥
सुधामाधुरी करुनाकरन कृपासिंधु तारन तरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
श्रीहरिपद अम्बुज जन्म सुभग हर जटा निहानी । धन भागीरथी त्रिपथ पितर उदेश वखानी ॥
जिनकारन ऋषि अंश वंश अवतंस प्रसंसित । जगत पावन भइ गंग सो तव संगत जस वर्नित ॥
सो तव प्रतापबल माधुरी वरनन कोउ समरकरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
भोम विघोसित नील कमलदल निर्मल वेनी । किधों मदन नृप संग लता शुभ पारावारपेनी ॥
किधों कांत दुप वसन रसन खुर तट लइ तरुनी । चलत फिरत तुम वेल किधों रतीरंग परनी ॥
श्रीवृंदावन कंठमाल किधों इंद्र नीलमन विस्तरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
तटनिकुंज रसपुंज धरन सिर तरंगसुशोभित; कर पुलिन रसधाम धीर सुरभेनी जुग कल्पतर ॥
निविडलता गतिमंद पहोप सुगंध सुरभभर । सितलजलनि परसि पवन सेवतसो मानसर ॥
इंदनी चीख सुख सहचरी सो ललितादिक नैनाभरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
मेघघटा भ्रम भ्रमित मोर नाचत तट कुंजनी । घन तमाल पत्र घन वसवत रस पुंजनी ॥
कृष्ण कान्त भ्रम जुगत विधु तरंग भुजनी । नेनकमलदलनी शोभित अमल विमलनी ॥
रसलोभित इंद्रनील चोतरा तापर मुरलीधुन करत । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
नारदमुनि वचन कमलही तुटि करे स्तव । मीटत भक्त अपराध पशमि जलकर सानंदन ॥
सप्तसिंधु जलभेद सरस रविमंडल सरनी । सहत सहस्र घटा समधारा वृंदावन धरनी ॥
अन्य ठोर वैभव लसत अचल धाम व्रजभू विस्तरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय

प्रेषक:—राजगोर भगवानदास चतुर्भुजदास,—भावनगर.

श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रका हिंदी अनुवाद।

प्राकृत-धर्माश्रय-रहित, धर्म अलौकिक रूप।
स्तवन करूं निगम-कथित, साकृति शुद्ध-स्वरूप॥
ज्ञाता पुरुषोंकी भी समझ, कलियुग-तम से आच्छादित है।
उनके माहात्म्य से इस कारण, सब प्राणी आज अपरिचित हैं॥
तब प्रगटानेको निज-महात्म, हरि दयाका इच्छा करके।
आ पहुंचे भूतल के ऊपर श्रीमुख का रूप बना करके॥
अब उनका कहा कठिन अति है, जिस से सुबोध कर सकते हैं।
एक सौ आठ सब-अघ-हर्ता, उनके नामों को कहते हैं।
स्तोत्र अग्नि सुत ऋषि वर्नन, कर रहे छंद जगती में है।
श्रीमुख देवता करुणाकर प्रभु इसके बीजरूप में है॥
विनियोग भक्ति के लिये और, प्रतिबंध-विनाशक है इसका।
इसमें कोई संदेह नहीं, बस अधरामृत फल है इसका॥
आनन्द, परम-आनंद स्वतः ही है श्रीमुख, कृपासागर।
दैवी-उद्धार-प्रयत्नात्मा, आर्तिहरन केवल स्मृति भर॥
गूढार्थ-प्रकाशन-पारायण तत्पर हो श्रीभागवत करें।
स्थापन-कर्ता साकार-ब्रह्मवाद-के, वेदका पार परं॥
मायावाद के नाशकर्ता, सब वादी किये पराजित है।
भक्ति-पथ-कमल के सूर्य, नारीशूद्रादि जहां उद्धारित है॥
कर अंगीकार मनुष्यों का वल्लभी किये गोपीश प्रिय।
मर्यादा सहित ग्रहण कर्ता, अत्यंत कारुणिक, प्रेममय॥

सुखसेव्य, दुःख से आराधित, दुर्लभ हैं चरणकमल जिनके ।
हैं उग्रप्रतापी, पूर्ण करें सब सेवक वाणी—अमृत से ॥
पीयूषसमुद्र श्रीभागवत मथने की क्षमता रखते हैं ।
तत्सार रास—गोपिका—भाव अति भरे आप में रहते हैं ॥
श्रीकृष्ण—प्रेम सान्निध्यमात्र दें दान, विशेष—मुक्ति देने ।
तात्पर्य रासलीला में रख, तत्कथा कृपा—प्रदान करते ॥
अनुभव वियोग का करने को उपदेशक सर्व—त्याग के जो ।
उपदेश किये आचार भक्ति के, कर्मपथ—प्रवर्तक हैं जो ॥
उपदेश करें 'ज्ञानादि कर्म बन रहे भक्ति के साधन भर' ।
हैं पूर्ण—आनंद, पूर्णकाम, वाणी के अधिपति, विबुधेश्वर ॥
वक्ता हैं कृष्ण—सहस्र—नाम के आप, परायण भक्तों में ।
आचार भक्तिका रचा रूप जिनने है नाना वाक्यों में ॥
अर्प निज हेतु अखिल उनके प्राणप्रिय, तादृशी बीच धीरे ।
साधन समग्र करने वाले दास हेतु, सब शक्तियां धरे ॥
पृथ्वी में भक्ति प्रचार हेतु जिन किया वंश निर्माण, पिता ।
हैं भरा स्वकुल में सब महात्म अपना गर्व के नाशकर्ता ॥
पतिव्रता—नाथ, परलोक लोक—भू के पदार्थ देने वाले ।
अति गुप्त हृदयवाले, अनन्य जन से आशय कहने वाले ॥
जो मुग्ध उपासन आदि कर्म में उनका मोह मिटा देते ।
सब पंथो बीच भक्ति के मार्ग को वैलक्षण्य दिखा देते ॥
उपदेश शरणपथ प्रथक किया, ज्ञानी श्रीकृष्ण हृदय के हैं ।
पल पल निकुंज मेंजो लीला परिपूरित उसके रस से हैं ॥
व्याकुलचित भगवतकथा बीच, विस्मृत सब और जिन्हें व्रज प्रिय
मखवास जिन्हें प्रिय करें, करें पुष्टि लीला, एकांतवास में प्रिय ।
भक्तेच्छापूरक लीलाज्ञान न सबको जिनका, अति मोहन ।
हैं अनासक्त सब में, केवल हैं भक्तासक्त, पतितपावन ॥
अपना यश गाकर खिले हृदय करने वाले उनमें आसन ।
यश—अमृत—स्वर्गों से सब रस जिन किये तुच्छ, सबसे उत्तम ॥

अति भिगो दिये हैं भक्त देह सबही लीला-अमृत-रसमें।
गोवर्धन-दास-उत्साही हैं, गिरिधिला के प्रेम से भरे॥
यज्ञ के भोक्ता, यज्ञ करें चारों पुरुषार्थों में पटु हैं।
हैं सत्य प्रतिज्ञ, परे है गुण तीनों से नीति विशारद हैं॥
वर्द्धक स्वकीर्ति के, तत्त्वसूत्र की टीका करनेवाले हैं।
मायावाद-तूल हेतु अनल, ब्रह्मवाद रचने वाले हैं॥
सज रहे अलौकिक शृंगारों से सारे, सहज हास्यवाले।
भूषण त्रिलोक के, भूमिभाग्य, स्वाभाविक सुंदरतावाले॥
रज-धन जिनके चरणाब्जोंका चाहते अशेष भक्तजन अति।
ऐसे आनंद समुद्र रूप के नाम कहे अष्टोत्तर शत॥

श्रद्धा से बुद्धि विशुद्ध बना जन पाठ करे प्रतिदिन इसका।
एकाग्र चित्त ले निस्संदेह वह सिद्धि प्रथम वर्णन जिसका॥
यह मिले बिना है मोक्ष वृथा मिलने पर मोक्ष निरर्थक है।
इस से स्तोत्र सर्वोत्तम का कृष्ण-रस-चाहकों को जप है॥

दास घनश्यामदास ओझा की जयश्रीकृष्ण बांचिये.

बीकानेरमें कनकाभिषेक.

सं. १९४० के ज्येष्ठ कृष्ण ३ कूं कामवनस्थ गोस्वामी श्री १०८ श्रीगोविन्द महाप्रभुने आसुरव्यामोहलीला करी, ताके पहले आपके ज्येष्ठ लालजी श्रीदेवकीनंदनप्रभु (बांपाश्री)ने अपने पितृचरण को वियोग होने ही गृहत्याग कर अरण्य निर्जनवन में विरहानुभव, जो पुष्टिमार्ग को महाफल है, ताको आस्वाद लेनेको विचार कर राख्यो हो, ताकी खबर आपके पितृचरणकों पड गई। वाही समय आपने चि. श्रीदेवकीनंदनलालकों पास बुलाय श्रीमस्तकपर आपको श्रीहस्त धरके आज्ञा करी जो तेने हमारी आज्ञा को उल्लंघन कभी नहीं कीनों, तासूं हम अत्यंत प्रसन्न हैं। और जो छेली आज्ञा करें ताकूं अवश्य पालन करेगो, एसो हमकूं पूर्ण विश्वास है। एक तो हमारे पधारे पीछे तूं घर छोड जायवेको विचार करे है सो सर्वथा तू अपने रासविहारी की सेवा छोडके मत जइयो। दूसरी आज्ञा विवाह करके श्री पितृऋण चुकाय के श्रीचंद्रावली की सेवा के लिए वंश स्थापन करियो। यह सुनके आप अत्यंत खिन्न होके विनति किये, जो मेरे विनाए तो सांपा ये दोनों ही करेंगे। न

हो, पर आप या वखत आज्ञा करें हैं तो मोकूँ शिरोधार्य है। अनंतर थोडी देर में ही आपने लीलाप्रवेश कियो। आपके उत्तरकर्म से निवृत्त होते ही आपके छोटे भाई श्रीगोपाललालजीने श्रीमदनमोहनजी के मंदिर को कब्जा कर लीनों।

तब आपके छोटे भाई श्रीजयदेवलाल अति खिन्न भये। तिनकूँ देख आपने श्रीजयदेवलालसूँ आज्ञा करी जो मेरो तो घर में रहिवेको ही विचार नहीं हो, पर श्रीपितृचरण की अंतिम आज्ञा को पालन करनो सो मैं परदेश फिरूँगो, और ये श्री चंद्रबाबा की सेवा और सब वैभव मैंने तेरे सुपर्द कर दीनो। ऐसें कहकें चावीनको झमका तथा आपकी मोहर सब आपकूँ सँम्हाल दीनी।

इन बातनकी खबर बीकानेरनरेश महाराज श्रीडूंगरसिंहजी कूँ पडी। तब आपने अपने निज कृपापात्र भले मनुष्य और राज के नगारा निशान डेरा तंबू सब राज्य विभूति संग देकें कामवन भेज दीनें, और कही जो जैसे बने तैसें वेग महाराज कूं बीकानेर पधराय लावो। खरचको कोई विचार मत करो। वह लवाजमा और भले मनुष्य कामवन पहुँचे।

वहाँ पहुँचकर तुरंत सब प्रबंध करकें थोडे ही दिनन में आपकूं बीकानेर सं. १९४० के श्रा. सु ११-कूँ पधराय लाये और आपको मंदिर श्रीराजरतनविहारीजी को है तामें आनंद सों बिराजमान करे। पर आपको मन वैराग्य और विरहानुभाव करवे को हतो और दिन २ दृढ होतो गयो। यह देख मंदिर के अधिकारी जो महाराज के परम कृपापात्र और दरबार के भी कृपापात्र भोगीलाल उत्तमराम वडोदा जिला के सावली गाम के रहवेवारेने दरबार कूं कही जो आप जैसें श्रीमहाप्रभुको कनकाभिषेक राजा कृष्णदेव ने कियो तैसें ही आप श्रीमहाराजको कनकाभिषेक करो और विवाह करवे की गाढी विनति करो, तो मैं इन को व्याह कर लाऊँ, और जैसे महाप्रभुजीने दिग्विजय कियो तैसे ही दक्षिण दिशा प्रभृति परदेश में डंका बजवाय लाऊँ। सो दरबार ने स्वीकार कर लीनी और आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी के दिन शुभ मुहूर्तमें आपको कनकाभिषेक को निश्चय कियो। और शंख, चक्र, छत्र, सिंहासन, पादुकाजी तथा पादुकाजी के बिराजवेकी चौकी ४ छडी तामें २ सोने की तथा २ चाँदी की २ दीवी ये सब सामान चाँदी, सोने को सिद्ध करायकें सुवर्ण के पुष्प बहुत सेवा तथा पूजा के सब पात्र चाँदी के सिद्ध होय गये। तब वा साल विजयादशमी को उत्सव ९ कों हतो सो सब आनंदसों करकें श्रीचंद्रबाबा की विजयादशमी के साँझ के ४ बजे बीकानेर से ३॥ कोस श्रीठाकुरजीकी ७०० गायें रहतीं

हतो, ता गाम को नाम बीछवाल, तथा वाके पास जो कूओ वाको नाम जीवनसर प्रसिद्ध है, तहां महाराज श्रीडूंगरसिंह बड़ी सवारी सहित पधारकें शांडिल्यसंहिता के स्तोत्र सूं महाराज कूं स्नान करवायो। जरी को केसरी पीताम्बर धराय आपकूं सिंहासन में पधराय देव विभूति शंख, चक्र, छत्र, मूरज आदि राजविभूतियुक्त आपको षोडशोपचार पूजन करकें, आचार्यतिलक करकें, पाछे आपके पादुकाजी को पूजन हरि गुरु पीठ स्तोत्र सूं करके, स्वर्णपुष्पसों आपको तथा पादुकाजी को अभिषेक करकें, कृष्णदेवके समान आपसूं उपदेश सुनकें भेट न्योछावर करकें गाम बीछवाल सों सवारी कर बीकानेर के किले में दाखिल हुए। वाही दिनसूं शहरमें वा अपने मंदिरमें पधारें ! वा कोई भी वैष्णव के यहां पधराई में पधारें। तब आप केवल धोती उपरना धारन करके म्याना में विराजें और आपके आगे राजविभूति नगारा, निशान खासा घोडा ४ ताके पीछे ४ घोडान पें ४ छडीदार जामें प्राचीन पाग कमरबंद और सोने की छडी ताके पीछे २ छडीदार चाँदी की छडी लिये " क्षम्यतां, इतरत्र कमलकोमलचरणा मृदुतया निधीयतां" इत्यादि संस्कृत अनेक गद्य तथा पद्य ऊँचे तथा मधुर स्वरीले स्वर सों पढ़त चलें। उनकी पीछे शंख चाँदी के बडे ऊँचे दंडपर तामें रेशमी ध्वजा, तामें हनूमानजी को चित्र ऊपर चक्रराज को चित्र फहराते चलें। और सब में आगें राज के बाजा बजते चलें। या रीति सूं जहाँ कहीं भी पधारें आपकी पधरामनी होय वा अद्भुत सवारी की झाँकी जयमंगलधर बादशाह महाराजा श्रीडूंगरसिंहजी की कृपासें बीकानेरवासीन कों दर्शन भए।

पीछे थोडेही दिनन में मंदिरवारे अधिकारी भोगीलाल कों दरबारने हुकम दियो कि-" अधिकारीजी, मेरो मनोरथ युगलस्वरूपकी झांकी अग्नि हवन करते समय की करवे को मनोरथ है, और यही श्रीगोविन्दप्रभु की छेली आज्ञा भी है, जो आप ब्याह करो. सो वह पालन करवेको यही मौका है। सो आपकूं मेरी तरफ सें विनति करकें बड़ ठाटमाट सूं दक्षिण पधरावे। और जैसें श्रीमदाचार्यजीने दिग्विजय शास्त्रार्थ कियो ताही प्रमाण देशाटन करो और आपको ब्याह करकें पीछे बीकानेर पधराय लावो, तब मेरो मनोरथ पूर्ण होय। खर्च को प्रबंध राज के खजाने से होयगो।" यह हुकम दरबार को सुनते ही परम वैष्णव श्रीबीकानेरनरेश को मनोरथ तथा श्रीगोविन्दमहाप्रभु की आज्ञाको पालन करनो अपनो परम कर्तव्य समझकें भोगीलालने ५ सो पंडित जो आपके पास हमेशां रहते, और सब शास्त्रन में निपुण

हते, उनमें सूं कन्हैयालालशास्त्री, जो राजके सरस्वती भंडारके संरक्षक, नारायण शास्त्रीजी दतिया के प्रखर विद्वान् उनके शिष्य मदनमोहनशास्त्री तथा कन्हैयालालजी शास्त्री के छोटे भ्राता पन्नगेन्द्र शास्त्री इनकूं संग लीने, और बीकानेर सूं लवाजमा तथा अपने गुरज बरदार व सिपाही आपके सुपुर्द करके बडे ठाटमाट सूं मद्रास पधारे। तो आपको खटला ७६ आदमीन से रवाने होके प्रथम नागोर मुकाम भयो। वहांई पंडितन ने यह प्रश्न कियो जो कोई श्रीवल्लभकुल के बालक सिंहासन पे बिराज अपने पादुकापूजन ही करावें और आपके साथ में जो यह राज तथा दैवविभूति साथमें रक्खी जाय है याको कहा प्रमाण है ? वही प्रश्न कु महाराजने और शास्त्री कन्हैयालालजी प्रभृतिनने वेद पुराण श्रुति स्मृति आदिसों पादुकापूजन सिद्ध करके नागोरके विद्वान की पादुकापूजन में संमति कराय लीनी। आगे मूंडवा में भी एसे शास्त्रार्थ कर वहाँसे भी सम्मति कराय आप पुष्करराज पधारे और वहाँ एक लक्ष श्रीमदष्टादशाक्षर गोपालमंत्रको पुरश्चरण करके वाके होम कमल के पत्तान में खीर भर कर तर्पण तथा ब्राह्मणभोजन कराय अजमेर तक पगरस्ता पधारे । पाछें रेलद्वारा अमदावाद बंबई होते हुए मद्रास पधार मगशर सुद में श्रीभागीरथीजी बहूजी सों विवाह करके दक्षिण की सब यात्रा करके शास्त्रार्थ करते, पादुकापूजन पे संमति कराते पंडितन को सत्कार करते भये दक्षिण हैदराबाद पूना होके बम्बई पधारे।

पीछे बीकानेर सं. १९८२ में पधार महाराज श्री डूंगरसिंहजी को युगल स्वरूप झाँकी कराय दरबार के मनोरथ निर्विघ्नता से पूर्ण कीनो पादुकापूजन को शास्त्रार्थ व सब देशन के पंडितनकी सम्मतिको पादुकापूजनको ग्रंथ मेरी पास है। यदि कोई देखो चाहे तो देखे। और भी देवकीनंदनाचार्यजी के अनेक दिव्य चरित्र, है सो मेरे जैसो पामर कहा समझे ? और लिख सके ? १ छोटोसो चरित्र कलकाभिषेकको लिखकर अपनी जिव्हा पवित्र आप समस्त वैष्णवन को कृपा सूं करी है। यामें प्रमादसूं अशुद्धि या त्रुटि होय तो आप कृपा करके सुधारेंगे। और या संबंधमें गोस्वामी श्रीदेवकीनंदनाचार्यजी महाराज तथा आपके मुख्य सेवक बीकानेरनरेश श्री डूंगरसिंहजी के चित्रनके दर्शन करके नेत्रन कों सफल करें।

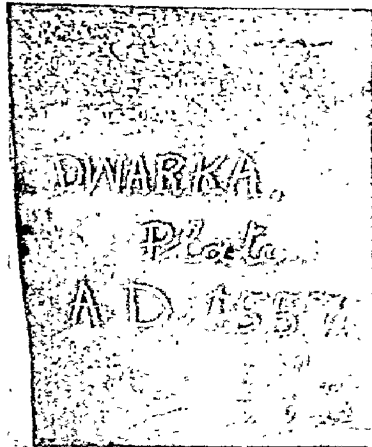


श्रीयुगलस्वरूप,

ભગવદ્ધર્મપરાયણ શેઠશ્રી ગિરિધરલાલ હરિલાલ
[illegible]

સુપ્રસિદ્ધ શહેરી શેઠશ્રી ગોવિન્દદાસ માણેકલાલ
(હરિવલ્લભ ભગચંદવાળા)

शुद्धाद्वैत



શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણે દ્વારકાના ગુગળી બ્રાહ્મણોને આપેલું તામ્રપત્ર.



ધારીનો મહાન મનોરથ.

॥ श्रीवल्लभाधीश्वरा विजयन्ततमाम् ॥

પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ.

श्रीमदाचार्यचरित्र.

[નોંધઃ—શુદ્ધાદ્વૈત-પુષ્ટિભક્તિમાર્ગના પ્રકટકર્તા અખંડભૂમંડલાચાર્ય જગદ્‌ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણના ચરિત્રવિષયક અનેક સંસ્કૃત-પ્રાકૃત ગ્રન્થરત્નો બિરાજે છે, તથાપિ એ ગ્રંથોમાં આધુનિક દષ્ટિએ ઇતિહાસનું જે પ્રાધાન્ય રહેવું જોઇએ તે રહ્યું નથી, માટે તે આધુનિકોની રુચિને પાત્ર થતા નથી એવો ધ્વનિ ઘણો સમય થયા કર્ણપથ થાય છે. જો કે બનારસવાળા પરમ ભગવદ્‌ભક્ત ભારતેંદુ બાબુ હરિશ્ચન્દ્રજીએ શ્રીમદાચાર્યચરણનું ચરિત્ર ઇતિહાસની દષ્ટિએ લખવું શરૂ કરેલું, પરંતુ તેને લગતા સંપૂર્ણ સાધનોને અભાવે તે અપૂર્ણજ રહ્યું હતું. ત્યારબાદ સદ્‌ગત રા. બ. લલ્લુભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસે એ કાર્ય હાથમાં લીધું અને ઉપસ્થિત સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર તૈયાર કરીને પ્રકટ કર્યું અને તે લોકાદરને પાત્ર પણ થયું. જો કે એ ગ્રન્થ, ઘણા પ્રાચીન તેમજ નવીન ગ્રન્થો અને કેટલાક અનુભવી સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોની સહાયતાથી લખાયેલો છે, તથાપિ સાધનોના અભાવે તેમાં ઇતિહાસનું અપેક્ષિત પ્રાધાન્ય સર્વાંશે વ્યાપ્ત થઈ રહ્યું નથી. એ દિશામાં સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોએ એક મહાન્ પ્રયાસ કરવાની જરૂર છે અને તે વિષે શોધખોળ કરનારી એક સમિતિ નીમવાની પણ ઘણી અગત્ય છે. આ કાર્ય કોઇ પ્રગતિશાલિની સંસ્થાથીજ થઇ શકે તેવું છે, અને તે અત્યાવશ્યક છે. ખેદની વાત છે કે 'શ્રીવૈષ્ણવપરિષદ્' નું તે તરફ ધ્યાન પણ ખેંચાયલું જણાતું નથી અને તે દિશામાં તેણે સારી પ્રગતિ કરી હોય તે પણ જાહેરમાં આવ્યું નથી. ખેર, સાંપ્રદાયિક વિષયોમાં રસ લેનારા વિદ્વાનો હજુપણ જાગૃત થઇ એ દિશામાં પોતાની શક્તિનો વ્યય કરવા કટિબદ્ધ થશે તો સંપ્રદાયના એક મહાકાર્યનો પ્રારંભ થયેલો ગણાશે. જો કે આ કાર્ય અતિશ્રમસાધ્ય છે અને તે માટે લાંબા સમયનો ભોગ આપવો પડે તેમ છે, છતાં ઉપલબ્ધ સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનાં ચરિત્રના પૃથક્ પૃથક્ અંશો અમે ઉપર જણાવેલા શીર્ષક નીચે પ્રકટ કરવાનો નિશ્ચય કર્યો છે. મોટે ભાગે ઐતિહાસિક પુરાવાને આધારેજ લખાય તો ઉત્તમ, એવો ઉદ્દેશ રાખવામાં આવ્યો છે. આ આવશ્યક કાર્યમાં સહાયતા કરવા માટે અમે અનુભવીઓને આમંત્રણ કરીએ છીએ.]

વંશાદિપરિચય.

શ્રીમદાચાર્યચરણના વંશાદિ તરફ દષ્ટિપાત કરતાં આ પ્રમાણે નિશ્ચય ઉપર અવાય છે. આપશ્રી જે કુલમાં પ્રકટ થયેલા તે કુલ ઘણું ઉન્નત અને ધર્મનિષ્ઠ હતું. આપશ્રીના એ સદાચારપરાયણ પૂર્વજો દક્ષિણ હિંદમાં આંધ્ર-તૈલંગ-દેશમાં રહેતા હતા. એઓનું નિવાસસ્થાન કાંકરવલ્લીમાં હતું. કેટલાક એને કાંકરવાડ, કાકુંભકર વગેરે નામોથી ઓળખે છે. 'આ ગામ સ્તંભાદ્રિ પર્વત પાસે કૃષ્ણા નદીની દક્ષિણે હતું' એમ લખીને, તેની નીચે એક ટિપ્પણ લખતાં સદ્‌ગત રા. બ. લલ્લુભાઇ જણાવે છે કેઃ–"આ ગામ નિઝામ સરકારની હાલની સરહદમાં હતું એમ અનુમાન થાય છે." વસ્તુતઃ એ વિષે હાલ કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ નથી કે

એ ગ્રામવાળો પ્રદેશ હાલ કયે ઠેકાણે છે ? હાલ બિરાજતા સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રીઓ તેમજ સાંપ્રદાયિક વિદ્યાવિલાસીઓ દક્ષિણયાત્રાવેળાએ એ સ્થલ વિષે શોધખોળ કરીને કાંઇ નવો પ્રકાશ પાડશે એવી આશા રાખીશું. વૈષ્ણવધર્મપતાકાના પ્રકાશક શ્રીયુત આયર કે જેઓ એક તૈલંગ દેશના નિવાસી છે, તેઓના કહેવા ઉપરથી એમ જણાય છે કે એ ગામ ગોદાવરીના પૂર્વ કાંઠે હતું, પરંતુ હાલ તેના સ્થલમાં અને નામમાં પરિવર્તન થઈ ગયું છે. સંભવિત છે કે એવાં નાનાં ગ્રામો કાંઇ સદીઓ સુધી એકજ સ્વરૂપમાં સ્થિતિ કરતાં ન હોય.

કુલ, ગોત્ર, આદિ.

આચાર્યશ્રીના વંશના મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યજી હતા. જાતિ તૈલંગ બ્રાહ્મણ. વેદ–કૃષ્ણયજુર્વેદ. શાખા–તૈત્તિરીય. ગોત્ર–ભારદ્વાજ. કુલ વેલનાડું કે વેલનાટી એવા નામથી ઓળખાતું અને તે ઘણુંજ ઉચ્ચ ગણવામાં આવતું હતું. એ કુલની અવટંક 'ખંભંપટ્ટીવારુ' હતી. કુલની દેવી રેણુકા મનાતી. પરંપરાપ્રાપ્ત વૈષ્ણવદીક્ષા ગ્રહણ કરવાનું એ કુલમાં પ્રચલિત હોવાથી એ કુલ વૈષ્ણવ તરીકે ઓળખાતું હતું. યજ્ઞયાગાદિનો પ્રચાર તે વેળાએ ઘણોજ હતો. વસ્તુતઃ વેદના કર્મકાંડનો પ્રચાર દક્ષિણમાં વિશેષ હતો, અને અત્યારે પણ છે. વર્ણાશ્રમધર્માનુસાર વૈદિક કર્મનો આમરણાંત આગ્રહ એ હિંદનું ઉત્તમ ચારિત્ર્ય દક્ષિણમાં વિશેષ જળવાઇ રહેલું છે. આચાર્યશ્રીના પૂર્વજોમાં યજ્ઞયાગાદિ વૈદિક ધર્મ કેટલો વિશેષ હતો, તે નીચે આપેલાં કોઇક ઉપરથી જણાશે.

નામ.	કેટલા સોમયાગ કર્યા ?
૧. યજ્ઞનારાયણભટ્ટ.	૩૨*
૨. ગંગાધર સોમયાજી.	૨૮
૩. ગણપતિભટ્ટ.	૩૦
૪. વલ્લભભટ્ટ કે બાલંભટ્ટ.	૫
૫. લક્ષ્મણભટ્ટ.	૫
	૧૦૦

સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે તે કુલમાં પ્રભુ અવતાર ધરે છે એવી શાસ્ત્રીય માન્યતા છે. તદનુસાર સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી પ્રકટ થયા એટલે તેઓશ્રી ભગવનના અવતાર તરીકે મનાયા.

શ્રીલક્ષ્મણભટ્ટજી.

શ્રીલક્ષ્મણભટ્ટજીનું પ્રાકટ્ય ક્યારે થયું તેનું કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ મળતું નથી. લક્ષ્મણભટ્ટજીના બીજા એક ભ્રાતા હતા, તેમનું નામ જનાર્દન ભટ્ટ હતું. ભારતેન્દુ

* મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યના પુત્ર વલ્લભદીક્ષિત, અને તેમના પુત્ર યજ્ઞનારાયણભટ્ટ. યજ્ઞનારાયણ ભટ્ટથી લઇને ઉક્ત પૂર્વજો ક્રમવાર વેદ, ગણેશ, સૂર્ય, શેષ, એમનો અવતાર ગણાતા.

બાબુ હરિશ્ચન્દ્ર લખે છે કેઃ-"લક્ષ્મણભટ્ટજીની નાની અવસ્થામાંજ એમના પિતા પરલોકવાસી થયા. એથી એમનું લાલનપાલન એમનાં માતાના પિતાએ કર્યું. લક્ષ્મણભટ્ટજીના માતામહે લક્ષ્મણભટ્ટજીને વિદ્યાધ્યયન કરાવ્યું હતું." એ રીતે લક્ષ્મણભટ્ટજી એક સમર્થ વિદ્વાન્ હતા. બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરીને વિદ્યાધ્યયન પૂર્ણ કર્યાં પછી પોતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કર્યો. વિદ્યાનગરના સુશર્મા નામના તે વેળાના પુરોહિતની કન્યા શ્રીયલ્લમાગારુજીની સાથે શ્રીલક્ષ્મણભટ્ટજીના લગ્ન થયાં. ગૃહસ્થાશ્રમના સ્વીકારને પરિણામે લક્ષ્મણભટ્ટજીને ૩ પુત્રરત્ન અને ૨ કન્યારત્નો સાંપડયાં. પ્રથમ પુત્રનું નામ નારાયણભટ્ટ, ઉપનામ રામકૃષ્ણભટ્ટ હતું. એઓએ થોડાજ સમય પછી સંન્યાસ લીધો હતો અને તપોમય જીવન ગાળવાનો આરંભ કર્યો હતો. સંન્યસ્તાવસ્થામાં એઓનું નામ કેશવપુરી પડ્યું. તપોબલથી એમણે એવી સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી હતી કે તેઓ પગમાં પાદુકા પહેરીને ગંગાજીના પ્રવાહ ઉપર સ્થળની પેઠે ચાલી શકતા હતા!

એક સત્યનો પ્રકાશ.

શ્રીરામકૃષ્ણભટ્ટજીના આ ચરિત્રનો આરોપ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ચરિત્ર ઉપર કરીને, "તેઓશ્રી પ્રથમ સંન્યાસી થયા અને પછી ગૃહસ્થાશ્રમી થયા" એવા મનમાનતા દ્વેષમૂલક આક્ષેપો આધુનિકો તરફથી થાય છે. એ આક્ષેપો ઇતિહાસ-વિરુદ્ધ અને મનઃકલ્પિત હોવાથી ઉપેક્ષ્ય છે. શુદ્ધ ભાવે વસ્તુસ્થિતિનું અન્વેષણ કરનારને તો ઉપર જણાવેલોજ ઇતિહાસ મળશે અને તેના ઉપરથી તે ઉક્ત નિશ્ચય ઉપરજ આવશે. જેઓને તેમ કરવાની ઇચ્છા નથી, જેઓને અસત્ય આક્ષેપરૂપ પાપપંકને ખુંદવાની ટેવજ પડી ગઇ છે, તેને માટે કહેવાનું શું હોય? રામકૃષ્ણભટ્ટજીએ ગૃહસ્થાશ્રમનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत् એ શ્રુત્યનુસાર શ્રીશંકરાચાર્યજીની પેઠે તેમણે સંન્યાસ સ્વીકાર્યો, તેમાં તેમણે યોગ્યજ કર્યું. તેમનાં એ ચરિત્રને શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણના ચરિત્ર સાથે સંડોવવાની ધૃષ્ટતા અને તેમ કરીને એક મહાન ભક્તિમાર્ગના સંસ્થાપક ઉપર ગમે તેવા દોષો ઘડી કાઢવાની તત્પરતા ઉક્ત ઇતિહાસથી તદ્દન ખુલ્લી પડે છે અને સત્યશોધકોને સત્ય વસ્તુસ્થિતિનું ભાન કરાવે છે.

શ્રીમહાપ્રભુજી શ્રીલક્ષ્મણભટ્ટજીના બીજા પુત્રરત્ન છે. ત્રીજા પુત્રરત્નનું નામ રામચંદ્રભટ્ટજી હતું. રામચંદ્રભટ્ટજી મહાપંડિત હતા, અને વેદાંત, મીમાંસા, વ્યાકરણાદિમાં એમની વિદ્વત્તા અપૂર્વ હતી. લક્ષ્મણભટ્ટજીના મામા પોતાને પુત્ર ન હોવાથી રામચંદ્રભટ્ટજીને પોતાને ત્યાં લઈ ગયા હતા એમણે कृष्णकुतूहल गोपालीलामहाकाव्य આદિ અનેક ગ્રન્થરત્નો રચ્યાં છે. એઓ અયોધ્યામાં રહેતા હતા, એવા સમર્થ વિદ્વાન્ અને વાદી હતા કે તેમને પરાસ્ત કરવાની શક્તિ તત્કાલીન પંડિતોમાં ખચિતજ હતી નહિ. લક્ષ્મણભટ્ટજીનાં બે કન્યારત્નોનાં નામો અનુક્રમે સરસ્વતી અને સુભદ્રા હતાં.

અનુવાદ.

૧. વિદ્યાનગર, શ્રીનૃસિંહંવમાં ચક્રવર્તી કલ્યાણકારી સામ્રાજ્યમાં, શીન માસમાં–ચૈત્ર માસમાં–એકાદશીના રોજ લોકગુરુ આચાર્ય ચક્રવર્તી શ્રીપ્રભુવલ્લભનો સુવર્ણાભિષેક થયો.

૨. સાત દિવસ સુધી ભટ્ટારકને (આચાર્યશ્રીને) અભિષેક થયા પછી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણા, સવા લાખ સોના, ચાંદી અને તાંબાના સિક્કાઓ નિવેદન કર્યા.

૩. ગાય, હાથી, બળદ, ઘોડા એ કર્મ કરનારાઓને આપ્યું.

૪. દ્વાદશીના રોજ અરુણોદય વેળાએ–વહાણાંમાં–મહારાણી, મુખ્ય પટ્ટરાણી મીનાક્ષી દેવીએ પોતાના હાથે અભિષેક કરાતા આચાર્યશ્રીને ચાંદીવડે અભિષેક કર્યો.

૫. આચાર્ય ચક્રવર્તી પોતાના કાકા સાથે રાજપરિષદ્‌માં બિરાજ્યા.

૬. હાથી–૧૯, ઘોડા ૨૧, બળદ ૨૫, કુમારિકા ૧૬, વાછરડા સાથેની અને દાગીનાથી શણગારેલી ગાયો–૨૭.

૭. સોનાના ઘડા–૧૦૮, ચાંદીનાં ૧૨૧, તાંબાના ૧૩૧, કાંસાના ૧૩૫, માટીના ૨૪૦.

૮. સોનાનાં અને ચાંદીનાં કૂર્માસન અને ભદ્રાસન, સોનાની પાલખી, છત્ર, ચામર, નક્ષત્રમાલિકા, (?) કૃત્તિકા, (?) પંખાઝારી.

૯. કડાં, બાજુબંધ, કુંડલ, રત્નના અલંકાર સાથે. રાયલું સેનાપતિ, રામસ્વામી શાસ્ત્રી, આચાર્યકૃષ્ણમૂર્તિ, અમાત્યવેંકટ, નૃસિંહદેવ.

૧૦. વાલ્મિકી (રામાયણની) લોકેશ્વરી ટીકા, આચાર્ય ચક્રવર્તીએ રચેલી વિજયાદશમીના રોજ પૂર્ણ થઇ. શ્રીરામલીલા કૃપા સમક્ષ પ્રેરણાથી લોકગુરુ આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીમહાભાગવતનો નિત્યનો પાઠક્રમ પંચસપ્ત (પાંચસોમી કે પોણોસોમી) આવૃત્તિ પૂર્ણ થઇ. કાર્તિક શુકલ....વર્ષ ૧૫૬૫.

૧૧. પટ્ટરાણી.

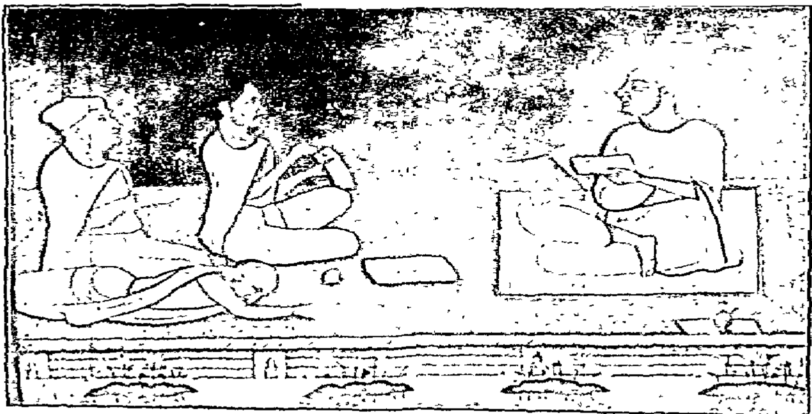
૧૨. પોતાના ઈષ્ટ બાલારામ (બાલાજી ૧) સાથે આચાર્યચક્રવર્તીને અભિષેક કરીને પોતાના ઇષ્ટગુરુને સમર્પવા.

(આ લેખ પુષ્ટિમાર્ગના સ્થાપક શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યચરણનાં જીવનચરિત્રમાંના એક મહાન્[1] પ્રસંગનો ચિતાર આપે છે.)

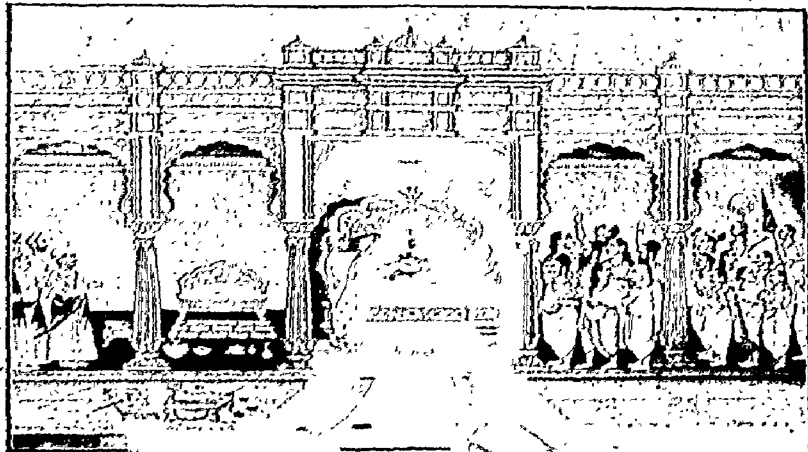
નોંધઃ—આ ખોદકામમાં મળેલી મૂર્તિઓ તથા બીજી બધી પ્રાચીન વસ્તુઓ ચાંદીના ખીલાના, ચાંદીનો હોમકુંડ આદિ નડિયાદવાળા સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવ સરદાર દેસાઈ ગોપાલદાસ વિહારીદાસ મારફત મળી અને તે કામવનમાં શ્રીદેવકીનંદનાચાર્ય પ્રાચીન સંગ્રહાલયમાં જાળવી રાખવામાં આવી છે.

---

૧ આ મહાન્ પ્રસંગ એટલે શ્રીમહાપ્રભુજીને થયેલો કનકાભિષેક સમજવો.



જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી મહાપ્રભુજી.
(શ્રીકૃષ્ણગઢમાંના ચિત્રની પ્રતિકૃતિ.)
પ્રાકટ્ય સં. ૧૫૩૫ ચૈત્ર વદ ૧૧



વિજયાનગરમાં ઉત્સવ

श्रीवल्लभीयसर्वस्व.

दक्षिण में तैलङ्ग देश में आंध्र प्रान्त में आकवीडु जिला में, खम्मम, काकरवाडि ग्राम में यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा भारद्वाज गोत्र में महादेव पात्र के वंश के ब्राह्मण रहते थे। इसी वंश में रामनारायण भट्ट के पुत्र यज्ञनारायण सोमयागी हुए। ये वेद के अवतार थे, इन पर वेद पुरुष अत्यन्त ही प्रसन्न रहते थे। जब इन को वेद में कोई संदेह होता तब स्नान कर के वेद पुरुष का ध्यान करते और वेद पुरुष प्रत्यक्ष हो कर संदेह नाश कर देते।

एक वेर मायावादियों ने हँसी में इन से कहा कि आप वेद के अवतार हो तो बकरे से वेद पढवावो। तब यज्ञनारायण जी ने बकरे की ओर देख कर कहा "भद्रिलाय त्वं वेदानुचारय" इतना सुनते ही वह बकरा वेदपाठ करने लगा। ऐसे ही दक्षिण में उन ने अनेक चमत्कार दिखाये। ये श्री रामानुजाचार्य मत के बड पण्डित थे।

जब यज्ञनारायण जी ने पहिला सोमयाग किया तब अग्निकुण्ड में से यह शब्द सुन पडा कि ऐसे सो सोमयाग के पीछे भगवान का अवतार होता है। बत्तीस सोमयाग करके ये देवलोक पधारे।

इनके पुत्र गङ्गाधर भट्ट सोमयाजी साक्षात शिव जी के अवतार थे। जिन्हों ने अवभृथ-स्नान करती समय लोगों को प्रत्यक्ष अपने केश में से जलधारा निकलती दिखाई। अट्ठाइस सोमयाग कर के ये देवलोक गये।

इन के पुत्र गणपति सोमयागी थे, काशी में पण्डितों की सभा में इन्हों ने गणेश की भांति दरशन दिया और इसी से सभा में इन का प्रथम पूजन होता था। एक वेर सब प्रसिद्ध नगरों में जाकर शास्त्र का दिग्विजय किया था। तीस यज्ञ करके ये देवलोक सिधारे।

इन को तीन स्त्री थीं उन में ज्येष्ठ स्त्री के ज्येष्ठ पुत्र वल्लभभट्ट साक्षात सूर्य के अवतार थे, क्यों कि एक वार इन्हों ने यज्ञ करते करते सायंकाल की समय प्रहर दिन चढे के सूर्य की भांति दर्शन दिया था, पांच यज्ञ करके ये भी देवलोक गये।

इनके पुत्र लक्ष्मणभट्टजी बडे विद्वान साक्षात अक्षरब्रह्म शेष जी के अवतार हुए। इन की छोटी ही अवस्था में इन के पिता का परलोक हुआ था। इमसे इन के मातामह ने लालन पालन कर के इन को विद्या पढाया था। इन की स्त्री देवकी जी का अवतार श्रीइल्लमागारू जी थीं। इन के तीन पुत्र हुए। बडे भाई का नाम नारायणभट्ट उपनाम रामकृष्ण भट्ट। ये कुछ दिन पीछे संन्यासी हो गये तब केशवपुरी नाम पडा। यह ऐसे सिद्ध थे कि खडाऊं पहिने गङ्गा पर स्थल की भांति चलते थे। मझले श्रीमहाप्रभु जी और छोटे रामचन्द्र भट्ट जी। ये महाभारी पण्डित थे। वेदान्त, मीमांसा व्याकरण, काव्य और साहित्य बहुत अच्छा जानते थे।

लक्ष्मणभट्टजी के मातुल वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण अपुत्र होने के कारण इन्हें अपने घर ले गये थे। कृष्णकुतूहल गोपाललीला महाकाव्य इत्यादि कई ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं। ये श्री महाभूपजी के विद्या में शिष्य थे और प्रायः अयोध्या में रहते थे। वादी ऐसे भारी थे कि प्रायः उस काल के सब पण्डितों को जीता था, यहां तक कि इसी वाद के लाग पर इन को विष दे दिया।

लक्ष्मणभट्टजी के पूर्व पुरुषोंने पञ्चानवे सोमयाग किये थे, सो इन्हों ने पांच और कर के सौ पूरे किये। अन्त के सोमयज्ञ का आरम्भ चैत्र सुदी ६ सोमवार पुष्य नक्षत्र अभिजित् योग में संवत् १५३२ में किया। जब यज्ञ समाप्त हुआ तो कुण्ड से यह अलौकिक वाणी सुन पडी कि तुम्हारे कुल में पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागट्य होगा, यह वानी सुनते ही यज्ञ में सब को बडा आनन्द हुआ और लक्ष्मणभट्टजी ने उसी समय काशी में सवा लक्ष ब्राह्मण भोजन का सङ्कल्प किया। उसी समय में संयोग से दक्षिण में कुछ यवनों का उपद्रव भी हुआ इसमे लक्ष्मणभट्टजी कुटुम्ब को ले कर और बहुत सा द्रव्य साथ ले कर काशी की ओर चले।

विदित हो कि श्रीलक्ष्मणभट्टजी संवत १५३२ के चैत्र के अंत में बहुत से विद्यार्थी और ब्राह्मण भोजन के हेत बहुत सा द्रव्य ले कर काशी चले और कांकरवार से सात मञ्जिल पर भक्तसार्थक तीर्थ में जहां सर्वतोभद्रकुण्ड में राजा वरुण ने अपने यज्ञ का अवभृथस्नान कियां है, तीन दिन तक रहे। वहां वैशाख वदी ११ की अर्द्धरात्र को श्रीठाकुरजी ने श्री स्वामिनीजी सहित दर्शन दिया और आज्ञा किया कि जब तुम काशी से लौट कर चम्पारण्य आवोगे तब तुम्हारे यहां हमारा प्रागट्य होगा। यह आज्ञा कर के एक उपरना, एक तुलसी की माला, एक कण्ठी, दे कर श्री मुख मे कहा कि जब बालक हो तब उसको यह उपरना उढा देना, यह कण्ठी माला पहना देना और यह बीडा जन्म घोटी में पिला देना। इतना सुनते ही जब लक्ष्मणभट्टजी नींद से चौंक पडे तो इन वस्तुओं के सिवा और वहां कुछ न देखा।

लक्ष्मणभट्टजी भीमरथी, उज्जैन, पुष्कर, इत्यादि तीर्थ होते हुए प्रयाग आये। वहा भारद्वाज ऋषिके आश्रम में आकाशवाणी हुई कि तुम हमारे गोत्रमें धन्य हो, जिसके घर साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागट्य होगा।

प्रयाग से भट्टजी काशी आये। वहां गङ्गा स्नान काशीविश्वेश्वर का दर्शन करके एक स्थान लेकर उतरे और वेद का पारायण अग्निहोत्र और ब्राह्मणभोजन प्रारम्भ किया और थोडे दिनों में सवा लाख ब्राह्मण का भोजन समाप्त किया। इसी समयमें दिल्लीके यवन राज्य में मुगलों और पठानोंके विरोधके कारण बडा उपद्रव उठा और भारतवर्षके पश्चिमोत्तर प्रान्तमें चारों ओर हल चल पड गई। लोग नगर छोड २ कर गांवमें बसने लगे। लक्ष्मणभट्टजीके जातिके लोग भी काशी छोड कर इधर उधर चले गये ओर लक्ष्मणभट्टजी भी कुटुम्ब लेकर दाक्षिणकी ओर चले

सात महीनका गर्भश्राव हुआ सो मातानीने केलेके पत्तेमें वह गर्भ लपेट कर शमीके खोडरेमें रख दिया। यहांसे ये लोग चौंडा नगर गये और वहां सुना कि देशोपद्रव सब शांत हो गया। वहां एक रात्रि निवास करके जब लक्ष्मणभट्टजी फिर काशीकी ओर फिरे तो उसी शमीके वृक्षके नीचे चालीस हाथके लंबे चौडे अग्निकुंण्डमें बालक खेलता देखा। श्रीइल्लमगारूजीके स्तनसे दूधकी धारा उस समय निकली, श्रीमहाप्रभूजीके मुखारविंदमें पडी। तब श्रीलक्ष्मणभट्टजीने वेद-मन्त्रसे और मातानीने अपनी भाषामें अग्नि और वरुणकी स्तुति किया और अग्निने इल्लमगारूजीको मार्ग दिया। मातानीने बडे आनंद और वात्सल्यसे पुत्रको गोदमें उठा लिया। उस समय आकाशसे पुष्पवृष्टि हुई और देवताओंने प्रत्यक्ष ही कर जै जैकार किया। सबके चित्तमें अकस्मात नन्दमहोत्सवके आनन्दका आविर्भाव हुआ।

श्रीलक्ष्मणभट्टजी बालकको लेकर काशी फिर आए और श्रीठाकुरजीकी आज्ञा प्रमाण कण्ठी, माला, उपरना और बीडी श्रीमहाप्रभूजीको दिया। तैत्तिरीय शाखाके अनुसार नामकरणादिक सब संस्कार बडे आनन्दसे हुए और जब श्रीइल्लमागारूजी गङ्गा पूजनेको गई तब श्रीगङ्गाजीने माताकी गोदही में श्रीमहाप्रभुजीका चरणस्पर्श किया और स्त्रियों सहित माताजीके बरदान मांगनेपर जलमें से शब्द सुन पडा कि तुम्हारा पुत्र सब बादियोंको जीतेगा।

अथ जन्मपत्री।

स्वस्ति श्रीमन्नृपतिविक्रमार्क राज्याब्दे १५३५ शके १४०० वैशाखे मासे कृष्णपक्षे तिथौ १० रविवासरे घ० १६ प० १४ परच ११ तिथौ धनिष्ठा नक्षत्रे घ० ३८ प० ४६ शुभयोगे घ० ३८ प० २ बवकर्णे श्रीसूर्योदयात् इष्ट घ० ३७ प० ४२ वृश्चिक लग्नोदये श्रीलक्ष्मणभट्टपत्नी पुत्र रत्नमजीजनत्।

सूर्य० ।२।२२।११ लग्न ७।१०।१९।३१ दिनमान ३०।२८ रात्रिमान २९।३२।
एक वेर श्रीइल्लमगारूजी की ब्रजयात्राकी इच्छा हुई और आपने अपने पतिसे निवेदन किया कि कृपापूर्वक ब्रज चलिये, परन्तु भट्टजीने कहा कि पुत्रको यज्ञोपवीत करके चलेंगे। यद्यपि श्रीइल्लमागारूजीने पतिकी आज्ञाका कुछ उत्तर नहीं दिया तथापि ब्रजयात्राकी आपकी बडी ही इच्छा थी यहां तक कि एक वेर श्रीमहाप्रभुजीको गोदमें लिये आप बैठी थीं सो ब्रजका स्मरण करके उनके नेत्रोंमें जल भर आया। सर्वान्तरजामी श्रीमहाप्रभुजीने माताकी इच्छा पूर्ण करनेको जम्हाई लिया, और मुखारविन्दमें चौरासी कोस ब्रजका दर्शन कराया। श्रीइल्लमागारूजीको यह देख कर बडा ही आश्चर्य हुआ और आपने लक्ष्मणभट्टजीसे सब वृत्तान्त कहा। भट्टजीने कहा कि एक वेर हम अग्निशालामें भूमिपर शयन करते थे तब अग्निने स्वप्नमें हमसे आज्ञा कि तुम इस बालकके विषयमें सन्देह मत करना सो यह बालक अलौकिक साक्षात् नारायणका स्वरूप है।

एक बेर श्रीविश्वनाथजीने यह विचार किया कि श्रीठाकुरजीने हम को तो माथा मत फैलानेकी आज्ञा दिया है और आप अपने संप्रदाय फैलानेको क्यों प्रगट हुए हैं ? इससे एक बेर दर्शन तो करना चाहिये कि आपने कैसा वेष लिया है और क्या इच्छा है । यह विचार कर योगी बनकर एक सोनेका बघनहां हाथमें लेकर श्रीलक्ष्मणभट्टजीके द्वार पर आये । श्रीमहाप्रभूजी उस समय अत्यन्त रुदन करने लगे और कोई प्रकारसे चुप न हो । तब लक्ष्मणभट्टजीने अपने पास बैठे हुए ज्योतिषियोंसे पूछा कि आज कल बालकके ग्रह कैसे हैं ? ब्राह्मणोंने उत्तर दिया कि ग्रह तो अच्छे हैं परन्तु एक बघनहां इसके गलेमें पड़ा रहे तो अच्छा है । श्रीलक्ष्मणभट्टजीने अपने शिष्योंको आज्ञा किया कि अभी बघनहां मोल लेकर सोनेसे मढ़ाकर पोहचा लाओ । शिष्य लोग जैसे ही बाहर निकले वैसे ही देखा कि एक योगी बघनहां लिये खड़ा है । बड़े हर्षसे शिष्य लोग योगीको भीतर ले गये । श्रीमहादेवजीने श्रीमहाप्रभूजीको कठुला पहनाकर पूछा " भगवन् कोयं वेषः " श्रीमहाप्रभूजीने उसी क्षण उत्तर दिया " सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति "। यह सुनकर सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने छोटे बालकके मुखसे शब्द स्पष्ट और फिर संस्कृत कैसे निकला ? किसीने कहा योगी बड़े सिद्ध हैं, किसीने कहा नहीं बालक ही बड़ा प्रतापी है । उस पीछे श्रीमहादेवजी कई बेर योगीके वेषमें खिलौना लेकर प्रायः मिलनेको आते थे ।

संवत् १५४० चैत्र बदी ९ अर्थात् श्रीरामनवमी रविवारको लक्ष्मणभट्टजीने वेदविधिसे आपका यज्ञोपवीत किया । सोरोंजी नामक प्रसिद्ध वाराह क्षेत्रमें केशवानन्द नामके एक बड़े सिद्ध योगी वैष्णव संप्रदायके थे, सो जब श्रीमहाप्रभूजीका चम्पारण्यमें प्रागट्य हुआ उसी समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा कि इस समय पृथ्वीपर कहीं पुरुषोत्तमका अवतार हुआ है उनके सेवकोंमेंसे कृष्णदास मेघन नामक एक सेवक थे सो वह गुरुका वचन सुनते ही यह विचार करके घूमने निकले कि जो पुरुषोत्तमका प्रागट्य कहीं हुआ होगा दरशन होहींगे । और जो हमको नाम लेकर पुकारेगा उसीको हम पुरुषोत्तम जानेंगे यह कृष्णदास मेघन फिरते फिरते श्रीमहाप्रभूजीके उपवीत समय काशीमें आये और भीड देखकर जो श्रीलक्ष्मणभट्टजीके घरमें गये तो उनको देखते ही श्रीमहाप्रभूजीने आज्ञा किया " कृष्णदास तू आयो " उन्होंने दण्डवत करके उत्तर दिया " जै मैं आयो " और एक अंगूठी श्रीमहाप्रभूजीके यज्ञोपवीत भिक्षा में दी और तबसे ये आजन्म श्रीप्रभुजीके साथ ही रहे ।

उपवीत धारण करके पहले और पीछे जब आप खेलते तो ब्राह्मणके लड़कोंको शिष्य बनाते और आप गुरु बनकर उपदेश करते ।

लक्ष्मणभट्टजीके घरके पास सगुनदास नामक ढाढी रहते थे उनको श्रीमहाप्रभूजीके दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके होय इससे उनका नेम था कि नित्य आपका दर्शन करके तब जल

पीते। तो जब श्रीमहाप्रभूजी चरणारविन्दसे चलने लगे तब आप उनके घर पधार कर दर्शन देते सो एक दिन श्रीलक्ष्मणभट्टजीने आपसे आज्ञा किया कि शूद्रके घर आप मत पधारा करो, इस पर श्रीमहाप्रभूजीने यह वाक्य पढा "स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेपि यान्ति परांगतिं" यह सुनकर लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीको सगुनदासजीके यहां जानेकी आज्ञा दिया।

यज्ञोपवीतके पीछे श्रीमहाप्रभूजीको लक्ष्मणभट्टजी घरहीमें वेद पढाते थे परन्तु आपकी बुद्धि बडी तीक्ष्ण थी इस हेतु असाड सुदी २ पुष्यार्क योगमें माध्वानन्द स्वामीके यहां लक्ष्मणभट्टजीने आपको पढनेको बैठाया सो चार ही महीनेमें चारो वेद, छहों शास्त्र पढकर सबको बडा आश्चर्य उत्पन्न किया, गुरुदक्षिणामें माध्वानन्द स्वामीने श्रीठाकुरजीकी सेवा मांगी तब आपने आज्ञा कि जब श्रीनाथजीको प्रगट करेंगे तब आपको सेवा देंगे। इन्हीको और ग्रन्थोमें माधवेन्द्रपुरी करके लिखा है और ये मध्व सम्प्रदायके आचार्य थे। और विद्याविलास भट्टाचार्यसे आपने न्याय, पातञ्जल और काव्य पढा। श्रीमहाप्रभूजीकी विद्या देख करके लक्ष्मणभट्टजीको फिर सन्देह हुआ परन्तु श्रीठाकुरजीने स्वप्नमें पुनःदर्शन देकर वह सन्देह निवृत्त कर दिया। यही माधवेन्द्रपुरी श्रीकृष्णचैतन्यके मन्त्रगुरु हैं और इसी कारण श्रीमहाप्रभुजी और श्रीकृष्ण चैतन्यसे मित्रभाव था और आपने उनको श्रीगोवर्द्धनकी कन्दरासे लाकर कृष्णप्रेमामृत ग्रन्थ दिया था और ऐसे ही निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य केशव काश्मीरीजीसे भी आपका बडा संग रहता था। विदित हो कि कि चैतन्य संप्रदायके ग्रन्थ बृहद्गौरगणोद्देशदीपिकाने श्रीमहाप्रभूजीको चौंसठ महानुभावोंकी गिनतीमें अनन्त संहिताके ७५ वें अध्यायके प्रमाणसे श्रीशुकदेवजीका अवतार लिखा है।

एक समय श्रीलक्ष्मणभट्टजीने मायावादी संन्यासियोंको अपने घर भोजनको बुलाया था सो श्रीमहाप्रभूजीने ऐसा शास्त्रार्थ उठाया जिस्से मायावादका खण्डन होय तब लक्ष्मणभट्टजीने कहा जो अपने घर आवे उसका अपमान नहीं करना इसे आपने उनसे शास्त्रार्थ नहीं किया पर वैष्णवधर्मप्रचारकी आपको ऐसी उत्कण्ठा थी कि काशीमें जहां शास्त्रार्थ होता वहां आप जाते और वैष्णव मतका मण्डन और अन्य मतका खण्डन करते। यहां तक कि लक्ष्मणभट्टजीके पास लोग उराहना देने आते कि आपके पुत्रने भरी सभामें हमारा अपमान किया, तब लक्ष्मणभट्टजी आपको निषेध करते तब जिन पण्डितोंसे आप निषेध करते उन पण्डितोंसे शास्त्रार्थ न करते, उस कालमें विश्वनाथके सभामण्डपमें पण्डितोंकी सभा नित्य होती थी और वे लोग एक बात पर निर्णय करके तब उठते थे। सो श्रीमहाप्रभुजी उस सभास्थानकी भींति पर एक श्लोक नित्य लिख आते और जब पण्डित लोग उसका एक दिनमें निर्णय करते तो दूसरे दिन दूसरे श्लोकसे उनका सब निर्णय खण्डित हो जाता। ऐसे ही तीस दिन तक आपने यह खेल खेला और उसीसे पत्रावलम्बन ग्रन्थ बन गया। एक प्रसंग यह भी है कि आपसे बहुतसे पण्डित शास्त्रार्थ करनेको आते थे और समय बहुत थोडा था इस लिये आपने पत्रावलम्बन ग्रन्थ करके विश्वेश्वरके द्वार पर चिपका

दिया था, और नगरमें चारो ओर विश्वनाथके द्वारपर भी डुगडुगी फेर दी थी कि जिसको हमसे शास्त्रार्थ करना हो वह पहले जाकर वह पत्र देख ले। यह सुनकर जो पण्डित वह पत्र देखने आते वह सब अपने प्रश्नका उत्तर पाकर चले जाते, और इससे पत्रावलम्बन ग्रन्थ बना।

श्रीलक्ष्मणभट्टजीको श्रीमहाप्रभुजीके इस घोर शास्त्रार्थ करनेसे बडा क्षोभ हुआ और आपने वात्सल्यभावसे यह सोचा कि ऐसा न हो कि द्वेष करके जादूसे कोई पण्डित हमारे पुत्रको मार डाले यह विचार कर अपने देश जानेका मनोरथ किया क्यों कि, बारह वर्षकी काशीमें रहनेकी आपकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई थी। यह सब बात विचार कर आप सहकुटुम्ब काशीसे दक्षिण चले।

वहांसे सात मंजिल पर यह सुन कर कि विष्णुस्वामी संप्रदायके कोई पण्डित लक्ष्मणभट्टजी अपने पुत्र सहित काशीमें अनेक पण्डितोंको जीत कर यहां आते हैं, बहुतसे पण्डित मिल कर एक साथ लक्ष्मणभट्टजीके डेरे पर शास्त्रार्थ करने गए और जब श्रीमहाप्रभुजीने उनको शास्त्रार्थमें जीता तब लक्ष्मणभट्टजीने प्रसन्न हो कर कहा कि बरदान मांगो, तब आपने दो बरदान मांगे प्रथम तो यह कि आप हमको शास्त्रार्थ करने जानेसे कहीं रोको मत और दूसरे यह कि शास्त्रार्थमें कोई हमारा तेज पराभव न कर सके। लक्ष्मणभट्टजीने बडी प्रसन्नतापूर्वक दोनो बरदान दिए।

लक्ष्मणभट्टजी साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके धाम अक्षर ब्रह्म शेषजीके स्वरूप हैं, इससे आपको त्रिकालका ज्ञान है सो जब आपने अपना प्रयाग समय निकट जाना तब कांकरवारसे बडे पुत्र रामकृष्णभट्टजीको बालाजीमें बुलाया और वहीं आपने डेरा किया। पुत्रोंको अनेक शिक्षा देकर रामकृष्णभट्टजीको श्रीयज्ञनारायणके समयके श्रीरामचन्द्रजी पधराय दिए और कहा कि देशमें जाकर सब गांव और घर आदि पर अधिकार और वेल्लिनाटि तैलङ्ग जातिकी प्रथा और अपने कुल अनुसार सब धर्म पालन करो। ऐसेही श्रीयज्ञनारायणभट्टके समयके एक शालिग्रामजी और मदनमोहनजी श्रीमहाप्रभुजीको देकर कहा कि आप आचार्य होकर पृथ्वीमें दिग्विजय करके वैष्णव मत प्रचार करो और छोटे पुत्र रामचन्द्रजीको जिनका काशीमें जन्म हुआ था अपने मातामहको सब स्थावर जङ्गम संपत्ति दिया * और श्रीमहाप्रभुजीके ग्यारह वर्षकी अवस्थामें लक्ष्मणबालाजीका

---

* ये रामचन्द्रभट्ट बडे पण्डित थे। गोपाललीलामहाकाव्य, कृष्णकुतूहलमहाकाव्य और शृङ्गार वेदान्त ये तीन ग्रन्थ इनके मिलते हैं। अयोध्यामें ये रहते थे और श्रीमहाप्रभुजीको विद्यागुरु करके मानते थे। वैष्णव दीक्षा श्रीमहाप्रभुजीसे इन्होंने पाई थी कि नहीं इसमें संदेह है। और रामकृष्णभट्टजी कुछ दिन पीछे संन्यासी होकर केशवपुरी नामसे खडाऊ पहन कर जल पर चलनेवाले बडे सिद्ध विख्यात हुए। इन लोगोंके सम कालके प्रसिद्ध पण्डित ये थे, मध्व मतमें व्यासतीर्थ, निम्बार्क मतमें केशवभट्ट, रामानुज मतमें ताताचार्य और व्यङ्कटाचारि, शंकर मतमें आनंदगिरि, स्मार्तों में वा अन्य मतमें मुकुंदानंद केवलानंद माधवानंद, वरदराजके महन्त हस्त नवार और रङ्गनाथजीके महन्त आनंदराम।

शृंगार करते श्रीगिरियोग उनके स्वरूपमें लय हो गए। उनके पुत्रोंने रामकृष्णजीसे अपना लौकिक संस्कार बड़ी धूमधामसे किया और श्रीमहाप्रभुजीने एक दो तक यथाशास्त्रविधि सब रीतिका बरताव किया।

काशीमें वैष्णव तन्त्र, शैव तन्त्र, कौमारिक शाक्तक सौरपन्थ इत्यादि मतके ग्रन्थ और शैव, पाशुपत, काल मुख, अघोर, ये चार शैव संप्रदाय और विष्णुस्वामी इत्यादिक चार वैष्णव संप्रदायके ग्रन्थ नहीं मिलते थे इस हेत दक्षिणके सरस्वती भण्डारमें जाकर इन ग्रन्थोंको आपने अवलोकन किया और वेदकी ३६ शाखाकी संहिता ब्राह्मण इत्यादिक कण्ठाग्र किया। फिर जब इल्लमगारूजी पतिके हेत विलाप करतीं तब आपको दुःख होता। इससे श्रीवल्लभजीने स्वप्नमें इल्लमगारूजीको विलाप करनेका निषेध किया।

जब आपको पृथ्वी परिक्रमाकी इच्छा हुई तब मातृचरणको अपने मामाके पास पहुंचानेको आप विद्यानगर पधारे और मार्गमें अपने अन्तरङ्ग दामोदरदासजीको सेवक किया।

श्रीमहाप्रभुजी अपने मामाके घर उतरे और वहीं यह सुना कि राजा कृष्णदेवको सभामें आज कल नित मत मतांतरका वाद होता है, यह सुनके आपने इच्छा किया कि हम भी चलेंगे। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान-संध्या होम करके ब्रह्मचारीका भेषकर आप राजाकी सभामें पधारे। इनका दर्शन पाते ही सब सभा तेजोहत हो गई और राजा कृष्णदेवरायने बडे आदरसे इनको बैठाया। तब आपने राजासे सभाका वृत्तान्त पूछा। राजाने हाथ जोड कर निवेदन किया कि आज छ महिनेसे सब मतमतान्तरके पण्डितोंसे यहां शास्त्रार्थ हो रहा है सो मायामतवालोंको अब तक किसीने जीता नहीं है। यह सुनकर आपने पण्डितोंसे प्रश्न किया और शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। चौदह दिन तत्त्व विचारमें बारह दिन स्थानवदादेश इस सूत्रसे आरम्भ होकर व्याकरणमें और एक दिन जैन बौद्धशास्त्र विचारमें इस तरह सब मिला कर सत्ताइस दिन शास्त्रार्थ हुआ और जितने वादी सभामें उपस्थित थे सब निरुत्तर हुए। तब राजाने सब पण्डितोंसे जयपत्र लिखवा कर उसपर अपनी मुहर करके इनको दिया और सब पण्डितों और मतके आचार्योंने मिलकर आचार्यपदवीसे महाप्रभुजीको पुकारा। राजा कृष्णदेवने कनकाभिषेकसे आपकी पूजा किया और सपरिवार शरण आकर सेवक हुआ। + इस अभिषेकके सोनेको श्रीमहाप्रभुजीने दीन ब्राह्मणोंको बांट दिया और अनेक ब्राह्मणके लडकोंके यज्ञोपवीत और लडकियोंके विवाह और अनेकका ऋण शोधन इससे हुआ। इस सुवर्णके सिवा एक थाली भरकर मुहर राजाने आपको भेट किया था [illegible] सात मोहर आपने अङ्गीकार करके उसका श्रीनाथजीका नूपुर बनाया। फिर राजाको

व्यङ्कटपतिराय, द्वितीय तृमधराय, द्वितीय रामदेवराय और द्वितीय व्यङ्कटपतिराय हुए। द्वितीय व्यङ्कट मुगलोंसे हार कर चन्द्रदेवगिरिमें बसे। इनके पुत्र रामराय उनको हरिदास (१६९२), चक्रदास (१७०४), त्रिम्मदास (१७२१), रामराय (१७३४), गोपालराव व्यङ्कटपति, त्रिमलराय, वीर व्यङ्कटपति और रामदेवराय क्रमसे राजा हुए। इस वंशके अन्तिम राजा रामदेवराय जिनको सं० १८७५ (१८२९) ई० में टीपू सुलताननें मारकर राज्य नाश कर दिया।

+ विद्यानगरके, कृष्णगढके और नवानगरके राजा लोग उसी कालसे इस मतके सेवक होते आते हैं किन्तु विद्यानगरका वंश अब नहीं रहा उस कालमें दक्षिण प्रान्तके सब राज्य बने हुए थे। विद्यानगर जानेके पूर्व आप हेमाचल गोआ इत्यादि होते हुए चौंडा गए थे। चौंडाके राजाने एक म्याना और दो प्यादा साथ देकर आचार्यको विद्यानगर पहुंचवाया था। यहांपर एक बात और जाननेके योग्य है कि श्रीमहाप्रभुजी विद्यानगरकी सभामें श्रीविष्णुस्वामीकी गद्दी पर विराजे। इसी समय श्रीबिल्वमङ्गलजीने श्रीविष्णुस्वामीके और मतभेद सब आपको देखकर तिलक किया था। यह भी अनुश्रुति है कि श्रीमहाप्रभुजीने सभामें योगबलसे अपना कमण्डलु फेंका जो सर्यका सा सभामें प्रकाश किया। तदनन्तर आप सभामें गए।

और वहांके अनेक ब्राह्मणोंको बृहस्पतिसव बाजपेय आदि यज्ञ और अनेक महादान कराया और उससे जो द्रव्य एकत्र हुआ उसका तीन भाग किया। एक भागसे श्रीविठ्ठलनाथजीकी कटि मेखला बनी दूसरे भागसे पिताका ऋण शोधन किया और तीसरे भागको करणीय यज्ञके व्यय निर्वाहार्थ माताको सौंप दिया। और अनेक दिन तक ज्ञान भक्ति वैराग्य व्रत यज्ञादि धर्मका उपदेश करते हुए आप विद्यानगरमें विराजे।

कुछ दिन तक विद्यानगरमें निवास करनेके उपरान्त मातासे आज्ञा लेकर पृथ्वीपरिक्रमा करनेको संवत् १५४८ वैशाख वदी २ को आप नगरसे बाहर चले। उस समय ब्रह्मचर्य्य व्रतके कारण सीआ हुआ वस्त्र नहीं पहरते थे इससे धोती उपरना पहरकर दण्ड कमण्डलु छत्र और पादुका धारण किए हुए आप चलते थे। (इसी ब्रह्मचर्य्यके दण्डधारण पर भ्रमसे बहुतसे मूर्ख आक्षेप करते हैं कि श्रीवल्लभाचार्य पहले दण्डी थे फिर गृहस्थ हुए) दामोदरदास और कृष्णदास ये दो सेवक आपके साथ थे। पहले भीमरथीके तटपर पण्ढरपुरमें आए, वहां सप्ताहपरायण करके बैठक स्थापित किया। (आगे जिस तीर्थके वर्णनमें पा० बै० स्था० यह संकेत देखो वहां समझो कि पारायण करके बैठक स्थापन किया) फिर नासिक त्र्यंबक पञ्चवटी गोदावरी तीर्थमें आए। वहां त्र्याह पा० बै० स्था० वहांसे उज्जयिनीमें आए वहां सींगा और अङ्कपात कुण्ड (जिसमें भगवान जब सान्दीपनीजीके यहां पढते थे तब पाटिया धोते थे) स्नान करके महाकालेश्वरका दर्शन करके नगरके बाहर एक पीपलकी डाल गाडकर उसपर कमण्डलुका जल आपने छिडका जिससे वह तत्क्षणात् एक वृक्ष हो गया और उसके नीचे सप्ताह पा० बै० स्था० (यह पीपलका वृक्ष अद्यपि वर्तमान है) वहांसे पुष्करजी की यात्रा कर आप व्रजकी ८४ कोसकी परिक्रमा करनेके हेतु संवत् १५४८ के भाद्रपद कृष्णाष्टमी अर्थात् जन्माष्टमीके दिन श्रीगोकुलमें पधारे। तब श्रीनाथजीको यमुनाजलमें क्रीडा करते देख आप भी उनके समीप जाने लगे, तब तो श्रीनाथजी गिरिराज उपर आए, वहां भी आप उनके पीछे पीछे गये, इसीसे श्रीभगवानने प्रसन्न हो यह वरदान दिया कि "यावत् यमुनाजीमें गङ्गाजल रहेगा, तावत् तुमारो सम्प्रदाय अचल रहेगी" ऐसा कहकर श्रीनाथजी अन्तरध्यान हो गये। तब आप जिस मार्गसे पूर्व में गए थे पूर्वगत मार्गसे अपने व्याकुल शिष्योंसे मिलकर आसनपर आए। तदनन्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी व्रजकी यात्रा करने चले, और उसका निर्णय करके अनुक्रमसे वर्णन किया है। और जिस जिस स्थलमें आपने श्रीमद्भागवतका पारायण कर बैठक नियत की है, जो अद्य पर्यन्त प्रसिद्ध हैं उस जगे ऐसा चिन्ह किया है।

પદ્માવલંબન.

દક્ષિણમાં અપ્પય્યુ દીક્ષિત નામના એક વિદ્વાન થઇ ગયા છે. સુપ્રસિદ્ધ શૈવમતવાદી અપ્પય્યદીક્ષિતના વંશમાંજ આ વિદ્વાન થયા હશે એમ માની શકાય.

अप्पय्य दीक्षिते सं. १५८५ मां "व्यासतात्पर्यनिर्णय" नामनो एक नानो ग्रंथ लखेलो हशे, ते "वाणीविलास" प्रेस तरफथी प्रकट थयो छे. सद्‌गत तेलीवालाए नाना सरखा पुस्तकनी नीचेनी पंक्तिओ पर मारुं ध्यान खेंच्युं हतुं.

ननु एवंसति व्यासतात्पर्यविपर्यीभूतार्थनिर्णयकुतूहलिनः पुरुषधौरेयस्य प्रभुशिरोमणेः सभामागत्यैकदिनप्रभृति मासावधि द्वैताद्वैतविचारे सति तत्पक्षयोर्मध्य एकस्य प्रामाण्यमिति मध्यस्थमुखेन निश्चित्य, तन्मतप्रवेश एवाङ्गीक्रियते इति पत्रावलम्बनपूर्वकं समयबन्धनं कृत्वा, तत्सभाप्रविष्टमध्यस्थविद्वत्सन्निधानबलेनास्मदादिभिरेव श्रुतियुक्तिबलस्वारस्यबलानुसारेणायमेवार्थो व्यासतात्पर्यविषय इत्यध्यवसातुं शक्यत इति चेत्, न।

उपरनी पंक्तिओ पूर्वपक्षरूपे लखायली छे. एनो भावार्थ आ प्रमाणे छेः-

प्रभुशिरोमणि अने पुरुषश्रेष्ठ श्रीकृष्णदेवराजाए • भगवान् वेदव्यासजीना तात्पर्यमां कयो अर्थ समायलो छे, एनो निर्णय करवानी इच्छा करीने एक सभा करी. ए सभामां आवीने पत्रावलंबन-करारपत्र-साथे अमुक समय नक्की कर्यो अने चोक्कस करार ए कर्यो के, "एक दिवसथी लइने एक मास सूधी द्वैताद्वैत चाले, तेमां बन्ने पक्षोमांथी एकनुं प्रामाण्य मध्यस्थ होय ते कहे एम तटस्थना मोढाना निर्णय पछी ते मतमां प्रवेशज करवो रह्यो." आवो करार करीने मध्यस्थ विद्वानोना सन्निधानबलथी अमेज श्रुति अने युक्तिनुं बल, तेम रहस्यना बलने ...धारे आज भावार्थ व्यासजीना तात्पर्यमां रहेलो छे एम निश्चय करी शकीए ...न जो होय तो ते अमे स्वीकारी शकता नथी."

उपरना भावार्थमां आपणे प्रवेश करीशुं. श्रीकृष्णदेव राजाए विद्वानोनी सभा करेली, तेनो ईसारो तो उपरनी लीटीओमां स्पष्टज जणाय छे. ते पछी त्यां जइने पत्रावलंबनपूर्वक करारपत्र लखायो एवो उल्लेख छे. ग्रंथकारे आपणा आचार्यश्रीनुं नाम लख्युं नथी. आचार्यश्रीना दिग्विजयरूप महाप्रयासने अप्पय्य दीक्षित पूर्वपक्षमां गोठवे छे, ने एम कहे छे के, तमे कृष्णदेव राजानी सभामां आवीने, करारपत्र लखी वेदव्यासना कथननुं रहस्य आ ज छे एवो जे निर्णय मध्यस्थो पासे कराव्यो ते अमे स्वीकारी शकीए नहि. एटले सभामां तमे विजय मेळव्यो तेथी शुं थयुं? एम कहीने आ विद्वान् आपणा सिद्धांतोने पडकारे छे. आपणा आकर ग्रंथो अप्पय्य दीक्षितने मळेला होय एम जणातुं नथी. एना नानाशा उक्त ग्रंथमां आपणा सिद्धांतोनुं शुद्ध अनुवादपूर्वक खंडन पण नथी. मात्र आचार्यश्रीना विजयने ए विद्वान् सहन करी शकयो नथी. जेथी मात्र कटाक्ष करीने ते विरमे छे. श्रीकृष्णदेव राजानी सभामां आपणा आचार्यश्री पधार्या, ने २८ दिवस सुधी शास्त्रार्थ थयो ए वातनो आपणे त्यां उल्लेख छे. परंतु आपणो ए उल्लेख बीजुं कोण स्वीकारे? बीजा संप्रदायना पुरावाथी तेने वधु मजबूत बनाववो रह्यो. अप्पय्य दीक्षितनी उपरनी पंक्तिओ आपणा ग्रंथोनां कथनने मज-

બૂત પુષ્ટિ આપે છે. કૃષ્ણદેવ રાજાની ચાલુ સભામાં બીજા કોઇ આચાર્ય ગયા નથી. તેમણે કરારપત્ર કરી મધ્યસ્થ વિદ્વાનો પાસે નિર્ણય કરાવ્યો નથી. એમ કરનારા માત્ર આપણા આચાર્યશ્રીજ છે. વળી આપણે ત્યાં પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ કાશીવિશ્વનાથના બારણા પર થયો છે એવો ઇતિહાસ છે. આ પુરાવો કૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં પત્રાવલંબન થયું એમ કહે છે. કદાચ એજ પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ બન્ને સ્થળે થયો હોય અથવા વધુ સ્થળે પણ થયો હોય એમ પણ સંભવે છે. ગમે તેમ હોય, પણ આ પંક્તિઓ કાંઈ થોડા મહત્ત્વની નથી.

દક્ષિણમાં સાંપ્રદાયિક સ્મરણો.

છેલ્લા મદ્રાસ તરફના પ્રવાસમાં આપણાં કેટલાંક પ્રાચીન સાંપ્રદાયિક સ્મરણો મને મળ્યાં છે, જેનો પ્રસંગોપાત્ત ઉલ્લેખ "પતાકા" માં કરવા ધારૂં છું.

મદ્રાસથી ૫૫ માઇલ દૂર શ્રીવિષ્ણુકાંચી તીર્થ છે છે. ત્યાં શ્રીવરદરાજસ્વામી બિરાજે છે. મૂર્તિ મહાભવ્ય છે. વળી આ સ્થળે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની બેઠક છે. બેઠક ઘણી રમ્ય અને મોહક છે. વળી તે વિદ્વાન્ આચાર્યવર્ય ગો. શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીની માલીકીમાં હોવાથી ઘણીજ સુંદર બની છે વિષ્ણુકાંચીના આ તીર્થસ્થલની યાત્રા પછી હું સદ્ગત તેલીવાળા સાથે શ્રીલક્ષ્મણબાલાજી ગયો. શ્રીમહાપ્રભુજી આ સ્થળને શ્રીવેંકટેશધામ કહે છે. અહીં એ વેળાએ ગો. શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજ બિરાજતા હતા. એઓશ્રીનીજ છાયામાં અમારો બધાનો નિવાસ હતો. એક દિવસે આપશ્રીએ કૃપા કરીને નીચે જણાવેલું સાંપ્રદાયિક સ્મરણ સ્પષ્ટતાપૂર્વક વર્ણવ્યું, જેનો ઉલ્લેખ અત્રે કર્યા વિના હું રહી શકતો નથી.

શ્રીમહાપ્રભુજી વિષ્ણુકાંચીમાં જ્યારે શ્રીવરદરાજસ્વામીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા ત્યારે આપશ્રીએ પગથીયા પર ગીતગોવિંદમાંની અષ્ટપદી તેલુગુ અક્ષરોમાં કોતરાયલી જોઇ, બધા તો તે પગથિયાપર પગ મુકી ઉપર જતા હતા, પણ આપશ્રી તેના પર ચરણ મુકી શકયા નહિ, તેથી શ્રીવરદરાજસ્વામી ઉપરથી નીચે પધાર્યા, અને તે પગથિયાપર શ્રીમહાપ્રભુજીને દર્શન આપ્યાં. આ દિવસ હજુ પણ ત્યાં નોંધાયલો છે, અને ત્યાંના પૂજારીઓ તે દિવસે તે પગથીયાપર શ્રીવરદરાજસ્વામી પધારે છે એમ માનીને ત્યાં ભોગ ધરે છે. આ એક આપણું ઉત્તમ સાંપ્રદાયિક સ્મારક છે.

આ ભોગને અંગે થતું ખરચ સંપ્રદાય તરફથી મળતું, તે બંધ થયું હતું, તે ગો. શ્રી ૬ ગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ ચાલુ કરાવ્યું છે, અને આપણું આ સ્મરણ કાયમ રાખવાનું ઉમદા કાર્ય કર્યું છે.

આપણું પ્રાચીન તિલક.

શ્રીલક્ષ્મણ બાલાજીમાં ચાર પાંચ પૂતળાં છે. તે પંચ ધાતુના હોઈ આપણી પ્રાચીન કળાઓના આદર્શરૂપ છે. તેમાં પેસતાં જમણી બાજુનાં ત્રણ તો શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજા અને તેની બે રાણીઓનાં છે. પેસતાં ડાબી બાજુએ શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાના પ્રધાન

તિરુમલ આદિનાં છે. તિરુમલના કપાળમાં સુંદર તિલક છે. તિરુમલ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક હતા. એ તિલક નીચેથી બાંધેલું છે. બરોબર આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ છે. કૃષ્ણગઢમાં બિરાજતાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં પ્રાચીન ચિત્રમાં પણ તેવુંજ તિલક છે. તેથી સાબિત થાય છે કે, શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ તિલક હતું. માત્ર શ્રીનાથજીની આજ્ઞાથી શ્રીગોકુલનાથજીએ દ્વિરેખ એ નામથી છુટી બે લીંટીનું તિલક કર્યું, અને તે પછી તેઓશ્રીના ઘરમાં તે ચાલુ થયું. પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણું તિલક હતું, તેનો પુરાવો આનાથી વધુ બીજો શો હોય?

વિદ્યાનગરમાં શાસ્ત્રાર્થ.

ચાલુ ઐતિહાસિક શોધખોળ પછી શ્રીમહાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર કાંઈ ઓરજ આલેખાશે. હાલ જેમ જેમ ગ્રન્થો મળતા જાય છે, તેમ તેમ આપશ્રીના ચરિત્રપર અનેરોજ પ્રકાશ પડતો જાય છે. શ્રીયુત તેલીવાલાની સૂચનાને આધારે એક ભાટિયા લેખક ભગવદીય ભાઇ ગોવર્ધનદાસે " મુંબઈ સમાચાર " માં છેલ્લા કેટલાક માસથી આચાર્યશ્રીના ચરિત્રના ઐતિહાસિક અંશોપર ઘણોજ સારો પ્રકાશ પાડયો છે. એમના બધા લેખો શ્રીમહાચાર્યચરિત્રને ઇતિહાસ–દૃષ્ટિએ જોવા ઇચ્છનારને ઘણા મદદગાર થઇ પડે તેમ છે. તેમાં પણ એક વાતપર તો તેમણે ઘણોજ સારો પ્રકાશ પાડયો છે. આપણા વાર્તાના તેમજ બીજા કેટલાક હસ્તલિખિત સંસ્કૃત ગ્રંથોને આધારે આપણી માન્યતા એવી હતી કે, વિદ્યાનગરમાં શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં જ્યારે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે ૧ માસ પર્યન્ત શાસ્ત્રાર્થ કર્યો, ત્યારે આપશ્રીની ઉમ્મર માત્ર ૧૧ વર્ષની અથવા તો તેથીએ નહાની હતી. શ્રદ્ધા કે ભાવનાની નજરે આચાર્યશ્રીમાં તેવાં અદ્‌ભુત સામર્થ્યનાં અસ્તિત્વની શંકા નજ સંભવે, છતાંએ જ્યારે મનુષ્યનાટયનોજ આરંભ હોય ત્યારે તો તેને બંધબેસ્તી લીલા દેખાડેજ છુટકો. એટલે ભાઇ ગોવર્ધનદાસે શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાનો ઇતિહાસ મેળવ્યો. હવે કૃષ્ણદેવ રાજા લગભગ સંવત ૧૫૬૬ માં ગાદીનશીન થયાનું ઇતિહાસલેખકો કહે છે. તે પછી બીજેજ વર્ષે શાસ્ત્રાર્થ થયાના પ્રમાણો પણ ઝાંખા સ્વરૂપમાં મળી આવ્યાં છે. હવે શ્રીમહાપ્રભુજીનું પ્રાકટય તો સં. ૧૫૩૫ માં થયું. એટલે શાસ્ત્રાર્થ સમયે આપશ્રીનું વય ૩૦–૩૧ નુંજ સંભવે છે. તેથી શાસ્ત્રાર્થ અને સર્વ પંડિતોને જીતી લેવાનું કાર્ય આપશ્રીએ બીજી પરિક્રમા વખતેજ કર્યું હોય એમજ સંભવે છે. આ વિષે છેલ્લા મદ્રાસના પ્રવાસ વેળાએ શ્રીયુત તેલીવાળાએ ત્યાંના વિદ્વાનોને ઘણીજ પૂછપરછ કરી હતી; તેથી એમનો મત તો હવે ચોક્કસજ છે કે, શાસ્ત્રાર્થ આપશ્રીએ ૩૦ વર્ષની ઉમ્મર પછીજ કર્યો છે. હાલમાં શ્રીગોકુલેશપુસ્તકભંડારમાંથી આચાર્યશ્રીના ચતુર્થ પૌત્ર શ્રીગોકુલનાથજીના ૧૫૦૦ વચનામૃતો પ્રાચીન લખેલાં મળ્યાં છે; તેમાં એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે કે વિદ્યાનગરવાળો શાસ્ત્રાર્થ બીજી પ્રદક્ષિણા વખતે થયો હતો. એ વચનામૃત આ પ્રમાણે છેઃ—

"એક દિવસે કહ્યું જે, જબ વિદ્યાનગરમેં શ્રીઆચાર્યજી દૂસરી બેર પરિક્રમા કરત પધારે, તબ બ્રહ્મવાદ સ્થાપન ઉપરાંત વહાં એક મધ્વાચાર્યમાર્ગી સંન્યાસી (વ્યાસતીર્થ ?) હતો, ઉનકે મનમેં આયો જે મેરો શિષ્ય હોય તો ભલો, સો આચાર્યજી સોં મનુહારિ કરિકે કહ્યો: એ સબ સંપ્રદાય તુમકો સોપૂં અરુ તુમ યહાંહી રહો; તબ રાત્ર શ્રીઠાકુરજીને શ્રીઆચાર્યજીસોં કહ્યો, જો તુમ યા માર્ગકો અંગીકાર મત કરિયો."

કનકાભિષેકના પુરાવા.

માલાપ્રસંગની યાદ—ચિદ્રૂપ નામના એક માયાવાદી દંભી દંડી સંન્યાસીએ જ્યારે જ્યારે જહાંગીરી અમલનો આશ્રય લઇને, પુષ્ટિસંપ્રદાયના બાહ્ય ચિન્હો માલાતિલક ઉપર હુમલો કર્યો ત્યારે તેની સામે જગદ્‌ગુરુ શ્રીગોકુલનાથજીએ જે સત્યાગ્રહના સંગ્રામો આ[illegible] ઐતિહાસિક સત્ય ઉપર પણ કુતર્કો થયા. આ જમાનામાં શું નથી થતું ? હવે તો [illegible] કે, અમે કે તમે અમારા કે તમારા બાપના ખરાં દીકરા છીએ તેમાં પુરાવો શો છે ? આવા [illegible] હવે જાહેરમાં થવાના છે ! માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા ઉપર એવા આક્ષેપો થયા [illegible] વિષે એક સંગીન વિચારણીય લેખ રા. રા. રામલાલ ચુનીલાલ મોદીએ લખ્યો અને ત્યારબાદ એ વિષેના આક્ષેપો બંધ થયા. હવે કનકાભિષેકનો વારો આવ્યો છે. કહે છે કે, તે વિષે સ્વતંત્ર (બીજાઓનો) પુરાવો ક્યાં છે ? જો કે માલાપ્રસંગ વિષે પણ બહારના સ્વતંત્ર પુરાવા નહિ જેવા જ ગણાય. મતલબ કે, ઘરના પુરાવા ન ચાલે, બહારના, બીજા સંપ્રદાયના પુરાવાઓ લઈ આવો. કનકાભિષેક માટે ઘરના પુરાવા નહિ ચાલે. શંકરાચાર્યના જન્મ માટેના પુરાવા તો ઘરના જ ચાલે, તેમનાં માબાપ વિષેના, તેમના ચારિત્ર્ય વિષેના, તેમના દિગ્વિજય (!) વિષેના પુરાવાઓનું ચણતર તો ભલેને ઘરની ચાર દીવાલો ઉપર જ કેમ ન થયું હોય ? પોતાના ઘરની ગમે તેવી દશા છતાં અહીં તો પારકાના ઘર ઉપર જ હુમલા કરવા છે ! બીજાઓને હલકા પાડવા છે ! બોલો હવે કાંઈ કહેવું છે ? શંકરાચાર્યની ઉત્પત્તિના બહારના પુરાવાઓ ઘણા ખરાબ હોય તેથી અમને શું ? અમારી શ્રદ્ધા ઘટવાની નથી. અમારે તો વૈષ્ણવોની જે અડગ શ્રદ્ધા છે તેની ઉપર હુમલો કરવો છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના કનકાભિષેક વિષે બહારનો પુરાવો લાવો. કોઈ શિલાલેખ, તામ્રપત્ર કે બીજું કાંઈ બતાવો, નહિતર એ બનાવને કલ્પિત ગણીશું. આવી પોકળ પોકરાણ થઈ રહી છે. આનો જવાબ આપીએ તે પહેલાં ઘરના એકપક્ષી મજબૂત સંગીન પુરાવાઓથી ઇતિહાસનો નિર્ણય થાય કે નહિ તેને માટે જે મજબૂત દલીલો ઇતિહાસજ્ઞ રા. રા. મોદીએ કરી છે તે અહીં ઉતારીશું. રા. રા. મોદી લખે છે કે—

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો ગ્રાહ્ય છે—એકપક્ષી પુરાવો પણ જો વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં ગ્રાહ્ય થઇ શકે છે. એના ઇતિહાસમાં ઘણા દૃષ્ટાંતો છે. ૧. મહાન સિકંદરની હીંદની ચઢાઈ સંબંધી કોઇપણ હીંદી લેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં ગ્રીક લેખકોના પુરાવા ઉપરથી એ બીના ઐતિહાસિક ઠરી છે. ૨. મહમ્મદ ગઝનવીની સોમનાથની સ્વારી સંબંધી કોઇપણ બ્રાહ્મણ જૈન ગ્રંથમાં નિર્દેશ નથી, ફારસી ગ્રંથોના પુરાવાઓ ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમાં આદર થયો છે. ૩. અલ્લાઉદ્દીન ખૂનીને કરણનો પ્રધાન માધવ ગુજરાતમાં લાવ્યો હતો એ બાબતે મુસલમાન લેખકોએ કંઇ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મારણ્ય અને કાન્હડદે પ્રબંધ; એ બ્રાહ્મણ

ગ્રંથો ઉપરથી અને તત્કાલિન જૈન ગ્રંથો ઉપરથી એ વાત સિદ્ધ થઇ છે. ૪. સૌથી વધારે વધારે અગત્યની બાબત તો સર ટોમ્સ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઇંગ્લાંડના એલચી તરીકે આવ્યો હતો, અને જહાંગીરને અજમેર મુકામે ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના જાનેવારીની ૧૦ મી તારીખે મળ્યો હતો. છતાં જહાંગિર તુઝકમાં એ સંબંધી ઇશારો સરખોએ નથી.

ઉપરના પ્રબલ પુરાવાઓ ઉપરથી સાબીત થાય છે કે, ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવાએ પણ સ્વીકારાય છે. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના કનકાભિષેકના પુરાવાઓ, તે પ્રસંગના ગૌરવના ઇતિહાસો સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાં ન જળવાય તો શેમાં જળવાય? બીજાને એ ગૌરવપૂર્ણ ઇતિહાસો ટાંકવાની શી ગરજ હોય? તેથીજ સંપ્રદાયના અનેક સંસ્કૃત પ્રાચીન ગ્રંથોમાં તેનો ઉલ્લેખ છે. વળી આધુનિક વિદ્વાન્ પુરાતત્ત્વવેત્તા ઇતિહાસજ્ઞ લેખકો પણ કનકાભિષેકની ઐતિહાસિકતા સ્વીકારે છે. હાલમાં ચોમાસામાંના જંતુઓની પેઠે ઉભરી નીકળેલા ચર્ચાપત્રીઓમાંનો એક પણ એવો ઇતિહાસનો અભ્યાસી નથી. અને અહીં જે પુરાવાઓ ટાંકવામાં આવશે, તે ગ્રંથોના લેખકોના ગૌરવની શતાંશમાં પણ બરોબરી કરી શકે તેવો હમણાંનો એક પણ ચર્ચાપત્રી નથી. આ વાત વૈષ્ણવોએ હૃદયમાં કોતરી રાખવી રહી. હવે આપણે પુરાવાઓ જોઇએ.

૧. શ્રીગદાધરદાસજીની દીપિકા—શ્રીગુસાંઇજીના સેવકો પૈકી વૃન્દાવનના દ્વિવેદી ગદાધરદાસજીએ વિ. સં. ૧૬૧૦માં સંપ્રદાયપ્રદીપનામનો એક ગ્રન્થ લખ્યો છે, તેમાં લખે છે કે:— શ્રીવલ્લભે માયાવાદીને અલ્પ પ્રયાસથી જીત્યો. તે પછી શ્રીવલ્લભાચાર્યનો કનકાભિષેક કર્યો. પછી રાજાએ એમને વિનંતિ કરીકે "હે સ્વામિન્! આ દ્રવ્ય તમારે લઈ જવું" ત્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બોલ્યા કે "આ દ્રવ્ય અમારે અંગીકાર કરવા યોગ્ય રહ્યું નથી." જેમ સ્નાન કરેલું પાણી પુનઃ અંગીકારને યોગ્ય નથી તેમ." એટલે શ્રીવલ્લભાચાર્યની આજ્ઞાથી એ દ્રવ્ય તેમની પૂર્વે જે બે જણાઓ વિવાદ કરી રહ્યા હતા તેમને આપ્યું.

૨. સાવલી (ગુજરાત–વડોદરા રાજ્યના તાબાનું ગામ છે) તેમાં ખોદકામ કરતાં **મળી આવેલો લેખ** (મુંબાઈ–ગુજરાતી પત્રના સં. ૧૯૭૬ ના દીવાળીના અંક ઉપરથી) તેમજ **"પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ"** (લેખક શાસ્ત્રી વસંતરામ) નામના પુસ્તકમાંથી.

સં. ૧૯૭૬ ના આસો માસમાં સાવલી ગામમાં એક કુવો ખોદતાં કેટલાક પ્રકીર્ણ લેખો મળી આવેલા હતા જેની સવિસ્તર હકીકત ગુજરાતી પત્રના દીવાળીના અંકમાં સં. ૧૯૭૬ માં છપાઈ છે. તે ઉપરથી શાસ્ત્રીજી વસંતરામે શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ એ નામે પુસ્તકમાં છપાઈ છે. જેમાંથી કેટલીક હકીકત આપીએ છીએ.

"સાવલી ગામમાં નારાયણ ભટ નામની જગામાં પંડિત શ્રીયુત રાજેન્દ્રનાથ રહે છે તેમણે કુવો ખોદવા માંડયો. એક શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીની મૂર્તિ–સ્વરૂપ તથા કેટલુંક બીજે તાડપત્ર ઉપર લેખ, ચરણપાદુકા વગેરે મળી આવેલુ.

તાડપત્ર ઉપર સંસ્કૃત લેખ છે. તેમાં લખે છે કે:—

१ विद्यापत्तनम् श्रीनृसिंहवर्ये सार्वभौम स्वस्ति श्री साम्राज्ये मीन मासे ११ लोकगुरु–आचार्य चक्रवर्ति श्रीप्रभु वल्लभहेमाभिषिकम्.

આ સિવાય સંસ્કૃતમાં ઘણો લાંબો લેખ છે. (જુઓ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ પા. ૨૯) એ આખા લેખનો ગુજરાતી અર્થ:—

વિદ્યાનગર–શ્રીનૃસિંહ વર્મા ચક્રવર્તિ કલ્યાણકારી સામ્રાજ્યમાં મીન માસમાં–ચૈત્ર માસમાં એકાદશીના રોજ લોકગુરુ આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીપ્રભુ વલ્લભનો સુવર્ણાભિષેક થયો.

સાત દિવસ સુધી ભટ્ટકરને (આચાર્યશ્રીને) અભિષેક થયા પછી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણા, સવા લાખ સોના, ચાંદી અને તાંબાના સિક્કાઓ નિવેદન કર્યાં.

ગાય, હાથી, બળદ, ઘોડા, એ કર્મ કરનારાઓને આપ્યું.

કાશીના રાજ અરુણોદય વેળાએ વહાણમાં-મહારાણી મુખ્ય પટરાણી શ્રીનાકી દેવીએ પોતાના હાથે આભૂષણ કરાના આચાર્યશ્રીને ચાંદીવડે અભિષેક કર્યો.

એ કામ કરનું મળેલી ચીજો બધી કાજાવનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનંદનાચાર્ય પ્રાચીનસંગ્રહાલયમાં જાળવી રાખવામાં આવી છે. આ પ્રાચીન લેખનો પુરાવો તાડપત્ર ઉપરનો છે ને ઉપરથી આચાર્યશ્રીનો કનકાભિષેક થયાનું સિદ્ધ થાય છે. આથી ઇતરેષીઓના પુરાવા તદ્દન નકામા-પાયા વિનાના થઈ જાય છે.

૩. શ્રીવલ્લભાખ્યાનકર્તા—પરમ ભગવદીય મહાનુભાવી ગોપાળદાસજી જેઓ તદ્દન મુંગા હતા, પણ શ્રીગુસાંઈજીની કૃપાથી વાચાળ થઇ ગયા અને તત્કાળ પોતે નવ વલ્લભાખ્યાન ગાયાં તેમાં વલ્લભાખ્યાન બીજામાં:—

કનકસ્નાન સ્નાન ભણ સુવર્ણે, કરાવ્યું મહીપાળ;
તે મુદ્રા તેગે ચારીયા, રાય દૃષ્ટિ ન પાછી વાળ.

આ વલ્લભાખ્યાન શ્રીગુસાંઈજીનાં સાંનિધ્યમાંજ પોતે ગાયાં છે તેથી તે પુરાવો વધારે પ્રબળ માની શકાય. તેમજ આ નવવલ્લભાખ્યાન જે સ્થળે ગવાયાં છે તે સ્થળને તે મકાન પણ અત્યારે મોજુદ છે. અમદાવાદ પાસે અસારવા છે. ત્યાં શ્રીગુસાંઈજીની બેઠક પણ છે. તે સં. ૧૬૧૩ થી ૧૬૧૬ ની આસપાસ ગવાયા છે. વળી આ વલ્લભાખ્યાનના કરોડો વૈષ્ણવો પાઠ કરી ગયા ને હજુ પણ કરે છે.

આ ગ્રન્થની વિશેષ અગત્યતા એ છે કે એ ગુજરાતી ભાષાના કાવ્ય ગ્રન્થ ઉપર શ્રી ગો. શ્રીવ્રજરાયજી મહારાજની સંસ્કૃતમાં ૫૦૬ પાનાની ટીકા છે. આ ગ્રન્થ કેટલો આદરણીય હશે તે આ ઉપરથી મી. ઝવેરભાઇ જેવા સમજી શકશે કે ? વળી આ ગુજરાતી આખ્યાનો ઉપર વ્રજભાષામાં એક ટીકા શ્રીજીવનલાલજી (મુંબાઇમાં મોટા મંદિરવાળા) એ લખેલી છે અને તેની નીચે સવિસ્તર ટિપ્પણ આનન્દમાર્તંડ પંડિત ગટુલાલજીએ કરેલું છે.

૪. મુરલીધરદાસકૃત શ્રીવલ્લભાચાર્યચરિતમ્—આ ગ્રન્થ સંવત ૧૬૧૦ લગભગ લખાયો મનાય છે. મુરલીધરદાસ શ્રીગુસાંઈજીના સેવક હતા. તેમણે લખેલો આ ગ્રન્થ ગદાધરદાસ સમકાલીન છે. જ્યારે ગદાધરદાસ પણ કહે છે કે કનકાભિષેક થયો છે અને આ મુરલીધરદાસ પણ કનકાભિષેક થયાનું સ્વીકારે છે. એક આખ્યાયિકા માટે બે મત સરખા પડે છે.

"सिन्धेन सह विजयनगरे राजसभां प्रविवेश, सनत्कुमारशुकादिवत् स्वतेजसा राजसभां भासयामास. अम्लाकरणो भानुरिवापि भासितजनैः सर्वैर्भूपाद्येन चाभ्यर्चितो नृपा प्रभावं सम्मानयामास. गजा सहसं मानिनो भूत्वा रत्नासन उपवेशया. तत्र नत विद्वज्जनैः कनकसर्वादार्थपत्रयमसृजीत् । एवं सदसल्लमानो गजा च ब्राह्मिणः गाययान् पन्थेन इव भागवत मार्गपंचमेन विनुमद् जिला कन्याराधनाकरेन तेन भूपालेन कनकाभिषेकं प्राप्यामि स्वमन-मनोदयनयाः भगवदितिनिग्रहत्वं विद्वत्संतोषयामास प्रापितः ।

માત્રાએ પણ સભામાં બેઠેલા સર્વ જન અને રાજા સાથે પરવશ થઇને ઉભા થઇ સન્માન કર્યું. રાજાએ અત્યંત સન્માન કરેલા એવા પોતે રત્નના સિંહાસન ઉપર બિરાજ્યા. તે પહેલાં ત્યાં ચાલેલા વિદ્વાનોના શાસ્ત્રાર્થમાં અવૈષ્ણવોનો વિજય (અને વૈષ્ણવોનો પરાજય) સાંભળ્યો. પોતાને તે ન સહન થવાથી અને રાજાની પ્રાર્થનાથી બળદેવજીવત્ શ્રીભાગવતશાસ્ત્રાર્થની ચર્ચાથી પ્રતિપક્ષીઓને છતીને રાજાએ કરેલા કનકાભિષેકને પામીને પણ માત્ર પોતાના મતને જ સ્થાપવાનું પ્રયોજન હોવાથી ભગવાન સિવાય બીજી વસ્તુમાં પોતાનું નિઃસ્પૃહપણું પ્રકટ કરતાં પોતે તે છોડીને તીર્થયાત્રામાં પધાર્યા.

૫. પ્રાચીન ગ્રંથનો પુરાવો—શ્રીમદ્વિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુના છઠ્ઠા કુમાર શ્રીયદુનાથજી મહારાજશ્રીએ રચેલા શ્રીવલ્લભદિગ્વિજય ગ્રંથમાં (સં. ૧૬૫૮ ફાલ્ગુન સુદ બીજના રોજ રચાયલા), આ પ્રમાણે ઉલ્લેખ છેઃ—

ધ્વજપતાકા આદિથી અલંકૃત મંડપમાં પોતાના મતના **કનકાભિષેકના અનુષ્ઠાનાર્થ** સંપાદિત કનકકલશ તથા સભાના સાહિત્યને સંભાળવાને માટે પહોંચ્યા......વૈષ્ણવાચાર્ય તથા અન્ય બધાની સંમતિથી શ્રીમદાચાર્યચરણને ઉઠાડીને ઋત્વિક ઉપાધ્યાય તથા રાજા સન્મુખ શુદ્ધ સુવર્ણના પાટલા ઉપર બિરાજમાન કર્યા......યથાવિધિ પૂજન કરી, પવિત્ર તીર્થ જલોથી મહાભિષેક તથા સામ્રાજ્યાભિષેકના મંત્રોથી આપનો આચાર્યસામ્રાજ્યાભિષેક કર્યો."

૬. નિજવાર્તા:—આ ગ્રન્થ શ્રીગુસાંઇજીના ચતુર્થલાલજી શ્રીગોકુલનાથજીએ લખેલો છે. તેમાં વિદ્યાનગરનો પ્રસંગ ૪ થો પાનું ૭ થી ૧૩ માં આપશ્રી લખે છે કેઃ-રાજા કૃષ્ણદેવની ધર્મસભામાં ઘણા દિવસથી વાદવિવાદ ચાલે છે. આથી આપશ્રી સભામાં પધાર્યા. રાજા આપને પધરાવવા આવ્યા. આપશ્રી સિંહાસન ઉપર બિરાજ્યા. વાદવિવાદ શરૂ થયો. તેમાં માયાવાદીઓમા "**વિજ્ઞાનાનંદગિરિ**" નામના મહાસમર્થ માયાવાદી પંડિત હતા તેની સાથે માયાવાદ અને બ્રહ્મવાદના પ્રશ્નોમાં ૨૭ દિવસ વાદ ચાલ્યો અંતે તે માયાવાદી નિરુત્તર થયો તે ઉપરથી એકે એક વિદ્વાનોને પુછતાં તેઓ પણ વાદમાં હારી ગયા. આ સભામાં જૈન, બૌદ્ધ, નાનકપંથી, નિરંજની, કબીરપંથી વગેરે ઘણા વિદ્વાનો હતા તે સઘળા નિરુત્તર થઇ ગયાં. આથી આ પ્રશ્નનો વિજય થયો.

"पाछे वैष्णव संप्रदायमेंके रामानुज संप्रदायके हनुमंताचार्य, निम्बार्क संप्रदायके केशवभट्ट कास्मीरी, ओर मध्व संप्रदायके व्यासतीर्थ स्वामी इत्यादि आचार्य संतमहंतहुने विन सबनने कही जो हम श्रीआचार्यजीको तिलक करेंगे ॥ जो आजतें हमारे वैष्णव संप्रदायवारो ब्राह्मण सबनके ये राजा भये । ओर आचार्यपदवी दीनी जो हमारे सबनके सिरोमनि ये हे जिनने हमारी वैष्णवता ओर वैष्णव मार्ग राख्यो । यह सुनिके राजा महोत प्रसंन्न भयो ओर कह्यो जो बोहोत आछो, तुम सबननें एसे विचार्यो हे तो में श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको कनकाभिषेक करूंगो. तब सब वैष्णव संप्रदायके आचार्य महंत प्रसन्न भये तब राजा कृष्णदेवने आछो मुहूर्त देखीके आपको शतमण सुवर्ण जलमें डारके कनकाभिषेक करायो, ब्राह्मण सबनने तिलक कीयो. सब कोउ श्रीवल्लभाचार्यजी कहवे लगे. एसो नाम वा दिनातें प्रसिद्ध भयो.

(પત્રાલંબનગ્રન્થ) ૨૭ દિવસ વાદ કરી સમર્થ પંડિતોને જીતી માયાવાદનું ખંડન કર્યું. પછી વદ્યાનગર કૃષ્ણરાયની સભામાં ૧૬ દિવસ વાદ કરી પાખંડ મતનું ખંડન કરી, બ્રહ્મવાદનું સ્થાપન કર્યું. સર્વ પંડિતોને રહેલાઇથી જીત્યા. રાજા કૃષ્ણદેવે સંતોષ પામવાથી સુવર્ણનો આભિષેક કર્યો. આ સુવર્ણ ઘણું હોવા છતાં સ્નાનોદક ગણી ત્યાગ કર્યું.

આ કલ્લોલ નામનો ગ્રન્થ શ્રીગુસાંઇજીના સેવક ખંભાળીયાના રહીશ ગિરિનારા બ્રાહ્મણ કલ્યાણભટ્ટજીનો લખેલો છે. તેથી આ ગ્રન્થનો પુરાવો સબળ માની શકાય. તેમ આ લેખના લેખક પોતે વિદ્વાન સ્કોલર છે તેથી તે પ્રમાણે ગણાયજ.

૧૧. શ્રીવલ્લભવેલ—શ્રીગુસાંઇજીના ચતુર્થલાલજી શ્રીગોકુલનાથજીના એક સેવક " કેશવદાસ કવિ " થઇ ગયા જેઓ શ્રીગોકુલનાથજીના ખાસ ભરૂચી સેવક છે. તેઓએ શ્રીવલ્લભવેલ નામનું કાવ્ય રચ્યું છે તેમાં પોતે જણાવે છે કેઃ—

ખંડી માયાવાદ પોતે, સાકાર બ્રહ્મને સ્થાપીયા;
ફરી માયાવાદી જીતવાને, વિદ્યાનગર પાઉ ધારીયા. ૮
ત્યાં તત્ત્વવાદી માયાવાદી, વાદ કરે તેણીવારે;
રાજા કૃષ્ણરાય આગળ થાતાં, સોળ દિવસ થયા ત્યારે. ૯
ફરી પોતે વાદ માયા, જીતી ખંડ પાખંડ;
બ્રહ્મવાદ તે સ્થાપ્યો નિર્ભય, મહાપ્રતાપ પ્રચંડ. ૧૦
રીઝી નૃપમણિ સ્નાન કનકે, કરાવ્યું કર જોડી;
સોળ સહસ્ર તે મોહોર થઇ, તેના પૂર્યા મનના કોડ. ૧૧
અંગીકાર ન કર્યો દ્રવ્યને, પાદોદકવત્ જાણી;

આ કેશવકવિ પણ શ્રીગોકુલનાથજીના સમકાલીન હતા એટલે આ લેખ સપ્રમાણ માની શકાય, પુષ્ટિમાર્ગમાં લાલની પદ્ધતિ મુજબ વિગતવાર ઇતિહાસ લખવાનું કાર્ય શ્રીગોકુલનાથજી (૪ થા લાલજી) ના અનન્ય સેવકોએ કર્યું છે. આવી તવારીખ તો કોઇ પણ સંપ્રદાયમાં લખેલી મળી આવશે નહિ. શ્રીકલ્યાણભટ્ટજી આદિ શ્રીગોકુલેશજીના સેવકોએ સર્વ સ્થળે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના કનકાભિષેકનો મહાન્ પ્રસંગ માનીને નોંધી લીધો છે. માત્ર તેઓ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનાં પ્રાકટ્યની સાલ સં. ૧૫૩૫ ને બદલે સં. ૧૫૨૯ માને છે અને આ કનકાભિષેક ૩૦ વર્ષની ઉંમર પછી, લગ્ન થયા પછી થયો છે એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ એ ગ્રંથોમાં મળે છે. વિજયનગર અને કૃષ્ણદેવરાજાના ઇતિહાસની સાલ સરખાવતાં આ વાત બંધબેસતી થાય છે. કનકાભિષેક તો બધા સ્વીકારે છે.

૧૨. શ્રીમૂલપુરુષઃ—(કર્તા ગો. શ્રીદ્વારકેશજી મહારાજ) આપશ્રી આજ્ઞા કરે છે કેઃ—

છંદઃ—ઠાડે સબ સ્તુતિ કરે જબ, કિયો માયામત ખંડન;
શબ્દ જે જે હોત સબ મુખ, ભાક્તાપંથ ભુવમંડન.
સ્તુતિ કરે દ્વિજ હાથ જોરેં, રાય મસ્તક નાવહી;
પરમ મંગળ હોત હે, કનકાભિષેક કરાવહી.
પાછે જલસોં ન્હાય વિરાજે, વિનતિ કરી રાયે મન સાજે.
દ્રવ્ય સબે અંગીકૃત કરીયે, પ્રભુ બોલે યહ નાંહી મહીયે.

૧૩. શ્રીવલ્લભવિલાસ ગ્રન્થ ભાગ ૧ લો, પા. ૧૨ કાશીમાં છપાયેલો પ્રાચીન ગ્રન્થ છે. તેમાં પણ લખે છે કે—

" श्रीमद्वल्लभाचार्यजी अनेक देशांतरमें मायावादीओकों परास्त करि, विद्यानगर राजा कृष्णदेवके सभामें पधारि, मायावादरूपी अंधकारको नाश करी, अपने भक्तिमार्गके सिद्धान्तरूपी तेजको प्रकाश कीयो. अर्थात् मायावादको खंडन करी ब्रह्मवादको स्थापन कीयो. और वैष्णव-संप्रदायकी उत्कृष्टता बताई ता समें चहुं ओर तें बडो जेजेकार शब्द होत भयो. राजा साष्टांग दंडवत् करी कनकाभिषेक सौं. १०० मण सुवर्ण तें करायो. सभाके पंडित महंत आदि सब ठाडे होय अत्यंत गद्गद हृदयसो श्रीमदाचार्यजी महाप्रभुनको स्तुति करत हे. × × × पाछे सब आचार्यनने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको तिलक कियो.

૧૪. **ભારતમાર્તંડ શું કહે છે ?**—ભારતમાં સુપ્રસિદ્ધ અને જગન્માન્ય વિદ્વાન્ ભારતમાર્તંડ પંડિત વેદાંતભટ્ટાચાર્ય શ્રીગટ્ટુલાલજી તત્ત્વાર્થદીપનિબંધની સંસ્કૃત પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે—

तुंगभद्रातीरे विद्यानगरे सकलवैष्णवविद्वेषवकान् बहुपणान् वादिगणान् विजित्य सायणमाधवद्वारा वेदभाष्यकारयितुर्वीरबुक्कराजस्य पौत्रं कृष्णदेववर्माणं महीदेवमुल्लास्य,....

૧૫. એજ ભારતમાર્તંડના મહાન્ શિષ્ય સદ્ગત શીઘ્ર કવીશ્વર શ્રીનંદકિશોરજી લખે છે કે:—

दक्षिणापथप्रथितं तुंगभद्रातीरवर्तिविद्यानगराधिपतेः कृष्णदेवनरेन्द्रस्य सदसि सकलवादिवृन्दविजयाभिद्योतककनकाभिषेकविशेषितवैदुष्यातिशयविस्मापितसकलजनसमाजाः....॥

૧૬. નિત્યલીલાસ્થ ગોસ્વામી **શ્રીગોકુલાધીશજી મહારાજ** પણ લખે છે કે—

राज्ञा प्राज्ञाभिमतिभरितोद्दामदुर्वादिजेता वाचां नेता भुवि विजयते कलृप्तहेमाभिषेकः ॥

આ શ્લોક ઉપરની ટીકામાં ભારતમાર્તંડ લખે છે કે—

राज्ञा कृष्णदेवाख्येन कलृप्तहेमाभिषेकः रचितः कनकाभिषेको यस्य तादृशः । अथाभिषेकसुवर्णमेतदंगीकार्यमिति विज्ञापिते सति स्नानसलिलसदृशं नास्माभिरिदमादीयते इत्युक्तवंतः ।

૧૭. **હિન્દી ભાષાના જનકસમા ભારતેન્દુ શું કહે છે ?**—જેમને ભારતવર્ષ રાષ્ટ્રીય ભાષા-હિન્દી ભાષાના પિતા માને છે. જેઓ એક પ્રખર ઇતિહાસજ્ઞ અને પુરાતત્ત્વવેત્તા, અંગ્રેજી ભાષાના પણ અસાધારણ વિદ્વાન્, તે ભારતેન્દુ બાબુ હરિશ્ચંદ્રજી પોતાના 'શ્રીવલ્લભીય સર્વસ્વ' નામના લેખમાં સ્પષ્ટ લખે છે કે:—

" तब राजाने सब पंडितोंसे जयपत्र लिखवा कर उस पर अपनी मुहर कर के इन को दिया और सब पंडितो और मतके आचार्योंने मिलकर आचार्यपदवीसे महाप्रभुजीको पुकारा । राजा कृष्णदेवने कनकाभिषेकसे आपकी पूजा किया और सपरिवार शरण आकर सेवक हुआ ॥"

૧૮. સંપ્રદાયના અગ્રગણ્ય વિદ્વાન્, ધર્મશાસ્ત્રગ્રન્થોમાં મહાન્ નિપુણ, પુના ડેક્કન કોલેજના સંસ્કૃતના પ્રોફેસર **શાસ્ત્રીજી મગનલાલ ગણપતરામ M. A. શું કહે છે ?**

અવશિષ્ટ આઠ દિવસમાં સાંખ્યમીમાંસાની સમીક્ષા કરી, સર્વ આચાર્યો સમક્ષ વાગીશત્વ પ્રકટ કરી, નિર્મલ કર્મમાર્ગ, શુદ્ધ જ્ઞાનમાર્ગ અને નિરુપાધિ ભક્તિમાર્ગનું સંસ્થાપન કર્યું. તેથી સર્વ આચાર્યોએ વિકલ્પનિરાસ કરી, શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને વિજયપત્ર સમર્પ્યું. પોતાના સર્વ સંશયની અત્યંત નિવૃત્તિ થઈ જવાથી રાજાએ કનકાભિષેક કરાવ્યો. સમર્પેલી દક્ષિણામાંથી સામનિક

માત્રનો અંગીકાર કરી, રાજાને શરણે લઈ, તેણે આપેલા છત્ર, ચામર, આદિ આચાર્યચિહ્ન ગ્રહણ કરી પાંડુરંગ વિઠ્ઠલનાથ પધાર્યા."

૧૯. સંપ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન્ અને 'વિદ્વન્મંડન' જેવા મહાન્ ગ્રંથોના અનુવાદ કરનારા રા. રા. નાનુલાલ નારાયણદાસ ગાંધી M. A. LL. B. 'પુષ્ટિપાઠાવલી'માં લખે છે કે:—

"શ્રીવલ્લભ દક્ષિણમાં વિદ્યાનગર પધાર્યા. ત્યાં વિદ્યાનગરમાં માયાવાદીઓને સહેલથી હરાવ્યા. તેથી સંતુષ્ટ થઇ ત્યાંના રાજા કૃષ્ણરાયે તેમનો સુવર્ણાભિષેક કર્યો. અભિષેકવાળું સુવર્ણ સ્નાનજલ તુલ્ય હોવાથી શ્રીવલ્લભે તેનો અંગીકાર ન કર્યો."

૭ સાંપ્રદાયિક પુરાતત્ત્વવેત્તા શું કહે છે ?

પુષ્ટિમાર્ગના મહાન્ અભ્યાસી અને ગ્રંથપ્રકટકર્તા તેમજ વિશ્વવિદ્યાલયનું વેદાંતપારિતોષિક મેળવનાર ઇતિહાસજ્ઞ તથા પુરાતત્ત્વવેત્તા સદ્‌ગત સાક્ષર શ્રીયુત તેલીવાલા એક અંગ્રેજી ભાષણમાં કહે છે કે:—

૨૦. "વિદ્યાનગરના રાજા કૃષ્ણદેવે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને કનકાભિષેક કરીને ભારતવર્ષના તે સમયના મુખ્ય આચાર્યશ્રીનું પદ સમર્પ્યું."

આ ઉપરાંત તેઓ રશ્મિનામક શ્રીમદણુભાષ્યની 'પ્રકાશ' નામની ટીકાની ટીકા પ્રકટ કરતાં, શ્રીમદાચાર્યશ્રીનું અંગ્રેજીમાં જીવનચરિત્ર લખતાં એજ હકીકત દર્શાવે છે.

તે ઉપરાંત 'સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથ'ની અંગ્રેજી પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે:—

"ગમે તેમ હો, પણ એટલું તો નિ:સંશય છે કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કૃષ્ણદેવરાય, વ્યાસતીર્થ અને તત્ત્વચિન્તકોના મન ઉપર અતીવ પ્રબલ છાપ પાડી હતી. આ અધિવેશનના અંતમાં કૃષ્ણદેવરાયે શતમણ સુવર્ણથી આચાર્યશ્રીનો કનકાભિષેક કર્યો, પરંતુ એવું કહેવાય છે કે આચાર્યજીએ આ સુવર્ણનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને ત્યાંથી આગળ પ્રયાણ કરવાની તૈયારી કરી. શ્રીમદાચાર્યચરણના આવા પ્રકારના ત્યાગથી ત્યાં ઉપસ્થિત થયેલા સર્વ કોઇને તેમને માટે માનની લાગણી વૃદ્ધિ પામી. માધ્વ વ્યાસતીર્થે તો પોતાની પાછળ પોતાના મઠના આધપતિ થવાને આપશ્રીને વિનતિ પણ કરી. વ્યાસતીર્થે કૃષ્ણદેવરાયની સાથે પુનઃ શ્રીમદાચાર્યચરણની પાસે જઇને અમૂલ્ય વસ્તુઓની ભેટ કરી. એવું કહેવાય છે કે આ બધી ભેટમાંથી શ્રીમદ્‌આચાર્યજીએ હીરા, પન્નાદિથી જડિત એક સુવર્ણ મેખલા તૈયાર કરાવી વિજયનગરના વિઠ્ઠલ સ્વામીના મંદિરમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશને સમર્પણ કરી, અંતમાં એમ લાગે છે કે આચાર્યશ્રી સ્વયં અદ્વૈતી હોવાથી દ્વૈતી વ્યાસતીર્થની વિનંતિ ન સ્વીકારી શકયા. પરંતુ તે સમયથી તેઓશ્રીની એક મહાન્ આચાર્ય તરીકે ગણના થવા લાગી.

તમે માત્ર વ્યાસયોગિચરિતમ્ કે જે વિશ્વસનીય મનાતું નથી તેજ ફક્ત એકજ ગ્રંથ સામે દૃષ્ટિ કરી મીટ માંડી રહ્યા છો પણ આજુબાજુ નજર ફેરવતાજ નથી. વેણુનાદ માસિક વર્ષ ૨ નું અંક ૬-૭ પૃ૯ ૧૪૨-૧૪૩ વાંચો તો જરા શ્રી. તેલીવાળા શું કહે છે ?

"દક્ષિણમાં વિદ્યાનગરમાં કૃષ્ણદેવરાજાને ત્યાં વૈષ્ણવમાર્ગીઓ અને માયાવાદીઓ વગેરે બહુવાદીઓ વાદ કરવાને મળ્યા હતા. તેમાં કોઇનો જય પરાજય ન થયો તેથી રાજાને ખેદ થયો. આ સમયે આચાર્યશ્રી ત્યાં પધાર્યા. વેદશાસ્ત્ર વગેરેની યુક્તિઓથી સર્વ વિદ્વાનોનો પરાજય કર્યો. ત્યારે સર્વસામર્થ્યથી સંયુક્ત શ્રીવલ્લભાધીશને રાજાએ કનકાભિષેક કરાવ્યો અને એ દ્રવ્યનો સ્વીકાર કરવાનું રાજાએ કહ્યું ત્યારે આપશ્રીએ સ્નાનનું ઉચ્છિષ્ટ દ્રવ્ય અગ્રાહ્ય છે એમ કહેતાં રાજાએ ફરીથી બહુ દ્રવ્ય નિવેદન કર્યું. તેમાંથી પ્રભુએ સાત હેમમુદ્રા સ્વીકારી" વગેરે.

૨૨. શ્રીવલ્લભચરિત્ર—મર્હુમ રા. બ. લલ્લુભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસ પારેખ, સ્મૉલકૉઝ કોર્ટના જડ્જ હતા. તેમણે ઘણા ગ્રંથો ગુજરાતી ભાષામાં લખ્યા છે. સંપ્રદાયના ઉત્તમોત્તમ ગ્રંથો તથા સિદ્ધાંતો સરલ ગુજરાતી ભાષામાં લખવાનું પ્રારંભિક માન એજ મર્હુમ ગૃહસ્થને ઘટે છે. એમણે ઘણો પ્રયાસ કરીને શ્રીવલ્લભચરિત્ર એક ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ લખેલું છે. તેમાં તેઓ લખે છે કે:—

"તે પછી પુરોહિત અને જોષીએ કહ્યું કે કનકાભિષેકનો સમય છે, તેથી રાજાની આજ્ઞાથી પુરોહિત અને ઉપાધ્યાયે આચાર્યશ્રીને જ્યાં કનકાભિષેક માટે મંડપ રચ્યું હતું ત્યાં એક સુંદર પાટ ઉપર પધરાવ્યા. તે વખતે રાજા અને બીજા આચાર્યો આચાર્યશ્રીને વિંટાઇ ઉભા. તે પછી દૈવી તેજવાળા વૈષ્ણવ બ્રાહ્મણો અને શંભુ આદિ શિષ્યોને નવીન રાજવિભૂતિઓ અને દેવ વિભૂતિઓ કૃષ્ણદેવ રાજાએ આપીને આચાર્યશ્રીનું પૂજન કરાવવાનો સંકલ્પ કરાવવાનું પોતાના પુરોહિતને કહ્યું. તેથી પુરોહિતે પ્રથમ અભિષેકનો સંકલ્પ કરાવ્યો; પછી રાજાએ પાદ્ય, અર્ઘ્ય આચમન આદિ કરાવીને વિધિપુરઃસર તીર્થોમાંથી આણેલા જળથી મહાભિષેક અને સામ્રાજ્યાભિષેક મંત્રો વડે ઋત્વિજ અને પુરોહિતની સાથે આચાર્યશ્રીને અભિષેક કર્યો."

૨૩. કલકત્તામાં મળેલી સર્વ ધર્મની પરિષદ—ઈ. સ. ૧૯૦૯ (સંવત ૧૯૬૫) માં આર્યાવર્તના સર્વ ધર્મોની પરિષદ કલકત્તા ખાતે મળી. તે વખતે સ્વ. રા. બ. લલ્લુભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસ પારેખ જેઓ અમદાવાદ સ્મૉલકૉઝ કોર્ટના માજી જડ્જ તથા મહાન્ તત્ત્વવેત્તા હતા. પોતે એ પરિષદમાં ગયેલા ત્યાં તેમણે "શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું જીવન અને તેમનો તત્ત્વબોધ" એ વિષય ઉપર અંગ્રેજીમાં વ્યાખ્યાન આપેલું છે.

૨૪. શ્રીગોકુલેશજીનું જીવન ચરિત્ર—(લેખક-મગનલાલ શાસ્ત્રી ગાંધી B. A. પ્રકાશક-લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેસાઈ.) આ લેખકે પોતે શ્રીગોકુલનાથજીનું જીવન ચરિત્ર અત્યાર સુધી કોઇ પણ ઠેકાણે લખાયું નથી તેથી ભગીરથ પ્રયત્ને લેખક અને પ્રકાશકે ઘણો શ્રમ કરીને શોધ કરી છપાવ્યું છે. શોધખોળમાં શ્રીગોકુલેશજીના અનન્ય ભક્તો ભરૂચી વૈષ્ણવ સમાજ પાસેથી પ્રાચીન ગ્રન્થો મેળવી તે ઉપરથી સદરહુ ગ્રન્થ બનાવ્યો છે તેમાં લેખક જણાવે છે કે:—

"આ વખતે આચાર્યશ્રીએ વૈષ્ણવ ધર્મનું રક્ષણ કર્યું અને વાદમાં વેદવિરુદ્ધ તથા વેદનું ખરું સ્વરૂપ નહિ સમજનાર સર્વ ધર્મોનો પરાજય કરી એતન્માર્ગની જયપતાકા ઉડાવી. તે સભામાં આવેલા વાદીઓ સાથે શ્રીઆચાર્યજીએ લગભગ ૨૭ દિવસ સુધી વાદ કર્યો અને તે દ્વારા પોતાનું અપરિમિત શાસ્ત્રજ્ઞાન જાહેર કર્યું રાજા કૃષ્ણદેવ શરણે આવ્યો ને તેણે તેઓને કનકાભિષેક કરાવ્યો."

छेवटे नगुंणु भक्तिमार्गनुं मंडन कर्युं. त्यारपछी कृष्णदेवराजाए सोनाना पुष्पोथी अने जळथी स्नान करावीने राजाए विनति करी के आ द्रव्य अंगीकार करो त्यारे आपश्रीए कह्युं के आ स्नाननुं जल छे तेथी हमोने खपे नहि. ते द्रव्य ब्राह्मणोने व्हेंची आपो. ते प्रमाणे राजाए कर्युं. अने आपनो सेवक बनावो एवी विनति करी. ते प्रमाणे सेवक बनाव्यो. भेटमां सुवर्णना थाळमां सुवर्णनी महोरो मुकी तेमांथी फक्त ७ सोना महोर दैवी होवाथी तेनो अंगीकार करीने बाकीनी महोरोने ब्राह्मणोने वहेंची आपवा आज्ञा करी त्यार पछी पंढरपुर श्रीविठ्ठला रुख्माईनी यात्राए पधार्या.

२७. **श्रीमद्वल्लभाचार्यजन्मचरित्र**—लेखकः-संप्रदायना प्राचीन ग्रंथोनी शोध करी प्रसिद्ध करनार श्रीयुत स्व. गोरधनदास लक्ष्मीदास. सौथी पहेलां श्रीवल्लभाचार्यजीना जीवन चरित्र संबंधमां कोई लेख प्रसिद्ध नही थयेलो तेथी तेमणे शोध करी उपर्युक्त ग्रन्थ जेवो छे ते सं. १९५४ मां छपाव्यो छे. तेमां तेओ लखे छेः—

"बीजे दिवसे प्रातःकाळे राजाए घणा हर्षथी प्रणाम करीने जळथी कंचनस्नान (कनकाभिषेक) कराव्युं ने ते द्रव्य तेमने आपवा मांड्युं. त्यारे तेमणे ना पाडी. पछी राजाए मोहरोनो एक थाळ भेट कर्यो तेमांथी दैवी द्रव्यनी सात मोहोरो हती ते आपश्रीए लीधी अने ते महोरोनां श्रीनाथजीने नूपुर कराव्यां छे. आपश्री त्यांथी आगळ यात्रार्थे पधार्या."

२८. **श्रीमदाचार्यचरित्र**—मुंबाईमां रा. सा. शेठ खीमजी कुंवरजी जे. पी. तरफथी नीकळता श्रीसुबोधिनीजी मासिकना ग्राहकोने भेटमां मळेलुं पुस्तक. बनारसमां गोपालमंदिरमां श्री. गो. श्रीगिरिधरलालजीना प्रमुखपणा नीचे थयेली सभामां अपायेलां व्याख्याननो सार—

आपने सुना की विद्यानगर के कृष्णदेवराजाने धर्मसभा एकत्र की है जीसमें समस्त धर्म [illegible] निमन्त्रित कीया है और जीसका शास्त्रार्थद्वारा जय होगा उसीका स्वयं अनुयायी भी होना चाहते हैं । आप वहां पधारे और शास्त्रार्थ में जय सम्पादन कीया । आपने वेदादि शास्त्रोंके प्रमाणद्वारा ब्रह्मवाद शुद्धाद्वैत वादका प्रतिपादन कीया । वहां पर उपस्थित समस्त सम्प्रदायके आचार्योंने आपका विजय स्वीकार कीया और कृष्णदेव राजा समेत सभी पंडितोंने आपको निम्न आचार्यकी पदवी प्रदान की.

"श्रीवेदव्यासविष्णुस्वामि सम्प्रदाय समुद्धार संभृत श्रीपुरुषोत्तम वदनावतार सर्वाम्नाय सञ्चार वैष्णवाम्नायप्राचुर्य प्रकार श्रीबिल्वमंगलार्पित सम्राजासनाखंडभूमंडलाचार्य वर्य जगद्गुरु महाप्रभु श्रीमदाचार्याः ॥

और राजा कृष्णदेव शरणागत हुआ । राजाने कनकाभिषेक कीया और बहुत भेट धरी परन्तु निरपेक्ष आचार्यचरणने केवल श्रीठाकुरजीके लीये ७ मुद्रायें स्वीकार कर अन्य द्रव्यको बंटवा दीया, ध्यान दीजिए की इससे अधिक निरपेक्षत्व क्या हो सकता है ?

२९. **वैष्णव मासिक राजकोट**—(तंत्री-आणंदजी वेलजी परमार) पोते ज्ञातिये मोची हता तेओ चुस्त मरजादी वैष्णव हता. संप्रदायमां सहुथी पहेलां एओ मासिकपत्र कहाडता हता. तेओ पोताना पत्रमां जणावे छे केः—विद्यानगरमां कृष्णदेव राजाए वैदिक सिद्धांतनो निर्णय कराववा अग्रगण्यना शांकरमतिवर नृगंदमति, माध्व

આવતી કાલે શ્રીમહાપ્રભુજીને કનકાભિષેક કરવાનો ઉત્સવ કરવો છે માટે નગરમાં ડંકો વગડાવીને પ્રજાને સૂચના આપો કે સહુ લોકો પોતપોતાના ઘરના દ્વાર ઉપર કેળના સ્થંભોનું તોરણોનું, ધ્વજાઓનું અને મંગળકળશોનું સ્થાપન કરે. રાજમાર્ગમાં પણ એવાજ પ્રકારની રચના કરાવવી. આ ઉપરથી રાજકીય લોકોએ નગરમાં સૂચના આપતાં તે પ્રમાણેજ નગરને શણગારવામાં આવ્યું. કૃષ્ણદેવ રાજાએ પ્રાતઃકાળમાં ઉઠી નિત્યનિયમ પોહોંચી લઈ ઉત્તમ વસ્ત્રોને તથા ઉત્તમ અલંકારોને ધારણ કરી બ્રાહ્મણમંડળીને તથા મંત્રી આદિ લોકોને સાથે લઈ રાજવૈભવના ભપકાથી શ્રીમહાપ્રભુજીની પાસે જઇ કનકાભિષેકની વિનંતિ કરીને તેમને પધરાવી ગયો. શ્રીમહાપ્રભુજીને પ્રથમ કનકાભિષેકની શાળામાં બિરાજમાન કરી પછી સો ભાર સોનાની પાટ ઉપર પધરાવી સહસ્ર છિદ્રથી સુશોભિત કરેલા સુવર્ણના પાત્રમાં અભિષેકનું જળ ભરીને કૃષ્ણદેવ રાજાએ શ્રીમહાપ્રભુજી ઉપર અભિષેક કર્યો. તે સમયે બ્રાહ્મણો ચારે વેદના મંત્રો ભણવા લાગ્યા, સ્ત્રીઓ મંગળ ગાયન કરવા લાગી, સઘળા પ્રકારના વાજીંત્રો વાગવા લાગ્યાં અને સર્વે લોકો 'જય જય' શબ્દ બોલવા લાગ્યા. આ પ્રમાણે અભિષેક કરી દિવ્ય વસ્ત્રોનું તથા દિવ્ય અલંકારોનું ધારણ કરાવી કૃષ્ણદેવ રાજાએ શ્રીમહાપ્રભુજીને જુદાં જુદાં આચાર્યતિલક કર્યાં. આ સમયે શ્રીમહાપ્રભુજીનું 'વલ્લભાચાર્ય' એ નામ પ્રગટ થયું.

૩૪. **શ્રીરામાનંદી પંડિત શું કહે છે?**—શ્રીરામાનંદ સંપ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન અને વૈષ્ણવ તથા સત્યાગ્રહી દેશભક્ત પોતાના 'સાધુસર્વસ્વ' નામના સાપ્તાહિક પત્રના કુંભાંકમાં લખે છે કેઃ—

બાલાજીકા દર્શન કરકે આપ વિદ્યાનગર પહુંચે. વિદ્યાનગરકે રાજા કૃષ્ણદેવકે દરબારમેં શૈવ ઔર વૈષ્ણવોમેં એક જબરદસ્ત શાસ્ત્રાર્થ હુઆ. શાસ્ત્રાર્થમેં વલ્લભને શૈવોકો બુરી તરહ પરાસ્ત કિયા ઔર વૈષ્ણવ ધર્મકી ધાક જમાઈ. વહીંસે વલ્લભ 'આચાર્ય' પદસે વિભૂષિત હુએ."

૩૫. **"ગુજરાતી" પત્રના આદ્યતંત્રી શું કહે છે?**—ગુજરાતી સાહિત્ય સમૃદ્ધિમાં અદ્વિતીય ફાળો અર્પનાર સ્વર્ગસ્થ તંત્રી સાક્ષર ઇચ્છારામ સૂર્યરામ દેસાઇ શ્રીભાગવતની પ્રસ્તાવનામાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનું જીવનચરિત્ર લખતાં લખે છે કેઃ—

"મહારાજા શ્રીકૃષ્ણદેવ વિદ્વાનોની સભામાં આવ્યા, અને ધર્મવાદીઓનું પરસ્પર વાદયુદ્ધ શરૂ થયું છે, એટલામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પણ સભામાં આવ્યા. તેમણે પણ શાસ્ત્રચર્ચામાં ભાગ લીધો. ભારે વાદ ૨૮ દિવસ સુધી થયો. ખંડન મંડન થયાં....શ્રીકૃષ્ણ દેવરાજા શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વાદશૈલી તેમજ તેમની વિદ્વત્તા ઉપર **મોહિત થયો અને તેમનો સેવક થયો.** અને જે સિંહાસન માટે માયાવાદીઓ તલ્પી રહ્યા હતા તે સિંહાસન ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્ય બિરાજ્યા. પછી ચારે સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તેમને તિલક કરી શ્રીવિષ્ણુસ્વામીની ગાદીએ બેસાડી આચાર્ય પદે સ્થાપ્યા."

ઉપરની પ્રસ્તાવનાને હાલના તંત્રી રા. રા. નટવરલાલ ઇ. સૂ. દેસાઇએ પણ મંજુર રાખી છે.

૩૬. **બે વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોનો અભિપ્રાય**—મહેતા ભાઇશંકર તથા ઉપાધ્યાય કુંવરજીએ સં. ૧૯૨૮ માં છપાવેલા 'વૈષ્ણવધર્મપ્રકાશ' ગ્રંથમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છેઃ—

ત્યારપછી પ્રાતઃકાલે શ્રીમહાપ્રભુજી, રાજા કૃષ્ણદેવની સભામાં ગયા. ત્યારે તેણે ઘણા હર્ષથી પ્રણામ કરીને જલમાં શતમણ સુવર્ણ નાંખીને તે જલથી તેમને **કંચનસ્નાન** કરાવ્યું."

૩૭. શ્રીસુરતની શ્રીબાલકૃષ્ણ સેવાસમાજ તરફથી નીકળેલી પત્રિકામાં લખે છે કેઃ—

અનેરો દિવ્ય પ્રકાશ પ્રસરાવનાર જો કોઈ હોય તો ભક્તિમાર્ગના છેલ્લા મહાન્ આચાર્ય શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીજ છે, એમ હિન્દનો ઇતિહાસ કહે છે. તર્ક અને યુક્તિઓના આંદોલનથી કઠોર બનેલાં હૃદયોને ઉપનિષદ્રૂપ સુધાના સેચનથી કોમલ બનાવીને તર્કયુક્તિના મોહથી છોડાવનાર તરીકે શ્રીમદ્-વલ્લભાચાર્યજીનું પુનિત નામ આખા જગતના ઇતિહાસમાં યાદગાર રહી જશે. જગતને મિથ્યા માનવાના મૂળ રહસ્યને છોડીને, પ્રભુસ્વરૂપ આ જગતને મિથ્યા માનીને ગૃહસ્થાશ્રમનો ઉચ્છેદ કરવાને પ્રવૃત્ત થયેલા અવૈદિક પથો, નીતિ, ધર્મ, વર્ણાશ્રમ વગેરેથી ચાતરાઇને કેવલ પાપમય બનેલા વામમાર્ગાદિ નાસ્તિકમતોના વળગાડથી દૈવી સૃષ્ટિને બચાવનાર તરીકે શ્રી વલ્લભપ્રભુનું નામ ભારતવાસીઓ કદી નહિજ ભૂલે. વેદાદિપ્રસ્થાનોની પ્રતિષ્ઠાનું પુનઃ સ્થાપન કરનારા, જ્ઞાનીઓને અનન્ય ભક્તિમાર્ગની દીક્ષા આપનારા, ભકતોને પ્રભુરસમાં મસ્ત બનાવી દેનાર શ્રીવલ્લભા-ધીશ્વરની વધુ ઓળખાણ શી હોય? લા બે વસ્ત્રોથીજ પોતાના દિવ્ય દેહને આચ્છાદિત કરીને તીર્થાટનના અને ત્યાગના વાતાવરણથી પૂર્ણ ગૃહસ્થાશ્રમ અને વર્ણાશ્રમધર્મરૂપ આર્યસંસ્કૃતિને આખા દેશમાં જળહળતી રાખનારા ચિત્રમાં બિરાજતા શ્રીવલ્લભપ્રભુ પાસે કયા પ્રેક્ષકનું શિર નહિ નમે? શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો આથી વધુ પરિચય શો હોય? તેથી જ હું પ્રસ્તુત વિષયને અનુસરૂં છું.

ચારસો વર્ષ પહેલાંનું ચિત્ર.

આ ચિત્ર ચારસો વર્ષ પહેલાંની ભારતીય ચિત્રકલાનો આદર્શ નમુનો છે વસ્તુસ્થિતિનું ચિત્ર ખેંચતી આજકાલની ફોટોગ્રાફી કરતાં આ હાથની ચિત્રકલા કોઇ પણ રીતે ઉતરતી નથી એટલુંજ નહિ પણ હાલની ચિત્રકલાને પણ ઝાંખી કરી શકે છે. આ ચિત્ર અત્યારે પણ અજમેર પાસે આવેલા કૃષ્ણગઢ રાજ્યમાં બિરાજે છે અને તેની સેવા પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણનાં સ્વરૂપની જેમ કૃષ્ણગઢના રાજવીઓ કરી રહ્યા છે. આ ચિત્ર અને તેને લગતો ઇતિહાસ જાણવા જેવો છે, એટલું નહિ પણ હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવો પણ છે. આ ઇતિહાસ પુષ્ટિમાર્ગીય સાંપ્રદાયિક પુસ્તકોમાં નહિ મળે. આ ઇતિહાસ કોઈ પુષ્ટિમાર્ગીય ભકતોએ આલેખી નાંખ્યો નથી. આ ચિત્રનો ઇતિહાસ તો શ્રીકૃષ્ણગઢના મહારાજાઓના જીવનચરિત્રોમાં ભળી ગયલો છે અને તેમાં કોહીનૂરની જેમ પ્રકાશી રહ્યો છે. શ્રીકૃષ્ણગઢ રાજ્ય તરફથી બહાર પાડેલા ઐતિહાસિક કાવ્યમય પુસ્તકમાંથી આ ઇતિહાસ હું 'ગુજરાતી પંચ' ના વાચકો પાસે રજુ કરૂં છું. આમાં ઐતિહાસિક વસ્તુસ્થિતિ વિના બીજું કંઈ પણ માલુમ પડશે નહિ.

આચાર્યશ્રીના આ ઇતિહાસ-મશહૂર ચિત્રનો શુદ્ધ ઇતિહાસ શ્રીકૃષ્ણગઢના ભૂતપૂર્વ મહારાજા શ્રીસાવંતસિંહજીએ કવિતાના રૂપમાં લખીને ઇતિહાસરસિકોને ખચિતજ ઉપકૃત કર્યા છે. મહારાજા સાવંતસિંહજીનો જન્મ સં. ૧૭૫૬ માં થયો

હતો. તેઓ એક શૂરવીર ક્ષત્રિય મહારાજા હતા. પંદર સોળ વર્ષની ઉમરમાં તો તેઓ મહાયુદ્ધમાં પણ સામેલ થઈને પોતાના બાહુબળનો પરિચય કરાવી શક્યા હતા. મહારાજા સાવંતસિંહજી શૂરવીર હોવા સાથે એક ઉત્તમ કોટિના પ્રભુભક્ત હતા. ભક્તિરસથી એમની કવિત્વશક્તિનો વિકાસ પણ અનુપમ રીતે થયો હતો. તેઓ વ્રજભાષાના એક મહાન્ કવિ હતા. તેમણે વ્રજભાષામાં પ્રભુભક્તિ વિષે લગભગ ૫૦ ગ્રંથો બનાવ્યા છે. હજુ પણ એમનું સુપ્રસિદ્ધ સાહિત્ય કૃષ્ણગઢમાં મોજૂદ છે. તેઓ સં. ૧૮૦૫ માં ગાદીનશીન થયા. તે પછી રાજકાજમાં તેમનું મન લાગ્યું નહિ. ભક્તહૃદય એ પ્રપંચોમાં કદી પડેજ નહિ. તેઓ તો સં. ૧૮૦૮ માં શ્રીવૃન્દાવન પધાર્યા અને વિરક્ત ભક્તના દેશમાં રહીને કેવળ વ્રજપતિ શ્રીકૃષ્ણના ગુણગાનમાં મસ્ત બન્યા. આ વખતે તેઓએ પોતાનું નામ નાગરીદાસજી રાખ્યું હતું. એમણે રચેલા ગ્રંથોનો સંગ્રહ નાગરસમુચ્ચય એ નામથી એમના વંશજ મહારાજા શ્રીશાર્દૂલસિંહજીએ પ્રકટ કરાવ્યો છે. એજ સંગ્રહમાં આચાર્યશ્રીનાં આ ઐતિહાસિક ચિત્રનો સુંદર ચિતાર છે.

આચાર્યશ્રી પોતાના પવિત્ર પાદારવિંદથી આ પૃથ્વીને જે વખતે સનાથ કરી રહ્યા હતા તે વખતે દીલ્હીની ગાદી ઉપર પ્રખ્યાત બાદશાહ સિકંદર લોદી હતો. તે ધર્માંધ અને ક્રૂર હતો. પોતાનો મજહબ સ્થાપવાની ધૂનમાં તેણે ભારતવાસીઓ પર સાધારણ અત્યાચારો નહોતા કર્યા. હિંદુ ધર્મ સાથે દુશ્મનાવટ બાંધી લેનાર એ બાદશાહ હિંદુધર્મના આચાર્યો સાથે ક્યાંથી સદ્‌ભાવના સાધી શકે? તોપણ જગદ્‌ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહાપ્રભુજીની કીર્તિ તેના કાન સુધી પહોંચી ગઈ. આચાર્યશ્રીના સદ્‌ગુણો અને પ્રભુતાથી પરિચિત થતાંની સાથે સિકંદર આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરવાને લલચાયો. એક વખતે ગુપ્ત રીતે, કંઇ પણ ઠાઠમાઠ વિના, ચોક્કસ સરદારો સાથે તે આચાર્યશ્રીનાં દર્શન માટે ગયો. શ્રીવલ્લભપ્રભુનાં દર્શન કરતાંની સાથેજ તે મુગ્ધ બન્યો અને તેનું બાદશાહી તાજ એઓશ્રીના ચરણારવિન્દમાં ઝુકી ગયું. આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપદર્શનથી તો તેને મોહિની લાગી ગઇ! ઘેર આવીને તુરતજ પોતાના મુલ્કમશહુર હોનહાર નામક ચિત્રકારને એ મહાપુરુષનું ચિત્ર વ્રજમાં જઈ આલેખી લેવાનો હુકમ કર્યો. આ વાતનો ઉલ્લેખ કરતાં મહારાજા સાવંતસિંહજી લખે છે કે:—

(દોહા) શ્રીલક્ષ્મણ ભટ ગૃહ ભયે, શ્રીવલ્લભ દ્વિજરાજ[1];
પનરાસેર[2] પૈંતીસપે, ભક્ત ઉધારને કાજ.
શાહ સિકંદર લોદી સો[3], દીલ્હીપતિ બડભાગ.[4]
પ્રભુતા[5] સુનિ લખિ હિય ભયો, સરસ શ્રવન અનુરાગ.

૧ દ્વિજરાજ—બ્રાહ્મણોમાં શ્રેષ્ઠ, ઉચ્ચ કુલીન બ્રાહ્મણ. ૨ સં. ૧૫૩૫ ની સાલમાં આચાર્યશ્રીનું પ્રાકટ્ય છે. ૩ બોન્ચ્યો. ૪ ભાગ્યશાળી. ૫ આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા સાંભળીને, જાણીને, હૃદયમાં એઓશ્રીના ગુણો સાંભળવા માટે પ્રેમ ઉત્પન્ન થયો.

ભયો શ્રવન અનુરાગ તેં, દર્શનકે અનુરાગ.
તવ દીલ્હીપતિ ચિત ભઇ, ચિત્ર કરાવન લાગ;
'હોનહાર' નામા હુતો, ચતુર સુસબ્બર[1] વિજ્ઞ;
તબ તાકો હુકમ દિયો, દીલ્હીપતિ સુઅભિજ્ઞ.

ઉપરના દોહરા સ્પષ્ટ છે. દીલ્હીપતિ સિકંદર શાહે આચાર્યશ્રીનું ચિત્ર બનાવવા માટે હોનહાર નામના ચિતારાને હુકમ કર્યો એવો ઉલ્લેખ ઉપરના દોહરામાં છે, તો આપણે હવે હોનહાર કોણ હતો એનો વિચાર કરીશું. સિંકદરલોદીની પેઠે હોનહારનું નામ પણ ઇતિહાસમાં લખાઈ ગયું છે. એ એક મહાન્ ચિત્રકાર હતો. તે વખતે ભારતવર્ષમાં હોનહાર બીનહરીફ હતો. એ કેવો મહાન્ ચિત્રકાર હતો તેનું વર્ણન અચ્છી તરેહથી કરવામાં આવ્યું છે. હોનહારે ચિત્રકલાનો સંપૂર્ણ અભ્યાસ કરીને પોતાની કળાની કદર થવા માટે બાદશાહ સિકંદર લોદીની પાસે હાજરી આપી. બાદશાહ આગળ પોતાની કલાનું નિવેદન કર્યું. તેમાં એક અદ્ભુત કળા બતાવી. પહેલાં તો તેણે એક લાંબી પાઘડી મંગાવી લીધી. એ પાઘડીના બે છેડા બે માણસોના હાથમાં આપીને, પાઘડીની લંબાઇને અંતરે તે બન્ને માણસોને ઉભા રાખી દીધા. હોનહાર પોતે તો એક પવનવેગી અશ્વ ઉપર બેસી ગયો અને હાથમાં આંબલીનો કોયલો રાખ્યો. તે પછી ઘોડાને પૂર વેગમાં દોડાવ્યો અને હાથમાંના આંબલીના કોયલાથી પેલી પાઘડી પર એક લીંટી ખેંચી કાઢી. પાઘડીનો છેડો પૂરો થતાં ઘોડાનો વેગ રોકીને પોતે બાદશાહ પાસે આવ્યો ને પેલી પાઘડી લઇને બાદશાહને બતાવી. તેમાં એ ખુબી કે, પાઘડીમાં ઘણાં તાંતણાઓ હતા, પણ તેમાંનો એકજ તાંતણો એક છેડાથી તે બીજા છેડા સુધી કાળો થયેલો હતો. દોડતે ઘોડે ચઢીને હાથ સ્થિર રાખીને, બારીક તાર પર છેલ્લે સુધી એક સરખી પીંછી ફેરવવી એ કંઇ સાધારણ કલા નજ ગણાય. હોનહારના આ મહાન્ ગુણની બાદશાહે કદર કરી અને તેને પોતાના ચિત્રકાર તરીકે પોતાની પાસે રાખ્યો. મહારાજા સાવંતસિંહજી લખે છે કેઃ—

(દોહા) હોનહારકો કહત હોં, અબે સકલ ઇતિહાસ;
તાકે સુનતહી હોત હે, ચતુરનિ ચિત્ત હુલાસ.
ચિત્ર લિખનકે ઇલમકોં, સીખ સુબુદ્ધિ અથાહ;
ગયો હાજરી દેનકો, દીલ્હીપતિ દરગાહ.
હોનહાર તબ યોં કરી, ઇક ઉષ્ણીષ[2] મંગાય
દ્વે નર કો હાડે કરે, ચિહ્નાકો[3] પકરાય.
હોનહાર હયપેં ચઢયો, કરમેં લઈ જુ [4]ગાલ;
ઘોરાકોં રપટાયકે, ખેંચી રેખ રસાલ.

---

૧. ચિત્રકાર. ૨. ઉષ્ણીષ-પાઘડી. ૩. છેડાને. ૪. આંબલીનો કોયલો.

વહે ઉષ્ણીષ મંગાયકે, હોનહાર કિય અર્જ;
ચાકો સૂત્ર કઢાયકે, લખહુ રેખકો મર્જ.
દીલ્લીપતિ ઉષ્ણીષકો, દેખ્યો સૂત્ર કઢાય;
રેખ એક વહી સૂત્રપેં, આદિ અંત સરસાય.
યા ગુનકો લખિકે બહુત, દિયો દાન સન્માન;
હોનહાર સુ ખિતાબ દેં, ગુનકો કિયો બખાન.

હોનહારની ચિત્રકળાનો આ પરિચય છે. દોહરા સ્પષ્ટ હોવાથી તે પર વિવેચન કરવાની કંઇ અગત્ય જણાતી નથી.

ચિત્રકલાના આદર્શને પહોંચીને બાદશાહી માન પ્રાપ્ત કર્યા પછી હોનહારના અભિમાનનો પાર રહે ખરો કે? દિવસે દિવસે બાદશાહને પોતાની કળાથી મુગ્ધ બનાવીને, ઉચ્ચ પદવીને પ્રાપ્ત કરનાર હોનહારના હૃદયમાં મગરૂબી સમાતી ન હતી. તેટલામાંજ બાદશાહનો હુકમ થયો કે, "શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીની એક સુંદર છબી તૈયાર કર." મહારાજા સાવંતસિંહજી એક દોહામાં લખે છે કે—

શ્રીવલ્લભ આચાર્યકો, લાવહુ ચિત્ર બનાય.
લેઉ યથાર્થ મિલાયકેં, બ્રજમંડલમેં જાય.

હોનહારના મનથી તો કાર્ય મુશ્કીલ હતુંજ નહિ. એ તો એકદમ વ્રજમાં આવ્યો અને આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરીને ચિત્ર આલેખવા લાગ્યો. જેનું વર્ણન—

હોનહાર કરતારસોં, ગર્વ ધારિ વ્રજ જાય;
શ્રીવલ્લભ મહારાજકે, સુંદર દર્શન પાય.

પણ હોનહારને ખબર નહોતી કે, આજે હું કોની સાથે કામ લઇ રહ્યો છું? પ્રભુની સાથે ગર્વ ક્યાંસુધી ટકવાનો હતો? શ્રીવલ્લભપ્રભુનાં સુંદર દર્શન કરીને હોનહારે પીંછી ચલાવીને એક ચત્ર તૈયાર કરી નાંખ્યું. એ ચિત્ર લઇને આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપ સાથે સરખામણી કરી, તો જણાયું કે તેની બધી મહેનત છુટી પડી હતી. તુરત બીજી વાર ચિત્ર લીધું. તે પણ સરખાવતાં તદ્દન નકામું લાગ્યું. એનું વર્ણન નીચેના દોહરામાં મહારાજા આપે છેઃ—

ચિત્ર બનાયો ચિત્ત દે, અતિઆતુરતા ધાર;
મિલ્યો કછુ નાહીં તબે, ફેર રચ્યો ચિત્ત ધારિ;
દ્વિતીય ચિત્ર હૂ નહિ મિલત, હોનહારકે ચિત્ત;
દીલ્લીપતિકી ડહરકો, પ્રગટયો પ્રભય અમિત્ત.

બાદશાહો કેવા તુમાખી મીજાજના હતા અને એમની સજાઓ કેવી અમાનુષ હતી એ આપણે જાણીએ છીએ. હોનહારની સ્થિતિ કેવી બની હશે એની કાંઇક અટકળ આપણે આ ઉપરથી કરી શકીશું: હોનહાર પાસે બીજો કંઇ ઇલાજ ન હતો. આચાર્યશ્રીની પાસે રહેવાથી તેને એઓશ્રી માટે ઘણોજ પૂજ્યભાવ ઉત્પન્ન થઇ ચુકયો હતો. વળી આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા પણ તે અનુભવી શકયો હતો. તેથી આખરે આચાર્યશ્રીને શરણે ગયો, અને ચરણકમલમાં માથું નમાવીને દીનતાથી તેણે વિનતિ કીધી, જેનું વર્ણન નીચે મુજબ છેઃ—

તબ શ્રીવલ્લભરાજકે, ચરન વંદિ છલ છોર;
કીની વિનતિ દીન વ્હે, હોનહાર કર જોર.
દીલ્લીપતિકે હુકમતેં, હોં આયો વ્રજમાંહી;
લિખન રાવરે ચિત્રકોં, પૂરન ચિહ્ને મિલાહી.
મો મતિકે અભિમાનતેં, કીને ચિત્ર સુ દોય;
કછુ ન મિલે નિજ રૂપમેં, દેખે બહુવિધ જોય
જો નહિ મિલિહેં ચિત્ર તો, દીલ્લીપતિ તકરાર;
કરિકે પુન કરિહેં કહા, કહા જાનો તિહિં વાર ?

શુદ્ધ અંતઃકરની વિનતિથી દીનબંધુ આચાર્યશ્રીનું હૃદય દ્રવે તેમાં આશ્ચર્ય શું ? આપશ્રીને હોનહારની કફોડી સ્થિતિપર દયા આવી અને તેના જેવા ઉત્તમ ચિત્રકારની એ દશા થાય તે આપશ્રીને કેમ રુચે ? એટલે તેને નવેસરથી ચિત્ર લેવાની પોતે આજ્ઞા કરી. મહારાજ સાવંતસિંહજી લખે છે કેઃ—

દીનબંધુ કરુણાનિધિ, શ્રીવલ્લભ દ્વિજરાય;
તબ કરુણા કરિકે પ્રભુ, નિજ પ્રભુતા દરસાય.
અબ તૂ ચિત્ર બનાયકે, લેહુ જાવ ધરિ ધીર;
યહ વચનામૃત સુન મિટી, હોનહાર હિય પીર.

આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા થતાંની સાથેજ હોનહારનું દર્દ દૂર થઇ ગયું. આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા મુજબ તે ચિત્ર લેવા બેઠો.

સાયંકાલનો સમય હતો. પ્રભુને પોઢાડીને સેવામાંથી આચાર્યશ્રી બહાર પધાર્યા. નિજ મંડલી સાથે શ્રીમદ્‌ગોકુલમાંના શ્રીઠકુરાણીઘાટ ઉપર આપશ્રી બિરાજ્યા. નિજ સેવકોને પોતે શ્રીભાગવતની કથા કહી રહ્યા છે. શ્રીભાગવત જેવા મહાપ્રસ્થાન પર ભાષ્યરૂપે પોતે લખેલી શ્રીસુબોધિનીટીકાનું રહસ્ય સેવકો પાસે પોતે પ્રકટ કરી રહ્યા છે. અદ્વિતીય વિદ્વાન્ અને પરમભક્ત માધવભટ્ટ કાશ્મીરી સામે બેસીને આપશ્રીનાં વચનામૃતરૂપ શ્રીસુબોધિનીજી લખે છે, એમની પાછળ ગુરુદેવમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમના સ્વરૂપને અનુભવતા શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન નામના ક્ષત્રિય વીર હાથ જોડી બિરાજેલા છે. નિજ ગૃહાદિનો ત્યાગ કરીને શ્રીમહાચાર્યપરિચર્યાનેજ

પરમ કર્તવ્ય સમજીને સર્વોત્તમભાવે આચાર્યશ્રીનીજ પવિત્ર છાયામાં જીવન વ્યતીત કરતા મહાનુભાવી શ્રીદામોદરદાસ હરસાની આચાર્યશ્રીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કરી રહેલા છે. ઉનાળાના દિવસો છે. સંવત્ ૧૫૬૭ની સાલમાં ઉક્ત વર્ણનવાળું ચિત્ર હોનહારે લીધું, જે ચિત્ર હાલમાં શ્રીકૃષ્ણગઢમાં બિરાજે છે. કેવા સુંદર શબ્દોમાં તેનું વર્ણન મહારાજા સાવંતસિંહજી આપે છે, તે આપણે જોઇએઃ—

પાય અનવસર સમયકો, શ્રીયમુનાતટ ધામ;
કહત ભાગવતકી કથા, શ્રીસુબોધિની નામ.
તહાં ભટ માધવદાસ જુ, હાજર રહત હમેશ;
શ્રીસુબોધિની લિખત હૈં, શીઘ્ર સુશુદ્ધ વિશેષ.
કૃષ્ણદાસ[1] મેઘન જહાં, હાજર હ્વૈ કરજોર;
તીન દિવસ ઠાડો રહ્યો, પુરુષોત્તમ કે જોર.
દામોદર હરસાની જહાં, કરત દંડવત્ આય;
ગ્રીષ્મ ઋતુ કે સમયમેં, એસો સમય સુપાય.
પનરાસે સડસઠ લખો, સંવતકો અનુમાન;
સંપ્રદાયકલ્પદ્રુમસુ, પુસ્તકમાંહિ પ્રમાન.

ઉપર પ્રમાણે હોનહારે ચિત્ર લીધું. આચાર્યશ્રીની ઇચ્છાથી એ ચિત્ર લેવાયું, તેથી તેમાં બીલકુલ ફરક પડ્યો નહિ. આજની ફોટોગ્રાફી પણ ભાગ્યેજ એવું ચિત્ર લઇ શકે. ચિત્રમાં ખાસ ખુબી એ છે કે, આચાર્યશ્રી કથા કરી રહ્યા છે, એ વખતે આપના વિકાસ પામેલા મુખારવિન્દમાંની દંતપંક્તિ સ્પષ્ટ રીતે અસલ ચિત્રમાં દષ્ટિગોચર થાય છે. હોનહારે તે ચિત્ર ફરીને પાછું સરખાવી લીધું. અવયવોના બધાં ચિન્હો મેળવી લીધાં, જાણે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપનું પ્રતિબિંબજ ન હોય તેવું તે ચિત્ર બન્યું. એ ચિત્રને લઇને હોનહાર દીલ્હીપતિ પાસે આવ્યો અને તેના મુબારક હાથમાં એ ચિત્ર એણે મૂકી દીધું, ચિત્ર જોઇને સિકંદર મુગ્ધ બની ગયો. સિકંદરને આચાર્યશ્રીની પ્રભુતાનો ખ્યાલ તો હતો જ, તેથી તેઓશ્રીનું આવું સ્વરૂપ ચિત્રમાં આવેલું જોઇને તેને તાજુબી થઇ. તુરતજ તેણે હોનહારને પૂછ્યું કે; "હોનહાર! આવું સુંદર ચિત્ર તું કેમ ઉતારી શક્યો?" ત્યારે હોનહારે બધી આપવીતી કહી સંભળાવી, જે સાંભળી બાદશાહના આનંદનો અવધિ થયો. તે પછી એ ચિત્ર પોતાના ખાસ મહેલમાં બાદશાહે સ્થાપી દીધું. મહારાજા કૃષ્ણગઢનરેશ લખે છે કે—

સુની વૃત્તાંત નૃપેશ લખિ, પ્રભુહી કો અવતાર;
દઢ કરિ લીનો ચિત્તમેં, યહ વિચાર નિર્ધાર.

---

[1] શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન આચાર્યશ્રીના સેવક હતા. આચાર્યશ્રી જ્યારે બદરીનાથ પધાર્યા, ત્યારે કૃષ્ણદાસજીને કહેલું કે તમે અહીં ઉભા રહેજો. તેથી તેઓ ત્યાં ત્રણ દિન સુધી એમને એમ ઉભા રહ્યા. ગુરુદેવની આજ્ઞાના એવા પાલક જગતમાં વિરલાજ હોય છે.

નિજ ચિત્રાલયમેં ચઢે, દિયો ચિત્ર ધરવાય
દર્શન રુચિ જબ ચિત બઢે, તબહી લેત કઢાય.

એ ચિત્ર કૃષ્ણગઢમાં કેમ આવ્યું ?

હવે એ પ્રાચીન ચિત્ર કૃષ્ણગઢમાં કેમ આવ્યું એ વિષેનો ઇતિહાસ અસરકારક છે. કૃષ્ણગઢના સિંહાસનપર ભક્તરત્ન મહારાજા રૂપસિંહજી થઈ ગયા છે. આ મહારાજાનો જન્મ સંવત ૧૬૬૫ માં વૈશાખ સુદ ૧૧ ના રોજ થયો હતો. વિષ્ણુતિથિએ જન્મેલા મહારાજા પરમ વૈષ્ણવ થયા હતા. આ મહારાજા અતુલબલશાલી અને પરાક્રમી હતા. યુદ્ધકલામાં તેમની પ્રવીણતા અજબ હતી. તે વખતે દીલ્હીનું રાજતંત્ર શાહજહાંના હાથમાં હતું. શાહજહાંને તારીફ સાંભળીને મહારાજા રૂપસિંહજીને લખ્યું કે, તમે પોતે કાબુલ તરફના મુલક પર હુમલો લઈ જાઓ અને દુશ્મનોને મહાત કરો. તમારા મુખપર રજપૂતનું શુદ્ધ નૂર ચમકે છે, તો તમેજ આ કાર્ય કરી શકશો." આ શાહી ફરમાનને તાબે થઈને મહાશૂરવીર મહારાજા રૂપસિંહજી દીલ્હીપતિની ફોજના વડા સેનાધિપતિ અફસર બનીને કાબુલ પર ચડાઈ લઈ ગયા અને પોતાની લડાયક કુનેહ અને બહાદુરીથી દુશ્મનોને મહાત કરીને આખો કાબુલ દેશ તેમણે સર કરી લીધો. તે પછી તેઓ દીલ્હી આવ્યા. શાહજહાનની ખુશાલીનો પાર ન રહ્યો. તેણે ખુલ્લા દીલથી જે જોઇએ તે માગી લેવાનું રૂપસિંહજીને કહ્યું. પણ રૂપસિંહજી કંઈ દુન્યવી દૌલતને પોતાનું સર્વસ્વ માનતા ન હતા. એમના હૃદયમાં તો કોઇ અલૌકિક સંપત્તિ સમાયલી હતી. મહારાજા રૂપસિંહજી આચાર્યશ્રીના પ્રાચીન ચિત્રના ઇતિહાસથી સારી પેઠે વાકેફ હતા. એ ચિત્ર મેળવવા માટે તેઓ તલપી રહ્યા હતા. એ ચિત્ર માટે તેમની તપશ્ચર્યા અદ્વિતીય હતી. એવો અવસર તેઓ કેમ ચૂકે ? તુરતજ દીલ્હીપતિ શહાજહાંને વિનતિ કીધી કેઃ—

શ્રીવલ્લભ આચાર્યકો, હોનહારકે હાથ;
ચિત્ર કરાયો પ્રીતિકર, શાહ સિકંદર નાથ.
વહી ચિત્ર અતિ મહર કર, કર દીજે બક્ષીસ;

ઉપર મુજબ માગણી કરી. રૂપસિંહજીને ખબર હતી કે, સિકંદર લોદી પછી એ ચિત્ર–ખજાનો અકબર પાસે અને તે પછી તેના વારસ તરીકે જહાંગીર અને શાહજહાં પાસે આવ્યો હતો. એટલે રૂપસિંહજીએ પોતાનાં સર્વસ્વરૂપ એ ચિત્રની માગણી કરી. શહાજહાં તો આભોજ બની ગયો ! મહામહેનતે કાબૂલ જેવા જોરાવર દેશની જીતના બદલામાં માત્ર એક ચિત્રનીજ માગણી ! ગરીબ બિચારો શાહજહાં ! ભક્તહૃદયની પ્રેમમસ્તીને ક્યાંથી સમજી શકે ? એને શાની ખબર હોય કે; ભક્ત લોકો પોતાના પ્રેમપાત્ર પ્રભુની પાછળ ચૌદે બ્રહ્માંડને નોછાવર કરીને ફેંકી દે છે ! છતાંએ એ પ્રાચીન મહાચિત્ર થોડીક આનાકાનીની સાથે મહારાજા

રૂપસિંહજીને માથે શહાજહાંએ પધરાવી આપ્યું. મહારાજા રૂપસિંહજીને તો ત્રણે લોકના વૈભવ કરતાંએ એ ચિત્રથી વિશેષ આનંદ થયો, છતાં શહાજહાંને તૃપ્તિ થઇ નહિ. એનો તો મોટી જાગીર બક્ષવી હતી, એટલે ફરી કહ્યું કે તમે આટલું શું માગ્યું? ફરીને માગો. ત્યારે રૂપસિંહજીએ પોતે પોતાના સ્વાર્થને માટે કંઇ ન માગતાં પોતાના મામાંના દીકરા ભાઇ સુખલસિંહજીનું જેસલમીરનું રાજ્ય ખાલસા થયું હતું, તે પાછું તેમને મળે તેવું માગ્યું. બાદશાહને મહારાજાના અપૂર્વ સ્વાર્થત્યાગ અને પ્રભુભક્તિ માટે અદ્‌ભુત માન ઉદ્દભવ્યું. એ રીતે એ વિશ્વવિખ્યાત ચિત્ર શ્રીકૃષ્ણગઢમાં આવ્યું તે હજુ સુધી ત્યાંજ બિરાજે છે. શ્રીકૃષ્ણગઢના મહારાજા ઉત્તરોત્તર એવાજ વૈષ્ણવ થતા રહ્યા છે. હાલના મહારાજા પણ ચુસ્ત વૈષ્ણવ છે. અને છેલ્લા મહાયુદ્ધ વખતે તેઓ જ્યારે ફ્રાન્સમાં ગયા હતા, ત્યારે પણ પોતાના ગુરુનાં તથા પ્રભુનાં ચિત્રો પોતાની પાસેજ રાખતા હતા. તેઓ કહે છે કે, એ ચિત્રોના પ્રતાપે વિમાનો પરથી પડતાં બોંબ કે મશીનગન વગેરે મારો વાળ પણ વાંકો કરી શક્યાં નથી. પ્રભુ એ વંશમાં એવીજ વૈષ્ણવતા કાયમ સ્થાપો!

કૃષ્ણગઢમાંના એ ઐતિહાસિક ચિત્રપરથી શ્રીનાથદ્વારાના એક મશહુર ચિતારાએ એક મહિનાના લાંબા સમય પછી એક ચિત્ર તયાર કર્યું, જે હાલમાં અહીંના વૈષ્ણવ સદ્‌ગૃહસ્થ શેઠ અચાભાઇના ઘરમાં છે. એમના સત્પુત્ર શેઠ હરિદાસભાઇની ઉદારતાથી એ ચિત્રનો ફોટો લીધો છે, ને તેનો બ્લોક છાપ્યો છે.

પ્રિય વાંચક વર્ગ! ફરીને એ દિવ્ય ચિત્ર તરફ જો! એ ચિત્રના ઉપર્યુક્ત ઇતિહાસમાં હૃદયને અવગાહન કરાવી દે, એની ભાવનાનો વિચાર કરીને ભક્તિરસની દિવ્ય લહરીઓનો આનંદ લે! અને મહારાજા સાવંતસિંહજીના છેલ્લા આ છપ્પયને હૃદયમાં કોતરી રાખઃ—

શ્રીલક્ષ્મણ ભટ ગેહ પ્રભુ અવતાર લિવાયો,
શ્રીવલ્લભ આચાર્ય મહાપ્રભુ નામ કહાયો;
માયાવાદ વિખંડ ભક્તિપથ પુષ્ટિ બધાયો,
દૈવી જીવ ઉદ્ધાર હેતુ યહ માર્ગ બતાયો.
ભટ માધવ કૃષ્ણ હિ દાસ જૂ, દામોદરકોં કર સુધિર,
ધરિ વિગ્રહ રૂપ સુચિત્રમય, જયતિ જયતિ નૃપરૂપ શિર.

[શ્રીકૃષ્ણગઢના રાજવીઓના શૌર્યપૂર્ણ અને ભક્તિરસથી છલકાતાં ચરિત્ર વાંચવા હોય તો રા. રા. લલ્લુભાઇ છગનલાલ દેસાઇએ પ્રકટ કરેલા શ્રીસૂરદાસજીનું ચરિત્ર વાંચવાની સૂચના વાંચકોને હું કરીશ. આ લેખમાં પણ એજ ગ્રંથનો આધાર કેટલેક સ્થળે લીધો છે.]

પ્રકીર્ણ પ્રસંગો.

[શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના અનન્ય સેવકોએ આપશ્રીની વચનસુધાનું અહર્નિશ પાન કરીને, ભવિષ્યની વૈષ્ણવસૃષ્ટિના કલ્યાણ માટે અનહદ પ્રયાસ કરીને એ વચનામૃતો

લખી રાખ્યાં છે, જેમાંથી શ્રીવલ્લભાધીશ્વર વિષે જે કેટલીક ઐતિહાસિક આજ્ઞાઓ આપશ્રીએ કરેલી છે તે અહીં ઉતારવામાં આવે છે.

આચાર્યશ્રીના ત્રણ ભાઇઓ.

૧. એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે; શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના ત્રણ ભાઈ હતા. તેમાં એક મોટા નારાયણ અને તે પાછળથી સંન્યાસી થઇ ગયા. સંન્યસ્તાવસ્થામાં એમણે પોતાનું નામ કેશવપુરી રાખ્યું. એક વખતે કેશવપુરી સંન્યાસી પોતાના માતાજી પાસે આવ્યા અને નમસ્કાર કર્યા. સંન્યાસીએ માતાને નમસ્કાર કરવા જોઇએ એમ શાસ્ત્ર કહે છે. ત્યારે પોતાના મોટા પુત્રને સંન્યાસી તરીકે જોઇને માતાજી શ્રીયલ્લમાગારુજીને બહુ જ દુઃખ થયું. ત્યારે કેશવપુરી સંન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને દેખાડીને કહ્યું કે—'તમારા આ પુત્ર એવા છે કે બીજા પુત્રની તમને અપેક્ષા નહિ રહે. તો પણ માતા તે માતાજ કહેવાય એટલે કલેશ કરવા લાગ્યાં. વળી આચાર્યશ્રીના બીજા એક ભાઇ રામકૃષ્ણજી નામના હતા, તે મહાન્ પંડિત હતા. (એમના રચેલા ગ્રંથો હાલમાં મોજૂદ છે) તેઓ બાંધવગઢ શહેરમાં ગયા.......આ વાત સાંભળીને માતાજીને બહુ જ દુઃખ થયું.

સાર—આ વચનામૃત ઇતિહાસ પર મહાન્ પ્રકાશ પાડે છે. આચાર્યશ્રીના મોટાભાઇએ સંન્યાસ લઇ લીધો એ ઇતિહાસસિદ્ધ વાત પરથી આજકાલ કેટલાક નિંદાખોરો આચાર્યશ્રીની વ્યર્થ નિંદા કરે છે અને આચાર્યશ્રીના મોટાભાઇની વાતને શ્રીમહાપ્રભુજીનાં નિર્મલ ચરિત્રમાં ભેળવીને જેમ તેમ બકે છે.

૨. એક દિવસે મંગલાનાં દર્શન સમયે હોમઘરમાં શ્રીગોકુલનાથજી તેલગાદીએ બિરાજેલા હતા તે વખતે નિજસેવક પંચોલીજીને કહ્યું કે, "શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે પૃથ્વીપરિક્રમા કરી ત્યાર આપશ્રીની સાથે ચાર સેવક રહેતા હતા. તેઓ ભિક્ષા માગીને નિર્વાહ કરતા હતા. શ્રીઆચાર્યજીએ એ સેવકોને આજ્ઞા કરી કે, ભિક્ષા માગજો પણ કોઇને માલાતિલક બતાવશો નહિ. આપશ્રીની સાથે જે સેવકો રહેતા, તેમનાં નામ આ છેઃ-ગોવિંદ દવે, જગન્નાથ જોષી, સિકંદરપુરીના રામદાસભાઇ, અને કૃષ્ણદાસ મેઘન. આ ચાર સેવકોમાંથી વચનામૃત તો કૃષ્ણદાસ મેઘનને આપે સંભળાવ્યું છે.

સાર—માલાતિલક દેખાડીને કાંઇપણ યાચના કરવાથી ધર્મ જાય છે, અને લાભપૂજા માટે પ્રયાસ કરનારની કોટિમાં પ્રવેશ થાય છે, માટે ધર્મને નામે વૈષ્ણવથી એક પાઇ પણ મગાય નહિ અને લેવાય પણ નહિ. આ વાર્તા હાલના વૈષ્ણવોએ ખાસ હૃદયમાં કોતરી રાખવી ઘટે.

૩. એકવાર શ્રીગોકુલનાથજીને રામાનંદસરસ્વતી શ્રીપાતે પુછયું કે, "મહારાજ! શ્રીઆચાર્યજીનું નામ શું ભગવાન્ છે?" આ પ્રશ્નના જવાબમાં આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે, "નહિ." ત્યારે ફરી શ્રીપાતે પુછયું કે, "એ નામ સંભવે ખરું?" તો

આપે જવાબ આપ્યો: "હા, સંભવે, પણ જેને અભેદબુદ્ધિ હોય તેને સંભવે. (શ્રીઆચાર્યજીમાં અને શ્રીકૃષ્ણમાં જે લેશ પણ ભેદ ન જોતા હોય તેને એ વાત સંભવે.) જેને ભેદબુદ્ધિ છે તેને એ વસ્તુ દેખાય નહિ. એજ નિશ્ચય છે. શ્રીગુસાંઈજીએ પણ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં "વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ" (ખરી રીતે જોતાં તો શ્રીઆચાર્યજી શ્રીકૃષ્ણ જ છે) એમ કહ્યું, પણ તેથી આપનું નામ શ્રીકૃષ્ણ ન રખાય. (માત્ર જેને એવી ભાવના હોય તેને એવો અનુભવ થાય.)

સાર—કેવું સચોટ વચનામૃત છે? શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૂર્ણપુરુષોત્તમ ખરા; પણ તે કંઇ બધાને માટે નહિ, પણ અનુભવીઓને માટે. તેથીજ આપશ્રીનું નામ શ્રીકૃષ્ણ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયું નહિ. એટલે કોઈ અનુભવી પોતે શ્રીઆચાર્યજીમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમનાં દર્શન કરીને તેનો આનંદ લીધા કરે, પણ તેથી તેવી દૃષ્ટિ વિનાનો બીજા લોકો 'ભગવાન' એ નામે શ્રીઆચાર્યજીને ઓળખાવી શકે નહિં.

૪. એક દિવસે કહ્યું કે; "શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે સંન્યાસ ગ્રહણ કરવાનો વિચાર કર્યો ત્યારે પોતાનાં ધર્મપત્ની શ્રીઅક્કાજીની પાસે એ વિચાર આપશ્રીએ પ્રકટ કર્યો. પણ શ્રીઅક્કાજીએ સંન્યાસ લેવાની આજ્ઞા આપી નહિં. ત્યારે ભગવદિચ્છાથી એક દિવસે ઘરમાં અકસ્માત્ આગ લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી પુસ્તક વાંચતાવાચતા બિરાજી રહ્યા. ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ ત્યાં જઇને કહ્યું કે, "અહીંથી જલદી બહાર નીકળો, બહાર નીકળો; અહીં કેમ બેસી રહ્યા છો?" ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઅક્કાજીને પુછ્યું કે, "બહાર નીકળવાની (ઘરનો ત્યાગ કરવાની) તમારી આજ્ઞા છે?" ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ કહ્યું કે, "હા જાઓ. જાઓ," ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તો ઘરનો ત્યાગ કર્યો. શ્રીઆચાર્યજીનો એક બ્રાહ્મણ સેવક હતો. તે એવો દુષ્ટ અને બહિર્મુખ હતો કે, કોઈ કંઇ જે કહે તેમ કરી નાંખે, કશો વિચાર કરેજ નહિ. તેને કહે કે ઉપર ચઢ, તો ઉપર ચઢી જાય. તેજ બ્રાહ્મણને ઘેર સંન્યાસ લેવાની પહેલેથી બધી તૈયારી કરી રાખી હતી, પણ તેણે કોઇને તે વાતની ખબર સુદ્ધાં આપી ન હતી. પછી આચાર્યશ્રી પેલા બ્રાહ્મણસેવકને સાથે લઇને સોમેશ્વર પધાર્યા; અને ત્યાંજ સંન્યાસગ્રહણનો વિધિ પ્રારંભી દીધો. હવે સંન્યાસ ગ્રહણ કરતી વખતે ત્યાં પુત્રની જરૂર પડે છે, તેથી આપશ્રીએ પોતાના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગોપીનાથજીને ત્યાં બોલાવ્યા, પણ શ્રીગોપીનાથજી તો એ વાત સાંભળીને ઘણાજ ખેદ પામ્યા; એટલે ત્યાં પધાર્યા નહિ. પછી શ્રીગુસાંઇજીની અવસ્થા નાની હતી. તેથી આજ્ઞા થતાં ત્યાં પધાર્યા. આ વાત સાંભળીને આચાર્યશ્રીના માતાજીને ઘણુંજ દુઃખ થયું. આખરે એ વૃદ્ધ માતાજી ત્રણવાર ગંગાજીમાં પડયાં અને દેહત્યાગ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. પણ ત્રણે વખતે ગંગાજીએ તેમને બહાર કાઢી દીધાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું કે, "જુઓ, આ મારા માતાજી છે, અને ત્રણ વખત ગંગાજીએ તેમને બહાર

કાઢી દીધાં છે." માતાજીનું આ દુઃખ અને ક્લેશ શ્રીઆચાર્યજી સહન કરી શક્યા નહિ. તેથી આપ વારાણસી–કાશી પધાર્યા. ત્યાં જઇને માધવ સરસ્વતીજી નામના એક સંન્યાસીને પોતે નમસ્કાર કર્યો. તે વખતે બીજા સંન્યાસીએ માધવેન્દ્ર સરસ્વતીને પુછ્યું કે, "તમે સંન્યાસનો ઉપદેશ આચાર્યશ્રીને કર્યો છે?" ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ કહ્યું કે, "એ તો ઇશ્વર છે, હું કોણ જે એમને ઉપદેશ કરૂં?" ત્યારે પેલા સંન્યાસીએ વળી પાછો પ્રશ્ન કર્યો કે, "ઉપદેશ વિના સંન્યાસ કેમ લેવાય?" ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ જવાબ આપ્યો કે, "મને તે વાત પૂછવાનો અધિકાર નથી. તમે પૂછી શકતા હો તો પૂછો." શ્રીઆચાર્યજીએ સંન્યાસીઓમાં થતા આ ગડબડાટને–ઘુસપુસને સાંભળી લીધી. તે વખતે તો આપશ્રીએ કંઈ જવાબ આપ્યો નહિ, પણ "સંન્યાસનિર્ણય" ગ્રંથ લખીને પેલા ગડબડાટ કરી રહેલા સંન્યાસીઓને મોકલી આપ્યો, વળી લખ્યું કે, यहदरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत જે દિવસે વૈરાગ્ય આવ્યું, ઘર છોડયું, ત્યારથીજ સંન્યાસ લઈ લીધો ગણાય. આ ગ્રંથ પેલા સંન્યાસીએ બધાને બતાવ્યો અને કહ્યું કે, "આનું નામ તે સંન્યાસ, બીજી બીજું બધું તો વિડંબન–ફારસ છે" શ્રીઆચાર્યજીએ તે પછી ૪૦ દિન ભૂતલપર પ્રકટદર્શન આપ્યાં છે.

આ વચનામૃતપર કંઈ પણ વિવેચન કરવાની જરૂર નજ હોય.

૫. એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે; "શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ગોવિંદ દવેએ શ્રીઆચાર્યજીમહાપ્રભુજીને વિનતિપત્ર લખ્યો કે, "સેવા કરીએ છીએ પણ મનની વિક્ષિપ્તતા–આમતેમ ભટકવાની વલણ–જતી રહેતી નથી, મનની મનમાંજ રહે છે." આ વિનતિપત્રના ઉત્તરમાં આચાર્યશ્રીએ નવરત્ન ગ્રંથ લખીને મોકલી આપ્યો અને જણાવ્યું કે, "આ ગ્રંથનો પાઠ કરજો, મનની વિક્ષિપ્તતા રહેશે નહિ.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, આચાર્યજી મહાપ્રભુજી જ્યારે બીજી વાર શ્રીદ્વારિકાજી પધાર્યા ત્યારે ગુજરાતમાં થઇને પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહ મહમદ બેગડો રાજ્ય કરતો હતો. મહમદ બેગડાની એવી ધાક હતી કે તેની પાસે થઇને તેના દેખતાં કોઈ પાલખીમાં બેસીને નીકળી શકે નહિ. શ્રીમહાપ્રભુજી તો તે વખતે પાલખીમાં બિરાજીને પધારતા હતાં. પાલખી પધરાવનારા સેવકોએ દૂરથી જોયું કે મહમદ બેગડો સામે ગોખમાં–છજામાં બેઠેલો છે. તુરતજ પાલખી થોભાવીને સેવકોએ વિનતિ કરી કે જે "મહારાજ! આ બાદશાહની પાસેથી કોઇ પાલખીપર બેસીને નીકળી શકતું નથી." બીજા સાથેના વૈષ્ણવોએ પણ તેવુંજ કહ્યું. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, "હું પોતે પોતાની મરજીથી આ પાલખીમાં બેઠો છું એમ તમે સમજો છો કે શું! તમે પાંચ જણાએ મળીને મને બેસાડયો છે તેથી હું બેઠો છું" વળી આપશ્રી આજ્ઞા કરી કે "તમે ડરો નહિ. શ્રીઠાકોરજીએ જે અધિકાર આપ્યા છે, તો તે માટે

બીજો શું કરી શકનાર છે?" એમ આજ્ઞા કરીને પાલખી આગળ ચલાવી. સવારી બાદશાહ પાસે આવી પહોંચી. એ વેળાએ બાદશાહ પાસે ઉભેલા એક સરદારે કહ્યું કે. "આ કોઈ હિન્દુ તમારી સામે પાલખીમાં બેસીને જાય છે" ત્યારે બાદશાહે પોતાના સરદારને જવાબ આપ્યો કે "મારી આગળથી કોઇ મનુષ્ય તો એવી રીતે જઇ શકે જ નહિ, પણ આ તો કોઇ પરમેશ્વરનું તેજ છે."

સાર—શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રકટ પ્રતાપનું વર્ણન શ્રીગોકુલનાથજીએ ઉપરના વચનામૃતમાં કર્યું છે. ગમે તેવા વિધર્મીઓ પણ આપના તેજ સામે નમી પડતા એનું આબેહુબ વર્ણન આ વચનામૃતમાં છે.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી જ્યારે અડેલમાં બિરાજતા હતા ત્યારે હંમેશાં પોતે કથા કરતા. આ કથાનું શ્રવણ કરવા ઘણા વૈષ્ણવો આવતા. તેમાં એક દિનકરદાસ શેઠ નામના ક્ષત્રિય પણ આવતા. શેઠ અત્યંત વિરક્ત દશામાં રહેતા હતા. એટલે માત્ર લોટ માગી લાવીને પોતાનો નિર્વાહ કરતા હતા. પોતાની પાસે એક પણ વાસણ રાખતા નહિ. લોટ લાવીને તે શ્રીયમુનાજીના તટપર શ્રીયમુનાજલથી બાંધી લેતા અને તેના ટીકરા (રોટલા) સિદ્ધ કરીને, પ્રભુને ધરાવીને લેતા. એક દિવસે લોટ માગતા કાંઇક વાર થઇ અને પોતે ઉતાવળથી શ્રીયમુનાજીના તટપર લોટ બાંધવા લાગી ગયા. તેટલામાં એક જલભરીઓ ત્યાં આવ્યો, તેને દિનકર શેઠે પૂછ્યું કે, "શ્રીમહાપ્રભુજી શું કરે છે?" ત્યારે જલ ભરનારે કહ્યું કે, "પુસ્તક ખોલ્યું છે અને કથાનો આરંભ કરે છે." આ સમાચાર સાંભળતાંવેંતજ દિનકર શેઠ લોટમાં વધારે પાણી રેડીને, તેને ઘોળીને પી ગયા, રોટલા બનાવવા રહ્યા નહિ. તરતજ કથામાં આવીને બેસી ગયા. ભગવત્કથામાં એમની એવી આસક્તિ હતી; તેમજ અનુરાગ હતો. કથા થઇ રહ્યા પછી રાત્રે જલભરીઆએ શ્રીમહાપ્રભુજીએ વિનતિ કરી કે, "કૃપાનાથ! દિનકર શેઠ તો લોટ ઘોળીને, પીને કથામાં આવ્યા છે." આ વાત સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજીએ દિનકર શેઠને કહ્યું, "તું લોટ ઘોળીને પીને કેમ આવ્યો?" ત્યારે દિનકર શેઠે વિનતિ કરી જે "રાજ, અંગારખી (રોટલા) તો રોજ ખાઉં છું અને ખાઇશ; પણ આ ભગવત્કથારસ ક્યાં મળવાનો છે?" ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, "હવેથી તું રોટલા કરીને આવજે. તું આવીશ ત્યારેજ હું કથા કહીશ. મારો શ્રોતા તુંજ છે."

સાર—કથામાં આસક્તિ કેવી હોવી જોઇએ તેનું હૃદયભેદક ઉદાહરણ આના વિના બીજું કંઇ નહિ મળે. 'શેઠ' છતાં 'વિરક્ત' રહીને દિનકરદાસ શ્રીવાક્પતિની વાક્સુધાના રસપાનમાં કેવા આસક્ત રહેતા એનો ખ્યાલ આ વચનામૃતમાં છે. મર્યાદામાર્ગ ભક્તિમાં જેમ પરીક્ષિત રાજાનું નામ લખાયું તેમ પુષ્ટિની શ્રવણ ભક્તિમાં શેઠ દિનકરદાસનું નામ લખાયું છે. શ્રીવલ્લભાગ્નિના વચનામૃતમાં આવી આસક્તિ રહે તો તો આપણે પ્રતિક્ષણે કૃતાર્થ.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીની પાસે પુત્રપુત્રી વિષે વાત ચાલી. શ્રોતાઓ કહેવા લાગ્યા કે, છોકરો અવતરે તો બધા ખુશ થાય અને છોકરી સાંપડે તો કોઇ રાજી થતું નથી. આ વખતે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, છોકરી અવતરે તો ખોટું શું થયું? બધા લોકો છોકરા માગે છે પણ છોકરી માગતા નથી. પણ અમારા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનાં માતાજીએ તો પોતાનાં કુલદેવી વેણીની પાસે માનતા કરીને એક દીકરી માગી છે. મુળ પુરુષ યજ્ઞનારાયણ ભટ્ટજીથી લઇને શ્રીમહાપ્રભુજી સુધી કોઇને પુત્રી થયલી નહિ. મંગળ પ્રસંગે આરતી કરવા માટે બીજા કોઇને બોલાવાને આરતી કરાવવી પડતી. આચાર્યશ્રીના માતાજીએ કહ્યું કે, બેટી વિના કુલ શા કામનું? રોજ ઉઠીને બીજાને બોલાવવું એ શું? ત્યારે આચાર્યશ્રીનાં માતાજીએ કુલદેવી વેણીની પાસે પ્રાર્થના કરી કે મારા પુત્ર ને ત્યાં પુત્રી થાઓ. ત્યારે વેણીદેવીએ કહ્યું કે તમારા પુત્રને તો પુત્રી થશે નહિ, પણ પુત્રના પુત્રને ત્યાં પુત્રી થશે. તે પછી ગુસાંઇજીને ત્યાં બેટીજીનાં પ્રાકટ્યો થયાં.

સાર—વૈષ્ણવ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પુત્ર અને પુત્રીનો વિનિયોગ પ્રભુસેવામાં થાય એટલે પુત્રીના પ્રસવથી અપ્રસન્ન બનવાનું ક્યાંથી હોય? પ્રભુસેવામાં તત્પર હોય તેવાંજ પુત્ર અને પુત્રીની સંતાન તરીકે ગણના થાય, બીજાં તો ભારભૂતજ ગણાય.

લૌકિક સંબંધમાં અલૌકિકતા.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી: 'અમારી કાકીની (પોતાની માતાને કાકી કહેતા) માએ (નાનીએ) કહ્યું કે મને બે પુત્રીઓ સાંપડી છે, તેમાં એક લૌકિક સાધે છે અને બીજી અલૌકિક સાધે છે. કાકીએ (અમારાં માએ) ૧૮ બાળકોને જન્મ આપ્યો છે. તેથીજ અમારા ગોવિંદમામા કહેતા હતા કે, જો શ્રીગુસાંઇજીને બે બાલક બીજા થાય તો હું શ્રીરુક્મિણીવહુજીનાં લગ્ન બીજીવાર શ્રીગુસાંઇજી સાથે કરૂં. વળી અમારાં માતામહ (નાના) વિશ્વનાથ ભટ્ટ આગરોદી હતા. તેઓ તો મહાન વૈષ્ણવ હતા. એમની પાસે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગુસાંઇજીની વેરે કન્યાનું માગું કર્યું ત્યારે આગરોદી વિશ્વનાથ ભટ્ટ સાંભળીને બેસી રહ્યા, પણ ઉત્તર દીધો નહિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર કર્યો કે મને ઉત્તર આપતા નથી તે શું? ફરીને શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ ન આપવાનું કારણ પુછયું, ત્યારે અમારા નાનાએ, કહ્યું કે, તમારા પુત્ર શ્રીગુસાંઇજી વેરે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરીને હું મારો સેવક ધર્મ, શું ગુમાવી દઉં? કેમ કે અત્યારે તો હું આપનો સેવક છું, પછી વેવાઇ થઇશ, એટલે આપ મને નમસ્કાર કરશો, મને આવતો જોઇને ઉભા થઇ જશો, તેથી મારો સેવક ધર્મ નષ્ટ થશે. હું બે શરતે શ્રીગુસાંઇજી સાથે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરી દઉં. તે એ કે આપ મને નમસ્કાર ન કરો અને હું આવું ત્યારે ઉભા થાઓ નહિ. આ શરત શ્રીમહાપ્રભુજીએ કબુલી અને કહ્યું કે હું તેજ પ્રમાણે વર્તીશ. એટલે વિશ્વનાથભટ્ટજીએ પોતાની પુત્રીના લગ્ન શ્રીગુસાંઇજી સાથે કરી

દીધાં. ત્યાર પછી તો વિશ્વનાથભટ્ટજીએ વૈષ્ણવો પાસેથી એક કોડી પણ લીધી નહિ. પોતે કહેતા કે વૈષ્ણવોનું ધન તો મારી પુત્રીનું છે, તો પુત્રીનું ધન પિતાને કેમ ખપે?

સાર—વચનામૃતમાં ઘણાજ મુદ્દા સમાયલા છે. શ્રીગુસાંઇજી સાથે જે પુત્રીનાં લગ્ન થયાં તે પુત્રીએ અલૌકિક સાધ્યું એમ એમનાં માતાપિતા માનતાં. આમાં એક ઐતિહાસિક બીના એ છે કે શ્રીરુક્મિણીવહુજીએ ૧૮ બાલકોને જન્મ આપ્યો છે. અત્યાર સુધી આપણે એમ સમજતા કે શ્રીરુક્મિણીવહુજીના ૬ પુત્રો અને ૪ પુત્રી છે, પણ આ વચનામૃતથી નવો પ્રકાશ પડે છે. વળી શાસ્ત્રમાં એવી મર્યાદા છે કે, એકજ સ્ત્રીથી ૨૦ સંતાન થાય તો એજ સ્ત્રી સાથે ફરીને વિધિપૂર્વક લગ્ન કરવાં. તેથીજ શ્રીગોકુલનાથજીના મામાએ ૨૦ બાલકોનાં પ્રાકટ્યની આશા રાખી હતી. શ્રીગોકુલેશપ્રભુના નાના ભટ્ટ વિશ્વનાથ બાગરોદીની વૈષ્ણવતા તો એક આદર્શરૂપ છે. આચાર્યશ્રી ઉપરનો તેમનો ભાવ અદ્ભુત છે. લૌકિક સંબંધ છતાં અલૌકિક ભાવની મુખ્યતા કેમ જાળવવી તેનું ઉદાહરણ આનાથી સરસ બીજું કંઇ નહિ મળે. તેમાંએ વૈષ્ણવોની પણ પાઇ ન લેવામાં જે રહસ્ય છે તે તો આપણા હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવું છે. બ્રહ્મસંબંધ પછી વૈષ્ણવના સર્વસ્વની માલીકી કોની હોય તેનો ઉકેલ આ વચનામૃતમાં છે.

જુઠું તહોમત—એક વેળાએ એક વેળાએ એક સન્યાસીએ આચાર્યશ્રી પાસે ફરીયાદ કરી કે, તમારા સેવકે મારા શાલિગ્રામજી ચોરી લીધા છે. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ કહ્યું કે, તું તારા શાલિગ્રામને ઓળખે છે ખરો? ત્યારે સંન્યાસીએ જવાબ આપ્યો કે ઓળખું છું. તેજ વખતે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પેલા સંન્યાસીને શ્રીઠકુરાની ઘાટના શમીવૃક્ષમાં બે હજાર શાલીગ્રામ લટકેલા દેખાડ્યા. આ દૃશ્ય જોઇને સંન્યાસીને આશ્ચર્ય થયું અને તે મનમાં પસ્તાવા લાગ્યો, ત્યારે શ્રીઆચાર્ય-મહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, અમારા સેવક તારા શાલિગ્રામ શા માટે ચોરી જાય?

શ્રીવ્યાસજી સાથે મિલાપ—એક વખતે શ્રીગોકુલનાથજીએ શ્રીમુખે આજ્ઞા કરી કે, શ્રી આચાર્યજી બદ્રિકાશ્રમ પધાર્યા, ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસજીનાં ત્યાં દર્શન થયાં, એટલે આચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે, આપે વેદાંતના એવાં સૂત્ર કેમ કર્યાં કે જેનો અર્થ માયાવાદ તરફ પણ લગાડી લેવાય. ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસજીએ કહ્યું કે મને એવીજ આજ્ઞા હતી કે એવાં બે અર્થ વાળાં સૂત્રો કરવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે મેં તો તમારા સૂત્રનો અર્થ બ્રહ્મવાદનેજ લાગુ પાડયો છે. આ અર્થ શ્રીવ્યાસજીને આચાર્યશ્રીએ સંભળાવ્યો. વળી 'વામબાહુકૃતવામકપોલો' એ યુગલગીતનો શ્લોક પણ વ્યાસજીને સંભળાવ્યો. બરાબર ત્રણ દિવસ વીતી ગયા. આ શ્રવણ કરીને વ્યાસજી ઘણા પ્રસન્ન થયા. તેથીજ કહ્યું કે 'વ્યાસસ્ય વિષ્ણોઃ પ્રિય' એટલે કે વિષ્ણુરૂપી વ્યાસજીને પ્રિય એવો શ્રીભાગવતનો અર્થ આચાર્ય-

શ્રીએ કર્યો છે. આવો અર્થ કોણ જાણત અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમને કોણ જાણત ? શ્રીમહાપ્રભુજીએ અર્થ પ્રકટ કર્યો ત્યારે અમારે ખબર પડી. માટે એ અર્થ વ્યાસજીને પ્રિય છે.

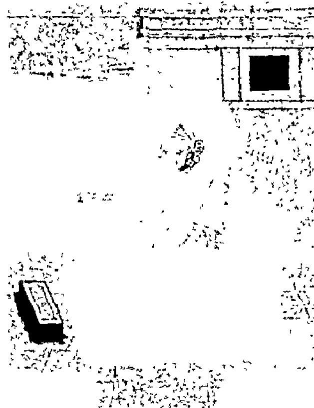
રજનું માહાત્મ્ય—એક વાર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ પ્રભુદાસ જલોટા જે પોતાની સાથે રહેનાર સેવક છે, તેમને કહ્યું કે ચાલો, પ્રસાદ લેવાને આવો, ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું કે, મેં સ્નાન કર્યું નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બે શ્લોકો કહ્યા તેનો અર્થ આ છેઃ—જલથી પણ જ્યાં રજ પવિત્ર છે, રજથી પણ જ્યાં જલ શ્રેષ્ઠ છે, તેવા વૃંદાવનમાં તે વળી ન્હાવાની વાતો શેની ? દરેક વૃક્ષે જ્યાં વેણુધારી છે, પાંદડે પાંદડે જ્યાં ચતુર્ભુજ છે, એવા વૃંદાવનમાં લક્ષ્ય અને અલક્ષ્ય કથાઓ વળી કેવી ? એવીજ રીતે આચાર્યશ્રીએ કૃષ્ણચૈતન્યને પણ કહ્યું, આ વચનામૃતનો ભાવ ઘણોજ ગંભીર છે. [આ વચનામૃત પર વધારે વિવેચનની કશી જરૂર લાગતી નથી.]

પ્રકટ પ્રતાપ—શ્રીમહાપ્રભુજીનાં અલૌકિક ચરિત્રનું વર્ણન કરતાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, 'શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી શ્રીબેટ દ્વારકામાં રણછોડરાયજી પાસે શ્રીમદ્ભાગવતની કથા કહેતા હતા, તે વખતે એકદમ વરસાદ પડવા માંડયો, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ મેઘની સામે જોયું એટલે વરસાદ સમજી ગયો અને શ્રીમહાપ્રભુજી જે સભામાં બિરાજતા હતા તે સભામાં વરસ્યો નહિ અને બીજે બધે ઠેકાણે વરસવા લાગ્યો. ત્યારે નારાયણ દવેએ વિનતિ કરી કે, રાજ, આ શું ? આપ તો જે છો તે છોજ, તોએ આ અનુભવ અમને શા માટે દેખાડો છો ? ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે ના, આમાં અનુભવ શાનો ? મેઘથી કથામાં રસાભાસ થતો હતો તેથી મેઘને સભાથી દૂર કર્યો.'

દેવું કરીને સેવા કરવી—એક દિવસે વળી શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ વચનામૃત કર્યા કે, શ્રીમહાપ્રભુજી જનશિક્ષા માટે સ્વઇચ્છાએ એક લીલા બતાવી દીધી. એક વેળાએ પોતાના ઘરમાં લૌકિક સામગ્રીની ખેંચ એકદમ આવી પડી. ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ શ્રીમહાપ્રભુજીને વિનતિ કરી કે, "ઘરમાં સામગ્રી તો ઘણી છે." ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પુછ્યું કે 'શી સામગ્રી છે ?' ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ વિનંતિ કરી કે "છોલા ઘણા છે." આ સાંભળીને શ્રીમહાપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે "છોલા (ચણા) જ ભીંજાવીને, તળીને ભોગ ધરો." આ વખતે એક સેવક ત્યાં ઉભો હતો તેણે વિનતિ કીધી "મહારાજ, બજારમાંથી ઉધાર સામગ્રી લઈ આવું ?" ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ આપ્યો કે, "જો તું ઉધાર લાવીશ તો ચુકાવશે કોણ ? શું અમારે જાગીર કે પરગણાં છે કે, જ્યાંથી દ્રવ્ય આવે ? અમે શું પરગણાં મેળવીને કમાઇને ચુકવીશું ? હમણાં ઉધાર લઇને પછી આપીએ ક્યાંથી ?" ત્યારે સેવકે વિનતિ કરી કે, "શ્રીઠાકુરજી આપે ત્યારે દેવું ચુકવી દેવાશે." ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે "જો શ્રીઠાકુરજીની આપવાની ઇચ્છા હોય તો



શ્રીગોપીનાથજીના કુમાર શ્રીપુરૂષોત્તમજી.
પ્રા. સં. ૧૫૮૭ ભાદ્રપદ વદ ૮



શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરના જ્યેષ્ઠકુમાર શ્રીગોપીનાથજી
પ્રા. સં. ૧૫૬૭ ભાદ્રપદ વદ ૧૨.

સ્થાપન આપશ્રીએ કર્યું. તે ઉપરાંત ત્યાં એક મધ્વસંપ્રદાયના એક સંન્યાસી હતા. તેના મનમાં એમ આવ્યું કે, શ્રીઆચાર્યજી જેવા દિગ્વિજય કરનારા મારા શિષ્ય થાય તો સારૂં. તેથી તેણે શ્રીઆચાર્યજીને બહુ જ આજીજી કરીને કહ્યું કે, મારો આ સંપ્રદાય તમને સોંપું છું અને તમે અહીંજ રહો. ત્યારે રાત્રે શ્રીઠાકુરજીએ પધારીને શ્રીઆચાર્યજીને આજ્ઞા કરી કે, તમે મધ્વસંપ્રદાયનો અંગીકાર કરશો નહિ.

ઐતિહાસિક ઉલ્લેખો.

[શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અને એઓશ્રીના બે કુમાર શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીગુસાંઇજીએ ગુજરાતને કેટલીવાર પુનીત કરી તેને લગતી ઐતિહાસિક નોંધ પ્રાંતીજના મંદિરના પ્રાચીન પુસ્તકમાંથી મળી છે, તે નીચે આપીએ છીએ.]

શ્રીમદાચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે પૃથ્વી પરિક્રમા કરી, ત્યારે એઓશ્રી ગુજરાતમાં પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહી અમલ હતો. તે પછી સં. ૧૫૮૫ મા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી બેટ દ્વારિકા દર્શનાર્થે પધાર્યા. ૧ વર્ષ સુધી આપશ્રી દ્વારકામાં બિરાજ્યા છે. શ્રીરણછોડરાયજીને શ્રીમદ્‌ભાગવતની કથા સંભળાવી. તે પછી બધી સામગ્રી શ્રીરણછોડરાયજીને ભેટ કરી અને રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા. રાજનગરમાં વેણીદાસ નામના નાગર વાણીઆના ઘરમાં ૩ દિન બિરાજ્યાં પછી ગમીજ ગામમાં વ છા ગોપાલ રહેતા હતા, તેનો ઉદ્ધાર કરવા માટે તેને ત્યાં પધાર્યા. તેને આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે “ તું અહીંજ રહેજે. એક સુંદર કન્યા વિના પ્રયાસે તને કોઇ લાવી આપશે, તેની સાથે લગ્ન કરીને ગૃહસ્થાશ્રમ માંડીને ભગવત્સેવા કરજે. ” એવી આજ્ઞા આપીને પછી આપશ્રી ઘર તરફ પધાર્યા. તે ર તે જે જે જીવ વૈષ્ણવ થયા, તેનાં નામો આ છેઃ–વ્યાસ રાણા સાચોરા, જોષી નરહરિ સિદ્ધપુર, એરાણીના દવે નારાયણ સાચોરા, વડાલી દેશના દવે ગોવિંદદાસ સાચોરા, વરછા ભટ્ટ ગોપાલદાસ ઔદીચ્ય ગમીજના, માકુઇના નરસિંહદાસ ભાણેજ ઔદીચ્ય, વડાલીના સાચોરા કેશવભટ્ટ, હવેલીના સોનીશંકર શંદુઆ, આવા ઘણાજ સેવક થયા છે. કેટલાના નામો લખીએ ? તે પછી આપ શ્રીજીને ઘેર પધાર્યા છે.

શ્રીગોપીનાથજી—સંવત ૧૫૯૨ માં દ્વારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યા. પહેલાં આપશ્રી રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા છે. સિકંદરપુરમાં [હાલમાં છગન ભાઈચંદની વાડીને નામે ઓળખાતા સ્થલમાં] ભટ્ટ જયકૃષ્ણ સાઠોદરા નાગર બ્રાહ્મણના ઘરમાં બાગ હતો, ત્યાં આપશ્રી ઉતર્યા. ત્યાંથી શ્રીમદનમોહનજી (હાલમાં રાજમહેતાની પોળમાં બિરાજતા શ્રીઠાકુરજી) પ્રકટ થયા છે. એ ઠાકુરજીને શ્રીગોપીનાથજીએ સિંહાસનપર પધરાવ્યા છે. આપની સાથે શ્રીહરિવંશજી હતા. ભાઈલાલ કોઠારી, બાઇ બીકુબાઇ સોનાં આદિ ઘણા સેવકોને ઘણુંજ સુખ આપ્યું. તે પછી આપશ્રી દ્વારિકા પધાર્યા. ત્યાં એક માસ સુધી બિરાજ્યા. ત્યાં નરહરિદાસ કાશ્મીરી પણ હતાં. એ પ્રમાણે દ્વારિકા યાત્રા કરીને આપશ્રી ઘર તરફ પધાર્યા.

શું આચાર્યશ્રીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી?
(રા. રા. જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

તા. ૯—૮—૨૫ ને રોજ "ગુજરાતી" પત્રની સાહિત્યપૂર્તિમાં પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવેલા "બંગસાહિત્ય" નામના લેખમાં બંગ કવિ વૃન્દાવનદાસના "ચૈતન્યભાગવત" નો ઉલ્લેખ કરેલો છે અને લેખકે તેમાં કૃષ્ણચૈતન્ય વિષે લખતાં તેમનું લગ્ન શ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એવો નિર્ણય જણાવ્યો છે. આ લેખના આધારે કેટલાક બુદ્ધિના આંધળા પુષ્ટિસંપ્રદાયના શત્રુઓ તથા પોતાની જાતને શંકરમતાનુયાયી તરીકે ઓળખાવવાનો દાવો કરનારા પંડિતંમન્યોએ 'પ્રજામિત્ર ને પારસી' તથા 'સનાતનધર્મકેસરી' તેમજ ચીંથરીયા 'પોલ' માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિષે અસહ્ય હુમલાઓ કર્યા છે. જો કે 'ગુજરાતી' ની સાહિત્યપૂર્તિમાં લેખકે કોઇ પણ જાતના દ્વેષ સિવાય કે અંગત ઉલ્લેખના હેતુ સિવાય શુદ્ધ હૃદયથી લેખ લખ્યો છે. પણ પેલા ધર્મઘાતકોએ તો શિષ્ટાચારનો પણ ત્યાગ કરીને યદ્વાતદ્વા જેમ આવે તેમ બકી નાંખ્યું છે, માટે અહિં તેઓએ જે ગપગોળો ગબડાવ્યો છે તેમાં કેટલું સત્ય છે તેની પરીક્ષા ઐતિહાસિક દૃષ્ટિથી કરવાની જરૂર છે.

પ્રસ્તુત વિષયમાં વિવાદનો પ્રશ્ન માત્ર એટલોજ છે કેઃ—શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું કૃષ્ણચૈતન્ય સાથે લગ્ન થયેલું કે નહિ? પણ આ પ્રશ્નને અંગે બીજા પણ પ્રશ્નો વિચારવા યોગ્ય છે અને તે એ કેઃ–૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે નહિ? ૨ અને હોય તો કૃષ્ણચૈતન્યની સાથે તેનું લગ્ન થયેલું કે નહિ? ૩ કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન બીજી કોઇ લક્ષ્મીનામની પુત્રી સાથે થયું હતું? ૪ જો તે લક્ષ્મી નામે કન્યા સાથે હોય અને તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી સાથે થયું હોય તો તે વલ્લભાચાર્ય કયા? ૫ શુદ્ધાદ્વૈતવાદી પુષ્ટિપથપ્રવર્તક બ્રહ્મવાદી તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કે અન્ય કોઈ?

આ પ્રશ્નના મુખ્ય મુદ્દાઓ તપાસતાં પહેલાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્યના જન્મકાલ વગેરે તરફ આપણે આપણી દૃષ્ટિ ફેરવી દઇએ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ નિર્વિવાદ રીતે સંવત ૧૫૩૫ માં અગર ઇ. સ. ૧૪૭૯ માં નક્કી થયેલો છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જન્મપત્રિકા બૃહત્સ્તોત્રસરિત્સાગર ભાગ–૨ ના પૃષ્ઠ ૧૪૮ માં આપેલી છે. અને તેના અંતમાં નીચે પ્રમાણે લખ્યું છે. संवत् १५३५ शके १४०० वैशाखकृष्णे ११ रवौ धनिष्ठानक्षत्रे शुभयोगे ववकरणे एवं पचाङ्गे श्रीदिनगतसमस्तरात्रिगतघटी ६। ४४ समये वृश्चिकलग्ने श्रीद श्रीवल्लभाचार्यप्राकट्यम्। સદ્‌ગત લલ્લુભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસ પણ પોતાના વલ્લભચરિત્રમાં તેમજ અંગ્રેજીમાં તે સાલ આપે છે. તેમના અંગ્રેજી પેમ્ફલેટમાં નીચે પ્રમાણે લખે છે, Vallabhacharya who wah a high caste Brahmin, whs born in Cham-

paranya near Rajim of the Raipur district in the Central Provinces in A. D. 1479."

આ ઉપરથી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું પ્રાકટ્ય સંવત ૧૫૩૫ ગણાય છે અને સન ૧૪૭૯ છે, એટલે તેમાં ૫૬ ઉમેરીએ તો ૧૫૩૫ થાય. કૃષ્ણચૈતન્યનો જન્મકાલ તેમના જીવનચરિત્રોમાં ૧૪૮૫ નો સન છે. મી. ગ્રાઉઝ બંગાલી વૈષ્ણવો સંબંધી લખતાં નીચે પ્રમાણે આપે છે; He (Chaitanya) was born in Nadia in Bengal in A. D. 1485. આ ૧૪૮૫ની ઇ. સ. માં ૫૬ વર્ષ ઉમેરતાં ૧૫૪૧ જન્મસંવતનો કાલ કૃષ્ણચૈતન્યનો ગણાય. આ બંને કાલ સામે બિલકુલ વાંધો નથી.

હવે આ બંને જન્મ સંવતો લઇને લક્ષ્મીપુત્રીનાં લગ્ન સંબંધ ઐતિહાસિક અસંગતિ (Historical inconsistincy) કેટલી છે તે આપણે તપાસીએ. વસ્તુતઃ દલીલ તો એવી સિદ્ધ થશે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રીજ નહોતી. તેમ છતાં દલીલ ખાતર તે હતી એમ માનીએ તો પણ નીચે પ્રમાણે ઐતિહાસિક અસંગતિનો બાધ આવે છે.

કૃષ્ણ ચૈતન્ય. (જન્મ સંવત ૧૫૪૧.)

શ્રીવલ્લભાચાર્ય—(પ્રાકટ્ય સંવત ૧૫૩૫ લગ્ન (શ્રીવલ્લભદિગ્વિજય તથા લ. પ્રા. કૃત શ્રીવલ્લભચરિત્રના આધારે) ૩૦ વર્ષની વયે-સંવત ૧૫૬૫.)

(લગ્ન પછી ધારો કે પુત્રીનું પ્રાકટ્ય થયું અને તે પુત્રીનું નામ લક્ષ્મી હતું તો) પુત્રીનો જન્મ સંવત ૧૫૬૬.

લક્ષ્મી સાથે કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન.

અર્થાત્ પોતાની ૧૫૪૧-૧૫૮૧=૪૦ વર્ષની વયે લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે લગ્ન કરેલું હોવું જોઇએ.

(શ્રીગોપીનાથજી પ્રથમ પુત્ર પ્રાકટ્ય સંવત ૧૫૮૨) 'પ્રજામિત્ર' અને પારસીમાં' લખનાર પુષ્ટિમાર્ગનિન્દક ટીકાકારના કથન પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મી મોટી ઉમ્મરની કોઈ પણ લેતું નહોતું, માટે કૃષ્ણચૈતન્યને પરણાવી. આ ટીકાના આધારે વિચાર કરતાં તે પુત્રીની લગ્ન વખતની ઉમ્મર ઓછામાં ઓછી ૧૫ વરસની અવશ્ય હોવી જોઇએ એટલે ૧૫૬૬+૧૫=૧૫૮૧.

ઉપરની દલીલ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામનાં પુત્રી હોય તો તે પુત્રીનું લગ્ન સંવત ૧૫૮૧ માં એટલે કૃષ્ણચૈતન્યની ૪૦ વર્ષની વયે થયું હોવું જોઇએ.

પણ 'ગુજરાતી' સાહિત્યપૂર્તિના લેખમાં જણાવ્યા પ્રમાણે વૃન્દાવનદાસના ચૈતન્યભાગવત અનુસાર અને કવિ કર્ણપુરના સંસ્કૃત "ચૈતન્યચંદ્રોદય નાટક અનુસાર શ્રીચૈતન્ય સંસાર ત્યજીને ૨૪ વર્ષની ઉમ્મરે 'સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યાની' હકીકત જણાવી છે. વળી મી. ગ્રાઉઝ પણ એ મતને મળતા આવે છે. તેમજ સાધુચરણપ્રસાદકૃત (નદીયાની હકીકતમાં) "ભારત ભ્રમણના ભાગ ૩ જામાં" ... જોઇએ હકીકત મળે છે; અર્થાત ચૈતન્યે પોતાની ૨૪ વર્ષની ઉમરે સંન્યાસ

લીધો. ઉપર આપણે જોયું કે ૪૦ વર્ષની ઉંમરે લક્ષ્મી નામની વલ્લભાચાર્યની છોકરી સાથે લગ્ન કરે છે. અને હવે આપણને તેમના ચરિત્રનિરૂપકો ૨૪ વર્ષની ઉંમરે ચૈતન્યે સંન્યાસ સ્વીકારવાની હકીકત નિવેદન કરે છે. આ બંને વચ્ચે કેટલો બધો પરસ્પર વિરોધ છે? આ ઐતિહાસિક અસંગતિથી કૃષ્ણચૈતન્યના, વલ્લભાચાર્યની પુત્રી (?) લક્ષ્મી સાથેના લગ્નનો બાધ થાય છે. અર્થાત્ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તેમનું લગ્ન સંભવી શકતુંજ નથી.

૨ શ્રીચૈતન્યના ચરિત્ર નિરૂપકો કહે છે કેઃ—ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં (બંગલામાં) થયો હતો અને ત્યાં વલ્લભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મીને જોઇને મોહિત થયા. (જુઓ વૈષ્ણવ ધર્મનો ઇતિહાસ) આ દલીલથી બ્રહ્મવાદી શુદ્ધાદ્વૈતપ્રતિપાદક શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી હોવાનો સંભવ બની શકતો નથી, કારણ કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ કોઇ પણ સમયે બંગાળાનો પ્રવાસ કરેલો નથી.

શ્રીવલ્લભાખ્યાન બીજામાં ભક્તકવિ ગોપાળદાસ ગાય છેઃ—

અંગ; બંગ; કલિંગ કેકટ, માગધ, મારુ સુર સિંધ.

તે તામસનાં અઘ હર્યાં, પ્રતાપ પદરજગંધ.

આ લીટીમાં જણાવેલા દેશો 'તામસ' જણાવવાથી આપ કદી પણ ત્યાં પધાર્યા નથી. એટલે નદીયામાં ચૈતન્યની મુલાકાત થવાનો તથા તે સમયે પોતાની લક્ષ્મી નામની પુત્રી (?) નો ચૈતન્ય સાથે મેળાપ થવાનો પણ સંભવ નથી. આથી **શુદ્ધાદ્વૈતપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે ચૈતન્યનું** લગ્ન થયું નહોતું એ સિદ્ધ થયું.

૩ પણ શુદ્ધાદ્વૈતવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે કેમ? આનો ઉત્તર નકારમાંજ હોય. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામની પુત્રી હોય એવો ઉલ્લેખ કોઈ પણ સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાં ઉપલબ્ધ નથી.

"**લક્ષ્મી સતભામા બેઉ અગ્રજની અનુહાર**" એ વલ્લભાખ્યાનની પંક્તિથી શ્રીગુસાંઇજીના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા શ્રીગોપીનાથજીને લક્ષ્મી અને સતભામા એ નામની બે પુત્રીઓ હતી. પણ શ્રીગોપીનાથજીની લક્ષ્મી નામની એ પુત્રીનું પણ ચૈતન્ય સાથે લગ્ન સંભવી શકતું નથી. શ્રીગોપીનાથજીનું પ્રાકટ્ય સં. ૧૫૬૭; લગ્ન ધારો કે ૨૦ વર્ષની વયે; એટલે સંવત્ ૧૫૮૭ માં, લક્ષ્મી પુત્રીનું પ્રાકટ્ય બીજે વર્ષ લેતાં સં. ૧૫૮૯; આ લક્ષ્મીનું લગ્ન ચૈતન્ય સાથે હોય તો તે લગ્નવખતનું તેનું વય ૧૫ વર્ષનું હોવું જોઇએ. કારણ કે મોટી ઉમ્મરે ચૈતન્ય સાથે લગ્ન કરેલું એવું વિરોધીઓનું કહેવું છે. એટલે લગ્નની સંવત ૧૫૮૯+૧૫=૧૬૦૪. ચૈતન્યનો જન્મ ૧૫૪૧ માં છે. જો તેનું લગ્ન શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે હોય તો સંવત્ ૧૬૦૪ માં હોવું જોઇએ. અર્થાત્ ૬૩ વર્ષની ઉમ્મરે હોવું જોઇએ; પણ પોતે ૨૪ વર્ષની વયે સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો છે તે બાબત સ્પષ્ટ થઈ છે, તેમજ તેમનું અવસાન સંવત્ ૧૫૮૩ માં થયું છે. એટલે ૧૬૦૪ માં લગ્ન થાય એ વાત

"ખ-પુષ્પ" અગર વંધ્યાપુત્રજેવીજ છે. એટલે એ લક્ષ્મી શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી હોઈ શકે શકે નહિ. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને બે પુત્રો સિવાય કોઈ પણ પુત્રીજ નહોતી. એટલે मूलं नास्ति कुतः शाखा? એ નિયમ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને પુત્રીજ ન હોય, તો પછી ચૈતન્ય સાથે લગ્ન શી રીતે સંભવી શકે?

૪ મી. ગ્રાઉઝ પણ However that may be, when he had arrived at the age of 24.........as a religious teacher, એ વાક્યમાં However that may એ શબ્દોથી વલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રીનાં ચૈતન્ય સાથેનાં લગ્ન સંબંધમાં તે શંકા દર્શાવે છે.

ભારતભ્રમણ ભાગ ૩ માં આણું સાધુ ચરણદાસ પૃ. ૭૪૪ (૧૨૮) નીચે પ્રમાણે લખે છેઃ—महाप्रभुने सन १४८५ इसवीमें नदीया के जगन्नाथमिश्र ब्राह्मणकी स्त्रीके गर्भसे जन्म लीया। वह संपूर्ण बंगाल और उडीसेमें विष्णुकी भक्तिका उपदेश करते रहे। उन्होंने एकसन्तकी पुत्रीसे अपना विवाह किया था किन्तु २४ वर्षकी अवस्थामें वह गृहको छोडकर उडीसेमें चले गये.

આ ફકરો ઐતિહાસિક ગવેષણાપૂર્વક સાધુચરણદાસે લખેલો છે, આમાં કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ સ્પષ્ટ લખેલું છે. આથી શ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનાં લગ્નનો નિષેધ કર્યો છે. આમ છતાં જો ચૈતન્યભાગવતના આધારે તેમનું લગ્ન 'લક્ષ્મી' અને 'વિષ્ણુપ્રિયા' એમ બન્ને સાથે થયેલું માનીએ, તો પણ ઉપર જણાવેલાં કારણોની બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તે સંભવી શકતું નથી, કોઈ અન્ય એ નામના હોવા જોઈએ.

ઉપરની દલીલોથી તારવેલાં અનુમાનો.

૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન થયું નથી.

૨ બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યને બે પુત્રો સિવાય પુત્રીજ નહોતી.

૩ લક્ષ્મી સાથે લગ્ન માટે મી. ગ્રાઉઝ સંદેહ દર્શાવે છે.

૪ સાધુચરણદાસ શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન ફક્ત એક સંતની પુત્રી સાથે થયાનું કહે છે.

ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં હોવાથી તથા બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કદિ પણ નદીયાના પ્રવાસે ગયેલા નહિ હોવાથી નદીયામાં કૃષ્ણચૈતન્ય જે લક્ષ્મી નામની છોકરીના મોહમાં પડે છે તે વાત તદ્દન ખોટી ને નિર્મૂળ છે.

ઉપરની ઐતિહાસિક સંશોધનપૂર્વક આપેલી દલીલોથી સંપ્રદાયના વિરોધીઓએ જે ગપગોળા ચલાવ્યા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિરુદ્ધ કાદવ ફેંકવા માંડયો છે તેમાંની સત્ય હકીકત નિષ્પક્ષપાત વાંચનાર કલ્પી શકશે, હાલ આટલુંજ બસ છે.

શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય.

(લેખકઃ—પ્રોફેસર શ્રીયુત ગોવિંદલાલ હરિગોવિન્દ ભટ્ટ M. A.)

તા. ૧-૧૧-૨૫ ના "ગુજરાતી" ના અંકમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્યના સંબંધમાં મારા સ્નેહી ભાઇ જેઠાલાલનો લેખ વાંચ્યો. આ વિષયમાં મેં પણ કેટલાંક ઐતિહાસિક સાધનો એકઠાં કર્યા હતાં. આમાનાં ઘણાંખરાંનો ઉપયોગ રા. જેઠાલાલે સ્વતંત્ર રીતે કર્યો છે. બાકીનાં સાધનો નીચે આપવામાં આવ્યાં છેઃ-

ચૈતન્યે કેટલામે વર્ષે લગ્ન કર્યું તે પ્રશ્ન વિચારવા જેવો છે. એ મત પ્રમાણે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદમે કે પંદરમે વર્ષે થયું. (જુઓ The Chaitanya movement by M. T. Kennedy, M. A. 1925, p. 15. 'Soon after his (Chaitanya's) father's death, when the boy was only 14 or 15 years of age, he married and became a house-holder,') બીજા મત પ્રમાણે તેમનું લગ્ન અઢારમે વર્ષે થયું. (જુઓ Vaisnavism etc. etc. by Sir R. G. Bhandarker, 1913, p. 83 'when he (Chaitanys) was eighteen years of age he married a wife of the name of Lachmi Dabi........) આ બે મતમાંથી એટલું તો પ્રતીત થાય છે કે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદથી અઢાર વર્ષની અંદર થએલું હોવું જોઈએ, આ પ્રમાણે જ્યારે ચૈતન્યનું લગ્ન થયું ત્યારે પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની ઉમ્મર વીસથી છવ્વીસ વર્ષ સુધીની હોવી જોઇએ. [શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઈ. સ. ૧૪૭૯, ચૈતન્યપ્રભુનો જન્મ ઇ. સ. ૧૪૮૫ (મી. કેનેડીના મતે ઇ. સ. ૧૪૮૬)] શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રીસમે વર્ષે લગ્ન કર્યું હતું એમ સાંપ્રદાયિક પુસ્તકો ઉપરથી જણાય છે. આ ઉપરથી એટલું તો નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છે કે ચૈતન્યના લગ્ન સમયે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યાશ્રમમાં હતા, પછી એમની પુત્રીને પરણવાનો અવસરજ ક્યાં રહ્યો ! એ વાત ગંધર્વનગર જેવીજ લાગે છે.

હવે બીજી વાત. કેટ લાક ઐતિહાસિક પુસ્તકો વાંચતાં માલમ પડે છે કે *ગૌરાંગ મહાપ્રભુ ચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તે નદિયામાંજ રહેતા.* સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગ-પ્રવર્તકનું નામ શ્રીવલ્લભાચાર્ય, આ નામના માત્ર સામ્યથી ભ્રાન્તિ થઇ કે પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ચૈતન્યના સસરા થાય થાય પણ વસ્તુસ્થિતિ એમ નથી. આ વિષે Dr. T. Farquhar, M. A. D. Litt, પોતાના An outline of the religious literature of India, 1920' નામના પુસ્તકના ૩૧૨ માં પૃષ્ઠ ઉપર નીચે પ્રમાણે લખે છેઃ— '*But he (Vallabhacharya) was not his (Chaitanya's) father-in-low* the two men had the same name, but that is all the basis that the story has.' આ ઉપરાંત 'The Chaitanya movement, 1925' નામના પુસ્તકમાં ૧૫ મા પૃષ્ઠ ઉપર મી. કેનેડી લખે છે કેઃ—' Owing to the fact

of his (Chaitanya's) father-in-laws name being Vallabhacharya, it has been stated in various English works that Chaitanya was son-in law to the founder of the Vallabhacharyas; and, because of this fact a relationship has been traced between the two sects. *This is pure fiction*, as Chaitanya's father-in-law was a Nadia house-holder, woile the founder of the Vallabhacharyas was not only from the Deccan, but was a contemporary of Chaitanya himself."

આ સર્વ ઉપરથી નીચેની બે વાત નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છેઃ—

(૧) બંગાલાના કૃષ્ણચૈતન્યનાં લગ્ન વખતે પુષ્ટિમાર્ગપ્રચારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યાવસ્થામાં હતા.

(૨) કૃષ્ણચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તેથી જ ચૈતન્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના જમાઇ હતા એમ ભ્રમ થયો.

હવે આ બે સિદ્ધ વસ્તુથી સ્પષ્ટ થશે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને ચૈતન્યનો સંબંધ સસરા જમાઇનો નહતો. એ વાત ભ્રાન્તિથી જ પ્રચલિત થઇ છે, એમ સુજ્ઞ વાચકને જણાયા વિના નહિ રહે.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્ય.

(લેખકઃ પ્રોફેસર શ્રીયુત જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

સાહેબ, ગત "ગુજરાતી" ના અંકમાં મારા સ્નેહી રા. ભટ્ટ એમ. એ. તથા મી. ભટ્ટાચાર્યનાં પત્રો મેં વાંચ્યા છે. રા. ભટ્ટાચાર્યનાં ચર્ચાપત્રો એક જ અંકમાં પ્રસિદ્ધ થએલાં જોઇને હું ઘણો ખુશી થયો છું. કારણ કે મારાં કથનને વધુ સમર્થન આપનાર સજ્જડ પુરાવા રા. ગોવિંદલાલ ભટ્ટે આપેલા છે. એટલે જો મી. ભટ્ટાચાર્ય તે ચર્ચાપત્ર સાવધાનતાથી વાંચી જોશે, તો તેમને આ વિષયમાં કોઈ પણ શંકાને સ્થાન નહિ રહે.

મી. ભટ્ટાચાર્યને મારે જણાવવું જોઇએ, કે જો તમે ઇતિહાસના સત્યને કબુલતા હો તો રા. ભટ્ટની દલીલને તથા તેમણે આપેલાં ઐતિહાસિક પ્રમાણોને કબૂલે જ તમારો છૂટકો છે. તેમાંથી એક પણ મારા આપેલાં અનુમાનથી વિરુદ્ધ અનુમાન તારવી શકાય એમ નથી.

મેં જે દલીલો આપી છે તે કેવલ સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાંથી નથી આપી ઉલટું શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય સંબંધી જે સાહિત્ય પ્રકટ થયેલું છે તેમાંથી પ્રમાણભૂત સંવતો લઇને, મારા કેસને મજબુત કર્યો છે. ભારતશ્રમણ, મી. ગ્રાઉઝ, તથા ડૉ. Farquhar તથા મી. Kennedy જેવા ઐતિહાસિક સંશોધનમાં રસ લેનાર તથા સત્યને સમજનાર ગૃહસ્થોના આ બાબતમાંથી પૂરાવા એકઠા કરવામાં આવ્યા છે.

વૃંદાવનદાસના ચૈતન્યભાગવતમાં શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન વલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એમ જ કહેવામાં આવ્યું છે; અને તેના ખણ્ડનમાં

મેં મારા લેખમાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો આપ્યાં છે. તેમાંથી મેં મુખ્ય મુદ્દાઓ તારવેલા. (૧) શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે થયું નથી. આ દલીલને બાબુ સાધુચરણદાસના ભારતભ્રમણમાં આપેલી હકીકતથી વધારે ટેકો મળે છે. કારણ શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ બાધાભારે કહેલું છે. (૨) બીજું અનુમાન એ છે કે જો વલ્લભાચાર્યની પુત્રી સાથે લગ્ન થયેલું એવી દલીલ ઘડીભર દલીલ ખાતર માની લઈએ તો પણ અહિં નામના સંભ્રમથી પુષ્ટિમાર્ગસંસ્થાપક બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો ન જ હોઇ શકે, કારણ કે જો શ્રીકૃષ્ણકૃષ્ણચૈતન્ય અને બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સમકાલીન હતા, છતાં ચૈતન્યના લગ્નની સંવતો મળતી નથી, તેથી ઇતિહાસ દૃષ્ટિથી કાલની અસંગતિ આવે છે.

આ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી એક ગણવા નહિ આ સંબંધી ફકરાઓ મારા મિત્ર રા. ભટે મી. કેનેડીના "The Chaitany movement" નામના પુસ્તકમાં પૃ. ૧૫ ઉપર આપેલા, તેનું અવતરણ કર્યું છે, તે પુનઃ વાંચવાને મી. ભટ્ટાચાર્યને હું ભલામણ કરું છું.

મી. ભટ્ટાચાર્ય ! એ ફકરાનું લખાણ પુષ્ટિસંપ્રદાયની વ્યક્તિએ કરેલું નથી, માટે તેને બરાબર સાવધાનતાથી વાંચશો અને તેનું મનન કરશો, અને તમે જે પ્રકારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ઉપર કાદવ ફેંકીને પરિણામ ઉપજાવવાનો દુરાગ્રહ કરો છો તેને ત્યજી દેશો.

વૃંદાવનદાસની હકિકત ખોટી છે એવું હું કહેતો નથી, તે છતાં જો તેને કબૂલ કરતા હો તો પણ અમારો મત બિલકુલ ડોલતો નથી. કારણ બ્રહ્મવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું લગ્ન કોઈ પણ રીતે સાબીત થઈ શકતું જ નથી. શ્રીવલ્લભાચાર્યને લક્ષ્મી નામની પુત્રી જ નહોતી. મી. ભટ્ટાચાર્યે ઐતિહાસિક પ્રમાણોથી પોતાનો મત સિદ્ધ કરવો પડશે. ભદ્રંભદ્રની પ્રાચીન શૈલીથી અત્યારનો શિક્ષિત વર્ગ તેમના કથનોમાં તથા અનુમાનોમાં શ્રદ્ધા મૂકી શકશે નહિ; ઉલટા એવા પ્રયત્નો તર્કના અભાવને લીધે હાસ્યાસ્પદ લેખાશે.

હવે મી. ભટ્ટાચાર્ય જે એવું કહે છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યનો સંવત સદ્‌ગત લલ્લુભાઈના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે તે આધુનિક અગર કાલ્પનિક છે; તે વિષે હું તેમને જણાવીશ કે તે વાતમાં કાંઇ પણ વજુદ નથી. શ્રીશંકરાચાર્યનો જન્મ વગેરેની બાબતમાં કાલગણના માટે વિદ્વાનોમાં એકમત જોવામાં આવતો નથી પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સંબંધમા એવું બન્યું નથી. શંકરાચાર્યની કાલગણનામાં હજારો વર્ષોનો મતભેદ વિદ્વાનોમાં દૃષ્ટિગોચર થાય છે પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યના જીવનપ્રસંગોના ઉલ્લેખો જે જે એતદ્દેશીય અગર યુરોપીય વિદ્વાનોએ કરેલા છે તેમાં ચોક્કસ સંવતો મળી આવે છે, તેથી મી. ભટ્ટાચાર્યને તેમના સાથીઓને એ બાબત ન.

કાંઇ પણ શંકા લેવા જેવું નથી. સદ્દગત લલ્લુભાઇએ જે સંવત લીધો છે તે એમના મગજમાંથી ઉપજાવી કાઢયો નથી પણ તેમની પહેલાંના પ્રાચીન લેખોમાં આપેલા સંવતોજ તેમણે લીધા છે.

શ્રીદ્વારકેશજી નામના ગોસ્વામી આજથી ૧૫૦ વર્ષ ઉપર થઈ ગયા, તેમણે મૂલ પુરુષ નામનો ગ્રંથ લખ્યો છે તેમાં પણ સંવત ૧૯૩૫ ની સંવત આપી છે.,

'ધન્ય સંવત પંદ્રહા, પેતીસ માધવ માસ હેં:
કૃષ્ણ એકાદશી શ્રીવલ્લભ પ્રકટ વદન વિલાસ હે.

વળી બીજા પ્રાચીન પદ્યમાં પણ તેજ સંવત દ્દષ્ટિગોચર થાય છે.

તત્ત્વ[5] ગુણ[3] બાણ[5] ભુવિ[1] માધવાસિત તરણિ પ્રથમ ભગવંદ દિવસ પ્રકટ લછમન સુવન, ધન્ય ચંપારણ્ય મન ત્રૈલોક જન અન્ય અવતાર હોય હે ન એસો ભુવન!

આ પંક્તિ પ્રમાણે ભૂ=૧, બાણ=૫, ગુણ=૩, અને તત્ત્વ=૫, સંખ્યા લેતાં સંવત ૧૫૩૫ નીકળે છે.

સગુણદાસજી શ્રીમહાપ્રભુજીના સમકાલીન હતા, તેમણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વધાઈઓ ગાઇ છે, તેના આધારે તથા 'નિજ વાર્તા તથા ઘરૂ વાર્તા' તેમજ શ્રીગિરિધરજીનાં વચનામૃત વગેરેના આધારે એ જ સંવત નક્કી થયેલો છે; અને "જન્મપત્રિકા" માં એ જ સંવત આપણે જોઇએ છીએ. તેથી સદ્દગત લલ્લુભાઇએ જ આ સંવત જાહેરમાં મૂકયો છે એ કહેવું હડહડતું જુઠું છે! ભારતભ્રમણ ભા. ૧ નાં પૃષ્ઠ=૨૨૯ બાબુ સાધુચરણદાસ પણ નીચે પ્રમાણે કહે છે: (આ પુસ્તકના ઉપોદ્દઘાતમાં લેખક લખે છે કે તેણે ૧૮૯૧ માં ઐતિહાસિક વિગતોની શોધની નોંધ કરેલી છે, એટલે એમના અભિપ્રાય ૧૯૦૭ પૂર્વના છે.)

मदरास देश–तैलंगदेशके कांकरवल्ली गांवमे भारद्वाज गोत्र तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मणभट्टजी रहते थे। उन्होंने एक समय काशी–यात्रा की। विहारमदेशके चम्पारण्यमें चौरा गांवके निकट उनकी पत्नी इल्लमागारूके गर्भसे सम्वत १५३५ वैशाख वदी ११ को श्रीवल्लभाचार्यजीका जन्म हुआ॥

આ બધી દલીલો ઉપરથી આટલું પ્રતીત થશે કે આ સંવત આધુનિક નથી, તેથી તે સંવતના આધારે જે અનુમાનો અમે ઐતિહાસિક પુરાવાથી આપ્યાં છે તે કોઇ પણ રીતે ખોટાં નથી, પણ અમારી દલીલને તે વધારે મજબુત બનાવે છે.

સદ્દગત લલ્લુભાઇએ શ્રીવલ્લભાચાર્યનો જન્મકાલ નક્કી થયો નથી, એવું કોઈ પણ સ્થળે લખ્યું હોય તો તે મેં વાંચ્યું નથી. મી. ભટ્ટાચાર્યે જો તે વાંચ્યું હોય તો સ. લલ્લુભાઇના શબ્દોને જાહેરમાં મૂકશે, તો તે વિષેનો હું મારો અભિપ્રાય આપીશ.

આકી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી જગન્નાથ પધારેલા છે અને બંગાળમાં પધાર્યા નથી, તેનું કારણ કે જગન્નાથ એ ઓરીસામાં છે. મી. ભટ્ટાચાર્યને ભૂગોળજ્ઞાન પણ ઓછું હોય એવું જણાય છે.

જગન્નાથપુરીમાં શ્રીમહાપ્રભુજી પધાર્યા તે માટે શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરે ? અનેક જીવોના ઉદ્ધાર કરવાને પોતે ત્યાં પધાર્યા છે, અને વળી તે પ્રદેશ તામસ નથી. આ વિષેનો પ્રશ્ન કરનાર ભટ્ટાચાર્યની બુદ્ધિની મને ખરેખર દયા આવે છે, તો તેમની સામે હું એમ પણ પ્રશ્ન કરૂં કે વેદનું પ્રામાણ્ય નહિ સ્વીકારનાર અને છતાં સનાતનધર્મી કહેવડાવનારે પણ શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું નહિ ? શ્રીશંકરાચાર્ય બ્રહ્મસૂત્ર ભાષ્યના બીજા અધ્યાયમાં વેદનું પ્રામાણ્ય પણ સ્વીકારતા નથી, તો તેમણે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું હશે વારૂ ? આવો પ્રશ્ન પૂછનાર વેદને સમજતોજ નથી. વળી વેદની શ્રુતિઓના letter ને વળગવાનું તે સમર્થ આચાર્યો આપણને કહેતા નથી; પણ તેના રહસ્યને spirit ને જોવું જોઇએ. વેદપાઠી અગર "પઢો પોપટજી અચરે રામ" એવી રીતે વેદનો ઉપયોગ કરનારથી વેદો પણ ત્રાસે છે. જો આ બાબતનો ઉલ્લેખ મી. ભટ્ટાચાર્યે ન કર્યો હોત તો વધારે સારૂં થાત; કારણ કે મૂળ મુદ્દાની સાથે આની કશી પણ સંગતિ નથી.

આખરે સત્ય વસ્તુ સત્ય જ રહે છે. મહાન આચાર્યોની નિંદા કરનાર પ્રયત્નમાં પાછા ફરે છે. જો તે ઇરાદાથી મી. ભટ્ટાચાર્ય ચર્ચાપત્રના યુદ્ધમાં ઝંપલાવતા હોય તો તેમની તે બાબતમાં કફોડી સ્થિતિ ન થાય તે માટે હું ચેતાવવા માંગુ છું.

श्रीविठ्ठलेश्वरचरित्र.

उन्मिषत्कुमुदबान्धवरोचिःपाटला इव दिशो विदधानाः ॥
मोहयन्ति मदयन्ति विदग्धान् विठ्ठलेशपदपल्लवभासः ॥ १ ॥
पूर्णसप्ततिवर्षाणि दिनान्यष्टौ च विंशतिः ॥
वसुधायां व्यराजन्त श्रीमद्विठ्ठलदीक्षिताः ॥ २ ॥

પ્રાદુર્ભાવમહામહોત્સવ.

શ્રીમદગ્નિકુમાર શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરનું પ્રાકટ્ય સંવત્ ૧૫૭૨ ના માગ પૌષ કૃષ્ણનવમીના પરમ મંગલમયદિને થયું હતું. એઓશ્રીના પ્રાકટ્યમહોત્સવનો આનંદ દૃષ્ટિગોચર કરીને એઓશ્રીના કૃપાપાત્ર મહાનુભાવી શ્રીગોપાલદાસજી શ્રીવલ્લભાખ્યાન ગ્રન્થમાં તે સુંદર રીતે વર્ણવે છે. એવા લૌકિક વાણીથી અવર્ણનીય અલૌકિક પ્રસંગો ગુરૂકૃપાભાજન મહાનુભાવી કવિવરો જ આલેખી શકે છે. એનાં ઉદાહરણરૂપ ઉક્ત ભગવદીયકૃત વલ્લભાખ્યાન છે. શ્રીવલ્લભાખ્યાનમાંનું "પૌષ મધ્યાહ્નને

નોમિ શ્રીનાથજી ?" એ પદ આપશ્રીના પ્રાકટયમહામહોત્સવનું એવું ઉત્તમ ચિ- ત્રદૃષ્ટિમાં લાવે છે કે મહોત્સવનું સાક્ષાદ્દર્શન કરવા આપણે જાણે હમણાં જ ભાગ્ય શાળી થયા હોઇએ ! આપશ્રીનું પ્રાકટયસ્થળ કાશી પાસે આવેલું ચરણાટ છે આપશ્રીના પ્રાકટય પહેલાં શ્રીમદાચાર્યચરણ જ્યારે પંઢરપુરમાં પધાર્યા હતા ત્યારે શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી (પાંડુરંગના સેવ્ય) એ સૂચના કરી હતી કે અમારી આપશ્રીને ત્યાં નામસામ્યમાત્રે કરીને પુત્ર તરીકે પ્રકટ થવાની ઇચ્છા છે. અર્થાત્ આપશ્રીને ત્યાં જે પુત્ર પ્રકટ થાય તેનું નામ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી રાખવાની મારી સૂચના છે શ્રીમદાચાર્યચરણે શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીની આ સૂચનાને આજ્ઞા તરીકે માન્ય રાખી અને શ્રીપ્રભુચરણનાં પ્રાકટય પછી શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી એ નામ ધર્યું.

યજ્ઞોપવીત અને વિદ્યાધ્યયન.

શાસ્ત્રોક્ત વિધિને અનુસરીને શ્રીમદાચાર્યચરણે કાશી પાસેના ચરણાદ્રિમાં (ચરણાટમાં) જેને ચુનારગઢ કહેવામાં આવે છે ત્યાં પધારીને પોતાના બન્ને કુમારો-શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને યજ્ઞોપવીત પ્રદાન કર્યું. યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર થયા પછી કાશીમાં મધુસૂદનસરસ્વતી નામના વિદ્વાન્ સંન્યાસી પાસે શાસ્ત્રાધ્યયન કરવા માટે શ્રીવિઠ્ઠલાધીશને આજ્ઞા કરી. શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરે અતિત્વરાથી શાસ્ત્રાધ્યયન પ્રારંભ્યું. વેદ, વેદાંગ આદિનું અધ્યયન સારી પેઠે કર્યું. થોડા સમય પછી એ વિશ્વનાભટ્ટની કન્યા શ્રીરુક્મિણી સાથે શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરનાં લગ્ન કર્યા.

પિતૃચરણનો આસુરવ્યામોહ.

આપશ્રીનું વય ૧૭ વર્ષનું થવા આવ્યું. તે અરસામાં પ્રભુની ત્રણવાર આજ્ઞા થયાથી શ્રીમદાચાર્યચરણે નિત્યલીલામાં પધારવાનો નિશ્ચય કર્યો. શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરને સ્વસમીપ બોલાવીને, પોતાના કંઠની માળા એઓશ્રીના કંઠમાં પધરાવીને માર્ગ સંબંધિ જે કાંઇ જ્ઞેય હોય તે શ્રીદામોદરદાસજી આદિ નિજ અંતરંગ ભગવદીયો પાસેથી જાણી લેવાનું કહીને પોતે ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો. લગભગ ૪૦ દિન સુધી સંન્યાસ સ્વીકાર્યો. સંવત્ ૧૫૮૭ ના આષાઢ શુદ્ધ તૃતીયાને દિવસે ગંગાજીના તટ ઉપર પધાર્યા. મધ્યાહ્નનો સમય પાસે આવ્યો. પોતાના બે કુમાર અને અન્ય નિજ સેવકોને શિક્ષાશ્લોકોથી ઉપદેશ આપ્યો, અને પ્રભુ નિકટ પધારવા વિજય કર્યો. આચાર્યશ્રી ભૂતલ ઉપર ૫૨ વર્ષ, ૨ માસ, ૭ દિન સુધી બિરાજ્યા.

અડેલમાં સ્થિતિ.

આચાર્યચરણના આસુરવ્યામોહ પછી શ્રીમદ્વિઠ્ઠલાધીશ્વર પિતૃચરણની આજ્ઞા મુજબ અડેલમાં બિરાજતા. ત્યાં પ્રભુની સેવા કરતા. જે જે જિજ્ઞાસુ વૈષ્ણવો ત્યાં આવે તેને શ્રીવાક્પતિવાક્સુધાનું પાન કરાવતા. શાસ્ત્રાર્થ કરવા આવનાર પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરીને તેઓના માનનું ખંડન કરતા. અનેક પંડિતો આપશ્રીનાં અપૂર્વ પાંડિત્ય, પાંખડ મતોનું ઉન્મૂલન કરવાની વેદસિદ્ધ અદ્ભુત યુક્તિ, નિજપક્ષ

સમર્થન કરવા માટેનું અગાધ બુદ્ધિબલ આદિને અવલોકીને મુગ્ધ બની જતા. આપશ્રીએ અડેલમાં બિરાજીને શ્રીમહાચાર્યચરણના અપૂર્ણ રહેલા ગ્રંથો પૂર્ણ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. બ્રહ્મસૂત્ર ઉપરનાં પિતૃચરણપ્રણીત અણુભાષ્યમાં છેલ્લા દોઢ અધ્યાય ઉપર ભાષ્ય લખીને અણુભાષ્યને સંપૂર્ણ કર્યું. તત્ત્વદીપનિબંધાંતર્ગત ભાગવતાર્થ પ્રકરણનો પ્રકાશ પિતૃપાદે તૃતીયસ્કંધ સુધી જે અપૂર્ણ રચ્યો તે અપૂર્ણ પ્રકાશ પંચમસ્કંધ સુધી આપશ્રીએ લખ્યો. પિતૃચરણના શ્રીસુબોધિની આદિ અનેક ગ્રંથ ઉપર આપશ્રીએ સુંદર ટીકાઓ લખી, અને તેમ કરીને શ્રીમહાચાર્યચરણની અનવગમ્ય વાણીનો સ્વાદ લેવા દૈવસૃષ્ટિને ભાગ્યશાળી બનાવી. આપશ્રીએ રચેલા ગ્રંથોની ટીપ નીચે પ્રમાણે છેઃ—

શ્રીવિઠ્ઠલેશપ્રભુપ્રણીત ગ્રન્થો.

(૧ વિદ્વન્મંડન, ૨ અણુભાષ્યનો અંતિમ ૧ાા અધ્યાય, ૩ નિબંધપ્રકાશ (૩ સ્કંધથી ૫ સ્કંધ સુધી), ૪ શ્રીસુબોધિનીજી ઉપર ટિપ્પણી, ૫ ભક્તિહંસ, ૬ ભક્તિહેતુ, ૭ ભક્તિનિર્ણય, ૮ ભક્તિજીવન, (?) ૯ ગીતાપ્રથમાધ્યાયટીકા, ૧૦ ગીતાતાત્પર્ય, ૧૧ ન્યાસાદેશવિવૃત્તિ, ૧૨ ગીતાહેતુ (?), ૧૩ ગાયત્રીકારિકા, ૧૪ ષોડશ ગ્રંથ ટીકા. (૧ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ટીકા, ૨ યમુનાષ્ટક ટીકા, ૩ નવરત્નપ્રકાશ, ૪ સિદ્ધાંતરહસ્ય વિવરણ). ૧૫ શૃંગારરસમંડન* ૧૬ રસસર્વસ્વ, ૧૭ વ્રતચર્યા, ૧૮ સ્વપ્નદર્શન, ૧૯ ગુપ્તરસ, ૨૦ સેવાહ્નિક, ૨૧ પુરુષોત્તમપ્રતિષ્ઠાપ્રકાર, ૨૨ શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર, ૨૩ શ્રીવલ્લભાષ્ટક, ૨૪ સ્ફુરત્કૃષ્ણપ્રેમામૃત, ૨૫ શ્રીગોકુલાષ્ટક, ૨૬ સ્વામિન્યષ્ટક, ૨૭ સ્વામિનીસ્તોત્ર, ૨૮ ભુજંગપ્રયાતાષ્ટક, ૨૯ લલિતત્રિભંગસ્તોત્ર, ૩૦ શ્રીયમુનાષ્ટપદી, ૩૧ આર્યા, ૩૨ વિજ્ઞપ્તિ, ૩૩ પ્રબોધ, ૩૪ ચતુઃશ્લોકી, ૩૫ પ્રેમામૃતભાષ્ય, ૩૬ જૂત્રાસુરચતુઃશ્લોકીટીકા, ૩૭ પ્રેંખપર્યંકશયનમ્, ૩૮ મંગલમંગલમ્, ૩૯ ભાવિરંકુરિતમ્, ૪૦ સૌન્દર્યનિજહૃદ્ગતમ્, ૪૧ ગદ્યાર્થ, ૪૨ જન્માષ્ટમીનિર્ણય, ૪૩ રામનવમીનિર્ણય. ૪૪ ગીતગોવિન્દપ્રથમાષ્ટપદીટીકા, ૪૫ આધારનિરૂપણ, ૪૬ પત્રો, ૪૭ રક્ષાસ્મરણમ્.

ઉપર જણાવેલા ગ્રન્થો ઉપરાંત શ્રીમદ્ભાગવતના શ્લોકો, શ્રીસુબોધિનીજી, આદિ ઉપર પ્રકીર્ણ લેખો ઘણા છે.

આપશ્રીનો મુદ્રાલેખ.

जानीत परमं तत्त्वं यशोदोत्सङ्गलालितम् ।
तदन्यदिति ये प्राहुरासुरांस्तानहो बुधाः ॥१॥

શ્રીમહાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકોપ્રતિ અનન્ય ભાવ.

શ્રીમહાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકો પ્રતિ શ્રીગુસાંઈજીનો ભાવ અવર્ણ-

*૧૫ માં નંબરથી ૧૮ નંબર સુધીના ગ્રન્થોમાં ૧૬-૧૭ એક છે, અને તેનો સમાવેશ ૧૫ માં નંબરમાં થઈ જાય છે.

નીયજ છે. શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપની ઝાંખી કરતાં જણાય છે કે આપશ્રીજ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનું સ્વરૂપ જાણવા સમર્થ છે. પોતેજ પોતાનું સ્વરૂપ જાણે, અન્ય ક્યાંથી જાણે ? શ્રીમહાપ્રભુજીનાં શ્રીદામોદરદાસાદિક સેવકો પ્રતિ આપશ્રીનો ભાવ અત્યદ્ભુત હોય એમ જણાય છે. આપશ્રી એક વેળાએ બાલ્યાવસ્થામાં ખેલી રહ્યા હતા, ત્યારે શ્રીદામોદરદાસજીએ આજ્ઞા કરી કે ' બાવા, યહ માર્ગ ખેલવે કુદવેકો નહિ હે.' શ્રીમહાપ્રભુ જેમના હૃદયમાં બિરાજે છે એવા એક અનન્ય સેવકની આજ્ઞાને શ્રીમસ્તક ઉપર ચડાવીને આપશ્રીએ ભક્તપરવશતા પ્રકટ કરી છે. શ્રીકૃષ્ણદાસ અધિકારીએ આપશ્રીની પ્રભુસેવા બંધ કરી ત્યારે પણ આપશ્રીએ એ અધિકારીની આજ્ઞાને માન આપીને પ્રભુવિપ્રયોગનો અનુભવ કર્યો. આપે સમર્થ હોઇને પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવકની આજ્ઞાનો અનાદર ન કર્યો. આપશ્રીએ પ્રભુસેવા છુટી જવાથી છ માસ પર્યંત પ્રભુવિરહનો અનુભવ કર્યો છે. એ સમયમાં પ્રભુને આપશ્રીએ વિજ્ઞપ્તિપત્રો લખ્યા છે. એ પત્રો ' વિજ્ઞપ્તિ ' એ નામથી અત્યારે પણ પ્રસિદ્ધ છે. આ વિજ્ઞપ્તિપત્રો એટલા તો હૃદયવેધક છે કે તેના અર્થનું અનુસંધાન માત્ર થતાં રોમાંચ શરીર થઇ જાય અને સાશ્રુ નેત્ર બની જાય છે. આ ઉપરાંત આપશ્રીએ અનેક પત્રો સ્વબાલકો ઉપર પણ લખેલાં છે.

ભારતમાં પર્યટન—આપશ્રી આર્યાવર્તના કયા કયા સ્થલમાં પધાર્યા હતા તે નીચે લખેલી આપશ્રીની બેઠક ઉપરથી જણાશે.

૧ શ્રીગોકુલમાં બે બેઠક છે. ૨ શ્રીવૃંદાવન. ૩ શ્રીકુંડઉપર. ૪ પરાસોલીમાં. ૫ ચંદ્રસરોવર ઉપર, ૬ ગોપાલપુરમાં ૭ કામવનમાં, ૮ પ્રેમ સરોવર ઉપર, ૯ સંકેતવટ, ૧૦ રિઠોરામાં, ૧૧ કરેલા; ૧૨ કોટવનમાં, ૧૩ ચીરઘાટમાં, ૧૪ વત્સવનમાં, ૧૫ વેલવનમાં, ૧૬ ચરનાટમાં, ૧૭ અડેલમાં, ૧૮ ગૌડ દેશમાં (નારાયણદાસજીના ઘરમાં.) ૧૯ સોરમજીમાં, ૨૦ ગોધરામાં, ૨૧ અલીયાના (મહુધા) ૨૨ અસારવામાં (રાજનગર), ૨૩ ખંભાતમાં, ૨૪ જામનગરમાં, ૨૫ ગંગા ગોડગઢ (જબલપુર પાસે), ૨૬ દ્વારકામાં, ૨૭ રામજીના મંદિરમાં (દ્વારકાની પાસે) ૨૮ ગુરુઘટમાં.

ઉપર પ્રમાણે શ્રીગુસાંઇજીની ૨૭–૨૮ બેઠકો છે. ઉપરથી સહજ જણાશે કે આપશ્રીએ ભારતવર્ષનાં ઉક્ત સ્થળોને પવિત્ર કર્યાં હતાં, સુયોગ્ય સાધનોનાં અભાવથી તે તે સ્થળોમાં પધાર્યાના દિનો અને ચરિત્રોની નોંધ યથાસ્થિત આપવી એ કાર્ય અસંભવિત છે. જે કાંઇ લખેલું મળ્યું, તેને સંક્ષેપમાં અત્રે ઉતાર્યું છે.

આપશ્રીના અનન્ય સેવકો—આપશ્રીએ અનેક જીવોને શરણે લીધા છે. આપશ્રીના મુખ્ય કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોનાં ચરિત્રોનું વર્ણન ' બસો બાવન વૈષ્ણવોની વાર્તા ' માં છેજ. શ્રીમહાપ્રભુજીના કૃપાપાત્ર જેમ સૂરદાસજી, શ્રીપરમાનંદદાસજી, શ્રીકૃષ્ણદાસજી, શ્રીકુંભનદાસજી એ ચાર સખા છે, તેમ શ્રીપ્રભુચરણના કૃપાભાજન પણ શ્રીનંદદાસજી, શ્રીચતુર્ભુજદાસજી, શ્રીછીતસ્વામી એ મુખ્ય ચાર સખા છે,

એમ વાર્તાપ્રસંગ ઉપરથી જણાય છે. આ અષ્ટ ભગવદીયોના લીલાવિષયક કીર્તનો પ્રભુપ્રમત્ત ગવાય છે અને તેનો આશય હૃદયને સ્પર્શ કરે છે.

આપશ્રીનો પરિવાર—આપશ્રીનાં પ્રથમ પત્નીનું નામ શ્રીરુક્મિણીવહૂજી અને દ્વિતીય પત્નીનું નામ શ્રીપદ્માવતીવહૂજી. શ્રીરુક્મિણીવહૂજીથી નવ પુત્ર અને નવ પુત્રી પ્રકટયાં હતાં. ત્રણ પુત્રોએ બાલપણમાંજ લીલા કરી હતી. તેમજ પાંચ પુત્રીઓ પણ લીલામાં પધાર્યાં હતાં. શ્રીપદ્માવતીવહૂજીથી એક પુત્ર પ્રકટ થયા હતા, આપશ્રીનો વંશવિસ્તાર આ પ્રમાણે વૃદ્ધિંગત થતો ગયો હતો.

પુત્રરત્ન.

૧ શ્રીગિરિધરજી પ્રાકટ્ય સં. ૧૫૯૭ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
૨ શ્રીગોવિંદરાયજી પ્રા. સં. ૧૫૯૯ ના માર્ગશીર્ષ (વ્રજ) વદ ૮
૩ શ્રીબાલકૃષ્ણજી પ્રા. સં. ૧૬૦૬ ના (વ્રજ) આશ્વિન વદ ૧૩
૪ શ્રીગોકુલનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૦૮ ના માગશીર્ષ સુદ ૭
૫ શ્રીરઘુનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૧ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
૬ શ્રીયદુનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૩ ના ચૈત્ર સુદ ૬
[illegible]
૭ શ્રીઘનશ્યામજી (શ્રીપદ્માવતીજીના કુમાર) સં. ૧૬૨૮ ના માર્ગશીર્ષ (વ્રજ) વદ ૫૩.

શ્રીરુક્મિણીવહૂજીથી પ્રકટ થયેલાં બેટીજીઓ:—૧ શ્રીશોભાબેટીજી, ૨ શ્રી યમુનાબેટીજી, ૩ શ્રીકમલાબેટીજી, શ્રીદેવકાબેટીજી.

ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનો વંશવિસ્તાર વૃદ્ધિ પામ્યો. હાલમાં તો આપશ્રીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી ષષ્ઠ પુત્ર શ્રીયદુનાથજી મહારાજનો વંશ ભૂતલ ઉપર છે.

નિત્યલીલાપ્રવેશ—ઉપર પ્રમાણે દૈવી સૃષ્ટિનો સમુદ્ધાર કરીને, જગતમાં સર્વોદ્ધારક ભક્તિમાર્ગનો પ્રકાશ કરીને, જનોને મુગ્ધ કરનારા પાખંડમતનું ખંડન કરીને શ્રીમત્પ્રભુચરણ સં. ૧૬૪૨ ના માઘ વદ ૭ ના રોજ શ્રીગિરિરાજજીની કંદરામાં પધાર્યાં. શ્રીગિરિધરજી આદિ નિજ બાલકોને પોતાના શ્રીઅંગ ઉપરનું વસ્ત્ર આપીને તેને આધારે સર્વ વૈદિક ઔર્ધ્વદૈહિક ક્રિયા કરવાનું જણાવ્યું.

ઉપસંહાર.

આપશ્રીના અલૌકિક-દિવ્ય-ચરિત્રોનું આલેખન થવું લૌકિક વાણીથી અશક્ય છે, તેમજ એ ચરિત્રની રસમયતા, આનંદમયતા અનુભવૈકગમ્ય છે, એટલે અત્રે વિશેષ ન લખતાં વિરમીશું.

શ્રીગુસાંઇજીનો ગુજરાતનો પ્રવાસ.

[આ ઇતિહાસના ઉલ્લેખો પ્રાંતિજના મંદિરના એક અતિપ્રાચીન પુસ્તકમાં છે.]

શ્રીગુસાંઇજી—સંવત ૧૬૦૦ માં દ્વારિકા દર્શનાર્થે પધાર્યાં. પહેલાં આપ ડાકોર પધાર્યા, આપશ્રીની સાથે શ્રીમત્પ્રભુજીના સેવકો અને બીજા સ્નેહીઓ પણ

હતા. હરિવંશજી પણ સાથે હતા. તે વખતે આપશ્રીનું વય લગભગ ૨૦ વર્ષ હતું. (૧૮ વર્ષનું હોવું જોઈએ?) આપશ્રી દ્વારિકા યાત્રા કરીને ફરી ગુજરાત પધાર્યા. ત્યારે વસરી ગામમાં રાજા ભારમલ્લ વગેરે ઘણા સેવક થયા અને રાજાના મામાના ગામમાં કોઠારી જેત, રામા, ભીમા એમને ઘેર પોતે પધાર્યા. એ બધાની ઉપર અનુગ્રહ કર્યો તે વખતે કોઠારી હરજીવન છ વરસનો હતો ત્યારે તેની માએ તેને શ્રીગુસાંઈજીને ચરણે ધર્યો, શ્રીગુસાંઈજીએ કૃપા કરીને તેને અષ્ટાક્ષર મંત્ર આપ્યો. પછી ત્યાંથી આપ વઢાલી ગામમાં પધાર્યા અને ત્યાંથી રાજનગર પધાર્યા. રાજનગરમાં (અમદાવાદ મોટું રાજધાનીનું શહેર હોવાથી) ભગવત્સેવામાં ઉપયોગી થાય તેવી વસ્તુઓ લેવા પધાર્યા તે વખતે આપ ઝવેરીની પોળમાં એક પરદેશીનું ઘર કે જે ઘર હરિહટ શાલની શેરી વચ્ચે હતું, તેમાં આપ બે દિવસ બિરાજ્યા. તે પછી સિકંદરપુરીમાં પાછલી પોળમાં નટુઆ ગોપાલદાસ અને રામદાસ નામે બે ભાઈઓ રહેતા, તે આપના સેવક થયા, એમને ઘેર ૩ દિવસ બિરાજ્યા. એવી રીતે પાંચ દિવસ આપ રાજનગરમાં બિરાજ્યા છે. તે વખતે રાજનગરમાં થોડા સેવક હતા. પછી આપ અડેલ પધાર્યા.

વળી સં. ૧૬૧૩ માં આપશ્રી દ્વારિકાજી દર્શનાર્થે પધાર્યા. તે વખતે આપે ઈડર દેશ કૃતાર્થ કર્યો. તે પછી છાલા ગામમાં વૈષ્ણવ શંકર સંધાવાધાને ઘેર પધાર્યા. હરિવંશજી અને ભંડારી ચાચા સાથે હતા. ત્યાં વચ્છા ભટ્ટ ગોપાલદાસ દર્શનાર્થે આવ્યા, તે પછી આપ અસારવામાં કોઠારી ભાઈલાલ હરિજીવનને ઘેર પધાર્યા. બે દિવસ રહીને દ્વારિકા પધાર્યા તે વખતે શ્રીમહાપ્રભુજીના ઘણા સેવકો સાથે હતા રામદાસ, નાગજી, દવે મહાદેવ ગદા તથા બીજા પણ સેવકો સાથે હતા. એ પ્રમાણે દ્વારિકા થઈને ફરીને આપ અસારવા પધાર્યા. ત્યાં દાનલીલાગ્રંથનું વ્યાખ્યાન આપે કર્યું. ૧૫ દિન અસારવામાં બિરાજ્યા. બધા વૈષ્ણવને ખૂબ સુખ આપ્યું.

સંવત ૧૬૨૦ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઈજીએ શ્રીપદ્માવતી વહૂજી સાથે લગ્ન કર્યા. આ બીજી વારના લગ્ન કર્યા પછી વૈશાખ સુદ બીજના રોજ શ્રીદ્વારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યા. ત્યારે ગુજરાતમાં અસારવા ગામમાં કોઠારી ભાઈલા હરજીને ઘેર પધાર્યા, એમને ઘેર થોડા દિવસ રહીને પછી આપશ્રીએ દ્વારકા તરફ પ્રયાણ કર્યું. ત્યાંથી આપશ્રી ઉતાવળા ફરી અસારવામાં અસાડ સુદ બીજના રોજ પધાર્યા. કંઈક આવશ્યક કાર્ય હતું. આ વખતે નારાયણદાસજીને રાજપદવી મળી હતી, એટલે તેઓ ઇડરના રાજા થયા હતા. પછી જલાલપુર પધાર્યા. બાઈ જમુના, ભક્ત રામકૃષ્ણદાસ, જાલપદાસ, એ બધા પર અનુગ્રહ આપશ્રીએ કર્યો, તે પછી પાટણ પધાર્યા. ત્યાં મહુ, ડીકા વગેરે ઘણા વૈષ્ણવોનો ઉદ્ધાર કર્યો. ત્યારબાદ પ્રભુને માટે ઉત્તમોત્તમ સામગ્રી લઈને પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા, તે વખતે આ વૈષ્ણવ સાથે હતા. લક્ષ્મીદાસ, ગોપાલદાસ, ભીમજી, માધવદાસ વેણીદાસ અને બીજા પણ વૈષ્ણવો હતા. ભગવદ્વાર્તા પણ થતી હતી. શ્રીગુસાંઈજી ઘણીજ કૃપા કરતા...

સંવત ૧૬૨૨ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઇજી શ્રીદ્વારિકાનાથજીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા. તે વખતે સહાદરા ગામમાં (હાલના સાદરામાં) પધાર્યા તે વખતે ભાઇલા કોઠારીને ત્યાં બોલાવ્યા. કોઠારીજીએ પણ ત્યાં જઇને શ્રીજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી શ્રીજીએ (શ્રીગુસાંઇજીને સેવકો શ્રીજી કહેતા હતા) આજ્ઞા કરી કે, અમે તુરતમાંજ શ્રીદ્વારિકાજી થઇને અસારવા આવીશું. આવી આજ્ઞા કરીને આપશ્રી દ્વારિકાજી પધાર્યા અને તુરતજ પાછા અસારવા પધાર્યા. સત્યસંકલ્પ પ્રભુએ પોતાનું વચન પાળ્યું. વૈષ્ણવોને ઘણુંજ સુખ આપ્યું. તે પછી પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત્ ૧૬૨૭ ની સાલમાં વરસ બેસતાંજ શ્રીગુસાંઇજી દ્વારિકાજી દર્શનાર્થે પધાર્યા. તે વખતે આખો સોરઠ દેશ ઉજ્જડ થઇ ગયો હતો. ભયંકર દુકાળ ફેલાઈ રહ્યો હતો. શ્રીગુસાંઇજી ધોળકા તરફને રસ્તે પધાર્યા. પાંચ દિવસ ધોળકામ બિરાજ્યા. સાથે ઘણાજ સેવકો હતા. ઊભાજી, શંકરજી, નાહી ગામવાળા વિષ્ણુજી રાવત ગોવિંદજી, મયાજી, કેશવદાસ જલભરા, પરમ શૂરવીર ધીર પૂંજાજી આદિ બીજા ધનુર્ધારી ઘણા સાથે હતા. તેમજ બોખાજી, રામદાસ, સવજી સાચોરા, વાણીયા માધવદાસ, ભીમજી, વેણીદાસ, ત્રવાડી પબા, હરિવંશજી, ચાંપા ભંડારી, શંકર અધિકારી, ખવાસ કાશી વગેરે બધા સેવકો સાથે હતા. જ્યારે પોતે નવાનગર (હાલનું જામનગર) પધાર્યા ત્યારે રાજા દર્શન કરવા આવ્યો, ત્યારે તેણે વિનતિ કરી કે, "મહારાજ, રસ્તો વિષમ (ભયંકર) છે. મારી મા શ્રીદ્વારિકાજી દર્શન માટે ગઈ હતી, પણ રસ્તામાં બહારવટીઆઓએ લુંટી લીધી. આવામાં રાજ કેવી રીતે પધારી શકશો? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ આજ્ઞા કરી કે, અમે પ્રભુનાં બળથી પધારીશું. તમે ચૂપ થઇ જાઓ. પછી શ્રીજી તો ત્યાંથી શ્રીદ્વારિકાજી પધાર્યા. જ્યારે રાયણ ગામમાં પધાર્યા, ત્યારે તો પાંચસો કાબા (બહારવટીઆ) આવી પહોંચ્યા પણ તે વખતે શ્રીજીએ એવો પ્રતાપ બતાવ્યો કે તેમનું કંઇ ચાલ્યું નહિ. તેઓ બધા હારી થાકીને પાછા ફર્યા. શ્રીજી આનંદમંગળથી દ્વારિકાજી પધાર્યા. દ્વારિકાજીના થાણદારની સ્ત્રી ગોરબાઇ હતી, તેણે શ્રીજીનો ઘણો સત્કાર કર્યો. શ્રીજી જ્યારે દ્વારિકાથી વિદાય થયા ત્યારે તે બાઇ નવાનગર સુધી સાથે પહોંચાડવા આવી તે પછી શ્રીજી રાજનગર અસારવા પધાર્યા. ત્યારબાદ ખંભાતમાં કાંઇક ભગવત્સેવામાં ઉપયોગી વસ્તુ લેવા પધાર્યા, ત્યારે ત્યાં કલ્યાણરાયે ઘણો સત્કાર કર્યો. તે પોતે તો અન્યમાર્ગી હતો. ખંભાતમાં બીજા કેટલાક જીવોનો પોતે ઉદ્ધાર કર્યો. તેનાં નામો-આચાર્ય મુરારિ, પટેલ જીવા, પટેલ હાંસુ, શાહ, સહજપાલ, ભૂપતિ, વૈશ્ય, દેવરાજ વગેરે કેટલાએ જીવોને પ્રભુએ કૃપા કરી અંગીકાર કર્યા. તે વખતે શ્રીજીએ કલ્યાણરાયને કહ્યું કે, ગાય કેવલ પોતાનાં વાછડાંઓ માટેજ દૂધ આપે છે, પણ વચ્ચે કોઇ બીજા જ લોકો દૂધ દોહી લે છે, તેવો પ્રકાર અત્યારે થયો. (આ આજ્ઞાનો અભિપ્રાય એ છે કે, શ્રીજી પોતે તો ભગવત્કાર્યાર્થ ખંભાતમાં સહજ પધાર્યા તો વચ્ચે ઉપર જણાવેલા જીવોનો અંગીકાર પણ થઇ ગયો. આવા

પ્રભુ દયાળુ છે.) ત્યારપછી ખંભાતમાંથી ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ કર્પૂર ઘડા ૧ તથા ચંદન તથા પટ્ટવસ્ત્ર, (અનેક જાતનાં) વગેરે ઉત્તમોત્તમ પદાર્થો લઇને ફરી રાજનગર પધાર્યા. તે પછી થોડાક દિવસ પછી પરમ આનંદથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત ૧૬૨૭ વર્ષ ઉતરતાં શ્રીગુસાંઇજી જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીની સાથે શ્રીદ્વારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યા. તે વખતે પહેલાં આપશ્રી ઈડર પધાર્યા, ત્યાંથી વિસલનગર, વડનગર, મહેસાણા, ગોઝારીઆ, સિદ્ધપુર, બિંદુસરોવર-શ્રીગદાધરરાયજીનાં દર્શન કરીને, સાવલી, ભદ્રેસર, વણા તથા ભીલોડા; આટલા દેશ પર આપે કૃપા કરી. તે પછી પ્રસન્નતાથી આપ અસારવા પધાર્યા. ત્યાં ભાઇલા હરજી કોઠારીને ઘેર કેટલાક દિન સુધી બિરાજ્યા. પછી દ્વારિકા પધાર્યા. દ્વારિકાથી ફરી ગુજરાત પધાર્યા, ત્યારબાદ ખંભાત, ગત્રાડ, ગણુસુલ, મહુધા, ઉમરેઠ, નડિયાદ, મહેમદાવાદ, અલીણા, વાડાસિનોર, વીરપુર, લુણાવાડા, પધાર્ય. તેમજ મહી નદીના તીરપર લીંબોદરા ગામમાં સૂર્યગ્રહણ કર્યું. બીજાં પણ કાંઇ કાર્યો હતાં તેથી પાંચ દિવસ સુધી લીંબોદરામાં બિરાજ્યા. તે પછી રાજનગરની પાસે નલપુરા, કઠાસણ, અડાલજ. ઉંઆરસજ, મોઢાસર, હરસોલ, પ્રાંતીજ, પીંઢારીઆ સહાદરા એટલા ગામોમાં પધાર્યા. છાલા ગામમાં મેઘજી કરમસી નામના રાજપુત્રનો અંગીકાર કર્યો. એવીજ રીતે બધાં ગામો કૃતાર્થ કર્યાં. આ વખતે આપશ્રીની સાથે શ્રીહરિવંશજી, શંકર અધિકારી, ખવાસ હરિદાસ સાઠોદરા બ્રાહ્મણ હતા તે પછી સં. ૧૬૨૮ ની સાલ બેઠી ત્યારે રાજનગરમાં પ્રશ્નોરા કેશવજીનો અંગીકાર કર્યો. બાઇ લાછબાઇને ઘેર આપ પધાર્યા હતા. રાજપુરમાં રામદાસ વેણીદાસને ઘેર આપ પધાર્યા અને એવીજ રીતે બધાને ખૂબ સુખ આપ્યું. ત્યારબાદ અતિપ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

એવી રીતે છ વખત શ્રીગુસાંઇજી દ્વારિકાજી દર્શનાર્થ પધાર્યા.

કમનસીબ–ગુજરાતીઓનો સંઘ—સંવત્ ૧૬૧૫ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઇજીના દર્શન માટે ગુજરાતમાંથી વૈષ્ણવોનો મોટો સંઘ નિકળ્યો. તે સંઘમાં ગોપાલજી, વૈશ્ય રામદાસજી, નાગા ગોપજી, વિસરામ, રવજી, જીવણભાઈ, સાચોરા નાંગજી કોઠારી, ભીમાબાઇ કુંવરી અને ગોરબાઈ (સીરોહીના રાજાની રાણી); ત્રવાડી પખા વગેરે બીજા ઘણા વૈષ્ણવો હતા. ગાડીઓ તથા વાહનો ઘણાં હતાં બધાં શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન માટે ચાલ્યાં. બધા પહેલાં શ્રીઠાકુરદ્વારમાં શ્રીજીદ્વાર આવ્યા. (શ્રીનાથજી શ્રીગિરિરાજજીમાં બિરાજતા હતા.) આ વખતે શ્રીજીદ્વારમાં કૃષ્ણદાસ અને ચતુ અધિકારી હતા. જ્યારે **વૈષ્ણવો આવ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ**[1] **અધિકારીએ ઘણું સન્માન કર્યું.** શ્રીકૃષ્ણદાસ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક હતા. તે સંબંધથી વૈષ્ણવોનું સમાધાન તેમણે ઘણુંજ કર્યું. (ખૂબ ખાતર બરદાસ કરી.) કૃષ્ણદાસ મહાન્ અપરાધી હતા, તેથી શ્રીગુસાંઇજી તેમના પર ઘણાજ અપ્રસન્ન

૧ વૈષ્ણવોનું સમાધાન પહેલાં શ્રીજીદ્વારમાં સારી પેઠે થયું એમ આ ઇતિહાસ કહે છે.

રહેતા. શ્રીગુસાંઇજી તેથીજ શ્રીઠાકુરદ્વાર પધારતા નહિ. તે વખતે વિરહ અનુભવીને પ્રભુને વિનતિપત્ર લખતા. વળી ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ જે મળતી તે શ્રીજીને અંગીકાર કરાવવા માટે કોઈની સાથે મોકલી દેતા; પણ આપશ્રી પોતે તો ત્યાં પધારતા ન હતા. એ વેળાએ આપ અડેલમાં બિરાજતા. શ્રીગુસાંઇજી ગુજરાતના વૈષ્ણવોની વાટ જોતા હતા કે, વૈષ્ણવો ક્યારે આવશે ? વાટ જોતાં ઘણા દિવસ નીકળી ગયા. તેથી પોતે ચિંતા કરવા લાગ્યા, કોઈકવાર પોતે મુસાફરોને પૂછતા કે, "ગુજરાતના વૈષ્ણવો અમારા દર્શન માટે ગુજરાતથી ક્યારનાએ નીકળી ચુક્યા છે, ઘણા દિવસો વીત્યા, પણ કશા સમાચાર મલ્યા નથી. રસ્તામાં કુશળ તો છે ને ? તેઓ હજુ સુધી કેમ ન આવ્યા ?", આવા પ્રશ્નો આપશ્રી કરતા. થોડાક સમય પછી આપને સમાચાર મળ્યા કે, બધા ગુજરાતી વૈષ્ણવો ઠાકુરદ્વારમાં રહ્યા છે. દોઢ મહીનો થયો. કૃષ્ણદાસજીએ તેમનું સમાધાન કર્યું છે અને તેમને સારી પેઠે રાખ્યા છે. મહાપ્રસાદ લે છે અને દર્શન કરે છે. તેઓ અડેલ આવ્યા નહિ. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ એક પત્રમાં શ્લોક લખીને તે પત્ર એક સેવકદ્વારા પેલા ગુજરાતી વૈષ્ણવોની પાસે શ્રીઠાકુરદ્વારા મોકલ્યો. (આ શ્લોક પણ બરાબર સમજાતો નથી) તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ, માતા શ્રીરુક્મિણીજી (શ્રીગુસાંઇજીનાં વહુજી) છ પુત્ર સાથે બિરાજતાં હતાં. એઓ પણ વૈષ્ણવોની વાટ જોતાં હતાં કે ક્યારે આવશે ? તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ. વૈષ્ણવોનાં અભાગ્યજ ગણાય. પછી અડેલમાં મ્લેચ્છોનો ઉપદ્રવ થયો ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી બાંધવગઢમાં પધાર્યા. થોડાક વરસ પોતે ત્યાંજ બિરાજ્યા પછ. આપ મથુરા પધાર્યા. મથુરામાં થોડાંએક વરસ બિરાજ્યા. ત્યારબાદ સં. ૧૬૨૭ ફાગણ વદ ૭ શુભ દિને શ્રીગુસાંઇજીએ સર્વ બાલકો સાથે કુટુંબ પરિવાર સાથે શ્રીગોકુલમાં વાસ કર્યો, કેટલાક વરસ સુધી બધા બાલકો અને પરિવાર સાથે એકઠા મળીને સેવા કરતા પછીથી સાતે બાલકોએ પોતપોતાનાં જુદાં જુદાં મંદિર બનાવ્યાં અને સાત સ્વરૂપને સાતે મંદિરમાં પધરાવ્યાં. શ્રીનવનીતપ્રિયજીને શ્રીદામોદરજીના મંદિરમાં પધરાવ્યા. શ્રીમથુરાનાથજી મોટા શ્રીગોપીનાથજીને ઘેર પધાર્યા. શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી શ્રીગોવિંદરાયજીને ઘેર બિરાજ્યા. શ્રીદ્વારિકાનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીનાથજી શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી શ્રીરઘુનાથજીના મંદિરમાં બિરાજ્યા. (અહીં છઠ્ઠા લાલજીને માટે કશો ઉલ્લેખ નથી.) શ્રીમદનમોહનજી; શ્રીઘનશ્યામજીના ઘરમાં પધાર્યા આ પ્રકારે સાતે બાલક પોતપોતાના મંદિરોમાં પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા. બધા બાળકોનો દિનપ્રતિદિન પ્રતાપ વધતો ગયો.

(સંપૂર્ણ.)

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર.

[સદ્‌ગત તેલીવાળાના અંગ્રેજી ઉપોદ્‌ઘાત ઉપરથી અનુવાદકઃ—શ્રીયુત પ્રોફેસર સાંકળચંદ જેઠાલાલ શાહ એમ. એ.]

પ્રાકટ્ય આદિ—વિદ્વન્મંડન ગ્રંથના કર્તા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરદીક્ષિત શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના દ્વિતીય-કુમાર છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવોત્સવ સંવત ૧૫૭૨ ના માર્ગશીર્ષ માસની વદ ૯ મી તિથિએ અલ્હાબાદ પાસે ચરણાટ (ચુનાર) માં થયો હતો. પોતાની ઉત્તરાવસ્થામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ અડેલને પોતાના કાયમના નિવાસ તરીકે સ્વીકાર્યું હતું. અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની બાલ્યાવસ્થા ત્યાં પસાર થઇ હતી. સંવત ૧૫૮૭ માં જ્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રિદંડ સંન્યાસનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે વિઠ્ઠલેશ્વરની ઉપર પંદર વર્ષની હતી. તેમના જ્યેષ્ઠભ્રાતા શ્રીગોપીનાથજી તેમના કરતાં પાંચ વર્ષે મોટા હતા. તેમના ઉપવીત સંસ્કારની વિધિ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ કરી હતી, પણ તેમની બાલ્યાવસ્થાની કેળવણીનો સારો પ્રબંધ થયો હોય એમ લાગતું નથી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણ બાલપણમાં ઘણા રમતીયાળ સ્વભાવના હતા. પોતાને માથે કેટલો ભારે બુમ્બો છે તેનો તેમને ખ્યાલ નહોતો, તેથી અગ્રગણ્ય વૈષ્ણવ શ્રીદામોદરદાસજીએ તેમને ઠપકો આપ્યો હોય એમ કહેવાય છે. અને તેમને અભ્યાસ કરવા માટે સમજાવ્યા હતા, જેથી લાયક પિતાના લાયક પુત્ર તરીકેની જવાબદારી અદા કરવા માટે યોગ્ય થવાય. એટલું તો નિઃશંક છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને રમત ગમતમાંથી કૃષ્ણલીલાનું અવગાહન કરવાને રસ્તે ચઢાવવામાં દામોદરદાસે સારૂં કામ કર્યું હતું. આચાર્ય તરીકેનું પોતાનું કર્તવ્ય સારી રીતે બજાવવામાં ચાચા હરિવંશજીએ પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સારો ઉપદેશ આપ્યો હતો. ચાચા હરિવંશજીની વૈષ્ણવો વધારવાની પ્રવૃત્તિઓ ઘણી વિશાળ હતી. જે જે જગાએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પધારતા તે તે જગાએ તેમના પહેલાં ચાચા હરિવંશજી જતા અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના સિદ્ધાંતોનો સ્વીકાર કરવા માટે લોકોને તૈયાર કરતા. જે જે પુસ્તકો હાલ મળે છે તેમાં જે અગાધ જ્ઞાન તરી આવે છે તે જ્ઞાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે કોની મદદથી મેળવ્યું તેનો બરાબર નિર્ણય થઇ શકતો નથી. એક ગાથા એવી છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને અભ્યાસ માટે માધવસરસ્વતી પાસે મોકલ્યા હતા, પણ ત્યાં કાંઇપણ અભ્યાસ કરવાને બદલે, પોતે પોતાનો બધો વખત શ્રીમદ્‌ભાગવત વાંચવામાં ગાળ્યો. ઉપરની ગાથામાં ગમે તેટલું સત્ય હોય, પણ એટલું તો નિર્વિવાદ છે કે પોતાના પિતા શ્રીવલ્લભાચાર્યની માફક શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને પણ *શ્રીમદ્‌ભાગવતમાં ઘણીજ આસક્તિ હતી અને ભાગવત પર* ઘણો કાબુ હતો. સંવત ૧૫૮૭ માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ લીલા કરી ત્યારપછી શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર બન્ને અડેલમાં બિરાજ્યા. સાધનદીપિકા, અને સેવાપદ્ધતિ સિવાય શ્રીગોપીનાથજીએ બીજા અગત્યના ગ્રંથો લખ્યા હોય એવું જાણવામાં આવ્યું નથી, અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને પોતાના મોટાભાઇ શ્રીગોપીનાથજી પાસેથી ભવિષ્યની સાહિત્યની પ્રવૃત્તિઓ સારુ શું વિદ્યા મળી તે નિર્ણય કરવાનાં આપણી પાસે સાધન નથી. શ્રીગોપીનાથજી અને તેમના પુત્ર શ્રીપુરુષોત્તમજીએ સંવત ૧૫૯૦ અને ૧૬૦૦ સાલ દરમ્યાન લીલા કરી હોય એમ લાગે છે. એમણે લીલા કર્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર એમના પિતાના માન્ય પ્રતિનિધિ તરીકે ગણાવા લાગ્યા અને ત્યારપછી તેમણે ઘણી મુસાફરીઓ કરવાનો ઇરાદો કર્યો અને સંપ્રદાયના પ્રચાર સારૂ ગ્રંથો લખવાનો વિચાર કર્યો.

ગૃહસ્થાશ્રમ—શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, ચૈતન્ય અને બીજા ઘણા આચાર્યોએ ઉપનિષદની ગાથાઓ પ્રમાણે અનુસરણ કર્યું નથી. પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યે ઉપનિષદ પ્રમાણે આચરણ રાખ્યાં અને

યાજ્ઞવલ્ક્ય અને બીજા ઋષિઓની માફક ગૃહસ્થો હોઇને આચાર્ય રહ્યા. તેમના પછી તેમના મોટા પુત્રે પણ ગૃહસ્થ આચાર્ય તરીકે જીવન ગાળ્યું. શ્રીગોપીનાથજીએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું લગ્ન શ્રીરુક્મિણી સાથે કર્યું હતું. શ્રીરુક્મિણીજી પોતાની નાતિના વિશ્વનાથ ભટ્ટ અને ભવાનીનાં પુત્રી થાય. બન્ને ભાઇઓ વચ્ચે સંપ સારો હતો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજી પર જે પત્ર લખ્યો છે તે પરથી જણાય છે કે એમને પોતાના મોટાભાઈ માટે ઘણુંજ માન હતું.

શ્રીનાગજીભટ્ટ—શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીપુરુષોત્તમજીએ લીલા કર્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ બહારગામ પધારવાનો આરંભ કર્યો. સંવત ૧૬૦૦ માં પહેલા અડેલથી ગુજરાત પધાર્યા અને બીજીવાર સંવત ૧૬૧૩ માં પણ અડેલથી ગુજરાત પધાર્યા. ગુજરાતમાં એમની પ્રવૃત્તિઓ મુખ્યત્વે અમદાવાદ, ખંભાત અને ગોધરામાં હતી. ગોધરામાં શ્રીગુસાંઇજીએ એક નાગજીભટ્ટને આ સંપ્રદાયની દીક્ષા આપી હતી. આ નાગજી ભટ્ટ, એમ કહેવાય છે કે સરકારી અમલદાર હતા અને (પંચમહાલ નામ પડ્યું છે તે તેમની પ્રવૃત્તિને લેઇને છે,) "પંચમહાલ" ને પાંચ ભાગમાં વિભક્ત કરનાર આ વ્યક્તિ હતી એમ મનાય છે. નાગજી ભટ્ટ સાઠોદરા નાગર હતા. પ્રખ્યાત ગુજરાતી વયોવૃદ્ધ સાક્ષર દીવાનબહાદુર કેશવલાલ હર્ષદરાય ધ્રુવ આ નાગજીભટ્ટના વંશજ છે. જ્યારે જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગુજરાતમાં પધારતા ત્યારે ત્યારે નાગજીભટ્ટ તેમના સંત્સંગનો લાભ જરૂર લેતા. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ નાગજીભટ્ટને જે પત્રો લખેલા તેમાંના થોડાએક અસલ પત્રો મેવાડમાં શ્રીનાથદ્વારામાં અદ્યાપિ સુધી સંગ્રહ કરી રાખેલા છે. નાગજીભટ્ટ ઘણા બુદ્ધિશાળી અનુયાયી હતા. નાગજી ભટ્ટે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણા પ્રશ્નો પૂછ્યા હોય એમ લાગે છે. શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં પંચમહાલમાં તેમણે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણીજ સહાયતા કરી હોય એમ દેખાય છે. શ્રીસુબોધિની, નિબંધ વગેરે ગ્રંથો વાંચ્યા પછી શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ઉપદેશના મુખ્ય સિદ્ધાંત શું છે તે જાણવાની તેમની ઇચ્છા થઈ. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ તેમને એક શ્લોક લખી મોકલ્યો, જેમાં શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયના મતનું ઉત્તમ શબ્દોમાં સંક્ષેપમાં વર્ણન છે.

श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यमत्राव्यभिचारिहेतुः ।
प्रेमैव तस्मिन्नवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ॥

શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના મત પ્રમાણે **ભગવત્પ્રાકટ્ય એજ ફલ** છે અને તેનો રામબાણ ઉપાય ભગવત્પ્રેમ છે. બીજાં બધાં સાધનો આ પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવામાં ઉપયોગી છે. નાગજીભટ્ટ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની સાથે ગુજરાતમાં રહ્યા એટલુંજ નહિ પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને પોતાના દંડવત્ પ્રણામ કરવા પોતે અડેલ પણ ઘણીવાર જતા. શ્રીગોવર્ધનના શિખર પર જતીપુરામાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનાં દર્શન કરવા નાગજીભાઈ ગયા છે. એવી માહિતી મળે છે અને ત્યાં એ એક મહીના સુધી નિવાસ કર્યો છે. આ પરથી એમ લાગે છે કે નાગજીભાઇ આ સંપ્રદાયના શાસ્ત્ર અને સેવાપ્રકાર બન્નેથી અભિજ્ઞ હતા, અને સંવત ૧૬૦૦ થી શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયનો ગુજરાતમાં શીઘ્ર પ્રચાર કરવામાં સહાયભૂત થયા હતા.

શ્રીભાઇલા કોઠારી—આ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં બીજી જે વ્યક્તિએ મદદ કરી તે અમદાવાદ પાસે અસારવા ગામના રહીશ ભાઇલા કોઠારી છે. જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી દ્વારકા અથવા ગુજરાત પધારતા, ત્યારે બે એક મહીના સુધી ભાઇલા કોઠારીને ત્યાં તેમનો મુકામ રહેતો. ભાઇલા કોઠારીના જમાઈ ગોપાલદાસે આ સંપ્રદાયને નવાખ્યાન નામનું સુંદર અને અપ્રતિમ કાવ્ય આપ્યું છે. સાંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ ગોપાળદાસ [illegible]

મહેતા હતા. ગમે તેમ હો, પણ નરસિંહ મહેતાનો કાલનિર્ણય કરવામાં આ ગાથાથી મદદ મળે છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની સં. ૧૬૦૦ માં ગુજરાતમાં પ્રથમ પધરામણી થઇ. ગોપાલદાસની ઉમર તે વખતે નવ વર્ષની હતી. ગોપાળદાસનું નવાખ્યાનનું કાવ્ય વૈષ્ણવોમાં ઘણુંજ લોકપ્રિય અને આદરણીય કાવ્ય છે. વૈષ્ણવ નર અને નારીઓ આ કાવ્યનો મુખ પાઠ કરે છે. આ કાવ્યપર વ્રજભાષામાં અને સંસ્કૃત ભાષામાં ટીકાઓ લખાઈ છે. ગુજરાતનો વેપારી વર્ગ તો એના પર મુગ્ધ થઇ ગયો છે. ગોસ્વામી બાલકો તરફ તો વૈષ્ણવોની વૃત્તિ ઘડવામાં આ કાવ્ય ઘણુંજ સહાયભૂત થયું હોય એમ લાગે છે. ગોસ્વામી બાળકો તરફની વૈષ્ણવોની અગાધ પ્રીતિ અને આદર આ કાવ્યના પ્રસારથી ઉત્પન્ન થયાં હોય તો કાંઇ નવાઇ નથી. આ કાવ્યમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને ગોસ્વામી તરીકે સંબોધેલા છે. સં. ૧૬૩૪ માં જ્યારે અકબર બાદશાહે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની ગાયોને સરકારી તેમજ ખાનગી બધાં ખેતર પર ચરાવવાનો પરવાનો કરી આપ્યો ત્યારથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું ગોસ્વામી તરીકે લખાવાનું શરૂ થયું. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે ગોપાલદાસનું નવાખ્યાન સંવત ૧૬૩૪ ની સાલ પહેલાં રચાયેલું હોવું જોઇએ નહીં. સાંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ કાવ્ય રચવાની પ્રેરણા ગોપાલદાસને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર તરફથીજ થઈ હતી. એવું કહેવાય છે. કે ગોપાલદાસ મૂગા હતા અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરેજ તેમને ચર્વિતતાંબૂલ આપ્યું. ત્યારપછી તેની પ્રસાદીથી તેમની વાચા ચમત્કારિક રીતે ખુલી ગઇ. જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ભાઇલા કોઠારીને ઘેર પધારતા ત્યારે ઘણા મનુષ્યો તેમને મળવા આવતા અને તેમનો સંપ્રદાય અંગીકાર કરતા.

જીવા પારેખ—ખંભાતમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં મદદ કરનાર જીવા પારેખ નામના એક પ્રખ્યાત વણિક વેપારી હતા. એકંદરે ગુજરાતમાં શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયનો પ્રચાર જલદીથી અને સંપૂર્ણપણે થયો. ઘણી જ્ઞાતિઓ અને પેટા જ્ઞાતિઓ વૈષ્ણવ સંપ્રદાય સંપૂર્ણ પણે પાળવા લાગી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની પછીથી પણ વૈષ્ણવોની સંખ્યામાં ઘણો વધારો થતો ગયો.

ગુજરાતમાં પધરામણી—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની ગુજરાતમાં ઓછામાં ઓછી છ વખત પધરામણી થઈ. પ્રથમ પધરામણી અડેલથી સં. ૧૬૦૦ માં થઇ. બીજી પણ સંવત ૧૬૧૩ માં અડેલથી થઈ અને ત્રીજી ગઢાથી સંવત ૧૬૧૯ માં થઈ. ચોથી સંવત ૧૬૨૩ માં મથુરાથી થઈ, પાંચમી સંવત ૧૬૩૧ માં અને છઠ્ઠી અને છેલ્લી સંવત ૧૬૩૮ માં ગોકુલથી થઈ. આ ઉપરથી એમ જણાય છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે લગભગ ચાલીસ વર્ષ સુધી ગુજરાત અને કાઠીઆવાડ પર પોતાના પ્રતાપનો પ્રકાશ પાડ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી દ્વારકાનાથજીના પવિત્ર ધામે પધારતા ત્યારે ગુજરાતમાં પધારતા. પોતાના પિતાશ્રીનો તથા પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજીનો દ્વારકામાં અને ગુજરાતમાં પ્રથમથીજ ઘણો સારો સત્કાર થયેલો તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને દ્વારકાં અને ગુજરાત માટે સારી મમતા અને પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ હતી. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના વિદ્વાન અનુયાયી રાણાવ્યાસ સિદ્ધપુરમાં સંપ્રદાયના પ્રચાર માટે સારૂં કામ કરતા હતા, નરોડામાં પ્રચાર કામ ગોપાલદાસ કરતા. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીની દ્વારકામાં ઓછામાં ઓછી ત્રણ વખત પધરામણી થઇ હતી. છેલ્લી પધરામણી સંવત ૧૫૮૫ની સાલમાં થઇ હતી. દ્વારકામાં પોતે ૭ માસથી અધિક રહ્યા હતા એવું કહેવાય છે. બેટ દ્વારકામાં દ્વારકાનાથજીનું જે સ્વરૂપ છે તેની પ્રતિષ્ઠા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કરી હતી.

જગન્નાથપુરીમાં—સંવત ૧૬૧૬ના માઘ વદ ૧૩ ને દિવસે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પુરીમાં જગન્નાથજીના ધામમાં ગયા. પોતાનાં વહુજી મહારાજ રુક્મિણીજી પોતાની મોટી પુત્રી શોભાજી અને જ્યેષ્ઠપુત્ર ગિરિધરજી સાથે હતાં. ત્યાં પોતે લગભગ ૭ માસ સુધી રહ્યા. પુરીમાં રથોત્સવનાં દર્શન કરી પોતે અડેલ પાછા ફર્યા હોય એમ લાગે છે. પોતે પુરી પધાર્યા ત્યારે પોતાની સાથે ગરબા નામના સુતારને લેઈ ગયા હતા. જગન્નાથજીના રથનો નમુનો ઉતારી લેવા સારુ સુતારને

લેઇ ગયા હતા. એમ કહેવાય છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ અડેલ પધાર્યા પછી જગન્નાથજીમાં જેવો રથ હતો તેવો રથ તૈયાર કરાવ્યો અને અડેલમાં ઠાકોરજીને તે રથમાં પધરાવી મોટો વરઘોડો કઢાવ્યો. પોતે ગઢામાં રહ્યા ત્યારે પણ રથોત્સવ તેજ પ્રમાણે ઉજવ્યો હતો. પણ જ્યારે પોતે પોતાનો નિવાસ મથુરામાં લાવ્યા ત્યારે મુસલમાનોના ધર્માન્ધપણાને લીધે રથોત્સવ જાહેર રીતે ઉજવવાનો વિચાર માંડી વાળ્યો. પોતે જગન્નાથજીમાં રહ્યા ત્યારે જગન્નાથજીમાં રહેતા ચૈતન્યના અનુયાયીના સંસર્ગમાં આવવાનો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને પ્રસંગ પ્રાપ્ત થયો. એમ સંભળાય છે કે સ્વામિનીઅષ્ટક અને સ્વામિનીસ્તોત્ર અને બીજાં નાનાં સ્તોત્રો, જેમાં શ્રીઠાકુરજીની પટરાણી રાધાજીની શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે ઘણી સ્તુતિ કરી છે તે આ સમયમાં રચાયેલા હોય, અથવા તો ચૈતન્ય સાધુઓની સીધી અથવા આડકતરી અસરને લીધે આ સ્તોત્રો રચાયેલાં હોવાં જોઇએ. અમાર જાણવાં પ્રમાણે જેવી રીતે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે શ્રીરાધાજીની સ્તુતિ કરી છે તેવી રીતે શ્રીવલ્લભાચાર્યે કોઈ પણ સ્તોત્રમાં અથવા બીજા કોઇ લેખમાં કરી નથી. શ્રીમદ્વિઠ્ઠલેશ્વરજી પર ચૈતન્યની અસર કેટલી અને કેટલા કાળ સુધી રહી એ નક્કી કરવાનાં અમારી પાસે સાધનની ઘણી મુશ્કેલી છે. પણ જ્યારે વિચાર કરીએ છીએ કે અણુભાષ્યના અંતના ભાગમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજી અને શ્રીગોવર્ધનધર એ બેનુંજ સ્મરણ કર્યું છે. એટલે પાછલા સમયમાં ચૈતન્યના સિદ્ધાંતોની અસર વહન જતી રહી હોય એમ લાગે છે. कृष्णप्रेमामृत અને शृंगाररसमण्डन આ બે ગ્રન્થો પરની તેમની શૈલી ચૈતન્યવિચારશૈલીને લઇને હોય એમ લાગે છે. એમ પણ હોય કે તે સમયે આખા હિંદુસ્તાનમાં રાધા–કૃષ્ણની સેવા કરવાનો એક તરંગ આવ્યો હોય અને ઉપરના સ્તોત્રમાં ચૈતન્યના વિચારોની કેટલી અસર હતી તે કહેવું મુશ્કેલ થઇ પડે તેમ છે. વિચારની મૌલિકતા અને વિચારદર્શની પદ્ધતિ એ બન્ને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરનાં પોતાનાંજ છે. પણ આ સમયમાં આ બે સ્તોત્રોની રચના થઈ એમ કહીએ તો અમે ભૂલ કરીએ છે એમ અમને લાગતું નથી. આ સ્તોત્રો સરસ્વતીસંવાદને લઇને હોય એમ સંભવિત છે. બીજું કારણ માલુમ પડતું નથી.

વિદ્વન્મંડનરચનાસમય—સંવત ૧૬૧૬ ના આષાઢ માસથી તે સંવત ૧૬૧૯ ના આરંભ સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ અડેલમાં નિવાસ કર્યો હોય એમ લાગે છે. જગન્નાથજીમાં થાય છે તે પ્રમાણે અહીં પણ રથોત્સવ ઉજવ્યો હતો. આ સમયમાં તેમણે વિદ્વન્મંડનનો ગ્રંથ રચ્યો છે. સંવત ૧૬૧૯ ના વૈશાખ સુદ ૧૨ ની તારીખવાળી હસ્તલિખિત પ્રત મળે છે તે પરથી આ અનુમાન બંધાય છે. આ ગ્રંથની રચનાની તારીખ સંવત ૧૬૧૯ થી પછીની હોઈ શકે નહિ. સંવત ૧૬૧૯ માં અડેલપર મુસલમાન લોકોએ ચઢાઈ કરી એટલે હમેશને માટે શ્રીગુસાંઇજીને અડેલ છોડવું પડ્યું.

અડેલગઢમાં—અડેલથી બે ત્રણ જગાએ મુકામ બદલ્યા પછી તેમણે બાન્ધોગઢ પોતાનો મુકામ કેર્યો. તે વખતે બાન્ધોગઢમાં વાઘેલા રજપૂત રાજા રામચંદ્ર રાજ્ય કરતો હતો. તેમણે શ્રીગુસાંઈજીનો સારો સત્કાર કર્યો. પોતે ત્યાં બે માસ સુધી રહ્યા. શ્રીગુસાંઇજીના જ્યેષ્ઠપુત્ર શ્રીગિરિધરજીનો આ રાજાની સાથે ઘણો સારો સંબંધ હતો. શ્રીગિરિધરજીના મોટા પુત્ર શ્રીમુરલીધરજીનો જન્મ વિજયાદશમીને દિવસે અહીં થયો હતો. પ્રખ્યાત ગવૈયો તાનસેન રાજા રામચંદ્રનો સંગીતશાસ્ત્રી અને ગવૈયો હતો, પણ અકબર બાદશાહની માગણી આવવાથી બાદશાહને સોંપવો પડ્યો હતો. તાનસેન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરના સંસર્ગમાં અહીં આવ્યો. પણ શ્રીગુસાંઇજી અહીં લાંબો સમય બિરાજ્યા નહિ. આગળ ઉપર જ્યારે વિઠ્ઠલેશ્વરજીએ પોતાના કાયમ નિવાસ તરીકે ગોકુળ સ્વીકાર્યું ત્યારે આ રાજા રામચંદ્ર ગોકુળ આવ્યા હતા. શ્રીગુસાંઇજી અને શ્રીગિરિધરજીએ તેમનું ગોકુળમાં ઘણું મેજમાન કર્યું હતું.

ગઢારાણી દુર્ગાવતી—અન્દેશાથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગઢા પધાર્યા હોય એમ લાગે છે. નર્મદાના કિનારાપર આવેલું જબલપુર–એ તે વખતનું ગઢા હશે કે કેમ એ કહેવું મુશ્કેલ છે. જબલપુરની પાસે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની બેઠક આવી છે, તે પરથી એમ લાગે છે કે ગઢા પણ આજુબાજુ કાંઈ આવેલું હોવું જોઈએ. અકબર બાદશાહના સેનાપતિ અસફખાને આગળપર એવો સખત જુલમ વર્તાવ્યો હતો કે તે જગા અત્યારે ઓળખી કાઢવી એ ઘણુંજ મુશ્કેલ થઈ પડ્યું છે. ગઢા જવાની શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની સ્વાભાવિક ઇચ્છા હતી. ગઢાની રાણી દુર્ગાવતી ઘણી ખ્યાતિવાળી હતી. દુર્ગાવતીના પતિનું નામ દલપતિશાહ હતું અને તેમનું લગ્ન કંઈ વિલક્ષણ રીતે થયું હતું. તેમને એક પુત્ર હતો. આ પુત્ર ત્રણ વર્ષનો થયો ત્યારે દલપતિશાહનું અવસાન થયું. ત્યાર પછી પોતાના પુત્ર વીરનારાયણના રીજન્ટ તરીકે દુર્ગાવતીએ રાણી તરીકે ગઢાનું રાજ્ય ચલાવ્યું. વીરનારાયણ ઉમરલાયક થયો છતાં પોતે રાજ્ય ચલાવવાનું ચાલુ રાખ્યું. તેના રાજ્યમાં બધા મળીને ૫૨ (બાવન) ગઢ હતા, અને રાણીએ ઘણી લડાઈઓમાં ભાગ લીધો હતો. તેની અસાધારણ શૌર્ય–બહાદુરીને લીધે તેને દુર્ગાશાહ એવું નામ આપવામાં આવ્યું હતું. પોતે ઘણીજ ધર્મિષ્ઠ હતી અને ઘણા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોને આશ્રય આપતી હતી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરના કુટુંબ સાથે જે તેલુગુ બ્રાહ્મણોનો લગ્નનો સંબંધ હતો તે કુટુંબો અહીં રહેતાં હતાં.

વિજયનગર રાજ્યના તે વખતના રાજા કૃષ્ણદેવે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીને પોતાના રાજ્યમાં મોટામાં મોટા આચાર્ય તરીકે સ્વીકાર્યા હતા. આ રાજ્ય સ્વતંત્ર રહેલું રાજ્ય હતું. આ સિવાય રાણી દુર્ગાવતીએ પણ પોતાના સ્વતંત્ર હિંદુ રાજ્યમાં બ્રાહ્મણોને ઘણું ઉત્તેજન આપ્યું હતું અને તેના રાજ્યમાં લોકો (પ્રજા) ઘણા સુખી હતા. તેની રાજ્યપદ્ધતિ અદૂષિત હતી અને આ રાણીના રાજ્યપર અકબર બાદશાહે જે ચઢાઈ કરી તેને સારા ઇતિહાસકારો બાદશાહની પોતાની રાજ્ય વધારવાની તૃષ્ણા અને વૃથા નાશ કરવાની વૃત્તિનું પરિણામ હતું એમ માને છે. જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી પ્રથમ આ રાણીની રાજ્યધાનીમાં પધાર્યા ત્યારે તેમણે જમનીય–તલાવ અથવા તો રાણીતલાવના કાંઠાપર પડાવ નાંખ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના સાધુચરિત્રથી, અગાધ જ્ઞાનથી અને કૃષ્ણની ઉત્કટ ભક્તિથી દુર્ગાવતી રાણીપર એવી ઉંડી છાપ પડી કે રાણી પોતે તેમના આશ્રમમાં વારંવાર આવતી અને ગઢામાં પોતાનો કાયમનો નિવાસ રાખવા રાણીએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને વિનંતિ બહુ આજીજી કરી. તેમના મુકામ અને સન્માનને સારૂ ઘણી સારી ગોઠવણ કરવામાં આવી હતી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ત્યાં ત્રણ વર્ષ રહ્યા, તે સમયમાં રાણી દુર્ગાવતીનો અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરનો સંબંધ ઘણો (cordial) હાર્દિક હતો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના પ્રથમ વહુજીમહારાજ શ્રીરુક્મિણીજીએ ઘણું ખરૂં આ સમયમાં લીલા કરી, અને તેમની ઇચ્છા બીજીવાર લગ્ન કરવાની બિલકુલ હતી નહીં, પણ રાણી દુર્ગાવતીના આગ્રહ અને દબાણથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ સંવત ૧૬૨૦ માં અક્ષયતૃતીયાને દિવસે રામભટ્ટની પુત્રી શ્રીપદ્માવતી સાથે લગ્ન કર્યું. બીજે પ્રસંગે રાણી દુર્ગાવતીએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ૧૦૮ ગામ બક્ષિસ કર્યા, અને તેઓશ્રીએ પોતાના જ્ઞાતિના ભટ્ટોને બક્ષિસ કરી દીધાં ! અને જેનો ઉપભોગ હજી પણ તે ભટ્ટના વારસો કરે છે. ગઢામાં નિવાસ કર્યો ત્યારે એક બ્રહ્મદાસ નામનો બ્રાહ્મણ તેમના સંસર્ગમાં આવ્યો. તે બ્રાહ્મણને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ પોતાની પાસા બાંધી આપીને આશિષ આપી. આ દિવસથી આ બ્રાહ્મણના ભાગ્યનો ઉદય થયો અને ત્યારથી એ અકબર બાદશાહનો માનીતો અને વિશ્વાસુ સલાહકાર બન્યો અને તેનું નામ ત્યારથી બીરબલ રાખવામાં આવ્યું. જે નામથી એ અત્યારે ઓળખાય છે. આ બીરબલનો અને શ્રીગિરધરજીનો સંબંધ ઘણો ગાઢ હતો, એમ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના પત્રોપરથી માલૂમ પડે છે. બંગાળા સેવકો પાસેથી પાછળથી

જ્યારે ગોવર્ધન પર્વતપરના શ્રીનાથજીનાં મંદિરનો કબજો અને ભોગવટો લેવાનો વખત આવ્યો ત્યારે બીરબલે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણી સારી મદદ કરી હતી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને તેનો કબજો અપાવ્યો હતો.

ગઢમાં નિવાસ—લગભગ ત્રણ વર્ષ દુર્ગાવતીના રાજ્યમાં રહ્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને માલુમ પડ્યું કે આ રાજ્યપર પણ અકબરના સૈન્યો હુમલો લાવશે. સંવત ૧૬૨૧ માં દુર્ગાવતી રાણી પાસે અસફખાને તેના માનીતા હાથી ગુરુદારની માગણી કરી. આ માગણીનો દુર્ગાવતી રાણીએ સ્વાભાવિક રીતે સ્વીકાર કર્યો નહિ. જ્યારે દુર્ગાવતી રાણીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને અકબર બાદશાહના દરબારમાં મોકલ્યો હતો, તે વખતે અસફખાને હુમલો કર્યો એ બહુજ આશ્ચર્યજનક છે. ગઢાનો ત્યાગ કરવાનું શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું મુખ્ય કારણ આજ હોવું જોઇએ. તેટલા માટે એઓશ્રીએ રાણી દુર્ગાવતીને પોતાની ઇચ્છા જણાવી કે હવે મારે યમુનાના તીરપર રહેવાનો વિચાર છે. એઓશ્રીની ઇચ્છા પ્રમાણે રાણી દુર્ગાવતીએ મથુરામાં સતઘરા નામનો મહેલ બંધાવી આપ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી અને તેમના સાત પુત્રોએ મથુરામાં આ સતઘરામાં વાસ કર્યો. જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી ગુજરાત પધાર્યા હતા ત્યારે શ્રીગિરધરજીએ ગોવર્ધન પર્વતપરથી સંવત ૧૬૨૩ ના ફાલ્ગુન વદ ૭ ને દિવસે શ્રીનાથજીને લગભગ બે મહિના સુધી આ સતઘરામાં પધરાવ્યા હતા. આ સતઘરા હાલ મોજુદ નથી, પણ જે જગાએ આ સતઘરા બાંધવામાં આવ્યું હતું તે જગા હજી મથુરામાં સતઘરા તરીકે ઓળખાવવામાં આવે છે. પશ્ચિમ દિશાએ છત્તા બજારની પાછળ આ જગા આવેલી છે અને પરિક્રમા કરનાર યાત્રાળુઓ આ જગાથી પરિક્રમાનો આરંભ કરે છે. ગઢામાં શ્રીગુસાંઇજી ઘણા આનંદમાં રહ્યા હતા, તેમણે રથોત્સવનો ઉત્સવ ત્યાં ઉજવ્યો હતો. એક મોટા વરઘોડામાં રથને શહેરની આજુબાજુ ફેરવવામાં આવ્યો હતો. રાણી દુર્ગાવતી અને તેમના દરબારના સરદારો વગેરેએ પણ રથોત્સવમાં ભાગ લીધો હતો. રથોત્સવનો ઉત્સવ ઉજવવામાં રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના રાજ્ય તરફથી બધી જોઇતી મદદ આપી હતી.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ ગઢા છોડયું ત્યારે રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને સાથે મોકલ્યા. એટલુંજ નહિ પણ સાથે મોટું લશ્કર પણ મોકલ્યું. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગઢાથી ગોકુલ પધાર્યા ત્યાર પછી રાણી દુર્ગાવતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પાસે ગયાં હોય એવું માલમ પડતું નથી. અસફખાનની સાથે બહાદુરીથી લડતાં તેમણે પોતાના પ્રાણનો ત્યાગ કર્યો; અને તેના પુત્ર વીર નારાયણે પણ લડાઇમાંજ દેહ ત્યાગ કર્યો હોય એમ જણાય છે. રાજ્યનો બધો ઉમદા ખજાનો અસફખાને લુંટી લીધો અને પોતે સાથે લઇ ગયો, શહેરને એટલું ખરાબ રીતે પાયમાલ કરી દીધું કે ઇતિહાસકારો આ બહાદુર અને પ્રખ્યાત રાણીના રાજ્યના ચોક્કસ ચિન્હ પણ મેળવી શકતા નથી. ગઢામાં શ્રીગુસાંઇજીએ નિવાસ કર્યો તેની એંધાણી એમની બેઠકને લઇને જળવાઇ રહી છે. આ બેઠક જબલપુરની પાસે આવેલી છે અને શ્રીગુસાંઇજીનું શ્રીપદ્માવતી વહુજીની સાથેનું બીજીવારનું લગ્ન ઉપર લખ્યા પ્રમાણે આ સ્થળે થયું હતું. ગઢાથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાનો મુકામ પ્રયાગ (અલ્હાબાદ) લાવ્યા હોય એમ જણાય છે. અહીં પોતે કેટલોક વખત ઘણા સુખથી રહ્યા અને શ્રીકૃષ્ણની સેવામાં પોતાનો વખત નિર્ગમન કરી સોમયાગ કર્યો.

શ્રીમદ્ગોકુલમાં—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પ્રયાગથી સંવત ૧૬૨૨ ના ભાદ્રપદ કૃષ્ણ ૩ ના દિવસે ગોકુલ પધાર્યા એમ જણાય છે અને ચતુર્માસમાં જ્યારે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજી પધારતા ત્યારે જે જગાએ ગોકુલમાં રહેતા તે જગાએ પોતાનો નિવાસ રાખ્યો. શ્રીગુસાંઇજી ગોકુલમાં આશરે ૮૪ દિવસ રહ્યા. સંવત ૧૬૨૩ ના કાર્તિક શુક્લ ૧૧ ને દિવસથી પોતે

પોતાનો મુકામ મથુરામાં રાખ્યો. અને રાણી દુર્ગાવતીએ બંધાવેલા સતઘરામાં રહ્યા ...ના માં પોતે સંવત ૧૬૨૩ થી ૧૬૨૯ સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ મથુરામાં પોતાનો ... કર્યો. ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે શ્રીગોવર્ધન પર્વત પરથી શ્રીગારધરજીએ શ્રીનાથ... મથુરામાં પધરાવ્યું અને સતઘરામાંજ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના ઘરમાં લગભગ બે મહીના અને ... સુધી શ્રીનાથજીની સેવા થઈ. સતઘરામાં શ્રીનાથજીને રાખવા એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને પસંદ ... નહીં, કારણ કે મથુરામાં મુસલમાનનો દોર બહુ વધી ગયો હતો. મથુરા ગયા પછી એ... રથનો ઉત્સવ ઉજવવાનું પણ બંધ કર્યું તેનું પણ એજ કારણ લાગે છે. પોતાના પિતૃ... પસંદ કરેલી ગોવર્ધનપર્વતની જગા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને બધા કરતાં વધારે અનુકૂળ લાગી. સં... ૧૬૨૩ માં ગુજરાત પધાર્યા પછી મથુરા આવ્યા પછી પોતે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને ફરીથી શ્રીગિ... રાજ પર પધરાવી ગયા અને સંવત ૧૬૨૪ ના વૈશાખ સુદ ૧૪ ને દિવસે ફરી પાટોત્સવ કર્યો. મથુરાના શહેરી નિવાસ કરતાં શ્રીગુસાંઇજીને ગોકુલની શાંત જગા ઘણીજ રીતે વધારે ... આવી અને સંવત ૧૬૨૯ ના ફાગણ કૃષ્ણ ૭ થી પોતાનું કાયમનું સ્થાન ગોકુલ સ્વીકાર્યું.

બાદશાહી સમાગમ—સંવત ૧૬૨૮ ની સાલથી ૧૬૪૨ માં પોતે લીલા કરી ત્ય સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગોકુલમાં રહ્યા અને પોતાની સાહિત્યની અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં પોતાનો કાલ નિર્ગમન કર્યો. અકબર બાદશાહ પરલોકના સંબંધી પ્રશ્નોની ચર્ચામાં ઘણો આનંદ લેતો આ સમયમાં તેણે વૃંદાવનના ગોસ્વામીઓની પણ મુલાકાત લીધી હતી. પરમાત્માના વિષયનુ સ્ફુટીકરણ કરવા અકબર બાદશાહે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર દિક્ષીતને આમંત્રણ કર્યું હતું. તેમના ખુલાસાઓથી અને સમજુતીઓથી અકબર ઘણો ખુશ થયો હતો. અને કાંઇપણ બક્ષિસ માગવા તેણે તેમને વિનંતિ કરી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે અકબર બાદશાહને ગોકુલ ગામ બક્ષિસ આપવા કહ્યું. આ જગા શાંત હોવાથી પોતાના સ્વભાવને અને જરૂરીઆતોને અનુકૂલ હતી, વળી મહાવન પાસે યમુના મૈયાના તીર પર આવેલી હતી. આ પરથી અકબર બાદશાહે પોતાની મહોરવાળો ગોકુલ બક્ષિસ કર્યાનો એક લેખ કરી આપ્યો, અને તે ફરમાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સંવત ૧૬૩૪ હીજરી સાલ ૯૮૫ બીજા મહીનાની ૨૯ મી તારીખે આપ્યો. (ઇસ્વીસન ૧૫૭૭) શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને બીજાં ત્રણ ફરમાન પણ કાઢી આપવામાં આવ્યાં હતા. જેમાં ખાલસા અને જાગીરની ભૂમિપર તેમની ગાયો, ઢોર વગેરે જનાવરને ચરાવવાનો હક્ક બક્ષવામાં આવ્યો હતો. બીજો એક પરવાનો અકબર બાદશાહની મા હમીદાબાનુ બેગમે પણ કરી આપ્યો હતો. જતીપુરા ગામ જ્યાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનું મંદિર આવેલું હતું તે ગામ પણ તેમને બક્ષીસ આપ્યું હતું. પોતે ગોકુલમાં રહ્યા તે દરમ્યાન બે વખત ગુજરાત પધાર્યા.

શ્રીવલ્લભાખ્યાન—પ્રથમ સંવત ૧૬૩૧ માં અને બીજીવાર સંવત ૧૬૩૯ માં નવાખ્યાનના કર્તા ગોપાલદાસનો મેલાપ છેલ્લી વખતે સંવત ૧૬૩૯ માં ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે થયો હોવો જોઇએ, ગોપાલદાસે ઘણું સુંદર કાવ્ય રચ્યું છે અને તેમાં છેલ્લા પ્રકરણમાં શ્રીગુસાંઇજીના સકલ કુટુંબનું વર્ણન કર્યું છે. આ છેલ્લા પ્રકરણમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં સાત પુત્ર અને તેમનાં વહુજીઓનાં નામ છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં એકે વહુજીના નામનો આ કાવ્યમાં ઉલ્લેખ નથી. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં બન્ને વહુજીઓએ લીલા કર્યા પછી આ કાવ્ય રચાયું હોવું જોઇએ અને એમનો કનિષ્ઠ પુત્ર ઘનશ્યામજીનું જો કે લગ્ન ન થયું હોય પણ તેમનો વિવાહ કૃષ્ણાવતી સાથે થયો હતો. તેમનાં ચારે બેટીજીઓનાં લગ્ન થયાં હતાં. અને પોતાના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા શ્રીગોપીનાથજીની બે વિધવા બેટીજીઓ લક્ષ્મી અને સત્યભામા તેમની સાથે રહેતાં હતાં અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની સેવા કરી પૂર્ણ આનંદમાં પોતાનાં વૈધવ્યનો કાલ વીતાવતાં.

પધારતા, અને તે ન હોય ત્યારે રામદાસ વગેરે શ્રીનાથજીની સેવાનું કાર્ય કરતા હતા. શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજીએ લીલા કર્યા પછી બંગાળી અને શ્રીવલ્લભી વૈષ્ણવો વચ્ચે કંઈ અણબનાવ થયો હતો. ત્યાં સુધી માધવેન્દ્રપુરી ત્યાં હતા, ત્યાં સુધી કંઇપણ ખટપટ ઉભી થઈ નહોતી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકોએ પોતાના ગ્રંથમાં આ મૂર્તિને ગોપાલનું નામ આપેલું માલુમ પડે છે. માધવેન્દ્રપુરી મલયાગર ચંદન લેવા સારૂ દક્ષિણમાં ગયા. ત્યાં તેઓએ આશરે ૧૩૦ વર્ષની મોટી ઉંમરે દેહ મૂકયો અને કૃષ્ણદાસ અધિકારીજીના અંકુશ અને દેખરેખ નીચે શ્રીનાથજીની સેવા બંગાળી વૈષ્ણવો કરતા હતા. શ્રીગોપીનાથજી ગુજરાતમાં પધાર્યા ત્યારે સેવા સારૂ આશરે એક લાખ રૂપિયા લાવ્યા. આ દ્રવ્ય તેમણે શ્રીનાથજીને અર્પણ કરી દીધું. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની ગુજરાતમાં ઘણી પધરામણીઓ થવાથી ગુજરાતના ધનિક લોકો પણ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરવા આવતા અને શ્રીનાથજીને મોટી ઉમદા ભેટો કરતા, એમ જણાય છે કે જે બંગાળી વૈષ્ણવો સેવા કરતા હતા તે છાનામાના આ બધી ભેટની વસ્તુઓ તેમના ગોસ્વામી જે વૃંદાવનમાં રહેતા તેમની પાસે લેઈ જતા. આથી ગુજરાતના વૈષ્ણવોમાં ઘણો અસંતોષ પેદા થયો. દેવને અર્પણ કરેલા દ્રવ્યનો આવો દુરુપયોગ થતો જોઇને અનંતદાસ નામના વૈષ્ણવે મોટી રાડ પાડી. તેણે આ રીત બંધ કરાવવા અને બંગાળી વૈષ્ણવોને કાઢી મૂકવા કૃષ્ણદાસ અધિકારીને સમજાવ્યું, શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની મંજુરી સિવાય આ કામ કૃષ્ણદાસ અધિકારીથી બને તેમ નહોતું. આથી તેણે અનંતદાસને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પાસે જઈ તેમને સમજાવવા કહ્યું. પહેલાં તો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ આનાકાની કરી, કારણ કે પોતાના પિતૃચરણે આ બંગાળીઓને સેવા કરવા રાખ્યા હતા. પણ કેટલીક વાટાઘાટ પછી આ કાર્યને સારૂ રાજા બીરબલ પર ભલામણનો પત્ર કૃષ્ણદાસ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પાસેથી મેળવી શક્યા. આ પત્ર લેઇને કૃષ્ણદાસ બીરબલને મળ્યા, પછી થોડા માણસો ભેગા કર્યા અને બંગાળીઓનાં ઝુપડાં સળગાવી દીધાં. જે ક્ષણે બંગાળીઓને આ વાતની ખબર પડી કે તરત ગોવર્ધન પર્વત પરથી બધા નીચે ઉતરી આવ્યા. પહેલાં તો તેમણે કૃષ્ણદાસની સામે ઘણો વિરોધ કર્યો પણ આખરે શરણે થયા અને કૃષ્ણદાસને એકલાને આ મંદિરનો કબજો અને ભોગવટો મળ્યો. રાજા બીરબલને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી સાથે ઘણો ગાઢ સંબંધ હતો. પોતાનો એકલાનોજ કબજો અને અધિકાર સ્થાપવા સારૂજ શ્રીગિરિધરજી ગોપાલ શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સંવત ૧૬૨૩ માં પોતાના ઘરમાં પધરાવ્યાં. આ સમયથી શ્રીગુસાંઈજીએ સેવાના નેક ભોગમાં ઘણો વધારો કર્યો, આ સ્વરૂપ અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું ઘર એ વલ્લભી વૈષ્ણવોનુંજ સ્થાન બની રહ્યું. અને બંગાળી વૈષ્ણવો પોતાના પહેલાના સંબંધને ભૂલવા લાગ્યા. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી અને ચૈતન્યનો અંગત સંબંધ ઘણો પ્રેમાળ હતો, જે આપણને શ્રીનાથજીના સ્વરૂપના સ્થાપન કરવા સંબંધી હકીકત પરથી માલૂમ પડે છે. ચૈતન્યચરિત્રના લેખકો તેમાં પણ મુખ્યત્વે કરી કરીને કૃષ્ણદાસ જે બંગાળમાં રહેતો અને જેણે ચૈતન્યચરિતામૃત નામનું પુસ્તક રચ્યું છે તેને શ્રીનાથજી પરનો તેમનો હક જવાથી ઘણુંજ તીવ્ર દુઃખ થયું. ચૈતન્યની પ્રશંસા કરવાનાં તેમના ઉત્સાહમાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના કાર્યોને હલકા પાડવાનો તેણે પ્રયત્ન કર્યો શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના લેખોમાં કોઇ પણ ઠેકાણે ચૈતન્યના સંબંધમાં કંઈપણ અસભ્ય-કઠોર શબ્દ વાપરવામાં આવ્યો નથી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકો એવો આક્ષેપ મૂકે છે કે જો કે શ્રીવલ્લભાચાર્યે ચૈતન્યનાં વખાણ કર્યાં છે, પણ તેમના સત્સંગીઓને ઉતારી પાડયા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યે ભાગવતનું શિક્ષણ જગન્નાથપુરીમાં ચૈતન્યના શિષ્ય જગદાનંદ પાસેથી લીધું. એ બન્ને વાતો ઐતિહાસિક રીતે અસંભવિત છે અને ફક્ત પોતાના ખોટા બંધાઇ ગયેલા મતને લઇને છે. આના કરતાં બીજું વધારે જૂઠાણું શું હોય

શકે ? હાલના બંગાળી લેખકો જેવા કે ડૉ. સેન અને બીજા જે આ વાતોનું અનુકરણ કરે છે તેમણે આ બાબતોનો વિવેચનબુદ્ધિથી અભ્યાસ કર્યો નથી. અમે એમ માનીએ છીએ કે ઉપર લખ્યા પ્રમાણે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કબજો જવાથી વૃંદાવનના ચૈતન્ય ગોસ્વામીઓને ઘણી નિરાશા ઉત્પન્ન થઈ અને તે બાબતનો નિરાશાનો ઉભરો તેમણે આ પ્રમાણે કહાડ્યો છે.

વૃંદાવનદાસના ચૈતન્યભાગવતમાં પુરીના બનાવ સંબંધી કંઈ પણ ઉલ્લેખ નથી એમ અમારી જાણમાં છે. શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કબજો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં હાથમાં આવ્યો તેથી ઘણાં સારાં ફળ થયાં. અકબર બાદશાહે ખાસ ફરમાન કહાડીને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને જતીપુરા ગામ બક્ષિસ આપ્યું. શ્રીનાથજીના અંગની સેવાનો અધિકાર ફક્ત શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના પુત્રો, વહુજીઓ અને બેટીજીઓને રહ્યો. બ્રાહ્મણોમાં ગિરનારા અને સાચોરાઓ જેમણે આ સંપ્રદાયનો પ્રથમથીજ અંગીકાર કર્યો હતો તેઓને સેવાના કામમાં રાખવામાં આવ્યા. હવેથી સામાન્ય વૈષ્ણવોને સદાને માટે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સ્પર્શ કરવાનું બંધ કરવામાં આવ્યું. ત્યારે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અથવા તો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મનમાં આ પરિણામ લાવવાનો વિચાર હશે કે નહીં તે શંકા ભરેલું છે. જ્યારે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ આ સ્વરૂપની સ્થાપના કરી અને જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને શ્રીનાથજીનો અપ્રતિહત કબજો મળ્યો, શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનો મુખ્ય આશય બંગાળીઓને સેવાથી દૂર રાખવાનો હતો. આ પ્રસંગે આટલું કહેવાનું અસ્થાને નહીં ગણાય કે સંવત ૧૬૧૬ માં જગન્નાથ જવાથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ઉપર ચૈતન્યના મતના વિચારોની જે અસર થઈ હતી તે મુદ્દલે રહી નહિ.

૧૬૨૯ માં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગોકુલ રહ્યા ત્યારે રાજા ટોડરમલ આપને મળવા આવ્યા હતા. રાજા દાઉદની સામે બિહારમાં શાહી લશ્કરનું સેનાધિપતિપણું લેઈ લડાઇ કરવા જવાનું તેને ફરમાન થયું હતું. આ કામ ઘણું જોખમ ભરેલું હતું અને આ સાહસ પર જતાં પહેલાં ટોડરમલ આશીર્વાદ લેવા શ્રીગુસાંઈજીની પાસે આવ્યા. એઓશ્રીએ તેમને એક 'પીતામ્બર' આપ્યું જે, આ લડાઇ કરવા નીકળ્યા ત્યારે પોતાના શિર પર બાંધ્યું. આ પરથી માલમ પડશે કે ટોડરમલને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને માટે ઘણુંજ માન હતું.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર સાથે પહેલાં જણાવ્યા પ્રમાણે બીરબલનો સંબંધ પણ ઘણો ગાઢો હતો. જ્યારે એઓશ્રી ગુજરાતમાં પધાર્યા ત્યારે જન્માષ્ટમીનો ઉપવાસ કયે દિવસે પાળવો તે સંબંધી મતભેદ થયો. ગુજરાતમાંથી પાછા ફરતાં તેમને આ વાતની ખબર પડી. તેમણે જન્માષ્ટમીનિર્ણય નામનું પુસ્તક કારણો સહિત બહાર પાડ્યું. આવીજ પરિસ્થિતમાં તેમણે રામનવમીનિર્ણયનું પુસ્તક પણ રચ્યું હતું. ગોકુલમાં શાન્તિથી નિવાસ કરવાથી પોતાના પિતૃચરણે જે ધાર્મિક ક્રિયાઓ દાખલ કરી હતી તે બધી ક્રિયાઓ બરાબર ચોકસ કરી.

શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે—શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે ગાદીએ આવ્યા. શ્રીગોપીનાથજી મોટા ભક્ત હતા. પોતાના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતાને માટે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણું માન હતું. પોતાના પિતૃચરણના સિદ્ધાન્તો શ્રીગોપીનાથજી કેવી રીતે સમજ્યા અને કેવી રીતે તે લોકો આગળ મૂક્યા તે જાણવા સારૂ આપણી પાસે સામગ્રી નથી. આપણે એટલું જાણીએ છીએ કે વર્ષનો મોટો ભાગ પોતે અડેલ રહેતા અને ચતુર્માસમાં પોતાના પિતૃચરણ પેઠે પોતે વ્રજમાં પધારતા. ત્યાં તે ગોપાલ-ઉપાસના કરતા. સાધનદીપકા નામનો ગ્રંથ એમણે રચ્યો છે એમ કહેવાય છે. આ ગ્રંથમાંથી આપણને ઘણું જાણવાનું મળતું નથી. આ ગ્રંથમાં એક એવો કાનુન મૂક્યો છે કે વિધવા સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા બાલભાવથી કરવી. પણ સૌભાગ્યવતી સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા ભર્તૃ-ભાવથી કરવી. શ્રીવલ્લભાચાર્યના

રાગમાંજ સવારના કીર્તનો ગવાતાં. સાંજના કીર્તનો પણ સાંજે ગવાય તેવા રાગમાં ગવાતાં. જન્માષ્ટમી, અન્નકૂટ એવા મોટા ઉત્સવો હોય ત્યારે આ નિયમો પાળવામાં આવતા નહિ. આવા પ્રસંગે ગમે તે સમયે ગમે તે રાગમાં કીર્તનો થતાં. સંગીતમાં ઋતુ અનુસાર રાગ બદલાય છે. નિત્યસેવામાં ઉંચા પ્રકારના સંગીતના સાજ તંબુરો, બીન, મૃદંગ, સારંગી વગેરે વપરાતાં. આજ રીત હજી પણ સંપ્રદાયમાં ચાલુ છે. અમે માનીએ છીએ કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના પુત્ર શ્રીરઘુનાથજી પોતાના પિતાજીને **ગીતસંગીતસાગર**નું નામ આપે છે તે યોગ્ય છે.

ઋતુ–અનુસાર સેવાક્રમ—નિત્યસેવાનો ક્રમ પણ ઋતુ અનુસાર બદલાતો. દરેક બાબતની એવી ઉત્તમ ગોઠવણી કરવામાં આવી હતી કે શીતકાળમાં કોઇ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં પ્રવેશ કરે કે તરતજ તેને શીતકાળની જરા પણ અગવડતા માલુમ પડે નહીં. તેજ પ્રમાણે ઉષ્ણકાળમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મંદિરમાં પ્રવેશ કરો કે તરતજ ઉષ્ણકાળ છે એજ તમે ભૂલી જાઓ. સંપૂર્ણતા એટલી હદ સુધી લેઈ જવામાં આવી હતી કે દરરોજ ઉત્તમમાં ઉત્તમ જે જે વસ્તુઓ શ્રીઠાકોરજીને ધરાવવામાં આવે તેમાં દિવસનો વખત અને ઋતુનો વિવેક રાખવામાં આવતો. અકબર બાદશાહ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની મુલાકાત લેતો અને આપશ્રીએ તેને દર્શન કરવાની છૂટ આપી હતી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે રાસપૂર્ણિમા અથવા શરતપૂર્ણિમાને દિવસે અકબર બાદશાહ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ત્યાં આવ્યાં. ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસશૃંગારનું આધિપ શ્રીકૃષ્ણ છે. શ્રીકૃષ્ણ શ્યામ છે એમ વર્ણન છે અને તેથી તે દિવસે પિછવાઈ, બિછાત વગેરે બધો સાજ સ્વાભાવિક રીતે શ્યામ રંગનો હતો. અકબર બાદશાહની વિજ્ઞપ્તિપરથી શ્યામ વસ્ત્રને બદલી સફેદ રૂપેરી કપડાં રાખ્યાં અને આ રીત હજી પણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરોમાં કાયમ છે. ચિત્રકળા એ પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનો એક આનંદનો વિષય હતો. પોતાના ઠાકુરજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું સુંદર ચિત્ર પોતાના હાથે તૈયાર કરેલું મુંબઇના ગોસ્વામી શ્રીદ્વારકેશજી મહારાજના કબજામાં છે. ઉત્સવના દિવસે સુંદર આર્તિઓ ચીતરવામાં આવતી અને તેમાં મોતી ગોઠવવામાં આવતાં અને તેમાં રંગોનું મિશ્રણ અતિ ઉત્તમ રીતે કરવામાં આવતું. આ આર્તિઓના નમુના એઓશ્રીના કુટુંબનો સ્ત્રીવર્ગજ કરતો અને હજી પણ કેટલાક આર્તિના નમુનાના નામ શ્રીરુકમણીજીની વગેરેની આર્તિઓ કહેવાય છે. ઘણુંજ બારીક ચિત્રકામ આ આર્તિઓમાં માલુમ પડતું. વસંતઋતુમાં શ્યામ અને લીલા રંગોમાં સુંદર છાપોવાળા પડદા અને પીછવાઈ જે નિત્યસેવામાં વપરાય છે, તે ઉપયોગમાં લેવાતા. તેજ પ્રમાણે સાંજીના દિવસોમાં ઉત્તમ પ્રકારના રંગોમાં કૃષ્ણલીલાઓનું વર્ણન કરતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની પ્રેરણાથી ઠાકુરજીને સારૂ તૈયાર કરવામાં આવતી. ઉત્તમ ફૂલ જેવાં કે, ગુલાબ, ચંબેલી, બકુલ, કદંબ, કમળ વગેરે શ્રીઠાકુરજીને અર્પવાની માળા ગુંથવામાં વપરાતાં. ઉષ્ણકાળમાં ફુલમંડળીઓ તૈયાર કરવામાં આવતી. તેમાં ફુલ ઘણીજ સુંદર અને રસિકતાથી ગુંથવામાં આવતાં અને પરોવવામાં આવતાં. ટુંકામાં અકબર બાદશાહના સમયમાં જે જે લલિતકળાઓનો વિકાસ થયો હતો તે બધીનો શ્રીકૃષ્ણની નિત્યની સેવામાં ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો.

ગુજરાતનો ઉદ્ધાર—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓનું ક્ષેત્ર મુખ્યત્વે ગુજરાત અને કાઠીઆવાડ હતું. આ સ્થળના લોકો સ્વભાવે વેપારી હતા. આવા લોકોને તત્વજ્ઞાનના ગહન વિષયોના પ્રશ્નો ચર્ચનારાં પુસ્તકોમાં રસ લેતા કરવા એ કંઇ મુશ્કેલ હતું. શ્રીકૃષ્ણની સેવા એજ મનુષ્ય માત્રનું ધ્યેય છે એ વાતનો સ્વીકાર કેમ કરાવવો એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરના પાસે મોટો પ્રશ્ન હતો. શ્રીકૃષ્ણની લીલાઓનો આબેહુબ ખ્યાલ આપે તેને સારૂ રાસધારીની મંડળીની યોજનાનો પ્રબંધ કર્યો. આ રીત અજબ રીતે ફતેહમંદ નીવડી અને ગુજરાતની બધી જ્ઞાતિઓએ ઘણીજ ઉત્કંઠાથી

અને શીઘ્રતાથી કૃષ્ણસેવા–માર્ગનો સ્વીકાર કર્યો. ખરું જોતાં જે કંઈ આપણે આપણું પોતાનું માનીએ તે સર્વસ્વ શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કરવાનું છે. તે વસ્તુઓ કોઇને આપી દેવાની નથી, પણ મનમાં એવી ભાવના દૃઢીભૂત કરવાની છે કે જે કંઈ આપણી પાસે છે તે પ્રભુનું છે અને પ્રભુને માટે છે. આવી જાતનો મત–સિદ્ધાંત જે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ अविद्या पूतना नष्टा गन्धमात्रावशेषिता નો ઉપદેશ કરેલો તેથી વૈષ્ણવોએ પોતાના આચારમાં સંસારની અહંતા અને મમતા કાઢી નાંખી પ્રભુ તરફ અહંતા અને મમતા વાળી દીધી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો સાદો અને અસરકારક ઉપાય યોજી પોતાનો ઉદ્દેશ પાર પાડ્યો. શ્રીકૃષ્ણની સેવામાં કુટુંબનો દરેક માણસ ભાગ લેઈ શકે અને જે વસ્તુઓ પોતાની માનવામાં આવતી હોય તેનો શ્રીઠાકુરજીને માટે વિનિયોગ થાય. આ રીતે ગુજરાતના મોટા ભાગમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે વૈષ્ણવ સંપ્રદાયને એક જીવંત ધર્મ બનાવ્યો.

આક્ષેપપરિહાર—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના પ્રતાપનાં મૂળ એટલાં ઊંડાં નંખાયાં હતાં કે થોડાજ સમયમાં તેનો એટલી હદ સુધી પ્રચાર વધી ગયો કે જ્યારે ગુજરાતમાં વૈષ્ણવ શબ્દનો ઉચ્ચાર થાય ત્યારે તેનો અર્થ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ એવોજ થતો. ડૉક્ટર ભાંડારકર જે ટીકા કરે છે કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો સેવાક્રમ ભાવનાપ્રધાન કરતાં નાટ્યપ્રધાન હતો તે બીનપાયાદાર છે. શ્રીઠાકોરજીની ખાસ કૃપા સિવાય અને પ્રેમભાવના સિવાય સર્વ સેવાસામગ્રી નકામી છે. એવો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ ઉપદેશ કર્યો હતો. ડાક્ટર ભાંડારકરે જે ટીકા કરી છે તેનું કારણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં જે સેવાપ્રકાર ચાલે છે તેનાથી તેમનું અપરિચિતપણું અને બીજું જે કોઇ સેવાપ્રકારનું જ્ઞાન તેમણે મેળવેલું તે કોઇના પાસેથી મેળવેલું હશે એમ લાગે છે. રામાનુજ માધ્વ, ગોડીઆ અને જગન્નાથના મુખ્ય સ્થાનો અને શ્રીવિઠ્ઠલના મંદિરનો અમારો અનુભવ એમ કહે છે કે કૃષ્ણસેવાનો પ્રકાર જે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ બાંધ્યો છે તે અદ્વિતીય અપ્રતિમ અને અનુપમ છે. આ બીનાનો સ્વીકાર ગુજરાતના એક મોટા વૈષ્ણવ ગુરુ સ્વામીનારાયણે મુક્ત કંઠે કર્યો છે અને પોતાની શિક્ષાપત્રીમાં પોતે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને વૈષ્ણવગુરુઓના રાજા તરીકે સંબોધે છે. શ્રીસ્વામીનારાયણે પોતાના અનુયાયીઓને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે જે સેવાપ્રકાર બાંધી આપ્યો છે, તે પ્રમાણે ચાલવા શિક્ષાપત્રીમાં ઉપદેશ કર્યો છે. ખરી વાત એ છે કે મનુષ્યમાત્રની ઉંચા પ્રકારની હૃદયની ભાવનાઓનો વિકાસ કરવા આ સેવાપ્રકાર રચ્યો હતો. એટલે આ સેવામાર્ગને નાટ્યપ્રધાન કહેવો એ આવા મોટા આચાર્યને ખરેખર તદન અન્યાય કરવા જેવું છે. અનુભવસિદ્ધ કહે છે કે આ સેવાપ્રકારનું અનુસરણ કરવાથી અનુયાયીઓને સંસારના બંધનોનું વિસ્મરણ થવા લાગ્યું એટલુંજ નહિ પણ શ્રીઠાકોરજીનો અનુભવ કરવામાં આ સેવાપ્રકાર તેમને ઘણોજ સહાયભૂત થયો. વ્યવહારમાં દોષ માલમ પડે પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે જે ઉચ્ચ આદર્શ રાખેલો ત્યાં સુધી ન પહોંચાય એમ લાગે તેમ છતાં આખા સેવાપ્રકારને નાટ્યપ્રધાન કહેવો એ તો ભાષાનો દુરુપયોગ થવા જેવું છે.

મંદિરો કેવાં હોય ?—મંદિરો બાબતમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ પોતાનોજ પ્લાન શોધી કાઢ્યો. મંદિરોને સારુ મોટાં અને જબરા ખર્ચાળ મકાનો બાંધવાનો વિચાર તેમને પસંદ નહોતો. મોટાં આલીશાન મંદિરો બાંધવા ને મુસલમાની રાજ્યમાં સહીસલામત નહોતું. આજ કારણથી પોતે ઘણીજ સાદી પદ્ધતિપર મંદિરની રચના કરવાનું કર્યું. બહારના દેખાવપરથી મંદિર છે, એમ જણાય નહીં. બહારના દેખાવથી તો તેમનું મંદિર એક સાધારણ ગૃહસ્થના મકાન જેવુંજ જણાય, પણ તેમ છતાં મંદિરની અંદરની રચના કરવામાં ઘણીજ કાળજી રાખવામાં આવતી. (Free)–ભ્રમણ કરવા અને અવકાશ મળે તેને માટે ખાસ ધ્યાન આપવામાં આવતું. અદ્યાપિ પણ

શ્રીનાથજીના મંદિરની રચના ઘણીજ સાદી પદ્ધતિની છે. મંદિરની અંદર મધ્યમાં ત્રણ કમાનવાળી ગેલેરીઓવાળો ચોક રાખવામાં આવ્યો હતો: આવી એક ગેલેરીની પાછળ નિજ-મંદિરનો ભાગ હતો. આ નિજ-મંદિરની એક બાજુએ શયનગૃહ રાખવામાં આવ્યું હતું. આ શયનગૃહને રસિક બનાવવામાં ઘણોજ ખર્ચ કરવામાં આવતો. બીજી બાજુએ ભોગગૃહ રાખવામાં આવતું જ્યાં શ્રીઠાકોરજીને ભોગ-સામગ્રી સમર્પવામાં આવતી. ભોગગૃહથી આગળ પાકગૃહ અથવા શ્રીઠાકોરજીને માટે ભોગ તૈયાર કરવા બે ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. ફૂલ, શાક, પાન, જળ આદિને માટે જુદા જુદા ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. જેને ફુલઘર શાકઘર, પાનઘર, જળગૃહ વગેરે નામો આપવામાં આવ્યાં હતાં. કીંમતી અલંકાર, આભૂષણ અને વાઘાવસ્ત્ર જે શ્રીઠાકુરજીને શૃંગારવા રાખ્યા હતા તે પણ સહી સલામત જગામાં રાખવામાં આવતા. આ મંદિર મધ્યમાં રાખવામાં આવ્યું હતું અને મંદિરની આજુબાજુ મહારાજને સારૂ રહેવાનાં મકાનો અને પ્રચારકોને સારૂ મકાનો બાંધવામાં આવ્યાં હતાં. મૂળ ખ્યાલ એ રાખવામાં આવ્યો હતો કે શ્રીઠાકુરજી એ માલિક અને ગોસ્વામી મહારાજશ્રીઓ અને બીજા બધા તેમના સેવક છે. આ વાત ધ્યાનમાં રાખી રહેવાના મકાનોની રચના કરવામાં આવી હતી.

નામસેવા અને કુટુંબપોષણ—સેવા-પ્રકારના વિકાસ કરવાની સાથે પોતાના પિતૃ-ચરણના સિદ્ધાન્તો અને મતોનું વિવરણ કરવામાં અને સમજાવવામાં તેટલાજ ઉત્સાહથી પોતે પોતાનું મન લગાડ્યું. પોતે જે સાહિત્યના ગ્રંથો રચ્યા તેમાં વિચારની અને ભાષાની પરિપક્વતા જણાઇ આવે છે. વેદાન્ત-સૂત્રોપર જે અણુભાષ્ય તેમના પિતૃચરણે લખ્યું હતું તે આ સમયમાં પોતે સંપૂર્ણ કર્યું. મોટા ધાર્મિક ગુરુઆચાર્યો તરીકેની તેમની પ્રતિષ્ઠા નિર્વિવાદ હતી. ગુજરાતના વૈષ્ણવો તરફથી ઉમદા ભેટો તેમના તરફ સંખ્યાબંધ આવતી. અકબર બાદશાહ અને તેના પ્રખ્યાત પ્રધાનો ટોડરમલ, બીરબલ, રાય પુરુષોત્તમ અને બીજાઓએ વગર માગ્યે પોતાની મદદ આપી હતી. પોતાની જ્ઞાતિના વિદ્વાન્ માણસો જે તેમની સાથે ગદામાં રહેતા હતા તે જ્યારે ત્યારે તેમની પાસે આવ્યા તેમને પોતે સારો આશ્રય આપ્યો-આ બ્રાહ્મણોની સાથે પોતે લગ્નના સંબંધ બાંધ્યા, અને તેમના પુત્રોને પોતાની બેટીજીઓ લગ્નમાં આપી અને તેમની પુત્રીઓ પોતાના પુત્રોને સારૂ લગ્નમાં લીધી. એમની જ્ઞાતિના આ બ્રાહ્મણો ભટ્ટ તરીકે ઓળખાવા લાગ્યા. પોતાના પૂર્વજોના દેશ સાથેના સંબંધની શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને હવે જરૂર ન લાગી તેમ ત્યાંનો સંબંધ ઘણોખરો છુટી ગયો અને પોતે ગોકુલવાસી થયા. ધીમે ધીમે પોતાની માતૃભાષા તેલગુને બદલે સ્થાનિક ભાષાને પોતાની માતૃભાષા કરી. વૈષ્ણવો તેમજ ભટ્ટ લોકોનો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી તરફ ઘણોજ ભક્તિભાવ હતો. આનું પરિણામ એ થયું કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને પોતાની મહત્તાનું એટલી હદ સુધી ભાન થયું કે પોતે પોતાને માટે માનાર્થમાં બહુવચનનો પ્રયોગ કરવા (વાપરવા) લાગ્યા. સાંજના અનવસરના સમયમાં જ્યારે વૈષ્ણવોને શ્રીસુબોધનીજી સંભળાવતા ત્યારે શ્રીસુબોધિનીજીના અમુક ભાગ પર પોતે નોંધ અથવા ટીકા લખતા. આ ટીકા બધી સાથે બાંધવામાં આવી અને તેનું નામ વિવૃતિપ્રકાશ આપવામાં આવ્યું. મંગલાચરણમાં 'શ્રીવિઠ્ઠલૈઃ' ક્રિયતે-શબ્દ છે તે પરથી દર્શાવેલી સ્વમહત્તાનું ભાન તેમને હશે એમ સૂચન થાય છે.

દાયભાગ—શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના ભક્તોને કેટલાંક સ્વરૂપ પધરાવી આપ્યાં હતાં. જ્યારે જે જે ભક્તો ગોલોકવાસી થયા અને તેમનો વંશ રહ્યો નહિ અથવા સ્વરૂપની સેવા કરવા અશક્ત થઈ ગયા, ત્યારે તે ભક્તોએ તે સ્વરૂપ શ્રીગુસાંઇજીને પાછાં સોંપ્યાં. આમાંના સાત અથવા આઠ પોતાને મળ્યાં હતાં. એઓશ્રીએ દાયભાગમાં સંવત ૧૬૩૪ માં પોતાના પુત્રોને આ સ્વરૂપ

વહેંચી આપ્યાં હતાં. શ્રીનાથજીની સેવાનો અધિકાર સાતે પુત્રોને મજીઆરો (સંયુક્ત) આપવામાં આવ્યો. પોતાના મોટા પુત્ર શ્રીગિરિધરજી જ્યેષ્ઠ પુત્ર હોવાથી ગાદીના અધિકારી હતા તેમ તેમની તાબામાં એ શ્રીનાથજીનું સ્વરૂપ રાખવામાં આવ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત સ્વરૂપને સાત નિધિ કહે છે. સાતે પુત્રોને સાત મકાન ગોકુલમાં બાંધી આપ્યા હતા અને દરેક પુત્રને એક એક આપવામાં આવ્યું હતું (શ્રીયદુનાથજી, શ્રીરુક્મિણીજીના પુત્ર જે સૌથી નાના હતા અને જે મોટા પુત્ર શ્રીગિરધરજીની સાથે રહેતા તેમને માટે મકાન બાંધ્યું નહિ હોય). દાયભાગમાં આપેલાં સ્વરૂપને દરેક પુત્રે પોતાના સેવ્ય સ્વરૂપ તરીકે સ્વીકાર્યું અને તેને માટે મંદિર બાંધ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત મંદિરોને સાત ગાદી તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી એક પત્રમાં પોતાના પુત્રોને યદુનાથજીને માટે ઘર બાંધવા જગા પસંદ કરવા લખે છે. એમ લાગે છે કે શ્રીયદુનાથજીને માટે મંદિર બંધાયું તે પહેલાં પોતે લીલા કરી હોય. આનું પરિણામ સંપ્રદાયમાં અનિશ્ચિત આવ્યું, કારણ કે શ્રીયદુનાથજીની ગાદીના 'માલેક તરીકે ચાર વંશજો પોતાનો હક્ક બતાવે છે.

ભક્તિહંસ—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં છેલ્લાં વર્ષો ગોકુળમાં ઘણા સુખથી પસાર થયાં. એક મુરારિ નામના પંડિતે તેમને એક એવું પુસ્તક આપવા લખ્યું કે જેમાં પુષ્ટિમાર્ગના મૂળ સિદ્ધાંતોનું એવું સચોટ વિવેચન હોય કે જેથી પોતાના દેશના બધા વિરોધીઓને પોતે નિરુત્તર કરી શકે. આના જવાબમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ ભક્તિ-હંસ નામનો ગ્રંથ રચ્યો અને તે ગ્રંથ તે પંડિતને મોકલ્યો. આ ગ્રંથ મળ્યાથી તે પંડિતને ઘણો આનંદ થયો અને ભક્તિના મૂળ કારણની વધારે સમજુતીને સારૂ માગણી કરી. આ માગણીથી તેમણે ભક્તિ-હેતુ નામનો ગ્રંથ રચ્યો. આ બે પુસ્તકો ભક્તિનું મુખ્ય કારણ પ્રભુની કૃપા અથવા અનુગ્રહ છે અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમ પોતાના અંતરંગ ભક્તોની સાથેજ રમણ કરે છે, મન્ત્ર, તન્ત્ર કરવાથી વશ થતા નથી. એમ ટુંકામાં સમજાવે છે.

આસુર-વ્યામોહ—શ્રીગુસાંઈજી સિત્તેર વર્ષથી અધિક ભૂતળ પર બિરાજ્યા. એમના જીવનમાં સંપ્રદાયના શાસ્ત્ર સિદ્ધાંત અને સેવાપ્રકાર બન્નેની યોગ્ય પરિપૂર્ણતા હતી. પોતે કેવી રીતે લીલા કરી તે બાબત તેમના ભક્તોએ અંધારામાં રાખી છે. ગોપાલદાસ વ્યારાના રહીશ તરફથી આપણને ખબર મળે છે કે તેમને જ્વર અને પેટમાં કાંઇ દરદ થયું જેથી સંવત ૧૬૪૨ ના માઘ માસની કૃષ્ણ ૭ ને દિવસે પોતે લીલા કરી. આ રીતે આ ભગીરથ કાર્ય કરનાર આચાર્યશ્રીનું પ્રકટ જીવન તિરોહિત થયું. જેનાં સુસંસ્મરણો હજી પણ વૈષ્ણવોના હૃદયમાં છે.

વિશ્રામ—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના જીવનના એક પ્રસંગમાંથી-ખોટામાંથી સારાનો ઉદ્ભવ થાય છે એ કથનનો આપણને ખ્યાલ આવે છે. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ ગોવર્ધન પર્વત પરના શ્રીનાથજીના મંદિરના અધિકારી તરીકે કૃષ્ણદાસને નીમ્યા હતા. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની સાથે કંઇક તકરારને લેઇને કૃષ્ણદાસે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને મંદિરમાં આવવા બંધ કર્યા. શ્રીગુસાંઇજીએ અધિકારીજીનો હુકમ માન્ય કર્યો અને પરાસોલી, ચંદ્રસરોવર પર છ માસ સુધી દેશવટો ભોગવ્યો. આ સમયમાં પોતે કેટલીક ઉત્તમમાં ઉત્તમ વિજ્ઞપ્તિઓ લખી છે. એમ કહેવાય છે કે દરરોજ એક વિજ્ઞપ્તિ લખાતી અને રામદાસ તે વિજ્ઞપ્તિ શ્રીનાથજી પાસે લેઈ જતા. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનો અંતરનો શું ભક્તિભાવ હતો તે આ વિજ્ઞપ્તિઓ પરથી દેખાઇ આવે છે. આ વિજ્ઞપ્તિઓના વિચાર અને ભાષાશૈલી બન્નેનો સુંદર મેળ (આ વિજ્ઞપ્તિઓમાં) જામ્યો છે. આ વિજ્ઞપ્તિઓ વાંચતાં આપણા મન પર કાયમની છાપ પડી જાય છે. પોતાના પ્રાણપ્યારાને મળવા તલસી રહેલા વિરહસંતપ્ત હૃદયનું આ પરિણામ છે. કૃષ્ણદાસે શા કારણથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને શ્રીનાથજી દૂર રાખ્યા તે બાબત અંધારામાં છે. તેમ છતાં, આખરે કૃષ્ણદાસ પસ્તાયા અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની માફી માગી ફરી મંદિર આવવાને

માટે વિનતિ કરી. આ વિજ્ઞપ્તિઓમાં દરેક શ્લોક નિરાળો જ છે. એક પ્રકાશકે ૨૫ શ્લોકનું એક ઝુમખું કરી જુદું છાપ્યું, પણ એમ કરવાને અમને તો કાંઈ કારણ જણાતું નથી. આ વિજ્ઞપ્તિઓ શી રીતે લખાઇ તે બાબતમાં અમારો શું અભિપ્રાય છે તે જણાવવું અયોગ્ય નહિ જણાય. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પત્ર લખવામાં ઘણા કુશળ હતા. ઘણા વૈષ્ણવોને પોતે પત્ર લખતા અને ઘણા વૈષ્ણવો તરફથી તેમના પર પત્ર આવતા. આ પત્રો સંસ્કૃત ગદ્યમાં લખાતા, પણ પત્રના આરંભમાં અને અંતના ભાગમાં પોતે એક બે શ્લોક લખતા અને પોતાના વૈષ્ણવોને પોતાનું ધાર્મિક કર્તવ્ય શું છે તે જણાવતા. વખત જતાં પત્રોનો નીરસ ભાગ લુપ્ત થયો, પણ શ્લોકોનો સંગ્રહ થયો અને તે જળવાયા. વિજ્ઞપ્તિઓની ઉત્પત્તિનું આ કારણ હોવાથી શ્લોકોની અસંબદ્ધતાનું કારણ આપણને સમજણ પડશે. અસંબદ્ધ છે છતાં, કર્તાની અનહદ ભક્તિનું તેમાં દર્શન છે. કેટલીક વિજ્ઞપ્તિઓમાં તો ઉત્તમમાં ઉત્તમ અને ઉમદા ભાવનાઓ પ્રાપ્ત કરવામાં આવી છે.

કૌટુંબિક જીવન—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું કૌટુમ્બિક જીવન ઘણું સુખી હતું. પ્રભુએ તેમને મોટું કુટુંબ બક્ષ્યું હતું. પોતાનાં પહેલાં વહુજી રુક્મિણીજીથી છ પુત્ર અને ચાર પુત્રીઓ પ્રાપ્ત થયાં હતાં. શોભા, યમુના, કમલા અને દેવકા બેટીજીઓ પહેલાં વહુજીથી થયાં હતાં. તે સઉને પરણાવ્યાં હતાં, અને તેઓ પણ તેમના પતિની સાથે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના ઘરમાંજ રહેતાં. શ્રીગિરિધરજી, શ્રીગોવિંદજી, શ્રીબાલકૃષ્ણજી, શ્રીવલ્લભજી, શ્રીરઘુનાથજી અને શ્રીયદુનાથ પોતાના પહેલાં વહુજી શ્રીરુક્મિણીજીના છ પુત્ર હતા. શ્રીઘનશ્યામજી સાતમાં અને પદ્માવતી વહુજીના એકના એક પુત્ર હતા. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું પહેલું બાળક શોભાજી હતાં અને તેમના પછી જ્યેષ્ઠ પુત્ર ગિરિધરજીનો જન્મ થયો હતો. પોતાના જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા શ્રીગોપીનાથજીના એક પુત્ર પુરુષોત્તમજીએ લીલા કરી હતી, પણ પુરુષોત્તમજીની બે બેનો લક્ષ્મીજી અને સત્યભામાજી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી સાથે નિવાસ કરતાં. તેમણે બન્નેએ શ્રીનવનીતપ્રિયજી તથા તેમના ઘરના ઠાકોરજીની સેવામાં પોતાનો વૈધવ્યનો કાળ ઘણા સુખમાં નિર્ગમન કર્યો. જો કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગૃહસ્થાશ્રમી અને મોટા કુટુંબની જંજાળવાળા હતા છતાં પણ સાંસારિક ઉપાધિઓ અને દુઃખમાંથી એમનું ઘર મુક્ત હતું. પોતાના કૌટુમ્બિક જીવનમાં સંસારની ગન્ધ નહોતી. પોતાના પાંચમા પુત્ર શ્રીરઘુનાથજીના પુત્ર શ્રીદેવકીનંદનજીએ રસાબ્ધિનામનું કાવ્ય લખ્યું છે તેમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાને શી રીતે રમાડતા અને ખેલાવતા તે લખી ગયા છે.

આ ઉપરથી માલુમ પડશે કે પોતાના બાળકોને રમાડતાં પણ પોતે પોતાના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણને ભુલતા નહિ, એટલુંજ નહીં પણ નાનાં બાળકોના કુમળા મગજ પર તેમનું કર્તવ્ય તેમના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાનું છે એવી છાપ પાડતા. તેમના પૌત્ર શ્રીકલ્યાણરાયજીનું રચેલું એક કીર્તન છે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરનું ઘર છોડવા પોતાની—નામરજી—કેવા નાજુક શબ્દોમાં આપે છે. જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના કાકા સંતતિ ન હોવાથી તેમના એક બાળક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના—સંતાન વગરના કાકા જ્યારે તેમના એજ બાળક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે તેમના પૌત્ર શ્રીકલ્યાણરાયજીએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરનું ઘર છોડવાની પોતાની નામરજી સુંદર અને ભાવવાહી શબ્દોમાં એક કીર્તનમાં ઉતારી છે. શ્રીકલ્યાણરાયજીને એમ ભીતિ હતી કે હું પ્રથમ પૌત્ર છું એટલે મને આપી દેશે. શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનાં કીર્તન કરી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના ઘરમાં રહેવાનો વિચાર દુનિયાની ગમે તેટલી મોહક વસ્તુઓ મેળવવાં કરતાં શ્રીકલ્યાણરાયજીને વધારે રુચિકર લાગ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાના બાળકોના સ્વભાવ સમજતા અને પોતાના લાલજીમાંથી કોઇપણ પોતાનું ઘર છોડી જવા રાજી નથી, એમ જાણતા હતા તેથી તેમણે પોતાના કાકાને કહ્યું કે જે લાલજી આપની સાથે

આવવા ખુશી હોય તેમને લેઈ જાઓ. આ જવાબથી પોતાના કાકા ભોંઠા પડી ગયા અને નિરાશ થઈ પાછા ગયા. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના વંશને તેમના કાકાએ ત્રણ શાપ આપ્યા. આ ત્રણ શાપ આ પ્રમાણે છેઃ—(૧) પોતાના જમાઈઓનું ભરણ પોષણ (૨) કરજ અને (૩) મુસાફરી. આ ગાથામાં કેટલા પ્રમાણમાં અને કેટલું સત્ય છે તેનો નિર્ણય કરવો મુશ્કેલ છે, પણ પહેલો શાપ તો અક્ષરશઃ સાચો પડ્યો છે એમ લાગે છે. અત્યારે પણ, ગોસ્વામી બાળકોની બેટીજીના પતિઓ જેમને ભટ્ટ કહેવામાં આવે છે, તેમને તેમના બધા કુટુંબની સાથે પોતાના ઘરમાંજ પાળવામાં આવે છે. બીજા શાપના સંબંધમાં આપણને તેના સત્ય માટે કેટલોક પુરાવો મળે છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ પોતાના પુત્રોને પત્ર લખ્યા છે તેમાં પોતાનું દેવું વાળવાને માટે લખાણ છે. છેલ્લો તો શાપ નથી પણ આશીર્વાદસમાન છે; કારણ કે તેથી વૈષ્ણવોની સંખ્યામાં વધારો અને સંપ્રદાયની આબાદી થાય, ગમે તેમ હો પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની મનોવૃત્તિ તો સ્પષ્ટ દેખાય છે, એમણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના અત્યાગનો બીજો માર્ગ ગ્રહણ કર્યો. પોતાની બેટીજીઓ સંસારમાં નિમગ્ન રહે એ પોતાને રુચ્યું નહિ. તેથી કરીને બેટીજીઓને પોતાના ઘરમાં રાખી જેથી પોતાના પુત્રો જે સમવડથી સેવા કરી શકે તેજ સગવડથી તેઓ પણ શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુની સેવા કરી શકે. તેમને અલબત્ત પરણાવી હતી, પણ તેમના પતિ ભટ્ટનો શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુના સેવા પ્રકારમાં કાંઇ હક નહોતો રાખ્યો. ગોસ્વામી બાળકના કોઈપણ મંદિરમાં અદ્યાપિ પણ કોઈપણ ભટ્ટને અંદરની સેવાનો અધિકાર આપવામાં આવતો નથી. શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની શ્રીઠાકોરજીની સેવાને સારૂ જે કરજ થતું કે કોઈ વખત વાંધા પડતું ગણાતું નહોતું. આ દેવું સંસારના કામકાજ માટે નહોતું તેથી કરજના અનિષ્ઠ પરિણામનો આ દેવાની સાથે સંબંધ ન ગણાય.

સેવકો પર દયા—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના વંશજો પર આ શાપની ખરાબ અસર થઈ નહોતી. તેમનો ગૃહસ્થાશ્રમ સુખી હતો. શ્રીગિરિધરજી અને શ્રીરઘુનાથજીનાં વહુજી બન્ને બેનો થતાં, તેમ શ્રીયદુનાથજી તથા શ્રીઘનશ્યામજીનાં વહુજી પણ બેનો થતાં. તેમનાં કુટુંબનાં માણસો સુખી હતાં એટલુંજ નહિ પણ જે જે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના સંસર્ગમાં આવ્યા તે પણ ઘણા સુખી અને સંતોષી હતા. આ બાબતનું વર્ણન માધવ દ્વિવેદી નીચેના શબ્દોમાં કરે છેઃ—

श्रीविठ्ठले दीक्षिते च राजमाने महीतले ।
वैकुण्ठगमनेच्छा कुण्ठिता वैकुण्ठवासिनाम् ।

મિરનારા અને સાચોરા બ્રાહ્મણો જેમણે પ્રથમથીજ સંપ્રદાયનો સ્વીકાર કર્યો હતો તેમને અંદરની સેવાનો અધિકાર શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ આપ્યો હતો અને તેમણે કાંઈપણ આર્થિક બદલાની અપેક્ષા વગર સેવા કરી. તેમનો ધર્મ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની આજ્ઞા પ્રમાણે શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની સેવા કરવાનો હતો. એઓશ્રીએ તેમના નિર્વાહને માટે બધો બંદોબસ્ત કર્યો હતો. પોતાના સેવકોના સુખને સારૂ પોતે કેટલી કાળજી રાખતા તે નીચેની હકીકત પરથી જણાઈ આવશે. નિત્યની સેવા સારૂ સેવકોને અતિદૂર જઈ શ્રીયમુનાજળ લાવવું પડતું હતું પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાના પત્રમાં લખે છે કે જો સેવકોને શ્રીયમુનાજીમાંથી જલ લાવવાનું બહુ શ્રમ ભરેલું હોય તો તેમને મહેનત આપશો નહીં કારણ કે શ્રીકૃષ્ણ પણ કોમલ સ્વભાવના છે અને કલેશથી કંઈ વસ્તુ શ્રમ કરીને તેમને માટે લાવવામાં આવે તો તે સ્વીકાર કરે નહીં, (श्रीयमुनाजलानयनार्थं सेवकैः कर्तव्यं, परन्तु नातिक्लेशेन, मत्स्वामिनः कोमलस्वभावात्) સેવકોને માટે પોતાને આટલી બધી લાગણી હતી તો તેમના ભાઈઓ પણ પોતાની લાગણીઓ જ્યારે પ્રસંગમાં પ્રદર્શિત કરેજ. આપશ્રીના કુટુંબનું સંમિલિત

વર્ણન કરતાં ગોપાલદાસ કવિ તેમના કુટુંબને કલ્પવૃક્ષ તરીકે વર્ણવે છે તે ખરેખર યોગ્યજ છે. (श्रीविट्ठल कल्पद्रुम फल्यो तेना शाखा प्रसरी अनेकरे रसना)

વેદનો ખરો અર્થ—પ્રાચીન સમયથી વેદ ઈશ્વરપ્રણીત માનવામાં આવે છે. અને બ્રહ્મના સીધા સંબંધમાં હતા તે ઋષિઓને તે પ્રકટ થયા હતા અને અદ્યાપિ પણ કોઈ ઋષિના ગોત્ર મારફત પોતાનો વંશ માનવામાં ઘણા હિંદીઓ અભિમાન માને છે. વખત જતાં આ સીધો સંબંધ નાશ પામ્યો અને શ્રુતિમાં મતભેદને લેઈને બ્રહ્મના ખરા સ્વરૂપ વિષે સંદેહો ઉત્પન્ન થયા. આ સમયમાં ભુતલપર બાદરાયણ વ્યાસનો અવતાર થયો, અને તેમણે પોતાના બ્રહ્મસૂત્રમાં બધી શ્રુતિઓનો સમન્વય કર્યો. જુના સંપ્રદાયના હિંદીઓ બાદરાયણ વ્યાસને જ્ઞાનાવતાર માને છે. અને વેદાન્તના બધા અર્થ કરનારાઓ બાદરાયણ વ્યાસની authority (આધાર) માન્ય રાખે છે. વખત જતાં બ્રહ્મસૂત્રોના ખરા અર્થનું વિસ્મરણ થયું અને જુદા જુદા ટીકાકારોએ જુદી જુદી રીતે અર્થ કર્યા. હિંદુસ્તાનમાં બૌદ્ધના ફેલાવા સાથે, આ બધા બ્રહ્મસૂત્રના અર્થના ગ્રંથો નાશ પામ્યા, અને થોડી વૃત્તિઓ સિવાય, સૌથી પ્રાચીન અર્થવાળી વૃત્તિ આપણને શ્રીશંકરાચાર્યની મળે છે. (Oriental) પુર્વની વિદ્યાના પ્રખર વિદ્વાનોએ શ્રીશંકરના ભાષ્યનો સારી રીતે અભ્યાસ કર્યો છે, અને તેઓ કહે છે કે શ્રુતિઓના (સાદા અને સહજ) શ્રીશંકરના પછી ભાસ્કર, રામાનુજ, મધ્વ અને નિમ્બાર્ક અને બીજા આચાર્યો થયા જેમણે (શ્રીશંકરના) એમણે કરેલા ભાષ્યના અર્થો ખરા માન્યા નથી. અને જેમ જેમ શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યના અણુભાષ્ય અને પ્રકાશનો અભ્યાસ થાય છે તેમ તેમ બ્રહ્મસૂત્રોના સાચા અને શબ્દના ખરા અર્થના પ્રણેતા તરીકે Merity લોકો શ્રીવલ્લભાચાર્યને કબુલ કરે છે. પોતાના આ ગ્રંથમાં શ્રીશંકરે અર્થ કર્યા પ્રમાણે બ્રહ્મનું ખરૂં સ્વરૂપ નિર્વિશેષ છે કે સવિશેષ છે કે બન્ને છે; તેનો શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ વિવરણ કર્યું છે અને ગ્રંથકર્તાએ બધા તકરારી વિષયો ઉપર જોશથી અને નવીનતાથી વિવેચન કર્યું છે.

અણુભાષ્યના પાછળના ભાગમાં વિદ્વન્મંડનમાંથી ઉતારા આપ્યા છે પરંતુ વિદ્વન્મંડનમાં છેલ્લાં સૂત્રોમાંથી કંઈપણ હવાલો આપવામાં આવ્યો નથી. તેથી એમ અનુમાન થાય છે કે અણુભાષ્ય સંપૂર્ણ કર્યા પહેલાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ વિદ્વન્મંડન રચ્યું હશે. પ્રૌઢ વિચારો અને સચોટ દલીલો ઘણી પ્રતિભાશાલી અને સરલ ભાષામાં આ ગ્રંથમાં દર્શાવેલાં છે અને તેનું નામ વિદ્વન્મંડન વિદ્વાનોનું ભૂષણ આપ્યું છે તે યોગ્યજ છે.

बादशाही फरमानो.

[જગદ્‌ગુરુ આચાર્યવર્ય શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર શ્રીગોસ્વામી તિલકાયત શ્રી૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજશ્રીએ આ બાદશાહી ફરમાનોને સુંદર ગ્રન્થ સીમલામાં તા. ૨–૧૦–૩૨ ના રોજ નામ. વાઈસરોય સાહેબ લોર્ડ વિલિંગડનને બક્ષીસ કર્યો ત્યારે તેમણે તે સાથે જે પરિચયપત્ર અંગ્રેજી રજુ કર્યું હતું તેનો અનુવાદ નીચે આપેલો છે.]

સદુપયોગ માટે અને સમજણ માટે સંક્ષિપ્ત ઇતિહાસઃ—શ્રી૧૦૮ શ્રીમાન્ ગોસ્વામીશ્રી તિલકાયિત શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજ, નાથદ્વારાધીશ, મેવાડાંતરગત, આપશ્રી વલ્લભસંપ્રદાયના મુખ્ય આચાર્ય છે; આપશ્રી "સંપ્રદાય–જગદ્‌ગુરુ" શ્રીવલ્લભાચાર્ય, "**શ્રીમહાપ્રભુ**", "**આચાર્ય સમ્રાટ્**" થી ૧૪ મી પેઢીએ આવે છે. (આ પદવીઓ દક્ષિણનાં હિન્દુ સમ્રાટ્ મહારાજા કૃષ્ણદેવરાય, વિજયનગરાધીશ, કે જેઓ આચાર્યશ્રીના એક શિષ્ય થયા હતા, તેમણે સત્કાર કરી

માનપૂર્વક રાજચિહ્નોસહિત આપેલી છે.) શ્રીવલ્લભાચાર્યના પુત્ર ગોસ્વામી શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી થયા. આપશ્રીને અને વંશજોને મોગલસમ્રાટ્ બાદશાહ અકબર અને તેમના વંશજો પાસેથી અનેકાનેક ફરમાનો, સનંદો મળેલાં છે. આ ફરમાનોમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને "હકાયક વા મારફતે આગા" નો ઇલ્કાબ આપવામાં આવ્યો છે, અને મોગલ સામ્રાજ્ય નિત્ય ટક્યું રહે તેવી પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની વિનતિ કરવામાં આવી છે.

બાદશાહ શાહજહાન તરફથી શ્રીવિઠ્ઠલરાયને, એટલે કે તેમના મૂળ સ્થાપકથી પાંચમા વંશજને "તિલકાયત" નો ખિતાબ આપવામાં આવ્યો છે. (તે કારણે આજ સુધી શ્રીનાથજીના મહારાજો તિલકાયત કહેવાય છે.)

શ્રીદામોદરલાલજી મહારાજ, ૯ જા પેઢીમાં ૧૧ મા આપશ્રીને, નામ. લોર્ડ આમહર્સ્ટે, ઉદેપુરના મહારાણાએ, જયપુરના મહારાજાએ, કોટાહના મહારાવે જે ખરીતા લખ્યા છે, તેમાં **હકાયક વા મારફતે આગા** તરીકેનો ખિતાબ મંજુર રાખ્યો હતો અને અંગત મુલાકાતનો પણ લાભ આપ્યો હતો. આપશ્રીને ઉદેપુરના મહારાણાઓએ ગામડાંઓ ઇનામ-ભેટ તરીકે આપેલાં છે અને ન્યાયાધિકારની સત્તા સુદ્ધાં આપી છે.

[**મહારાજશ્રીના ઇલ્કાબો**—પરમપૂજ્ય, જગદ્‌ગુરુ, આચાર્યસમ્રાટ્, હકાયક વા મારફતે આગા, તિલકાયત શિરોમણિ ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજ, શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયના મુખ્ય આચાર્ય શ્રીનાથદ્વારા-મેવાડ અ. પ્રમાણે છે.]

પ્રાચીનકાળથી ગોસ્વામી મહારાજશ્રીઓના કુટુંબીઓ સરકારનું ભલું ચાહનારા છે, અને સાંપ્રત સમયમા ગોસ્વામી મહારાજોએ દેશકલ્યાણનાં ઘણાં સારાં કામો કર્યાં છે, અને નામ. બ્રિટિશ સરકારે તેઓને દિલ્હીની કોર્ટમાં અંગત હાજરી આપવાથી મુક્ત કર્યાં છે.

સાંપ્રત સમયના મહારાજશ્રીને ઝાલાવાડના મહારાજ રાણા ભવાનસિંઘજીએ એક જોડ પિત્તળની તોપોની પણ ભેટ આપી છે.

ઉદયપુર, જોધપુર, કોટા, બુંદિ, ઝાલાવાડ, વડોદરા, ગ્વાલીયર, ઇંદોર, બિકાનેર, અલ્વર, કરોલી, ભરતપુર, બનારસ, દરભંગા, હથવા, ડુંગરપુર, વાંસવાડા, પ્રતાપગઢ, કિશનગઢ, ધાર, દીવાસ, ખિલ્ચીપુર, પોરબંદર, જામનગર, લિંબડી, મોરબી, લખતર, કચ્છ, રતલામ ઇત્યાદિના મહારાજાઓ એક અને સર્વે આપશ્રીને ગુરુ તરીકે માન આપે છે, અને ગામો, જમીનો ભેટ-ઇનામમાં આપ્યાં છે, અને ઘણા જુના કાળથી તેનો ગિરાસ હાલના મહારાજશ્રી ભોગવતા આવ્યા છે.

બનારસ-કાશીમાં જ્યારે બ્રાહ્મણમહાસંમેલન મળ્યું હતું અને .જળગામમાં અખિલ **ભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘનું** અધિવેશન થયું હતું ત્યારે, આપશ્રીના પ્રથમ પુત્ર લાલબાવા સાહેબ શ્રીદામોદરલાલજી મહારાજ શ્રીશંકરાચાર્ય અને શ્રીરામાનુજાચાર્ય આદિની હાજરીમાં પ્રમુખસ્થાને વરાયા હતા.

શાહી ફરમાન ૧ લું (ગોકુળમાં નિરાંતે રહેવા બાબદ.)

જલાલુદીન મહમ્મદ અકબર બાદશાહ ગાઝીનું ફરમાન—તે પોતે સ્વતંત્ર છે, જલાલુદીન મહમ્મદ અકબર બાદશાહ ગાઝી.

વિઠ્ઠલદાસ જે કે નિઃશંક હમારું ભલું ઇચ્છનાર છે, અને જે હસજે ગોકુળમાં રહે છે, તેમને તેમજ તેમનાં સગાંવહાલાં અને નોકરચાકરને આ આખી દુનીઆના રક્ષક બાદશાહના. તેમજ બીજા અધિકારીઓએ કોઇ રીતે સતાવવા નહિ. અને તેમની પાસેથી કોઇ પણ રીતે કોઇ પણ ચીજની **માગણી કરવી નહિ.** એમને પોતાના રહેઠાણમાં અને પોતાની જગામાં

હોડીઘાટ પેઢી દર પેઢી **ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાયને** યાવચ્ચંદ્રદિવાકરૌ આપવામાં આવ્યાં છે તથા તેનો કબજો પણ સોંપી દેવામાં આવ્યો છે, તો આ સર્વમાન્ય આજ્ઞા કાઢવામાં આવે છે કે સઘળા દિવાની અમલદારો, જાગીરદારો, કરોડીઓ; મુલ્ક અધિકારીઓ અને ચોધરીઓએ સદરહુ હુકમ મુજબ વર્તવું અને સદરહુ ગામ તથા હોડીઘાટ સદરહુ શખ્સના તાબામાં રહેવા દેવાં. એ હુકમમાં તેમણે જરાપણ ફેરફાર કરવો નહિ અને જમીનના કર, કારખાનાના કર, કોઇ પણ જાતનો માથાવેરો, દીવાની કે ફોજદારી; વેઠ વગેરેની માગણી તેમની પાસે કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ, તેમને એ સઘળી **માગણીઓથી મુક્ત ગણવા.** દરેક વર્ષે તેમની પાસ નવાં નવાં ફરમાન કે પરવાના માગવાં નહિ, જેથી કરીને એઓ આ શહેનશાહી મહેરબાનીથી સંતોષ પામી નિરાંતે હમારા ચિરસ્થાયી રાજ્યના શ્રેય માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવામાં મશગૂલ રહે.

લખ્યું, ખોરદાદ માસને ૧૫ મે દિવસે ઇલાહીસનેના વરસ ૩૮ માં (રમઝાન માસની ૫ મી તારીખ. હી. સ. ૧૦૦૧, શનિવાર ૨૬ મી મે ઇ. સ. ૧૫૯૩, વિક્રમ સંવત ૧૬૪૧)

શાહી ફરમાન ૬ ઠું (જતીપુરા અને કર માફી બાબદ).

શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન.

ઇશ્વર મ્હોટો છે.

સહાર પરગણાના હાલના તથા હવે પછીના થનારા અમલદારો જેઓ શહેનશાહની મહેરબાનીથીજ એ ઓદ્દો ભોગવે છે, તેમને માલમ થાય કે હમણાં હમારી પવિત્ર દરબારમાં એવી અરજ ગુજારવામાં આપી છે કે ગોરધનનાથના **ટીકાયત*** **ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાય** જેઓ ાકુળમાં રહે છે, તેમણે મોજે **જતીપુરા ઉર્ફે ગોપાલપુર**માં દામ આપી, જમીનના માલિક ાસથી જમીન ખરીદી, તેના પર મકાન, ગૌશાળા, બાગબગીચા, કારખાનાં—ગોવરધનનાથના પયોગ માટે—ઉભાં કરી પોતે પણ ત્યાં રહે છે, તે ઉપરથી સર્વમાન્ય અને આકાશ જેવો ઉચ્ચ કમ બહાર પાડવામાં આવે છે કે એ મોજાની જમીનો નામદાર શહેનશાહ તરફથી તેમને તેમના ાતાના ઉપયોગ તેમજ ઠાકોરદ્વારના ખરચ માટે કરથી મુક્ત તથા વેરો ભરવાની જવાબદારીથી હિત, એવી રીતે આપવામાં આવી છે. તેથી વર્તમાન તથા ભવિષ્યમાં થનારા દરેક હાકેમ અને મુલ્કી અમલદારો તથા જાગીરદારોની એ ફરજ છે કે તેમણે આ મહાન્ શહેનશાહી હુકમને જારી રાખવા તથા તેનો અમલ થતો રહે તે બાબતની તાકીદ રાખવા કોશીષ કરવી અને સદરહુ ગોસ્વામીના તાબામાં એ જમીનો પેઢી દર પેઢી ચાલુ રાખવા દેવી. એ હુકમમાં તેમણે જરા પણ ફેરફાર કરવો નહિ, તેમ જ એ મોજા (ગામ) ને સંબંધે જમીનવેરો, કારખાનાનો વેરો, માથાવેરો, મુકાદમી વેરો, કાનુન ગોઇનો વેરો, દીવાનો કર, શહેનશાહી માગણીઓ વગેરે જાતના વેરા ભરવાની માગણી કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ. તેમ દરેક વરસે તેમની પાસે નવાં નવાં ફરમાન માગવાં નહી અને આ ફરમાનની વિરુદ્ધ વર્તવું નહિ.

લખ્યું, મેહર મારાને ૧૭ મે દિવસે ઇલાહી વરસ છઠ્ઠામાં (રવિવાર, તાં. ૨૯ મી સપ્ટેમ્બર ઇ. સ. ૧૬૩૩. વિક્રમ સંવત્ ૧૬૯૦)

શાહી ફરમાન ૭ મું (ગોકુલવાસ બાબદ).

અબુલ મુઝફ્ફરૂદ્દીન શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન—ઈશ્વર મ્હોટો છે.

હાલમાં એક સુખપ્રદ અને મહાન્ ફરમાન એવું બહાર પાડવામાં આવ્યું છે કે મહાવન પરગણાનું ગોકુળ ગામ જુના વખતથી **વિઠ્ઠલરાય ગોસ્વામી**નાં ફરજન્દોને તેમના ઠાકોરદ્વારના

---

* આ ટીકાયત અથવા તિલકાયત-એ ઇલ્કાબ સૌથી પહેલો શાહજહાન બાદશાહે આ ઘરના ગાદીપતિને આપેલો છે.

ખરચ માટે કરથી મુક્ત કરી આપવામાં આવ્યું છે, તેથી આ સર્વમાન્ય આજ્ઞા પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે કે હાલના તથા હવે પછી થનારા સર્વ મુલ્કી અમલદારો અને જાગીરદારોએ આ હુકમને આધીન થવું અને સદરહુ ગામ એ ઠાકોરદ્વારના ખરચ માટે તેમની પાસે રહેવા દેવું. અને સદરહુ ગોસ્વામી તથા તેમના ફરજન્દોને સંબંધે તેમાં કોઇ પણ પ્રકારનો ફેરફાર કરવો નહિ, અને તેમને દરેક જાતના કરવેરા, માથા વેરા, ઝાડની ઉપજના વેરા, મુલ્કી તથા બીજા કર આપવામાંથી મુક્ત અને છૂટા ગણવા, અને તેમની પાસે નવા પરવાના માગવા નહિ કે જેથી એ ગોસ્વામી જે જૂના વખતની હમારા ચિરસ્થાયી રાજ્યના શ્રેય સંબંધે ઇશ્વરપ્રાર્થનામાં મશગૂલ રહેતા આવ્યા છે તે પોતાની સ્થિતિથી સંતોષ પામી હમારા હમ્મેશ સુધી ટકે એવા રાજ્યના ભલા માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવામાં કાળ વ્યતીત કરે.

લખ્યું, આબાન માસને ૬ ટ્ટે દિવસે ઇલાહી વરસ છઠ્ઠામાં (તારીખ ૧૮ મી ઓકટોબર ઈ. સ. ૧૬૩૩. વિક્રમ સંવત્ ૧૬૯૦)

શાહી ફરમાન ૮ મું (ગોકુલમાં નિશ્ચિંતવાસ અને ગાયો બાબદ.)

તે પવિત્ર (પરવરદેગાર)ના નામથી શાહજહાન બાદશાહનું ફરમાન શાહજહાન બાદશાહના શાહઝાદા મહમ્મદ દારા શિકોહની મહોર હી. સ. ૧૦૫૩.

(ઈ. સ. ૧૬૪૩).

હાલમાં એવું આલા ફરમાન પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવ્યું છે કે **વિઠ્ઠલરાય તે દામોદર દીક્ષિતના પુત્ર** આ ચિરસ્થાયી રાજ્યનું શ્રય પ્રાર્થનાર, ગોકુળ કસ્બામાં રહે છે, અને એ જગા સદરહુ શખ્સનું વતન છે; તેથી ત્યાં તેમની મિલકત આવેલી છે તથા ત્યાં તેમની ગાયો રહે છે, (તેથી) હુકમ ફરમાવવામાં આવે છે કે કોઇ પણ વ્યક્તિએ એમને હેરાન કરવા યા રંજાડવા નહિ કે જેથી તેઓ પોતે નિશ્ચિન્ત અને હમારૂં ચિરસ્થાયી રાજ્ય ચિરકાળ ટકે તેને માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવાની ચાલુ રાખે અને તે કાર્યમાં મચ્યા રહે. એ જગાની પાડોશના બદમાશોએ તેમ જ બીજાઓએ એમને એમની મિલકતના સંબંધમાં હેરાન કરવા નહિ કે તકલીફ આપવી નહિ.

શાહી ફરમાન ૯ મું (દાણામંડીના* હક્ક બાબદ).

ઇશ્વર મ્હોટો છે.

ઇસ્હાક આઝમખાન શાહજહાનના તાબેદારની મ્હોર (હી. સ. ૧૦૫૬).

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી થનારા દીવાની અમલદારોને માલમ થાય કે નાથા નામના એક શખ્સે એવી અરજ ગુજરી કે ગોકુલની દાણામંડી (હાટ)ના તોળાટની મુઠ્ઠી લેવાનો હક્ક જો તેને આપવામાં આવે તો દર વરસે સરકારમાં તે રૂ. ૧૭૫ ભરશે. પરંતુ અત્યાર સુધી ચાલ્યા આવતા રિવાજ મુજબ એ મંડીને સંબંધે ઉઘરાવવામાં આવતાં નાણાં કદિ પણ સરકારી ત્રીજોરીમાં લેવામાં આવ્યાં નથી. તેમ જ એવું પણ કહેવામાં આવેલું કે એવી રીતનો હક્ક પ્રાપ્ત કરી મજકુર નાથાનો ઇરાદો ત્યાં આગળ એક દુકાન જમાવવાનો છે, અને જો તેમ કરવા દેવામાં આવે તો વેપારીઓની આવજાવ બંધ થઇ જવાનો ડર રહે છે. તથા ત્યાંના વતનીઓ તથા રહેવાસીઓ જેઓ પોતાને જોઇતો દાણો તથા બીજી વસ્તુઓ એ મંડીમાંથી ખરીદે છે તેમને માટે પણ એક હરકત રૂપ થઇ પડે, અને વળી જુના વખતથી એ **મંડી ગોસ્વામી**

---

*ઉત્તર હિંદુસ્તાનમાં દાણાનું બજાર (હાટ, મંડી, મંડવી) જ્યાં ભરાય છે ત્યાં દાણો વેચનાર પોતે ખરીદનારને દાણો તોળી આપતો નથી; પણ જુદા તોળાટ રાખે છે, તે તોળાટને ખરીદનાર મુઠ્ઠી અનાજ આપે છે. તે મુઠ્ઠી લેવાના હકને સંબંધે આ સનદ છે. (કૃ. મો. ઝવેરી.)

વિઠ્ઠલરાયનાં માણસોના કબજામાં ચાલતી આવેલી છે, તેમજ ત્યાંથી માલ ખરીદ કરનાર વેપારીઓ તથા બીજા ગ્રાહકો પોતાની રાજીખુશીથી વિઠ્ઠલરાયનાં એ માણસોને હુન્ડરકમ આપે છે. તેટલા માટે એવો હુકમ કરવામાં આવે છે કે રૈયતનાં ભલાને ખાતર એ મંડી કદીમના રિવાજ મુજબ **ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાયનાં** માણસોના તાબામાં ચાલુ રાખવામાં આવી છે. માટે અમલદારોએ ધ્યાન રાખવું કે કોઇ પણ બીજા માણસો તેમાં દખલગીરી કરે નહિ, કે જેથી વેપારીઓ નિશ્ચિંતપણે આવજાવ કરે અને કોઇ રીતનો નવો રિવાજ દાખલ થાય નહિ. આ બાબતમાં આવો હુકમ થયો છે તે સૌને રોશન થાય.

લખ્યું, મહાન શાબાન માસની ૧૦ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૬ (ઇ. સ. ૧૬૪૬, વિક્રમ સંવત્ ૧૭૦૩.)

શાહી ફરમાન ૧૦ મું (ગોકુલની દાણામંડી બાબદ)

ઇશ્વર મ્હોટો છે.

શાહજહાનના તાબેદાર મુકરમતખાનની મ્હોર.

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી થનારા મુત્સી અમલદારો તથા દીવાની અધિકારીઓને માલમ થાય કે મજકુર પરગણામાં આવેલી મોજે **ગોકુલની દાણામંડી ગોસ્વામી ગિરધરલાલના તાબામાં આપવામાં આવેલી છે.** તેથી જણાવવાનું કે આગલા રિવાજ મુજબ મજકુર મંડી મજકૂર શખ્સના તાબામાં રહેવા દેવી. એ અધિકારીઓએ એમને એ બાબતમાં કોઇપણ પ્રકારે હેરાન કરવા યા રંજાડવા નહી. આટલા માટે એ બાબતમાં આ હુકમ કાઢવામાં આવ્યો છે.

લખ્યું, સફર માસની ૧૦ મી તારીખે બાદશાહને તખ્તનશીન થયાના ૨૦ માં વરસમાં (રવિવાર તા. ૭ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૩)

શાહી ફરમાન ૧૧ મું (ફરિયાદો સાંભળવા બાબદ)

તે દયામય અને કરૂણામય (ઇશ્વર)ના નામથી શાહજહાન બાદશાહ ગાઝીના શાહજાદા મહુમ્મદ દારા શિકોહની મ્હોર.

હમારી કૃપાને માટે દરેક રીતે લાયક તથા અનુગ્રહને માટે સંપૂર્ણ રીતે યોગ્ય એવા મુકર્રમતખાનાને માલમ થાય થાય કે ગોકુલ અને ગોપાલપુરના રહીશ, **દામોદરના પુત્ર વિઠ્ઠલરાય** જે કે હમારા ચિરસ્થાયી રાજ્યના શ્રેયને અર્થે હંમેશા ઇશ્વરની પ્રાર્થના કરે છે તેમણે હાલમાં (હમને) મહાન્ શહેનશાહને અરજ ગુજારી રાજ્યના સ્તંભ (મુકરમતખાન) તરફથી જે જે એમના શ્રેયને અર્થે કરવામાં આવ્યું તે તે જણાવ્યું. (એ અરજ સાંભળ્યા બાદ) તેમને રીતસર અત્રેથી વિદાય થવાની રજા આપવામાં આવી છે, અને તેથી તેઓ પોતાને વતન પાછા પાછા ફરે છે. તેટલા માટે આ મહાન્ હુકમ કાઢવામાં આવે છે કે રાજ્યના સ્તંભ પાસે તેઓ પોતાના કાંઇ પણ કાર્ય માટે વિનતિ કરે તો આ હુકમ મુજબ બને તેટલું તેમનું ભલું કરી આપવાની પોતે કોશેશ કરવી અને હુકમની વિરુદ્ધ કોઇને વર્તવા દેવું નહિ, તેમજ એમને કે એમના ભાઇઓને કોઇપણ પ્રકારે હેરાન કરવા નહિ, કે જેથી પોતાના વતનમાં પોતે આબાદ થઇ આ ચિરસ્થાયી રાજ્યની આબાદી માટે ઇશ્વરની પ્રાર્થના કરતા રહે.

લખ્યું, પહેલા જમાદી મહિનાની ૨૭ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૭ (ઇ. સ., ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત્ ૧૭૦૪)

શાહી ફરમાન ૧૨ મું (શ્રીનાથજીની ગાયો બાબદ).

બુલંદ ઇકબાલશાહ મહુમ્મદ દારા શિકોહ શાહજહાન બાદશાહ ગાઝીના શાહજાદાનું ફરમાન.

શહેનશાહની મહેરબાનીના ખાહેશમંદ, હાલનો અને ભવિષ્યના ઓડ પરગણાના મુલ્કી અમલદારોને ઝાહેર થાય કે આલી શહેનશાહની પાસે અરજ ગુજારવામાં આવી છે કે **ગોરધન નામનું દેવાલય** કે જે મોજે **ગોપાલપુરમાં** આવેલું છે, તેના તાબાની ગાયો મજકુર પરગણાનાં ગામ બછગાંવ અભય્ઝાની જમીન (સીમ) માં ચરવા જાય છે, અને તેથી આ શહેનશાહી ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે, (કે) એ દેવાલયના તાબાની ગમે **તેટલી ગાયો તે જગાએ ચરવા જાય** તો ચરાઇનો કર લેવાને બ્હાને કોઇએ તેમને (ચરતાં) અટકાવવી નહિ અને એ બાબતમાં કશો લોભ કે આશા રાખવાં નહિ. આ બાબતમાં આને ખરેખરો હુકમ સમજવો.

લખ્યું, જમાદી બીજા મહીનાની આઠમી તારીખે શહેનશાહના ગાદીએ આવ્યાને ૩૨ મે વરસે (બુધવાર ૧૩ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિ. સં. ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૩ મું (ગોકુલ અને કરવેરાની માફી બાબદ)

તે દયામય અને કરૂણામય (ઇશ્વર) ના નામથી શાહજહાનના ફરમાનની મ્હોર દારા શિકોહની મ્હોર.

શહેનશાહની મહેરબાનીની ઉમેદ રાખનારા, હાલ તથા હવે પછી થનારા, મહાવન પરગણાના દિવાની અમલદારોને માલમ થાય કે આલા દરજ્જાના શહેનશાહ પાસે અરજ ગુજારવામાં આવી છે કે તેમના મહાન ફરમાન મુજબ મજકૂર પરગણામાં આવેલું **ગોકુળ ગામ સેવક ગિરધરને ગોકુલનાથના** ઠાકોરદ્વારના ખરચને માટે આપી દેવામાં આવેલું અને મજકૂર ગિરધરના પરલોકવાસ બાદ તેના વારસોના કબજા ભોગવટામાં તે ચાલુ છે; તો આ મહાન ફરમાન કાઢવામાં આવે છે કે જેને તાબે થવું જોઇએ. એવાં (આગલાં) ફરમાનોની રૂએ અને અત્યાર સુધી ચાલતા આવેલા રિવાજ મુજબ તે ગામ **વિઠ્ઠલરાયના સુત ગિરધર** તથા **સદ્દગતના નબીરા** તથા **બીજા વારસોના** તાબામાં રહેવા દેવું અને જે જે કરવેરામાંથી તેમને મુક્ત કર્યા છે તે તે કરવેરા તેમની પાસથી માગી તેમને હેરાન કરવા કે રંજાડવા નહિ.

લખ્યું, રજબ મહિનાની ૨૭ તી તારીખે હી. સ. ૧૦૬૮ (ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિક્રમ સંવત ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૪ મું (ગોકુલ ગામ બાબદ)

તે પવિત્ર અને મહાન ઇશ્વરના નામથી અબુલ મુઝફ્ફર જલાલુદ્દીન મહુમ્મદ શાહ આલમ બાદશાહ ગાઝીની મ્હોર હી. સ. ૧૧૬૪.

આ સુખના સમયમાં આ ઉચ્ચ અને દબદબા ભરેલું ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે કે, ખિલાફતના સ્થાન અકબરાબાદના સુબામાં આવેલા ઇસ્લામાબાદના સરકારમાં મહાવન પરગણાનું ગામ મોજે **રસાલપુર ઉર્ફે ગોકુલ તીમગા* ઇનામ તરીકે** ધાર્મિક :સત્યોથી જ્ઞાત, અને સત્ય જ્ઞાનથી અંકિત એવા **ગોસ્વામી મુરલીધર તથા તેનાં ફરજંદોને** કરવેરાથી મુક્ત કરી આપવામાં આવ્યું છે. તેનાં સબંધમાં તાલીકોના† મજકૂર મુજબ ફસલ્કાનઇલની‡ પાનખર

*યાવચ્ચંદ્રદિવાકરો ભોગવાય તેવી જાગીર, કરવેરાથી મુક્ત વેચી શકાય અને વારસોને ઉતરે તેવી. † શહેનશાહે મંજુર કરેલા ફરમાનનો ખરડો. ‡ તુર્કી રીત પ્રમાણે ગણાતા બાર મહિનામાંના એક મહિનાનું નામ. (ફ. મો. ઝવેરી).

ઋતુથી એક એવો તુમાર બહાર પાડવામાં આવે છે કે હમારા નામાંકિત અને વિશ્વાસુ શાહઝાદાઓ, સત્તાવાન હિસાબી ખાતાના વઝીરો, ઉચ્ચ ઉમરાવો, આબરૂદાર હાકેમો, સુબી મુલ્કી અમલદારો, રાજ્યના દીવાની અધિકારીઓ, શહેનશાહી કારોબારના ઓહેદારો, જાગીરદારો અને કરોડીઓ, હાલના તથા ભવિષ્યના એમણે આ ફરમાન મુજબ યાવચ્ચંદ્રદિવાકરૌ વર્તવા પ્રયત્ન કરવો અને મજકૂર ગામ તેમના વંશવારસોના કબજા ભોગવટામાં રહેવા દેવું, તેમાં કોઈ રીતનો ફેરફાર કરવો નહિ. સ્થાનિક કે શહેનશાહી સઘળા પ્રકારના કરવેરામાંથી તેને મુક્ત ગણવું. તેમની પાસે પેશકશ, જમીનનો કે કારખાના પરનો કર, માથાવેરો, કરવેરા ઉઘરાવનારનો વેરો, દારોગાગીરી, શિકારની વેઠ, બેગાર (મજુર તરીકેની વેઠ), મુકાદમી, કાનુનગોઈ વગેરેની માગણી કરી, તેમને હેરાન કરવા કે રંજાડવા નહિ. તેમની પાસે દર વરસે નવી સનદ માગવી નહિ, આ હુકમને તેમણે ખરેખરો સખત હુકમ ગણવો. આ શહેનશાહી ફરમાનની વિરૂદ્ધ તેમણે વર્તવું નહિ.

લખ્યું, બીજા જમાદી મહિનાની ૧૫ મી તારીખે હમારા તખ્તનશીન થયાના ૧૩ મા વરસમાં (તારીખ ૨૫ મી સપ્ટેમ્બર ઈ. સ. ૧૭૭૧. વિ. સં. ૧૮૨૭).

શાહી ફરમાન ૧૫ મું (ગોપાલપુરા બાબદ)

જેવી રીતે આગલું ફરમાન શાહઆલમ બાદશાહે ગોકુળ ગામની જાગીર માટે આપ્યું છે તેવું આ ફરમાન ગોપાલપુર ગામ માટે છે. એની ભાષા માત્ર ગામના નામ સિવાય અક્ષરશઃ આગલા ફરમાનની ભાષા મળતી આવે છે. (કૃ. મો. ઝવેરી)

શાહી ફરમાન ૧૬ મું (ગોકુલ અને કરમાફી બાબદ)

બક્ષી ઉલ્-મુલ્ક નજફ ઝુલફિકાર ઉદ્દૌલા મીરઝા બેગખાન બહાદૂર

ગાલેબ બાદશાહ શાહઆલમ ગાઝીના તાબેદારની મ્હોર.

શહેનશાહી સ્થાન અકબરાબાદના સૂબામાં આવેલા મહાવન તાલુકાના કસબા ગોકુળના ચોધરીઓ, કાનુનગો, અમલદારો, ખેડુતો, ગણોતીઆ, અને મુલ્કી અમલદારોને માલમ થાય કે મોજે **શ્રી ગોકુળ તથા મુબારકપુર** અને તેને લગતી જમીનો વગેરે કદીમ વખતથી એ કસબાના દફતરના મજકુર મુજબ **ગોસ્વામી મોરલીધરને** નામે કરી આપવામાં આવેલી છે, અને તે મજકૂર શખ્સના કબજા ભોગવટામાં ચાલુ રહેલી છે. આ સબબથી એમને સરકારી કરવેરા ભરવાની જવાબદારીમાંથી મુક્ત કરવામાં આવેલા છે, અને તે મુજબ કરવેરાથી તેઓ મુક્ત રહેલા છે; તેથી તમારી એ ફરજ છે કે તમારે મજકૂર ગામો કદીમ રિવાજ મુજબ મજકૂર શખ્સના કબજા ભોગવટામાં તેમની મિલકત તથા વારસામાં મળેલી મિલકત તરીકે રહેવા દેવાં, અને ચંદા, ઈનામ, ઘાટની ફી લેવાનો તેમનો હક્ક છે, એમ આગળથી નક્કી થએલું છે તે મુજબ તેમને લેવા દેવાં. તેમને કોઈ રીતે હેરાન કરવા યા રંજાડવા નહિ. વળી હુકમ મુજબ કરવેરા તથા માલ ગુજારી વસૂલ કર્યા બાદ, તેમાંથી દર વરસે અને દર ઋતુએ તેમનો હક્ક મુજબનો ભાગ તેમને આપી દેવો. આ હુકમને તેમણે સખત હુકમ ગણી તે મુજબ વર્તવું.

લખ્યું, શવ્વાલ મહીનાની ૧૫ મી તારીખે શહેનશાહની તખ્તનશીનીના ૧૫ મા વરસમાં (તારીખ ૩૦ મી ડીસેમ્બર ઇ. સ. ૧૭૭૩. વિ. સં. ૧૮૨૯)

શાહી ફરમાન ૧૭ (ગોવધની મનાઇ બાબદ)

લોર્ડ લેકનું ફરમાન.

વ્રજની ભૂમિ એટલે મથુરા એ હિંદુઓનું ધર્મનું પવિત્ર સ્થળ છે, તેથી તે ભૂમિમાં ગાયને કોઇ પણ તરફથી કોઇ રીતની ઇજા કે નુકસાન થાય તે યોગ્ય અંગ્રેજ નહિ તેથી હિંદુસ્થાનના સેનાપતિ જનરલ જેરાર્ડ લેક સાહેબ, જેઓના દરબારમાં દયા અને ઇન્સાફવૃત્તિ રહે છે અને જે ઈશ્વરના વિશ્વસનીય સેવક છે તેઓ એવો હુકમ કરે છે કે કસાઇએ વધ કરનાર યા કોઇ પણ અન્ય માણસ, પછી તે મથુરાનો રહીશ હોય કે બહારથી મુસાફર હોય, કે મથુરાની આસપાસ રહી શહેરમાં આવજાવ કરતો હોય તેણે ગાયનો વધ કરવો નહિ. આ સબબથી એવું ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે કે ઊભી દરમાં કોઇએ સેવક કરે નહિ જે આ હુકમનો કોઇ અનાદર કરશે તો તેના પર 'કાયદેસર કામ ચલાવવામાં આવશે અને દંડ વસૂલ' કોઇ જાતનું બહાનું સાંભળવામાં આવશે નહિ. લખ્યું. તારીખ ૩ જી ઓક્ટોબર . સ. ૧૮૦૫

શ્રીવિઠ્ઠલરાય. શ્રીગિરિધરજી*૪
(જન્મ ૧૭૪૩ આસો સુદ ૬) (જન્મ સં. ૧૭૪૫ ચૈત્ર સુદ ૩)

૭ મા ટિકેત–પેઢી ૯ મી–૮ મા ટિકેત | શ્રીમુરલીધરજી*૧૧ જન્મ સં. ૧૭૭૪. | શ્રીબાલકૃષ્ણજી. જ. સં. ૧૭૭૭.

શ્રીગોવર્ધનેશજી*૫
(જન્મ ૧૭૬૩ આષાઢ વદ ૧૦)

શ્રીગોવિંદજી.
(જન્મ ૧૭૭૯ માગશર વદ ૧૧)
૯ મા ટિકેત | પેઢી ૧૦ મી.

શ્રીગિરધરજી.*૬
(જન્મ ૧૮૨૫—જેઠ વદ ૦))
૧૦ મા ટિકેત | પેઢી ૧૧ મી.

શ્રીદામોદરજી*૭ (શ્રીદાઉજી)
(જન્મ ૧૮૫૩ આસો સુદ ૪)
૧૧ મા ટિકેત | પેઢી ૧૨ મી.

શ્રીગોવિંદજી*૮
(જન્મ ૧૮૭૬ કારતક વદ ૧૪)
૧૨ મા ટિકેત | પેઢી ૧૩ મી.

શ્રીગિરિધારીજી*૯
(જન્મ ૧૮૯૯ જેઠ સુદ ૧૨)
૧૩ મા ટિકેત | પેઢી ૧૪ મી.

વિદ્યમાન) શ્રીગોવર્ધનલાલજી*૧૦
(જન્મ ૧૯૧૭ શ્રાવણ વદ ૧)
| પેઢી ૧૫ મી.

વિદ્યમાન) શ્રીદામોદરલાલ બાવાસાહેબ
(જન્મ ૧૯૫૩—પોષ સુદ ૬)
| પેઢી ૧૬ મી.

વિદ્યમાન) શ્રીગોવિંદરાયજી.
(જન્મ સં. ૧૯૮૨).

આવશ્યક સમજુતી.

૧ બીજા ટિકેત શ્રીદામોદરજી અને તેમના નાના ભાઇ શ્રીગોપીનાથજી વચ્ચે સં. ૧૬૬૫માં પ્રથમ ટિકેત શ્રીગિરધરજીએ ભગવદાજ્ઞાથી સેવા વહેંચી આપી હતી.

૨ ચોથા ટિકેત શ્રીગિરિધરજીના ભાઇ શ્રીગોવિંદજી પોતાના ભત્રીજા પાંચમા ટિકેત શ્રી દામોદરજી નાની ઉમ્મરના હતા ત્યારે મોગલ બાદશાહ ધર્મદ્વેષ ઝનુની ક્રૂર ઔરંગઝેબના ત્રાસથી કંટાળીને શ્રી ગિરિરાજ ઉપરથી શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને મેવાડમાં રાણા સુજાનસિંહના રાજ્યમાં પધરાવી લાવ્યા. (સં. ૧૭૨૬–૧૭૨૯ માં).

૩ ૫ મા ટિકેત શ્રીદામોદરજી શ્રીનાથજીને મેવાડ–સિંહાડ નાથદ્વારામાં કાકાની સહાયથી પધરાવી લાવ્યા. તેઓને સેવામાં કોઇવાર ભૂલ થતી ત્યારે પડોસમાં શ્રીમનોરમાં બિરાજતા શ્રી હરિરાયજી મહાપ્રભુજી વારંવાર ત્યા શ્રીનાથદ્વારમાં આવી સેવાની રીત શિખવતા અને સુધારતા. શ્રીદામોદરજી શ્રીહરિરાયજીનું હમેશા બહુ માન રાખતા.

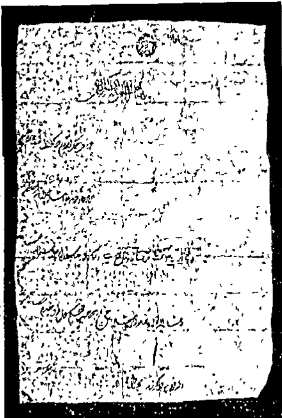
૪. શ્રીદામોદરજી પાંચમા ટિકેતને ત્રણ પુત્ર હતા. તેમાંથી શ્રીવિઠ્ઠલરાય મોટા પુત્ર તે શ્રીનાથજી ૬ ઠ્ઠા ટિકેત થયા. હવે શ્રીવલ્લભનાથજીના–બીજા પુત્ર ગોવિંદજીનો વંશ–શ્રીહરિરાયજી

શાહી ફરમાનો

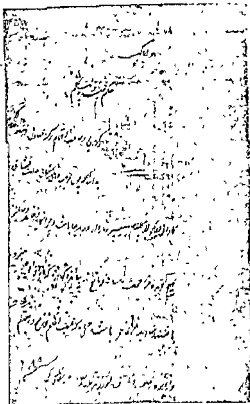
અસલચિત્રો



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૧



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૨



અલી અકબરનો પુત્રાનું ફરમાન નં. ૩

૪	૨	શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી ગુસાંઇજી વિ. સં. ૧૫૭૨-૧૬૪૨	હકિકત વા મારફતે આગા ફર-માનો નં.૧-૨-૩-૪-૫ મેળવનાર	અકબર બાદશાહે આપ્યા
૫	૩	શ્રીગિરિધરજી ૧ લા ટિકેત સં. ૧૫૯૭-૧૬૭૭	શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના સાત પુત્રોમાં જ્યેષ્ઠપુત્ર	
૬	૪	શ્રીદામોદરજી ૨ જા ટિકેત સં. ૧૬૩૨		
૭	૫	શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી ૩ જા ટિકેત સં. ૧૬૫૭	તિલકાયત-પદ મળ્યું	શાહજહાન બાદશાહે આપ્યું
૮	૬	શ્રીગિરિધરજી ૪ થા ટિકેત સ. ૧૬૮૮	શ્રીવિઠ્ઠલરાયના ચાર પુત્રોમાં જ્યેષ્ઠપુત્ર	
૯	૭	શ્રીદામોદરજી ૫ મા ટિકેત સં ૧૭૧૧	શ્રીનાથજી મેવાડમાં પધાર્યા ત્યારે આ મહારાજ બાળક હતા	ઔરંગઝેબનો ત્રાસ
૧૦	૮	શ્રીવિઠ્ઠલેશજી ૬ ઠ્ઠા ટિકેત સં. ૧૭૪૩ (શ્રીગિરિધરજી૦ સં. ૧૭૪૫)	મેવાડમાં જન્મ	રાણા ગજસિંહના મેવાડમાં જન્મ્યા, બીજા ઘરમાં ગોદે ગયા
૧૧	૯	શ્રીગોવર્ધનેશજી ૭ મા ટિકેત સં ૧૭૬૩	શ્રીગોવર્ધનેશજીએ નિર્વંશ લીલા કરી તેથી નાના ભાઈ ગોવિંદજી તે ગાદીએ આવ્યા	
૧૨	૯	શ્રીગોવિંદજી ૮ મા ટિકેત સં. ૧૭૬૯	પ્રથમ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ચતુર્થ કુમારશ્રીગોકુલનાથજીની ગાદીએ ગયા હતા, પણ જ્યેષ્ઠ બંધુએ નિર્વંશ લીલા કરી ત્યારે પાછા ગાદીએ આવ્યા, અને ત્યારથી એ ગાદીના માલીક રહ્યા હતા	
૧૩	૧૦	શ્રીગિરિધરજી ૯ મા ટિકેત સં. ૧૮૨૫	શ્રીનાથજી ઘસ્યાડ પધાર્યા. સ ૧૮૫૮	હોલકરના ત્રાસને લીધે
	૧૧	શ્રીદાઉજી-૧૦ મા ટિકેત સં ૧૮૫૩ (નિર્વંશ)	શ્રીનાથજી ઘસ્યાડથી પાછા પધાર્યા સં ૧૮૬૪	લે. કર્નલ ટૉડની મુલાકાત લીધી-કર્નલ ટૉડની હકિકત મારફત આમનો ખિતાબ કબુલ રાખ્યો
૧૫	૧૨	શ્રીગોવિંદજી૦ ૧૧ મા ટિકેત સં ૧૮૭૬	શ્રીદામોદરજી તે ૫ મા ટિકેતના બીજા પુત્ર શ્રીગિરિધરજી૦ના વંગમાંથી ગોદે પધાર્યા	
૧૬	૧૩	શ્રીગિરિધરજી-૧૨ મા ટિકેત સં ૧૮૯૯		
૧૭	૧૪	શ્રીગોવર્ધનલાલજી ૧૩મા ટિકેત સં.૧૯૧૭	સાંપ્રતના મહારાજશ્રી	ઝાલાવાડ તરફથી પિતાની તોપો મળી છે
૧૮	૧૫	શ્રીદામોદરલાલજી બાવાસાહેબ સ ૧૯૫૩	ભાવિતિલકાયત	
૧૯	૧૬	શ્રીગોવિંદલાલજી (બાવાસાહેબના ચિરંજીવી, ભાવિતિલકાયતના પુત્ર		

[સં ૧૯૮૮ ના 'ગુજરાતી' પત્રના દીપોત્સવી પરથી જુજ ફેરફાર સાથે]



श्रीगोकुलेशचरित्र.

मार्गशीर्षे सिते पक्षे सप्तम्यां भृगुवासरे॥
निशामुखे जायमानो रुक्मिण्यां गोकुलेश्वरः ॥१॥
मायावादिचिद्रूपादिप्रतिबन्धनिवारकः ॥
दर्पहा दुर्मदान्धानां पायाद्वो भक्तभूषणः ॥२॥

શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલનાથજી પ્રભુચરણનું પ્રાકટ્ય વિક્રમ સંવત ૧૬૦૮ ના માર્ગશીર્ષ શુક્લ સપ્તમી અને શુક્રવારે પૂર્વાભાદ્રપદ નક્ષત્ર વેળાએ ત્રિવેણીતટ ઉપર આવેલા પ્રયાગ નગરમાં અડેલ ગામમાં થયું હતું. એઓશ્રીના પ્રાકટ્યસમયના વર્ણનમાં અનેક વધાઈઓ વ્રજભાષામાં ગવાઇ છે, તેમજ ગુર્જર ભાષામાં પણ તેઓશ્રીના કૃપાપાત્ર ભગવદીયોએ અનેક ધોળપદો રચ્યાં છે. તે ઉપરથી આપશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ દૈવજીવાર્થેજ છે એમ સહજ ખ્યાલમાં આવે છે. આપશ્રીનો પ્રાકટ્યોત્સવ આ સંપ્રદાયના પ્રત્યેક ઘરમાં આનંદપૂર્વક થાય છે, શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરના વૈષ્ણવોમાં તો એ પ્રાકટ્યદિન મહોત્સવનો મનાય છે અને તેઓને ત્યાં માગશર સુદ ૧ થી મંડપ બાંધી પૃથક્ પૃથક્ ભાવનાત્મક અનેક કીર્તનો ધોળ આદિથી ઉત્સવનું યથાર્થ સ્વરૂપ પ્રકટ થાય છે. उत्सवो नाम मनसः सर्वविस्मारक आह्लादः એ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનાં વચનના સાક્ષાત્કાર શ્રીગોકુલનાથજીનો અનન્ય સેવકો કરાવે છે.

શ્રીગોકુલેશ પ્રભુનાં પ્રાકટ્યસમયે જે આનંદોત્સવ થઇ રહ્યો હતો, તેનું વર્ણન એક ભગવદીય આ પ્રમાણે ગાય છેઃ—

આજ તો અડેલ ગામ પ્રયાગ ત્રિવેણી સુખધામ,
મહારાજાધિરાજ બિરાજે શ્રીવિઠ્ઠલશરી।
તિન ત્રિલોકીનાથ પ્રકટ પુરુષોત્તમ તહાં,
અદ્‌ભુત સ્વરૂપ પ્રકટે શ્રીગોકુલેશરી ॥ ૧ ॥
શ્રીગિરિવરધારી સાથ શ્રીવિઠ્ઠલેશ મદનમોહન,
પાછે તેં પધારે મથુરેશ દ્વારકેશરી!
દિન દિન અધિક પ્રતાપ તેજ આનંદ અધિક,
વલ્લભપ્રિય નિજ દાસ મિલો જગબલેશરી ॥

આ ઉપરથી જણાશે કે શ્રીમદગ્નિકુમાર શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણે શ્રીગોકુલેશના પ્રાકટ્યસમયે શ્રીગિરિરાજધરણ આદિ સ્વરૂપોને પધરાવીને મહોત્સવ કરેલો હતો.

યજ્ઞોપવીત અને અધ્યયન—સંવત ૧૬૧૬ ચૈત્ર શુક્લ ૯ શુક્રવારે શ્રીપ્રભુચરણે શ્રીગોકુલનાથજીને યજ્ઞોપવીત દાન કરીને સાંપ્રદાયિક પ્રણાલી પ્રમાણે બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યો હતો. ત્યાર પછી શ્રીમત્પ્રભુચરણ અડેલથી દ્વારકા પધાર્યા. ત્યાંથી પાછા અડેલ પધારીને કર્ણાટક દેશના ઉપાધ્યાય નારાયણભટ્ટને વેદાધ્યયન કરાવવા માટે નિજબાલકો પાસે રહેવાની યોજના કરી. વેદાધ્યયન કર્યા પછી આપશ્રીએ વ્યાકરણ

આદિ વેદાંગોનો અભ્યાસ કર્યો. તદનંતર દર્શન ગ્રંથો અને સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોનું અધ્યયન પિતૃચરણ સન્નિધાનમાં જ કર્યું.

લગ્ન અને દૈવજીવોદ્ધાર—યોગ્ય વયને પ્રાપ્ત થયા પછી શ્રીગોકુળનાથજીનાં લગ્ન સવિધિ થયાં. તેઓશ્રીનાં ધર્મપત્નીનું નામ શ્રીપાર્વતીવહુજી હતું. તેઓશ્રીનાં સ્વરૂપવર્ણનમાં મહાનુભાવી કવિવર ભગવદીય શ્રીગોપાલદાસજી લખે છે કે.—

શ્રીગોકુલપતિ અતિ ગુણનિધિ, તાત તણો પ્રતિબિંબરે રસના;
પાર્વતીપતિ પ્રેમસું, શોભા, સકલ કુટુંબ રે રસના.

આપશ્રી આર્યાવર્તના પ્રત્યેક ભાગમાં પધાર્યા હતા. એઓશ્રીના અનેક સેવકો થયા છે. એ સેવકોમાં મુખ્ય ૭૮ ભગવદીયો છે. એની નામાવલી વ્યારાવાળા ગોપાલદાસે રચી છે. એ મુખ્ય ભગવદીયોમાં પણ ભગવદીય કલ્યાણભટ્ટ અને ભરૂચનિવાસી ભગવદીય મોહનભાઇજી મુખ્ય ગણાય છે. ભગવત્સેવાપરાયણ મોહનભાઇજી ગુરુભક્તિનું મૂર્તિમત્ સ્વરૂપ હોઇને શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક હતા. એઓની સ્વગુરુદેવમા અસાધારણ પ્રેમભક્તિ હતી. એઓના સંસર્ગથી કેટલાક વૈષ્ણવોની શ્રીગોકુલેશમાં આસક્તિ થઇ અને તેઓ 'પાવડીઆ' ના નામે ઓળખાવા લાગ્યા. એઓમાં પણ ભેદ છે. ૧ પાવડીઆ, ૨ લીમડીઆ. 'પાવડીઆઓ' ની ગુરુભક્તિ આદરણીય અને પ્રશંસનીય છે, પરંતુ સ્વગુરુવંશ અને સ્વગુરુવંશસેવ્ય પ્રભુ તરફ અપેક્ષિત ભક્તિભાવનો અનાદર તો પ્રશંસાર્હ નથીજ. લીમડીઆ વૈષ્ણવો 'પાવડીઆ' જેવા સંકુચિત દૃષ્ટિવાળા નથી. તેઓ સ્વગુરુવંશને અને સેવ્ય સ્વરૂપોને માને છે.

મહાનુભાવી કલ્યાણભટ્ટજી—શ્રીગોકુલનાથજીના અન્તરંગ ભગવદીયોમાં મઠાધિપતિ શ્રીકલ્યાણભટ્ટજી પણ છે. તેઓ ગિરિનારા બ્રાહ્મણ અને સંસ્કૃત ભાષાના ઉત્તમ જ્ઞાતા અને કવિવર હતા. વાર્તાપ્રસંગથી જાણી શકાય છે કે શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરમા ગિરિનારા બ્રાહ્મણોનો આદર વિશેષ હતો અને છે. ગિરિનારા બ્રાહ્મણો જ્યાં સુધી મળે ત્યાં બીજા બ્રાહ્મણોનો સેવામાં અંગીકાર કરવામાં આવતો નથી. ગિરિનારા બ્રાહ્મણોનાં આથી વિશેષ ભાગ્ય શા હોય? શ્રીકલ્યાણભટ્ટજીએ 'કલ્લોલ' નામનો ગ્રન્થ સંસ્કૃતમાં બનાવ્યો છે. જેનું પૂર ચાલીશ હજાર શ્લોકનું કહેવાય છે. આ ગ્રન્થમા શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામૃતોદધિનું વર્ણન છે. એ ગ્રન્થનો એકાદ તરંગ મૂલ સંસ્કૃતમાં અમને મળ્યો હતો, જે વાંચવાથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે શ્રીકલ્યાણભટ્ટજી અપૂર્વ ભગવદીય હતા અને તેમની વાણી રસનિઃસ્યંદિની અને પુષ્ટિભક્તિના અલૌકિક રંગથી છલકાતી છે. તેઓએ ગીતા ઉપર એક ટીકા પણ લખી છે, જેની એક લિખિત પ્રત 'ગુજરાતી' પ્રેસના માલીકોના પુસ્તકાલયમાં છે. એનું પૂર ૧૫૦૦૦ શ્લોકનું છે. એ ઉપરથી જણાશે છે આપશ્રીએ અનેક દૈવી જીવોનો ઉદ્ધાર કર્યો છે.

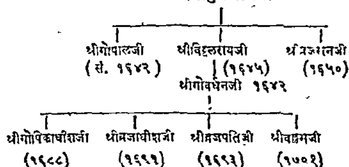
એક અદ્ભુત પ્રસંગ—શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જીવનચરિત્રમાં એક પ્રસંગ સર્વનું ઘણુંજ ધ્યાન ખેંચે છે. એ પ્રસંગે આપશ્રી તરફ માહાત્મ્યદૃષ્ટિએ જોના-

રાના હૃદયમાં ઉંડી છાપ બેસાડી છે. સાંપ્રદાયિક ઇતિહાસમાં એ પ્રસંગ સોનેરી અક્ષરે કોતરાઈ રહ્યો છે. એનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન અત્રે આપીએ છીએ.

ચિદ્રપ નામનો એક સંન્યાસી હતો. સર્વવિપ્લવવાદિમતનો તેણે સ્વીકાર કર્યો હતો. ગુજરાત આદિ સ્થળોમાં જઇને પોતાના અવૈદિક મતનો ફેલાવો કરીને અનેક જનોને ધર્મવિમુખ બનાવતો હતો. ધર્મનો નાશ કરીને ધર્મનિષ્ઠોને ત્રાસ આપીને ભગવદ્ગીતોક્ત આસુર પ્રવૃત્તિમાં મસ્ત રહેતો હતો. એ જ્યાં જતો ત્યાં ધર્મદ્રોહનો દાવાનળ સળગાવતો, અને અનેક નિર્દોષ પ્રાણીઓની હત્યામાં નિમિત્ત બનતો હતો. એક વેળાએ તે ફરતો ફરતો ઉજ્જેન પાસે આવી પહોંચ્યો. તે નગર પાસે આવેલી ભર્તૃહરિની ગુફામાં તે ઉતર્યો તે વેળાએ ઉજ્જેનનો સરદાર મહમદ તકી નામનો યવન હતો. તેને ચિદ્રૂપે બહેકાવીને વૈદિક ધર્મનો નાશ કરવામાં પ્રવૃત્ત કર્યો. ચારે સંપ્રદાયના અનુયાયીઓનાં ધાર્મિક ચિન્હોને દૂર કરવાના કાર્યમાં મહમદને મદદગાર બનાવ્યો. ઘણા ભીરુ જનોએ નગરના સરદારના ત્રાસથી ધાર્મિક ચિન્હોનો ત્યાગ કરવા માંડયો. તે સમયે ઉજ્જેનમાં શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના કૃપાપાત્ર શ્રીગોકુલેશના સેવક બે વૈષ્ણવો હતા. ૧ ત્રિકમ ભટ્ટ, ૨ દેવાભાઇ. આ બન્ને ધર્માગ્રહી વૈષ્ણવોએ તિલકમાળા આદિ ધર્મચિન્હોનો મુદ્દલે ત્યાગ કર્યો નહતો. એક વેળાએ તેઓ ચિદ્રપની ગુફા પાસે થઇને નિકળ્યા, પણ તે પાખંડી સંન્યાસીને નમન કર્યું નહિ. આ અપમાનથી ચિદ્રૂપે પોતાની પાસે બોલાવીને તેઓને જણાવ્યું કેઃ—"તમે તિલક આદિથી વૈષ્ણવ જણાઓ છો, પરંતુ નગરના હાકેમના હુકમ પ્રમાણે તમે હજુ સુધી એ ચિન્હોનો ત્યાગ કર્યો નથી, માટે તમે ગુનેહગાર થયા છો, માટે જો તમારે શિક્ષા ન ભોગવવી હોય તો તિલકમાળાનો ત્યાગ કરો." સંન્યાસીના આ વચનો તરફ કાંઇ પણ લક્ષ્ય દીધા વિના ધર્મપરાયણ વૈષ્ણવો પોતાને ઘેર ગયા. આ તરફ સંન્યાસીનો પિત્તો ખસી ગયો. એકદમ ગુસ્સાના આવેગમાં મહમદ પાસે ગયો. મહમદને કહ્યું કેઃ—"જહાંગીર બાદશાહે પોતાની સલ્તનતમાં જે લોકો ધાર્મિક ચિન્હ ધારણ કરતા હોય તેઓને તે ચિન્હો છોડી દેવાની તાકીદ કરવાનો હુકમ કાઢયો છે અને તેનો ઠેકઠેકાણે અમલ કરવાને અને ફરમાશ કરી છે. જો તેનો અમલ તમારા રાજ્યમાં બરાબર નહિ થાય તો બાદશાહ તમારા પર નારાજ થશે. માટે તેનો સત્વર અમલ તમારા રાજ્યમાં થવાની તમને ખબર આપેલી છે છતાં પરિણામ ઠીક નથી આવ્યું. આજેજ બાદશાહી હુકમના અનાદર કરનારા તમારા રાજ્યમાં મેં જોયા છે." સરદારે તુરતજ સંન્યાસી પાસેથી તે માણસોની માહિતી મેળવીને તેઓને પોતાની પાસે બોલાવી મંગાવ્યા. મહમદે તેઓને તિલકમાળાનો ત્યાગ કરવા કહ્યું ત્યારે તેઓએ જવાબ આપ્યો કેઃ—"તિલક માળા તો શિરને સાટે ગુરુદેવે બાંધેલી છે, તેને તોડવાની સત્તા ત્રિભુવનમાં કોઇને નથી, શિર જુદું થાય તોજ માળા પણ જુદી થવાની." મહમદે આ ઉપરથી ગુસ્સે થઇને તેઓને હાથીના પગ નીચે કચરી નાખવાની શિક્ષા કરી. શિક્ષાનો અમલ

આપશ્રીનો પરિવાર અને ચરિત્ર—શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરના વૈષ્ણવ રા. ઉત્સવલાલ પાસેથી એક લખેલી નોટ મળી, તેમાંથી **“ શ્રીગોકુલેશાષ્ટક ”** સંપૂર્ણ મળી આવ્યું. એ અષ્ટક મહાનુભાવી દૈન્યમૂર્તિ શ્રીહરિરાયચરણ કૃત છે, તેનું મુદ્રણ પ્રથમજ કરવામાં આવ્યું છે. શ્રીહરિરાયજીના બ્રહ્મસંબંધમંત્રદાતા આપજ હતા. એ નોટમાં **“ શ્રીગોકુલેશાષ્ટોત્તરશતનામાવલી ”** એ નામનો એક ગ્રન્થ દૃષ્ટિગોચર થયો. તેમાંથી કેટલીક ઐતિહાસિક વાર્તા મળી આવી, તે અત્ર પ્રકટ કરીએ છીએ. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના ત્રણ બાળકો પ્રકટ થયલા. **૧. શ્રીગોપાલજી ૨. શ્રીવિઠ્ઠલેશરાય ૩. શ્રીગોવર્ધનેશજી.** આપશ્રીના બિરાજતાં જ સ્વવંશ નિત્યલીલાસ્થ થયો હતો, એમ કહેવાય છે. આ ઉપરાંત ઉક્તનામાવલીમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરના કથનનો અનાદર કરીને આપશ્રી કાશ્મીર પધાર્યા હતા. ત્યાંથી સોરમજીમાં વાસ કર્યો હતો. ત્યારબાદ જ્યેષ્ઠ ભ્રાતા લીલાસ્થ થયાના સમાચાર શ્રવણ કરીને શ્રીગોકુલમાં પધાર્યા હતા. જ્યેષ્ઠ ભ્રાતાની પાદુકાજીને શ્રીગુસાંઇજીની પાદુકા સાથે આપશ્રીએ જ પધરાવ્યાં હતાં. આ પ્રમાણે નિગૂઢ ભાવનો આવિષ્કાર કરીને પુનઃ આપશ્રી સોરમજી પધાર્યા, ત્યાં થોડો સમય રહીને પરિવારસમેત ફરીને વ્રજમાં વાસ કર્યો. આપશ્રીને સારંગી અતિપ્રિય હતી. આપ નિત્ય ભગવદીયોને અલૌકિક ભગવદ્કથારસનું પાન કરાવતા. આટલી વિશેષ હકીકત ઉક્ત નામાવલીમાંથી મળી છે.

એક પ્રાચીન કલ્પવૃક્ષમાં શ્રીગોકુલેશપ્રભુના પરિવારનું આ પ્રમાણે દર્શન થાય છે.



આસુરવ્યામોહ—પુષ્ટિમાર્ગના અલૌકિક રસના વિલાસનું દૈવી સૃષ્ટિને દાન કરીને આપશ્રી સંવત્ ૧૬૯૭ ના માઘ વદિ ૯ નવમીને દિને નિત્યલીલામાં પધાર્યા. આપશ્રીની ભૂતલ ઉપર સ્થિતિ ૮૯–વર્ષ, ૨ માસ, ૧૭–દિન સુધીની છે. આપશ્રીની નિત્યલીલાસ્થિતિના સમાચાર શ્રવણ કરીને આપશ્રીના અનેક અંતરંગ ભગવદીયોએ આ લોકને ત્યજ્યો હતો એમ ઉલ્લેખ છે.

ઉપસંહાર—ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનાં દિવ્ય ચરિત્રોનો સંક્ષિપ્ત ઉલ્લેખ કરીને અત્ર વિરમીશું. સાધનોના અભાવને લીધે તેમાં ન્યૂનતા આવે એ સ્વાભાવિક છે, તે તરફ લક્ષ્ય ન આપતાં સાર ગ્રહણ કરવા વિનતિ કરીએ છીએ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખકઃ—રા. રા. રામલાલ ચુનીલાલ મોદી.)

ત્રણસો વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા શતકના છેલ્લા ચરણના આરંભમાં એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. ગાંધીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યકીય અને ભારતવ્યાપી હતો. જ્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મથુરાની આસપાસના વ્રજમંડળમાં જ ફેલાયો હતો. વળી એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક-એક જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના ફલરૂપ હતો, જ્યારે આ રાજકીય સત્યાગ્રહમાં લગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતાં પણ બન્ને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી જોવામાં આવે છે. બન્ને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રબળ રાજ્યસત્તાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજસત્તાના અને હાલની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમાં ફેર છે. હાલની રાજ્યસત્તા ગમે તેવા પણ કાયદાથી નિયંત્રિત છે અને તેને જગતના અનુકૂળ અને ઉત્તેજક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખવી પડે છે. અત્યારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારનાં જેવાં વિપુલ સાધનો છે, તેવાં પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતાં. તે વખતે બાદશાહનો શબ્દ તે જ કાયદો ગણાતો અને તેને જગતના અભિપ્રાયની દરકાર નહોતી. તેમાં પણ એ સત્યાગ્રહ જહાંગીર જેવા ગમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. છતાં પણ સત્યાગ્રહના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુસાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો. ગાંધીજી કહે છે કે પ્રબળમાં પ્રબળ સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિર્દોષ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે.

આ સત્યાગ્રહની હકીકત ટૂંકામાં આ પ્રમાણે છે. ચિદ્રૂપ નામના સંન્યાસીના ઉપદેશથી જહાંગીર બાદશાહે એવો હુકમ કર્યો હતો કે કોઈએ તુલસીની માળા પહેરવી નહિ તુલસીની માલા વૈષ્ણવ સંપ્રદાયોનું આવશ્યક ચિહ્ન ગણાય છે. એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયોને વ્યઘાતક હતો. પરન્તુ જહાંગીરના હુકમની સામે કોણ થઈ શકે? તે સમયે વ્રજમંડળમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના શુદ્ધાદ્વૈત અને શ્રીહિતહરિવંશજીના રાધાવલ્લભી સંપ્રદાયનું પ્રાબલ્ય હતું. તેમના ઘણા અનુયાયીઓએ તુલસીમાલાનો ત્યાગ કર્યો, પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુલનાથજી—(સં. ૧૬૦૮–૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ. જહાંગીરના હુકમનો અમલ કરાવવા ચિદ્રૂપ ઉજ્જેનથી મથુરામાં આવીને રહ્યો હતો અને જહાંગીરે તેને એ બાબતમાં સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ઘણી ઘણી લાલચો અને ધમકીઓ આપી, પણ તેને વશ્ય થયા નહિ છેવટે પોતાના હુકમના અનાદર માટે જહાંગીરે તેમને કાશ્મીર જેવા દૂર અને વિકટ માર્ગવાળા પ્રદેશમાં ચોમાસાની ઋતુમાં બોલાવ્યા અને તેઓ સીત્તેર વર્ષની ઉમ્મર છતાં પ્રવાસનાં અનેક કષ્ટો ભોગવી ત્યાં ગયા. ત્યાં પણ માળા ઉતારવાને તેમણે સાફ ના પાડી, એ ઉપરથી જહાંગીરે તેમને ઘરબાર ત્યજવાનો હુકમ કર્યો. તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને સોરમમાં જઇ રહ્યા, પણ માળા ત્યજી નહિ. પાછળથી જહાંગીરને પોતાની ભૂલ સમજાઇ અને તેનું ચિદ્રૂપ પ્રત્યેનું માન ઘટી ગયું, ત્યારે તેણે પોતાનો હુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમાં આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ વ્યારાના રહેવાસી વૈષ્ણવ કવિ ગોપાળદાસે 'માલોદ્ધાર' એ નામના વ્રજમિશ્રિત ગુર્જરાતી ભાષાના વિસ્તૃત કાવ્યમાં વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૯૯ માં રચાયું હતું.[1] આ

1 જુઓ "વેણુનાદ" માસિક, વર્ષ ૧, અં. ૬, પૃ. ૧૫૨.

કાવ્ય આખું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો ટુંકો સાર નડીઆદના સ્વ. લલ્લુભાઇ પારેખે સં. ૧૯૬૪ માં પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઇક લાંબો સાર મોડાસાના શ્રી. મગનલાલ ગાંધીએ લખેલા શ્રીગોકુલનાથજીના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે. મેં પણ એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઇ છે.

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત ફારસી ગ્રંથોમાં નોંધાએલી જોવામાં આવતી નથી, તેથી ઘણાને તેની ઐતિહાસિકતા વિષે શંકા ઉત્પન્ન થઇ છે. એ શંકાનું નિવારણ કરવું, એ આ લેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર વીશ વર્ષમાંજ રચાયું હતું, અને શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામાં પ્રવેશ પછી બે જ વરસમાં રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દર્શને જ ઐતિહાસિક હોવામાં શંકા ઉત્પન્ન થાય તેવું નથી, છતાં પણ તેને બારીકાઇથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશું. આ ગ્રંથમાં કેટલીક બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબૂલ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-ધાર્મિક કાવ્ય-છે એ વાત ભૂલવી જોઇએ નહિ. છતાં પણ એમાંની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતાં મને સત્ય જણાઇ છે, એમાં એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે ઇતિહાસવિરોધી હોય.[1]

કોઇ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામાં આ ત્રણ બાબતો સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ મળે છે કે કેમ તે જોવું જોઇએ:—(૧) સ્થળો, (૨) મનુષ્યો અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ.

સ્થળો:

આ કાવ્યમાં શ્રીગોકુલનાથજીના કાશ્મીરના પ્રવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાંનાં સ્થળો કાલ્પનિક નથી. કેટલાંક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીનાં જહાંગીરના પ્રવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુશરૂના બળવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કાશ્મીરના પ્રથમ પ્રવાસે તે જાય છે. એ પ્રવાસોમાં કરેલા મુકામનાં જે નામ આપ્યાં છે તે શ્રીગોકુલનાથજીના પ્રવાસનાં . . . સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમાં ગોકુળથી કાશ્મીરનું અંતર-શ્રીનગર સુધીનું-૪૪૪ કોસ જણાવ્યું છે. જહાંગીર આગ્રાથી કાશ્મીરનું અંતર ૩૭૬ કોશ લખે છે. પરન્તુ આમાં બે બાબતો વિચારવાની છે. જહાંગીરે કાશ્મીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યું છે, એટલે કાશ્મીરની હદથી શ્રીનગર સુધીનું અડતાળીસેક કોશનું અંતર કાવ્યના અંતરમાંથી બાદ કરવું જોઇએ. વળી શ્રીગોકુલનાથજી કાશ્મીર જવા નિકળ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામાં ત્યાંના હાકેમ લશ્કરખાનને મળવા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૦ કોશનું અંતર પણ તેમાંથી બાદ કરવું જોઇએ. એ બે અંતર બાદ કરીશું તો બન્ને આંકડા સરખાજ થશે.

કાશ્મીરના વર્ણનમાં ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસંબંધી કાવ્યમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે:—

"ઉહાં વિદ્યા તો હે બહોત, પૈં નહિ કછુ આચાર;
બ્રાહ્મણ અરુ નામ મ્લેચ્છકો તેસોઇ વિહવાર." (૬,૪૩૨)

---

1 કવિશ્રી નાનાલાલે આ પ્રસંગ 'જહાંગીર-નૂરજહાં' નામના પોતાના નાટકમાં નોંધ્યો છે (પૃ. ૧૧૧) કવિશ્રી ઇતિહાસના-ખાસ કરીને મુગલ યુગના-પ્રખર અભ્યાસી છે. ઇતિહાસના તુલનાત્મક અભ્યાસમાં તેઓ ગુજરાતમાં અદ્વિતીય છે. તેમણે બાદશાહનામાંનાં નાટકોમાં એક પણ પ્રસંગ ઇતિહાસવિરોધી લીધો નથી. આ પ્રસંગ તેમણે નાટકમાં ગુંથ્યો તેથી તેની ઐતિહાસિકતા તપાસી જ હશે. જો તેમને તે વિષે સહેજ પણ શંકા હોત તો એ નોંધતજ નહિ.

આ સંબંધી જહાંગીરીમાં તુઝુકે જહાંગીર આ પ્રમાણે લખે છે:—

" Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, books in Sanskrit language and read them."

—રોજર્સ અને બિવરિજકૃત અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૫૮ અને ૧૫૦.[1]

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલાં મનુષ્યો પણ ઐતિહાસિક છે. તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના કુટુંબનાં માણસો અને સરદારોનાં નામ ફારસીગ્રંથોમાં મળી આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા ઉપર હતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસતાં સાચાં લાગે છે. તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે જેવાં કે ખુશરૂ, ખુર્રમ નૂરજહાં, અસફખાન–તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય ઇતિહાસનાં પુસ્તકોમાં જોવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉજ્જેનનો હાકિમ મહમ્મદ તકી.

જહાંગીરે તેને સં. ૧૬૭૧ માં માંડુ મોકલ્યો હતો (તુઝુક, ભા. ૧ પૃ. ૨૫૮) માંડુ માળવાના સૂબાનું મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉજ્જેન તેના તાબામાં હતું.

(૨) આગ્રાનો સુબેદાર લશ્કરખાન.

સં. ૧૬૭૬ માં જ્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જવાં નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બોલાવી આગ્રાનો હાકેમ નીમ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૮૧.)

(૩) ચિદ્રૂપનું અપમાન કરનાર નૂરજહાંનો બનેવી હાકેમ બેગ.

નૂરજહાંની બેન ખાદીજા બેગમને તે પરણ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ, ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુલનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંજાબના કોઇ ગામનો જાગીરદાર અને જહાંગીરનો ખીદમતગાર હતો. (તુ. ૨. પૃ. ૧૮૨)

(૫) શ્રીગોકુલનાથજીને સોરમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું આમંત્રણ આપનાર રાય રતન હાડો.

એ બુંદીના રાજા ભોજ હાડાનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર બુલંદરાયનો ઇલ્કાબ આપ્યો હતો. (તુ. ૧, પૃ. ૧૩૧).

(૬) જહાંગીરની મહેતારી[2] મરીઅમ ઝમાની.

અકબર બાદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજા ભગવાનદાસની બેન (તુ. ૨, પૃ. ૬૪).

---

૧. આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં તુઝુક જહાંગીરી (સંક્ષિપ્ત તુઝુક)નો નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અનુવાદનું જ સૂચન સમજવું.

૨. સ્વ. લલ્લુભાઇ પારેખે મહેતારીના અર્થ જનાનખાનાની ઉપરી સ્ત્રી અમલદાર એવો કર્યો છે. (પૃ. ૧૮) એ ભૂલ છે. તેનો અર્થ મા થાય છે.

(૭)-રાયસંગ બુરટીઆની દીકરી અને જહાંગીરની બેગમ માનીબાઇ.

બિકાનેરના રાજા રાય કલ્યાણમલ્લનો પુત્ર રાય રાયસિંહ એ બુરટીઓ કહેવાતો (તુ. ૧. પૃ. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (તુ. ૧. પૃ. ૧૩૨) આ બેગમનું નામ ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, આ કાવ્ય તે નામ પૂરૂં પાડે છે.

(૮) જેના માથા ઉપર જહાંગીરે ચિદ્રૂપનો હાથ મૂકાવ્યો હતો તે બુલાકી.[1]

જહાંગીરના પાટકુંવર ખુશરૂનો પુત્ર, જેને અસફખાને જહાંગીરના મરણ બાદ થોડા દિવસ માટે દાવરબક્ષ નામથી બાદશાહ બનાવ્યો હતો. પણ પાછળથી શાહજહાંના ફરમાન પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ તુઝુકે જહાંગીરીમાં નથી,[2] પણ Peter Mundy ના પ્રવાસવૃત્તાન્તમાં (History of Jahangir by Beni Prasad. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમાં (પૃ. ૧૬૦) છે. કલ્લોલમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાંને તેના કરાવેલા ખૂનની નોંધ તેમાં છે. (૭. ૨૦).

પ્રસંગો.

સ્થળ અને મનુષ્યોના નામ કરતાં, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિપાદનમાં પ્રસંગોની સત્યતા અને તેમનું કાલાનુસંધાન વધારે મહત્ત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ માં જહાંગીર ગુજરાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિદ્રૂપને ઉજ્જેન આગળ એક ગુફામાં મળ્યો હતો,

"એટલે સંવત સોળ ચ્યાહોતેરે થઇ એક વાત
જહાંગીર નૃપ આગરેથી જાતો હુતો ગુજરાત.
× × × ×
અવંતી જઈ ઉતર્યો નૃપ જોવાને કરી ખાંત,
પૂછ્યું તે વળતું તેહને 'ક્યાં રહે છે મહાંત?'
ગુફા માંહ્યાં દેખાડીઓ ત્યાંહાં ગયો તેણી વાર:"

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાવ્યમાં જણાવેલા વર્ષ અને માસ ઉત્તર હિંદની ગણના અનુસાર છે, એટલે સંવત ચૈત્રમાં બદલાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત વદમાં માસારંભ થાય છે. જહાંગીર ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેંબરની દશમી તારીખે નીકળી (તુ. ૧. પૃ. ૩૪૦) માંડું તથા ખંભાત થઇ ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદમાં ઈ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાંચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પોષ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાવ્યમાં આપેલો સંવત બરોબર છે.[3]

---

૧. સ્વ. લલ્લુભાઈ પારેખ બુલાખ એટલે નાકની વાળી એ ઉપરથી બુલાખી એટલે નાકમાં વાળી પહેરનાર જહાંગીરનો કોઇ મંત્રી એવો તર્ક કરે છે. (પૃ. ૧૮), પણ એ ઘટિત નથી, તેમ તેને માટે કોઇ આધાર પણ નથી.

૨. તુઝુકે જહાંગીરના અનુવાદક રોજર્સ અને બિવરિજ તેની સૂચિમાં દાનીઆલની પુત્રીનું નામ બુલાકી હતું એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમાં એમણે એ નામ કાંસમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તર્ક હશે. તે વાત સત્ય હોય તો પણ ખુશરૂના પુત્રનું નામ બુલાકી હતું એ ચોક્કસ છે, અને ગાદી વારસ તરીકેજ તેને ચિદ્રૂપ પાસે આશીર્વાદ અપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

૩. શ્રીગોકુલનાથજીના ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ શા આધારે તે સમજાતું નથી. સ્વ. લલ્લુભાઈ સં. ૧૬૬૪ નું વર્ષ આપે છે અને મેં જોએલી હાથપ્રતમાં પણ એજ વર્ષ છે. સંસ્કૃત કલ્લોલમાં પણ ભૂલ ન થાય તેવા અક્ષરાનુક્રમમાં સં. ૧૬૭૪ નુંજ વર્ષ સ્પષ્ટ રીતે છે.

युगपार्थमुनिरसेन्दुप्रमिते वर्षे (१६७४) जहांगिरो यवनानामाधिष्ठानां सार्वभौमो निजात्मपरात।
-गुर्जरदेशे...क० ७, त० १)

with Jahangir for the release of Khusrau Achadrup spoke accordingly and Khusrau was released." (Tuz. 11, p. 104, foot-note).

કલ્લોલમાં પણ આ વાત નોંધેલી છે.

(૫) શ્રીગોકુળનાથજી સં. ૧૬૭૭ ના શ્રાવણ (ગુજરાતી આષાઢ) વદ ૯ ના રોજ ગોકુળથી નીકળી કાશ્મીર ભાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા. અને આસો વદ ૨ (ગુ. ભાદ્રપદ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી. હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન જહાંગીર કાશ્મીરમાં હતો કે નહિ? તુઝુક ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૦ ના મિહિર મહિનાની ૧૩ તારીખે કાશ્મીરમાં દશરાનો તહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહિનાની ૨૭ મી તારીખે ત્યાંથી આગ્રા જવા નીકળ્યો હતો. ઈ. સ. ૧૬૨૦ એટલે ભાદરવા-આસોમાં ચૈત્રી સંવત ૧૬૭૭ હતો.

(૬) બાદશાહે કાશ્મીરથી પાછા આવતાં ગોકુળમાં મુકામ કર્યો હતો અને માલાનિષેધનો હુકમ રદ કર્યો હતો. આથી શ્રીગોકુલનાથજી સં. ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (ગુ. ફાગણ) વદ ૫ સોરમથી નીકળી વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા.

"ચૈત્ર વદિ પંચમી શુક્રવારે સૂર્ય ત્રણ ઘડી ચડતે
વિજય કર્યો સોરમથી મહા સુજશ નગારા ઘડતે.
× × × ×
સંવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી બુધવાર રે
શ્રીગોકુલેશ ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચોઘ દિન ઘડી ચાર રે.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે ફાગણ સુદમાં હુકમ રદ કર્યો હશે.

જહાંગીરે કાશ્મીરથી આવતાં ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો તુઝકમાં સ્પષ્ટ નિર્દેશ છેઃ—

Next day Gokul was the place of encampment." (Tuz. 11, p. 166)

સમય માટે નીચેની હકીકત ધ્યાનમાં લેવાની છે, કાશ્મીરથી આવ્યા પછી તુરત તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજ્યાભિષેકનું સોળમું વર્ષ ઉજવ્યું હતું. (તુ. ૨, પૃ. ૧૯૯) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મહા કે ફાગણમાં (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમાં હતો એ સ્પષ્ટ છે.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો, મનુષ્યો અને પ્રસંગો એ બધાંજ ઐતિહાસિક ઠરે છે, તેથી તે કાવ્ય કાલ્પનિક નથી. તો પછી માલાનિષેધનો પ્રસંગ ફારસી ગ્રંથોમાં કેમ નથી? આના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે જહાંગીરના સમયના બધાજ ફારસી ઇતિહાસના ગ્રંથોના અનુવાદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર તુઝુક જહાંગિરનો અનુવાદજ પ્રકટ થયો છે. તેથી બધાજ ગ્રંથોમાં નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય. આ પ્રસંગ કાલ્પનિક ઉભો કરવાને કશુંજ કારણ નથી. કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુલનાથજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉભો કર્યો છે, પણ તેની અંદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જો એ બનાવટી હોત તો તેમાં દાખલ કરવામાં આવતજ નહિ. શ્રીગોકુલનાથજી ચિદ્રૂપ પાસે વારંવાર જાય, જહાંગીરને એવું લખી આપે કે ચિદ્રૂપ ધર્માનુસાર જે કહેશે તે કબૂલ કરીશું. તેમના મોટા ભાઈની આજ્ઞાનો અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી બીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ગૌરવ વધતું નથી. વળી, જો પ્રસંગ કાલ્પનિકજ ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુલનાથજી શ્રેષ્ઠ બાદશાહના

માંથી જ મળી આવે છે. અકબરના વૈષ્ણવધર્મ પ્રત્યેના વલણની હકીકત પણ બાદશાહી ફરમાનોમાંથી મળે છે.[1]

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે તુઝુકમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના યુદ્ધની શરૂઆતમાં જ નમી પડયો હતો અને તેના પુત્ર બાઘસિંહને પોતાના દરબારમાં મોકલ્યો હતો. આ બીના પણ બીજાં પ્રમાણોના આધારે પંડિત ગૌરીશંકરે નાપાયાદાર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે બીજી ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તો મૌન સેવ્યું છે અગર તો તે પાઠફેર લખી છે. તુઝુકનો તરજુમો કરનાર બિવરિજ લખે છે કે જહાંગીરે પોતાના બાપ સામેના બળવાની બાબતમાં અને શેરે અફઘાનના મૃત્યુના સંજોગોની હકીકતમાં ઢાંકપીછોડો કર્યો છેઃ—

"Jahangir has glossed over his rebelion against his father and the circumstances of Sher Afghan's death"—Preface to Tuzuk.

તેણે નૂરજહાંનના પૂર્વપ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અક્ષર પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુશરૂની આંખો ફોડાવી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું હતું એ સંબંધી બીજાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો મળે છે. છતાં પણ જહાંગીરે તો તે બાબતમાં મૌન જ સેવ્યું છે. આપણે આગળ જોયું કે ચિદ્રૂપના કહેવાથી ખુશરૂને છોડયો હતો છતાં પણ તેણે પોતાનું મહત્ત્વ ઘટે તેથી ચિદ્રૂપની દરમ્યાનગીરીનો સ્વીકાર કર્યો નથી. શ્રી. બેણીપ્રસાદ જહાંગીરના પ્રશંસક હોવા છતાં લખે છે કે જે બાબતમાં પોતાના ઉપર સહેજ પણ જવાબદારી આવે તેવો એક પણ પ્રસંગ જહાંગીરે નોંધ્યો નથીઃ—

"The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible."

(History of Jahangir, p. 335)

આના અપવાદરૂપે અબુલફઝલના ખુનનો પ્રસંગ ગણવો પડે.

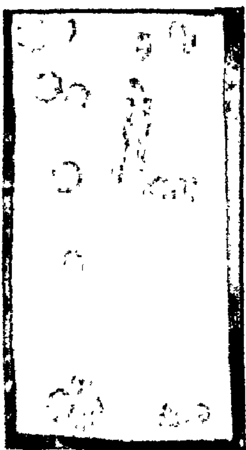
સર ટોમસ રોની મુલાકાત.

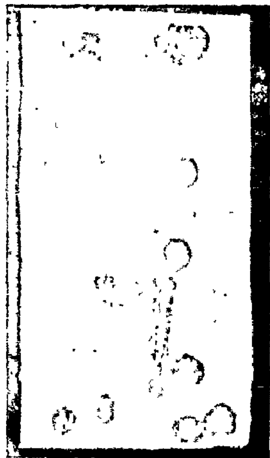
પરન્તુ સૌથી વધારે અગત્યની બાબત તો સર ટોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઈંગ્લાંડના રાજાના એલચી તરીકે હિંદુસ્તાનમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અજમેર

---

૧ આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ ઝવેરીએ સંપાદિત કર્યાં, પણ હજી પ્રગટ થયાં નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોઇ શક્યો છું. તેમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ગોકુળ અને જતીપુરા ગામની જમીન આપ્યાનું, (એ ગામો હાલ પણ તેમના વંશજોના તાબામાં છે) તેની હદમાં શિકાર ન કરવાનું અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાનું, તેમને કોઈ પણ પ્રકારે સતામણી ન કરવાનું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને 'મારફત-આગા' એટલે ઇશ્વરી જ્ઞાનના જ્ઞાતા જણાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની માતા હમીદા બેગમના નામનું છે, જે મુગલ ઇતિહાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બા. કૃષ્ણલાલભાઈનું ધારવું છે. ગધુસૂદનભટ્ટકૃત વંશાવલિમાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ માં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી અને અકબરનો મેળાપ થયો હતો અને તેણે હાલનું ગોકુળ જે જગાએ છે એ જમીન આપી હતી. ત્યાં કને ગામ વસાવી, શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી મથુરાથી આવી રહ્યા હતા. હાલ પણ એ નવા ગોકુળના નામે જ પ્રસિદ્ધ છે. કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરશાહ નાટકમાં 'ગોકુળ ગુસાંઈજીને આપ્યું' એમ લખ્યું છે, પણ પાછળથી 'વ્રજ વ્રજરાયને આપ્યું' એમ શુદ્ધિપત્રકમાં સુધાર્યું છે. તેમને જો આ હકીકતની ખબર હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

આ ફરમાનોમાં જહાંગીરનું આજ્ઞાપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ નથી, કેમકે જહાંગીરે મોહાના હુકમો ક્યાંકતા, કોઈ ફરમાન એ સંબંધી કાઢ્યું નહોતું, એમ કાવ્ય વાંચતાં જણાય છે.





કરે છે છતાં પણ મથુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો? આ શું તેનું મન ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઊતરી ગયું હતું એમ નથી જણાવતું? બીજું, ઇકબાલનામામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાઢુ હાકિમબેગે નિર્દય માર માર્યો હતોઃ—

"He was Cruelly beaten by Hakim Beg".

(Tuz II, 1004-foot-note).

જો ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો અભાવ થયો ન હોત તો હાકિમબેગ આટલી બધી હિમ્મત કરે ખરો કે? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કાસ્મીર જતાં મથુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમબેગે ચિદ્રૂપની ગુફામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો.[1] એટલા નજીવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી ખુશરૂના કહેવાથી તેને સજા કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. ચિદ્રૂપે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતો. એ વાતનું વેર લેવાને જ કદાચ હાકિમબેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે અભાવ થવાથી તેને માર્યો હશે, જો આ પ્રમાણે અભાવ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત ખોટી જણાતાં માલાનિષેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઈ આશ્ચર્ય નથી.

પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઇએઃ 'આલોદ્ધાર' કાવ્ય સંબંધી તો આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવલોકીશું.

૧. કલ્યાણભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાથજીના સેવકે શ્રીગોકુલેશલીલારસાબ્ધિ નામનું બહુ વિસ્તૃત સંસ્કૃત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાથજીનું ચરિત્ર વર્ણવેલું છે. એના कल्लोल નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક कल्लोलમાં तरंग નામના અધ્યાય છે. તેમાં कल्लोल ૭, ૮, ૯, માં માલાપ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ ભટ્ટની કૃપાથી क. ૭, ૮ મેં વાંચ્યા છે. જહાંગીર સાથેનો શ્રીગોકુળનાથજીનો કાસ્મીરની અંદર થએલો સંવાદ ત્રણ તરંગોમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં શાહજહાન ગાદીએ આવ્યાનો નિર્દેશ છે અને દામોદરના "પાખંડપ્રકાશ" માં કલ્યાણભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે, તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં થએલી એમ હું માનું છું.

૨. શિક્ષાપત્ર ગ્રંથથી જેઓ સંપ્રદાયમાં પ્રસિદ્ધ છે અને જેઓ શ્રીગોકુલનાથજીના ભત્રીજા હતા, તે આચાર્ય શ્રીહરિરાયજીએ શ્રીગોકુલનાથજીની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ મા શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છેઃ—

तातश्रीशंकरपरः पराशयविदां वर्यः परानन्ददो माला येन सुरक्षिता निजमहायत्नेन कण्ठे सतां ।
धर्मो येन विवर्धितः पितृपदाचारप्रचारैः सदा स श्रीगोकुलनायकः करुणया भूयाद्दशो सेविनाम् ॥

શ્રીહરિરાયજીનો જન્મ સં. ૧૬૪૭ માં થયો હતો, એટલે માળાપ્રસંગના સમયે તેમનું વય ત્રીસ વર્ષનું હતું. આથી એ પ્રસંગની તેમને જાતમાહીતી હતી.

૩. દયારામ કવિએ ગુજરાતીમાં 'વલ્લભનો પરિવાર' એ નામનું કાવ્ય લખ્યું છે, તેની એક પંક્તિમાં પણ આ પ્રસંગનો નિર્દેશ છેઃ—

"શ્રીગોકુલેશ સુખધામ જેની માળા રાખી દામ રે." (દ. કૃત કા. સં. પૃ. ૧૨૯)

૪. હિંદી ભાષાના કેટલાક કવિઓએ આ પ્રસંગ સંબંધી રચેલાં કવિત્ત ભેળાં આવ્યાં છે. તે શ્રીગોકુલનાથજીના ચરિત્રકારે સંગ્રહ કર્યો છે. એ આ પ્રમાણે છેઃ—

૧. આલોદ્ધારકાવ્યમાં આ બાબતમાં એમ લખ્યું છે કે હાકિમબેગે હાથ પાને હાથમાં રાખેલો ... જોડા પહેરવા પ્રયત્ન કર્યો કર્યો હતો. આ વાત અતિશયોક્તિભરેલી જણાય છેઃ कल्लोलની

ક. બિહારી વલ્લભ:—टेक थी, टेक थी, टेक थी रे, गिरि टेक टरे तो टरे ध्रुव तारो,
श्रीगोकुलनाथजी माला तजे तो शेष न शीश धरे भूभारो,
पेन पके तो पके तो पके, मंजकी पन कौन करे महीमें रखवारो !
श्रीवल्लभवंश बिहारी कहे, कवि गावत है जगमें जस यारो.

ખ. વૃંદાવન:— अधम उद्धारन तुम नाम, वल्लभ भक्ति पेज प्रतिपारन,
तपसीतापनिवारन, दुष्टसंघारन, तिलकमाळ-उधारन;
मानी मान निवारन, रसिक शिरोमनी, रससंचारन,
वृन्दावन, गोकुळपति, नागर प्रकटे निजजनकारन.

ગ. પ્રાણનાથ— मत जानो ख्याल, श्रीगोकुलनाथजुकी माला है,
बखानीहु वेदमरजादहु बखानी है.
हारे गुंजा बीच माला अमृत रसाळा है,
बुलाये जहांगीरने जाय के जुवाब दियो,
हिन्दुकी हद राखी, श्रीगोकुलनाथ प्रतिपाळा है.
प्राननाथ कहे, बात सुनो सबे ध्यान दे,
मत जानो ख्याल श्रीगोकुलनाथजुकी माला है.

ઘ. શ્રીપતિ— शाह कही सो तैं न करी, करी सो वेदपुरानन भाखी,
माळतिलक जनेउके कारन अटेन पंडन नाखी,
श्रीपत कहे, जहांगीर के खान, जे उमराव ते सब साखी.
श्रीविठ्ठलनाथजुके श्रीगोकुलनाथजु, सब हिंदनकी पत राखी !

પ્રકીર્ણ ઇતિહાસો.

ઇતિહાસનું અવલોકન.

[સં. ૧૯૮૨ ની સાલમાં અમદાવાદમાં જાહેર સભામાં વસંતરામ શાસ્ત્રીએ આપેલું ભાષણ.]

આજનો આપણા સંપ્રદાયનો મહાન મંગલમય સુદિન ઇતિહાસમાં કોઈ અનેરી રીતે પ્રકાશી રહ્યો છે. આજના સુમંગલ દિનનો પરિચય મારા પહેલાના વક્તાએ આપને આપ્યો છે જ, તેથી આપે જાણ્યું હશે કે, આજે આપણા શ્રીગોકુલેશપ્રભુ પ્રકટ થયા છે. જ્યાં સુધી ભારત વર્ષમાં એક પણ તિલકમાળા ધારણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ હશે ત્યાં સુધી શ્રીગોકુલેશપ્રભુ પ્રકટ દર્શન આપતા રહેશે. તિલકમાળામાં શ્રીગોકુલનાથજીના જ દર્શન પ્રભાતમાં દરેક વૈષ્ણવે કરવા ઘટે. શ્રીગોકુલનાથજી સં. ૧૬૦૮ ની સાલમાં માર્ગશીર્ષ સુદ ૭ ના રોજ પ્રકટ થયા હતા, આપ પ્રકટ થયા ત્યારથી જ્યાં સુધી ભૂતલપર દર્શન આપ્યા ત્યાં સુધીનો બધો ઇતિહાસ લખાયલો છે. એઓશ્રીના સેવકોએ એમને જ પોતાનાં સર્વસ્વ માન્યા હતા અને એઓશ્રીની જીવનલીલાના રસનો અનુભવ કરવામાં પોતાની કૃતાર્થતા માની હતી. તેથીજ શ્રીગોકુલેશપ્રભુનો દિવસે દિવસનો ઇતિહાસ ડાયરી રોજનીશીના રૂપમાં આપણને મળી શકશે. આ ઇતિહાસ રા. લલ્લુભાઇ છગનલાલ દેશાઇએ ઘણે ખરચે છપાવી પ્રકટ કર્યો છે. તે વાંચતાં આપણે તલ્લીન બની જઇએ છીએ, એઓશ્રીના સેવકો અથવા આપણા પૂર્વજોએ આપણને વારસામાં એ દિવ્ય સાહિત્ય આપ્યું છે. આપણા એ પુનિત પૂર્વજોએ શ્રીગોકુલેશપ્રભુનાં યશોગાનનું મહાસાહિત્ય, કે જે સાહિત્ય ગુજરાતી સાહિત્યની દૃષ્ટિએ ઉત્તમોત્તમ છે, તેનો દિવ્ય વારસો આપણને કૃપા કરીને આપ્યો છે. શ્રીગોકુલેશપ્રભુના હૃદયભેદક વચનામૃતો લગભગ એક લાખ છે. એ બધાં આપણાજ પૂર્વજોએ યત્ન કરીને લખ્યાં છે. આનો વિકાસ આપણા જીવનને દિવ્ય બનાવવામાં કારણરૂપ છે એમ હું માનું છું.

હિંદના ઇતિહાસમાં જેમ ઝાંસીની રાણીએ પોતાનું શૌર્ય સુવર્ણાક્ષરે અંકિત કરાવ્યું છે, તેમ ગઢાની મહારાણી શ્રીદુર્ગાવતીએ પણ પોતાનું યશ ઝળહળતું રાખ્યું છે. આ મહારાણી વૈષ્ણવ હતી અને તેને માટે આપણે મગરૂર થઈ શકીએ. એણે વૈષ્ણવ છતાં વિધર્મીઓ સામે તલવારથી લડીને એક શૂરવીર ક્ષત્રાણીની જેમ પોતાના દેહનો ત્યાગ કર્યો છે, એ ઇતિહાસ આપણા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ બનાવે છે. શ્રીગુસાંઇજી પોતે અડેલમાં બિરાજતા હતા, તે એ મહારાણીનાજ આગ્રહથી ગઢામાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલનાથજી તે વખત બાળક હતા. આ અવસ્થામાં પણ તેમનો પ્રભાવ અદ્ભુત હતો. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે સ્થાપેલો યશરૂપ ધર્મ શ્રીગોકુલેશમાં બાલક-અવસ્થાથીજ ઝળકી રહેલો હતો. શ્રીગોકુલનાથજીનું મૂળ નામ તો **શ્રીવલ્લભ** હતું, પણ સેવકોએ એઓશ્રીને શ્રીગોકુલનાથજી તરીકે પ્રસિદ્ધ કર્યા, જે પ્રસિદ્ધિ અત્યારે પણ તેવીજ છે, આપની યોગ્ય ઉમર થતાં યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર ઘણાજ ઠાઠથી થયો હતો. ગઢાની મહારાણીનો વૈભવ અવર્ણનીય હતો. ચાર હજાર તો હાથી અને ૪૦ હજાર ઘોડાઓ હતા. તેજ પ્રમાણમાં બીજી પણ સંપત્તિ અતુલ હતી. શ્રીગોકુલનાથજી મોટા થયા, વિદ્યાભ્યાસ કર્યો, અનેક સંસ્કૃત પ્રાકૃત ગ્રંથો રચ્યા, મોટા મોટા મહારાજાઓ અને સરદારો તથા ધનાઢ્યો આપના પ્રભાવથી મુગ્ધ બન્યા. આપશ્રીનું જીવન સેવામય હતું. હાલ તો આપણી નજરજ ટૂંકી બની છે: એક ગામથી બીજે ગામ ભટકે, ખુબ ખટપટારો કરે, તેજ જાણે દેશનું કે ધર્મનું કલ્યાણ કરે છે અને બીજા નહિ એવું આપણે

ચિદરૂપે મથુરામાં મુકામ કર્યો. હવે લડતનું સ્વરૂપ ક્રૂઝેસરોસટનું થયું હતું. અનેક વૈષ્ણવોની માળાઓ અને તિલક ઉતારવા માંડયા. વૃંદાવનમાં ચિદરૂપની ફત્તેહ બોલાઈ, પણ શ્રીમદ્‌ગોકુળ ટેક જાળવી રહ્યું હતું, સાક્ષાત્ શ્રીગોકુલનો નાથ જ્યાં બીરાજે ત્યાં ટેક ન હોય તો કયાં હોય? વાસ્તવિક જોતાં માલાતિલક બહારના ચિન્હ છે. પોતાનો ધર્મ બચાવવા ખાતર લોહી રેડાતું અટકાવવા ખાતર, પ્રભુસેવા કરવા માટે માલાતિલક છુપાવાય, જગતમાં દેખાડાય નહિ તો કશો વાંધો નથી. પણ આ તો સંપ્રદાયની લડત હતી. જો તેવી નબળાઇ બતાવવામાં આવે તો આખો સંપ્રદાય જમીનદોસ્ત બને. તેથી લડતની આગેવાની શ્રીગોકુલનાથજીએ લીધી. શ્રીગિરિધરજી પોતે મોટાભાઈ હતા, ધર્મી સ્વરૂપ હતા તેથી શ્રીજીની સેવા સંભાળી. શ્રીગોકુલનાથજી પોતે ઘણીવાર ચિદરૂપ પાસે જતા, પણ એ સંન્યાસી રૂબરૂમાં તો કંઇ કહેતો નહિ પણ પાછળથી એ પોતાની સેતાનપત દાખવતો. જહાંગીરને આ કલેશ વધવાની ખબર પડી, પોતે મહાન સરદારો સાથે આવ્યો. શ્રીગોકુલનાથજી અને ચિદરૂપનો મુકાબલો કરવાની જહાંગીરે ઈચ્છા કરી, શ્રીગોકુલનાથજી તો માલાતિલકને વૈદિક ઠરાવવા તૈયારજ હતા. પણ એ સંન્યાસીએ તો ઈન્કારજ કર્યો. મને આશ્ચર્ય થયા કરે છે કે, વૈષ્ણવો પોતાના સંપ્રદાયને વૈદિક માને તેમાં બીજાને શું? ગમે તે બહાને લડી લેવાની વૃત્તિવાળા ભિક્ષુકો કહે છે કે, તમે બ્રહ્મસંબંધને વૈદિક કેમ ઠરાવો છો? આ બોલનારાઓના હૃદયમાં કેટલો દ્વેષ છે તે સાબિત થાય છે. અમારું મંતવ્ય વેદસિદ્ધ છે એમ સિદ્ધ કરીએ તેમાં બીજાને શું? અલબત્ત, અમે બીજાના મતને અવૈદિક કહેતા હોઇએ તો એક જુદી વાત છે. અમે આખા જનસમૂહને માથે પરાણે અમારા વિચારો ઠોકતા હોઇએ તો અમારી કદાચ કસુર ગણાય. જેમ અમે અમારા સિદ્ધાંતોને વૈદિક કહીએ-છીએ તેમ તમે પણ તમારા સિદ્ધાંતોની વૈદિકતા જાહેરમાં કહો. પ્રજાને જે ગ્રહણ કરવું હશે તે કરશે, તેમાં હારજીતના જુગાના દંભથી ખરડાવાનું પણ નહિ રહે. વાસ્તવિક રીતે વેદની મારામારી નકામીજ છે. વેદથીજ ઉદ્ધાર થાય તેવો સિદ્ધાંત હીંદુધર્મમાં છેજ નહિ. વેદપર ખોટો મદાર બાંધી હીંદુધર્મને સંકુચિત બનાવવાનો સમય હવે વહી ગયો છે. અરે ખુદ વેદ પણ પ્રભુના ભજનથી આખા જગતનો ઉદ્ધાર થાય તેમ કહે છે, શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતામાં તો પ્રભુ કહે છે કે કેવળ મારા આશ્રયથી બધા તરી જાય છે. આવા વેદવાક્યો તથા પ્રભુવાક્યોથી મજબુત બનેલા શ્રદ્ધા અને ભાવનાથી પોષાયલા ભક્તિમાર્ગથીજ હવે તો જગતનો ઉદ્ધાર છે. શ્રીઆદ્યશંકરાચાર્યજી કહે છે કે સ્ત્રીશુદ્ર જો વેદ સાંભળે તો તેમના કાનમાં સીસુ રેડવું, હવે જો વેદ ભણવાથીજ ઉદ્ધાર થતો હોય તો સ્ત્રીશૂદ્રોના જન્મ એળેજ ગયા એમ સમજવું. અરે રાવણ તો મોટો વેદ જાણનારો હતો પણ તેના હૃદયમાં કેટલી શયતાન્યત ભરેલી હતી? માટે હાલ તો શ્રીરામ અથવા શ્રીકૃષ્ણ નામના જાપથી પણ ઉદ્ધાર થાય છે. એજ મહાન્ પવિત્ર સિદ્ધાંતનોજ દિગ્વિજય થયો છે. પછી ભલે તેને અવૈદિક કહીને લોકો કાખલીઓ કૂટે તેની કોઇને પરવા નથી. અમે વૈષ્ણવો અમારા મતને વૈદિક કહીએ, અમારા પ્રાણાધિક સર્વસ્વ આચાર્યશ્રીને અખંડભૂમંડલાચાર્ય માનીએ તેમાં બીજાને શું? અનંતાચાર્યજી શ્રીરામાનુજ સંપ્રદાયના છે, છતાં પોતાને "જગદ્‌ગુરુ" લખે છે. નૃસિંહ પરમાત્મા અને ઉપેંદ્રભગવાન કહેવાય છે, તેની સામે કેમ ચુપ છો? માટે આવા ઝગડાઓ અર્થ વગરના છે.

કંટોકટીના મામલો—જહાંગીરની કોશેશ પડી ભાંગી, શાસ્ત્રાર્થ થયો નહિ. પણ પોતે સમ્રાટ હોવાથી હુકમનો અમલ ન થાય તે ઠીક નહિ એ વાતપર તે મક્કમ રહ્યો. પોતે સરદારોને હુકમ કરીને કાશ્મીર તરફ સીધાવ્યો પછી ચિદરૂપ તો રાક્ષસ બન્યો. વૈષ્ણવો પર કાળો કહેર વરસાવવા માંડયો. અનેક અત્યાચારો કર્યાં પણ તેથી વૈષ્ણવો વધુ મજબુત બન્યા. આખરે એણે

સરદારોને ઉશ્કેરીને શ્રીગોકુલમાંથી શ્રીગોકુલનાથજીને ગિરફતાર કરવાની પેરવી કરી પણ શ્રીગોકુલમાં જે સરદાર જતા તે શ્રીગોકુલેશપ્રભુની પ્રેમમય મૂર્તિમાં લોટપોટ થઈ જતા. આખરે મહાન મુગલ સરદારોં સાથે છેવટનો નિકાલ કરવાનો ઠરાવ કર્યો. આગ્રાના સરદારો મથુરામાં આવ્યા હતા. તેમના કહેણને માન આપીને ભોજન કર્યા વિનાજ શ્રીગોકુલેશપ્રભુ મથુરામાં પધાર્યા. એઓશ્રી સાથે ૩૦૦ રજપુતો હથીયારબંધ હતા કે જેઓએ પોતાના પ્રાણ એ પ્રભુ પર ન્યોછાવર કીધા હતા. ૨૪ કલાક અન્ન જળ વિના રહીને ચાલુ મામલા માટે વાટાઘાટ ચલાવી. તેની વચ્ચે એવો પ્રસંગ આવ્યો કે જેથી શ્રીગોકુલેશપ્રભુ સાથેના ૩૦૦ રજપુતોએ સમશેર ખેંચી, પણ અહિંસાપર, પ્રેમદયા અને મૈત્રી સ્થપાયલા વૈષ્ણવધર્મમા નાહકનું લોહી વહેવડાવવાનું નજ હોય. પ્રભુએ તુરતજ બધાની સમશેર મ્યાનમાં નંખાવી. આખરે શ્રીગોકુલનાથજીએ આ મામલાનો છેલ્લો નિકાલ કરવાનું નક્કી કર્યું અને ૭૦ વર્ષની પ્રૌઢ ઉમ્મરે કાશ્મીરની ભયંકર મુસાફરી શરૂ કરી. ૫૦૦ માઇલ લાંબો પંથ હતો. ૭૮ દિવસે ત્યાં પધાર્યા. આ બધા દિવસોની મીનીટે મિનીટની નોંધ છે. જહાંગીરને પોતે મળ્યા..

મહાન્ વિજય—જહાંગીર પહેલાં તો એકનો બે થયો નહિ. એક સમ્રાટ પોતાના વચનો કેમ પાછાં ખેંચી લે? પોતાની હાર કેમ કબુલે? આખરે શ્રીગોકુલેશપ્રભુ પણ પોતાના નિશ્ચયમાં મક્કમ રહ્યા. જહાંગીરે કહ્યું કે, તમારી સત્તા સામે અમારે કહ્યું કહેવું નથી, પણ આપના હુકમથી હજારો નિર્દોષ ધર્મનિષ્ઠ વૈષ્ણવો પ્રાણત્યાગ કરવા તૈયાર થશે અને તે તેમને શોભતું નથી. જહાંગીર ચોંકી ઉઠયો; એના હૃદયમાં ઉપરનાં વાક્યોએ અપૂર્વ અસર કરી. શ્રીગોકુલનાથજીની ધર્મનિષ્ઠા માટે માન ઉત્પન્ન થયું. ચિદ્રૂપ માટે તિરસ્કાર થયો. આખરે પોતાની વાત રાખવા માટે કહ્યું કે, તમે માલાતિલક રાખો, પણ તમારે મારી આજ્ઞા માનીને શ્રીગોકુલનો ત્યાગ કરવો પડશે. જહાંગીરના આ હુકમમાં પણ કસોટી હતી. ગોકુલના ઘરબાર અને મહાન કરોડોનો રાજવૈભવ સંપત્તિ છોડશે કે કેમ? પણ બાદશાહના હુકમનો હર્ષપૂર્વક સ્વીકાર જ્યારે શ્રીગોકુલેશે કર્યો ત્યારે બાદશાહી તાજ એઓશ્રીને નમ્યું. પોતે શાહી શામ્યાનામાંથી બહાર પધાર્યા. સાથેના વૈષ્ણવોએ વિજયમાળા આરોપી. તે વખતનું ચિત્ર એક શાહી ચીતારાએ લીધેલું છે, અને હજુ એ વિજયનો પ્રત્યક્ષ પુરાવો છે. પ્રભુએ ગોકુલ છોડયું, વૈભવને તિલાંજલી આપી, ધર્મની રક્ષા કરી પોતે સોરમજીમાં બીરાજ્યા. આ તરફ ચિદ્રૂપના પાપકર્મો બહાર પડવાં, શાહી ગુસ્સાની આગમાં તે દુષ્ટ ખાખ થઇને નરકમાં ગયો.

દંડાકર તિલક—શાસ્ત્રપુરાણોમાં બે પ્રકારના તિલકો અસલથી ચાલ્યાં આવે છે. એક તો ચરણાકાર એટલે આપણે પ્રભુનાં ચરણકમલના આકારનું કરીએ છીએ તે; અને બીજું દંડાકાર; જે તિલક શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરમાં ચાલુ છે તે. શ્રીમહાપ્રભુજી અને શ્રીગુસાંઇજી ચરણાકાર તિલક કરતા. હજુ પણ બધી બેઠકોમાં એવુંજ તિલક થાય છે. શ્રીગોકુલનાથજી બન્ને પ્રકારનાં તિલક કરતા હતા. શ્રીગુસાંઇજી પછી શ્રીગોકુલનાથજીપર બધો ઘરનો બોજો હતો. તેથી પોતે ઘર ચલાવતા અને શ્રીગોવર્ધનનાથજીની સેવામાં પણ પધારતા. એવી રીતે એઓશ્રીને બીલકુલ સમય મલતો નહિ. સેવામાં પધારતાં વિલંબ થઇ જાય માટે પોતે એકદમ તિલક કરી લેતા હતા. એવી રીતે આપશ્રી જ્યારે જલદીથી સેવામાં પધારતા ત્યારે દંડાકાર તિલક કરતા હતા. પોતે આરસી જોયા વિના બે દંડના આકારમાં તિલક ખેંચી

લેતા. આ તિલક પણ શાસ્ત્રસિદ્ધ હતું. પછી સેવામાંથી પધાર્યા બાદ બહાર પધારતા ત્યારે ચરણાકાર તિલક કરતા અને તેમાં મુદ્રા પણ [illegible] આ ઉપરથી જણાય છે કે, ઉતાવળ જ્યાં હોય ત્યાં પોતે દંડાકાર કરે અને પ્રાચીન તિલકનો અંગીકાર કરે. માટેજ શ્રીગોકુલનાથજીની બેઠકોમાં ચરણાકાર તિલકજ મુખ્ય થાય છે અને કોઇકવાર દીપાકાર કે દંડાકાર થાય છે. (જ્ઞાન [illegible] રાજનગરવાળા નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રી ૬ શ્રીમધુસૂદનલાલજી મહારાજે [illegible]

લકીરપીટનો ઉત્સવ—કેટલાંક વર્ષપર હું શ્રીમદ્ગોકુલ ગયો હતો. [illegible] ઉત્સવનાં દર્શન પણ મેં કર્યાં હતાં. તેજ અરસામાં એક ઉત્સવ આવ્યો. તેનું નામ "લકીરપીટનો ઉત્સવ" એવું છે. આ વળી ઉત્સવ કેવો હશે એ [illegible] ઘણું આશ્ચર્ય થયું. અનુભવીઓને એના સંબંધનો ઇતિહાસ મેં પૂછી લીધો. [illegible] ઘણું જાણવાનું મળ્યું. માર્ગનું ઊંડું રહસ્ય એ વાર્તામાંથી ઉકેલી [illegible] લગતો ઇતિહાસ આ પ્રમાણે છે.

શ્રીગુસાંઇજીના એક અંતરંગ સેવક શ્રીચાચાહરિવંશજી હતા. શ્રીગુસાંઇજીના ઘણાજ કૃપાપાત્ર હતા. લીલાના મહાન્ અનુભવી હતા. શ્રીગુસાંઇજી નિત્યલીલામાં પધાર્યા પછી પણ એઓશ્રીના સાતે બાલકો એમનું ઘણુંજ માન [illegible] હરેક બાબતમાં શ્રીચાચાજીની સલાહ લેતા. લૌકિક અને અલૌકિકમાં [illegible] ઘણા નિપુણ હતા. બધા કાર્યમાં તેમની સલાહ ઘણીજ સફલ થતી હતી. [illegible] ભગવદ્વાર્તા કરવામાં પણ એક્કા હતા. કેટલાએ વૈષ્ણવો એઓશ્રીના [illegible] તલસતા હતા. એક સમયે પુષ્ટિમાર્ગીય સેવાપ્રકાર તેઓશ્રી સમજાવી [illegible] સેવાની ભાવનાનું વર્ણન કરીને સમગ્ર સમાજને અલૌકિક સેવારસમાં [illegible] બનાવી દેતા. બધા શ્રોતાઓ તલ્લીન બની ગયા હતા. કોઇને તેમનાં [illegible] તૃપ્તિ થતી નહતી. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના અને શ્રીગુસાંઇજીના સેવાવિલાસરૂપ [illegible] સાગરની છોળો ઉછળી રહી હતી. બધાની આંખોમાંથી પ્રેમનાં અશ્રુઓ [illegible] હતાં. છેવટે શ્રીચાચાજીએ આજ્ઞા કરી કેઃ—**સેવા તો પિતાપુત્ર કર ગયે, [illegible] હાં, શ્રીગોકુલેશ લકીર પીટે હેં.**

"મતલબ કે, શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો સેવાવિલાસ એઓશ્રી અને શ્રીગુસાંઇજીએ અનુભવ્યો. સેવામાર્ગનો સાક્ષાત્કાર-તો પિતાપુત્રે જ કરી દેખાડયો. [illegible] સાત બાલકોમાં શ્રીગોકુલનાથજી લકીર, લીસોટા ઉપર ચાલી રહ્યા છે [illegible] તુલના તો શ્રીચાચાજી જેવા મહાનુભાવીજ જ કરી શકે. બીજાનું એ [illegible] શ્રોતાઓ તો એ રહસ્ય કળી ગયા. એમના હૃદયમાં એ તુલનાથી [illegible] કાંઇ ભેદભાવ ઉપજ્યો નહિ. પરંતુ એ શ્રોતાઓમાં કેટલાક શ્રીગોકુલનાથજીના [illegible] આગ્રહી સેવકો હતા. એઓનો પ્રેમ ઉપાધિવાળો હતો. તેમનો પ્રેમ [illegible]

બહુ જ દ્વેષ કરતા હતા. અરસપરસ ચાડીઓ કરીને લડાઈ કરાવતા હતા. અરે, એટલુંજ નહિ, પણ તેવા ખોટા ગ્રંથો પણ લખી ગયા છે કે જેમાં શ્રીગિરિધરજી આદિ સાત બાલકોની કેટલીએ ખોદણી કરી છે. તેથીજ શ્રીગોકુલનાથજીએ આજ્ઞા કરી છે કે, મારા સેવકોના આવા ગ્રંથો જે વાંચશે તે બહિર્મુખ થશે મતલબ કે એવાં ગ્રંથો લખનારાઓથી પોતે ઘણાજ નારાજ હતા. આવા અદેખા સેવકોને શ્રીચાચાજીનાં વચનો તો બાણ જેવાં લાગ્યાં. તેઓ તો બહુજ દુઃખીદુઃખી થઇ ગયા, ને ત્યાંથી એકદમ દોડયા. શ્રીગોકુલનાથજી પાસે જઇ પહોંચ્યા. ત્યાં જઇને એઓશ્રી પાસે ફરીઆદ કરી. શ્રીચાચાજી આપશ્રીની નિંદા કરે છે એમ મીઠું મરચું ભભરાવીને કહ્યું. આપશ્રી આ સેવકોની દશા જાણતા હતા તેથી તેમના પર કશો વિશ્વાસ મેલતા નહિ. પોતે આજ્ઞા કરી કે, "અલ્યાઓ, શ્રીચાચાજીએ અમારી શું કહીને નિંદા કરી ?" તેઓ તુરત જ પોકારી ઉઠયા અને શ્રીચાચાજીના મુખમાંથી નીકળેલું ઉપરનું વાક્ય કહી દીધું. શ્રીગોકુલનાથજી તો એ વચનને અમૃતની વૃષ્ટિરૂપ ગણીને મહાન્ આનંદનો અનુભવ કરવા લાગ્યા. પોતે દીનતાના સ્વરૂપ એટલે પોતાની પ્રભુસેવાને આટલી ઉચ્ચ માર્ગમાં ગણાતી સાંભળીને તેઓશ્રી ખૂબ ખુશી થયા. તેમાંએ વળી પિતૃચરણ શ્રીગુસાંઇજીના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શ્રીચાચાજીના શ્રીમુખનાં વાકયો સાંભળીને તો નેત્રમાંથી અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. તુરતજ અધિકારીજીને બોલાવીને વધાઇ બેસાડી. નોબતખાનું બેસાડીને તે દિવસેજ વધાઇનો મહોત્સવ માન્યો અને ઘણી ધામધૂમ કરી. ગરીબ બીચારા પેલા પામર સેવકો તો બળીને ખાખ થઈ ગયા. આ ઉત્સવ હજુ સુધી મનાય છે.

આ ઇતિહાસથી આપણા મનમાં ભેદભાવ નજ થવો જોઇએ. આપણે તો બધાને એકજ સ્વરૂપ માનનારા રહ્યા. ઉપરની તુલના કરવાનો અધિકાર શ્રીચાચાજીનોજ હોય તે પરથી આપણે એ અલૌકિક સ્વરૂપમાં ન્યૂનાધિક ભાવ નજ આણીએ. આપણે શ્રીદ્વારિકાનાથજીનાં નીચેનાં વચનોજ કોતરી રાખીએ.

"अलौकिक सब आप्रिकुल."

દંડાદાર તિલક—દંડાદાર તિલક વિષે એક વાત હું આપી ગયો છું. એવીજ બીજી વાર્તા ભગવદીય મનોહરદાસજી પાસેથી નીચે મુજબ સાંભળીઃ—

એક દિવસ સેવામાં વિલંબ થવાથી શ્રીગોકુલેશપ્રભુ ત્વરાથી તિલક કરીને સેવામાં પધાર્યા. આ તિલક નીચેથી બાંધેલું ન હતું. જ્યારે આપશ્રી શૃંગાર ધરવા બિરાજ્યા ત્યારે શ્રીનાથજી ખૂબ હસી પડયા. શ્રીગોકુલનાથજીને પ્રભુના ખડખડાટ હસવાથી એકદમ આશ્ચર્ય થયું. આપશ્રી આસપાસ નજર ફેરવીને પ્રભુનાં હાસ્યનું કારણ ખોળવા લાગ્યા, પણ કાંઇક માલમ પડયું નહિ. એટલે પ્રભુને "આટલું બધું હસવું આવવાનું કારણ શું ?" એવી વિનતિ કરી. પ્રભુએ આપશ્રીના આજના તિલક તરફ આંગળી કરી. શ્રીગોકુલનાથજી તુરત સમજી ગયા અને એ તિલક સુધારવાની આજ્ઞા માગી. ત્યારે શ્રીનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે "ના, આ તિલક

મને ઘણુંજ પ્રિય છે." શ્રીનાથજીની આ આજ્ઞા થયા પછી આ બાંધ્યા વિનાનું તિલકનું માહાત્મ્ય શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરમાં વધ્યું છે.

શ્રીમોહનભાઈજી—શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક શ્રીમોહનભાઇજીનો પરિચય આપવા માટેની આપણામાં શી યોગ્યતા હોય? તો પણ ભગવદીયોની વાણીમાંથી કાંઇક એમના ગુણગાન કરીશું. શ્રીમોહનભાઇજી ભરૂચના વતની હતા. મહાબુદ્ધિશાળી અને મુસદ્દી હતા. તેથી જ મોગલોના અમલમાં પણ તેઓ એક જોખમદાર હોદ્દો મેળવી શક્યા હતા. એમને આગ્રાના દિવાનની પદવી મળી હતી. એમને માસિક ૪૦૦ રૂપીઆ પગાર મળતો હતો. તે વખતના ચારસો રૂપીઆની બરોબરી અત્યારના ચાર હજાર રૂપીઆ પણ કરી શકે નહિ, તે વખતે એક માણસ અત્યાર કરતાં ચાર ગણો આહાર કરતો અને તે પણ માત્ર આઠ આનાના માસિક ખર્ચે. આ ઉપરથી આપણે તે સમયના ચારસો રૂપીઆની કિંમત આંકી શકીએ. શ્રીમોહનભાઇજી શ્રીગોકુલનાથજીના અનન્ય સેવક હતા. શ્રીગોકુલેશપ્રભુમાં એમની અદ્ભુત આસક્તિ હતી. એમને લીલાનો સાક્ષાત્ અનુભવ હતો. શ્રીગોકુલેશપ્રભુનાં નિત્યલીલાસ્થ સ્વરૂપનાં દર્શન તેમને ભૂતલપર બિરાજતા શ્રીગોકુલેશમાં થતાં, તેથી તેઓ શ્રીગોકુલનાથજીપર તન મન ધન નોછાવર કરતા. એમનો એક પત્ર 'પતાકા' ના ૮ વર્ષના ૧ લા અંકમાં પ્રકટ થઇ ગયો છે. એમાં દીનતાનું સ્વરૂપ એથી સ્પષ્ટ દેખાય છે. શ્રીમોહનભાઈજી એટલે દીનતાનું મૂર્તિમંત સ્વરૂપ.

એક વખત એક ફકીર રસ્તામાં ભીખ માગતો હતો. એક વૈષ્ણવને તેના પર દયા આવી ને કહ્યું કે, "અલ્યા, તારે માગવું હોય તો શ્રીમોહનભાઈજી દિવાન પાસે માગ કે જેઓ તારૂં દારિદ્રય ચૂર કરી નાખશે. જા, તેમની પાસે જઇને શ્રીગોકુલનાથના નામથી માગજે." પેલો ફકીર રસ્તામાં ઉભો રહ્યો. મોહનજીભાઈ એક પાલખીમાં–મીયાનામાં બિરાજેલો હતા. મિયાનો પાસે આવતાંજ પેલા ફકીરે પોકાર કર્યો કે 'મોહનભાઇ, શ્રીગોકુલનાથકે નામપેં કયા દેતા હૈ?" મોહનભાઇજી પોતાના પ્રાણાધારનું નામ સાંભળતાંજ વિહ્વળ થઇ ગયા. "શ્રીકૃષ્ણનામ જબતેં–શ્રવણ સુન્યોરી આલીરી" કીર્તન જેવી દશા થઇ ગઇ. એકદમ પોતાના હાથમાંના હીરાજડીત કડાં હજારો રૂપીયાની કિંમતના પેલા ફકીરની ઝોળીમાં શ્રીમોહનભાઇએ પ્રાણપતિના નામ પર નોછાવર કરી દીધાં. ફકીર ચાલ્યો ગયો. આનું નામ આસક્તિ.

સાત બાળકોનાં સાત નામો—શ્રીમત્પ્રભુચરણ શ્રીગુસાંઇજીના સાત બાલકોનાં નામો તો પ્રસિદ્ધજ છે. પણ શ્રીગુસાંઇજી પોતે એ સાતે સ્વરૂપોને શું કહીને બોલાવતા એ વાત જાણવા જેવી છે. આ પ્રસંગ પરમકૃપાલુ ગોસ્વામી શ્રી૬ શ્રીમધુસૂદનલાલજી મહારાજે કહ્યો છે. જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીને આપ શ્રી "ગોવર્ધન" કહેતા. શ્રીગોવિંદરાયજીને "રાજાજી" કહેતા. શ્રીબાલકૃષ્ણજીને "રાજીવલોચન" કહી સંબોધતા. શ્રીગોકુલનાથજીનું "શ્રીવલ્લભ" કહેતા. શ્રીરઘુનાથજીને "રામચંદ્ર" નામ આપી ધર્યું હતું. શ્રીયદુનાથજીનું નામ "મહારાજજી" રાખ્યું હતું. શ્રીઘન-

શ્યામજીનું નામ "પ્રાણવલ્લભ" સ્થાપ્યું હતું. આ સાતે બાલકો આપશ્રીને કાકાજી કહીને સંબોધતા હતા.

સાત સ્વરૂપ અથવા સાત બાલકો—શ્રીવલ્લભવેલ વાંચવા લાયક છે. સાત બાલકોમાંથી કયા કયા બાલક કયા કયા શાસ્ત્રમાં પ્રવીણ છે એ પર એક ઐતિહાસિક પ્રકાશ પાડવામાં આવ્યો છે. શ્રીગિરિધરજી સર્વ શાસ્ત્રમાં પ્રવીણ હતા. શ્રીગોવિંદરાયજી વ્યાકરણ શાસ્ત્રમાં, શ્રીબાલકૃષ્ણજી વેદમાં, શ્રીગોકુલનાથજી માર્ગના સિદ્ધાંતોમાં, શ્રીરઘુનાથજી ૧૮ પુરાણો અને ૧૮ ઉપપુરાણો મળીને ૩૬ પુરાણોમાં, શ્રીયદુનાથજી વૈદક શાસ્ત્રમાં, તેમજ શ્રીઘનસ્યામજી પણ વિદ્વાન જ હતા. શ્રીવલ્લભવેલના લેખક કહે છે કે, "અમારા શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ કહ્યું છે કે, અમારા બધા ભાઇઓમાં કોઈ મૂર્ખ તો રહેલ જ નથી; બધામાં અલૌકિક સત્ત્વ છે." આવા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ માટે માન ઉપજે છે.

બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા કોણ આપી શકે?—શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુના શ્રીહસ્તાક્ષરના લેખ પરથી વાચકોને નિશ્ચય થશે કે, વૈષ્ણવો કદી ગાદી પાસે બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા બીજા કોઇ વૈષ્ણવને આપી શકે નહિ. મંત્રદીક્ષા માત્ર શ્રીવલ્લભકુલજ આપી શકે છે. પહેલાં શ્રીગોકુલેશપ્રભુનાં વચનામૃતથી પણ પણ એ વાત સાબીત કરી ગયો છું કે, માત્ર શ્રીમદાચાર્યવંશજ એ દીક્ષા આપી શકે. જો કોઇ વૈષ્ણવ આપે તો તે ચાંડાલ છે એમ શ્રીમુખનાં વચન છે. ખેર, જ્યારે એ સવાલ ઉભો થયો છે ત્યારે તો તે વિધિની સંપ્રદાયની ઐતિહાસિક પરંપરા પ્રકટ કરવી જોઇએ. શ્રાવણ શુદ ૧૧ ની મધ્ય રાત્રિએ સાક્ષાત પ્રભુએ શ્રીમહાપ્રભુને બ્રહ્મબંધ મંત્રની આજ્ઞા આપી. દામોદરદાસજીએ એ લીલાનાં દર્શન કર્યાં, પણ તેઓ કાંઇ સમજ્યા નહિ. તે પછી શ્રીમહાપ્રભુજીએ અનુભવ વર્ણવીને પહેલવહેલું બ્રહ્મસંબંધ મંત્રનું દાન દામોદરદાસજીને કર્યું. આટલો સમર્પણદીક્ષાનો મૂળ ઇતિહાસ છે.

સમર્પણમંત્ર પહેલાં શ્રીમહાપ્રભુજીએ અષ્ટાક્ષર અને પછી ગદ્યમંત્રનું પણ આપશ્રીએ દાન કર્યું, ને અદેયદાનદક્ષ તરીકે આપશ્રી પ્રત્યક્ષ થયા. વળી સંપ્રદાય વધે અને દૈવી જીવોને અલૌકિક આનંદ મળે તેટલામાટે પોતે ગુજરાતમાં નરોડાનિવાસી શ્રીગોપાલદાસજીને આજ્ઞા કરેલી કે, તમે વૈષ્ણવોને અષ્ટાક્ષરમંત્રનું દાન કરજો, (ગદ્યમંત્રનું નહિ, કારણ કે તે તો પોતાનો વંશ જ આપી શકે એવો આપશ્રીને ભગવદાજ્ઞાનુસાર નિશ્ચય હતો. જો શિષ્યોદ્વારા—સેવકોદ્વારાજ સંપ્રદાય ચલાવવો હોત તો પોતે ગૃહસ્થાશ્રમનો અંગીકારજ ન કરત, ને તેમ કરવાની ભગવદાજ્ઞા પણ નજ થાત. આ વાત ખાસ ધ્યાનમાં રાખવાની છે.) એમ ગુજરાતમાં શ્રીગોપાલદાસજીને આજ્ઞા આપ્યા પછી કાશીમાં શેઠ પુરુષોત્તમદાસને પણ અષ્ટાક્ષરનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી પણ કોઇને સમર્પણમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી નહિ. આ ઇતિહાસ શું સૂચવે છે? એજ કે, ગદ્યમંત્ર કોઇ પણ વૈષ્ણવ વૈષ્ણવને આપી શકેજ નહિ.

ત્યાર બાદ આચાર્યશ્રીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુએ પણ પોતાના બે સેવકોને માત્ર અષ્ટાક્ષર આપવાની આજ્ઞા આપી છે. એક તો શ્રીચાચા હરિવંશજી અને બીજા આકમા લાલજીવાળા, કે જેના વંશજો અત્યારે પણ ડેરાઇસ્માઇલખાનમાં અષ્ટાક્ષર આપે છે. એમ બે સેવકોને અષ્ટાક્ષર મંત્રનું દાન ઇતર વૈષ્ણવોને કરવાની આજ્ઞા આપે આપી.

એક વખતે શ્રીગુસાંઇજી નરોડા પધાર્યા. નરોડામાં તે સમયે શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક શ્રીગોપાલદાસજી બિરાજતા હતા. આપશ્રીએ પોતાનો મુકામ તેમને ઘેરજ રાખ્યો. શ્રીગુસાંઇજીની પધરામણીની વધાઇ સાંભળીને અનેક વૈષ્ણવો દર્શનાર્થે તેમજ અષ્ટાક્ષર લેવા માટે આવી પહોંચ્યા. શ્રીગુસાંઇજી પોતે ભીતર સેવામાં બિરાજતા હતા. બહાર વૈષ્ણવો કોલાહલ કરતા હતા, તેથી શ્રીગોપાલદાસજીએ

બહાર આવીને વૈષ્ણવોને પુછ્યું કે, તમે શા માટે કોલાહલ કરો છો ? એના જવાબમાં વૈષ્ણવોએ શ્રીગુસાંઇજી પાસે અષ્ટાક્ષર લેવાની વિનતિ કરી. ત્યારે શ્રીગોપાલદાસજીએ કહ્યું કે, હમણાં જાઓ, અષ્ટાક્ષર અમે પણ આપી દઇશું. આ શબ્દો શ્રીગુસાંઇજીના કાન પર પડ્યા. શ્રીગોપાલદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજીએ આજ્ઞા કરી કે, અમે જ્યારે અહીંથી વિદાય થઇએ ત્યારે જ તમે અષ્ટાક્ષરનું દાન કરી શકો છો; અમે અહીં હોઇએ ત્યાં સુધીમાં તમે જેને અષ્ટાક્ષરનું દાન કર્યું છે, કરો છો, ને કરશો તે બધા ગંગોજ કહેવાશે; મતલબ કે ગંગાના પ્રવાહમાંનું જલ નહિ, પણ ખાડા ખેંચાંમાંના જલ જેવા કહેવાશે, માટે તેવા વૈષ્ણવોએ ફરીને અમારી પાસે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લઇ જવો. વૈષ્ણવમાં દાસ્યભાવ જોઇએ, ને મંત્રદીક્ષા આપવાથી દાસ્યભાવ નષ્ટ થઇ એક પ્રકારનો ગર્વ આવી જાય છે, ને આખરે વૈષ્ણવપણું દૂર ચાલ્યું જાય છે. શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક શ્રીગોપાલદાસજીને પણ જ્યારે ગર્વ થયો ત્યારે તે ગર્વ શ્રીગુસાંઇજીએ દૂર કર્યો; ને દયા કરીને તેમની વૈષ્ણવતા જાળવી રાખી. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ અષ્ટાક્ષરમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા પણ વૈષ્ણવોને આપવાનું બંધ કરી દીધું, ને તે પછી કોઇપણ વંશ્યે–શ્રીગોસ્વામિબાલકે–તેમ કર્યાનું ઇતિહાસને પાને ચઢ્યું નથી.

છઠ્ઠી ગાદી અથવા છઠ્ઠું ઘર.

શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી શ્રીગુસાંઇજીનો વંશ અત્યારે આપણને દર્શન આપે છે. શ્રીગુસાંઇજીના સાત બાળકો પ્રકટ બિરાજ્યા. સાત બાળકોને લીધે સાત ગાદી, સાત ઘર, સાત પીઠ; જે કહો તે થયાં. સાત શ્રીઠાકુરજીથી કંઇ સાત ઘર થયાં નથી. આ સાતે ઘરોમાં અત્યારે ભિન્ન ભિન્ન સ્વરૂપો બિરાજે છે. સાત ઘરમાં છઠ્ઠા ઘર વિષે જે મતભેદ ચાલે છે તેનું સમાધાન હજુ પણ થયું નથી. તેનું કારણ આ છે. શ્રીગુસાંઇજીના સાતે લાલજીઓએ શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા અનુસાર એક એક ઠાકોરજીનાં સ્વરૂપો પોતાને માથે પધરાવી લીધાં. પણ છઠ્ઠા લાલજી શ્રીયદુનાથજીએ પોતાના વાટામાં આવેલું શ્રીબાલકૃષ્ણજીનું સ્વરૂપ (હાલ સુરતમાં બિરાજતું) છોટું હોવાના કારણે પધરાવ્યું નહિ. આમાં ખાસ ભાવના તો એ છે કે, શ્રીયદુનાથજી પોતે શ્રીમહારાણીજીનું સ્વરૂપ એટલે સ્નેહસ્વાત્મક રત્ના, સ્નેહની કયા ઘરમાં જરૂર ન હોય ? તેથી પોતે બધા ભાઇઓને ઘેર સેવા કરવા પધારતા. તેમાં શ્રીનવનીતપ્રિયાજીનાં ઘરમાં વધારે વાર પધારતા. આવી રીતે થવાથી એઓશ્રીના ઘર વિષે મતભેદ થયો છે. આ સંબંધમાં કેટલીક સૂક્ષ્મ બાબત અસ્મદ્ગુરુચરણે કહી. તેઓશ્રીએ પણ તૃતીયપીઠાધીશ્વર નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજની આજ્ઞા થયલી તે પ્રમાણે મને કહી. એ ઇતિહાસ જાણવા જેવો હોવાથી અહીં ઉતારૂં છું:—

શ્રીયદુનાથજીએ છોટા હોવાથી શ્રીબાલકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવ્યા નહિ, તેથી શ્રીબાલકૃષ્ણજી હાલ શ્રીકાંકરોલીમાં બિરાજતા શ્રીદ્વારકાધીશની ગોદમાં બિરાજ્યા; અને તે ત્રીજા ઘરના ગોદના ઠાકુરજી ગણાયા. હવે શ્રીકલ્યાણરાયજી (હાલ વડોદરામાં બિરાજતા) શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવ્ય હોઇ શ્રીઆબાવેણુને માથે બિરાજતા હતા. શ્રીઆબાવેણુની વૃદ્ધ અવસ્થા થવાથી રીત પ્રમાણે શ્રીકલ્યાણરાયજીને શ્રીનાથજીના ઘરમાં પધરાવવાની ઇચ્છા થઇ. આ વાતની ખબર શ્રીયદુનાથજીને પડી એટલે એઓશ્રીએ મોટું સ્વરૂપ શ્રીમહાપ્રભુજીનું સેવ્ય હોવાથી પોતાને માથે પધરાવી લીધું; અને તેની સેવા થોડા સમય સુધી પોતે કરીને પછી લીલાંમાં પધાર્યા. આપના જ્યેષ્ઠ લાલજી શ્રીમધુસૂદનજી હતા. તેઓશ્રીએ પણ કલ્યાણરાયજીની સેવા કરી. પણ પાછળથી કોઇની સમજાવટથી પોતાના પિતાશ્રીના વાંટાના ઠાકુરજી બાલકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવી લાવ્યા. પણ કાંઇ ફાવ્યું નહિ, એટલે ફરીને શ્રીદ્વારકાધીશની ગોદમાં પધરાવ્યા. આમ ને આમ વ્યવહાર કર્યું એટલે

કાંકરોલીમાં બિરાજતા શ્રીદ્વારિકેશ્વરજીએ, ત્રીજા લાલજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીના લાલજીએ શ્રીનાથજીના દીક્ષિત તરીકે બિરાજતા ચોથા લાલજી શ્રીગોકુલનાથજીને પ્રાર્થના કરી, તેથી એઓશ્રીએ પોતાના બન્ને ભત્રીજા ઉક્ત બન્ને લાલજીને બોલાવીને તોડ કાઢી આપ્યો. શ્રીમધુસૂદનજીએ તો શ્રીકલ્યાણરાયજીની જ સેવા પધરાવી, અને એ વિષે એક ફારગતી લખીને શ્રીબાલકૃષ્ણજી ઉપરથી પોતાનો હક્ક ઉઠાવી લીધો-અને ફરીને દ્વારકાધીશની ગોદમાં પધરાવ્યા. આ ફારગતી હજુ કાંકરોલીમાં બિરાજે છે.

આ ઉપરથી જણાશે કે, છઠ્ઠા લાલજી શ્રીયદુનાથજીનું મોટું ઘર શેરગઢવાળું જ મણાય, અને તેમાં કલ્યાણરાયજી બિરાજે છે માટે કલ્યાણરાયજી જ છઠ્ઠા સ્વરૂપ તરીકે માની શકાય. આ વિષે કશો સંદેહ રહેતો નથી. બાલકના ઘરના હિસાબથી ઠાકુરજી છે, ઠાકુરજીના હિસાબથી બાલકોનું ઘર નથી.

શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી—અસ્મદ્ગુરુચરણે એક દિવસે નિત્ય નિયમમાં ચરણસ્પર્શ કરવાનાં ચિત્રોનાં દર્શન કૃપા કરીને કરાવ્યાં. તેમાં એક અદ્ભુત ચિત્ર પણ મેં નિરખ્યું. એ ચિત્રમાં એક શ્રીગોસ્વામિબાલક શ્રીનાથજીના ચરણકમલ પર બન્ને શ્રીહસ્ત સ્થાપીને અશ્રુપ્રવાહ વહેવરાવી રહ્યા છે અને તેથી શ્રીનાથજીએ પોતાની કટિ પર સ્થાપેલો દક્ષિણ—જમણો હસ્ત તેમના મસ્તક પર સ્થાપેલો છે. આ અદ્ભુત ચિત્રનો ભાવ મને કાંઈ પણ સમજાયો નહિ; એટલે ગુરુદેવને વિનતિ કરી. તેઓશ્રીએ તે પછી એક ઇતિહાસ કહ્યો; જે હું અહીં ઉતારી લઉં છું.

શ્રીગુસાંઈજીના બીજા લાલજી શ્રીગોવિંદરાયજીના જ વંશમાં એક બાલક શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી પ્રકટ થયા છે. આ વિઠ્ઠલરાયજી શ્રીનાથદ્વારામાં બિરાજતા અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીની (શ્રીઠાકુરજીની) સેવા કરતા. શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી મહારાજ સેવાના અનોસરમાં સંધ્યા, જપ આદિ નિત્ય નિયમ કરતા. નિત્ય નિયમ વખતે લૌકિક દૃષ્ટિએ એક તદ્દન વિપરીત અને આશ્ચર્યકારક ઘટના થતી હતી. એક યવની મુસલમાન સ્ત્રી હતી. તે નિત્ય નિયમ સમયે શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીની સામે બેસતી હતી. વળી મહારાજશ્રી પણ તેની આંખો સામે જપ કરતાં કરતાં એકીટસે જોયા કરતા હતા. આનો ભેદ કોઈને પણ મળ્યો ન હતો. કેટલાક અંતરંગ કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોને તો આનું રહસ્ય મળી ગયું હતું, એટલે તેમને મહારાજશ્રીની આ અદ્ભુત લીલાથી મોહ થયો નહતો. આ લીલાનો ભેદ ગુરુકૃપાથી આપણે પણ જાણી લઈએ. વસ્તુતઃ પેલી સ્ત્રી કોઈ દૈવી વિરલી પ્રભુભક્ત હતી. એની બન્ને આંખોમાં શ્યામસુંદરની છબી સ્પષ્ટ દેખાતી હતી. એ બડભાગી બાઈએ નટવર-વ્રજરાજ-જોડીને નયનોમાં સમાવ્યા હતા. આ દર્શન શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીને સ્પષ્ટ રીતે થતાં હતાં, તેથી તેઓ લોકલાજ કે કુલમર્યાદાની પરવા કર્યા વિના એ બાઈને માત્ર જપપાઠ વખતે સામે બેસવા દેતા હતા. સામાન્ય દુન્યવી માણસ આ સુંદર ભેદ ક્યાંથી ઉકેલી શકે! સામાન્ય લોકો તો આ વાતની ખૂબ ચર્ચા કરવા લાગ્યા. એ રીતે લોકચર્ચાએ ગંભીર સ્વરૂપ પકડ્યું, અને પોતાની સત્તા શ્રીગોસ્વામી બાલકોની જ્ઞાતિ ઉપર પણ સ્થાપી દીધી. બધા સજાતીયો—ખાસ ભટ્ટ સમુદાય—તો ખૂબ ખળભળી ઉઠ્યા. શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીને આ વ્યવહાર તાકીદે બંધ કરી દેવા ઘણીવાર ચેતાવી ગયા પણ તેઓ તો પોતાની ટેકમાં અડગ જ રહ્યા. તેથી છેવટે તેઓશ્રીને જાતિબ્હાર કરવાનો ઠરાવ કરવામાં આવ્યો. એક દિવસે શ્રીનાથજીનો ઉત્સવ શૃંગાર તેમને આપવામાં આવ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીએ તે દિવસે ઘુંઘરવાળા મસ્તકાજીનો શૃંગાર શ્રીને ધરાવ્યો. શૃંગાર ધરી રહ્યા પછી આપે સાક્ષાત્ સંયોગમાં વિરહરસ અનુભવવા માંડ્યો. આપને

સ્મરણ થયું કે આજે મારા છેલ્લા શૃંગાર છે અને હવેથી શ્રીનાથજી મારા હાથના શૃંગાર નહિ ધરે. આ વાતની યાદ આવતાંની સાથેજ હૃદય રૂંધાઈ ગયું. સંયોગરસની સત્તા વિરહરસે ખુંચવી લીધી. એકદમ નેત્રમાંનો અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. આપે તુરતજ શ્રીનાથજીનાં ચરણકમલ પર બન્ને હસ્ત સ્થાપી દીધા. નેત્રમાંનો અશ્રુપ્રવાહ તો ચાલુજ હતો. એ અશ્રુપ્રવાહથી શ્રીના ચરણ કમલ પાસેની ગાદી આખી તરબોળ થઈ ગઈ. શ્રીજી તો દયાના સાગર, તે આવો ઉત્કટ વિપ્રયોગ સન્નિધાનનાં કેમ સહી શકે? એકદમ પોતાનો જમણો હસ્ત કેડ પરથી ઉઠાવીને શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીના મસ્તકપર સ્થાપી દીધો ને આજ્ઞા કરી કે ભલે આખી જાતિ તમારાથી વિરુદ્ધ હોય, પણ હું તો તમારા પક્ષમાંજ છું. આ શીતલ વચનોથી શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીનો વિરહાગ્નિ શાંત થયો. હવે આ તરફ શું થયું કે શૃંગારમાં વિલંબ થવાથી શ્રીનાથજીના તિલકાયિત તથા અન્ય ગોસ્વામિબાલકો પણ ભીતર પધાર્યા હતા, અને આ લીલાનો સાક્ષાત્કાર કર્યો હતો. તેથી શૃંગારભોગ ધરીને જ્યારે શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી બહાર પધાર્યા ત્યારે બધા સ્વજાતીઓએ એઓના ચરણમાં સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કર્યા અને જાતિનો પ્રતિબંધ દૂર કર્યો.

મહાનુભાવીઓની લીલા અટકળવી મુશ્કેલ છે. ગુરુકૃપાથીજ તેનો ભેદ ઉઘાડવાની ચાવી મળે. તેને માટે દૃઢ વિશ્વાસની જરૂર છે. પંડિત જગન્નાથ કવિ મહાસમર્થ વિદ્વાન થઇ ગયા હતા. તેમણે એક મુસલમાની સ્ત્રી સાથે ગાઢ સંબંધ બાંધ્યો હતો. તેઓનો પણ આજ કારણે જાતિ-બહિષ્કાર થયો હતો. પછી પોતાની પવિત્રતાની ખાતરી કરી આપવા માટે તેમણે ગંગાજીની સ્તુતિ કરવા માંડી ગંગાજીનો પ્રવાહ બાવન પગથીયાંની નીચે હતો. એક એક સ્તુતિના શ્લોકથી એક એક પગથીયું ગંગાજી ચડતાં ગયાં. આણીગમ બાવન શ્લોક પૂરા થયા અને ગંગાજી પણ બાવન પગથીમાં ચડી ચૂક્યાં. જ્યારે સત્ત્વગુણાભિમાની વિષ્ણુનાં ચરણજલની આ શક્તિ તો નિર્ગુણ પૂર્ણ પુરુષોત્તમની કૃપાની તો વાતજ શી કરવી? કવિ દયારામ ભાઈ ગાય છેઃ—

"યવની રાખી જગન્નાથ પંડિત, તે તો સહજ બની આવેરે;
બાવન સીઢી ગંગા ચડાવી, તે વેળા વેવલાં વીણાવે."

× × × × ×

મોટાનું વચન સુખધામ, કૃતિ રીતે કરીએ;
તે કરે ચહાય સો કામ, આપણે તો મરીએ.

મહાપુરુષોની કૃતિની નકલ કરતાં તો વાર ન લાગે, પણ જ્યારે સમય આવે તે વારે આપણી કેવી રેવડી થાય છે તે જોવાનું છે. મહાન્ ભક્તોના દાખલા દઇને સ્વચ્છંદ વર્તન કરવું; સગવડીયો પંથ પાળવો એ બધું સહેલામાં સહેલું છે. માત્ર એ મહાનુભાવીઓનાં વચનને અનુસરીને ધીરે ધીરે ઉત્તમ કોટિપર ચડવું એ જ મુશ્કેલમાં મુશ્કેલ છે.

શ્રીયોગિગોપેશ્વરજી—આપશ્રીએ શ્રીનાથદ્વારામાં બિરાજતા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના દ્વિતીય પીઠના તિલકાયત તરીકે દર્શન આપ્યાં છે. શ્રીહરિરાયજી મહાપ્રભુએ પણ આજ પીઠને અલંકૃત કર્યું છે. આપનું નામ તો શ્રીગોપેશ્વરજી છે, પણ યોગિગોપેશ્વરજી તરીકે આપ ઘણા પ્રસિદ્ધિમાં આવ્યા છે. ખચિત જ આપ એક મહાન્ યોગી હતા. **યોગી** એટલે સમાધિ ચડાવનાર, **કે સત્યામહી યોગી નહિ, પણ કોઇક અલૌકિક રસમગ્ન અદ્‌ભુત યોગી.** આપના પ્રભુ પણ યોગેશ્વર કહેવાય છે, શ્રીગોપેશ્વરજીનું નામ "યોગી" તરીકે પ્રસિદ્ધ થવાનું કારણ આપની રસમસ્ત દશા જ છે. આપ કોઇની સાથે કંઇ વાતચિત કરતા જ નહિ. આપની દિનચર્યા વિલક્ષણ જ હતી. આપ પ્રભુસેવા કરતા અને વૈદિક વિધિ-અનુસાર નિત્ય નિયમ પણ

તથા સ્વરૂપસેવા પધરાવી દેવા ઇચ્છા દર્શાવી અને શ્રીનાથજીની ગોદમાં બિરાજતા શ્રીમદનમોહનલાલજીને પધરાવી આપવાનું નક્કી થયું. પરંતુ શ્રીને પધરાવવાના મુહૂર્તને દિવસે ગોદના ઠાકોરજી પધરાવી દેવાની શ્રીહરિજી મહારાજે ના કહી અને બીજું કોઈ પણ સ્વરૂપ પધરાવી લેવા જણાવ્યું. આપ બહુ સમય સેવામાં ઉપસ્થિત હતા એટલે પોતા અનુભવ મુજબ આચાર્યવંશીયથી શ્રીગુસાંઈજીના સેવ્યનિધિ શ્રીમદનમોહનલાલજીને ઝાંપીજીમાં પધરાવી લીધા. ત્યાર બાદ થોડો સમય ત્યાં રોકાઈ વૃદ્ધ મહારાજ સુદ્ધાં વિદાય થઈ વ્રજમાં પધાર્યા.

આપે નેક ભોગ ઇત્યાદિનો પ્રબંધ કર્યો નહોતો, પરંતુ વૈષ્ણવો દ્વારા જે દિવસે જેટલી સામગ્રી આવતી તે તમામ શ્રીને આરોગાવીને વૈષ્ણવોને પ્રસાદ લેવરાવી દેતા. અર્થાત્ આજે પચશેરની સામગ્રી આવતી તો તેટલી આરોગાવતા અને બીજે દિવસે દશ શેરની આવતી તો તે તમામ આરોગાવી દેતા. ભંડારમાં કાંઈ પણ રાખવાનો રિવાજ નહોતો. શ્રીને માટે કોઈ પણ અમુક સ્થળ મુકરર કર્યું નહોતું, પરંતુ હમેશાં ઝાંપીજીમાંજ પધરાવી રાખતા. અને એક ક્ષણ પણ પોતાથી અલગ કરતા નહિ. આપને શ્રીમદ્ભાગવત સમગ્ર કંઠાગ્ર હતું અને અહર્નિશ તેનો પાઠ સતત ચાલુ રહેતો હોવાથી વ્રજમાં પધાર્યા. બાદ વ્રજવાસીઓમાં ચર્ચા ચાલી કે, આપ તો દિવસ ને રાત ગુનગુનાટ કરે છે. ત્યારથી આપનું નામ ગન્નુજી પ્રસિદ્ધ થઈ ગયું. અને તે નામથીજ હાલપર્યંત પ્રસિદ્ધ રહ્યા.



चतुर्थपंचमपीठाधीश्वर गो. श्री. ६ श्री वल्लभाचार्यजी महाराजश्रीना
आत्मज चि. गो. श्रीगोविन्दरायजी.
(पंचमवर्षप्रवेश-सं. १९९० कार्तिक सुद १३)



बीकानेरनरेश श्रीडुंगरसिंहजी बहादुर.

शिलालेख.

श्रीगोकुलेन्दुर्विजयते।

कृष्णं विष्णुं फणीशं शिव शुकमुनीन् व्यासदेवं शुकंच श्रीविष्णु स्वामिदेवं प्रभृति गुवल्लभाचार्यमीडे॥ श्रीमंतं विठ्ठलेशं रघुपतिकुलजं देवकीनंदनार्थं तेणमाचार्यसिंहासनमिह जयते पुण्यवंतो हि यावत्।

सं० १९४२ मि० आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी पुण्यमूर्ति राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री २ डूगरसिंहजी बहादुर विजयराज्ये शुभं भवतु।

बिकानेरसें ३ तीन कोस दूर श्रीदेवकीनन्दनप्रभुकी बैठकका शिलालेख.



विद्याविभागी गोस्वामीजी १ श्रीपुरुषोत्तमलालजी महाराज
(सुरतमां श्रेष्ठी हरगोविन्द मार्फत.)

કરાવી, ગંધાસમયેજ શ્રીને અન્નકૂટ આરોગવાવો એવી હતી. જેથી પ્રવાસ ચાલુ રાખ્યો. એક વખત આશ્વિનકૃષ્ણ અષ્ટમીના સુમંગલ પ્રભાતે આપે આજ્ઞા કરી કે, આપણે અમુક શહેરમાં જઈ ઉત્સવ કરવો છે. આ આજ્ઞાથી સર્વે સેવકો વિચારવા લાગ્યા કે, આપણે હિમાલયના ઉચ્ચ પ્રદેશમાં છીએ અને અને સમય તો નજીકમાંજ છે. તો આવા સમયમાં આપનો મનોરથ સિદ્ધ થવો અસંભવિત છે. પરંતુ હજુ તો શ્રીને શૃંગાર ધરાવી રાજભોગ સમર્પવાની તૈયારી હતી, તેવામાં કર્મચારી મનુષ્યો ત્યાં આવ્યા અને વિનંતિ કરી કે, અમારા મહારાજા સાહેબ આપની રાહ જુવે છે, તેમજ આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે તો સત્વર પધારો. આ સાંભળી દરેક સેવકો આશ્ચર્ય પામ્યા. જેથી આપે રાજાના સેવકોની કુશળતા પૂછ્યા બાદ કહ્યું કે, "તમારા રાજાને અમારા આગમનની કોણે ખબર કરી?" ત્યારે સેવકોએ કહ્યું કે "જય કૃપાનાથ, અમારા મહારાજાને ગતરાત્રિએ એક સ્વપ્ન થયું, તેમાં શ્રીનાથજીએ આજ્ઞા કરી છે, કે મારૂં બીજું પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપ આચાર્યરૂપે આ નગરથી બાર કોસ ઉપર બિરાજે છે, અને તેઓને શ્રીને અન્નકૂટ આરોગાવવો છે. જેથી સામગ્રીની તૈયારી કરો અને તુર્ત પધરાવી આવો. જેથી મહારાજા પોતે સામગ્રી સિદ્ધ કરવામાં પ્રવૃત્ત થયા છે, અને આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે.

મહારાજશ્રી સેવાથી નિવૃત્ત થઈ શ્રીને ઝાંપીજીમાં પધરાવી તે રાજાના નગરમાં પધાર્યા, અને તમામ વાર્તા નિવેદન કરી. ત્યાર બાદ દીપમાલિકા સુધીનો ઉત્સવ મોટા આનંદપૂર્વક ઉજવવામાં આવ્યો, પરંતુ કાન જગાવવાનો સમય આવતાં ખબર મળી કે, આ પહાડી પ્રદેશમાં ગાય મળી શકશે નહિ. જેથી આપે અમુક ક્રિયાનો ત્યાગ કરી વેદોક્ત પરિપાટીનો ભંગ ન થવા દેવો એવી ઇચ્છાથી અજા (બકરી)થી કાન જગાવવાની ક્રિયા કરી દીધી. આથી સાથે આવેલા પંડિતોએ વાંધો ઉઠાવ્યો કે, આપે આ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ અનુચિત કાર્ય કર્યું છે. પ્રત્યક્ષમાં તો વિદ્વાનો મૈત્રી ભાવ દર્શાવતા પરંતુ અંદરથી આપની ભુલો શોધવા મત્સરતાપૂર્વક અણુભાષ્યના અભ્યાસ નિમિત્ત સાથે વિચરવા લાગ્યા હતા. આપ તો દરેક કાર્ય સનાતન વેદમાર્ગને અનુસરીનેજ શાસ્ત્રોક્ત રીતે કરતા. પણ પંડિતો ગણગણવા લાગ્યા કે આપણે ગાયનો હક બકરીને અર્પણ કરવો એ કોઈપણ પ્રકારે ઇષ્ટ નથી, અને જ્યારે આચાર્યો આવી વર્તણુક ચલાવે ત્યારે અન્યની તો વાતજ ક્યાં રહી? આવી બાબતોને ચલાવી લેવાથી સનાતન વેદધર્મની મર્યાદાનો લોપ થઈ જશે. આવા પ્રકારનો વિવાદ ઉપસ્થિત થયો. જેથી ત્યાંજ શાસ્ત્રાર્થ માટે સભા નિમંત્રી કરી. રાજાએ પોતાના પંડિતો ઉપરાંત આસપાસના પ્રદેશોમાંથી બીજા પણ કેટલાક પંડિતોને બોલાવ્યા, ત્રણ દિવસના શાસ્ત્રાર્થ બાદ આપનું કાર્ય શાસ્ત્રાર્થસમ્મત સિદ્ધ થયું અને તમામ પંડિતોએ પ્રમાણપત્ર લખી આપ્યું. આ શાસ્ત્રાર્થમાં કેટલાંક લૌકિક પ્રમાણો પણ આપ્યાં કે, મુખ્ય પાત્રને અભાવે ઉત્તરાધિકારી પ્રતિનિધિથી લઈ શકાય છે, જેમ રાજાને અભાવે મંત્રીથી, શેઠને અભાવે વાણોતરથી, ઘોડા ગાડીને અભાવે બેલગાડીથી, દૂધને અભાવે છાશથી ઇત્યાદિ પ્રકારે કાર્ય થઈ શકે છે, તેમજ વેદમાં બકરી પવિત્ર મનાયેલ છે. સ્મૃતિકારોનું વચન છે કે, ગાયના મુખથી અપવિત્ર થયેલાં પાત્ર અજામુખથી પવિત્ર થાય છે. અર્થાત્ ગાયનું કાર્ય બકરીદ્વારા થઈ શકે છે.

ઉપરનો બનાવ બન્યા પછી પંડિતોએ નિશ્ચય કર્યો કે, જેની ઇચ્છામાત્રેજ સરસ્વતીનો સાક્ષાત નિવાસ હોય એવા વાગધીશ (વાણી—સરસ્વતીના સ્વામી) ની સાથે વિવાદ કરવો એ મિથ્યા મમત છે. આ પ્રકારે પરસ્પરમાં વિચાર કરી પોતપોતાને સ્થાનકે ચાલ્યા ગયા. ત્યારથી મત્સરના ત્યાગી પૂજ્ય બુદ્ધિથી વર્તવા લાગ્યા.

આપ અતિશય ઉદાર તથા ભોળા હૃદયના હતા, કોઈનો પણ દોષ આપના લક્ષમાં આવતો નહી. એક સમય એક માણસે આપની પાસે સમય જોઈ વિનતિ કરી કે, "કૃપાનાથ, આપનો

કારભારી વ્યવસ્થા જાળવતો નથી અને ખાઈ જાય છે." તે સાંભળી આપે આજ્ઞા કરી કે, "તું સારો કારભાર કરી શકીશ? તુરંત આગંતુક મનુષ્યે હા કહી. એટલે તેને કારભારીનો ઉપરણો ઓઢાડ્યો અને સેવકોમાં સામેલ કરી દીધો, પરંતુ પ્રથમનો કારભારી તો કાયમજ રહ્યો. કેટલોક સમય આ પ્રકારે વીતતાં કારભારીઓની સંખ્યા પણ વધી ગઈ. કારણ જે કોઈ આવીને કારભારી થવાની માગણી કરે છે તેને ના નહિ, એટલે મહાપ્રસાદના ભોગી ભેગા થાય તેમાં શું આશ્ચર્ય? કહેવત ચાલી કે 'શ્રીદ્વારકેશજીના સાગાબાર કામદાર'!!

આપ ચાર બંધુઓ હતા. એક દિવસ આપ આપની માતુશ્રીની ગોદમાંથી મસ્તક રાખી પોઢ્યા. અને માતુશ્રીના મુખારવિંદ સામે દૃષ્ટિ કરી કહ્યું કે, અમો ચારે ભાઈઓ આપની દેહાતીમાંજ લીલા વિસ્તારીશું, બન્યું પણ એમજ.

અનુકરણીય—સુપ્રસિદ્ધ '**શુદ્ધાદ્વૈત**' વિશારદ શાસ્ત્રીજી હરિકૃષ્ણ વીરજીભાઈને મુંબઈના શ્રીગૃહના શિરાધીશ્વરે પોતાના મોટા મંદિરમાં પ્રવચનાર્થે એક સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન તરીકે કાયમના નીમ્યા છે. તેઓએ સાંપ્રદાયિક અભ્યાસીઓ માટે એક વર્ગ ચલાવે છે. આ એક અનુકરણીય કાર્ય છે.

'પોલપત્રિકા' પર મુકદમો—'કેવળ ખોટા અને મલીન' આક્ષેપો કરવા માટે શ્રી મુંબઈના શ્રીલાલબાવાના મંદિરવાળા ગોસ્વામી શ્રી૦ શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજશ્રીએ (નિત્યલીલાસ્થ ગો. શ્રી રણછોડલાલજી મહારાજના આત્મજ) 'પોલપત્રિકા' પર બદનક્ષીની ફરીયાદ ફોજદારી કોર્ટમાં હાજર થઈને માંડી છે. 'પોલ' વાળા પર વારંટ નીકળી ચુક્યું છે.

શુદ્ધ કીર્તન સંગીતનો મહાન્ ગ્રન્થ.

થોડાજ સમયમાં] સંપ્રદાયમાં અપૂર્વ ગ્રન્થ [પ્રગટ થશે.

સંગીત એટલે શું?—તે સમજાવવા માટેની સવિસ્તર સમજ આપી છે. ૧ સંગીત વિદ્યા અને કળા, ૨ રાગ એટલે શું? ૩ રાગોની સંખ્યા કેટલી અને તે વિષે જુદા જુદા મત, ૪ રાગોનું કુટુંબ (રાગિણી, રાગપુત્ર, રાગપુત્ર, રાગપુત્રવધૂ વગેરે) ૫ થાટ, ૬ નાદ અને શ્રુતિ, ૭ સ્વર અને તેના પ્રકારો, ૮ આરોહ-અવરોહ, ૯ સ્વર સાધક, ૧૦ વાદી, સંવાદી, અનુવાદી, વિવાદી સ્વરોનું બંધારણ, ૧૧ અંશ, ગ્રહન્યાસ તથા જાતિ સ્વરોનું બંધારણ, ૧૨ કીર્તનોમાં વપરાયલા સંગીત શબ્દોના અર્થ, ૧૩ સ્થાયી, અંતરા, સંચારી અને આભોગ, ૧૪ જનાના તથા મર્દાના સ્વરોનું બંધારણ, ૧૫ કાળ અને માત્રા, ૧૬ તાલ, અંગ પ્રત્યંગ-જાતિ, ૧૭ કીર્તનોપયોગી તાલ, તેની માત્રા કોષ્ટકોના બોધ સાથે, ૧૮ ધ્રુપદ-ધમાર, ૧૯ કીર્તનોપયોગી મુખ્ય વાદ્યો વિષે માહીતી. ૨૦ કીર્તન સંગીત ગાયક, ૨૧ કીર્તન સંગીતના વિદ્યાર્થીઓ પ્રત્યે, ૨૨ ગ્રંથોમાં વાપરેલી નીશાનીઓનું સ્પષ્ટીકરણ.

મુખ્ય રાગો—ભૈરવ, બીલાવલ, (અલૈયા તથા નટ) આસાવરી, પૂર્વી, ખમાજ, કાફી, માલકોષ, સારંગ, ઇમન, બીહાગ. વગેરે રાગોની સમજ તથા કીર્તનો **નોટેશન સાથે છે.**
કીંમત હવે પછી.

આવો ગ્રન્થ સંપ્રદાયમાં તેમજ ગુજરાતી સાહિત્યમાં પહેલોજ છે. આ પુસ્તક પરથી કીર્તન સંગીત શીખવાનો માર્ગ સરલમાં સરલ બની જશે. વધારે શું લખીએ. જલદી નામ નોંધાવો. લેખક તથા પ્રકાશકઃ-કીર્તનીયા ચંપકલાલ છબીલદાસ, ઠે. શ્રી દ્વારકાનાથજીનું મંદિર, રાયપુર, અમદાવાદ. તથા શુદ્ધાદ્વૈત કાર્યાલય અને મુખ્યાજી લાલાજી ઠે. શ્રી ગોકુલનાથજીનું મંદિર, પડી પોળ, ધનાસુથારની પોળ, અમદાવાદ અને કીર્તનીયા છબીલદાસજી ઠે. શ્રી દ્વારકાનાથજીનું મંદિર, પાટણ ઉત્તર ગુજરાત; એ સ્થળે નામો નોંધાવી શકાશે.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीमद्वल्लभाचार्यात्मजश्रीगोविन्दलालमहोदयपञ्चमवर्षवर्धन-

महोत्सवाशीर्वादसूक्तिः ।

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ।

श्रीगोवर्धनधारणोद्यतकरश्रीगोकुलाधीश्वर-
श्रीमद्गोकुलचन्द्रमश्चरणयोरासक्तचित्ताश्चलः ॥
श्रीमद्देवकनन्दनात्मजसुतश्रीवल्लभार्यात्मज-
श्रीगोविन्दहरेरयं विजयतां वर्षोत्सवः पञ्चमः ॥१॥
श्रीकृष्णो गिरिराजपूजनविधौ नन्दाङ्कमध्यस्थितः ।
श्रीमद्वल्लभवर्यसन्निधिगतः श्रीविट्ठलेशो यथा ॥
मार्कण्डेयसमर्चने प्रथमतः सक्तः सदा पितु-
र्मार्कण्डेयसमायुरस्तु भगवान् गोविन्दलालः प्रभुः ॥२॥
एकां भाव्यनुमाय दास्यति निजां दृष्टिं तथा प्रापयन् ।
कृत्वातिक्रमणं चतुर्थशरदः प्राप्तः स्वयं पञ्चमम् ॥
धन्यं वत्सरमित्यहो स्वचरितैर्वेदार्थदः सेवकान् ।
श्रीगोविन्दहरिः सपितृचरणो जीव्याच्चिरं सानुजः ॥३॥
विभाश्चामृतरामयाशिकदरीत्वौपाधिकाया ददु-
र्देवा इन्द्रपुरोगमाश्च सुमनोभिर्वर्षयन्तो भुवम् ॥
सद्भाग्याः स्वमनोभिरर्चनपरा आशीर्गिरं वैष्णवा
जीव्याद्वैष्णववंशवारकमणिर्गोविन्दलालश्चिरम् ॥४॥
पूर्णा वेदसमा इति स्वयपुषो वेदान्तिगत्वं यथा ।
भक्तेः पञ्चमतां प्रदर्शयति यद् वर्षं शुभं पञ्चमम् ॥
मार्कण्डेयसमानबुद्धिरिति तं संपूज्य भूपादयं ।
श्रीमद्वल्लभवंशमौक्तिकमणिर्गोविन्दलालः प्रभुः ॥५॥

उपजातिवृत्तम् ।

नरोत्तमेन स्वगृहाख्यपुष्पैः मगनर पत्ने प्रथितार्चितेयम् ।
गोविन्दलालस्य हरेः सुखाय भूयात् शुभाशीर्वचनाक्षमाला ॥६॥

शास्त्रिमोतीरामतनुजन्मनो नरोत्तमस्य भट्टस्य प्रस्तावः

ચર્ચાપત્ર.

ફાતડાશાહી કોની ?

'શુદ્ધાદ્વૈત' ના તંત્રીજી, 'ગુજરાતી' પત્રના તા. ૫-૧૧-૩૩ ના અંકમાં 'વાઘણી વૈષ્ણવ' ના બુરખા નીચે મારા જેવાજ કોઇ હડહડતા માયાવાદી શાંકરે જે નીચ હુમલો કર્યો છે, તેનો જવાબ આપવાની જરૂર છે. એ કહેવાતા 'વાઘણી વૈષ્ણવ' શાંકરે પોતે કાચના બંગલાગાં બેસીને બીજાના મકાન પર પત્થરા ફેંકવા માંડયા છે, એજ તેની પોતાની 'વાયડાઇ ફાતડાઇ કે હીજડાઇ ભરેલી વર્તણું' નહિ તો બીજું શું છે ?

હું પોતે શાંકર છું. પણ શ્રીશંકરાચાર્યજીને 'જગદ્‌ગુરુ' માનવા કે મનાવવા તૈયાર નથી. શ્રીશંકરાચાર્ય તરફ મને થોડો પૂજ્યભાવ નથી; પણ જ્યારે કોઇ શાંકર શ્રીવલ્લભ સંપ્રદાય ઉપર ખોટા હુમલો કરે અને પોતાના પગ નીચેના રેલાને જુએ નહિ તે હું સહી નજ શકું. જગદ્‌ગુરુ તો માત્ર એક શ્રીકૃષ્ણજ છે કે, જેમની ગીતાનો તરજુમો દુનીયાભરની ભાષામાં થયો છે, અને જગત્‌ના વિદ્વાનો અને તત્ત્વજ્ઞાનીઓ તે જ્ઞાનામૃત પીએ છે. શ્રીશંકરાચાર્ય શેના જગદ્‌ગુરુ ગણાય ? અત્યારે દુનિયાની મોટી વસ્તી બૌદ્ધ ધર્મને માને છે, શું તેઓ શંકરાચાર્યને ગુરુ માનશે ? ચીન અને જપાનની પેગુ અગજની વસ્તી બૌદ્ધ છે. વળી શ્રીશંકરાચાર્ય પોતે ચુસ્ત શ્રીકૃષ્ણભક્ત હતા, પણ તેમણે જે માયાવાદ નીપજાવી કાઢયો છે તે તો બૌદ્ધ ધર્મની પોલીશ કરેલી નવી આવૃત્તિજ છે. ડા. થીબો જેવા પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનો અને ડા. સર ભાંડારકર, ડા. બેલ્વલકર અને શ્રીયુત નર્મદાશંકર મહેતા જેવા વિદ્વાનો પણ તે વાત સ્વીકારે છે. 'ગુજરાતી'ના તંત્રી મી. નટવરલાલ, કે જેમનું સંસ્કૃતજ્ઞાન નિશાળમાંથી આગળનું ભાગ્યેજ છે, તેમના અભિપ્રાયો કશા ય કામના નથી. બૌદ્ધ ધર્મ હિન્દમાંથી ગયો, તે કુમારિલ ભટ્ટનોજ પ્રતાપ, અલબત્ત, શ્રીશંકરાચાર્ય તેમાં કંઇક સહાયભૂત બન્યા હશે, તેઓ પણ આફ્રિકા, ઇંગ્લંડ કે અમેરિકા કે મક્કામદીના ગયા નથી, તેમ તેમના કોઈ અત્યાર સુધીના પીઠાધિપતિઓ પણ ત્યાં ગયા નથી, તો તેમને જગદ્‌ગુરુ મનાવવા એ શું ખુલ્લી છેતરપીંડી નથી ? અલબત્ત, શં. માધવતીર્થ સ્વામી ઇંગ્લંડ જવાના હતા, કેમકે તેઓએ પરદેશગમનની છૂટ આપી હતી તેથી અનુમાન થાય કે બીજા દેશોમાં પણ જઇને દિગ્વિજય કરી લાવે ! પણ તેમના શિષ્ય તો પરદેશગમનથી તદ્દન વિરુદ્ધજ છે. જો આવા એકદેશી શંકરાચાર્ય જગદ્‌ગુરુ કહેવાય તો તેમના પછીના શ્રીરામાનુજાચાર્ય આદિ જગદ્‌ગુરુ કેમ ન કહેવાય ? શ્રીરામાનુજાચાર્ય આદિના સંપ્રદાયમાં પોતાના સ્થાપક આચાર્યશ્રીઓને જગદ્‌ગુરુ અસલથીજ કહે છે, અને તે પણ રા. નટવરલાલ દેસાઇ કરતાં સોગણી વિદ્વત્તા ધરાવનારા મહાન્ પંડિતો કહે છે. રા. નટવરલાલ દેસાઈ એમની વર્તણુંકને 'વાયડાઈ કે ફાતડાઇ' ભરેલી ગણવા તૈયાર છે ? અત્યારે પ્રતિવાદિભયંકરપીઠના શ્રીરામાનુજાચાર્ય પોતાને જગદ્‌ગુરુ કહે છે અને કાશીના મહાન્ પંડિતો પણ એ વાત સ્વીકારે છે તો શું તે બધા વાયડા કે ફાતડા કે ?

શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયના સ્થાપક શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી આજે ચારસો વર્ષથી જગદ્‌ગુરુ તરીકે સંબોધાય છે, તેમાં વાયડાઇ કે ફાતડાઈની ગંધ વાયડા કે ફાતડા વિના બીજા કોઇને આવી જાણી નથી, કાશીના પંડિતો સ્વ. સદ્‌ગત મહામહોપાધ્યાય લક્ષ્મણશાસ્ત્રી અને સર્વ આચાર્યો અને વિદ્વાનોની બ્રાહ્મણ મહાસભાએ પણ એ વાત સ્વીકારી હતી, તો હવે રા. નટવરલાલની નજરે એકલા વૈષ્ણવોજ નહિ, પણ હિન્દના બધા આચાર્યો અને વિદ્વાનો વાયડા અને ફાતડા ગણાવા જોઇએ.

૧. વળી શાસ્ત્રવિરુદ્ધ વિલાયતગમનની તરફેણ કરનારા અને કાશીના મહાન્ વિદ્વાનોએ જેમનો સખ્ત વિરોધ કર્યો તે શં. માધવતીર્થ 'જગદ્‌ગુરુ' કહેવાય તોતે ફાતડાઇ કે વાયડાઈ નહિ.

૨. એક અમેરીકન મડમને હિન્દુ બનાવીને, તેનું શર્મિષ્ઠા નામ રાખીને, ઈન્દોરનરેશની કામવાસનાની તૃપ્તિના સહાયક બનેલા કરવીરપીઠાધીશ્વરને શાંકર સુધરેલાઓ જગદ્‌ગુરુ કહે તો કાંઇ હરકત નહિ.

૩. એક સાધારણ ગૃહસ્થ બ્રાહ્મણને (નરસિંહનામક). 'આચાર્ય' 'બ્રહ્મનિષ્ઠ' 'પરમાત્મા' વગેરેથી સંબોધી શકાય. તેમના પુત્ર 'ભગવાન્' એ નામથી ઓળખાય. તેમના શિષ્ય એક ઢુંઢીયા જૈન 'વિશ્વબંધુ' નામથી ઓળખાય તો એ બધુ શાંકર માયાવાદી રા. નટવરલાલ દેસાઇને ગમે। એ બધાને તો તેઓ સરળતાં અને પુરુષાતન સમજતા હશે ?

૪. શ્રીશંકરાચાર્યજીના અનેક સંસ્કૃત ગ્રંથોમાંના એક પણ ગ્રન્થની એક સંસ્કૃત લીટીનો પણ અર્થ ન સમજી શકનારને સેંકડો વાર 'જગદ્ગુરુ' 'શંકરાચાર્ય' તરીકે પોકારનાર રા. નટવરલાલ દેસાઇ પોતે બાયડાઈ કે કાતડાઇ ભરેલી અંધશ્રદ્ધાથી દૂર રહ્યા છે એ કોઇ સાબીત કરવા તૈયાર છે ?

હાલ આટલું બસ છે. ફરી કોઇવાર બહુચરામાતામાં શ્રદ્ધા રાખનારા રા. નટવરલાલ દેસાઇની નજરે કાતડાઇ કે બાયડાઇનાં પડળો ચડશે તો ઓપરેશન કરવા તૈયાર છું એક શોકર.

श्रीनाथद्वाराप्रकरण.

बढ़ते बढ़ते बढ़ गये खरमंडा और खीर; घटते घटते घट गये करुवा अरु कोपीन.

ઉપરનો દૂહો અતિપ્રાચીન છે તેનો સંબંધ શ્રીનાથજી વિષે છે. શ્રીગિરિરાજની ગુફામાં બિરાજતા શ્રીનાથજીબાવા માત્ર ગાયનું દૂધ આરોગતા હતા, તે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના વાત્સલ્યભાવથી વધતાં વધતાં ખરમંડા (એક સામગ્રી છે) અને ખીર, મતલબ કે અનેક સામગ્રી આરોગતા થઈ ગયા પણ પાછો એવો સમય આવશે કે, એ બધા ભોગો "લૌકિક બટ જાયગી" વાળા વાર્તા મુજબ સમેટાઇને કરવો (એક તામ્રપાત્ર) અને કોપીનજ રહેશે. દૂહાના અર્ધા ભાગનો અનુભવ લીધો અને અર્ધા ભાગના અનુભવના ભણકારા વાગી રહ્યા છે. એક અર્ધદગ્ધ દઢ શ્રીવલ્લભીય વૈષ્ણવને ઉપરની મહાલીલાવિચિત્રતા કાંઇ ડગુમગુ કરી શકવાની નથી. પણ અનાજ સાથે ખેતરમાં વાવેલા કાંકરા તો માટીમાં મળી જશે અને અનાજ તો પાછું ફૂલીફાલી લચી રહેશે !

શ્રીનાથદ્વારાની કમીટીની બહારની ધમાલ પાછળના ગુપ્ત ભેદો પર થોડોક પ્રકાશ ગતાંકમાં ફેંક્યો હતો અને આ અંકમાં થોડો વધુ ઉજાસ નાખવો આવશ્યક છે. ચાલો એટલે એક ધ્યાનથી નિહાળો.

વિદ્યમાન મહારાણા—ધર્મધુરંધર મહારાણાશ્રી ફતેહસિંહજીના પરલોકવાસ પછી વિદ્યમાન મહારાણા સર ભૂપાલસિંહજી સત્તા પર આવ્યા. મર્હુમ મહારાણાએ 'ઋષભદેવજી' એ નામથી મશહૂર થયલા કેસરીયાજીને પંદર હજાર રૂપીઆનો એક મુકુટ ભેટ કર્યો હતો, ત્યારે વિદ્યમાન મહારાણાજીએ કેસરીયાજીનો ભંડાર વધારે સાચવવા માટે રાજની તીજોરીમાં રાખ્યો છે. કેસરીયાજીના મંદિર નીચે સાત કોઠા છે, તે કદી ઉઘડયા ન હતા, તેમાંથી ત્રણ કે ચાર કોઠા ખોલીને તેમાંનું લાખોનું ઝવેરાત તથા સોનું મહારાણાજીએ સ્વાધીન કર્યું છે અને રાજતિજોરીમાં સુરક્ષિત રાખ્યું છે, અને જૈન ભાઇઓ અત્યારે પોકાર કરતા બેસી રહ્યા છે. બીજા કોઠાઓ ઘોર અંધારાને લીધે કે કોઈ બીજા કારણથી હજુ ખોલ્યા નથી. મેવાડના પ્રસિદ્ધ ભંડારની એ હાલત થયા પછી એકલીંગજી અને શ્રીનાથદ્વારાના ગુપ્ત ભંડારો પણ ઉઘાડા થશે એવી લોકવાયકા આજે મહીનાઓથી ચાલુ હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરના સાર્વભૌમ સત્તા (ના. વાઈસરોય) સાથેના સીધા સંબંધને લીધે એ અફવામાં કોઇ વજુદ માનતું નહિ.

કારમા યુગના ભણકારા—પણ શ્રીનાથજીની ઇચ્છાજ ઓર હતી. સાડા ચારસો વર્ષની અવધિ પૂરી થતાં વ્રજમાં પધારવું હતું [ગયા અંકમાં શ્રીનાથજી વ્રજમાં પધાર્યાની વાત જે લખી છે તે પ્રાચીન ગ્રંથના આધારે લખી છે. એ વ્રજભાષાનો ગ્રંથ અતિપ્રાચીન છે. એ થોડાજ સમયમાં પ્રકટ થશે. એમાંનું ભવિષ્ય હજુ સુધી બરોબર ખરૂં પડયું છે. હવે પછી તેમજ બનવાનું છે એવો વિશ્વાસ છે. ગયા અંકમાં લખેલી વાત ઘરની જોડી કાઢી નથી. વાંચકોએ અધીરા બનવાની જરૂર નથી. એક એક અક્ષર પૂરાવાવાળો લખાય છે] તેથી આ ખેલ કર્યો. પ્રસંગજ એવો ક્ષોભજનક પ્રાપ્ત થયો કે જગતને આંજી નાખે તેવો વૈભવ એકદમ સમેટાઈ જાય અને "લૌકિક બટ જાયગી" નો જ્વલંત ઇતિહાસ અનુભવી શકાય. શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરનું અચાનક નિત્યલીલામાં પ્રવેશવું, અને હાલ તુરત શ્રીનાથદ્વારાનું નરેશવિહોણાપણું તથા શ્રીતિલકાયિતવિહોણાપણું થવું, આ બધાં શું ઉન્નતિના ચિન્હ છે ? ના, કદી નહિ, પણ જે વાત બનવાની છે તેનાજ ભણકારા છે.

વ્રજવાસીઓને અન્યાય—ઉદયપુર નરેશે જે મોહતાજર ધનાઢ્ય વૈષ્ણવોની વ્યવસ્થાપક સમિતિ નીમી છે; તેમાં પોતાનો પ્રતિનિધિ નીમવાને શ્રીનાથદ્વારાના વ્રજવાસીઓએ લડત પણ ચલાવી છે. પણ મૂડીવાદના મધ્યાહ્નકાળમાં ગરીબોને કોણ પૂછે છે ? જે વ્રજવાસીઓના પૂર્વજોએ ઔરંગઝેબના ભયાનક હુમલામાંથી શ્રીનાથજી અને મહાન્ ધનભંડારનું રક્ષણ કર્યું, જેમણે શ્રીનાથજીની સાથે રહીને પોતાના પૂર્વજોના વતનને,

ઘરબારને, ચાલગત્તાને, અગ્રુણીની આંખે તિલાંજલી આપી દીધી, વિધર્મીઓ અને વિદેશીઓના વિકરાલ હુમલારૂપ દાવાનલમાં જેમણે પોતાના ધર્મ, જાતિ, શરીર આદિનો ભોગ આપી દીધો, ક્રૂર રાજા હોલ્કરના બબ્બે હુમલા વખતે, શ્રીનાથદ્વારામાં પણ જેમના પૂર્વજોએ પોતાના મોંઘેરા મસ્તકોની પરવા કરી નહિ, જે વ્રજવાસીઓ અત્યારે પણ શ્રીનાથજી માટે પોતાના પ્રાણ નોછાવર કરવા માટે હરહંમેશાં તૈયાર છે, તે વ્રજવાસીઓ ગરીબ હોવાના કારણે કમીટીમાં સ્થાન મેળવે નહિ; એ પણ આ કલિકાલનું કૌતુકજ છે. જેમના પૂર્વજોએ મુઠ્ઠીભર ઝવેરાત કે સોનું ભેટ કરીને ભક્તિભાવ બતાવ્યો હશે એ આ સ્થાનના સત્તાધારી બને અને જેમણે પોતાનું સર્વસ્વ હોમ્યું છે તેઓ બહાર ફરતા ફરે એ પણ એક લીલાવૈચિત્ર્યજ છે.

ભંડારમાં ધડાકા—આ એક અજાયબી ભરેલી વાર્તા બહાર આવી છે. તેના ઊંડાણમાં જરા ઉતરીશું. દરેક રાજ્યમાં ખાનગી ભંડાર તો હોય છે જ. અરે, એક ગૃહસ્થ પણ આપત્તિકાલને માટે અતિગુપ્ત રીતે કંઇને કાંઇ છુપાવી રાખે છે. રાજ્યોમાં તો આ ભંડારો અતિવિશાલ હોય છે. એ ભંડારોની નોંધ રહેતી નથી. શ્રીનાથજી એટલે ભારતવર્ષના રાજપૂતાના તેમજ અન્ય મહારાજ્યોના એક કરોડ માનવજનોના હૃદયનાથ, એટલે થારસો વર્ષથી ઝવેરાત અને સોના ચાંદીના તો ઢગલા થયા હશે. દર વર્ષે બેત્રણ લાખ તોલા ચાંદીના વાસણો ભેટ આવતાં હતાં. તેજ મુજબ સોનાનાં અનેક પાત્રો ખિલૌનાં આભૂષણો વગેરે. તે ઉપરાંત શ્રીતિલકાયિત શ્રીઓની પોતાની ભેટના પણ લાખો રૂપીયા તથા ઝવેરાત અને સોનું ચાંદી આવ્યા હશે. આ બધાનો એક ગુપ્ત ભંડાર શ્રીનાથદ્વારામાં છે એવી વાત આજે વર્ષોથી સંભળાય છે. તેમાં શું છે તેની નોંધ રખાતી નથી. કહે છે કે તેમાં અબજોની સંપત્તિ છે. ખરૂં ખોટું પ્રભુ જાણે! દરેક રાજ્ય ઉપરથી દેવું બતાવે, પણ અંદરથી આમ તર હોય છે એમ મુત્સદીઓ કહે છે. આ ભંડારમાં ધડાકા થવા એ કાંઈ શુભ ચિન્હ નથી. શકુનશાસ્ત્રો કહે છે એ ધડાકા લક્ષ્મીજીના છે અને તે બહાર નીકળવાને જોર કરી રહ્યાં છે. ખચિતજ, લાગે છે કે, વર્ષોથી અકળાયલાં લક્ષ્મીજી હવે વીસમીસદીના વાયરા ખાવા બહાર નીકળી પડે પણ ખરાં! પણ હાલ તુરત તો બહાદુર વ્રજવાસીઓએ એ લક્ષ્મીજીને બહાર કાઢવાના લક્ષ્મીદાસોના પ્રયાસો સામે ભયરૂપ કિલ્લો ઉભો કર્યો છે! વ્રજવાસીઓના ડરથી એ ગુપ્ત ભંડારમાંની સંપત્તિની નોંધ લેવાના ધનાઢ્યોના તથા રા. પટવારીજીના ઇરાદા હાલ તુરત સફળ થયા નથી, અને હવે હોળીના દિવસોમાં ફતેહમંદ થશે કે કેમ તે જોવાનું છે. આ ભંડારોને લઇને તો આ બધી દોડધામ થઈ રહી છે. જો શ્રીજીબાવા કોઇ શ્રીગિરિરાજકન્દરામાં બિરાજીને શ્રીપુલિન્દીજીના ફલાદિ આરોગી રહ્યા હોત તો આ બધી દોડધામ હોતજ નહિ. કોઇને એ નિકુંજનાયકના સ્વરૂપની પડી નથી. એક તરફ એ સુકુમાર સ્વરૂપ અને એક તરફ અઢળક ઝવેરાત; સોના ચાંદીના ઢગલા પડયા હોય અને પસંદગી પૂછાય તો ધનાઢ્યોના ડોળા ધનભંડાર ભણી નાચતા લાગશે, એ નિઃસંશય વાત છે.

સંપ્રદાયને માટે સેંકડો રૂપીઆનો ખર્ચ કરીને, આપભોગ આપીને, કમીટી શ્રીનાથદ્વારા ગઈ અને ઉત્સાહથી કાર્ય બજાવ્યાના રંગીન હેવાલો રા. પટવારીજીએ છાપાંઓમાં છપાવ્યા છે. આથી કાઇ અંજાઇ ન જાય તેની ચેતવણી આપવાની છે. બે ચાર નોકરોને દૂર કરવાની વાત તથા ઝાપડીઆઓની નવી વ્યવસ્થાથી હવે નવો વર્ગ સંતોષાશે નહિ. ઝાપડીઆઓને નિરર્ગલ દ્રવ્ય આપીને ગરીબ તથા મધ્યમ વર્ગ પર ક્રૂર પ્રહાર કરાવવાનું પુણ્ય ધનાઢ્યોનેજ મળતું હતું, તે બંધ થયે! પણ મહાપ્રસાદના બજારેની શી વ્યવસ્થા રા. પટવારીજીએ કરી? એ મહાપ્રસાદ વિદ્યાર્થીઓ તથા અન્ય વ્રજવાસીઓને તથા વૈષ્ણવોને આપીને સાંપ્રદાયિક નવી વ્યવસ્થાની યોજના કેમ કરી નથી? લાખો રૂપીઆ નેક ભોગમાં ખર્ચાય છે તે મહાપ્રસાદ સમાજોપકારક કેમ બને? એ વિચાર કેમ થયો નથી?

વળી કહેવાય છે કે કમીટીને સ્વતંત્ર સત્તા મળી નથી. કમીટી જે બંધારણ પસાર કરે, તેને ઉદયપુરનરેશ જો સંમતિ આપે તો તેનો અમલ થાય. આ તો ધારાસભા અને વાઇસરોયનો વ્યવહાર થયો. ધારાસભાએ પસાર કરેલા ઠરાવને વાઇસરોય એકજ કલમને ગોદે ઉડાવી શકે છે. શ્રીનાથજીના ધનભંડારમાંથી એક પ્રબળ શુદ્ધાદ્વૈત યુનીવર્સિટી (વિશ્વવિદ્યાલય) બને, પણ તે આ ધનાઢ્યો કરી શકશે? ઉદયપુર નરેશ તે કરવા દેશે? કેસરીયાજીની પેઠે ધનભંડાર વધુ રક્ષણ મેળવવા માટે રાજ્યની તિજોરીમાં તો જઇને નહિ પડે? શેઠ લાલજી નારણજી આ કાર્યના સૂત્રધાર છે અને તેઓ ઉદયપુર મહારાજના ખાસ કૃપાપાત્ર નિખાલસ સદ્‌ગૃહસ્થ છે. તેઓ સંપ્રદાયહિત વિચારશે કે રાજહિત? ઉદયપુર

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

વાર્ષિક મહોત્સવ—અત્રેની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્ તરફથી 'શ્રીઅષ્ટાક્ષર જપયજ્ઞ પૂર્ણાહુતિ મહોત્સવ' નિમિત્તે ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવોની એક જાહેર સભા રવિવાર તા. ૫-૧૧-૩૩ ના દિને સાંજના ૭ કલાકે અત્રેની શ્રીલાલબાવાની હવેલીમાં શ્રીમદ્ ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપદે મળી હતી. નિયત સમયે સભાનું કામકાજ સંસ્થાના માનદ મંત્રી શ્રીયુત દ્વારકાદાસ દાણીએ સભા બોલાવવાની નિવેદન પત્રિકા વાંચી શરૂ કર્યું હતું તે પછી શ્રીયુત ગિ. જ. શાહે શ્રીભગવન્નામમાહાત્મ્ય પ્રતિપાદન કરતું એક સુન્દર કાવ્ય સુસ્વરે ગાયું હતું. ત્યારપછી શ્રીમાન્ સભાપતિ મહોદય ઉપરાંત કચ્છ માંડવીવાળા ગો. શ્રી દ્વારકેશલાલજી ગો. શ્રીવ્રજનાથજી લાલજી અને ચિ. ગો. શ્રીમુરલીધરલાલજી બાવા સાહેબ વિગેરેને શ્રીયુત છોટાલાલ કાલાભાઈ જગીરદારે ભગવત્પ્રસાદી પુષ્પમાળા ધરાવી હતી. ત્યારબાદ શ્રીયુત ગિરિધરલાલ શાહે વિવેચન કરતાં જણાવ્યું હતું. વૈષ્ણવ બન્ધુઓ અને બહેનો! આપ સૌ જાણો છો કે લક્ષાવધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળી મુંબઈ નગરીમાં જો ક્યાંય પણ સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચારાર્થે કંઈ પણ પ્રવૃત્તિ થતી હોય તો અત્રેનું મ્હોટું મન્દિર અને શ્રીલાલબાવાનું મન્દિરજ છે. મોટા મન્દિરમાં તથા અત્રે અનેક સમયે સામાન્ય અને જાહેર સભાઓ નૈમિત્તિક અને પ્રાસંગિક પ્રવચનો તથા અન્યાન્ય સમયોચિત કાર્ય યોગ્ય રીતે થયું છે, હજુ પણ થાય છે અને ભવિષ્યમાં પણ ચાલુ રહેશે. યદ્યપિ મારે આપ સર્વને નમ્ર નિવેદન કરવાનું એ છે કે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લઈ આજ કેટલાક માસથી અત્રેની સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચાર પરત્વે સભા પ્રવચનાદિની પ્રવૃત્તિ બંધ રહી હતી તે આજથી પુનઃ શરૂ થાય છે અને હવે પછી કાયમ શરૂ રહેશે. એમ આપણે સૌ ઈચ્છીએ. શ્રીમાન્ સભાપતિ મહોદયનો ઉત્સાહ અને મહત્વાકાંક્ષા અભૂતપૂર્વ પ્રશંસનીય છે. જે આપશ્રીએ આપણને પોતાની દશ વર્ષ લગભગની પ્રવૃત્તિથી દેખાડી આપ્યું છે. મારી જેવાને સાંપ્રદાયિક કાર્યમાં ઉત્કર્ષ અને ઉત્તરોત્તર મહત્વાકાંક્ષા જે આજે જણાય છે તે આપશ્રીનેજ આભારી છે એમ જો કહું તો લેશપણ ખોટું કે અતિશયોક્તિ ભર્યું નથી. જયી આઠ વર્ષ પૂર્વે એટલે સન ૧૯૨૨ માં હું આપશ્રીના પરિચયમાં આવ્યો અને ત્યારપછી આપના સભાપતિત્વે ચાલતી વૈષ્ણવ છાત્ર પરિષદની સાપ્તાહિક સભાદ્વારા જે કંઈ સંપાદન કરી શક્યો તેનું ફળ આજે આ સંસ્થા અને એવી અનેક સ્થળે અનેક સંસ્થાઓ તથા ઉત્સાહી કાર્યકર્તાઓની સેવા ભાવના મારી નજરે જણાય છે.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્ અને તેની યોજના—સ્થાનીય શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્‌ને સ્થપાયા આજે નવ માસ પૂરા થાય છે. ગયા વર્ષના માઘ કૃષ્ણ ૨ ને રવિવાર તા. ૧૨-૨-૩૩ ના દિને સ્થાપના થઈ તેના શુદ્ધ ઉદ્દેશ અને શુભ નિયમાનુસાર અદ્યાપિ પર્યન્ત સંસ્થાનું કાર્ય અબાધિત રીતે ભગવત્કૃપાથી ચાલ્યું છે. સંસ્થાનું મુખ્ય ધ્યેય શ્રીમદ્વલ્લભાધીશના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાન્તોનો વૈષ્ણવી જનતામાં સમયોચિત પ્રચાર કરવો એજ છે તેને માટે સંસ્થા દ્વારા સંસ્થાના કાર્યકર્તાઓ અને સભાસદો તન, મન, અને ધનથી યથા શક્ય સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આજ પર્યંત આ સંસ્થા દ્વારા જે કંઈ કાર્ય થયું છે તે નંદનંદન શ્રીબાલકૃષ્ણ પ્રભુ તથા શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરની કૃપા અને પૂ. પા. ગો. બાલકોના શુભાશીર્વાદને આભારી છે. સંસ્થા પ્રત્યે પૂ. પા. ગો. બાલકો, સામ્પ્રદાયિક સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાન્તાનુરાગી સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવોની અત્યંત સદ્‌ભાવણી છે એમ હું સંસ્થા પ્રત્યે દરેક મહાનુભાવોનું સદ્‌ભાવ ભર્યું વર્તન જોઈ કહી શકું છું. અત્રેની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્ તે માત્ર અમુક વ્યક્તિ કે કાર્યકર્તાઓની સંસ્થા નથી. પરંતુ વિશાલ દૃષ્ટિએ આખા વૈષ્ણવ સમાજની સંસ્થા છે. તેથી તે દ્વારા જે કંઈ કાર્ય કરવામાં આવે તે સમયોચિત અને શ્રીવલ્લભકુલ તથા માનનીય વિદ્વાનોની સલાહ અને સહકારથી થાય એ ઈષ્ટ હોવાથી તથા સંપ્રદાયનું રહસ્ય જાણવું એ સામાન્ય વાત નહિ હોવાથી સંપ્રદાયનું ગૂઢ રહસ્ય સમજવા અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાંત વિરૂદ્ધ કંઈ પણ કાર્ય ન થાય તે લક્ષ્યમાં રાખવા દરેક સંસ્થાને સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતમર્મજ્ઞ મહાનુભાવની સલાહ અને સહકારની ખાસ આવશ્યકતા છે. આ સંસ્થાને તેવા મહાનુભાવોની સૂચનાનુસાર આગળ ધપાવી રહ્યા છીએ.



કપડવંજના ભાવપૂર્ણ સ્મરણો ફરી અનુભવાવતું ચિત્ર.



કપડવંજના ભાવપૂર્ણ સ્મરણો પ્રત્યક્ષ કરાવતું ચિત્ર.

શ્રીઅષ્ટાક્ષર મહામંત્ર જપયજ્ઞની યોજના—સ્થાનીય શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદે ગત ચૈત્ર માસમાં કંઈક પ્રવૃત્તિ કરવી એ નિશ્ચય કર્યો પરંતુ મુંબઈ જેવા પ્રવૃત્તિવાળા શહેરમાં દરેક પ્રવૃત્તિ અશક્ય હોવાથી અને સંસ્થા પાસે કંઈ પણ સ્થાયી ફંડ કે અન્ય કોઇ પણ પ્રકારની આવકનું સાધન નહિ હોવાથી કંઈક સાર્વજનિક પ્રવૃત્તિ થાય એવા શુભ હેતુથી પોતાના સદ્ વિચારો પૂ. ગો. બાલકો તથા કેટલાક સંસ્થાના શુભેચ્છકો પાસે રજુ કરતાં દરેક પોતાની સહૃદયતાથી દરેક જુદી જુદી યોજનાઓ વ્યક્ત કરી તેમાં કચ્છ માંડવી વાળા ગો. શ્રી. ૧ શ્રીદ્વારકેશલાલજી મહોદય અને શ્રીયુત ભગીરથે દર્શાવેલ શ્રીઅષ્ટાક્ષર જપ યજ્ઞ કરવાની સૂચના વાસ્તવિક અને સર્વોત્તમ જણાતાં ૧૯૮૬ ના આષાઢી પૂર્ણિમાથી ૧૯૮૭ ના કાર્તિકી પૂર્ણિમા પર્યન્ત શ્રીઅષ્ટાક્ષર મહામંત્રનો બને ત્યાંસુધી વિશેષ પ્રમાણમાં શુદ્ધતાથી જપ કરવો અને કરાવવો એવા શુભ હેતુથી તેના નિયમો અને ઉદ્દેશ દર્શાવતી બે હજાર હસ્તપત્રિકા છપાવી ભારતવર્ષના જુદાજુદા વિભાગના ન્હાના મ્હોટા ૮૦ થી ૧૦૦ લગભગ ગામોમાં વહેંચી તથા મોકલાવી. તે સિવાય સ્થાનિક સામયિકો અને સાંપ્રદાયિક માસિકોમાં પ્રકાશનાર્થે મોકલાવી તેમાં અમેના ગુજરાતી (સાપ્તાહિક) અને સંપ્રદાયના શુદ્ધાદ્વૈત (માસિક) મજકૂર પત્રિકા અક્ષરશઃ પ્રકટ કરી સંસ્થાની પ્રવૃત્તિને વધાવી લીધી હતી હજારો વૈષ્ણવો ઉપરાંત અન્ય ધર્માનુરાગી બાંધવોએ અમારી યોજનામાં પોતાનો ફાળો આપવા અમને અત્રેથી મૌખિક અને બહાર ગામથી અસંખ્ય પત્રોદ્વારા ઉત્સાહ મળ્યો તેમાંયે વઢવાણની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા, ટંકારાની શ્રી વૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભા અને ગોઘાગામ બંદરની શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ વર્ધિની સભાના કાર્યકરોએ વિશેષ સહકાર આપી અમારી યોજનાનો વિપુલ પ્રમાણમાં અમલ કર્યો છે. તે સિવાય અમારા પરિચિતોમાં શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવો સિવાય શંકર, રામાનુજ, માધ્વ, નિમ્બાર્ક અને સ્વામિનારાયણ મતાનુયાયી ધર્માનુરાગી સજ્જનોએ પણ સંસ્થાના કાર્ય પરત્વે પ્રશંસાના પુષ્પો પત્રોદ્વારા વેરી સહકાર આપ્યો છે.

એ ઈશ્વરનું સાક્ષાત સ્વરૂપ છે. વિગેરે કહ્યા બાદ જપ કરવાના જુદા જુદા પ્રકાર અને મહત્તા ઉપર વિસ્તૃત વિવેચન બાહ્ય પ્રમાણોથી સાંપ્રદાયિક દષ્ટિએ કરી, નિઃસાધન જનોને માટે આવા ઘોર કલિકાલમાં ભગવત્ પ્રાપ્તિ માટે જો કંઈ સર્વોત્કર્ષ સાધન હોય તો તે માત્ર શ્રીકૃષ્ણ શરણં મમ એ અષ્ટાક્ષર મહામંત્રજ છે, અને તેથીજ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરે તથા અન્ય આચાર્યવર્યોએ એક ક્ષણ પણ ભગવન્નામોચ્ચાર વિના ન રહેવાની ખાસ આજ્ઞા કરી છે. વિગેરે આવશ્યક વિવેચન કર્યાં બાદ શ્રીયુત ચુનીલાલ પરીખે પ્રાસંગિક વિવેચન કરતાં આજ કાલનાં વર્તમાનપત્રોમાં પ્રકટ થતાં રાગદ્વેષયુક્ત ચર્ચાપત્રો કે લખાણો ઉપર વિશેષ લક્ષ ન આપતાં સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતો સમજવા શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, શ્રીગોકુલેશજી, શ્રીહરિરાયજી અને શ્રીપુરૂષોત્તમજી પ્રતિપાદિત સાહિત્યનું અધ્યયન, અધ્યાપન અને બહોળા પ્રમાણમાં પ્રચાર કરવાની આગ્રહપૂર્વક વિજ્ઞપ્તિ કરી હતી.

સભાપતિ મહોદયનું મનનીય વ્યાખ્યાન—ત્યાર પછી પ્રમુખસ્થાનેથી ગો. શ્રીવલ્લભલાલજીએ વ્યાખ્યાન આપતાં જણાવ્યું હતું કે આજનો વિષય શ્રીભગવન્નામમાહાત્મ્ય રાખવામાં આવેલ છે તે ઉપર અમે કંઈક કહીશું કે જે વખતે કર્મ, જ્ઞાન, સાંખ્ય યોગ, તપ વિગેરે સાધનો ભગવત્પ્રાપ્તિમાં નિરૂપયોગી દેખાવા લાગ્યા તે વખતે જીવોના ઉદ્ધાર માટે માત્ર ભગવાનની ભક્તિ એજ એક ઉપાય રહ્યો હોવાથી કહ્યું છે કે કલૌ કેશવ કીર્તનં। એટલે ભગવાનનું ભજન એજ માત્ર કલિકાળમાં ભગવત્પ્રાપ્તિનું સાધન છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણને વેદાન્તમાં બ્રહ્મ, સ્મૃતિમાં પરમાત્મા, અને ભાગવતમાં ભગવાન એ નામથી સંબોધે છે. બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને રૂદ્ર એ ત્રણ તેના ગુણાવતાર છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ નિર્ગુણ પરબ્રહ્મ છે. ભગવાન ક્ષર અને અક્ષર કરતાં ઉત્તમ છે કૃષ્ણથી આરંભી બ્રહ્માપર્યંતને ક્ષર કહે છે અને ભગવાનના નિવાસ સ્થાનને અક્ષર કહે છે તે સચ્ચિદાનંદ છે, ભગવાન અંશ, કલા આવેશ વિગેરે અનેક અવતાર ધારણ કરે છે. પરંતુ જ્યારે આપ પૂર્ણ અખંડ સ્વરૂપે થાય છે ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ કહેવાય છે.

તેથીજ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વર મહાપ્રભુજીએ આપણા જેવા નિઃસાધન જીવોને માટે તેજ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની સેવા, સ્મરણ અને કીર્તનાદિ કરવાની આજ્ઞા કરી છે. આવા ઘોર કળિકાળમાં શ્રીભગવન્નામોચ્ચાર સિવાય આપણે માટે એક પણ ભગવત્પ્રાપ્તિનું સબળ સાધન નથી માટેજ શ્રીમદ્ભાગવતમાં પણ શુકદેવજી કહે છે કે દોષના નિધિરૂપ કલિયુગમાં એક મહાન ગુણ છે તે એ છે કે ફક્ત પરબ્રહ્મ સર્વોદ્ધારપરમાત્મા શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રનાં કીર્તન–સ્મરણ માત્રથી જીવ સંસારના માયારૂપી બંધનોથી મુક્ત થઈ શ્રીકૃષ્ણને પ્રાપ્ત થાય છે. વિગેરે વિસ્તારથી લાખેલા દલીલો પૂર્વક સચોટ રીતે જણાવી ભગવન્નામસ્મરણની મહત્તા સિદ્ધ કરી હતી. તે પછી સંસ્થાના મંત્રીએ શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય તથા અન્ય ગો. બાલકો અને સભામાં હાજર રહેલાં સ્ત્રીપુરૂષોનો યોગ્ય શબ્દોમાં આભાર માની સભાનું કામ કાજ પુર્ણ થયું હતું.

શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભા (ટંકારા) ની પ્રશંસનીય પ્રવૃત્તિઓ—શ્રી ટંકારા વૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભાના આશ્રય નીચે ચાલતી શ્રીવલ્લભીય પાઠશાળાની મુલાકાત લેતા સહર્ષ વિદિત કરવાનું જે કાઠીયાવાડ જેવા ભાવનાપ્રધાન દેશોમાં આવી સંસ્થા ભાગ્યેજ મલતી હશે. પાઠશાળામાં વિદ્યાર્થીની સંખ્યા આશરે ૪૦ ની છે જેમાં શ્રીસર્વોત્તમ સ્તોત્ર તથા ષોડશ ગ્રન્થનું મુખ્ય અધ્યયન શાસ્ત્રીજી નવલશંકર વિશ્વનાથ ઘણીજ સરલતાથી આપી રહ્યા છે જેનાથી કુમળી વયના બાળકો ઉપર સારી અસર પડે છે તથા વિદ્યાર્થીઓ ગાલાતિલક તથા નીતિ ઉપરે ધાર્મિક સંવાદો ઘણીજ બજાર વાપામાં કરી શકે છે. મજકૂર સંસ્થાને દિન પ્રતિદિન ઉજ્વલતામાં લાવવાને તેના સેવાભાવી મંત્રી મહારાય રાણપરા લાલજીભાઈ દયાલજી તથા શ્રીયુત મુલજીભાઇ ઠાકરશી તથા શેઠ વિઠ્ઠલદાસ વિગેરે પોતાનો અમૂલ્ય સમયનો ભોગ આપી તથા તન મન અને ધનથી ઘણીજ સારી સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આવી સુંદર પ્રવૃત્તિના અંગે એક સાકન્ડ બેન્ડનું શિક્ષણ પણ મજકુર પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને શ્રીયુત શાસ્ત્રીજી વગાડવાની તાલીમ આપી રહ્યા છે.

આ પાઠશાળામાં કોઇ પણ પ્રકારનું સ્થાયી ફંડ કે અન્ય પ્રકારની ચાલુ આવકનું સાધન એક પણ નહિ હોવા છતાં ફક્ત નજીવી રકમથી સંસ્થાનો ખર્ચ ચલાવે છે. તો આવી સંસ્થાઓને ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવ જનતાએ તન, મન, ધનથી યથાશક્ય મદદ કરી તેની પ્રગતિમાં પોતાનો યોગ્ય ફાળો આપી પોતાની ફરજ બજાવવી અતિ આવશ્યક છે. સુજ્ઞ જનતાને વિદિત કરી કે ટંકારા (કાઠીયાવાડમાં) મોરબી

ધર્મમાં સ્થાન મળતા લાગ્યું છે. બહુ ખેદ છે કે...ને દૂર રાખીને સ્વાધિકારનો લાભ ઉઠાવ્યો છે. ઠીક છે. માર્ગની પ્રણાલિકા સમજવી બહુ દૂર છે. રાજ્યસંબંધ તો બાહ્ય રક્ષણ અર્થે છે. અહીં તો ધર્મ પણ સમજથી દૂર થયો છે. નહિતર......ની સભા ભરીને પછીજ રાજસંબંધ મેળવવો હતો. ...ને વિષે રપ૯ ખુશાસો મેળવવાની જરૂર હતી. પ્રભુની ઈચ્છા કેવા પ્રકારની છે તે શું જાણીએ?" આવા પત્રો કૃપા કરીને ભગવદીયો લખતા રહેશો અને શિક્ષા આપશો એવી નમ્ર વિનતિ છે.

કપડવંજમાં જાગૃતિ—શ્રીચતુર્થ પંચમપીઠાધીશ્વરે અત્રે ગીતા વર્ગ ખોલ્યા પછી સારી જાગૃતિ આવી છે. અમદાવાદથી વસંતરામ શાસ્ત્રી તે વર્ગ ચલાવવા આવે છે. ગીતા વર્ગ શરૂ થયા પછી એક બાળવર્ગ અને એક બહેનોનો વર્ગ એ બે વર્ગ બીજા ચાલે છે. દર એકાદશીએ આ વર્ગો ચાલે છે. તે ઉપરાંત તેજ દિવસે એક જાહેર સભા પણ ભરાય છે. તેમાં જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાનો થાય છે. શ્રીતિલકાયિતના નિત્યલીલાપ્રવેશ માટે એક સભામાં શોકનો ઠરાવ રા. ભાઈચંદભાઈ બી. એ. એ મૂક્યો હતો. રા. નરોત્તમ પુરાણીજી પણ વ્યાખ્યાનો આપે છે. બીજું એક કાર્ય ગીતા વર્ગ તરફથી અનુકરણીય રીતે ફત્તેહમંદ થયું છે. જે શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવ વિષેની પત્રિકા છે. આ પત્રિકા વ્યવસ્થાપકો રા. ધીરજલાલ ઓચ્છવલાલ શાહ અને રા. ચંદુલાલ ઓચ્છવલાલ દેસાઈએ પ્રકટ કરી છે. આ પત્રિકા પોતાને ખરચે બીજા ગામોમાં પણ યુવક મંડળે મોકલી છે. આ કાર્યોની પાછળ કોષાધ્યક્ષ રા. રા. શેઠ અંબાલાલ વલ્લભદાસ પણ સારી ઉદારતા દાખવશે.

વિજય અને મુબારકબાદી—આર્યસમાજે અણુભાષ્યના ખંડનની બાંગ પોકારી તે પરથી દયાનંદીઓએ ગુંડાશાહી ચલાવી. મારામારી ચલાવીને પરિણામે ૬ વૈષ્ણવો પર પોલીસે કેસ માંડ્યો હતો, તે કેસમાં ન્યાયાધીશે બધાને નિર્દોષ જાહેર કરીને છોડી મૂકયા હતા. આ પરિણામ માટે એ ૬ શૂરવીરોને ધન્યવાદ તથા મુબારકબાદી ઘટે છે.

આંતર ચિદ્રૂપોનો ચચરાટ—શ્રીમહાપ્રભુજીને થયેલા ઇતિહાસસિદ્ધ કનકાભિષેક વિષે સંપ્રદાયદ્રોહીઓએ જે ચર્ચા ચલાવી છે, તેના કુહાડાના હાથા બનેલા આંતર ચિદ્રૂપોએ ખાનગીમાં ઉશ્કેરીને ...ધારે સ્વરૂપ આપ્યું છે. વળી કનકાભિષેક એટલે ઉકળેલું સોનું રેડવું એવો અર્થ કરીને નાસ્તિક માયાવાદીઓને પણ ટપી જનાર ચિદ્રૂપનો ચેલો પોતાના ગુરુ ચિદ્રૂપનાં કેવાં વખાણ કરે છે તે ભાટાઈ ખુલ્લી ...રવાની જરૂર છે. અમદાવાદના ગુરુદેવોના આંગણે પગ ઘસનાર આ ચિદ્રૂપ અને તેની પાર્ટી ઉપરથી તો ...દ્ધાન્ત, ત્યાગ, નિઃસ્પૃહતા તથા શ્રીવલ્લભ કુળના અંધ ભક્તનો પાઠ ભજવીને ખાનગીમાં કેવા પત્રો લખે ...છે તે જુઓ:—"જો સંપ્રદાય મારા લોહીનીજ અભિલાષા ધરાવતો હોય તો હું તૈયારજ છું—**પરંતુ મારે તો સંપ્રદાયના ઇતિહાસમાં કાળા અક્ષરે લખાવવુંજ છે કે વિદ્વાનો તરફ આ સંપ્રદાય** ...કેટલો બેવફા છે? આ પ્રમાણે પોતાનું ખરું જીગર બતાવનાર અને સંપ્રદાયને કલંક લગાડવા માટે ...ઉદ્ધારયામ કરવાનો ડોળ કરનાર ચિદ્રૂપો અને તેના ચકારાદિ ચેલાઓને હવે સંપ્રદાય તુરતજ ઓળખી લેશે.

સાચા દાખલ પામતા અન્ય ગણે છે, ત્યારે ખરેખર તેવા સાચા હરિજનોની કોટયંશે પણ સ્થિતિ થવાય એ માટે આરતિથી અધિક અધિક કરવું.

૨૧. શ્રીહરિ સર્વ સ્થળે-સદા વ્યાપકરૂપે પણ બિરાજેલા છે. ને તેમની પણ સત્તા ઘણીજ છે. માટે તેથી તેમને હાજર જાણીને અસદ્‌માર્ગે ડગલું પણ ન ભરાય તે માટે વિશેષ ધ્યાન આપવું.

૨૨. પરબ્રહ્મથી શેષ, મહેશ, બ્રહ્માદિક અને કાળ તથા માયા અને ઇંદ્રાદિક સૂર્ય ચંદ્રાદિક દેવો વિગેરે સર્વે થરથરે છે. એવા અનેક પ્રકારે તે સત્તાધીશ સ્વતંત્ર સર્વને નિયમમાં રાખનાર જાણી તેમનો ભય વિશેષ કરીને રાખવો. અને એવા પરબ્રહ્મ પ્રતિ જે સ્નેહ વાત્સલ્યાદિક પ્રકાર અવતારાદિકના સમયમાં તેમના નિકટ હિતસ્વી માતપિતા આદિક ભક્તોએ જે પ્રમાણે કરવા ઇચ્છ્યું તે ભાવ પણ ક્ષણ ન કરમાય એવી રીતે સ્વામીસેવકભાવ પરબ્રહ્મ પ્રતિ રાખવો.

૨૩. સેવાસમય નિયમપૂર્વક એવો રાખવો કે, સેવાકાર્ય વખતે લૌકિક પ્રતિબંધક કે વ્યાવૃત્તિ ન આવે કે જેણે કરીને તે અન્ય કાર્યમ વૃત્તિ કે ઉદ્વેગ ન થાય. સેવાનો સમય વીત્યા પછી (અન્ય અવસરે) ઉદરનિર્વાહાદિક પ્રાપંચિક કાર્યમાં ગુંથાવવું પડે તો તે કાર્ય કારણ પુરતું મન તેમાં જોડવું. પણ તેમાં ઝીણા આસક્ત થઈ ન જવાય, એ સાવધગીરી રહેવા ભગવતચિંતન કર્યા જવું. મનબુદ્ધિ હરિચરિત્ર, કીર્તન ગુણગાનાદિક વિષે લગાડવી. ઉદ્યમ દ્રવ્યાદિક પ્રાપ્તિ અર્થે કરવામાં બુદ્ધિ એ કે શ્રીહરિનો નેક નભે તથા શ્રીગુરુ ભગવદી આદિનું પણ સમાધાન થઈ શકે.

૨૪. પ્રાકૃત જે જે પદાર્થો છે, તે સર્વ સગુણને અસ્થિર છે, વળી તે ઘણાજ તુચ્છ છે એમ જાણી તેથી માયામમતા ત્યાગીને કાર્ય માટે જેટલી જરૂર તેટલા પુરતી વેઠ ઉઠાવવી. પણ તેમાં મ્હોવાઈ ન જવું, ને ભય રાખવો કે રખે એ ઉપર આસક્તિ બંધાઈ જશે.

૨૫. કદાચ કોઇ સિદ્ધિ આદિકથી પ્રયોગદ્વારાએ મોહનો સંભ્રમ લાગે તો તે વેળા તો અમુક એમજ માનવું કે માયાનું આ તો પ્રાબલ્ય છે. જેનાથી માયા ઉત્પન્ન થઇ છે, તે રમનાર નટ પરબ્રહ્મમાં કેટલી મોહિની ભરેલી હશે ? એ વિચારી રચના કરતાં રચવાવાળાનો લક્ષ પહોંચાડવો.

૨૬. આગળ કીયો ઉત્સવ ક્યારે આવનાર છે, તે જાણી તે માટે જરૂર તે સાહિત્યનો સંગ્રહ કરી આદર રાખવો.

૨૭. ભગવત્ અર્થે પોતાના સુખનો ત્યાગ કરી શ્રીહરિનું કાર્ય હિતચિંતકપણાથી કરવું.

૨૮. શ્રીહરિને કદી પણ કોઇ બાબતમાં પરિશ્રમ ન પડે એવી રીતે વર્તવું.

૨૯. ઋણ (કરજ) કરીને સેવામાં વૈભવ ન વધારવો તથા અનીતિને માર્ગે મેળવેલું દ્રવ્ય સાહિત્ય શ્રીહરિ કદી પણ અંગીકાર કરતા નથી. માટે નીતિથી ઉપાર્જીત કરવું.

૩૦. ભગવત્સેવાસ્મરણાદિક ભગવદ્ધર્મ અનન્યશરણયુક્ત રાખવામાં પ્રતિબંધ કરતા હોય, એવો જો કોઇ ધર્મ હોય તો તે ધર્મનો પણ કદાચ લોપ થાય તો તે ભલે થવા દેવો, પણ મુખ્ય ભગવદ્ધર્મ જાળવવો. કેમકે મુખ્ય અંગરૂપ ભગવદ્ધર્મ જાળવ્યામાં સર્વે પેટા ધર્મ સમાયલા છે.

૩૧. પ્રસંગાનુસાર અન્ય દેવનું પૂજન કરવું પડે તો તેને શ્રીહરિના દાસ જાણી તથા એમાં પણ અંતર્યામી અને તેને પણ ચેતનદાતા ભોક્તા અને ગ્રહણ કરનાર પરંપરાએ મૂળ તે તો આપણા ઇષ્ટ પરબ્રહ્મ તેનેજ વિષે સર્વ સમાયલું છે, ને ત્યાંજ સર્વનું પર્યવસાન છે, એ બુદ્ધિએ કરવું.

૩૨. લાભ, અલાભ, સુખ, દુઃખ, હાનિ, ઉદય, મૃત્યુ, જય, પરાજય, ઇત્યાદિક કથનમાત્ર અસ્થિરને પોતાનું માન્યાથી તે બંધનરૂપ થાય છે, તે કર્માનુસાર શ્રીહરિની યથાર્થ ન્યાયવાળી ઇચ્છાએ નિર્મિત કરેલ તે પ્રમાણેજ થાય છે, ને તેમાં પણ સર્વનું હિત સમાયલું છે એ તત્ત્વ મનમાં આણવું.

૩૩. શ્રીહરિ કોઇ પણ સાધનથી સાધ્ય નથી, પણ કેવળ આપ ઇચ્છાએ દયા આણીને કે પોતાના અંતરંગ ભક્તની કહાણી કૃપાકટાક્ષથી પ્રાપ્ત થાય છે. એ હેતુએ સર્વસાધન કર્યા છતાં મદગર્વાદિકથી રહિત થવું.

૩૪. પુણ્યદાનાદિક કરવા મનોરથ થાય તો શ્રીહરિના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોદ્વારાએ વિનિયોગ કરી તેમને સંતોષવા.

૩૫. શ્રીહરિના જન્મકર્મ અને લીલા સર્વ દિવ્ય અપ્રાકૃત લહી તેમાં કુતર્ક કે વિપરીત ભાવના કદી પણ ન કરવી.

૩૬. શ્રીહરિએ દેહ ઇંદ્રિય મન પ્રાણાદિક જે જે દાસને આપ્યું છે, તે સર્વનો ઉપયોગ શ્રીહરિના હિતાર્થે કરવો અને સર્વેન્દ્રિય મનબુદ્ધિને લૌકિક વાસના વૃત્તિથી અટકાવવી.

૩૭. અન્ય સર્વભગવદીયને પોતાના સમાન ન ગણતાં શ્રેષ્ઠ ગણી પોતે લઘુતા રાખવી.

૩૮. ગુરુ ભગવદીય ઉપર લૌકિક બુદ્ધિથી ભાવ ન રાખવો, તેમ તેમના દોષ કદી પણ મનમાં ધારણ ન કરવા.

૩૯. સર્વમાં અંશાઅંશ તરીકે ભગવાન છે, એમ સમજી કોઇનો દ્રોહ અવિદ્યા કે નિંદા આદિ ન કરતાં ભગવદ્બુદ્ધિએ નમ્ર રહી કોઇનો આત્મા ન દુઃખાવવો.

दयारामभाई.

ગત વામનદ્વાદશીના રોજ મુંબાઇમાં ઉજવાયલી જયંતીના પ્રમુખસ્થાનેથી ગં. સ્વ. વિદુષી બ્હેન કુંવરબ્હેને ભાષણ કરતાં જણાવ્યું હતું કે—આપણે મનુષ્યોની જન્મતિથિ (વર્ષગાંઠ) એમનાં જીવન કાળમાં ઉજવીએ છીએ ત્યારે તેમાં શું કરીએ છીએ? તે પરત્વે એક અનુભવી કહે છે.

જન્મગાંઠ કે દિનમેં, પાય અજવે ગાંઠ;
પણ મૂરખ જાને નહિ, દિવસ ગાંઠકે જાય.

પણ જેના જીવનથી આ જગતને લાભ થયો હોય તેવા જનોની તો મરણ પછી પણ જન્મતિથિ ઉજવાય છે; જુઓ દયારામભાઇની જયન્તી ઉજવવાથી તેની ઉત્કૃષ્ટતામાં આપણે વધારો કરીએ છીએ. તેને લીધે તેનું કાર્ય જનતાના માનસની વધારે સમીપ આવે છે. તેમની જયન્તી મુંબઇ તથા બહારગામ ઘણી વખત ઉજવાઇ છે અને તેના જીવનનું રહસ્ય વિદ્વાનો, કવિઓ અને સાક્ષરોએ બહુ સમજપૂર્વક સમજાવ્યું છે. હું વિદ્વાન, કવિ, કે સાક્ષર નથી, તેથી મ્હારે તે મહાન ભક્ત કવિના વિષયમાં શું બોલવું તે વિચારણીય હોવા છતાં હું આ વખતે જે કંઈ ભક્ત કવિશ્રીના પરત્વે તેના જીવન અને કવનમાંથી કંઈ કહું તે ગુણાનુરાગી આપ સર્વે શાંતિથી સાંભળશો અને દૂધપાક લાડુ વગેરે ખાનારાઓએ આજે શેટલામાંજ સંતોષ માનવો પડશે.

ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઇનો જન્મ ચાન્દોદમાં સાઠોદરા નાગર બ્રાહ્મણ પ્રભુરામને ત્યાં થયો હતો. તેઓ સંસ્કારી હતા. તેમજ કવિશ્રીના માતુશ્રી રાજકુંવરબાઇ શાન્ત, સુશીલ, મરત અને સહનશીલ હતા. એટલે સ્ત્રીઓમાં જે સદ્ગુણ જોઇએ તે તેમાં હતા. તેઓ આચારવિચારથી

શુદ્ધ રહી પ્રભુમાં ચિત્ત રાખતાં છતાં તેઓ ગૃહકાર્યમાં કુશળ હતાં. માતા ઉચ્ચ અને સંસ્કારી હોય તેની કુખેજ ઉત્તમ પુરુષો અવતરે છે. આપણામાં કહેવાય છે કે—

જનની જણ્ તો ભક્ત જન, કાં દાતા કાં શૂર;
નહિતર રહેજે વાંઝણી, મત ગુમાવીશ નૂર.

તે અનુસાર ભક્તના તે માતાએ એકાદશીસંયુક્ત શ્રીવામનદ્વાદશીએ જન્મ આપ્યો અને તે દિવસ તેમના ભક્ત જીવન પર દૃષ્ટિ નાખતા કૃતાર્થ થયો, તે તેમના જીવન ચરિત્ર ઉપરથી સમજાય છે કે 'આકૃતિઃ ગુણાન્ કથયતિ' તે અનુસાર તેઓ સુન્દર અને આકર્ષણ કરે તેવી આકૃતિના હતા. કહેવત છે કે 'એક માતા સો ગુરુ સમાન જ્ઞાન આપે છે.' તે પ્રમાણે માતા ભક્તિવાળાં હોવાથી દેવદર્શન અને પ્રભુના ભજનકીર્તન ગાતા તેની અસર તથા પિતા પણ ધર્મિષ્ઠ હોવાથી કવિના બાળકહૃદયમાં ધર્મભક્તિનું બીજ ન્હાનપણથીજ રોપાયું હતું. તેમને નિશાળમાં ગુજરાતી વાચન અને ગણિતનો લાભ મળ્યો હતો તથા પિતા તરફથી થોડો થોડો સંસ્કૃતજ્ઞાનનો લાભ મળ્યો હતો. તથા વિશેષ જ્ઞાનનો લાભ કથા–વાર્તા શ્રવણથી મળ્યો હતો. આપણા શહેર કરતાં ગામડામાં ઉછરતાં બાળકોને ગૃહશિક્ષણ ઉપરાંત બહારનું પણ શ્રુતજ્ઞાન મળે છે. આપણી આજકાલની કેળવણી કરતાં બાળકોનાં હૃદય બુદ્ધિને કેટલી બધી ધાર્મિક, અસરકારક અને સંગીન કેળવણી શ્રુતજ્ઞાનથી મળે છે. તે અનુસાર દયારામભાઇને પણ માણભટ્ટો, મહાત્માઓ અને સાધુસન્તો તરફથી બહુશ્રુતજ્ઞાન બાળપણમાંજ મળ્યું હતું. તેમને ઉપવીત આપ્યા પછી કવિને માટે જ્યોતિષીઓએ સારું ભવિષ્ય બતાવેલું તે આશાઓને સાથે લઇને તેમના પિતા સદ્દગત થયા તે વખતે તેમનો સંબંધ દ્રાક્ષ કન્યા સાથે જોડેલો. તેઓ નિરાધાર થઈ પડયા છતાં માતા પુત્ર એકબીજાને આશ્વાસન આપતા રહેતા. તેમના માતા પણ પુત્રને પરણાવવાની હોંશ હૃદયમાં લઇ પ્રભુચરણારવિન્દમાં પહોંચ્યાં. માતાના મૃત્યુથી દયારામભાઈ નિરાધાર થઇ પડયા હતા, છતાં તેમની ચિત્તવૃત્તિ જન્મથીજ પ્રભુપ્રત્યે હોવાથી સાંસારિક વિપત્તિઓથી ન દબાયા.

કેટલીક રીતે સાંસારિક વિપત્તિઓ કેટલાયે મનુષ્યોને આદર્શરૂપ બનાવે છે, વિપત્તિઓ એક પછી એક આવે છે અને ગાઢ અજ્ઞાનના વાદળોને વેરી નાખે છે. કવિશ્રીને પણ તેમજ થયું. પોતાની લગ્ન કરવાની ઇચ્છા નહતી અને માતાપિતા તરફથી પાછો વળેલો પ્રેમનો ઝરો ઇશ્વર તરફ વળ્યો. જેવી રીતે નદીઓને સમુદ્ર ભણી વહેતા રહેવાની, અગ્નિની જ્વાળાને ઉંચે જવાની, પ્રાણવાનને આકાશ ને વાયુની, આંખને પ્રકાશની અને રોગીઓને ઔષધની જરૂર છે, તેવી રીતે પ્રેમના ઝરાને કોઇ પણ સ્થળે વહેતો કરવાની મનુષ્યની ઇચ્છા હોય છે, સંસારી મનુષ્યો તે પ્રેમ કુટુમ્બ, દેહ, ધનમાં લગાડે છે. માટે ભક્તોનાં હૃદયનાં પ્રેમઝરણા ઇશ્વર તરફ વહેવા માંડે છે. તેવીજ રીતે દયારામભાઈનું પ્રેમમય હૃદયઝરણું પ્રભુપ્રતિ વળ્યું. માતાપિતાના પાડેલા સંસ્કારાનુસાર વહેલા ઉઠી નિત્યાહ્નિકકર્મ અને પ્રભુસેવાદિ કરી દયારામભાઇ મન્દિરો તથા સત્સમાગમનો લાભ લેતાં પોતાના બનાવેલા પ્રભુકીર્તનો મીઠે રાગે ગાવાની ઉત્તમ બક્ષીસને લીધે વરિયાટ શેરીયે અને ઘરમાં તેમનું સન્માન થતું તેઓએ સંગીતનો પણ અભ્યાસ કર્યો અને મીજલસો તથા કીર્તનકારોની મંડલીમાં ભાગ લેવા લાગ્યા. આવી રીતે તેમને વિદ્યામાં રસ લાગવાથી એમનું રસિક હૃદય બ્રહ્મવિદ્યા મેળવવા તથા વજ્રભાષાના અષ્ટસખાઓના પદો વિગેરેના અભ્યાસમાં મચ્યું અને પરમાત્માની કૃપાની દીનભાવે યાચના કરવા માંડી, તેથી ભગવાને પોતાના જનદ્વારા કૃપા કરી મહાનુભાવ ભગવદ્ભક્ત વૈષ્ણવશ્રીઇચ્છારામભટ્ટજી કે જેઓ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા અને જેમને ભગવાનનો સાક્ષાત્કાર થયો હતો. તથા તેઓ દરરોજ શ્રીમદ્ભાગવતનું પારાયણ અને ભગવદ્વાર્તા વૈષ્ણવો પાસે કરતા હતા. તેમણે કોઈ ગામમાં

મરકી આવી ત્યારે જેને ભગવદ્‌નામની ધૂનથી શાંત કરી હતી એવા પ્રતિભાશાળી વિદ્વાન કે જેમણે શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્યજીના અણુભાષ્ય ઉપર પ્રદીપ નામની ટીકા કરી છે, તેનો સમાગમ એકાન્તમાં મેળાપ થયો. ત્યારે તેમણે દયારામભાઇને કહ્યું કે ત્હારા જેવા મહાન ભક્ત થવા જન્મેલ આત્માને માટે એક ધર્મજ મનુષ્યને ઉત્તમ પંથે લઇ જાય છે માટે ત્હારે શ્રીકૃષ્ણના ગુણાનુવાદ કરવા અને સંસાર તથા સાંસારિક તુચ્છ વાસનાઓમાં એક અણુ જેટલી પણ આસક્તિ રાખ્યા વગર આપણા દેશના પવિત્ર તીર્થોમાં જવું અને ત્યાં તને સત્સંગાદિજીવનનાં સત્વોનો લાભ થશે અને એક ડબી જે આકાશપાત્ર જેવી હતી તેમાંથી યાત્રા કરી શ્રીનાથજીમાં પણ તેમને પ્રભુનો સાક્ષાત્કાર થયો હતો તથા ભટ્ટજીના બોધવચનોએ કવિની કાવ્યશક્તિને ઉત્સાહ આપ્યો હતો. અને કવિજીવન ઉપરાંત ભક્તજીવન બન્યું. ચારે ધામની યાત્રા કરી ને પછી તેમણે પચીસ વર્ષની ઉમરે પોતાની ભાવનાને પોષનાર બ્રહ્મસમ્બન્ધદીક્ષા શ્રીમદ્‌વલ્લભાચાર્ય વંશજ શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજ પાસે લીધી હતી. તેનાથી કવિમાં આસુરી ભાવનો અંશ પણ ન રહ્યો: તેમનું મન નિર્મળ સ્ફટિક જેવું થઈ ગયું અને ભગવદ્‌લીલાનો સાક્ષાત્કાર થયો અને ગુરુકૃપા એજ મનવાંછિત ફળ આપનાર છે તે તેના મનમાં દૃઢ થયું. અને તે મહાન ભક્ત ગુરુ કૃપાથી ગણાયો અને સમ્પ્રદાયની ભક્તિ કરી, પ્રભુની કૃપા તેજ પુષ્ટિમાર્ગ અને પ્રભુની કૃપા ગુરુકૃપાથી મેળવી શકાય છે. શુદ્ધાદ્વૈત બ્રહ્મવાદ અને તેનું રહસ્ય તેના હૃદયમાં ઠર્યું તેમના કાવ્યોમાં ભક્તિ વગરનો એક પણ શબ્દ નથી. પોતાના ગુરુદેવની સમ્પૂર્ણ કૃપાથી તેઓ માર્ગનું લક્ષ્યબિન્દુ ઉત્તમ રીતે સમજ્યા હતા. ભક્તિપોષણ, રસિકવલ્લભ, પુષ્ટિપથરહસ્ય વગેરે તેમના બનાવેલા ગ્રન્થો વૈષ્ણવોને ખાસ મનન કરવા લાયક છે. શ્રીમદ્‌ભાગવતના દશમસ્કન્ધના એક શ્લોકમાં કહે છે કે કામ, ક્રોધ, ભય, સ્નેહ, ઐક્ય અગર સૌહૃદ ભાવના આમાંથી ગમે તે ભાવ પ્રભુમાં રાખે તો તે તન્મય બની જાય છે. તદનુસાર તે પ્રભુમય બની ગયા. અનન્ય ભક્તિ કરી આચાર્યચરણોના ગ્રન્થોના અર્થો પોતાના કાવ્યોમાં ઉતાર્યા અને શ્રીકૃષ્ણાશ્રયસ્તોત્રમાં કહેલ ‘ कृष्ण एव गतिर्मम ’ એટલે પોતાની ગતિ કૃષ્ણ માની ભગવન્નામસેવા કરી નામને માટે જેમણે લખ્યું છે:—‘ નામ સાર છે રે, નામ સાર છે.’

નામનું માહાત્મ્ય કે જે મ્હોટા વેદશાસ્ત્રીઓને પણ એકવાર ગોથું ખવડાવે છે. જેમકે કોઇ એક ગૃહસ્થના પુત્રને જ્વર લાગુ પડયો, ડૉક્ટરો અને વૈદ્યોની ધમાલ ચાલી હોય; કોઇ મેલેરીયા, ટાઇફૉઇડ અને ન્યુમોનિયા વિગેરે કહી રહ્યું હોય પાશ્ચાત્યરીત્યનુસાર ચિકિત્સા થઇ રહી હોય એટલામાં કોઈ સાધારણ વૈદ્ય આવીને કહે કે શેઠ પિત્તની ઋતુ છે માટે હરીયાળુ, કાળી દ્રાક્ષ વિગેરે પાઓ તો તે વાત મ્હોટાઇને ચકડોળે ચઢેલા ગૃહસ્થના લક્ષ્યમાં ન આવે તે મુજબ નામમંત્રનું રહસ્ય મહાન વિદ્વાનોના હૃદયમાં ઉતરી શકતું નથી, પરન્તુ ભક્ત તો વિશ્વાસ અને શ્રદ્ધાયુક્ત હોવાથી તેના હૃદયમાં સ્થિર થાય છે. તેથીજ શ્રીદયારામભાઈ કહે છે–‘ શરણ પડયો છું રે શ્રીહરિ ’ શ્રીમદ્‌ભગવદ્‌ગીતાના બારમા અધ્યાયમાં ભગવાન્ શ્રીમુખે કહે છે કે, ‘ જે મારામાં શ્રદ્ધાપૂર્વક મન પરોવીને મારી ઉપાસના કરે છે તે શ્રેષ્ઠ ભક્ત છે.’ તો દયારામભાઇ તેવાજ ભક્ત હતા. તેમણે જગતમાં પ્રભુભજન સિવાય કોઇ જગ્યાએ કોઇ વિષયમાં આરંભ કે આસક્તિ કરેલ નથી. ચિન્તા ન કરવા વિષે પણ નવરત્ન રહસ્યને સમજાવવા ‘ ચિન્તામંજરી ’ કાવ્ય લખ્યું છે. ચતુઃશ્લોકીમાં વૈષ્ણવોનું કર્તવ્ય શું તે સર્વદા સર્વભાવથી તેમણે શ્રીકૃષ્ણનું ભજન કર્યું. બારમા અધ્યાય મુજબ ભક્તજીવન ગાળ્યું. તે તેમના કાવ્યોના અવલોકનથી જાણી શકાય છે. શ્રીદયારામભાઈએ વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાય પ્રમાણે અનન્ય ભક્તિ કરી પુષ્ટિમાર્ગને શોભાસ્પદ બનાવ્યો છે. તેઓ ખરા ભક્તરાજ હતા. હવે કવિ વિષે બે બોલ કહું છું. એક કહેવત છે કે—

હોઠે હરિ આવે નહિ, હૃદય ન આવે રામ;
જુઠા જોડે જોડીયા, તે કવિના શા કામ ?

પણ દયારામભાઈ પ્રભુની કવિતા અને એની લીલા ગાવામાં મસ્ત હતાં. તેમના હૃદયમાં ભગવદાવેશ હતો. તેમણે પોતાની સર્વ ઈન્દ્રિયો પ્રભુમય બનાવી હતી. એટલુંજ નહિ પણ 'चेतस्तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा' એટલે કે જેમ સોયમાં પરોવાયલો દોરો સોય પછવાડેજ ચાલે તેવી રીતે ભક્તનું ચિત્ત પ્રભુ પછવાડેજ ચાલે. તેમ દયારામભાઇનું ચિત્ત પ્રભુમાંજ પરોવાયલું હતું. કવિશ્રીના કીર્તનો જેમ વધારે વાંચતા જઇએ છીએ તેમ તેમ હૃદયમાં આનન્દોર્મિ આવતી જાય છે. રસિક હૃદયને એમાંથી રસનો સ્વાદ મળતો જાય છે. જેમ ગીતાને માટે કોઈ ગીતાભક્તે લખ્યું છે કે ગીતાને સારી રીતે જાણીએ તો બીજા શાસ્ત્રોની જરૂર નથી. તેવી રીતે કવિશ્રીના જેટલા ગ્રન્થો છપાયલા છે તે વાંચીને વિચારીએ તો જે વૈષ્ણવો સંસ્કૃતભાષા ન જાણતા હોય તેવાને માટે અન્ય ગ્રન્થો વાંચવાની જરૂર ન રહે. તેમના કીર્તનોમાં ભક્તિરસ છલોછલ ભરેલો છે. તે સિવાય જ્ઞાન, વૈરાગ્ય, દીનતા, આર્જવ વગેરે યોગ્ય રીતે ગોઠવેલા છે. કોઇ કોઇ કાવ્યોમાં તેમણે દૃષ્ટાન્તોથી સિદ્ધાન્તો બહુ સારી રીતે સમજાવ્યા છે. કવિશ્રીએ જે લખ્યું છે તે શાસ્ત્રને અનુસરીને લખ્યું છે. કવિશ્રીની વ્યાવહારિક જ્ઞાનમાં પણ કુશળતા તેમની ચાતુરી તથા શાણામણ ભરેલી ગરબીઓ પુરવાર કરી શકે છે. પોતે સ્ત્રીઆવેશમાં રહીને પ્રભુના લીલા ગાય છે તે સ્ત્રીહૃદયના ભાવો સારી રીતે સમ્પૂર્ણ આલેખ્યા છે, તેથી રસિક સ્ત્રીઓ જ્યારે તેની ગરબીઓ ગાય છે ત્યારે તલ્લીન બને છે. મ્હારી સ્મરણશક્તિ મ્હને યાદ દેવડાવે છે. જ્યારે હું પ્હેલી ચોપડી ભણતી હતી ત્યારે મારા માતુશ્રી જ્યારે 'મારગડો મેલો મોહનલાલજી' અને 'મહિયારી મળી ચાલી મહીં વેચવા.' આ ગરબી ગાતાં ત્યારે અમે આનન્દથી તેમની સામે જોઇ રહેતાં અને એમ લાગતું કે મા આ ગાયાજ કરે તો ઠીક. તે સિવાય શ્રીયમુનાજીની આરતી "દુઃખભાવ છુડાડો" તે આરતી પણ પ્રેમથી બધાં મળીને ગાતાં. આ વાતથી હું એટલુંજ કહેવા માગું છું કે આજથી પચાસ વર્ષ લગભગ કાઠીઆવાડના વૈષ્ણવ બૈરાંઓમાં પણ એમનાં પદો પ્રેમથી ગવાતાં હતાં. એટલે એમનો લાભ માત્ર ગુજરાતના બૈરાંઓએજ લીધો તેમ નથી પણ કૃષ્ણપ્રેમી તરીકે સમજનાર દરેક બ્હેનોએ લાભ લીધો છે અને તે વાત એક સ્ત્રી તરીકે મૂકતાં મ્હને આનન્દ થાય છે. ભગવાન્ શ્રીકૃષ્ણ ગીતામાં શ્રીમુખે કહે છેઃ—

'अंतकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्'

તે પ્રમાણે આખું જીવન પ્રભુગુણ ગાવામાં વિતાવી અન્તિમ સમયે પણ પ્રભુને દર્શન દેવા વિનંતિ કરી કે તે મુજબ પોતાનું અન્તિમ પણ સુધાર્યું. મસાલ જેમ પોતાને પ્રકાશ આપી જગતનો અન્ધકાર પણ દૂર કરે છે, તે ન્યાયે ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઇએ પોતાનું જીવન સુધારી જગતના મનુષ્યોનાં જીવન સુધારવા પોતાના અમર કાવ્યો જગતમાં મૂકી ગયા છે. અન્તમાં હું કહું છું તેઓ મર્યા નથી પણ જીવન્ત છે. જુઓઃ—

કીધાં છે શ્રીહરિસ્મરણો, ટાળ્યા છે જન્મ ને મરણો;
સર્વ ! શ્રીકૃષ્ણના ચરણે, મુવા પણ જીવતા તે છે.
કીધાં માતા-પિતા ઉજ્વળ, કીધું છે કુલ પણ ઉજ્વળ;
કીધું છે જીવન પણ ઉજ્વળ, મુઆ પણ જીવતા તે છે.

श्रीदयारामः एक भावांजलि.

'જીંદગીમાં એકેય' વાર ન રડયું હોય એવું માનવી કોઈ હશે ? જીવનમાં કોઇ ઇષ્ટ કે અદષ્ટને ખાતર જ્યારે અંતઃકરણ રડે છે ત્યારે એનું મૂળતત્ત્વ ભક્તિ હોય છે. પ્રેમ અને સમર્પણના ભાવથી ભીંજાયલી સંવેદના એ ભક્તિ. એવી ભક્તિના ઉપાસક કવિ દયારામને નમ્રભાવે આજે અમારી ભક્તિની અંજલિ ધરૂં છું. કવિઓએ એને કવિ કહી પોતાનો કર્યો છે, સાહિત્યરસિકોએ એને સાહિત્યકાર માન્યો છે. દયારામ કવિ હતા, સાહિત્યકાર હતા, પણ એથીય મોટા એ ભક્ત હતા.

દયારામની કવિતા વાંચતાં એમ લાગે છે કે એ કોઇની પાછળ ઘેલા થયા હતા. કોઇને ખાતર એમનું અંતઃકરણ રડતું હતું. અને એ વહેલાં આંસુની ઘણી કવિતાઓ આપોઆપ સરજાઇ ગઇ છે. આ ઘેલછાને, આ ગાંડપણને કેટલાક સાહિત્યકારોએ પ્રણયનું સ્થૂલ રૂપ આપીને દયારામને ફાંકડો, રંગીલો અને પ્રણયી કહ્યો છે. અને એ લોકોય સાચા છે. સ્થૂલ પ્રણયની પાછળ ફના થઇ જનારોજ પૂર્ણ ભક્ત બની શકે છે. ભક્તિ અને સમર્પણ વિના તો સાચો પ્રણય હોયજ નહિ. દયારામને પ્રણય હતો પુરુષોત્તમ સાથે. રાધા જેવો એ પ્રણય સ્થૂલ રૂપરંગ અને આકર્ષણોમાંથી વિકાસ પામીને આખરે વિશુદ્ધ અને અલૌકિક ભક્તિમાં રૂપાંતર પામ્યો. એટલા ખાતર પ્રણય, પ્રેમ અને ભક્તિ એ તો વીરોનાં જીવનવ્રત હોય છે. ભક્તિ કાયરો માટે નથી, બહાદુરો માટે હોય છે. ભક્તિમયો જીવનયોગ જીવવા અને જીરવવા જે તપ અને સામર્થ્ય આપવાં પડે છે એ શૂરવીર અને મર્દ માણસની સિદ્ધિ હોય છે.

ચાર પદો લખવાથી, સવારસાંજ લુખ્ખી પ્રાર્થના કરવાથી, મંદિરે દર્શન કર્યાથી કે માળા ફેરવવાથી ભક્તિયોગ સિદ્ધ નથી થતો, ભક્તિ એ તો અસિધારાવ્રત છે. કર્મયોગ અને જ્ઞાનયોગ કરતાં ભક્તિયોગ જીવીને પ્રભુની નિકટતા વહેલી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે એવી ભક્તોની વાણી સાર્થક છે. પણ એમાં બુદ્ધિ અને જ્ઞાન કરતાં અંતઃકરણનું અર્પણ હોવાથી એ કઠિનમાં કઠિન સાધના છે. દેખાવે સરળ પણ આચરણે દુષ્કર ભક્તિયોગ જીરવવો એ પારો જીરવવા જેવું છે. સિંહણનું એ દૂધ સિંહણસુતનેજ પચે છે. ગમે તેવા સામાન્ય માનવો માટે ભક્તિ નથી. બુદ્ધિવાળી લાંબી પહોળી દલીલબાજી અને વાદવિવાદોમાં જેમની તપશ્ચર્યા સમાઈ જાય છે, જ્ઞાનના તર્કવિતર્ક અને વિતંડાવાદમાં જેની પ્રતિભા નિચોવાઈ જાય છે એવા જ્ઞાનીઓ અને કર્મકાંડીઓ કરતાં પોતાના અંતઃકરણને નિચોવી એમાંથી અમૃતધારા વહાવી જગતની દુષ્ટતા ધોનાર ભક્તની જીવનસિદ્ધિ વધારે વ્યાપક ચિરંજીવ અને મહાન છે.

ભક્તિને જીવનમાં જીવતાં જીવતાં દુનિયાની આંખે મૂર્ખ અવ્યવહારૂ અને અતડા મનાયલા ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતાની આંતરવેદના અનુભવીને ગાંધીજી જેવા અર્વાચીન યુગના કર્મયોગી પોતાનું જીવન ઘડતર ઘડે છે. આંસુનું જલ સીંચી સીંચીને પ્રેમવેલ ઉછેરનારી, પુરુષોત્તમને ખાતર સંસારનું સર્વ શ્રેષ્ઠ સુખ—રાણાને તજી વૃંદાવનને માર્ગે સંચરનારી ગાંડી મીરાંને સંભારી સ્વારેક માલવીયાજી જેવા પ્રખર જ્ઞાનયોગી પોતાના અંતઃકરણની શાંતિ અનુભવે છે. એવા ભક્તિયોગની જીવનસાધના કરીને જેણે ગુજરાતી સાહિત્યને પોતાનાં આંસુથી ભીંજેલું રાખ્યું છે એવા દયારામનો ગુજરાત પર અનહદ ઉપકાર છે.

દયારામમાં જે શૃંગારરસ છલકાય છે તે લૌકિક રતિનો ઉલ્લાસ નથી પરંતુ શ્રીકૃષ્ણ-અલૌકિક માધુર્યની ભક્તિનો પ્રવાહ છે. આ અલૌકિક શૃંગાર અને અલૌકિક માધુર્યભક્તિને ભેદ ન સમજવાથી અને જનોમાં શબ્દમયી પરિભાષા ઉદ્દીપક હોવાથી દયારામનાં કાવ્યો મા શૃંગારનાં છે અને દયારામ તો ધ્રાંકડો, રંગીલો અને પ્રણયી કવિ છે એવું મંતવ્ય કેટલા વિવેચકોમાં દૃઢ થયું હતું અને હજી છે. લૌકિક રતિમાં આત્મામાંથી પ્રેમ નીચે ઉતરી સ્થૂળ દેહમાં સંભોગ અથવા વિપ્રલંભ શૃંગારમાં પરિણમે છે. અલૌકિક માધુર્યભક્તિમાં સ્થૂળ દેહન સ્થૂલ કામવાસના પલટાઈ 'રસમય' પરમાત્માની દિવ્યમૂર્તિમાં પરાભક્તિ રૂપે પલટાય છે લૌકિક રતિનું આલંબન સચેતન શરીર છે, અલૌકિક માધુર્ય ભક્તિનું આલંબન પરમેશ્વરન રસમય મૂર્તિ છે અને જીવ—ઇશ્વર વચ્ચે વિલક્ષણ મધુરભાવ સ્થાયી બંધાયલો હોય છે. આ દૃષ્ટિથી જોઇએ તો દયારામનાં કાવ્યો શુદ્ધ ભક્તિનાં છે, માત્ર સ્થૂલ પ્રણયનાં નથી.

આપણા સાહિત્યમાં ભક્તિની આરાધના જુદા જુદા સ્વરૂપની મળી આવે છે. સખા ભાવે અને દાસભાવે એમ જુદા જુદા રૂપમાં દેખા દે છે. અર્જુનની ભક્તિ સખાભાવની હોવાથી એને નરનારાયણી ભક્તિ કહી છે. રાધાની ભક્તિ સખીભાવની, યશોદાની વાત્સલ્યભાવની અને હનુમાનની દાસભાવની ભક્તિ કહેવાઇ છે. ભક્તિનાં આ બધાં સ્વરૂપોમાં સખી ભાવ જીવનમાં જીવીને જે ભક્તો પોતાની સુવાસ મૂકતા ગયા છે એમાં ગુજરાતે દયારામ અર્પીને પોતાની ભક્ત પરંપરા સાચવી છે. દયારામનાં કાવ્યોને પૂર્વગ્રહ વિના જોતાં લાગશે કે એના હૃદયાકાશમાં ૬૪ દૃસૌંદર્ય કૃષ્ણમૂર્તિ કેવી રીતે અખંડ રાસ રમે છે? કવિના અનુભવમાં આવતી આકૃતિ અથવા સ્વરૂપ તે શાંકર વેદાંત પ્રમાણેની માયિક સગુણમૂર્તિ નહિ પરંતુ સ્વેચ્છાવિહાર કરનારી આનંદમયી સત્યમૂર્તિ છે, જેની સાથે જીવની ગોપીસદૃશ મૂર્તિને રમણ કરવાનું છે. આ સહજ આવેશથી પ્રકટ થતો ભજનીય શ્રીકૃષ્ણ અને ગોપીસદૃશ ભક્ત દયારામનો અખંડ રાસ સંબંધ નાં કાવ્યોમાં શબ્દબ્રહ્મદ્વારા બાહ્ય જગતમાં સ્રવે છે.

આ પ્રેમભક્તિનો માર્ગ જો ચાવી હાથ લાગી તો તો સરળ છે અને સુગમ છે, અને જો ચાવી હાથ ન લાગી તો તિજોરી તોડનારનાં કાંડાં કપાય તેવો પણ છે. ઘણાએ આ પ્રેમમાર્ગનાં આલંબનાદિ વિભાવોનું રહસ્ય જાણ્યું નથી અને તેથી પતિત થયા છે; જેઓએ જાણ્યું છે તે ભક્તો કૃતકૃત્ય થયા છે. વિજાતીય વ્યક્તિ પ્રતિની પશુભાવનામાંથી છૂટેલી અને મનુષ્યભાવમાં આવેલી રતિ—પ્રણયને વટાવીને સર્વ જાતિ વગેરે ભેદોનું અતિક્રમણ કરનારી, સ્વચ્છંદ બ્રહ્મવાદની ઉછળતી અને ઉત્કટ પ્રેમરસની મોટી નદી, પરાભક્તિને વરેલાં ભક્તોનાં જીવનમાધુર્યથી ક્રૂર મનુષ્યજાતિના અંતઃકરણમાં કંઈક ભીનાશ રહી છે; અને આ ભીનાશજ માનવતાની જનેતા છે.*

દયારામમાં જે શૃંગારરસ છલકાય છે તે લૌકિક રતિનો ઉલ્લાસ નથી પરંતુ શ્રીકૃષ્ણના અલૌકિક માધુર્યની ભક્તિનો પ્રવાહ છે. આ અલૌકિક શૃંગાર અને અલૌકિક માધુર્યભક્તિનો ભેદ ન સમજાવાથી અને જેનેમાં શબ્દમયી પરિભાષા ઉદ્દીપક હોવાથી દયારામનાં કાવ્યો માત્ર શૃંગારનાં છે અને દયારામ તો રંગીલો, રંગીલો અને પ્રણયી કવિ છે એવું મંતવ્ય કેટલાક વિવેચકોમાં દૃઢ થયું હતું અને હજી છે. લૌકિક રતિમાં આત્મામાંથી પ્રેમ નીચે ઉતરી સ્થૂલ દેહમાં સંભોગ અથવા વિપ્રલંભ શૃંગારમાં પરિણમે છે. અલૌકિક માધુર્યભક્તિમાં સ્થૂલ દેહની સ્થૂલ કામવાસના પલટાઈ 'રસમય' પરમાત્માની દિવ્યમૂર્તિમાં પરાભક્તિ રૂપે પલટાય છે. લૌકિક રતિનું આલંબન સચેતન શરીર છે, અલૌકિક માધુર્ય ભક્તિનું આલંબન પરમેશ્વરની રસમય મૂર્તિ છે અને જીવ—ઇશ્વર વચ્ચે વિલક્ષણ મધુરભાવ સ્થાયી બંધાયલો હોય છે. આ દૃષ્ટિથી જોઇએ તો દયારામનાં કાવ્યો શુદ્ધ ભક્તિનાં છે, માત્ર સ્થૂલ પ્રણયનાં નથી.

આપણા સાહિત્યમાં ભક્તિની આરાધના જુદા જુદા સ્વરૂપની મળી આવે છે. સખા ભાવે અને દાસભાવે એમ જુદા જુદા રૂપમાં દેખા દે છે. અર્જુનની ભક્તિ સખાભાવની હોવાથી એને નરનારાયણી ભક્તિ કહી છે. રાધાની ભક્તિ સખીભાવની, યશોદાની વાત્સલ્યભાવની અને હનુમાનની દાસભાવની ભક્તિ કહેવાય છે. ભક્તિનાં આ બધાં સ્વરૂપોમાં સખી ભાવ જીવનમાં જીવીને જે ભક્તો પોતાની સુવાસ મૂકતા ગયા છે એમાં ગુજરાતે દયારામ અર્પીને પોતાની ભક્ત પરંપરા સાચવી છે. દયારામનાં કાવ્યોને પૂર્વગ્રહ વિના જોતાં લાગશે કે એના હૃદયાકાશમાં રસમય કૃષ્ણમૂર્તિ કેવી રીતે અખંડ રાસ રમે છે? કવિના અનુભવમાં આવતી આકૃતિ અથવા સ્વરૂપ તે શાંકર વેદાંત પ્રમાણેની માયિક સગુણમૂર્તિ નહિ પરંતુ સ્વેચ્છાવિહાર કરનારી આનંદમયી સત્યમૂર્તિ છે, જેની સાથે જીવની ગોપીસદૃશ મૂર્તિને રમણ કરવાનું છે, આ સહજ આવેશથી પ્રકટ થતો ભજનીય શ્રીકૃષ્ણ અને ગોપીસદૃશ ભક્ત દયારામનો અખંડ રાસ સંબંધ એનાં કાવ્યોમાં શબ્દબ્રહ્મદ્વારા બાહ્ય જગતમાં સ્રવે છે.

આ પ્રેમભક્તિનો માર્ગ જો ચાવી હાથ લાગી તો તો સરળ છે અને સુગમ છે, અને જો ચાવી હાથ ન લાગી તો તિજોરી તોડનારનાં કાંડાં કપાય તેવો પણ છે. ઘણાએ આ પ્રેમમાર્ગનાં આલંબનાદિ વિભાવોનું રહસ્ય જાણ્યું નથી અને તેથી પતિત થયા છે; જેઓએ જાણ્યું છે તે ભક્તો કૃતકૃત્ય થયા છે. વિજાતીય વ્યક્તિ પ્રતિની પશુભાવનામાંથી છૂટેલી અને મનુષ્યભાવમાં આવેલી રતિ—પ્રણયને વટાવીને સર્વ જાતિ વગેરે ભેદોનું અતિક્રમણ કરનારી, સ્વચ્છંદ બલવાદની ઉછળતી અને ઉત્કટ પ્રેમરસની મોટી નદી, પરાભક્તિને વરેલાં ભક્તોનાં જીવનમાધુર્યથી ક્રૂર મનુષ્યજાતિના અંતઃકરણમાં કંઈક ભીનાશ રહી છે; અને આ ભીનાશજ માનવતાની જનેતા છે.*

હિસનસિંહ ચાવડા.

---

* ગઈ તા. ૩૧–૮–૩૩ના દિને સાંજે છ વાગે મુંબઈ શ્રી પુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદના ઉપક્રમથી ઉજવાયલી ભક્તકવિ દયારામની જયંતી પ્રસંગે શ્રીમતી બહેન-કુંવરબાના પ્રમુખપદે આપેલ...

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

વર્ષ ૮. પોષ, ૧૯૯૦.

શુદ્ધાદ્વૈત અને ભક્તિમાર્તંડ.

અંક ૧૦. શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૫.

सीतकालके पद.

राग आसावरी—भोजनके । जेमत रामकृष्ण दोऊ भैया जननी जशोदा जिमावेरी ॥ खारे खाटे मीठे विंजन स्वाद अधिक उपजावेरी ॥१॥ करत वयार सखी सहचरी मधुर वचन मुख भाखेरी ॥ परमानंद प्रभु माता हितसों अधिक अधिक रस चाखेरी ॥२॥ पद ॥ लेऊ बलाय छाडीले तेरी भोजनकों कित करत अवार ॥ गाल लगाय कीयो मुख चुंबन आतुरताई परोसी थार ॥१॥ नंदबाबा समझावत मोहन करत बालकेलि सुखसार ॥ गोविंदप्रभु रसिक गिरिधर पिय ब्रजसुखदाई नंदकुमार ॥२॥ पद ॥ भोजन कीजे मोहनलाल ॥ भांतभांतके विंजन कीने रसिक रसिली बाल ॥१॥ परोसतही अधिक छबि उपजत बोलत वचन रसाल ॥ चितवनमें तनमन धन दीनो मोहन मदनगोपाल ॥२॥ अतिही सुख विलसे बहु भांतिनसों भाव परम रसाल ॥ श्रीविट्ठल गिरधर मुख निरखत अखियां भई निहाल ॥३॥ पद ॥ भोजन करत हें पिय प्यारी ॥ चाखि चखावत देत परस्पर हास्यविनोद देख छबि न्यारी ॥१॥ भांति भांति पकवान परोसे मेवा मिश्री सीतल भरि झारी ॥ श्रीविट्ठलप्रभु हितही अरोगत दासनको जूठनकी थारी ॥२॥ पद ॥ भोजन करत नवल पिय प्यारी ॥ नवरंग नवल सिंगासन बैठे नवरंग रसिक बिहारी ॥१॥ नवल थार नव खटरस विंजन परोसत नवल ललितारी ॥ भ्रुकुटी अरसपरस चितवनपर हित हरिवंस जाय बलिहारी ॥२॥ पद ॥

राग टोडी—अरी तु बारबार उझकि उझकि आवे जानि भोजनकी बिरियां ॥ जेंवत ढोटा नंदगोप ढोटा ले बरजीहे सो बिरियां ॥१॥ घर न सुहात रह्यो नहीं जात फिरत निडरीयां ॥ चत्रुभुजप्रभु गिरधरन लालकों तकिही रहत दिन भरीयां ॥२॥

राग खट—चलि देख सखी विधि आज भली नवकुंजनमें दोउ जेवतरी ॥ पिय हाथ हटीहटीके जेवनकों पग सीस धर नही हितवतरी ॥१॥ ललितादि सखी कर जोरि रही अरु करि विनति नही चितवतरी ॥ यह सुख माधुरी जो न लहे वृथा दिन योंही वितवतरी ॥२॥ पद ॥

राग आसावरी—नवलकुंवर ब्रजराज लाडिलो जेंवत रोटी ओर बरी ॥ बरा. भुजेना ओर खीचरी सब घृत अधिक सुगंध परी ॥१॥ पापर कोमल हरे सधाने जामे राई बहोत चढी॥ श्रीपुरारी गिरधर रुचि उपजी पीवत मीठी माग फडी . ॥२॥ पद ॥ भोजन करत नवल पिय बेठी गोपकुंवरकी पांति॥ ललित तिबारी पटा रतनके झारी जल कंचनकी भांति ॥१॥ मानिक थाळ विशाळ धरे बहु बेलवेली नाना भांति ॥ खटरस विंजन धरे तिनके मधि देखत जिनके नयन सिरात ॥२॥ पायस करत रोहिनी फिर २ अति आनंद मनमांझ सिरात ॥ लपटत झपटत ससंग संग मिली दोखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि दासी तहां उठावत जुठन मन ईतरात ॥ देखत यह सुखसूं सुरपुरवासी भये न ब्रजजन आंख चुचात ॥४॥ जेती सुखसंपति सब ब्रजजनकी पल २ छिनु २ वे गिनत न जांत ॥ गोवर्धनेस गिरधर प्रसादकों ब्रह्मांहुकी मति ललचात ॥५॥ पद ॥

सेराके भोजनके–राग जेतश्री—भोजन करत किशोर किशोरी ॥ मदनगोपाळ राधिका बनी अनुपम जोरी ॥१॥ विविध पाक पकवांन थार भारि सखीयन आंन धरे ॥ जेंवत लाल लाडिले रुचि सों स्वादित भोग खरे ॥२॥ यमुनाजल ललिता ले आई ले जलपान कर्यो ॥ पिय प्यारीकों बीरी दे गोकुल पाय पर्यो ॥३॥ पद ॥ जेहों दुल्हे लाल दुल्हैया ॥ बहुविधि साक सुधारे विंजन ओर बनायो घैया ॥१॥ कंचनथार कंचनकी चोकी परोसत मोद बढैया ॥ ठाडी पवन करत रोहिनी लेत वारने मैया ॥२॥ करि अचवन मुख बीरी दीनी आनंद उर न समैया ॥ लाल लाडिलीकी छबि उपर परमानंद बल जैया ॥३॥ पद ॥

खीचरीके पद—खीचरी मोर हीं रुचि देन ॥ परत हित सों प्रीत सजनी करत है द्रुम वेन ॥१॥ प्रानपति द्रग पूतरी मय उमे सब ऐन ॥ गोरस रुचि सों लेत भोगी वलित आलस नेन ॥२॥ चलत इत उत नेह पूरित कलकटाच्छन सेन ॥ स्वाद भेदी अघस अंगत पुनि जगावत मेन ॥ ३ ॥ सीत हेमंत प्रीत पोष सहचरी दे चेन ॥ वृंदावन हितरूप अचवन जगत बीरी लेन ॥ ४ ॥

सीतकालके पोढवेके ॥ पोढे हरि राधिकाके संग ॥ रंगमहेलमें ललित तिबारी परदा परे सुरंग ॥१॥ झलमलात पावक अंगीठी रतन जटित बहोत रंग ॥ कुंभनदासप्रभु गोवर्धनधर मोहत कोटि अनंग ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगरमनीराय ॥ रंगमहेल चित्र कीये सुंदिर जगमगात जुराय ॥१॥ रत्नजटितकी आगे अंगीठी परदा परे सुहाय ॥ बल जाउं छबिली छबिपर कृष्णदास बलि जाय ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगमहेल नंदलाल ॥ दोऊ ओर धरी हे अंगीठी परदा परे रंग लाल ॥१॥ ललितादिक सखी चरन चांपत निरखत होत बेहाळ ॥ रसिक स्वामिनी लाय लई उर भरि लीनी अक वारि ॥२॥ पद ॥

राग बिहाग ॥ पोढे माई प्रीतम प्यारी संग ॥ रंगमहलकी ललित चितारी परदा पे हे सुरंग ॥१॥ जगमगात पावक अंगीठी धरी रति रसरंग ॥ नंददासप्रभु प्यारी रति हे मुदित अनंग ॥२॥ पद ॥ रतन जटित पलकापर पोढे केलि करत दोऊ मिलत परस्पर ॥ पर गये परदा ललित महलमें जगमग होत अंगीठी ढीग धरि ॥१॥ रति रसकेल विलास हासिस अधरामृत पीवत हे दृग भरि ॥ मदनमोहन गिरधर क्रीडा विनोद मुदित परस्पर भवर चहेल करि ॥२॥ पोढे हरि रंगमहल पिय प्यारी ॥ सुंदिर रची हे सेज ता उपर तकीया धरे हे सवारी ॥१॥ जगमग होत अंगीठी पावक गोखन धरे हे दीप सुधारी ॥ मधुर सुर गावत कोकिल कंठ कृष्णदास बलिहारी ॥२॥ पद ॥ पोढे माई रंगमहल गिरधारी ॥ सुंदिर गादी तकीया सेज रची धरी अंगीठी सुखकारी ॥१॥ कंठ लगाये भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत सुकुमारी ॥ बीन मधुरे सुर बजावत ललिता कृष्णदास बलिहारी ॥२॥ पद ॥ अरी इन पोडस बारि ओढाई ॥ सीतें सखि पावन तर आई सीत सतावन आई ॥१॥ अतिसे श्रमित जानि प्यारीने दीनी सोर सँवारि ॥ परमानंदप्रभु पर तनमन जोबन वार ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगमहल सुखदाई ॥ सीत समे प्यारी प्रीतम दोउ पोढे ओढे रजाई ॥१॥ विविध भांतके परदा चहुंदिस अंगीठी धराई ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर सोभा बरनी न जाई ॥२॥ पद ॥ ए दोऊ सुरत सेज सुख सोये ॥ करत पान मकरंद प्रिया प्रिय अधर पानरस जोये ॥१॥ तनसों तन मनसों मन मिलवत नेंन पान रस मोहे ॥ कृष्णदास प्रभु सुखनिधि विलसत मदन मान सब खोए ॥२॥ पद ॥

कीर्तनमाला.

[लेखकः—रा. रा. चंपकलाल छबीलदास कीर्तनीयाजी.]

राग इमन ॥

તાલ: ચૌતાલ   માત્રા ૧૨   ઉઠાન સમથી   (વિલંબિત લય)

મ તીવ્ર   સ્થાઈ

×		०		२		०		३		४	
ની	—	ધ	પ	ગ	મં	ગમં પધ	મંપ	ગરે	સાની	રે	સા
સ્યાં	—	મ	સ	જ	ની	શ...	ર—	દ—	ર—	જ	ની
ની	રે	ગ	ગ	—	રે	ગમંપ	રે	ગ	રે	સા	સા
પુ	લિ	ન	મ	—	ધ્ય	નૃ...	—	ત્ય	ના	—	ટ્ય
ની	ગરે	ગ	ગ	પમં	ગરે	ગમં	પધ	સાની	ધપ	—મં	ગમં
તા	ત્રગ	તા	તા	ગ્રગ	તા તિ	રપ	ચંદ	કર	ત કા	—મિ	ની—

स्याम सजनी शरद रजनी पुलिन मध्य नृत्य नाट्य तांत्रग ताता ग्रगता तिरप चंद करत कामिनी ॥ गिड गिडां गिड गिडां गिड गिड गिड गिड गिडां थिर्यो किट ता लग दई झांझां

झननननननन सुर उर्पगनी ॥१॥ श्यामको यह नाद भावे तांत्रगनाता त्रगता गतिहि लावे ततततत तत शब्द लेन कोटि कामिनी ॥ कृष्णदास यशहि गावे कर ताथेई थेई नचावे कांकृति कांकृति कांकृति कांकृति करे मृदंगनी ॥२॥

अर्पण !

[નીચેનો લેખ 'तत्वदर्शी' નામના શ્રીરામાનન્દ સંપ્રદાયના પત્રના વિદ્વાન્ તંત્રીનો છે. શ્રીવલ્લભીય વૈષ્ણવોને ગાળો ભાંડવામાં રસ લેતા ભી. નટવરલાલ દેસાઇને આ લેખ અર્પણ કરીને જ હાલ વિરમીશ. ગી. જ. શાહ.]

प्रश्नोत्तर.

कच्छसे एक महात्मा पूछते हैं कि 'लाल श्री लगाकर भगवान्के अतिरिक्त अन्य किसी देवको या अपनेसे बडोंको नमस्कार नहीं करना चाहिये' ऐसा चिरकालसे सुना जाता है। इसमें तथ्यांश कितना है?

उत्तर—लाल श्री अथवा कोई भी श्रीवैष्णवोचित तिलक करनेके पश्चात् मनुष्यमें अपने सम्प्रदाय और अपने इष्टके लिये परम आग्रह होना चाहिये। तिलक वैष्णवताका बाह्य चिह्न है। मन्त्रसंस्कार और उससे उत्पन्न होनेवाले काम, क्रोध, लोभ, मद मोह आदि आन्तरिक विकारोंका नाश वैष्णवताका आन्तरिक चिह्न है। इन दोनो प्रकारके चिह्नोंसे युक्त होनेके पश्चात् भगवत्प्रेरणासे हृदयमें सर्वथा सात्त्विकभावका उदय होता है। उसके पश्चात् स्वयमेव अपने ही उपास्यदेवके लिये परा प्रीति–परा भक्ति उत्पन्न होती है। उसका परिणाम यह होता है कि श्रीवैष्णव स्वतः ही अन्य देवकी उपासना आदिसे पराङ्मुख हो जाता है। जिस प्रकारसे विवेकवती पतिपरायण स्त्री स्वपतिके अतिरिक्त अन्य किसीके लिये भी अपना शरीर, मन, वाणी, बुद्धि आदिका पतिभावसे अर्पण नहीं करती है उसी प्रकारसे परम रामभक्त पुरुष भी अपने शरीर, मन वाणी, बुद्धि आदिका भगवान्के अतिरिक्त किसी भी अन्य देवके लिये स्वामिभावसे समर्पण नहीं करता है। इसी स्वाभाविक वस्तुको लेकर यह कहा जाता है कि लाल श्री लगाकर अन्य देवको नमस्कार नहीं करना चाहिये।

तब यहां एक दूसरा प्रश्न उठता है कि उपास्यदेवकी भावनासे भले ही अन्य देवके प्रति मस्तक न झुके परन्तु ऐसे ही सामान्य बुद्धिसे अन्य देवको नमस्कार करनेमें क्या क्षति है? इसका उत्तर यह है कि हिन्दू, मुसल्मान्, ईसाई आदि सभी उसी एक ही भगवान् रामजीकी प्रजा है तथापि हम हिन्दुओंको नमस्कार आदिसे सत्कार करते हैं, अन्योंको नहीं; अथवा हम वैष्णव सांप्रदायिक प्रथाका अनुसरण करके जैसे वैष्णवोंको ही नमस्कार आदि करते है वैसे शैव, शाक्त आदिको नहीं करते और यह सबके न करनेका कारण यह है कि इन लोगोंके

दयमें हमारे इष्टदेवके प्रति हमारे समान उच्च और पवित्र भावना नहीं है । इसी प्रकारसे म अपने भगवान्को ही प्रणाम करना अथवा भगवान्के अन्य अवतारोंको ही नमस्कार करना पना धर्म समझते हैं और अन्य देवोंके प्रति हमारी आदरपूर्ण उपेक्षा होती है। हमारे हृदयमें न्यदेवके प्रति घृणा द्वेष न होते हुए भी नमस्कारबुद्धि उत्पन्न ही नहीं होती । वे अन्य देव े अन्योंको दृष्टिमें परब्रह्म बने हुये हैं। शैव शिवको ही परब्रह्म और श्रीरामादिको शिवका अङ्ग ानते हैं। शाक्त शक्तिको ही जगन्नियन्त्री और श्रीरामादिको शक्तिका अङ्ग मानते हैं । गाणपत्य ी ऐसा ही करते हैं। अतः साम्प्रदायिक दृष्टिसे तथा अपने पवित्र भावोंकी रक्षाके लिये हमे भी ह मानना की चाहिये कि हमारे भगवान् श्रीराम ही परब्रह्म हैं और अन्य देव हमारे भगवानके ङ्ग हैं। जैसे अन्य देवोपासक शैव, शाक्त आदि हमारे भगवान्को प्रणाम नहीं करते वैसे ही म भी उनके देवोंको प्रणाम नहीं करते। तात्पर्य यह है कि हमें हमारी दृष्टिमें श्रीरामके अनन्त रूपको इस प्रकारसे भर देना चाहिये कि 'भरी सराय रहीम लखि आप पाथिक फिर जाय' के नुसार कोई अन्य देव हमारी दृष्टिमें आवे ही नहीं ।

अपनेसे बडे भगवद्भक्तों अथवा गुरु आदिको प्रणाम करनेके लिये तो हमारी धार्मिक र्यादा है । श्रीवैष्णव भगवत्स्वरूप होते हैं। उन्हें प्रणाम करनेमें किसी मर्यादाका विलोप नहीं होता है । 'ठालश्री लक्ष्मीजीका रूप है इसलिये मस्तकमें उसे धारण करके किसीको भी प्रणाम नहिं करना चाहिये, इस धारणामें दोष और भ्रम है । वैष्णवोंको प्रणाम करनेमें कोई क्षति नहीं है। शिवजीको भी वैष्णव मानकर नमस्कार करनेमें क्या क्षति है इस प्रश्नका उत्तर यह है कि शिवजी दो है । एक वैष्णव और दूसरे अवैष्णव । त्रिपुण्ड्रधारी, भस्मधारी, जटाधारी, मुण्डमालधारी, वृषभारोही, स्मशानशायी, रुद्राक्षधारी शिव अवैष्णव है, उनके सामने हमारा मस्तक नहीं झुक सकता है । भगवद्भक्त, तुलसीमालाधारी, शुद्धकाय, पञ्चसंस्कार समन्वित शिव ही श्रीरामभक्त अतएव वैष्णव हैं । ऐसी शिवमूर्तिके सामने नमस्कार करनेमें हमे कोई क्षति प्रतीत नहीं होती है ।

—भगवदाचार्य.

જ્યોતિષનો અદ્‌ભુત ચમત્કાર.

साहित्यनो प्रचार.

(વ્યાખ્યાતાઃ—ગોસ્વામી શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદય.)

શ્રીબાલકૃષ્ણચરણકમલમકરન્દપિપાસુ પ્રિય વૈષ્ણવવૃન્દ! આજે જગતનો પ્રવાહ કે તરફ વળી રહ્યો છે અને તે શું પ્રાપ્ત કરવા મથી રહ્યો છે તે સૌ સુજ્ઞોથી અજ્ઞાત નથી. બૌદ્ધ કાળમાં જેવી પરિસ્થિતિ હતી તેવીજ પરિસ્થિતિ ધીમે ધીમે થતી જણાય છે. લોકો આર્ય-ધર્મથી શિથિલ થતા જાય છે. વિધર્મ જે ગર્તમાં લઇ જનારો માર્ગ છે તે પ્રતિ દોડતા જણાય છે. તેઓ એમ માને છે કે આર્યાવર્તનો ઇશ્વર અને ધર્મ નકામાં કલ્પિત તત્ત્વો છે. તેને માનવાની કંઇ પણ આવશ્યક્તા નથી. શાસ્ત્રોએ ખોટાં છે. વગેરે પ્રલાપો કરી પોતાનું અકલ્યાણ કરી રહ્યા છે. અરે! તેઓ પોતાનો સર્વનાશ કરી રહ્યા છે અને મનમાં ફુલાય છે કે અમે વાસ્તવિક માર્ગને ગ્રહણ કર્યો છે. હું પુછું છું કે યદિ તમે ઇશ્વરને નથી માનતા તો તમારે તમારા પિતાને પણ ન માનવા જોઇએ. તમે તમારા 'આ પિતા છે.' એમાં શું પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ આપી શકશો? તમારી માતા અને અન્ય પરિચિત જનોના કથનથીજ અનુમાનદ્વારા 'આ મારા પિતા છે.' એમ માનવુંજ પડશે. છૂટકોજ નથી. તેમ અમારા ઇશ્વર અને ધર્મના તત્ત્વો અમારા પ્રાચીન શાસ્ત્રો વર્ણવે છે એટલે તેને ન માનવા એ જરાએ યુક્તિસંગત નથી તેમાં જરાએ બુદ્ધિમત્તા નથી. તમે જો શાસ્ત્રોને ન માનતા હો તો તમોને ઇશ્વર નથી કે ધર્મ એ ધતિંગ છે એવો અર્થશૂન્ય લવારો કરવાનોએ અણુમાત્ર અધિકાર નથી. આસ્તિકો શાસ્ત્રોને માનનારા વાદીઓ સાથે શાસ્ત્રાનુસાર શાસ્ત્રાર્થવાદવિવાદ કરતા કટિબદ્ધ છે. પણ જે નાસ્તિકો છે તેવા સાથે વિતંડા કરવા જરા ઇચ્છા નથી રાખતા.

વૈષ્ણવો! આવા સમયમાં જો આપણે ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચ્યું હોય, તેનું અભ્યાસદ્વારા મનન કર્યું હોય, તોજ તેવા જડવાદીઓનાં મુખમર્દનો કરી શકીએ અન્યથા આપણે પણ તેઓના પ્રભાવમાં નાસ્તિકવાદમાં ગ્રસ્ત થઇ જઇએ એ સ્વાભાવિક છે. વિજ્ઞાન કહે છે કે વિચારોના એ કીટાણુઓ હોય છે. સ્વસ્થ શરીર વા મસ્તિષ્ક પર ઝેરી કીટાણુંઓ અસર નથી કરતા પણ જો અસ્વસ્થ મસ્તિષ્ક હોય તો તે પર તે ઝેરી કીટાણુંઓ માત્ર અસર નથી કરતાં કિન્તુ ઘર કરીને ધામાજ નાંખી દે છે. તેવીજ રીતે જેનું મસ્તિષ્ક ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચનથી અને સત્ વિચારો તથા આચારોના સેવનથી સ્વચ્છ નથી હોતું તેવા નાસ્તિક-મસ્તિષ્કનો ઝેરી જન્તુઓ ઝટ પ્રવેશી જાય છે. અને તેને પોતાના પ્રભાવથી એવું પ્રભાવિત કરી દે છે કે તેને તદ્દન નાસ્તિક કરી દે છે માટેજ ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચન અને તેનાં પ્રચારની કેટલી બધી આવશ્યક્તા છે તે સહજ જણાઇ આવે છે.

વૈષ્ણવો! મેં એ તમને સ્પષ્ટ સમજાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે પ્રભુની પ્રભુતાથી જે અજાણ હોય છે અને જે નિતાન્ત પ્રચ્છન્ન હોય છે તેને પણ અન્તતોગત્વા પ્રભુની પ્રભુતા મને કે કમને માનવીજ પડે છે. પ્રભુની એજ વિશેષતા છે કે તેઓ સર્વ લૌકિકના જેવી લીલાઓ કરે છે તથાપિ પ્રભુમાં અને તેની લીલામાં જરાએ પ્રાકૃતતુલ્યતા નથી સંભવતી. શ્રીમદ્ભાગવતમાં લખ્યું છે કેઃ—

द्रव्यं कर्म च कालश्च स्वभावो जीव एव च ।
यदनुग्रहतः सन्ति न सन्ति यदुपेक्षया ॥
(स्कं. २ अ. १० श्लो. २२)

અર્થાત—દ્રવ્ય, કર્મ, કાલ, સ્વભાવ અને જીવ એ સર્વ જેના અનુગ્રહથીજ છે. યદિ પ્રભુની કૃપા ન હોય તો તેનું અસ્તિત્વ સંભવેજ નહિ. આવા સર્વભવન સમર્થ પ્રભુમાં દ્દઢાસક્તિ જેવી થઇ જાય અને તદનન્તર પ્રભુમાં વ્યસન પણ પણ પ્રાપ્ત થઇ જાય તો પછી તેના દેહની સાર્થકતા થઈ ગઇ સમજવી. પુષ્ટિમાર્ગનું પરમ ફળ પણ વ્યસનદશા પછીની જે તન્મયતા છે તેજ. પ્રભુને લૌકિક વિષયાદિથી તદ્દન ઘૃણા છે. જે જીવ નિર્વિકારી અને નિષ્કામી ચારિત્ર્યવાન હોય તે પરજ પોતાનો પરમ અનુગ્રહ કરે છે. શ્રીગોપીજનો પ્રભુના પરમ કૃપાપાત્રીઓ થયાં તે શા માટે ? તેઓ પ્રભુને પસંદ પડે તેવા નિર્વિકારી અને વિશુદ્ધ હતાં, તૃતીય સ્કન્ધના શ્રીસુબોધિનીજીમાં શ્રીમહાપ્રભુજી ખુલ્લું લખે છે કે:—

"यथा दृष्टिर्भगवति प्रविष्टा तत्सङ्गे चेतनाऽपि तत्रैव गता । अतो न स्वशरीरे तासां कामयोगापेक्षी भगवत्स्वरूपं एवानन्दानुभवात् । न कामनानन्दो नवा स्वस्मिन् जातस्याऽऽनानन्दस्यानुभवः अन्तःकरणादिनां तत्रैव व्यापृतत्वात् ।" [तृ. स्कं सु. पृ. २६]

અર્થાત્, જેમ પ્રભુમાં દ્દષ્ટિ પ્રવિષ્ટ થઇ તેમને તેની સાથે સાથે ચેતના પણ પ્રભુમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગઈ અત એવ શ્રીગોપીજનોનાં શ્રીઅંગમાં કામની અણુમાત્રએ અપેક્ષા નથી, કારણ કે તેઓ તો પ્રભુનાં સ્વરૂપમાંજ આનન્દનો અનુભવ કરતી હતી. લૌકિક કામમાં જરાએ આનંદ નથી અને તેઓને તો પોતાના જે આનંદ સંપ્રાપ્ત થયો હતો તેનુંએ જ્ઞાન ન્હોતું રહ્યું, કારણ કે તેમના અંતઃકરણાદિ સર્વ પ્રભુમાંજ તલ્લીન બની ગયાં હતાં.

વૈષ્ણવો ! સમ્પ્રદાયનું આવું ઉત્કૃષ્ટ રહસ્ય અને આવા ઉંચા સિદ્ધાન્તોનું જ્ઞાન જેઓને નથી તેઓજ યથા તથા પ્રલપે છે માટેજ આપણા સમ્પ્રદાયના સિદ્ધાન્તનો પ્રચાર કરવા શ્રીયુત ગિરિધરદાસ જ. શાહે જે પ્રવૃત્તિ આદરી છે અને તેને સફલ કરવા જે પ્રયાસો કરી રહ્યા છે તે ખરેખર વખાણવા લાયક છે. તેમનું મુંબઇ જેવા વિશાળ વૈષ્ણવોની વસ્તીવાળા શહેરમાં સાંપ્રદાયિક તથા અન્ય સતસાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય પ્રશંસનીય છે. મને આશા છે કે વૈષ્ણવો ભગવદીય શાહના ઉત્સાહને પૂર્ણ ઉત્તેજન આપશે. 'શ્રીભક્તિમાર્ગીય સાહિત્ય મન્દિરો' અને 'શ્રીભક્તિમાર્ગીય મફત વાચનાલયો' ની ભારતમાં જ્યાં જ્યાં વૈષ્ણવોનો વિપુલ સમૂહ નિવૃત્તિપર હોય ત્યાં ત્યાં તીવ્ર આવશ્યકતા છે અને એ જરૂરીઆત મુંબઈમાં ભ. શાહે પૂર્ણ કરી છે. તદર્થ તેમને ધન્યવાદ આપી મારૂં વક્તવ્ય પૂર્ણ કરૂં કરૂં છું.

વઢવાણને આપશ્રીનો આદેશ.

વઢવાણના શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના દ્વારથી વૈષ્ણવ બ્હેનો અને ભાઇઓ ! હું રાજને આદેશે લાંબેથી શું સંદેશ આપું ? વૈષ્ણવ સમાજ આમ રચનાત્મક પ્રવૃત્તિપરત્વે ધ્યાન આપે છે અને અમ્હારી પાસેથી પણ આગ્રહ કરીને જાણવાનું ઇચ્છે છે તેથી મ્હને અપાર આનંદ થાય છે અને એજ ભવિષ્યની ઉન્નતિનુંએ જવલન્ત ચિન્હ છે. શ્રીમહાપ્રભુજીએ જીવોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થઇ કૃપામાર્ગ જગતને દેખાડયો અને શરણમાં મન્ત્રદ્વારા અને નિવેદનમાં મંત્રદ્વારા શૂદ્રોનો ઉદ્ધાર કર્યો એ સર્વ વાર્તા વૈષ્ણવોથી અજ્ઞાત નજ હોય. શ્રીમહાપ્રભુજીએ સમાજને વિકાસ માર્ગ વધવા માટે અનેક ઉપદેશામૃતો ગ્રંથદ્વારા પાયા છે પણ ખેદનો વિષય છે કે આપણે એ મહાપુરુષના આદેશો પ્રમાણે નથી વર્તતા. પ્રભુના ચરણારવિંદમાં ગૃહ પુત્ર સ્ત્રી ધન આલોક તથા પરલોક સર્વેન્દ્રિયો તથા ધર્મો સાથે નિવેદિત કરી જીવો પંચ મહાદોષોથી મુક્ત થઈ સેવોપયોગી દેહ સંપાદન કરે છે પણ પાછા તે દોષો પ્રવિષ્ટ ન થાય તે માટે શ્રીમહાપ્રભુજીએ સિદ્ધાંત રહસ્યમાં આજ્ઞા કરી છે કે પ્રભુને સમર્પણ વિનાનો કોઈ પણ પદાર્થ ઉપભોગમાં ન લેવો, તેનો

ત્યાગ કરવો જોઇએ જેથી હૃદયમાં કોઇ પણ પ્રકારે વિકારો નથી ઉત્પન્ન થતા, દોષો નથી પ્રવિષ્ટ થતા. આજ કાલ હોટલો તથા દુકાનોની અસ્વચ્છતા તથા અણપ્રસાદી વસ્તુઓના ખાવાથી લોકોમાં ભ્રષ્ટભાવના અને ધર્મનો લોપ દેખાય છે માટે વૈષ્ણવોએ આવી દુકાનોની હોટલોની વસ્તુઓને કોઇ પણ વખતે ઉપયોગમાં ન લેવી જોઇએ. તેનો સર્વદા બહિષ્કાર કરવો જોઇએ અને વિષય વિકારાદિથી નિવૃત્ત થઇ પ્રભુની સેવામાં પરાયણ બનવું જોઇએ તેમાંજ ઉદ્ધાર છે.

લી. ગો. શ્રી. વ્રજનાથલાલજી વિ મહારાજ.

" જન્મવૈફલ્યનિરૂપણાષ્ટક. "

[વૈ. પ્રેમલાલ ગો. કંસારા–સુલતાનપુરા.

" નવ આશ્રય જેને શ્રી વલ્લભાધીશનો, નવ સુબોધિની નિહાળી પ્રેમ દ્રષ્ટજો;
ન આરાધ્યા કદિએ રાધિકાનાથને, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૧
ન ક્યારે હરિનામ તણું ગુંજન કર્યું, ન આત્મા સમર્પ્યો શ્રીપ્રભુનાં ચરણ જો;
ન સેવા કરી ક્યારેયે શ્રીકૃષ્ણની, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૨
ન ચિંતન શ્રીહરિની લીલાનું કર્યું, ન દીનતા, ને નહીં વિરહ દિલમાંહ જો;
ન પૂરણ શ્રી કૃષ્ણ તણો આશ્રય કર્યો, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૩
નવ નીતિ ને વાત કરી કૃષ્ણભક્તિની, ન કરી જેણે સાધુ સંતની સેવજો;
ન ગોવિન્દના ગુણોનું ગાયન કર્યું, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૪
ન કૃષ્ણ રૂપ સૌન્દર્ય જેના હૃદયમાં, ન મન બીજેથી રોકી થયો લીનજો;
ન દુઃસંગ પરિત્યાગ કર્યો નિજ દિલથી, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૫
ન ભક્તિ પુષ્ટિમાર્ગ તણી કદિએ કરી, ન નિઃસાધન ભાવ થયો નિજ ઉરજો;
ન જેણે સર્વે પ્રપંચો વિસારીયા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૬
નથી જેને તત્પરતા ધર્મ કાર્યમાં, ન ધર્મ મારગે લાગ્યું જેનું મનજો;
ન ભક્તિ જ્ઞાન વૈરાગ્ય જેના અંતરે, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૭
નથી વિરહ નિજસ્વામી કેરો દીલમાં, ન તેનો પરિતાપ, અને નહીં ભાવજો;
નવ દુર્લભ જેના અંતરમાં દીનતા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે. ૮
' જન્મ વૈફલ્ય નિરૂપણાષ્ટક ' સ્તોત્રનો, 'વલ્લભ' કૃપાથી કરીયો મેં અનુવાદજો;
દાસ 'પ્રેમલાલ' કહે, શ્રીહરિ ભક્તિ કરી, સફળ કરજો જન્મ વ્હાલા ! આ ભૂતલે.." ૯

" ડૂબી રહેવું સર્વદા. "

[રચયિતા ' શ્રીપરાગ ' મુમ્બઇ.]

શ્રીકૃષ્ણનું શુભ નામ લેતાં સર્વ પાપો ટળી જતાં, જિવ્હા તણું સાર્થક્ય પણ, તેના થકી છે નાન્યથ
ભૂત-પ્રેત-પિશાચનો ભય દૂર થાતો પળ મહી; સમ્પૂર્તિ થાતી સર્વને, સૌભાગ્ય ને ધન ધાન્ય
શ્રીનન્દનન્દનનું સદા, કરવું હૃદયમાં ચિન્તન, પ્રેમથી વ્રજનાથ ભજવા સર્વ ભાવે નિર્મ
પ્રભુ નામ નૌકાથી તરે, સૌ જીવ માત્ર અભેદથી, દુસ્તર ભવાર્ણવને કરે, સમ્પ્રાપ્તિ પ્રભુના ચરણન
શુષ્ક જ્ઞાનાદિ થકી પ્રભુ નામ મોંઘું છે ઘણું, રસથી ભર્યું આનન્દની સરિતા વહાવે એ મૃ
વિખરાય વાદળ દુઃખના, શ્રીકૃષ્ણનામ પ્રભાવથી, વિઘ્નાદિ દુષ્ટ વિકારની નિવૃત્તિ તેથી ઝટ થત
પ્રભુ નામ જપવું સર્વદા, પ્રભુ નામ સ્મરવું સર્વદા, મન્ત્ર તન્ત્ર તણો સખે ! શિરમૌલિ એ છે સર્વથ
શ્રીકૃષ્ણને શરણે જઈ, કિંકર બનીને સેવવા, શ્રીકૃષ્ણનામ સમુદ્રમાં ડૂબી રહેવું સર્વદ

સપ્તશ્લોકીનો સૂક્ષ્મભાવ.

(લેખક—ભગવદીય વેલજી નથુભાઇ મીસ્ત્રી.)

(રાગ—માન્યો મનનો મોહન વર પામીયાંરે લોલ.)

શ્રીવલ્લભ શરણુ અમે પામીયાંરે લોલ, એથી કરી ત્રિવિધ તાપ શમાવીયારે લોલ. ૧.
વિરહાનલ શ્રીવલ્લભને વખાણીયેરે લોલ, અદેય દાની પૂરણુ બ્રહ્મ પરમાણીએરે લોલ. ૨.
જેહુનાં રોમ રોમ શ્રીકૃષ્ણરસેથી ભર્યાંરે લોલ, નિત્યલીલાના વિહારસાગરમાં તર્યાંરે લોલ. ૩.
ગોપીપતિ પ્રિયા સ્નેહ પ્રકટ દેખતાંરે લોલ, જેમ સમુદ્રમાં તરંગોને નિરખતાંરે લોલ. ૪.
વ્રજવિહારી સંગમ રસ ઝીલતાંરે લોલ, પ્રેમપીયૂષથી અંગો અંગ ભીંજતાંરે લોલ. ૫.
એવી મૂર્તિ મનોહર વલ્લભ નામનીરે લોલ, સદા વસો હૃદયમાંહી અભિરામનીરે લોલ. ૬.
નિજ દાસનું સૌભાગ્ય અખંડ રાખવારે લોલ, પ્રીતમ પ્રેમમાં ભીંજાડયાં રસ ચાખવારે લોલ. ૮.
નીરસ માયાવાદ રૂપી તમ ટાળીયાંરે લોલ, સુંદર સેવાની રસ રીત પ્રગટાવીયાંરે લોલ. ૯.
પ્રિય સંગ સુધા જે રાગ રંગનારે લોલ, પ્રીતે કરી પામ્યાં જન ગોપીસંગનારે લોલ. ૧૦.
દુઃખે કરીને જે વસ્તુ કદી નવ મળેરે લોલ, ચરણુ શરણુ આવ્યાં તેને દીધી એ પળેરે લોલ. ૧૧.
ઉદય થયો અલૌકિક ભાનુ ભૂતલેરે લોલ, ટાળ્યું તમ નિજ તેજના બળે કરીરે લોલ. ૧૨.
પ્રિયા પ્રિયતમનાં સ્નેહનું સ્વરૂપ છેરે લોલ, ગૂઢ સ્વામિનીનું પ્રગટ સ્વરૂપ છેરે લોલ. ૧૩.
કોઇ પંડિત કહાવે નિગમ નહી ગતિરે લોલ, કદી હોય ગતિ ક્રિયા માંહે નહિ મતિરે લોલ. ૧૪.
ક્રિયા કરે કદી તોએ પ્રેમ નવ મળેરે લોલ, પ્રેમ વગરની ક્રિયા તે કદી નવ ફળેરે લોલ. ૧૫.
પ્રેમ હોય તો માત્ર જરા નામનોરે લોલ, વસ્તુ વગર ધરો કશા કામનોરે લોલ. ૧૬.
પરિચયોથી સહજ પ્રેમ આવીગોરે લોલ, અખંડ વ્રજપતિમાં નવ શમાવીગોરે લોલ. ૧૭.
એવા સકલ ગુણ સમ્પન્ન શ્રીવલ્લભલાલ છેરે લોલ, જેહનું પૂરણ પ્રભુજીમાં વહાલ છેરે લોલ. ૧૮.
શ્રીમુખે સુધા સુબોધિની વરસાવીયારે લોલ, રાધાકૃષ્ણ યુગલ નેહ દરસાવીયારે લોલ. ૧૯.
ન કોઇ હુઓ ન હોય અવની મહીંરે લોલ, રાધાકૃષ્ણ સેવન પ્રેમભાવથી લહીરે લોલ. ૨૦.
શ્રીવલ્લભ નખચંદ્ર પીયૂષ પાનથીરે લોલ, મત્ત થયાં માનવ કૃપારસદાનથીરે લોલ. ૨૧.
કલિકાલનો પ્રભાવ નહિ જેહનેરે લોલ, એવા ભક્ત ભૂનગ વલ્લભ શરણુ એહનેરે લોલ. ૨૨.
જેહુના ચરણુમાં શ્રીલક્ષ્મીજી વસી રહ્યાંરે લોલ, એવા વ્રજપતિ રસ નેહમાં ધસી રહ્યાંરે લોલ. ૨૩.
દૈવી જીવના તે પ્રાણુ આધાર છેરે લોલ, લીલા સાગરે શમાવ્યાં નર નારનેરે લોલ. ૨૪.
વિષય સાગરે પડેલા શરણુ આવીયારે લોલ, અમર કરી ચરણુ શરણુમાં શમાવીયારે લોલ. ૨૫.
સજીવન બુટી તે સ્નેહ રસ પાઇનેરે લોલ, શ્રીહરિકેશ બાંહ્ય ગ્રહી મનુ ધાઇનેરે લોલ. ૨૬.

"સંભારણાં."

ગયા છતાં સદ્દગુણો, હૃદયાંકિત જરૂર રહે;
નિજ અભિનય-તપાઓ જગતમાં અમર રહે.

નિરંકિત વાક્-પટુતાઓ, મગજમાં સ્મરણભૂત રહે;
એવા પુરુષોની આશાઓ, જગતમાં ફ્લોન્મુખ રહે.

સ્વાશા ઉજ્જ્વન ગાળી, સુપ્ત શરીર-સ્વજી રહે;
શરીર વિણુ શરીરિ, જગતમાં આત્મીય રહે.

નિજ બાલુડાંને સુપોષી, નિર્ભયતા વિચરી રહે;
આત્મીય પ્રેમાંશું સંભારી, જગતમાં અનુસ્યૂત રહે.

(લેખકઃ—જોષી જીવણલાલ છગનલાલ પરમભગવદીય કવિવર શ્રીદયારામભાઇના શિષ્યના પ્રપૌત્ર.)

ભવસાગર તરવો સ્હેલ છે.

શ્રીકૃષ્ણ નામ જો રટશો, સંસાર સ્હેજે તરશો, વ્હાલા વૈષ્ણવ ભવસાગર તરવો સ્હેલ છે. ૧. ધ્રુવ.
થાશો પ્રભુના દાસ, તો રહેશો પ્રભુ પાસ, દીનતાથી જો ભજશો વ્હેલા પ્રભુને મળશો. ૨.
ચિત્ત પ્રભુમા જોડો સંસારી સંબંધ તોડો, જુઠું કદી ના બોલો એક સત્યતાથી ચાલો. ૩
પ્રભુ ભજે જે વ્હાલે તે પ્રભુ મ્હેલે મ્હાલે, શ્રીવલ્લભના દાસ થાવું ખોટા માર્ગે ના જાવું. ૪.
આ ભવસાગર છે ખોટો જાણે પાણીનો પરપોટો, શ્રીકૃષ્ણ નામ છે સાચું બાકી બધુયે કાચું. ૫.
નીચ કર્મ જે કરતા તે અંતે નરકે પડતા, શ્રીકૃષ્ણ નામને રટવું અભિમાને પાછા હટવું. ૬
નિત્ય પ્રભુ ગુણ ગાયે તે ગોલોકવાસી થાયે, ક્રોધ શત્રુને તોડી હું પદને દ્યો છોડી. ૭.
અવિચારી કર્મ પર થુંકે શ્રીકૃષ્ણનામમા ઝુકે, ભક્તિથી સહુ તરશો બીજા બધામા મરશો. ૮.
સદ્ગુણને શરણે રહેવુ સત્યે દુઃખ પડે તે સહેવુ, ઉપકાર સદાયે કરવો અપકારને પરહરવો. ૯.
સંપી સદાયે રહેવું કુસંપમા ન વ્હેવુ, ૫, ઈર્ષ્યા પરહરવી નિંદા કોઈની ન કરવી. ૧૦.
નીતિ થકી નવ હારો ધૈર્ય ધર્મને ધારો, શીખે સાભળે કે ગાય, તે સ્હેજે ગોલોક જાય. ૧૧.

ધૈર્યચંદ રણછોડદાસ બુદ્ધ.

પ્રભુને વિનતિ.

વ્હાલા વિનતિ કરૂ છુ પ્રેમે આપને રે, મ્હારા હૃદય તણા છો આપ પ્રાણાધાર. વ્હાલા. ૧.
આપ બંધુ છો દીનના ગુણસાગર શ્રીગોપાળ, પ્રેમે ભક્તિ આપીને પ્રેમે કરો શ્રીકૃપાળ.
દીન જાણીને દયા કરો શ્રીનાથજી રે, મુજને શરણે રાખી આપો ચરણે પાસ. ૨.
બાળક જાણી આપનો કરો કૃપા વ્રજનાથ, વ્હાલા પ્રેમે શીહસ્તથી ગ્રહો બાળનો હાથ.
રાખી આપ ચરણની પાસે વ્હાલા સ્નેહથી રે, ભક્તિ આપો પ્રભુજી જાણી મારો દાસ ૩.
એક ભરૂસો આપનો શ્રીમદગ્નિકુમાર, અવર ન ધારૂ અંતરે, કર્યો એ દૃઢ વિચાર.
પ્રભુ પૂર્ણ શ્રીપુરુષોત્તમ ગુરુ ધૈર્યના રે, પ્રભુ સ્થાપ્યો મુજને ચરણનો દાસ ૪.

ધૈર્યચંદ રણછોડદાસ બુદ્ધ.

શ્રીનાથપ્યારા.

ભક્તિ વડે વશ થાય, શ્રીનાથ પ્યારા ભક્તિ વડે વશ થાય. ધ્રુવ. ૧.
જે જીવ ભક્તિ કરે તેનો, જન્મ મરણ ભય જાય. શ્રીનાથ. ૨.
ઊંચ નીચ તેમા પ્રભુ નથી જોતા, ભલે રંક હોય કે રાય. શ્રીનાથ. ૩.
રૂપ, ધનકે વિદ્યા એ કાંઇ, પુરષોતને પ્રસન્ન ન થાય. શ્રીનાથ. ૪.
ભક્તિથી ભક્તની વિનતિ સુણી, પ્રભુજી વગર ગરુડે જાયે. શ્રીનાથ. ૫
પુષ્ટિમાર્ગના પાચ તત્ત્વો, ભજ્યેથી ગોલોક પમાય. શ્રીનાથ. ૬.
શ્રીપુરુષોત્તમની પ્રેમ ભક્તિ, શેષ મહેશ ગુણ ગાય. શ્રીનાથ. ૭.
સુરેશ, ગણેશને શારદ નારદ, બ્રહ્માદિક ચિત્ત ચહાય. શ્રીનાથ. ૮.
ધૈર્ય ધરીને ભક્તિ કર્યાથી, ચોરાશી મટી જાય. શ્રીનાથ. ૯.

ધૈર્યચંદ રણછોડદાસ બુદ્ધ.

શ્રીગોકુલનાથજી.

(વ્યાખ્યાતા—રા. રા. છોટાલાલ દાદાભાઈ જાગીરદાર.)

પુષ્ટિમાર્ગ એટલે આનંદનો ઉદધિ એ વાત વૈષ્ણવેતર જનથી કદાચ ન સમજાય, અસંપ્રદાયીય ન સમજાય. એ તો એમજ કહેશે કે 'પુષ્ટિમાર્ગ' એટલે ઠોર અને રબડી; પણ એ ઠોર અને રબડી બનાવવામાં અને તેના ઉપભોગ કરવામાં કેટલો સંયમ ખર્ચાય છે તેનો ઝાંખો ખ્યાલ પણ હોટેલો અને રેસ્ટોરાં, વિશ્રાંતિગૃહો અને ઉપહારગૃહોના 'આડધા' 'ડબલ' ચા, પાતળભાજીને "દીકરી ચા ભાજી" ગલીચ અને એંઠા જૂઠા 'બર્તન' માં ખાઇ પી બેરસલા કરનારને ભાગ્યેજ આવે. અને હવે તો કહેવાતા ઉંચ વર્ણના હિંદુઓમાં ઘુસેલી એ મલિનતા અંત્યજ ભાઇઓને માથે લાદવાનો પણ પ્રયત્ન એમના ઉદ્ધારને નામે થઇ રહ્યો છે. કોઇ પણ એઠું અન્ન આપે તો તે લેવાના ઇન્કાર કરવાનો અંત્યજોને ઉપદેશ આપનારાઓ તેઓ માટે વિશ્રાંતિગૃહો ખોલી આડકતરી રીતે એંઠવાડ ખાવા માટે અંત્યજોને પ્રેરી રહ્યા છે. એવાઓને તો પુષ્ટિમાર્ગના ઠોર અને રબડી તૈયાર કરવાની મહેનત, પવિત્રતા, તેનો ઉપભોગ કરતા પહેલાં તો પ્રભુને ધરાવવાનો સંયમ, અને એ પ્રભુની પ્રસાદી છે માટે તે ગમે તેમ વેરાય કે પગ તળે ચંપાય નહિ તે માટે પુષ્ટિમાર્ગીય એક નાનામાં નાના બાલકથી માંડીને વૃદ્ધમાં વૃદ્ધ અશક્ત છતાં ભગવદ્ભક્તની કાળજી એ સર્વનો ખ્યાલ શી રીતે આપી શકાય? "ખાવું પીવું ને લહેર કરવી એ સિવાય પુષ્ટિસંપ્રદાયમાં કશુંય નથી" એમ માનનાર બહિર્મુખી મનુષ્યને કોણ સમજાવે કે ખાઈ પીને લહેર કરવી તો સર્વ કોઇને ગમે છે; અરે એતો પ્રાણી માત્રનો જન્મસિદ્ધ હક્ક છે પણ ખાઈ પીને લહેર કરવાનો સાત્વિક આનંદ માણતા પહેલાં ભારેમાં ભારે તપશ્ચર્યા કરવી પડે છે એ તો પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ નીતિનું સ્વચ્છ હૃદયે પ્રેરેલી સાત્ત્વિક દૃષ્ટિથી નિરીક્ષણ થાય ત્યારેજ સમજાય. હમણાંજ છાપાંમાં વાંચવામાં આવ્યું હતું કે એક મંદિરમાં અન્નકૂટનો ભાત ઉકરડે નાંખવામાં આવ્યો હતો, ત્યાં તે ઢોરોના ખાવામાં આવતાં ઢોરો મરણતોલ માંદા પડ્યા; પુષ્ટિ સંપ્રદાય પર કેટલાક ગૃહસ્થોની 'ખાસ કૃપાદૃષ્ટિ' હોવાથી તેમની ફેલાવેલી વાતમાંથી અમુક ટકા બાદ કરતાંય થોડા ટકા પણ આ વાતમાં સચ્ચાઇ હોય તો તે ખરેખર ભારે શોચનીય કહેવાય, છતાં એવી અપવાદરૂપ વાતોને કારણે સંપ્રદાયનું તોલ કરનારને ગળે સંપ્રદાયની તપસ્યાની વાત કેમ કરી ઉતારી શકાય? આજનો વિષય એ નથી પણ આજના વિષય પર આવતા પહેલાં આટલા ઉપોદ્ઘાતની જરૂર હોવાથી જરા વિષયાંતર કરવો પડ્યો. અસ્તુ

સંપ્રદાયને માથે આજના મહોત્સવના નાયક શ્રીગોકુલેશ ચરણ બીરાજતા હતા ત્યારે મોગલ શહેનશાહ જહાંગીરની આણ વર્તતી હતી. કોઈ ચિદ્રૂપ સ્વામીના ભમાવ્યાથી પાદશાહે વૈષ્ણવોના પ્રિય તિલક કંઠી સામે ફરીઆદ પુકારી ત્યારે તેનો સફળતાપૂર્વક સામનો કરનાર શ્રીગોકુલેશ પ્રભુનાં નામ અને કામથી કોઈ હીનભાગી વૈષ્ણવજ અજાણ હોય. વૈષ્ણવપતના રાખણહાર એ ઝંડાધારીએ શી શી મુશ્કેલીઓ વચ્ચેથી પોતાનો માર્ગ સરળ કીધો એ તો ઇતિહાસપ્રસિદ્ધ વાતો છે; કૌટુમ્બિક અને આર્થિક મુશ્કેલીના નીચોડ એક ગુરુને છાજતાં તપથી શ્રીગોકુલેશ પ્રભુએ આણ્યો હતો એમ એના ચરિત્રકાર પાસેથી આપણે સાંભળીએ છીએ ત્યારે આપણું હૃદય આનંદાશ્રુથી પુલકિત થયા વિના રહેતું નથી; કોઇનું પણ દીલ દુખાવ્યા સિવાય અનશન વ્રતથી આર્થિક મુશ્કેલીનો આપશ્રીએ લાવેલો અંત અદ્ભુત અને સાત્વિક વૃત્તિના પરિણામ રૂપ કહી શકાય; અનેક મુશ્કેલીઓ છતાં આપશ્રીના મુખપરથી પુષ્ટિસંપ્રદાયના તપ અને સંયમના

जर्मन विद्वानो शुं कहे छे ?

શ્રીકૃષ્ણે પ્રકટ કરેલી આકર્ષણ વિદ્યા (સાયન્સવિદ્યા) રસાયન વિદ્યાનો અખૂટ ખજાનો શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાન અથવા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્ય જીવનચરિત્ર કૃષ્ણ.

અખિલ વિશ્વભક્તિમાર્ગાબ્જમાર્તંડ વલ્લભાચાર્યે પ્રગટ કરેલું સર્વ વેદોનું અને સર્વશાસ્ત્રો પુરાણોનું સારરૂપતત્ત્વ કૃષ્ણ.

કૃષ્ણ ષોડશગ્રન્થ સકારિકા રાસ પંચાધ્યાયીવેણુગોપિકાયુગલભ્રમરગીતસુબોધિની એ છે. પૃથ્વીપર શ્રીમદ્ ભાગવત પ્રગટ થયા પછી તે ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે શ્રીસુબોધિનીજી પ્રગટ કર્યા પછી તેમાંથી સારરૂપ તત્ત્વ સ્વતંત્રપણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યની પૂર્ણ કૃપાથી (પ્રેરણાથી) પૃથ્વી પરની તમામ વ્યક્તિઓના યથાધિકાર લાભાર્થે પ્રસિદ્ધ કર્યું છે. તે અલૌકિક ઝવાહીર છે. અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત આકર્ષણ વિદ્યાનો ભરપૂર ભંડાર છે. અલૌકિક નૃત્યક્રીડાનો અલૌકિક કામશાસ્ત્રોક્ત ખજાનો છે અલૌકિક પ્રેમમાં મસ્ત બનેલાં, સ્નેહમાં રમી રહેલાં, પ્રેમ અને સ્નેહની પરકાષ્ઠાને ઓળખનારાં, અલૌકિક દીર્ઘ દૃષ્ટિવાળાં, તીવ્ર બુદ્ધિવાળાં શ્રીમદ્ગોપીજનોના સંયોગ વિપ્રયોગ વિલાસનો અદ્‌ભુત ભંડાર છે. શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાનનો અપૂર્વ ખજાનો છે. આ પૃથ્વીના કોઈપણ ખંડમાં અને તેના કોઈપણ દેશોમાં (કોઈપણ રાજ્યમાં) કોઇ પણ સ્થલે આવું તત્ત્વ નથી, આવો ગ્રન્થ નથી, એમાં છે એવી અલૌકિક વિદ્યા કે જે પૃથ્વી પર કોઇ સ્થલે નથી. એમાં જે અલૌકિક વિદ્યા છે તેવી આજ સુધી સાંભળવામાં વાંચવામાં કે જોવામાં આવી નથી, શ્રીકૃષ્ણચંદ્રે જેવી જેવી અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત શોધો કરી છે તેવી પૃથ્વી પર આજ સુધીમાં કોઇપણ વ્યક્તિએ કરી નથી તે નથીજ.

જર્મની. કીલ ૧૧ નવેમ્બર ૧૯૩૧.

વ્હાલા સાહેબ ! ભાવનગર શામળદાસ કોલેજના મારા વ્હાલા વિદ્યાર્થી ડૉ. પી. એમ. મોદી મારફતે તમોએ મોકલાવેલી ષોડશ ગ્રન્થાઃ સકારિકા રાસપંચાધ્યાયીવેણુગોપિકાયુગલભ્રમર-ગીતસુબોધિનીજીની બે પ્રતો હું સાભાર સ્વીકારૂં છું. તમે બહાર પાડેલી આ સુંદર પ્રતથી હું બહુજ ખુશી થયો છું અને મારા વિદ્યાર્થીઓના ઉપયોગ માટે આમાંની એક કોપી (નકલ) આ યુનીવરસીટીના ઇન્ડોજરમેનીકલ સેમીનારની લાયબ્રેરીમાં મૂકીશ અને એક મારા અંગત ઉપયોગ માટે રાખીશ.

તમારો સાચો,

પ્રો. ડૉ. એફ્ ઓ. શ્રાડર.

વ્હાલા સાહેબ ! તા. ૩-૧-૩૨ નો લખેલો પત્ર અને ષોડશ ગ્રન્થની બીજી પ્રત મને મળી છે. તે માટે આપનો ઉપકાર માનું છું.

આપના પ્રશ્નોના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના સિદ્ધાંતોની જર્મની, ફ્રાન્સ, ઇંગ્લેંન્ડ અને અમેરિકામાં લગભગ અજ્ઞાનતા છે. અહીંયા દરેક વિદ્યાપીઠમાં સંસ્કૃતના અભ્યાસ માટે સ્થાન છે. પરંતુ તમારા વિચારો મુજબ ફક્ત શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના સિદ્ધાંતો અગર તો હીંદનું તત્ત્વજ્ઞાન શીખવવા માટે એલાયદી કોઇપણ સંસ્થા નથી. વળી મારા પ્રો. એચ. વોન-ગ્લાસેનપ્પ (કોઇનીંગ્સબર્ગ) સીવાય કોઇ પણ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના રસ લેનાર હોય એવી મને ખબર નથી પરંતુ તેઓશ્રીના તત્ત્વજ્ઞાનના સિદ્ધાંતોમાં રસ ઉત્પન્ન કરવામાં ફતેહ મળવાની મને આશા છે. તેથી ષોડષગ્રંથાઃ ની ચાર પ્રતો આપે મને મોકલી તે માટે આપનો આભારી છું આથી હું આ અમૂલ્ય પુસ્તક મારા વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ મૂકી શકીશ.

તમારો,

એફ્. ઓ. શ્રાડર.

ગ્રંથાવલોકન.

શિક્ષાપત્રી—અર્થદીપિકા ટીકા—ગુજરાતી અનુવાદ સાથે મૂલ્ય ત્રણ રૂપીઆ: અનુવાદક અને પ્રકાશક રા. રા. માધવલાલ દલસુખરામ કોઠારી, ઠે. રાયપુર વડની પોળ, અમદાવાદ.' શ્રીસ્વામિનારાયણ, સંપ્રદાય ' નામથી સુપ્રસિદ્ધ શ્રીમદુદ્ધવસંપ્રદાયનો આ મૂલાધારરૂપ અને એ સંપ્રદાયમાં સર્વોપરિ ઉત્તમોત્તમ ગ્રંથ છે. શ્રીમદુદ્ધવસંપ્રદાયના મહાન સંસ્થાપક શ્રીસહજાનંદ સ્વામીજીએ ' શિક્ષાપત્રી ' નામક એક ગ્રન્થ પોતાના પરમ કૃપાભાજન વિદ્વાન્ ઉપાસક શ્રીશતાનન્દદ્વારા પ્રકટ કરાવ્યો છે અને જગતમાંના ભિન્ન ભિન્ન અધિકાર ધરાવનારા જીવો માટે પરમ શ્રેયસ્‌ની પ્રાપ્તિ કરાવનારા અનેક દિવ્ય સિદ્ધાંતોનું તેમાં નિરૂપણ કર્યું છે. મૂલ શિક્ષાપત્રી ગ્રન્થ ૨૧૨ શ્લોકનો છે, પણ તે ગ્રન્થ વેદ, ગીતા બ્રહ્મસૂત્ર અને શ્રી ભાગવતાદિ સમસ્ત પુરાણોનો સમન્વય કરીને, પોતાનાથી પહેલાં પ્રકટ થયેલા ભક્તિમાર્ગીયઆચાર્યોના સિદ્ધાંતોમાંથી તત્ત્વનું દોહન કરીને રચવામાં આવેલો છે. ૨૧૨ શ્લોકો તે માત્ર શ્લોકજ નથી, પણ ગંભીર અર્થથી ભરેલાં સૂત્રો છે. આર્યસંસ્કૃતિના' સર્વમાન્ય મહાન્ ગ્રન્થોના નિષ્કર્ષથી ભરપૂર એ સૂત્રો શ્રીમદુદ્ધવસંપ્રદાયને અનુસરનારાઓનાં સર્વસ્વ હોય, પણ ઈતર સાંપ્રદાયિકોને પણ અતિમનનીય છે. ઇન્દ્રિયનિગ્રહદ્વારા મહાન્ સંયમ કેવી રીતે સાધી શકાય અને સદાચારપૂર્વક, વર્ણાશ્રમ વ્યવસ્થાના રક્ષણ સાથે ભગવદ્ ભક્તિદ્વારા પ્રભુપ્રાપ્તિ કેવી રીતે થઇ શકે એનો મહાન્ આદર્શ ગ્રન્થકારે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એ ગ્રન્થની ટીકાઓ પણ શ્રીશતાનન્દ મુનિએ સંસ્કૃત ભાષામાં સવિસ્તર લખી છે. એમણે રચેલી બે ટીકાઓમાંની અર્થ દીપિકા ટીકા આ ગ્રન્થમાં છે. ટીકા વિદ્વત્તાપૂર્ણ છે અને ટીકા પ્રણેતાનાં સર્વદેશીય પાંડિત્યના જ્વલંત દૃષ્ટાંતરૂપ છે. આર્યસંસ્કૃતિના સેંકડો ભવ્ય ધર્મિક ગ્રન્થોના પુષ્કળ પ્રમાણોથી પરિપૂર્ણ આ ટીકા ખચિતજ વિદ્વાનોનાં હૃદયને આકર્ષે છે. શ્રીકૃષ્ણભક્તિરૂપ મહાપુરુષાર્થનું આર્યગ્રંથોમાં કેટલું ઉચ્ચતર સ્થાન છે તેના નિર્ણય માટે આ ટીકા પૂર્ણ સહાયક થઈ પડે તેમ છે. આ સંસ્કૃત ટીકાનું સરલ ગુજરાતી ભાષાંતર શ્રીમદુદ્ધવસંપ્રદાયના એક વિદ્વાન લેખક અને પત્ર સંપાદક રા. માધવલાલ કોઠારીએ કરેલું છે. વિદ્વત્તા- પૂર્ણ ટીકાનો અનુવાદ કરવો એ કઠિન કાર્ય છે. સંસ્કૃત ભાષામાંથી સંપૂર્ણ રહસ્ય ગુજરાતીમાં ઉતારવું સહેલું નથી. છતાં રા. કોઠારીએ એ કાર્ય ઘણીજ કુશલતાથી કરેલું છે. મૂલ તથા ટીકાનો સંપૂર્ણ આશય ગુજરાતીમાં ઉતારવા માટે તેમણે કરેલો અથાગ પ્રયાસ સફલ થયો છે. વળી અનુવાદકે એક યશસ્વિકાર્યથી ગ્રન્થના ગૌરવમાં ઘણીજ અભિવૃદ્ધિ કરી છે, અને તે કાર્ય ટીકામાંના પ્રમાણો ક્યા ગ્રન્થમાં કયે સ્થલે છે તે શોધીને તેની અનુક્રમણિકા તૈયાર કરીને પ્રકટ કરવાનું છે આ અતિ પ્રયાસથીજ બની શકે છે. વળી ગ્રન્થના જીજ્ઞાસુ માટે શાસ્ત્રી કૃષ્ણસ્વરૂપદાસે એક પ્રસ્તાવના લખીને માર્ગ સરલ કરી આપ્યો છે. આટલો મોટા આ મહાન્ ગ્રંથની કિંમત ત્રણ રૂપીઆ વધુ ઉચિતજ છે. શ્રીમદુદ્ધવસંપ્રદાય તથા બીજા પણ આવા સંપ્રદાયોમાં આ ગ્રન્થ આદરપાત્ર બનવો જોઇએ. આવો મૂલ ગ્રન્થનાં સંશોધન, અનુવાદ, સંપાદન વગેરે કાર્યમાં રસ લઈને અનુવાદકે શ્રીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય ઉપર અને ધાર્મિક સાહિત્યના અભ્યાસીઓ ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. આ ગ્રંથનો પુસ્તકાલયો તથા ધર્મજિજ્ઞાસુઓએ આદર કરવો જ જોઇએ એ કહેવાની ભાગ્યેજ જરૂર હોય.

आदर्श वैष्णव युवक.

(લેખકઃ—" શ્રીકૃષ્ણચરણરજ ")

આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક વિષે હું કંઇ પણ આલેખું ત્યાર પહેલાં વૈષ્ણવ સમાજ અને તેના કહેવાતા યુવકોનું સ્થાન ક્યાં છે તે વિષે જરા અવલોકન કરીશ.

અત્યારે વૈષ્ણવ સમાજ અને સમ્પ્રદાય ઉપર આફતની તલવાર લટકે છે. વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયમાં અઢળક દ્રવ્ય છે છતાંએ રચનાત્મક કાર્યોનો અભાવ છે. ઉપરાંત રૂઢિચુસ્ત અને પ્રાચીન પ્રણાલિકાવાદને વળગી રહેલ છે. વૈષ્ણવ સમાજ સમક્ષ કેટલાએ ગૂઢ પ્રશ્નો ઉભા છે. વિરોધીઓના પ્રબલ આક્રમણોની પરમ્પરા વિકરાલ સ્વરૂપે શસ્ત્રાસ્ત્રથી સજ્જ થઇને સમક્ષજ ઉભી છે, સામ્પ્રદાયિક અદભૂત સાહિત્ય પ્રસિદ્ધ કરવાના વાખાં છે વગેરે અનેક પ્રશ્નો હજુ અણઉકેલ્યા પડયા છે. સમ્પ્રદાયના આચાર્યશ્રીઓ સુધારો ઇચ્છે છે પણ તેને અમલમાં મૂકવાની ત્વરા કેમ બતાવાતી નથી? જે કંઇક અંશે કેળવણી પામેલા અને વિચારોની હવામાં આગળ વધેલા ગણ્યા ગાંઠયા યુવાનો છે તેઓ દ્રવ્ય સહાયતાને અભાવે આગળ આવી શકતા નથી. આ બધું ત્યારેજ થઇ શકે કે વૈષ્ણવ સમાજમાંથી આદર્શ યુવકો બહાર પડે.

આદર્શ યુવક કોને કહેવો? આદર્શ વૈષ્ણવ યુવકનું માનસ પ્રગતિના દરેક પગ પર આગળ ધપવાને તૈયારજ હોય, જેનામાં હિમ્મત હોય, ધૈર્ય હોય, આફતોનાં વાદળ સામે ઝઝુમવાની અપાર શક્તિ તે ધરાવતો હોય ત્યાગમૂર્તિ હોય, નિઃસ્વાર્થ હોય, શ્રીવલ્લભાધીશના સિદ્ધાન્તોમાં અટલ શ્રદ્ધા ધરાવતો હોય, જગતનાં બંધનોથી તો તે નિર્લેપ જેવો હોય છતાંય જગતની વચ્ચે તે ધૂમતાથી પાછી પાની કરતો ન હોય.

વૈષ્ણવ સમાજમાં અને સમ્પ્રદાયમાં પ્રવર્તી રહેલા પાપપુંજ સામે બાથ ભીડે-પોતાની જાત અને સંપત્તિની આહુતિ આપીને પણ એ પ્રવર્તી રહેલા અન્યાયોને દફનાવવા અને તેના બદલામાં-વૈષ્ણવ સમાજ અને સમ્પ્રદાયમાં પોતાના ઉન્નત વિચારોથી રસ, કલા અને ચૈતન્યના ફુવારા વહેવરાવે તેજ વૈષ્ણવ યુવક છે. તે પોતેજ સામ્પ્રદાયિક જ્ઞાનથી કેળવાયલો હોય તેમાં સંતોષ ન માને, પોતાના કુટુંબને કેળવે, પાડોશીઓને કેળવે, ગ્રામ્ય જનોને કેળવે, અને પોતાના દેશના મનુષ્યો કેવા કેવા જ્ઞાનથી વંચિત છે તે સમજવા પ્રયત્ન કરે, તેઓને સુધારે, આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક શરીરે સશક્ત હોય, તેટલામાંજ સંતોષ ન માને પણ પોતાના બાંધવગણોને પણ તેવાજ બનાવે. સાધનસંપન્ન હોય તો વ્યાયામશાળાઓ સ્થાપે, નહિ તો બીજા પાસે ખોલાવે. જેમાંથી ભવિષ્યના વૈષ્ણવ વીરોનું વીરત્વ ખીલશે. ભૂતકાળનાં વૈષ્ણવ વીરોને ભૂલાવે એવું શૌર્ય ખીલવે. આદર્શ ગોશાળાઓદ્વારા ગોરક્ષાધર્મ બજાવે.

જેનું વ્યોમ જેટલું વિશાલ હૃદય હોય, વિશ્વકલ્યાણ ચાહતાં નેત્રો હોય, પોતાના સત્ય અને ત્યાગના પ્રભાવથી અન્યને આંજવાની જેનામાં શક્તિ હોય, દેહના અણુએ અણુમાં, રોમેરોમમાં અનન્ય ભગવદ્‌ભક્તિભાવનું રક્ત વહી રહ્યું હોય, અન્યાયીઓના અન્યાય સામે ઝઝુમવાની અને ન્યાય પ્રવર્તાવવાની અતુલ ઇચ્છાશક્તિ હોય તેજ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

તે કાયર ન હોય, ભીરૂ ન હોય, પ્રલોભનો તેને લલચાવી ન શકે. સત્તાનો-ધનનો-વૈભવનો તેને મોહ ન હોય, જગતની કોઇપણ શક્તિ તેને તેના નિશ્ચયમાંથી ડગાવી ન શકે; એવો એ અજેય અને અડગ-ઉન્નત-ગિરિના શૃંગ રૂપ આદર્શના શિખર પર તટસ્થપણે ઉભો રહે તેજ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક!

આદર્શની સિદ્ધિ માટે કેના થવા તત્પર બનતો, શાંચ પર આવટ પડતાં ઓંચની પણ પરવા કરતો ન હોય, વૈષ્ણવ સમાજમાં પ્રચલિત એવા કુરિવાજોને પોતાના વ્યક્તિત્વના ઓજસથી દૂર કરવા મથતો, વિનાશ પંથે વહી જતા વૈષ્ણવ સમાજ અને સંપ્રદાયનો વિકાસ સાધવા સતત પ્રયાસો આદરતો, આવી ઉદાત્ત ભાવનામાં વિહરતો યુવક તેજ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

---

* આ લેખ ૧૯૮૮ ના આષાઢ માસના ' ભાટિયા યુવક ' માસિકમાં પ્રકટ થયેલ " આદર્શ ભાટિયા યુવાનનું શબ્દચિત્ર " એ લેખ ઉપરથી ફેરફાર કરીને આલેખવામાં આવ્યો છે. " શ્રીકૃષ્ણચરણરજ. "

વૈષ્ણવ સમાજ કુકર્મોની ગર્તામાં સબડતો હોય, સમ્પ્રદાયના ઉદ્ધારથી રણહાક વાગતી હોય, દેશમાં ત્રાસ અને જુલ્મોની ઝડીઓ પ્રવર્તી રહેલી હોય, અને સારૂંયે વિશ્વ ક્રાન્તિના ભીષણ કાળમાંથી પસાર થતું હોય એવે પ્રસંગે જેનું યુવાન ખમીર. ઉકળી આવે છે-આત્મભોગની ભાવના પ્રકટે, મારીને નહિ પણ મરીને દેશને અને વૈષ્ણવ સમાજને આફતોના આભમાંથી છોડાવાને સ્વર્ગને આરે ઉતારે એજ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. સમ્પ્રદાયયજ્ઞના રણનાદ સાંભળી એને ખાણું ન સૂઝે, રંગરાગ ન સૂઝે, માની લીધેલી એ દુન્યવી ફરજો ઘડીભરને માટે ભૂલી જાય તેજ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. નવયુગ ઘડવાની મહત્વાકાંક્ષા સેવતો હોય, પોતાના જીવન સંસારમાં શ્રીવલ્લભાધીશ્વર પ્રતિપાદિત વૈષ્ણવત્વને મોખરે સ્થાપી, દેહ અને આત્માને દમી, મનને શુદ્ધ, દૃઢ અને પવિત્ર બનાવી વૈષ્ણવસમાજ અને સંપ્રદાયને ચરણે પોતાનું જીવન ધરે અને પોતાની જીવનનૌકાને-તોફાની સંસાર મહાસાગરેથી નિર્ભયપણે હંકારી જાય. અને આખરે આખરે સત્ય, નીતિ અને ન્યાય સાથે સમાનતાના ધોરણમાં સમસ્ત જીવન રસવિસને, એ માર્ગે જીવન ઘડવા પ્રેરે એનુંજ નામ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. વૈષ્ણવ સમાજ અને સમ્પ્રદાયનો ખરો ઉત્કર્ષ ત્યારેજ થશે કે જ્યારે ઘરેઘરમાં આવા ઉચ્ચ આદર્શનીય વૈષ્ણવ યુવકો બહાર પડશે.

નામજ. નહિ અને શેમાંથી લીધો તેનું નીશાન પણ નહિ. ત્યારે મને શંકા થઈ કે ઉક્ત લેખના લેખક કોણ? શાસ્ત્રી ચીમનલાલ કે શાસ્ત્રી વસંતરામ! હમણા એક શીરસ્તો બનેલ છે કે પ્રો. મૈત્રીએ બંગાળી પુસ્તકનો અનુવાદ પોતાના નામથી વળી મૌલિક કૃતિ જણાવી પ્રકટ કરી પાછળથી પોલ પકડાઈ ત્યારે પ્રો. મૈત્રી ઢીલા પોચા થયા. માટે આ લેખ કોની કૃત છે તેનો જવાબ શાસ્ત્રી ચીમનલાલ આપશે!

• • • •

સંપ્રદાયમાં વયોવૃદ્ધ વિદ્વાન બે છે. એક તો શ્રીયુત પ્રો. રત્નગોપાલજી શાસ્ત્રી, બીજા શ્રીયુત પટવારીજી સાહેબ છે. હમણાં પ્રોફેસર સાહેબ નિરુદ્વિગ્ન જીવન ગાળી, પુષ્ટિ સ્વરૂપનું સ્મરણ કરી, શ્રીસુબોધિનીજીના વાચનમાં તથા સાંપ્રદાયિક સાહિત્યના પ્રકાશનમાં બાકી રહેલો કાળ નિર્ગમન કરે છે. ત્યારે શ્રીપટવારીજી એક મહાઉપાધિમાં આવી પડયા લાગે છે. શ્રીનાથદ્વારાની વર્તમાન પરિસ્થિતિને અંગે ઉપસ્થિત થયેલી ચર્ચામાં પટવારી સાહેબે મુંબઈની સભાના પ્રમુખ તરીકે ઠરાવો પ્રસિદ્ધ કર્યા. પરંતુ તે લખતા પહેલા મુરબ્બી, વડીલ, પૂજ્ય પટવારીજીને એક વિનંતિ કરી શકું કે આપ વૃદ્ધ થયા છો, માટે આત્મકલ્યાણાર્થે પુષ્ટિ સ્વરૂપનું ધ્યાન સ્મરણ કરી, (થવાનું જે થવું હશે તે થશે! શ્રીગોવર્ધનધરણની ઇચ્છા !.એ રસરસિકેંદ્ર પ્રભુ તો એમની ઇચ્છામાં આવે તેમ કરતા હશે. તેમાં, તમે, કે સંપ્રદાયના મોટા લીડરો, કે આચાર્યો, વૈષ્ણવો, સુધારકો શું કરવાના હતા! માટે પ્રભુ સ્મરણ કરીને) એક ઉત્તમોત્તમ પુસ્તક વૈષ્ણવ પ્રજાને વારસામાં અર્પણ કરો તો કેવું? આપ પરમ ભગવદીય છો માટે પ્રભુ ઇચ્છા બલીયસી માની ઈશ્વર સ્મરણ કરો.

• • • •

"ગુજરાતી" ૩ સપ્ટેમ્બર સને ૧૯૩૩ ના પત્રમાં મહાગુજરાતના સાક્ષરરત્ન દુર્ગાશંકર કેવળરામ શાસ્ત્રી શું કહે છે? "શ્રીવલ્લભાચાર્યના કનકાભિષેકની ઐતિહાસિકતા વિષે પ્રચલિત મતની અવગણના કરીને ચર્ચા કરનાર શેઠ. રંગીલદાસ તથા તા. ૨૭-૮-૩૩ના "ગુજરાતી"માં (પૃ. ૧૦૬૩ મા) તે ઉપરની નોંધમાં "કનકાભિષેકની ઐતિહાસિક સત્યતા પુરવાર કરવા માટે સ્વતંત્ર સાચા નિમિત્ત પુરાવાઓ" માટે માગણી કરનાર "ગુજરાતી"ના સંપાદક પણ 'અશ્રદ્ધાળુ ન ગણાય? અમૃતલાલ હ. પારેખ.

ચર્ચાપત્ર

પર ધ્યાન ન આપી લખાણ પણ ન હોય તેથી શંકા શું છે? અને કદાચ નિર્ણય કરવા પ્રેરાય તો વૈષ્ણવો પ્રેરાશે, તે પોતે તેમ કરી શકે છે તેમાં લેખકને શું? શા માટે તે શ્રીશંકરાચાર્યના અનુયાયી પોતાના જ આચાર્યના જન્મ માટે ૮૦૦ થી ૧૦૦૦ વર્ષનો ફરક જુદાં જુદાં પુસ્તકોમાં દર્શાવે છે તેનો નિર્ણય કરવા મહેનત કરતા નથી?

શંકા નં. ૨ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના ગ્રન્થોમાં પોતાના માટે અગ્નિસ્વરૂપ વાપર્યું તે ઉચિત કે કેમ?

કોઇ પણ વ્યક્તિને પોતાનો વાંક અને દોસો દેખાતો જ નથી. તેમાં પણ જેને ઇર્ષ્યા અને દ્વેષ રૂપી કમળાએ ઘેર્યો હોય તે તો કયાંથી જ દેખી શકે, તેમ લેખકને પણ દોષ જ ભાસે છે. શ્રીશંકરાચાર્યજી કહે છે કે परब्रह्म नित्यं तदेवाहमस्मि પરબ્રહ્મ નિત્ય છે, તેજ હું છું અને अहंब्रह्मास्मि-હું બ્રહ્મ છું" એવો જ્ઞાનોપદેશ તેમના અનુયાયીઓમાં મુખ્ય છે. શું લેખક પણ સ્વ સિદ્ધાન્તથી અજ્ઞાત છે, કે જાણવા છતાં સ્વમુખથી પોતાના ગુરૂ માટે ન બોલાય તેથી વૈષ્ણવોને નિમિત્ત આપી બોલાવવા ઇચ્છે છે, ધન્ય છે તેમની બુદ્ધિને, જયારે શ્રી શંકરાચાર્યજી જેવા બ્રહ્મને તો ફક્ત નિર્ગુણ નિષ્ક્રિય માનનાર પોતાને હું બ્રહ્મ છું એમ વદે તે ઇષ્ઠ અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો અગ્નિસ્વરૂપે લખે તે માટે શંકા અને ન્યાય કરવો?

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો એક જ પરબ્રહ્મને સર્વભવનસમર્થ, નિર્ગુણ અને સગુણ, ક્રિયાવાન અને નિર્લેપ પણ એવું સર્વવિરુદ્ધધર્માશ્રય છે એમ ફીલોસોફી પ્રકટ કરનાર પોતાના સિદ્ધાન્ત પ્રતિપાદન કરતા ગ્રંથમાં કે જેના એકેક શ્લોકમાં આચાર્યત્વ વરેલું છે અને અવિદ્યા રૂપી રજનો નાશ કરતા એવી ફીલોસોફી તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રકટ કરતાં પોતાને (લૌકિક અગ્નિ કે જેનો સ્પર્શ થતાં જ સર્વ ભસ્મીભૂત થાય તેવો નહિ પણ) અલૌકિક, આધિદૈવિક અગ્નિસ્વરૂપે પોતાને વાણીદેવતાના પતિરૂપે દર્શાવે તેમાં શું શંકા? વેદમાં પણ "ब्राह्मणोस्य मुखमासीत-अग्निर्मूर्धा" ભગવાનનું મુખ બ્રાહ્મણ છે, અગ્નિ ભગવાનનું મસ્તક છે ઇત્યાદિ વાકયો સ્પષ્ટ છે, તે લેખક શું નથી જાણતો? અને તે પ્રમાણ લઇને તો હજારો બ્રાહ્મણો ભલે પછી બ્રહ્મ તેજવાળા હો યા ન હો પણ ભાવિક પાસેથી બ્રાહ્મણ **ભગવાનનું મુખ છે, અગ્નિરૂપ છે ને તેમાં હોમેલું એટલે બ્રહ્મભોજન કરાવેલું તે ભગવાનને પહોંચે છે એમ મનાવી પૂજા ગ્રહણ કરે છે.** શું લેખક બ્રાહ્મણો મુખઅગ્નિરૂપ નથી એવું દર્શાવી આ પ્રથા બંધ કરાવવા ઇચ્છે છે? જો તેમ ન ઇચ્છતો હોય તો પછી શુદ્ધ બ્રાહ્મણ કુળમાં, સંપૂર્ણ રીતે બ્રાહ્મણત્વ ધરાવનાર, શુદ્ધ સનાતન વૈદિક ધર્મની ધર્મપતાકા ફરકાવતાં આચાર્યત્વે ઉપદેશ આપી નિર્ણય ગ્રન્થમાં અવિદ્યારૂપી રજનો નાશ કરવા પોતે પોતાને અગ્નિસ્વરૂપ એવા દર્શાવી ધર્મનો નિર્ણય કરે અને નિઃશંક અગ્નિ સ્વરૂપ કહે તેમાં શું દોષ? વાચકે યાદ રાખવું જે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી **પોતાના શુદ્ધ આત્મસ્વરૂપની વિસ્મૃતિવાળા ન હતા પણ આત્મસાક્ષાત્કાર એટલે આત્મસ્વરૂપનો અનુભવ કરનાર હતા** તેથી તેઓશ્રી, જેમ મંત્રદ્રષ્ટા ઋષિઓ અનુભવ કરી લખી ગયા તે સત્ય છે તેમજ, જે લખે તે સત્ય જ છે અને તેમાં આત્મશ્લાઘા જેવું કાંઇ પણ નથી.

શંકા નં. ૩ વાણીનો સંયમ કોણે ખોયો ને મૂર્ખ કોણ?

પૂર્વ આચાર્યોમાં જેમની ફીલોસોફી અને પ્રમાણો ધર્મવિરુદ્ધ જણાય તેવાઓને નામ નિર્દેશ આપ્યા સિવાય પ્રચ્છન્નબૌદ્ધ, આસુર, પાખંડી કે લખાણ મૂર્ખતાવાળું છે એવું લખે તેમાં શું થઇ ગયું? શાસ્ત્રો ભણનારા શાસ્ત્રીઓ પણ જોઇ શકતા નથી જે કોઇ પણ નવીન વક્તવ્ય સિદ્ધાન્ત સમજાવવા માટે જન સમૂહ સમક્ષ કથવું હોય ત્યારે પ્રથમ લઘુતા દર્શાવતા સિદ્ધાન્ત માટે તેવા શબ્દો વાપરવા જ પડે છે અને તેમ કરવામાં લેખકના આચાર્ય પણ બચી શકયા તો નથી જ અને શ્રીશંકરાચાર્યજીએ પણ બાહ્યમતાનુયાયી સામે ગ્રન્થો રચતાં પોતાના જ ગ્રંથમાં "अन्ये पाखंडिनः सर्वे ज्ञानवार्तासु दुर्बलाः બીજા બધા પાખંડીઓ છે, અને જ્ઞાનની વાર્તાઓમાં દુર્બલ છે એમ સ્પષ્ટ કહે છે તો શું ઉપરનો ઇલકાબ સાથે સાથે તેમને પણ લાગુ નહિ પડે? વિશેષ તો લેખક પોતે જ જ્યાં નામ નિર્દેશ સિવાય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ અસુર પાખંડિ, વિ. શબ્દો વાપરેલા છે અને તેવું શ્રીગીતાજીમાં પણ દર્શાવેલું જ છે, ત્યાં (કૌંસ કરી) વચમાં શ્રીશંકરાચાર્યજીનું નામ મુકીને તે બધા શબ્દો ફક્ત શ્રીશંકરાચાર્યજીને જ કહ્યા ન હોય તેમ

એવો પ્રબંધ થવો જોઇએ, જે સેવામાંથી અમુક ગોરખીના હિસાબથી તેઓને અલગ આપે. અથવા સેવા દેવાની વાત મંદિરથી અન્યત્ર કરે. આમ કાયદો કરવાથી બધી વાત સચવાય તેમ છે.

એક બીજો અન્યાય—શ્રીનાથજીના દ્રવ્યની દેખરેખ માટે નીમેલી કમીટીમાં કોઇપણ અન્ય (શ્રીનાથજીને સંબંધ ધરાવતા) રાજાઓને નિમ્યા નહીં તેનું કારણ શું? સાંભળવા પ્રમાણે જ્યારે ઉદેપુર નરેશ તરફથી શ્રીજીને ભેટ થયેલી જાગીરની ઉપજ ફક્ત વાર્ષિક રૂ. ૬૦ થી ૭૦ હજાર રૂપીઆની છે, ત્યારે કોટાનરેશ તરફથી શ્રીજીને ભેટ થયેલી જાગીરની ઉપજ વાર્ષિક રૂ. ૧ થી ૧ાા લાખની છે. એવીજ રીતે ઇતર વૈષ્ણવ અને ધર્મચુસ્ત રાજાઓના રાજ્યમાંથી ઘણાં મોટા પ્રમાણમાં શ્રીજીને ભેટ થયેલી જાગીરની ઉપજો છે. કોઈપણ રાજાઓના તેમજ તેઓના પ્રતિનિધિઓને કમીટીમાં સામેલ નહીં કરતાં ફક્ત પોતાનાજ હાથ નીચે સત્તા રાખવા માટે કમીટીના સદ્ગૃહસ્થોને કાષ્ઠના પુતળાની માફક આગળ ધરીને ઉદેપુર રાજ્ય પોતાનો કબજો જમાવવા માગે છે એજ સ્પષ્ટ તરી આવે છે. આ શતરંજબાજ કમીટીના સદ્ગૃહસ્થો જાણે છે કે નહિ તે પ્રભુ જાણે.

ના. મહારાણાને જોઇતું હતું અને વેંઘે કર્યું. શ્રીનાથજીની સત્તા ઉપર પોતાનો કાબુ જમાવવા માટે ના. મહારાણાનો પહેલેથી ઇરાદો હશે કે શું તે કાંઈ સમજાતું નથી. તેમાં વળી કમીટીના સદ્ગૃહસ્થોએ મદદ કરી. પણ વૈષ્ણવો કમીટીને પૂછી શકે કે તમોને શ્રીજીની વ્યવસ્થા કરવા કોના તરફથી મોકલવામાં આવ્યા છે? તમે કયી સંસ્થાના નેતા છો?

વિશેષમાં તો, કમીટી ઉપર પણ ઉદેપુર તરફથી બે ગૃહસ્થો નિમાયા છે, બતાવો, એ કમીટી કરી શકવાની છે શું? હા માં હા મેળવી શ્રીજીની સત્તાને અને શ્રીપ્રભુચરણની રાજ્યસત્તાને ઉદેપુર દરબારના હાથમાં આપવી એ સિવાય બીજું કંઈ થવાનું નથી. સમસ્ત વૈષ્ણવોનો પોકાર એ છે જે જો કમીટી નીમે તો સાતઘરના શ્રી ગો. બાળકોજ નીમી શકે. શ્રીનાથજીના સંપૂર્ણ હકદાર શ્રી ગો. બાળકોજ છે, અને જો તેમ ન થાય તોજ પહેલાની કમીટી, જે શ્રીતિલકાયિતશ્રીએ સ્થાપેલી તે ઉચિત છે. જેમાં ચાર શ્રીગો. બાળકો ચાર રાજા તથા આઠ વૈષ્ણવો તરફથી ભાવુક શ્રદ્ધાવાળા સદ્ગૃહસ્થો હતા. ચાલુ કમીટીમાંના કેટલાક અંતર સુધારકપક્ષી અને કેવલ નાસ્તિકો (જેઓ પુષ્ટિમાર્ગને જાણતાજ નથી) એવાઓને સ્થાન શ્રીતિલકાયિતશ્રી ન જ આપત. શ્રીગો. બા. વિના શ્રીજીને ત્યાંની સેવા રીત કોણ જાણે છે? શ્રીનાથજી એટલે બીજા દેવસ્થાનો જેવું એક પૂજ્યસ્થાન માત્રજ નથી. શ્રીગો. બા. ની કમીટીની અવશ્ય જરૂરત છે, તેમનોજ હક્ક છેજ. કમીટીના પગલાં શ્રીજીદ્વારમાં પડતાંની સાથેજ શ્રીદ્વારકાધીશ અને શ્રીજીનો અન્નકૂટનો વિરુદ્ધ પ્રસંગ બન્યો ન જાણે આગળ શું થશે? સંભળાય છે કે, શ્રીજીની કુલ મિલકતની ગણત્રી આવતી સાલે કરી બહાર જાહેરમાં લાવવી છે. જો તેમ થશે તો આખી દુનીયાની નજરે શ્રીજીની દોલત ખુંચશે. અને એનું પરિણામ મહાન ભયંકર આવશે. માટે ભાવુક અને પ્રેમી વૈષ્ણવો તરફથી એક કમીટી થાય. અને ત્યાં શ્રી ગો. બા. ની કમીટીને મેળવી, એક પ્રખર આંદોલન કરવાની જરૂર છે. ટુંકામાં ઉદેપુર દરબારે જેવી રીતે જૈનીઓના સ્થાન શ્રીકેસરીયાજીને સ્વતંત્ર કરી દીધું તેમજ અહીં પણ થાય તે પહેલાંજ વૈષ્ણવો ચેતે તો સારૂં. પણ ઉદેપુર દરબારને એમનાજ પોતાના અને પોતાનાજ રાજ્યના ભલાને માટે અમો સર્વે પ્રાર્થીયે છીએ કે આપના આગલના રાજાઓના વચનો જુઓ શું લખી આપ્યું છે? શ્રીમહારાજાધિરાજ મહારાણાશ્રી ભીમસિંહજી હુકમ કરે છે કે:—"તામ્ર લેખથી શ્રીજીને નીચે વર્ણવેલાં ગામો અને શહેરો ભેટ આપવામાં આવે છે વસુલાત, હાંસલ, લાગ, લવાજમ (હાજર બેહદ) ઝાડરોપા હિલ્લા અને સીમા એ બધું શ્રીજીના તાબામાં છે. જો મારા બીજનો હોય તો કોઇએ આ બાબત વાંધો ઉઠાવવો નહી.

શ્રીમહારાણા ભીમસિંહજી ફરમાવે છે કે:—શ્રીજીનાં બાગો અથવા શ્રીગુસાંઈજી મહારાજની ખાનગી જમીનને કોઇપણ અડચણ કરવી નહી તેમના ઉપર કોઇ હુકમ અથવા ફરમાન કર નાખવો નહી. નાથદ્વારામાં ઉભી થતી ફરીયાદો દાવા અથવા જે જે બાબતોમાં ન્યાયની જરૂર પડે તે ત્યાંને ત્યાંજ આપવામાં આવશે. તેમાં કોઈ વચ્ચે પડશે નહીં. શ્રીગુસાંઈજી જે ચુકાદો આપશે તે મારે કબુલ મંજુર છે. તે શહેર અને વેપારી માલની જકાત (શ્રીનાથ-

હાથ અને તેના પેટા ગામોની) અન્નઆવકથી (પંખાઈ) ફી જે અહેર બજારમાંથી લેવાતી હતી. તે કીંમતી માહુપર કર થાિ દરવાજે લેવાતી તમામ હવાલી અને લાગત. અમે તે લાગતના કર એ બધું શ્રીજીને બક્ષીસ આપીએ છીએ.

પરદેશથી તમામ વસ્તુઓ જે વૈષ્ણવો આયાત કરતા હતા તે વસ્તુઓ દેશી અગર પરદેશી હોય અને નાથદ્વારામાં વાપરવા માટે હોય તો તેના પર કર લેવામાં આવશે નહીં. તે સદેસના અને તેના ગામના ગામોમાં શ્રીજીના પવિત્ર હકને ટેકો આપવામાં આવશે. જે મારા લોહીના હો અને મારા નોકરો હો તો આ હુકમનો સદાકાળ અને નિરંતરને માટે માથે ચઢાવજો જે કોઈ આ ભેટ ખાઈ લેશે તે આઠ હજાર વરસ સુધી નરકમાં કીડો થઈને રહેશે. મ.વ શુ. ૧ સં. ૧૮૬૫. મહારાણા ફતેહુસંઘ ઉપરના મોટા અક્ષરો ઉપર અમે ધ્યાન ખેંચીએ છીએ. દીવાની ખેંચી લીધી તેમજ જકાત પણ અવશ્ય નાખી, અને શ્રીગુસાંઈજીને પરતંત્ર બનાવવા ઉક્ત લખાણ સંકટના સમયમાં શ્રીતિલકાયિત પાસે હઠાગ્રહથી લખાવરાવ્યું તે શું ન્યાય છે ? કાંકરોલીના શ્રીગોસ્વામીઓને તેમજ કમીટીને તથા લાગવગવાળા સાહુકાર શ્રીજીના કૃપાપાત્રોને વિનંતિ છે કે આ શું થઈ રહ્યું છે ? હમણાં બધું સારૂં દેખાય છે પણ આખરે કોઈ નહીં ચેતે તો વિચિત્ર પરિણામ આવશે એ ચોક્કસ છે. રાજસત્તા કોઈ વિચિત્ર પગલાં લે તે પહેલાં કાંઈક થવું જોઈએ. તેને માટે અમારા સર્વે વૈષ્ણવોના તન મન અને ધન તૈયાર છે. જ્યાં સુધી વહીવટી સૃષ્ટિ છે ત્યાં સુધી શ્રીજીને યત્કિંચિત્ પણ પરિશ્રમ નથીજ. પહેલાના સાહુકાર રાજાઓએ અર્પણ કરેલી સત્તા અર્ધભુક્ત બનાવી દીધી છે. શ્રીજી અર્ધભુક્તનો અંગીકાર કરતા નથી.

શ્રીનાથદ્વારાના વ્રજવાસીયોને પ્રાર્થના—વ્રજવાસીયો, શ્રીજીને માટે તમો પહેલાથીજ પ્રાણ આપતા આવ્યા છો. માટેજ શ્રીજી તરફથી તમારૂં પાલન સારી રીતે થઈ રહ્યું છે. જો શ્રીગો. બાલકનો હક આ લોકોએ કમીટી કરી હઠાવી લીધો તો તમોને જન્મથી જે પાલન કરવામાં આવે છે તે નકામું ખર્ચ સંભવ હાથમાં તો નહીં પણ આમજ ઉપર બંધ કરતાં અચકાશે નહીંજ:—શ્રીજીની મીલકત કેટલી છે ? તેની ગણત્રી કરવા ન દેવા તેમજ કમીટીના હાથમાં મહેનાધર ન સોંપવા. નહીં તો તમને પણ ધોકો છેજ.

હજુ પણ ઘણી ખાનગી ચાલબાજી ચાલે છે, એ મેવાડી ચાલબાજી શું નહીં કરે ? તે ખબર પડતી નથી. માટે વૈષ્ણવો તરફથી ભલે આજ કમીટીમાં ચાર રાજાઓ અને ચાર મહાનુભાવ શ્રીગોસ્વામી સંભાવિત હોય અને સેવા પ્રકાર માટે ગો. બા. સાત ઘરનામાંથી કોઈને પણ પરિચારક તરીકે નીમે. સાંભળવા પ્રમાણે જેવી રીતે કોટાની આવક કોટા નરેશે રોકી છે. તેવીજ રીતે શ્રીજીની સમસ્ત આવકની જે જે અખત્યારમાં હશે તે રોકશે, તે ધ્યાન રાખજો, પરિણામમાં આ લોક અને પરલોકમાં અપયશ કોને છે ? શ્રીનાથજી શ્રીગોસ્વામી બાલકોના ઠાકોરજી જ છે, ઉદેપુર નરેશના નથી. જે જે નરેશે શ્રીજી ઉપર દૃષ્ટિ કરી છે તેનું ફલ તેઓને કેવું મળ્યું છે તે ઇતિહાસ બતાવી આપે છે. માટે આખરે અમારી એજ પ્રાર્થના છે, જે શ્રીનાથજી પ્રભુ ઉદેપુર દરબારને સુબુદ્ધિ આપો. શ્રીગોસ્વામી બાલકોના હકને છીનવીને આજ સુધી કોઈ સુખી થયું નથી તેમ થશે પણ નહીં એ નિઃસંદેહ છે. જ્યાં શ્રીગોસ્વામી બાલક નથી ત્યાં શ્રીજી પણ નથી. શ્રીજીનો આત્મા શ્રીવલ્લભકુલજ છે એ શ્રીપ્રભુચરણની આજ્ઞા છે.

લી. શ્રીનાથદ્વારાનો યાત્રાળુ વૈષ્ણવ.

सांप्रदायिक प्रवृत्ति.

શ્યામઢાકમાં વતચર્યામનોરથ—શ્રીગોકુળ શ્રીસાત સ્વરૂપના પ્રથમ મુખ્ય સ્વરૂપ શ્રીમથુરેશજી બિરાજે છે. તે મંદિરના શ્રીતિલકાયત ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગિરિધરજી (તે શ્રી મુંબઈમાં શ્રીલાલજીની હવેલીના માલીક ગોસ્વામી શ્રીદ્વારકેશલાલજી) મહારાજ શ્રીમથુરા નગરી પાસે જતીપુરામાં શ્રીગિરિરાજજીનું પવિત્ર રમણીય સ્થલ છે, ત્યાં શ્રીમથુરેશજીનું મંદિર આવેલું છે, ત્યાં બિરાજે છે, અને તે મંદિરમાં તેઓશ્રીના શ્રીલાલજીના મંદિરના શ્રીબાલકૃષ્ણલાલનું સ્વરૂપ પણ બિરાજે છે, અને શ્રીતિલકાયત શ્રીગિરિધરજી મહારાજશ્રી અત્રે પધારી શ્રીબાલકૃષ્ણજીની સેવામાં ઘણોજ પરિશ્રમ લઈ હજારો વૈષ્ણવોને અલૌકિક દર્શનનો લાભ આપાવે છે. કેટલીક કેટલાએક વરસો ઉપર સાતસ્વરૂપના એક સ્વરૂપ શ્રીમથુરેશજી શ્રીવ્રજ ભૂમિમાં પધાર્યા હતા, તે વખતે શ્રીગિરિરાજજીમાં કેટલોક વખત બીરાજ્યા હતા. તે વખતે શ્યામઢાક

ઉપર એક મનોરથ થયો હતો. તે ઉપરથી કેટલાએક વૈષ્ણવોએ વિનંતિ કરવાથી શ્રીબાલકૃષ્ણજીને શ્યામઢાક પધરાવી એક મનોરથ કરશો એવી ઇચ્છા દર્શાવી એ વિનંતિથી અને વૈષ્ણવોનો આગ્રહ જોઇ તિલકાયત શ્રીગિરિધરજી મહારાજશ્રીની ઇચ્છા થઇ. જે એક મનોરથ કરી વૈષ્ણવોને અલૌકિક દર્શન કરાવવા એ નક્કી થવાથી શ્રીમથુરા ગોકુલ તથા જતીપુરા તથા શ્યામઢાકના આસપાસ ગામોમાં ખબર પડવાથી વ્રજવાસીઓ તથા વૈષ્ણવો તો આનંદનો પાર રહ્યો નહિ અત્રે શ્રીગિરિરાજજીમાં શ્રીનાથજીનું પ્રાકટ્ય થયું હતું અને હાલ શ્રીગિરિરાજજી સાત કોસમાં બીરાજે છે અને યાત્રાળુઓ અત્રે આવી સાત કોસની પરિક્રમાં કરે છે અને ચતુર્થ માસમાં અત્રે ૮૪ કોસની પરિક્રમાં કરવા હજારો યાત્રાળુઓ શ્રીગોસ્વામી મહારાજશ્રી સાથે કરે છે ત્યારે શ્રીગિરિરાજજીમાં આઠ દિવસ ડેરા પડે છે, મોટી જાત્રા ભરાય છે અને શ્રીગિરિરાજજીના મુખારવિંદ ઉપર શણગાર થાય છે અને કુંડવારા તથા દાનના મનોરથ થાય છે. દીવાલી ઉપર અનકોટનાં દર્શન થાય છે. ત્યારે લાખો યાત્રાળુઓને અલૌકિક દર્શનનો લાભ મળે છે. આવા મનોરથો દર વરસે થાય છે, પણ શ્યામઢાક ઉપર આજ ત્રીસ વર્ષ અગાઉ શ્રીમથુરેશજી પધાર્યા હતા તે વખતે અલૌકિક મનોરથોના દર્શનનો લાખો યાત્રાળુને લાભ મળ્યો હતો અને શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી પધારવાના છે એ બીજો મનોરથ છે એવી રીતે અત્રેના વયોવૃદ્ધ વ્રજવાસીઓનું કહેવું છે. શ્યામઢાક જતીપુરા ગામથી ત્રણ માઇલને છેટે આવેલું છે. તે રમણીય સ્થાનમાં શ્રીનાથજીની બેઠક આવેલી છે. અને ઝરોની ઘટાથી સુશોભિત રમણીય સ્થાન છે. એવા પવિત્ર સ્થલમાં શ્રીકૃષ્ણ ગોપીજનો ગોવાળીઆઓ સાથે રમણ કરતા હતા. શ્રીનાથજીની બેઠક પાસે શ્યામ તળાવ આવેલું છે. એક મીઠા પાણીનો કુવો તથા એક નાની ધર્મશાળા આવેલી છે. આવા રમણીય પવિત્ર સ્થલમાં કઠણ હૃદયનો હરી તેનું મન પીગળ્યા વગર રહેશે નહીં. શ્યામઢાક ઉપર બે દિવસ પહેલાં ગોઠવણ કરવામાં આવી હતી અને શ્યામ તલાવના ઘાટ ઉપર એક કદમનું વૃક્ષ આવેલું છે તેના ઉપર વસ્ત્ર ટંગવામાં આવ્યાં હતાં. અને એ ઘાટ સરખો કરી સાજ સજવામાં આવ્યો હતો. એવી રીતે બંદોબસ્ત થયો હતો. આ વ્રતચર્યા (ચીરહરણ) લીલાનો મનોરથની તૈયારી થઇ રહેવાથી કારતક વદ સાતમને ગુરૂવારની માંગલિક સવારના રાજભોગના દર્શન થયા પછી નવ વાગે શ્રીબાલકૃષ્ણજીને સ્યાનામાં પધરાવ્યા હતા અને ગામેગામથી વ્રજવાસીઓ તથા વૈષ્ણવો તથા સન્નારીઓની મેદની થઇ હતી. સાડા નવ વાગે સ્વારી બંદુકો બહારથી અને વાજાઓ તથા નગારાઓના શરોદથી તથા ધ્વજપતાકા ઘોડેસ્વારો વગેરે અતિ ધામધુમથી શ્રીગિરિરાજજીની તળેટીમાં શ્રીદંડવતી શિલાથી શ્રીગિરિરાજજીના મુખારવિંદના સાષ્ટાંગ દંડવત કરી સ્વારી વાજતે ગાજતે આગળ ચાલી અને સુરભિકુંડ થઇને શ્યામઢાક પધારી શ્રીનાથજીની બેઠક પાસે શ્રીને પધરાવ્યા હતા. શ્રીને સામગ્રી ભોગ ધરાવવામાં આવ્યો હતો. શ્યામઢાકમાં હજારો વૈષ્ણવો તથા વ્રજવાસી સન્નારીઓથી તથા વાજાં, નગારાના શરોદથી તથા કીર્તનીઆ કીર્તન કરતા હતા અને વૈષ્ણવો ભજન કરતા હતા અને વ્રજવાસીની સન્નારીઓ રસીઆ ગાતાં હતા જેથી આ રમણીયસ્થાન આનંદ મંગલથી ગાજી રહ્યું હતું. ભોગ સરાવ્યા પછી શ્રીને સ્યાનામાં પધરાવ્યા અને સ્વારી વાજતે ગાજતે શ્યામ તલાવના ઘાટ ઉપર ચાલી અને ત્યાં શ્રીને પધરાવવામાં આવ્યા. તે ઘાટને ધ્વજપતાકાઓથી તથા ઘાટના પગથીઆ પાસે તલાવમાં ગોપીજનોનાં સ્વરૂપોને ગોઠવવામાં આવ્યાં હતાં. તથા ગાય માતાજીઓને શણગાર સજી એક બાજુ ઉભી રાખવામાં આવી હતી. વ્રજવાસીની કુમારિકાઓને ઉપર કલસ ધરી ઉભી રાખવામાં આવી હતી. અનાદિકાળમાં શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનોએ ચીરઘાટ ઉપર ચીરહરણ લીલા કરી હતી એવો ભાવ વૈષ્ણવોને થયો હતો. સાંજના પાંચ વાગે દર્શન ખોલવામાં આવ્યા હતાં. શ્રીતિલકાયિત શ્રીગિરિધરજી મહારાજશ્રી તથા વહુજી મહારાજશ્રી શ્રીની સનમુખ બીરાજ્યા હતા. બે કલાક સુધી અલૌકિક દર્શનનો લાભ હજારો વૈષ્ણવોને થયો હતો. આ કાર્યમાં જતીપુરાવાળા મુખ્યાજી પ્રહલાદજીની દેખરેખ નીચે વ્યવસ્થા હતી. તેઓએ તમનથી મેનત કરી આ કાર્ય પ્રશંસા પાત્ર કરી આપેલ હતું. તેઓને ધન્યવાદ ઘટે છે રાતના કેટલાક ગુરૂઓને પ્રસાદ લીધા બાદ શ્રીને સ્યાનામાં પધરાવી વાજતે ગાજતે સ્વારી જતીપુરા ચાલી આવી રીતે વ્રતચર્યા (ચીરહરણ) લીલાનો મનોરથ અતિ આનંદ મંગલ સાથે સંપૂર્ણ થયો હતો."

શ્રીભક્તિમાર્ગીય સાહિત્ય મંદિર—મુંબઇમાં શ્રીલાલબાવાના મંદિરમાં ચાલતાં ઉપર્યુક્ત કાર્યાલયને ગુરૂવાર તા. ૨૦–૧૧–૩૪ ના દિને સ્થાન પરિવર્તન કરી સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન ગો. ચિ. શ્રી ૬ શ્રીવ્રજના-

લાલજીને વરદ હસ્તે ખુરસી મૂકવાનો વિધિ થવાનો હોવાથી તે નિમિત્તે મજકુર દિને સાંજના ૭ વાગે સ્થાનીય મોટા મન્દિરના બગીચામાં ધર્માનુરાગી જનતાની એક સભા મળી હતી. તે સમયે કચ્છ માંડવી-વાળા પૂ. પા. ગો. શ્રીદ્વારકેશલાલજી મહોદય અન્ય બાલ ગોસ્વામીઓ, સમ્પ્રદાયના વિદ્વાનો અને સદ્ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવ ભાઈ બ્હેનોએ સારી સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી. શરૂઆતમાં શ્રીયુત દ્વારકાદાસ શાસ્ત્રીએ આમંત્રણ પત્રિકા વાંચી સંભળાવી હતી.

વ્યવસ્થાપકનું નિવેદન—ત્યારપછી ઉપર્યુક્ત બન્ને કાર્યાલયોના વ્યવસ્થાપક ગિરિધરલાલ જ. શાહે પૂ. પા. ગો. બાલકોને ભગવત્પ્રસાદી પુષ્પમાળા ધરાવ્યા પછી પોતાનો કાર્યાલય પરત્વેનો અનુભવ અને નિવેદન રજુ કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

સ્વધર્માનુરાગી સન્માનનીય બંધુઓ અને બ્હેનો !

આજના સુ અવસરે પરમવંદનીય પૂ. પા. શ્રીમંદ્દલ્લભરાજ કુમારોના પાદપદ્મમાં સદૈન્ય પ્રમાણ કરી 'શ્રીભક્તિમાર્ગીય સાહિત્ય મંદિર અને વાચનાલય પરત્વેનો મારો અનુભવ અને મારૂં નિવેદન રજુ કરૂં તત્પૂર્વે મારી પૂર્વ પરિસ્થિતિનો ટુંક પરિચય આપું તો તે અસ્થાને નહિ ગણાય. વિ. સં. ૧૯૭૯—૮૦માં સંપ્રદાય પ્રતિ વિરોધીઓ તરફથી પ્રત્યાઘાતક ચળવળ શરૂ થઈ. શ્રીમદ્વૈષ્ણવપરિષદ્નું સપ્તમાધિવેશન સ્થાનીય માધવબાગમાં ભરાયું. સંપૂર્ણ વિરોધી વાતાવરણ અને પ્રતિકૂળ સંજોગો હોવા છતાં સુકુશળ કાર્યકર્તાઓના પ્રયાસથી સફળ થયું, અને તેજ અરસામાં પ્રત્યાઘાતી ચળવળને પરાસ્ત કરવા આવશ્યક પ્રયત્નો થવા લાગ્યા તેમાં તે સમયના મારા જેવા ઉગતા જીજ્ઞાસુ માટે સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત જાણવા તથા સમજવા માટે સાહિત્ય વાચનની વિશેષ આવશ્યક્તા લાગતા તેનું સાવકાશ અવલોકન કરવાની શરૂઆત કરી અને તે અવલોકન કરતાં તેનો પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય તેની આવશ્યકતા જણાતાં એક 'સાહિત્યરસિક મિત્ર મંડળ' ની સ્થાપના કરી તેના દ્વારા સામાજિક સાહિત્ય સાથે ધાર્મિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ કરવાનો પ્રયત્ન કરતાં તે અમુક અંશે સફળ પણ થયો. અને તે વ્યવસ્થા લગભગ ત્રણ વર્ષ સુધી ચાલી પરંતુ ત્યારપછી ઉત્તરોત્તર મુંબઈની આર્થિક પરિસ્થિતિ વિકટ આવતાં અને સાહિત્યમાં રસ લેનારા અમને દરેકને વ્યાવહારિક ઉપાધિ વધતાં અમે સર્વે છૂટાં છવાયા થઈ જવાથી મંડળ બંધ પડયું. છતાં ભગવત્કૃપાએ મારી સત્સાહિત્ય પ્રચારની જીજ્ઞાસા ઉત્તરોત્તર વધતી ગઈ તેને સં. ૧૯૮૪ ના વિજયાદશમીના શુભ દિને નિ. લી. પૂ. પા ગો. શ્રીરણછોડલાલજી મહારાજે (શ્રીલાલબાવાના મંદિરવાળાએ) નિજ પિતૃચરણના સ્મરણાર્થે 'શ્રીજીવનેશ પુષ્ટિસિદ્ધાન્ત પુસ્તક ભંડાર' ખોલાવી તેની સઘળી વ્યવસ્થા રાખવાની અને આજ્ઞા કરી તે માટે પોતાના મંદિરમાં સ્થાન અને સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રકાશકો પાસેથી પુસ્તકાદિ સાહિત્ય મળી શકે તે સંબંધી સઘળી સગવડ સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર સારી રીતે થાય તે શુભ ભાવનાથી કરી આપી તેમાં વે. શા. સં. શ્રીયુત હરિકૃષ્ણ-શાસ્ત્રીજીનો પણ પ્રયત્ન હતો એ મારે ભૂલવું ન જોઈએ. તે દ્વારા સાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય લગભગ દસ માસ ચાલ્યું એટલાં ટુંક સમયમાં કાર્યાલય પોતાનું ખર્ચ સારી રીતે ઉપાડવા ઉપરાંત સાહિત્ય પ્રચાર પણ યોગ્ય રીતે કરતું હતું યાને પગભર થયું હતું. પરંતુ કતિપય વિઘ્નસંતોષીઓના કારણે તથા ભવિષ્યમાં પૂ. પા. મહારાજશ્રીના તથા મારા શુભ ઉદ્દેશો લીન થવાનો સંભવ લાગતાં મજકુર કામકાજ સંવત ૧૯૮૫ ના શ્રાવણ માસની આખરે બંધ કર્યું. તે સમયે સાનુકૂળ સંયોગે સ્વતંત્ર જવાબદારીથી પ્રચાર કાર્ય શરૂ કરવા ઇચ્છા રાખેલી તે મુજબ સં. ૧૯૮૮ ના દ્વિતીય આષાઢ શુક્લ ત્રયોદશીના દિને 'શ્રી ભક્તિમાર્ગીય–સાહિત્ય મન્દિર' ની વ્યવસ્થા કરવા નિશ્ચય કર્યો. અને તે માટે પૂ. પા. ગો. શ્રીરણછોડલાલજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા અને શ્રીલાલબાવામંદિરમાં યોગ્ય ભાડું લઇ સ્થાન આપવા વિજ્ઞપ્તિ કરતાં આપશ્રીએ પ્રસન્નતા પૂર્વક મારી યોજના માટે આશીર્વાદ સહ આજ્ઞા અને યોગ્ય ભાડું લઈ સ્થાન આપવા અનુગ્રહ કરી સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય એ ઉદ્દેશને લક્ષ્યમાં રાખી કાર્ય કરવા ખાસ સૂચના કરી ત્યારથી આપશ્રીના એ આશીર્વાદાત્મક વાક્સુધાએ હૃદય સ્થિતિ કરી સાહિત્યપ્રચાર સાથે સાહિત્યવાચનનો લાભ સામાન્ય સ્થિતિના ધર્માનુરાગીઓ લઇ શકે તે શુભ ઉદ્દેશથી શ્રીભક્તિમાર્ગીય પુસ્તકાલય અને વાચન વિભાગની પણ (મફત) વ્યવસ્થા કરી જેમાં મેં પોતે ખરીદેલું ધાર્મિક અને સમાજોપયોગી સાહિત્ય ઉપરાંત સાપ્તાહિક,

માસિકો અને અન્ય સામયિકો પણ વાંચવાં મળી શકે એવી ખાસ વ્યવસ્થા રાખવામાં આવી છે તેનો લાભ કેટલાક ધર્માનુરાગી સજ્જનો તેના ઉદ્દેશ અને નિયમોને અનુસરીને લઇ રહ્યા છે, અને વિશેષ પ્રમાણમાં ધર્માનુરાગીઓ લે એમ હું હૃદયથી ઈચ્છું છું ભવતુ ! આ પ્રમાણે ઉપર્યુક્ત બન્ને કાર્યાલયોની વ્યવસ્થા કર્યા પછી સ્થાનીય તેમજ બહારગામના સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રકાશક-બુકસેલરો અને સંસ્થાઓના કાર્યકર્તાઓ તરફથી મને ઉત્તરોત્તર અનુકૂલતા અને પ્રોત્સાહન મળ્યું તેમ તેમ મારી મહત્વાકાંક્ષા વધતી ગઇ તેનેજ હું મારા ઉપર ભગવત્કૃપા, વંદનીય ગો. બાલકોના શુભાશીર્વાદ, સામ્પ્રદાયિક સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો, સન્મિત્રો અને સદ્ધર્મ પરાયણ મહાનુભાવોના સહકારને આભારી માનું છું. આ કાર્યમાં હું નિમિત્ત માત્ર છું બુદ્ધિપ્રેરક શ્રીવ્રજરાજકુમાર પ્રભુ છે તેમની પ્રેરણાનુસાર જે કંઈ કરવા પ્રયત્ન કરું છું તેમાં તે સચ્ચિદાનંદ રસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની કૃપાથી સાફલ્ય મળે છે એજ મારું સૌભાગ્ય સમજું છું અત્યારે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લીધે તથા પ્રચારકાર્યને વિશેષ પલ્લવિત કરવા ઉપર્યુક્ત બન્ને કાર્યાલયોનું આજે અત્રે સ્થાન પરિવર્તન કરું છું તે સમયે મ્હારા જેવા અનેકશઃ ઉપર સર્વદા અનુગ્રહ રાખતા એટલુંજ નહિ પણ મારા દરેક સાંપ્રદાયિક કાર્યમાં પ્રોત્સાહન આપી મારા ભાવનું સીંચન કરનાર શ્રીવલ્લભકુલભૂષણ વિદ્યાનિધિ પૂ. પા. ગો. શ્રી ૬ શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદયે કૃપા કરી મજકુર કાર્યાલયો પોતાના શુભ હસ્તે ખુલ્લા મૂકવા માટે અત્રે પધારવા જે અનુગ્રહ કર્યો છે તદનુસાર આ અવસરે પૂ. પા. ગો. શ્રીદ્વારકેશલાલજી મહોદયે પધારવા કૃપા કરી છે તદર્થ હું આપશ્રીમાનોનો સહૃદય આભાર માનું છું અને આપશ્રીમાનોની કૃપા ઉત્તરોત્તર મારા ઉપર સર્વદા વૃદ્ધિ પામો એમ હું સહૃદય ઈચ્છું છું. તદનુસાર અન્ય ગો. બાલકો કે જેઓ મને સમયોચિત પ્રેરણા કરી મારી ફરજ બજાવવાની સૂચના કરી મારા કર્તવ્યનું ભાન કરાવી રહ્યા છે તે માટે તે સર્વેનો હું ઋણી છું તે સિવાય સ્થાનીય શાસ્ત્રી, હરિકૃષ્ણભાઈ, શ્રીયુત ભગીરદાર, શાસ્ત્રી હરિશંકરભાઇ, ડૉ. સી. એન. જોશી, ભાઇશ્રીઓંકારદાસ દાણી અને શ્રીયુત ગોપાલદાસભાઈ વગેરે સન્માનનીય ઇષ્ટ મિત્રો ઉપરાંત સ્થાનીય તેમજ બહારગામના વિદ્વાનો અને ધર્માનુરાગી ભાઈ, ભગિનીઓ કે જેઓ મારી પ્રત્યે સદ્ભાવ રાખી આવશ્યક સલાહ અને અનુકૂળતા કરી આપે છે તદર્થ તે સર્વેની સદ્ લાગણી માટે તે દરેકનો સહૃદય આભાર માનું છું અને મારા પર જે લાગણી સર્વેની છે તે મુજબ કાર્ય કરવા શ્રીહરિ મને શક્તિપ્રદાન કરે એજ તે પ્રભુના પાદપદ્મોમાં મારી સવિનય પ્રાર્થના છે.

સુજ્ઞો ! જે ઉદ્દેશથી મેં આ પ્રચારકાર્યની શરૂઆત કરી છે તેને સમયોચિત સાનુકૂળતા મળતી જાય છે. છતાં સત્યની ખાતર જણાવવું પડે છે કે લક્ષાવધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળી મુંબઇ નગરીમાં માસિક રૂપીયા બસોનું પણ સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય વેચાતું નથી આ મ્હારો અનુભવ છે. મારે ત્યાં સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય કરતાં 'ગીતા પ્રેસ' ગોરખપુર કે તેના જેવી અન્ય પ્રચાર સંસ્થાઓના સાહિત્યનો વિશેષ પ્રમાણમાં પ્રચાર થાય છે. માટે હું શ્રીમદ્વલ્લભસિદ્ધાન્તાનુરાગી વૈષ્ણવોને સવિનય સૂચન કરીશ કે આપણા સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પણ બહોળા પ્રમાણમાં ફેલાવો થાય તેને માટે તન, મન ધનથી પ્રયત્ન કરશો તોજ આપણી ભાવી પ્રજા ધર્માભિરુચિવાળી રહી શકશે. શ્રીબાલકૃષ્ણ પ્રભુ સર્વેને ધર્માનુરાગી બનાવો એજ ઇચ્છી ગો. બાલકોના પાદપદ્મોમાં પુનઃ પ્રણામ કરી તથા આપ સર્વેનો વિશેષ આભાર માની મ્હારું વક્તવ્ય સમાપ્ત કરું છું.

ત્યારપછી પં. હરિશંકર શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું હતું કે સંપ્રદાયનો પાયો કેવળ ભાવનાની ઉપર રચાયલો નથી. ભાવના હૃદયનો ધર્મ છે. ભાવના સાહિત્યથીજ ઉત્પન્ન થાય છે. બાહ્ય સંસ્કારો જ્યારે હૃદય પર પડે છે ત્યારેજ ઉત્તમ ભાવ થાય છે. સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રતિ વૈષ્ણવોની અભિરુચિ હજુ નથી થતી તે દીલગીર થવા યોગ્ય છે છતાં પણ દશ વર્ષમાં જે સાહિત્યનો પ્રચાર થયો છે કે જેથી સાધારણ ચર્ચા આજે વૈષ્ણવો પણ કરી શકે છે. સાહિત્ય પ્રકાશનની વ્યવસ્થા સારી રીતે ચાલી છે. પરંતુ તેને હૃદયના ભાવથી સત્કાર મહતની આવશ્યકતા છે. ભાઇ ગિરિધરદાસ શાહનો સાહિત્ય પ્રચારનો પ્રયાસ પ્રશંસનીય છે. વિ. કહ્યા બાદ શાસ્ત્રીજી હરિકૃષ્ણ વીરજીભાઇએ બોલતાં જણાવ્યું હતું કે જેણે શ્રીમદાચાર્યચરણનો આશ્રય નથી કર્યો, શ્રીસુબોધિનીજીના દર્શન શ્રવણ નથી કર્યા, શ્રીરાધિકાનાથ શ્રીકૃષ્ણની સેવા નથી કરી, તેનો જન્મ આ ભૂમંડલે નિરર્થક છે. એ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો રસ જ્યાં સુધી સાહિત્યાવલોકન નહિ કરીએ ત્યાં સુધી મળી શકશે કે જાણી શકશે નહિ. દીપક જેમ જે બાજુ પવન લાગે તે બાજુ ડગમગવા લાગે તે મુજબ સાહિત્યાવલોકન સિવાયના મનની સ્થિતિ સમજવી પરંતુ જે લે સાંપ્રદાયિક

સાહિત્યનું વાચન કર્યું છે તેને અમે તેના વંટોળીયાઓ આવે તો પણ ડગવાની આસ્તી નથી વિગેરે કહ્યા બાદ મુદ્રિત થયેલા સામ્પ્રદાયિક ગ્રન્થોની યાદી આપતાં સમજાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્અણુભાષ્ય એક અદ્વિતીય દાર્શનિક ગ્રન્થ છે. તેની પ્રશંસા સામ્પ્રદાયિકો સિવાય બહારના વિદ્વાનો કે ડૉ. ભાંડારકર જેવાએ કરતાં કહ્યું છે કે બ્રહ્મસૂત્રનો યથાર્થ અર્થ કરી તેને યોગ્ય ન્યાય આપ્યો હોય તો તે માત્ર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યનું અણુભાષ્યજ છે. સાહિત્ય મુદ્રણની પ્રવૃત્તિ પૂર્ણ રીત્યે ચાલી રહી છે પણ તેના પ્રચારની હવે ખાસ આવશ્યકતા બાકી છે. તેને દરેક વૈષ્ણવો લક્ષ્યમાં લેશે. સર્વદા સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તપ્રચારાર્થે પ્રયત્ન શીલ રહેતા ઉત્સાહી ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદયે આજે પોતાના શુભ હસ્તે 'સાહિત્ય મન્દિર' ની ઉદ્‌ઘાટન ક્રિયા કરી. જેની વ્યવસ્થા ભ. ગિરિધરલાલ શાહ ચલાવી રહ્યા છે જે પણ ઉત્સાહી છે તો વૈષ્ણવો તે સાહિત્ય મંદિરમાંથી પુસ્તકાદિ સાહિત્ય ખરીદી અને શ્રી વાચનાલયમાંથી વાચવા માટે સાહિત્ય મેળવી તેના પ્રચાર કાર્યને યોગ્ય ઉત્તેજન આપશો વગેરે કહી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારપછી શ્રીવલ્લભકુલ ભૂષણ પૂ. પા. ગો. શ્રી ૧ શ્રીવ્રજનાથલાલજી મહોદયે 'ધાર્મિક સાહિત્ય વાચન અને પ્રચારની જરૂરીઆત' વિષે કહ્યું હતું જે આ અંકના પ્રારંભમાં છે.

ત્યારબાદ જિ. જ. શાહની વિજ્ઞપ્તિથી પૂ. પા. ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી ઉપર્યુક્ત બન્ને કાર્યાલયો પાસે પધારી નિજ઼કરકમલે હસ્તે ખૂલ્લાં મૂક્યા હતા ત્યારબાદ આગન્તુક સજ્જનોનો પાન સોપારી અને 'પુષ્ટિમાર્ગ' નામક પુસ્તિકા ભેટ આપી વ્યવસ્થાપકે સત્કાર કર્યા બાદ સૌ વિખરાયા હતા.

ભુલેશ્વરમાં આનંદ—વિશ્વવિજેતા શ્રીગોકુલેશપ્રભુના પ્રાકટ્યનો ચિરસ્મરણીય દિવસ સં. ૧૯૯૭ ના માગસર સુદ ૭ નો આવવાનો હતો, વૈષ્ણવોમાં કંઇ આનંદની અભિવ્યક્તિઓ જણાતી હતી. શ્રીમંદિરો પણ ધ્વજપતાકાથી શણગારવામાં આવ્યા હતાં અને માગસર સુદ ૧ થી શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના મંદિરમાં શ્રીપાદુકાજીને કેસરસ્નાન થઇ રહ્યું, વૈષ્ણવો દિનપ્રતિ અતિ હર્ષથી પ્રફુલ્લિત મને આનંદમાં હર્ષભેર જોશભેર દર્શને જતાં. ધોળ હીંચ કીર્તનોનો આનંદ અનિર્વચનીય હતો. "કરુણા તે કરીને પધાર્યાજી" એ ધોળ કીર્તન ગાતાંજ પ્રભુ શ્રીગોકુલેશનાં ગાદીજી સ્વરૂપે દર્શન થયાં. મંદિરમાં ભારે ભીડ થઇ પડી, પ્રભુ દીનદયાલુ ભક્તવત્સલ શ્રીગોકુલનાથજીકી જયના ધ્વનિ સાથે દર્શન આપી રહ્યા હતા. દરરોજ સાતમ સુધી વૈષ્ણવો આનંદથી આ મંદિરથી પેલા મંદિર દર્શનની આતુરતાથી હર્ષભેર દોડતાં જતાં હતાં. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના મહામહોત્સવના પ્રાતઃસ્મરણીય પ્રભાતે વૈષ્ણવોના મનમંદિરમાં મોટો ઉત્સાહ આવી જતાં આજ હર્ષથી મંદિરમાં જતાં હતાં. ચોઘડીઆંના સરણાઇ નગારાના નાદથી શ્રીગોકુલ બીહારીલાલે દર્શન આપ્યાં. પાંચસો સાતસો માણસ વૈષ્ણવ જનતાથી મંદિર ઉભરાવા લાગ્યું. જોતજોતામાં તો મંદિરમાં સખત ભીડ થઇ પડી. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની પાદુકાજીએ પણ કેસરસ્નાનથી ઘંટનાદ, શંખનાદ સાથે દર્શન આપ્યાં. શ્રીકનૈયાલાલજીનાં ચિત્રજીએ પણ કેસરસ્નાનથી દર્શન આપી પ્રેમી વૈષ્ણવ સમાજને આનંદમુગ્ધ બનાવી દીધાં. દર્શનાર્થી અને કીર્તનીયાઓના આનંદનો પાર તો હોયજ શાનો. નોબત નગારાંના અવાજ સાથે રાજભોગ સમયમાં ગોકુલબીહારીલાલને તિલક થયું. "વધાઇકો દિન નીકો આજ વધાઇકો દિન નીકો" એ વધાઇ ધોળ કીર્તન ગાતાં વૈષ્ણવોનાં મન પ્રફુલ્લિત થઇ જતાં પ્રેમથી નિહાળીને દર્શન કરવા લાગ્યાં. આ સમયની શોભા જોતાં જાણે "હું પામર જીવ શું આલેખી શકું" દિવ્ય ભવનમાં બિરાજી ભક્તોના મનોરથ પૂર્ણ કરતા હોયની તેવોજ આનંદ ઉદ્ભવ્યો. કુમકુમના થાપા દ્વારે દ્વારે થયા. આનંદનો પાર ન રહ્યો. પ્રેમી ભક્તજનો કીર્તનીઆ વીગેરેએ પ્રસાદી કુંમકુંમ ત્યાં ફુલેલ ત્યાં ચંદન લીંપાં. આજના મહામહોત્સવનો મહાન દિવસના આનંદનો પાર નહતો, વૈષ્ણવોના શિરતાજ ભાલ તિલકકે રક્ષણહાર શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના પ્રાકટ્યદિને કયો વૈષ્ણવ આનંદ ન માને? ત્રણ વાગતાંજ વૈષ્ણવ સન્નારીઓ કળશ લઇ મંદિર તરફ જવા લાગ્યાં. સરકારી બેન્ડ ડંકા નિશાન સાથે વરઘોડો શ્રીગોકુલબીહારીલાલના મંદિરથી ચડી જાણે શ્રીગોકુલેશ પ્રભુ માલાતિલકનો વિજય કરવા જતા હોય અને વૈષ્ણવો પ્રભુશ્રીને જયધ્વનિ સાથે વધાવતા હોય તેવી રીતે ધોળ વધાઈ કીર્તનના આનંદ સાથે "બાજત કહાં બધાઈ ગોકુલમેં બાજત કહાં બધાઈ" કીર્તનીઆઓ પાછળ વૈષ્ણવ સન્નારીઓ કળશ લઇ પાછળ ચાલતી હતી. "આજે આજ આનંદને પેરરે વ્રજમાં થઇ રહી છે લીલા લહેરરે" શ્રીકૃષ્ણ કમલ મુખ નીરખવા ચાલો શ્રીનંદજીને દ્વાર રે "આજે નન્દમેરે જન્મ દિવસ છે રે હેલી. શણગાર સજું સર્વે પહેલી"

વધાઇ, ધોળ, કીર્તન ગાતાં વરઘોડો પસાર થયો હતો અને લગભગ પાંચસો સાતસો વૈષ્ણવ જનતાની સાથે બે કલાકમાં ગામમાં ફરી શ્રીગોકુળબીહારીલાલના મંદિરમાં પાછો આવ્યો હતો અને જાણે શ્રીગોકુલાધીશજી શ્રીસોરમજીની ગાદીના આતતાયિઓનો વિજય કરી પધારતા હોય તેવીજ રીતે મંદિરમાં પેસતાં કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કળશની ભેટ ઓઢાડવામાં આવી હતી, અને શ્રીના લાડીલા ભગવદીય વૈષ્ણવે કુદી પડી ભેટ બોલી કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કીર્તનીઆ વગેરે વૈષ્ણવ સમાજ મંદિરમાં પેસતાં શ્રીગોકુલબીહારીલાલે ઘંટાનાદ થતાં સંધ્યાનાં દર્શન આપ્યાં અને હાંચી લેવા આતુર ખડે પગે તૈયાર પ્રેમીજનો તૈયાર હતા. ત્યાં હીંચો લેવાની શરૂ થઈ "જીતને ડંક મારો નાથ રે." "શ્રીગોકુલનાથ પ્રગટ થયા રે, આવ્યો મહા ઓચ્છવ" "શ્રીવલ્લભ વર ઘેર આવીઆ આજ સખી વલ્લભ વર ઘેર આવીયા" તથા બીજાં ધોળ વધાઇઓ હીંચમાં લેવાઇ હતી અને કપડવંજ વૈષ્ણવ યુવક મંડળે મોકલેલી શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવની પત્રિકા ૨૮) હતી તે બાંટી દીધી હતી. પત્રિકાનો ઘણો સત્કાર થયો છે. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જયની સાથે વૈષ્ણવો વીખેરાયા હતા. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની કૃપાથી પણ તેવોજ આનંદ હતો. હંમેશાં દિનપ્રતિદિન શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના સેવકોનો આનંદ શ્રીપ્રત્યે વધે અને આવી ધર્મ પત્રિકા પ્રતિવર્ષે નીકળે એજ અંતરની અભિલાષા. દાસાનુદાસ-દોસી ફુલચંદ હરમચંદ.

કપડવંજમાં મહોત્સવ—કપડવંજમાં મહોત્સવ દર વર્ષની પેઠે અતિ આનંદથી ઉજવાયો. દિવસોથી વધાઇ બેઠેલી જ હતી. ઉત્સવના સાત દિવસોના આનંદનો પાર જ ન રહ્યો, ઉત્સવનો પહેલા રોજ વસંતરામ શાસ્ત્રી આવ્યા હતા. ગીતા વર્ગ તથા વ્યાખ્યાન છઠ્ઠના રોજ થયાં. સભામાં મહોત્સવ-પત્રિકા ભાઇ ધીરજલાલ ઓચ્છવલાલ શાહે વાંચી. તે પછી શાસ્ત્રીજીએ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. મદ્રાસથી ભગવદીય રતનલાલ દાણી આજે અહીં આવવાથી આનંદ આવ્યો હતો. ઉત્સવના રોજ કળશનો વરઘોડો ચડયો હતો. બેંડ સુંદર સ્વરથી આગળ વાજતે ગાજતે બધાયના ઉત્સાહમાં વધારો કરતું હતું. તે પછી સહૃદયો ભજન કીર્તન કરતા ચાલતા હતા. નાના બાળકોની ફોજે તો કમાલ કીધી હતી ભજન તથા જયધ્વનિ અને 'જે જે શ્રીગોકુલેશ'ના પવિત્ર ધ્વનિથી આખા ગામને ગજવી મૂકયું હતું. પછી નાતવાર મહાપ્રસાદ લઇને રાત્રે સમાજનો આનંદ લીધો હતો.

ગોધરામાં આનંદ—આ વર્ષે મહોત્સવનો આનંદ કાંઇ અદ્ભુત રીતે જામ્યો હતો. કળશ, વરઘોડો અને સમાજે આખા ગામનું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું. હજારથી ઉપરની સંખ્યાના વૈષ્ણવોએ ભજનાનંદનો લહાવો લીધો હતો. મહોત્છવની પત્રિકા મળતાં તેનો બધાયે સત્કાર કર્યો હતો.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ મહોત્સવ-કપડવંજ—આ વર્ષે શ્રીગુસાંઇજીના મહોત્સવ પર રાત્રે સભા રાખવામાં આવી હતી. પ્રારંભમાં ભાઇ ધીરજલાલ ઓચ્છવલાલ શાહે 'પત્રિકા' વાંચી હતી. તે પછી વસંતરામ શાસ્ત્રીએ શ્રીગુસાંઈજી પતિતપાવન છે અને પરમદયાળુ છે તે વિષે રોમાંચિજનક પ્રસંગો વર્ણવ્યા હતા. ઉપર ભગવદીય રતનલાલ દાણીએ શાસ્ત્રીજીનો ઉપકાર માન્યો હતો અને શ્રીગુરુદેવે કૃપા કરીને આ પ્રવૃત્તિ શાસ્ત્રીજી દ્વારા શરૂ કરાવી તે બદલ આપશ્રીની કૃપાનું સ્મરણ કર્યું હતું.

શ્રીગોકુલેશપ્રાદુર્ભાવમહોત્સવ મુંબાઈ—અત્રે મોટા મંદિરમાં બ્રહ્મવાદિવિદ્વત્સભા તરફથી શ્રીગોકુલેશ પ્રભુનો પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ઘણીજ ધામધુમથી ઉજવવામાં આવ્યો હતો. પ્રથમ દિવસે સભાપતિસ્થાન ગોસ્વામીશ્રી ૬ શ્રીદ્વારકેશલાલજી શ્રીવિઠ્ઠલેશરાયજી મહારાજે અલંકૃત કર્યું હતું. પ્રારંભમાં વધાઇ ગાન થયા બાદ પં. હરિકૃષ્ણ વીરજી શર્માએ શ્રીગોકુલેશના જીવનચરિત્રમાંથી ઘણી મુદ્દાઓની બાબત સમજાવતાં કહ્યું હતું કે—માળા અને તિલક માટે પોતાની સંપૂર્ણ દોલત ઘણાજ આનંદ સાથે પરિત્યાગ કરી સોરમજીમાં જઇ વસનાર સત્તરમી સદીના મહાન ધર્મરક્ષક શ્રીગોકુલેશ મહાપ્રભુ છે. ધર્મ વિનાના જીવનની કશી કિંમત નથી એ શાસ્ત્રીય સિદ્ધાંતને પોતાના જીવનમાં ઓતપ્રોત કરી લઇ તે સમયના મોગલ પાદશાહ જહાંગીર સામે પ્રાણાપંણે પણ તેઓશ્રીએ ધાર્મિક લડત લડી પોતાનું ધર્માચાર્યપણું સાર્થક કર્યું હતું. તેઓશ્રીનો પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ઉજવી ધર્મને ખાતર આત્મબલિદાન પણ કરવું પડે તો હરેક પ્રકાર કરવા તૈયાર રહેવાનો પાઠ આપણે શીખવો જોઇએ. ગોસ્વામી શ્રીકૃષ્ણજીવનજી મહારાજે 'ભક્તોની અવસ્થા' એ વિષય ઉપર બોલતાં જણાવ્યું હતું કે આજ કાલ પ્રેમને નામે ઘણોજ અનર્થ ચાલી રહ્યો છે. ખરો પ્રેમ પણ ઓછા લોકો સમજે છે. અતઃ તેનો દુરુપયોગ થતો દેખાય

કરવા, વિરોધીઓનું મુખમર્દન કરવા, દેશ દેશાવર ફરી જે કાર્ય કર્યું છે તે માટે આપણે જરૂર તેઓશ્રીના ઋણી છે. વગેરે કહી કપડવંજના શ્રીગીતા વર્ગ તરફથી શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઇએ જે મહોત્સવપત્રિકા બહાર પાડી છે. તેમાંથી સારાંશ દૃષ્ટાંતો સાથે સમજાવી તે પત્રિકાઓ મંત્રીના હાથે સભામાં વહેંચી આપી હતી. છેવટમાં સભાના મંત્રી શા. ધનશ્યામ જેઠાદાસ સાહેબે આજના માંગલિક દિવસનું સ્મરણ વૈષ્ણવોએ અવશ્ય રાખવું ઘટે, જગત ઉદ્ધારક શ્રીવિઠ્ઠલેશ મહાપ્રભુએ બતાવી આપેલા માર્ગે ગમન કરવા સર્વેએ ધ્યાન રાખવું જોઇએ, અને તે જાણવા માટે તેઓશ્રીએ લખી મુકેલા ગ્રંથોનું અવલોકન કરવું જોઇએ વગેરે વિવેચન કરી સર્વે વૈષ્ણવોનો તથા પ્રમુખનો આભાર માની શ્રીગુસાંઈજીના જયજયકાર સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. સભામાં શ્રીગુસાંઇજીના ચિત્રજી ઉંચા આસન ઉપર પધરાવ્યાં હતાં. વૈષ્ણવોએ ભેટ વગેરે ધરી પદો ગાયાં હતાં.

કોચીનમાં—સ્થાનિક શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય જ્ઞાન પ્રસારક યુવક મંડળના આમંત્રણથી અત્રેની પાઠશાળાના ભવ્ય મકાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીનો જન્મ મહોત્સવ ઉજવવા વૈષ્ણવ ભાઇઓ અને બ્હેનોએ મોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી સભાસ્થાન ભરપૂર કરી દીધું હતું. આરંભમાં મંગલ કીર્તનો થયાં બાદ શેઠ હીરાચંદ માધવજીએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ચિત્રજીને શ્રોતાઓના હર્ષનાદ વચ્ચે પુષ્પમાળા પહેરાવી હતી. પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ સુંદર રાગથી પ્રભુ સ્તુતિ ગાઇ હતી. ત્યારબાદ નારદ વાલ્મિકિનો સંવાદ બાળકોએ છટાથી સરસ રીતે ભજવી બતાવ્યો હતો. નાની નાની કોમળ વયના બાળકોના ટુંકા છતાં સુંદર ભાષણો શ્રોતાઓને મુગ્ધ બનાવી દેતા હતા. શાસ્ત્રી હાથીરામ રતનજી શર્માએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના જીવનચરિત્રની રૂપરેખા દર્શાવ્યા બાદ, પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૯૯ ની છે કરી જાહેર કરેલ, તેમાં ૧૫ બ્હેનો પણ આ શાળાનો લાભ લઇ ધાર્મિક તથા સંસ્કૃતનું જ્ઞાન સંપાદન કરે છે એવી રીતે જણાવવામાં આવ્યું હતું. છેવટ વિદ્યાર્થી વલ્લભદાસ કેશવજી પારેખ, સપ્રકાશ તત્ત્વદીપ નિબંધના શાસ્ત્રાર્થ અને સર્વ નિર્ણયની પરીક્ષામાં ઉત્તમ કક્ષાએ ઉત્તીર્ણ થતાં મેસર્સ મૂળજી જેઠા કું. ના માલીક શેઠ ચત્રભુજ ગોવર્દ્ધનદાસ તરફથી સુવર્ણપદક તૈયાર કરાવવામાં આવેલ, તે સંસ્થા દ્વારા શેઠ જેરામ જીવરાજના હસ્તે મંજુર. વિદ્યાર્થીને આપવામાં આવેલ. પછી શાહ હીરાચંદ માધવજી તરફથી પાઠશાળાના ગીતા વર્ગને નિત્યપાઠ માટે શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતાના રેશમી પુંઠાના પુસ્તકો, સોની હરિલાલ છગનલાલ તરફથી વિદ્યાર્થિનીઓને "કનકાભિષેકનો ઇતિહાસ," શેઠ હરિદાસ ચત્રભુજ તેમજ શેઠ જેરામ જીવરાજ તરફથી વિદ્યાર્થીઓને નારંગી અને નાનજી મેઘજી તરફથી પ્રસાદ, આવી રીતે ઈનામો આપવામાં આવ્યા હતા. બાદ હાજર થયેલ વૈષ્ણવ ગણનો આભાર માની શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીની જય ઘોષણા સાથે સભા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

ઉત્સવ પત્રિકા વિષે વિચારો—મહામહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી પત્રિકાનું લખાણ સર્વોત્કૃષ્ટ છે. એવી પત્રિકાઓ લખો અવારનવાર લખીને પુષ્ટિમાર્ગના વિરોધીઓને ભક્તિમાર્ગનું ખરૂં રહસ્ય સમજાવવામાં આવે એ અત્યન્ત ઇચ્છવા યોગ્ય છે. આવું સર્વોત્કૃષ્ટ લખાણ લખવાને માટે આપને જેટલો ધન્યવાદ આપું એટલો ઓછોજ છે. આપણો પુષ્ટિમાર્ગ કહેવાતા વર્ણાશ્રમ ધર્મ કરતાં અતિ ઉદાર છે તે ઉત્તમ રીતે સાબીત કરી બતાવ્યું છે. ધરમસીના શ્રીસ્મરણ.

આપના તરફથી શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વર પ્રાદુર્ભાવ મહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી સાભાર સ્વીકાર એજ. પ્રમાણે પ્રસંગોપાત્ત સંભાળી કૃતાર્થ કરશો. અધ કાલે એ પ્રભુ ચરણના જન્મોત્સવનો દિન એઓશ્રીના જીવન વૃત્તાંતપર કાંઇને કાંઈ પ્રકાશ પાડવાની ખાસ આવશ્યકતા હોયજ. જ્યારે ગઈ કાલે આપના તરફથી તે સંબંધી પત્રિકાઓ મળી અને તેજ ઉત્સવ નાયકનું દિવ્ય ચરિત્ર આલેખવામાં સહાયભૂત થઈ, અને સેંકડો શ્રોતાઓના સમક્ષ એ પત્રિકાદ્વારા ચાલુ જમાનાનો ચિતાર પણ રજુ કર્યો. આમ આપ સમયોચિત પત્રિકાઓ પ્રગટ કરી વાક્પતિની જીવનસુધાનું પાન કરાવનાર ભગવદીયોનો આ સંસ્થા સહૃદય આભાર માને છે. ભગવદ્ મંડળી ધોરાજી.

બંને મહોત્સવ વખતે બહાર પાડેલી પત્રિકાઓ આપે મોકલી આપી. તે પહોંચી છે, અને યુવક વૈષ્ણવોને વહેંચી છે. તેની અસર પ્રસંગો ઉપર સારી થાય છે. માટે હવે પછી વધુ પ્રમાણમાં મોકલાવી આપશો. રમણલાલના જયશ્રીકૃષ્ણ.

સન્માનમાં સમાયલી છે આજે તેવા સંપ્રદાયના ઉત્કૃષ્ટ તત્ત્વજ્ઞાની, ને ૬૧ માં વર્ષના મંગલ દિને આવા સમારંભ દ્વારા સન્માની મેં મારૂં કર્તવ્ય બજાવ્યું છે. એથી વિશેષ કંઇએ નથી કર્યું. ભૃગુપુરના ધનિક પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજીને આગામી ૭૫ મી જન્મતિથિએ માત્ર સભાઓ ભરી અભિનન્દનપત્રો આપીને કૃતકૃત્યતા ન માની લે પણ પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજીને યોગ્ય એવું ચિરસ્મરણીય 'સ્મારક' ઉભું કરશે તોજ તેની સાર્થકતા ગણાશે એમાં શક નથી કે સંપ્રદાયના વિદ્વાનોની જન્મતિથિએ જાહેરમાં સન્માન આપવામાં ભૃગુપુરના વૈષ્ણવોએ પહેલ કરી છે શાસ્ત્રીજીનું જીવન ઉજ્વલ છે. માત્ર તેમનામાં વિદ્વત્તા છે એમ નહિ પણ તેમની દીનતા વૈષ્ણવતા અને તેમની નિર્મલ ભાવુકતા ખરેખર અન્ય વિદ્વાનોને માટે અનુકરણીય છે. યદ્યપિ તેઓ જીવનની સંધ્યાએ પહોંચ્યા છે તથાપિ તેમની કર્તવ્યનિષ્ઠા અને રચનાત્મક ક્રિયાશક્તિ એક તરુણને પણ લજ્જિત કરે તેવી છે, પ્રભુ તેમને ચિરાયુ કરો અને તેમના દ્વારા સંપ્રદાયની નામાત્મક સેવાઓ ખૂબ કરાવો મારે આજે આથી વધુ શું કહેવાનું હોય ? પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજી જેવા તમારે આંગણે છે અટલે તેમની પાસેથી સંપ્રદાયનું રહસ્ય જેટલું જાણવું હોય તેટલું જાણી લેજો તેમના જેવી સમજાવવાની શૈલી અન્યત્ર નથી. સિદ્ધાન્તોના મનન ચિન્તનથીજ બુદ્ધિ-પ્રભુ-સેવામાં ચોંટે છે, હૃદય નિર્મલ થાય છે બુદ્ધિ ભ્રષ્ટ ન થાય તે માટે શ્રીમહાપ્રભુજી શ્રીસુબોધિનીજીની કારિકામાં આજ્ઞા કરે છે. યદિ બુદ્ધિ ભ્રષ્ટ થઇ જાય, બુદ્ધિનો વિનાશ થઇ જાય, તો તો સર્વ સાધનો વ્યર્થ થયા સમજવા પછી તેવા બુદ્ધિભ્રષ્ટ થયેલા માણસ માટે કર્તવ્ય કશું રહેતું નથી માટે બુદ્ધિને સ્થિર અને ધાર્મિક રાખવા શાસ્ત્રનું અવગાહન કરતા રહેશો તથા સર્વભાવે શ્રીવ્રજાધિપને સેવતા ભજતા રહેશો એવી હું સૂચના કરી મારૂં વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કરૂં છું

ત્યારબાદ શાસ્ત્રીને સભાપતિ મહોદયે નિજપિતૃચરણ ગો. શ્રીવિઠ્ઠલેશરાયજી મહારાજશ્રીએ મોકલાવેલ પ્રસાદી કેસરી ઉપરણો ઓઢાડયો હતો.

ત્યારબાદ જગન્નાથપુરીના એક પંડિતે પ્રાસંગિક બોલતાં શ્રીશંકરાચાર્યના જ્ઞાન માર્ગ અને શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના શુદ્ધ ભક્તિમાર્ગ પ્રેમમાર્ગ મીમાંસા કરતાં શુદ્ધ પ્રેમનું સ્વરૂપ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યેજ બતાવ્યું છે તે સિદ્ધ કર્યું હતું અને શાસ્ત્રીજીની વિદ્વત્તા તથા સારલ્ય પરત્વે કેટલુંજ આવશ્યક વક્તવ્ય કર્યું હતું

ત્યારપછી મુંબાઇથી આ પ્રસંગે ખાસ આવેલા શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિષદ્‌ના માનદ મંત્રી શ્રીયુત ગિરિધરલાલ જ શાહે પ્રાસંગિક વક્તવ્ય કરતાં જણાવ્યું હતું કે આજકાલ જનતામાં શતાબ્દી, અર્ધ શતાબ્દી, રજતોત્સવ, સીલ્વર જ્યુબીલી, કે કનકોત્સવ વિગેરે ઉજવવાનો પવન ફુંકાયો છે. આમાં આમાં કેટલી યોગ્યતા તે બાબતનો વિચાર બહુ ઓછો થાય છે યદ્યપિ તેનો સેનીયો મોટા શહેરમાં વિશેષ ફેલાયો છે. તદનુસાર અમે મુંબઇની પુ. યુ. પરિષદ્ અને શ્રીવૈષ્ણવ સેવામંડળ દ્વારા શાસ્ત્રીજીના એકસઠમાં વર્ષારંભનો આનંદ ઉજવવા વિચાર કરેલો પરંતુ મારે તથા પૂ. સભાપતિ મહોદયને અત્રે આવવાનું થતાં તે વિચાર મુલતવી રાખ્યો. આજે મુરબ્બી શાસ્ત્રીજીને મારા તથા શ્રી પુ. યુ. પરિષદ્ (મુંબઇ) તરફથી અભિનન્દન અર્પી પ્રભુ ચિરાયુષ્યમાન કરે એમ હૃદયથી ઇચ્છું છું સુજ્ઞો ! ભારતવર્ષમાં પ્રાચીન સમયે વિદ્વાનોના અદ્વિતીય સન્માન થતાં તે આપણે પ્રાચીન ઇતિહાસ તપાસીશું તો જાણી શકીશું સંપ્રદાયનાંજ પ્રાચીન આચાર્યો પ્રતિ દૃષ્ટિપાત કરીશું તો જાણી શકાશે કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યથી શ્રીમત્પુરૂષોત્તમજી પર્યંતના વિદ્વાન આચાર્યપાદો વિદ્વાનોના અપૂર્વ સન્માન કરતા અત્યારે પણ મુંબઈવાળા ગો. શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજ, સુરતસ્થ ગો. શ્રીવ્રજરત્નલાલજી, નટપુરસ્થ શ્રીઅનિરૂદ્ધલાલજી, કચ્છમાંડવીપુરસ્થ ચિ. ગો. શ્રીદ્વારકેશલાલજી અને આપ સર્વે અનુભવી રહ્યા છો તેમ આજના સભાપતિ મહોદયે જેઓ ખાસ અત્રે પધાર્યા છે તે પણ વિદ્વાનોનાં સુયોગ્ય સન્માન કરી રહ્યા છે આ આદર્શ પુષ્ટિસંપ્રદાય સિવાય અન્યત્ર સ્થળે બહુજ ઓછો દેખાય છે. ત્યારબાદ વક્તાએ શાસ્ત્રીજીની પૂના, મુંબઇ અને અન્યાન્ય સ્થળે નિઃસ્વાર્થ વૃત્તિથી કરેલી સંપ્રદાયની કરેલી કેટલીક સેવાઓનું દિગ્દર્શન કરાવી ભવિષ્યમાં પણ તેઓ તન, મન ધનથી સંપ્રદાયની સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવશે વિગેરે આશા બતાવી તેમની પરત્વેની લાગણી અને કદ્રસત્ય પણ સંપ્રદાયના હિત માટે કહેવાની નિડરતા માટે યોગ્ય વિવેચન કરી સભાપતિ મહોદયની ઉદારતાનો પણ આવશ્યક પરિચય આપી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

—શાસ્ત્રીજીનું વિવેચન—તદનંતર ભ. શા. તિ શ્રીયુત મગનલાલ શાસ્ત્રીજીએ મંગલાચરણ કરી વિવેચન કરતાં કહ્યું હતું કે દેહિમાત્રને જન્મ મરણ પ્રાપ્તજ છે તેથી ૬૦ વર્ષ સમાપ્ત થયાં અને ૬૧ મું વર્ષ શરૂ થયું ઇત્યાદિમાં હર્ષને વા શોકને અવકાશ નથી પરંતુ એ નિમિત્તે ચિ ગો. શ્રીવ્રજનાથલાલજી બાવા સાહેબનું અત્રે પધારવું થયું અને તે પ્રસંગે આપ સર્વને એકજ સ્થળે ભગવત્સ્મરણ કરવાનો જે અલભ્ય લાભ પ્રાપ્ત થયો છે એ એક પ્રભુકૃપાનું ચિહ્ન તો ગણુંજ છું વક્તાઓએ જે કંઇ યથાવસર કહ્યું તે ઉચિતજ હતું. પ. ભ. જયકૃષ્ણદાસભાઇના સ્મારકમાંથી અમુક રકમ 'જયકૃષ્ણરોડ' માટે આપવાને ટ્રસ્ટી તરીકે હું નરોત્તમદાસ ભાઇને આગ્રહ કરીશ એટલુંજ નહિ પરંતુ ટ્રસ્ટની રકમનો ઉપયોગ નામશેષમાં થવાનો જે પ્રબંધ કરાયોજ છે તેમાં પણ સ્ફૂર્તિ પ્રભુકૃપાથી લાવી શકીશ. સ્પૃહણીય માત્ર એટલુંજ કે જે કાંઈ સેવા નામની અને રૂપની થય તે કેવલ નિઃસ્વાર્થે થાય એ ધ્યાન બહાર રહેવું ન જોઇએ. સભાપતિના શ્રીપિતૃચરણો તથા તેઓશ્રીના મોટા ભ્રાતૃચરણે અને પોતે સ્વયં આ અવસરે પણ મારા પ્રતિ જે અનુગ્રહ દર્શાવ્યો છે તદર્થં ઋણિત્વ શબ્દતઃ કબુલ્લ તે કરતાં પણ મનોમાત્રથી ભાવનાએ કહ્યું એ વિશેષ રુચિર છે પુરીસ્થ પંડિતજીના પ્રાસંગિક બોધમાંથી 'બીજ' શબ્દ પ્રતિ આપ સર્વેનું ધ્યાન આકર્ષિને શ્રીમદાચાર્ય ચરણના ભક્તિવર્દ્ધિની ગ્રંથનું બીજ તદુચ્યતે શાસ્ત્રે દૃઢં યન્નાપિ નશ્યતિ વાક્યનું સંસ્મરણ કરાવું છું શ્રીમદાચાર્યજીની કૃપાથી ભગવત્પ્રેમ, ભગવદાસક્તિ અને ભગવદ્વ્યસન દૃઢ થાય ત્યાં સુધી ભક્તિમાર્ગમાં પણ સાવધાનતા આવશ્યક છે અને તેથીજ 'રસિકા. કામવર્જિતા' એ તમારા સમક્ષ વિરાજમાન મુદ્રાલેખનો અર્થ પ્રકટ કર્યું છું કે 'રસોવૈસઃ' શ્રુતિથી પ્રતિપાદ્યરસ આપણું સર્વસ્વ છે રસિકત્વજ આપણો પરમ ધર્મ છે પરંતુ રસિકત્વ અને કામ એ બહુજ ભિન્ન છે. રસ સાક્ષાત્ ભગવદ્રૂપ છે જ્યારે કામ નરકદ્વાર છે. અતએવ કામથી જે સદા સર્વદા વિવર્જિત રહે તેજ 'રસિક' સંજ્ઞાને યોગ્ય છે, કોઇ પણ વ્યક્તિ પ્રતિ આપ દૃષ્ટિ કરશો તો સમજાશે કે જગતમાં કેટલી બધી વ્યક્તિઓ કામવિવશ થઇ અનેક નિષિદ્ધ ભોગથી દુઃખી થય છે આથીજ હું દ્વિતીય મુદ્રા લેખ પ્રતિ આપનું ચિત્ત આકર્ષું છું અને સ્પષ્ટ ભાષામાં કહું છું કે ભગવત્પ્રેમાદથી અતિરિક્ત કોઇપણ પદાર્થની ઇચ્છા તે કામ અને કેવળ ભગવત્સ્વરૂપ તેજ રસ અને તેથીજ પુષ્ટિભક્તિમાર્ગમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ઉપનિષદ્રૂપ સિદ્ધાન્તરહસ્ય ગ્રન્થમાં સ્પષ્ટ આજ્ઞા કરી દીધી કે અસમર્પિતવસ્તૂનાં તસ્માદ્ વર્જનમાચરેત્ । રસભોગ સર્વથા કરો પરંતુ અસમર્પિત વસ્તુનો ત્યાગ કરો. રસભોગ ફલરૂપ છે. કામભોગ દુઃખ છે તાત્પર્ય કે રસાત્મક ભગવત્સ્વરૂપનાજ ભોગાર્થ અસમર્પિત વસ્તુઓનું કામભોગત્વે વર્જન કરો નિરંતર શ્રીમદાચાર્યચરણનો આશ્રય—અનન્ય આશ્રય પરિગ્રહને ભક્તિબીજમાંથી અંકુર, અંકુરમાંથી કલિકા, કલિકામાંથી પુષ્પ, પુષ્પમાંથી ફલ, ફલમાંથી રસ અને રસમાંથી પરમકાષ્ઠાપન્ન ભગવત્સ્વરૂપનો આસ્વાદ કરો. અને તદર્થ પ્રથમ બાધક કામનો પરિત્યાગ કરો ઉપસંહારમાં માત્ર એટલુંજ કહેવાનું છે કે મારામાં ગુણ માનીને જે મારી પ્રશંસા થઇ તે ગુણ ભગવદ્ગુણોનુંજ પ્રતિબિંબ છે. વસ્તુતઃ તેમના ગુણની સ્તુતિ થવી જોઇએ તે ગુણ નિર્ગુણ, અનંતગુણ, સત્ય, જ્ઞાન, અનન્ત, બ્રહ્મ ઇ શ્રુતિએ પ્રતિપાદિત શુદ્ધ બ્રહ્મમાંજ છે, બ્રહ્મધર્મ બિંબ છે અને જીવમાં જે કંઈ સદ્ગુણોનું પ્રતિફલિત પ્રતિબિંબત્વે દેખાય છે તે ગુણોનું પણ પરમ સ્થાન બ્રહ્મ, પરમાત્મા, ભગવાન્ શ્રીકૃષ્ણ અથવા શ્રીકૃષ્ણાનન શ્રીમદ્વલ્લભાધીશજ છે વિગેરે વિસ્તારથી સમજાવી ઉપસ્થિત થયેલાં સર્વેનો આભાર માન્યો હતો.

બુધવાર તા. ૭-૧૨-૩૩ ના દિને પણ સાંજના નિયત સમયે સભાની શરૂઆત ભગવત્કીર્તન સંગીતમાં એક સજ્જને સુસ્વરે ગાયા બાદ પ્રો. મગનલાલ શાસ્ત્રીજીએ વેદમાર્ગ અને શ્રીગીતા ભાગવતોક્ત ભક્તિમાર્ગ એ બેનું તારતમ્ય સ્પષ્ટ કરીને પુષ્ટિમાર્ગનું વિસ્તારથી વિવેચન કરી દિગ્દર્શન કરાવ્યું હતું અને સભાપતિ મહોદયે 'શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યપ્રણીત "ભક્તિવર્ધિની" ગ્રન્થથી તે સિદ્ધાંતનું બહુજ મધુર ભાષામાં પોષણ કરી જનતાના હૃદય ઉપર સારી ભાવના ઉપસ્થિત કરી હતી. ત્યારપછી બન્ને દિવસે થયેલાં શ્રીમાન્ સભાપતિના અત્યંત ઉપકાર માટે શ્રીયુત કૃષ્ણલાલ મજમુદારે સભા તરફથી ઋણિત્વ કહ્યું હતું અને શ્રીયુત મગનલાલ દલાલે બેઅસેર ભાષામાં અનુમોદન આપ્યા પછી શ્રીગોવર્ધન ધરણના જયઘોષના સ્વરો હેઠ સહુ કોઇ સૌ વિખરાયા હતાં

નિધિસ્વરૂપ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીની સેવા.

શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીનું જે સ્વરૂપ રાજકોટ ગામની હવેલીમાં બીરાજે છે તે સંપ્રદાયના મૂળ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ સેવેલ હતું. તેઓશ્રીના વખતમાં ઉચ્ચ કોટિના આદર્શરૂપ જીવન ગાળનારા ૮૪ વૈષ્ણવ હતા. તેમાંના એક પદ્મારાવલ હતા. તેમને શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ આ સ્વરૂપ પધરાવી આપ્યું. પદ્મારાવલના વંશજોએ આ સ્વરૂપની સેવા ઉજ્જેનમાં કરી. રાજકોટ રાજ્યની ગાદી સ્થાપનાર શ્રીવિભાજી સને ૧૬૩૫ (સં. ૧૫૭૯) સુધી ગાદી ઉપર હતા. હાલની કેળવણીનો અને પશ્ચિમના પવનનો ચેપ લાગ્યો નહોતો ત્યારે ઘણા ખરા રજપુત અને કાઠી રાજાઓ ધર્મપરાયણ અને વૈષ્ણવ હતા. પુષ્ટિમાર્ગમાં જે સ્વરૂપોની સેવા થાય છે તેમાં અને સંપ્રદાયના આચાર્યો પ્રતિ તેમનો ભાવ હતો. રાજકોટ નરેશ વિભાજીની વિનંતિથી પદ્મારાવલના વંશજોએ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીનું સ્વરૂપ રાજકોટ રાજ્યની હદમાં પધરાવી, ત્યાં સેવા કરવા માંડી અને રાજ્ય તરફથી નેક ભોગ માટે પ્રબંધ થયો.

સને ૧૭૦૯ ના અરસામાં પદ્મારાવલના વંશજોને રાજ્ય સાથે કડવાશ થવાથી, તેમણે આ સ્વરૂપ જામનગરમાં પધરાવ્યું અને ત્યાં તે વર્ષો સુધી બીરાજ્યું. તે વખતના જામનગરના ધાર્મિક નરેશોએ જમીન અર્પણ કરી, લેખ કરી આપ્યા. સને ૧૭૫૪ ના અરસામાં તે વખતના રાજકોટના નરેશની વિનંતિથી, આ સ્વરૂપને રાજકોટમાં ફરી પધરાવ્યું. સને ૧૮૭૭ સુધી પદ્મારાવલના વંશજોએ રાજકોટની જુની હવેલીમાં સ્વરૂપની સેવા કરી. શ્રી બાવાજીરાજ સને ૧૮૬૨ માં ગાદીએ બેઠા. તે વખતે તેમનું છ વર્ષનું વય હતું. સને ૧૮૭૬ માં પૂર્ણ સત્તા સાથે રાજ્યતંત્રની લગામ તેમને સોંપવામાં આવી ત્યારબાદ પદ્મારાવલના વંશજ ગોવિંદજી ભટ્ટને રાજકોટની હદમાં રહેવાનું સહીસલામત નહીં જણાયાથી અનેક પ્રકારના જોખમે વેઠી, તેમણે ૧૮૭૭ માં આ સ્વરૂપ સીવીલ સ્ટેશનની હદમાં મોરબીના જુના ઉતારામાં પધરાવ્યું. તેઓ પરમ ભગવદીય હતા. આત્મનિવેદનનું તેમને અનુસંધાન રહેતું. પ્રભુ ઉપર દૃઢ આશ્રય હતો. સને ૧૮૮૩–૮૪ માં વૈષ્ણવોની મદદથી સીવીલ સ્ટેશનમાં આવેલી હવેલીનું મકાન બંધાવી, તે સિદ્ધ કરી, સ્વરૂપને ત્યાં પધરાવી સેવા કરવા માંડી. બાવાજીરાજ ૧૮૯૦ માં દેવલોક થયા. ૧૮૭૭ થી ૧૮૯૦ સુધીમાં, રાજ્ય કુટુંબમાં બીજાં પણ મરણો થયાં. આ નાની બાને એવા વિચારો સ્ફુર્યા કે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી રાજકોટની હવેલીમાં નહીં પધારે ત્યાં સુધી રાજકુટુંબ સુખ અને શાંતિ અનુભવશે નહીં. ભટ્ટજીને સમજાવવા અનેક પ્રયાસો થયા પણ તે નિષ્ફળ થયા. છેવટે તા. ૨૩–૪–૧૮૯૧ ની મીતીથી તેમણે હાલાર પ્રાંતના મે. પોલીટીકલ એજન્ટ સાહેબને અરજી આપી. કારણ કે શ્રી લાખાજીરાજ સગીર હોવાથી; એજન્સી તરફથી આ રાજ્યનો વહીવટ થતો હતો.

ઉક્ત અરજીના થોડા ફકરાઓ ટાંકવાની રજા લઉં છું.

આ સ્ટેટ સ્થાપનાર ઠાકોરશ્રી વિભાજીની વિનતિથી ભટ્ટજીના કુટુંબે આ સ્વરૂપ ઉજ્જૈનથી રાજકોટમાં પધરાવ્યું. રાજ્યે નેકભોગનો પ્રબંધ કર્યો. રાજ્ય સાથે વૈમનસ્ય થવાથી, થોડાં વર્ષ સુધી, આ સ્વરૂપને જામનગરમાં પધરાવ્યું અને રાજ્યની વિનંતિથી ફરીને અહિં પધરાવ્યું. સ્વરૂપ સીવીલ સ્ટેશન પધરાવ્યા પછી, અમારા કુટુમ્બને દુઃખદાયક વારસો મળ્યો છે અને મર્હુમ ઠાકોર સાહેબના નાની ઉંમરમાં અકાળ મૃત્યુથી બીજા દુઃખો પણ આવી પડ્યાં છે. જ્યાં સુધી રાજકોટની હવેલી ખાલી રહે, અને અમારા શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી બહાર બીરાજે ત્યાં સુધી મને શાંતિ મળે તેમ નથી. મારી દુઃખદ સ્થિતિનો ખ્યાલ રાખવા હું આપને વિનંતિ કરૂં છું. મારા કુટુંબમાં જે માણસો રહ્યાં છે તેમના શ્રેય માટે હું ઇચ્છું છું કે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી અહિં પધારે, અને અમારા ઉપર મોટી કૃપા કરે. ભટ્ટ કૃષ્ણબલદેવને રાજકોટની નવી હવેલીમાં શ્રીઠાકોરજીને પાછા પધરાવવા મેં સમજાવ્યા છે. તે ખાસ એવી શરત મૂકે છે કે, જો ભવિષ્યમાં કોઈ પ્રસંગે રાજ્ય સાથે તેમને અગર તેમના વંશજોને કડવાશ થાય તો તેઓ શ્રીઠાકોરજીને પધરાવી, લઈ જઈ શકે. આ શરત મને વ્યાજબી લાગે છે, અને રાજ્યને કોઈ રીતે નુકશાનકારક નથી. હું આશા રાખું છું કે આ મારી પવિત્ર ઇચ્છા અમલમાં મૂકવાને આપને કશો વાંધો નહિ હોય. મારી માગણી અમારા અને રાજકોટના સંખ્યાબંધ વૈષ્ણવોના ધર્મને અનુસરતી છે. બીજાની ધાર્મિક લાગણીને માન આપવું તે ભારતવર્ષના રાજ્યનો મોટામાં મોટા સદ્ગુણ છે. આશા છે કે આ કામમાં તે હશે.